आश्रममें समर्पणकी चर्चा-सभामें (पृष्ठ ६८)

सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय

५६

(१६ सितम्बर, १९३३ – १५ जनवरी, १९३४)

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मन्त्रालय
भारत सरकार

भूमिका

इस खंडमे चार महीनो (१६ सितम्बर, १९३३ से १५ जनवरी, १९३४ तक) की जिस अवधिको लिया गया है, उसके दौरान गाधीजी कानूनी तौरपर एक स्वतन्त्र व्यक्ति थे, क्योकि उन्हे २३ अगस्तको बिना शर्त रिहा कर दिया गया था। लेकिन ४ अगस्त, १९३३ को उन्हे एक सालकी कैद की जो सजा दी गई थी, उसकी मियाद पूरी होनेतक वह अपने-आपको एक कैदी ही मानते रहे। उन्होने इस अवधिमे पूरी ईमानदारीके साथ अपने-आपको हर प्रकारके राजनीतिक कार्यसे अलग रखा और सविनय अवज्ञा आन्दोलनको आगे बढानेकी कोई कोशिश नही की। लेकिन अस्पृश्यताके विरुद्ध अपने आन्दोलनका सचालन करने और आश्रममे तथा अन्य स्थानोपर रचनात्मक कार्योका मार्ग-निर्देशन करनेमे उन्होने पूरी स्वतन्त्रतासे काम लिया। अस्पृश्यताके विरुद्ध सतत आन्दोलन करते रहनेकी उनकी आन्तरिक विवशताको सरकार, यहाँतक कि उनके राजनीतिक सहयोगी भी पूरी तरह समझ नही पाते थे। उनकी यह आन्तरिक विवशता उनके इस दृढ विश्वासपर आधारित थी कि जिस प्रकार १८३३ मे दास-प्रथाका अन्त कर दिया गया था, उसी प्रकार और उसी अर्थमे अस्पृश्यताको भी १९३२ मे बम्बईमे मदनमोहन मालवीयजी की अध्यक्षतामे होनेवाले हिन्दू-समाजके प्रतिनिधियोके सम्मेलनमे समाप्त कर दिया गया था। उनका यह विश्वास भी था कि "गम्भीरतामे की हुई इस प्रतिज्ञाका समुचित पालन करनेके लिए कमसे-कम एक व्यक्ति है जिसका जीवन बन्धकके रूपमे रखा हुआ है" (पृष्ठ ९४)।

गाधीजी इस समय जिस प्रकारके आत्मधारित अनुशासन और जिस प्रकारकी प्रबल क्रियाशीलताका परिचय दे रहे थे, उसके कारण स्वभावत उनके अनुयायियो और उनके आलोचको मे बहुत ज्यादा गलतफहमी उत्पन्न हुई। काग्रेस पार्टीके नेताके रूपमें उन्होने जवाहरलाल नेहरूको मुखतारनामा दे दिया था। उदाहरणके लिए, अखिल भारतीय काग्रेस कमेटीके कार्यके लिए उन्होने नरीमनको जवाहरलालसे बात करनेकी सलाह देते हुए कहा कि वह "मेरे राजनैतिक मुखिया" है। जवाहरलालसे उन्होने यह स्वीकार किया कि "मै तो पूरी तरह बदनाम हूँ कि मै एक धार्मिक सनकी हूँ और मुख्यत एक समाज-सेवक हूँ" (पृष्ठ १७५)। जब उनपर यह आरोप लगाया गया कि वह हरिजन-आन्दोलनका उपयोग सविनय अवज्ञा आन्दोलनको मजबूत

बनानेके लिए कर रहे है, और यह कि वह हरिजन-आन्दोलनकी खातिर सविनय अवज्ञा आन्दोलनको छोड दे रहे है, तव वह केवल यही कह सके कि "मै दो प्रकारके सकटोके बीच फँसा हुआ हूं। काग्रेसी मुझपर यह आरोप लगाते हैं कि मैंने अस्पृश्यता-निवारणार्थ उस तूफानी अभियानको शुरू करके सविनय अवज्ञा आन्दोलनका अहित किया है। जो लोग मुझपर कोई गुप्त मशा रखनेका सन्देह करते है वे मुझ पर सविनय अवज्ञा आन्दोलनको मजबूत बनानेका आरोप लगाते है। . . यह तो अत्यावश्यक धार्मिक पुकार है जिसका कि मै अनुसरण कर रहा हूँ" (पृष्ठ ३६०)।

विट्ठलभाई पटेलकी अन्त्येष्टिके समय उनकी अनुपस्थितितक का गलत अर्थ निकाला गया। उन्होंने मथुरादास त्रिकमजीसे अनुरोध किया कि आप मुझसे चितामे आग देनेका आग्रह न करे "मेरा मन बाहरकी चीजामे जाता ही नही है, जेलमे ही रहता है। मै येन-केन प्रकारेण हरिजन-यात्रा भर करूँगा। उसके अलावा मै अन्य चीजोपर कदाचित् ही कोई विचार करता हूँ" (पृष्ठ १६९)। उन्हे मणिबहन पटेलको समझाना पडा कि "हरिजन-कार्यकी खातिर ही मै [जेलमे] बाहर हूँ, यह केवल सरकार या जनताको कहनेके लिए नही, परन्तु मेरे हृदयमे भी यही चीज है" (पृष्ठ २३४)। सविनय अवज्ञामे भाग न ले सकनेके कारण वह "पखविहीन पक्षीके समान" थे (पृष्ठ २३८)। गोरधनभाई पटेलको एक पत्र लिखकर उन्होंने यह स्पष्टीकरण किया· "विट्ठलभाई और मेरे बीच जो मतभेद था उसका मेरे न आनेके साथ कोई भी सम्बन्ध नही है। मेरे न आनेका कारण तो मेरी आजकी परिस्थिति ही थी" (पृष्ठ २६५)।

आतंकवादियोंके बारेमे गाधीजीका कहना था कि उनकी "हिंसा . . . असंगठित, उन्मादपूर्ण और सर्वथा अप्रभावकारी है" (पृष्ठ ८८), किन्तु उन्होंने अपने अग्रेजी मित्रोकी इच्छा अमान्य करते हुए आतंकवादियोंकी निन्दा करनेसे यह कहकर इनकार कर दिया कि मै सरकारका यह जवाबी आतकवाद रोकनेमे भी तो असमर्थ हूँ जो मेरी रायमे "ज्यादा त्रासपूर्ण होता है, क्योंकि यह सगठित होता है और सारी जनताको त्रस्त कर देता है" (पृष्ठ ३६)।

उपवासके कारण गाधीजी बहुत कमजोर हो गये थे, और २३ अगस्तके सकटके बाद उन्हें डाक्टरोंकी यह आज्ञा माननी पडी कि वह छः सप्ताह पूरा विश्राम करें। तथापि ७ नवम्बरको उन्होंने हरिजनोंके हितार्थ अपना 'तूफानी' दौरा शुरू कर दिया। इस सिलसिलेमें उन्होंने मध्य भारत, आन्ध्रदेश, तमिलनाडु, मैसूर और केरलकी यात्रा की। इस दौरेके मध्य वह थोड़े समयके लिए दिल्ली आये जहाँ उन्हें हरिजन सेवक संघके केन्द्रीय मण्डलकी बैठकमें भाग लेना था, और इसी मौकेपर

उन्होंने जवाहरलाल नेहरू, अबुल कलाम आजाद और आचार्य कृपालानी आदि कांग्रेसी नेताओंसे मन्त्रणा भी की।

अहमदाबादमें सर चिनुभाई माधवलालकी एक मूर्तिका अनावरण करते हुए गांधीजीने अपनी यह हार्दिक अभिलाषा व्यक्त की कि "अपने देशमें अमीर और गरीबके बीचमें संघर्ष न हो, कलह-क्लेश न बढ़े और दोनों ही अपने-अपने धर्मको समझकर उसका पालन करते रहें" (पृष्ठ १४)। हरिजन-कार्यके सिलसिलेमें उन्होंने जो-कुछ भी किया और कहा, उसके पीछे भी संघर्षको बचानेकी चिन्ता और लोगोंको अधिकारोंकी अपेक्षा कर्त्तव्योंका ध्यान दिलानेका उद्देश्य ही रहा। वह एक साथ सुधारकों, सनातनियों और हरिजनों, सभीकी सेवा करना चाहते थे (पृष्ठ १५२)। उन्होंने हरिजनोंसे दृढ़चरित्र और निस्स्वार्थ बननेको कहा और सवर्ण हिन्दुओंको बताया कि उनका कर्त्तव्य है कि वे अस्पृश्यताके अभिशापसे अपनेको मुक्त करें। उनका दृढ़ विश्वास था कि हरिजनोंका उद्धार अन्ततः अन्दरसे ही हो सकता है (पृष्ठ १)।

हरिजनोद्धारके कामके सिलसिलेमें उन्होंने किसी गुटको नाराज नहीं किया, बल्कि इस बातकी कोशिश की कि सनातनी, सुधारक और हरिजन तथा समान्यजन, इन सभी वर्गोंके साथ अपना तादात्म्य स्थापित करें। पंडित लालनाथ जैसे बराबर कठिनाई पैदा करनेवाले सनातनियोंके साथ भी उन्होंने कभी अपना धीरज नहीं छोड़ा और तनिक भी असहिष्णुता प्रदर्शित नहीं की। उनकी सभाओंमें उपस्थित होनेवाली भारी भीड़ और पर्याप्त धन-संग्रह इस बातके पर्याप्त प्रमाण थे कि उन्हें अपने काममें सच्चा लोक-समर्थन प्राप्त है, पर उनका एकमात्र उद्देश्य विरोधियोंके दिलोंको जीतनेका था। "हम तो नम्रतम शब्दोंमें अनुनय-विनय करके उन्हें अपने पक्षमें करना चाहते हैं, उनके दिल और दिमागपर विजय पाना चाहते हैं" (पृष्ठ २०६)। कट्टरपंथी पंडितोंने गांधीजीकी सफलतासे क्रुद्ध होकर उन्हें तरह-तरहकी गालियाँ दीं, लेकिन जब गांधीजीने उपनिषदों और 'रामायण' के इस मुख्य सन्देशकी दुहाई दी कि "केवल ईश्वर ही सत्य है, और ईश्वरके अतिरिक्त अन्य कोई व्यक्ति, कोई चीज नहीं है" (पृष्ठ ४२६), तो इसका विरोध ये पंडित भी नहीं कर सके, क्योंकि सिद्धान्त रूपमें ही सही, उनके और सामान्य लोगोंके मनमें इस मूल सत्यका जबर्दस्त महत्त्व था। वस्तुतः गांधीजीका दावा था और सही भी था कि उन्होंने मैत्रीपूर्ण चर्चाओंके जरिये काफी-कुछ गलतफहमी दूर कर दी थी और अपने विरोधियोंको अपना समर्थक बना लिया था। गांधीजीने कहा: "लोगोंके दिलो-दिमागतक अपनी बात पहुँचानेकी कोशिश करनेके अलावा मेरे पास और कोई हथियार नहीं है। और मैं जिस सुधारकी बात करता हूँ वह सुधार केवल करोड़ों हिन्दुओंके हृदय-परिवर्तनसे ही हो सकता है" (पृष्ठ ४९६)।

गाधीजीका कहना था कि "मै अपनेको सनातनी तथा सुधारवादी, दोनो मानता हूँ। हरिजनोके प्रति एक सवर्ण हिन्दू अधिकसे-अधिक जितना सद्भाव रख सकता है, मैंने वैसा सद्भाव पैदा करनेका प्रयत्न किया है। . . मै भी चीजोको हरिजनोकी आँखोसे देखनेका तथा यह जाननेका प्रयत्न कर रहा हूँ कि उन लोगोके मनमे क्या-कुछ विचार चल रहे है" (पृष्ठ २२५)। आर्थिक प्रगति हो या सामाजिक सुधार, गाधीजीके सारे दर्शनमे हरिजन मनोवृत्ति छाई हुई थी और वह जो-कुछ भी सोचते थे, गावोमे रहनेवाले करोडो लोगोको ध्यानमे रखकर सोचते थे। गरीबसे-गरीब आदमीकी खुशीमे उनकी खुशी थी और ये गरीब लोग जी सके तभी वे भी जीना चाहते थे (पृष्ठ १५५)। उन्होने राजकुमार कालिजके अभिजात-वर्गीय छात्रोको चेतावनी देते हुए कहा "अगर आप भारतके गरीबोकी पीडाको समझना न सीखेगे तो आपकी शिक्षा व्यर्थ है" (पृष्ठ ३००)। गाधीजीको मेहनत-मजदूरी करनेवाले गरीबोके बीच रहने और खाने-पीनेका अनुभव था, और इस अनुभवने उन्हे मद्य-निषेधका कट्टर समर्थक बना दिया था। उन्होने कहा "मै स्वैच्छिक मद्य-त्यागकी बात नही करता। मै तो पूर्ण रूपसे मद्य-निषेधके पक्षमे हूँ" (पृष्ठ ४७१)।

गाधीजीका कहना था कि शुद्धीकरणके आन्दोलनमे स्वय हरिजनोको "सम्मानजनक और मूल्यवान भूमिका अदा करनी होगी" (पृष्ठ ४०७)। सुधार-कार्योमे लगे कार्य-कर्त्ताओके लिए उनकी सलाह थी कि वे तर्क-वितर्कपर निर्भर न करे बल्कि शुद्धता और चरित्र-बल पर भरोसा करे। उन्होने उनसे स्पष्ट कह दिया "यदि आपके पास चरित्र-गुण ही नही है तो फिर स्वाभाविक है कि लोग आपपर किसी प्रकारका यकीन नही करेगे। आपको जन-साधारणके हृदयको स्पन्दित करना होगा, जन-साधारणके हृदयको बदलना होगा। . . जनता बहस नही करेगी। . . वे प्रामाणिक चरित्र-वाले आदमी है तो जनता उनकी बात सुन लेगी" (पृष्ठ ३७६)। मद्रासमे उन्होने छात्रोसे कहा कि हरिजनोकी सेवा करके वे एक तरहसे दोहरी क्रान्ति लायेगे — एक तो हरिजनोके जीवनमे, और दूसरे खुदके जीवनमे" (पृष्ठ ३७७)।

सत्यकी सत्ता और निष्ठापूर्वक धारित और आचरित सत्यकी सर्वव्यापक शक्तिमे उनकी इतनी प्रबल आस्था थी कि उनका विश्वास था कि अस्पृश्यता-निवारण मात्रसे वर्गों और जातियोके बीचके सारे झगडे, हिन्दू-मुसलमानो और पूंजी तथा श्रमके बीच के सारे विवाद समाप्त हो जायेंगे (पृष्ठ ३११)। उनका कहना था कि चूंकि अस्पृश्यता-निवारणका कार्य मूलत. मानवतावादी और धार्मिक कार्य है, अत. उनका जीवनके सभी पहलुओंपर असर पड़ना चाहिए, क्योंकि धर्म तो जीवनके सभी अंगोका संचालन करता है (पृष्ठ ४०१)। इसीलिए इस आन्दोलनके पीछे कोई राजनीतिक उद्देश्य न होते हुए भी इसके राजनीतिक परिणाम होंगे, यह निश्चित है। उन्होने

कहा "धर्म मानकर किये गये किसी कार्यके अनेक महत्त्वपूर्ण परिणाम होते है। 'पहले ईश्वरका साम्राज्य प्राप्त करो, उसके बाद सभी चीजे तुम्हे मिल जायेगी', यह कथन मेरे विचारमे एक वैज्ञानिक सत्य है" (पृष्ठ ३३८)। नागपुरकी एक सार्वजनिक सभामे उन्होने कहा कि मेरा समस्त जीवन धर्मसे सचालित है। मेरी राजनीतिका मूल भी धर्म ही है (पृष्ठ २१३)।

उन्होने यह बात बहुत स्पष्ट शब्दोमे कही कि "मेरी राष्ट्रीयताकी भाँति ही मेरा हिन्दुत्व भी सम्पूर्ण मानवतासे अलग या मानवताके किसी अगके हितोके प्रतिकूल नही है" (पृष्ठ ३८३)। वस्तुत मै अपने हरिजन-कार्यके द्वारा सभी जातियोकी सेवा करनेका प्रयत्न कर रहा हूँ। "ये सभी एक विशाल परिवारकी शाखाएँ है। मैने हिन्दू-शाखामे एक ऐसा रोग देखा है जिसे यदि समय रहते दूर नही किया गया तो वह सारे कुटुम्बमे फैल जायेगा और उसे नष्ट कर देगा" (पृष्ठ २९२) हर धर्मकी रक्षा और विकासके लिए उस धर्मके माननेवालोको बराबर तपस करते रहना होगा (पृष्ठ ६३)। सभी धर्म पुकार-पुकार कर कहते है कि "धर्मकी रक्षा केवल तपश्चर्या द्वारा ही हो सकती है" (पृष्ठ ४८८)। अस्पृश्यताके इस काले धब्बेकी ओर सकेत करते हुए कालीकटमे उन्होने बिशप हेबरकी इस उक्तिकी ओर लोगोका ध्यान दिलाया कि "केवल मनुष्य ही घिनौना है" और हिन्दुओको चेतावनी दी कि "हम यदि प्राचीन ऋषियो द्वारा छोडी गई अमूल्य निधिके अयोग्य प्रतिनिधि सिद्ध हुए तो वैसी स्थितिमे हिन्दू-धर्म" भी "आसन्न विनाशसे" नही बच सकेगा (पृष्ठ ५१६)।

गाधीजीने सत्यकी खोज पुस्तकोमे नही बल्कि मनुष्योके हृदयमे, ठोस स्थितियोमे करना सीख लिया था, उन्होने मनुष्यके हृदयमे दिखाई पडनेवाले सत्यको पहचानना, और हर व्यक्तिकी स्वतन्त्रताका सम्मान करना भी सीख लिया था। "किसी व्यक्ति को यह अधिकार नही है कि सत्यको जैसा वह समझता है, दूसरेको उसके अनुसार ही कार्य करनेके लिए मजबूर करे" (पृष्ठ २२६)। वह स्त्रियोके लिए विचार और कार्यकी पूर्ण स्वतन्त्रताके अभिलाषी थे। आश्रमकी महिलाओके लिए उनका सन्देश था "रासकी कूचके आयोजनके समय भले ही जो-कुछ विचार किये गये हो और प्रतिज्ञाएँ की गई हो, पर अब सारी बहनोको नये सिरेसे स्वतन्त्र रूपसे विचार करके जो निर्णय करना हो, करे। . . . कोई किसीपर जोर न डाले। सब लोग अपना-अपना विचार कर ले, यही धर्म है। सब लोग अपनी इच्छा और शक्तिके अनुसार चले। मैं तो अनायास ही जेलके बाहर हूँ" (पृष्ठ ५१९)। मणिलाल और सुशीला गाधीको भी उन्होने इसी भावनामे लिखा "मै तो आज हूँ और कल नही। अपने बलसे ही तू करे, यही बात शोभाजनक है। . अपूर्ण पिताके संरक्षणमें शान्तिकी

खोज करनेकी अपेक्षा पिताके पिता अर्थात् पूर्ण परमेश्वरके सरक्षणमे शान्तिकी खोज कर। इससे तू बलवान बनेगा। तुझे मेरी यह शिक्षा है" (पृष्ठ २२८)। विभिन्न धर्मो या विभिन्न सस्कृतियोके लोगोके बीच परस्पर विवाहके प्रश्नपर अपने एक विदेशी अनुयायीको अपने विचार बतानेके बाद उन्होने यह चेतावनी भी जोडी "मै तुम्हारी बुद्धि या तुम्हारे हृदयको गुलाम बनानेका अपराध कभी नही करूँगा। मै अपूर्ण हूँ, और मै अपनी गलतियोमे तुम्हे अपना भागीदार नही बनाना चाहता" (पृष्ठ २४५)। उन्हे गलती करनेकी सम्भावनाका अहसास था। और वह सारी मानवताके साथ, जिसमे पापी और सन्त सभी शरीक थे, तादात्म्यकी भावना का अनुभव करते थे। इसी कारण वह रामनामको फूट डालनेवाली अहकारकी भावना और सत्कार्य करनेकी दुर्बल इच्छा-शक्ति दोनोका सबसे प्रभावकारक उपाय मानते थे। उनका कहना था कि "रामनाम निर्दोष और निरोगी व्यक्तिके लिए नही वरन् हम जैसे दोषपूर्ण और व्याधिग्रस्त मनुष्योके लिए है" (पृष्ठ २९)। सत्यके पुजारियोकी आध्यात्मिक प्रगतिके लिए विनम्रताकी अनिवार्यता बताते हुए वह कहते है कि सत्यके पुजारियोको "नम्र बनना है। धूलकी तरह या शून्यके समान बनकर रहना है" (पृष्ठ ७०)।

राजनीतिक कार्योके प्रति गाधीजीकी तटस्थता, तथा दूसरोके अन्दर स्वतन्त्र रूपसे सोचने और कार्य करनेकी प्रवृत्तिको बढावा देनेकी उनकी उत्सुकता उनके पत्रोमे अक्सर प्रकट होती है। जवाहरलाल नेहरूको उन्होने पत्र लिखकर यह राय जाहिर की कि अ० भा० काग्रेस कमेटीकी बैठक बुलानेसे कोई लाभ नही होगा, किन्तु साथ ही यह भी लिखा कि "इसका मतलब यह नही कि ऐसी कोई बैठक यदि होगी तो उससे मुझे गहरी चोट लगेगी" (पृष्ठ ३२)। मालवीयजीको एक पत्रमे उन्होने अ० भा० काग्रेस कमेटीकी बैठके बुलानेकी भर्त्सना की जिनमे असम्बद्ध और बेसिलसिला चर्चाएँ होती है और अविचारित प्रस्ताव पास किये जाते है (पृष्ठ १०१)। वह एक निश्चित नीति और कार्यक्रम अपनाकर उसे बिना हिचके कार्यान्वित करनेके पक्षमे थे। उनका कहना था कि "निराशाजनक अकर्मण्यता सबसे बुरी चीज है और इसको प्रोत्साहन नही देना चाहिए" (पृष्ठ १७५)। उन्होने इस बातको स्वीकार किया कि जो काग्रेसी सविनय अवज्ञा आन्दोलनमे भाग नही लेते अथवा नही ले सकते, उनके राजनीतिक अस्तित्वके लिए स्वराज्य पार्टीका गठन आवश्यक हो गया है। इस सिलसिलेमे उन्होने क० मा० मुशीको एक पत्रमे लिखा "जैसे तुम मुझसे पूछना उचित समझते हो उसी प्रकार जवाहरलालसे भी इसकी चर्चा करो" (पृष्ठ ४८०)। जवाहरलालने हिन्दू महासभाकी जो कड़ी आलोचना की थी उसके बारेमे गाधीजीने उन्हे लिखा कि यह आलोचना "जरा कम तीखी हो सकती थी" (पृष्ठ ३०२)। उन्होने जवाहरलाल पर लिखे गये घनश्यामदास बिड़लाके लेखको ठीक बताते हुए लिखा कि

जवाहरलाल "बहुत सीधा पुरुष है। अपनी भूल सुधारता है और अन्तम वह सत्यके पथपर ही आ जायेगा" (पृष्ठ १०९)।

प्रभावतीको एक पत्रमें उन्होने लिखा " यदि जयप्रकाश इस फकीरीको अपनानेके लिए तैयार हो तभी वह इस लडाईमे शामिल हो सकता है। सिपाहीका यही धर्म है। दूसरा धर्म कुटुम्बके प्रति है। यह धर्म जब स्वतन्त्र रूप धारण करता है तब वह समाजके हितका विरोधी होता है। सत्याग्रहका आशय इसी धर्मको टालना है। लेकिन जो इसे नही समझता और इसका पालन करनेका प्रयत्न करता है, वह दोनोसे हाथ धो बैठता है" (पृष्ठ २७६)। एक सुव्यवस्थित समाजमे किसी अच्छे नागरिकसे बहुत बडे त्यागकी अपेक्षा नही की जा सकती, लेकिन जब समाजकी अव्यवस्थित दशाओमे ऐसे त्याग की आवश्यकता हो, उस समय भी अपने गार्हस्थिक उत्तरदायित्वोका बोझ ढोते हुए कोई व्यक्ति सत्याग्रह नही कर सकता। एक अन्य पत्रमे यही बात जरा और खोलकर कही गई है "निजी कुटुम्ब-धर्मका पालन करनेमे कोई पाप नही है, और सेवाधर्मका पालन करना हो तो निजी धर्मका त्याग करना ही चाहिए" (पृष्ठ ३३५)। यही सलाह एक पत्रमे जवाहरलाल नेहरूको भी दी गई है "आखिरी लडाईमे केवल वे ही खडे रह सकेगे जिनके पास कोई सम्पत्ति नही होगी और सर टेकनेका कोई ठौर नही होगा" (पृष्ठ ३०२)।

गाधीजीका दृढ विश्वास था कि "मानव प्राणीकी रचना ही आत्माको पहचाननेके लिए हुई है और वह आत्म-स्वरूप ही है" (पृष्ठ ५१) और सभी धर्मोका अन्तिम लक्ष्य आत्माकी उस मूलभूत एकताको जानना है जो सभी जीवोमे व्याप्त है और अनेक रूपोमे व्यक्त होती है (पृष्ठ ३१६)। वह पुनर्जन्मके सिद्धान्तका उपयोग सारी मानव-जातिके बेहतर भविष्यकी खातिर वैयक्तिक नैतिक प्रयासको प्रेरित करनेके लिए करते थे, धर्मकी पुकारसे बचकर भागनेके लिए नही। उनका कहना था कि पुनर्जन्मकी बात अपनी ही हदतक सोचनी चाहिए। "दूसरोको कष्टमे देखकर उनकी उपेक्षा करना तथा यह कहना कि तुमने पूर्वजन्ममे जो किया है उसे भोगो, ईश्वरको राक्षस बना देना है" (पृष्ठ २५८)। कर्मका नियम क्या है, इसको पचास सालतक जाननेकी सच्ची कोशिशके बाद गाधीजी इस निष्कर्षपर पहुँचे थे कि "इसे अपनेको छोडकर अन्य सब लोगोपर लागू करना इसे विकृत बनाना है। यदि हम कार्यके सिद्धान्तको लागू करते है, अर्थात् स्वय अपने ऊपर लागू करे, तो हम यहाँकी भूमिका और अन्य स्थानोकी भूमिका स्वरूप ही बदला हुआ पायेगे" (पृष्ठ ४९४)।

गाधीजीने 'गीता-प्रवेशिका', जिसमे 'भगवद्गीता' के चुने हुए ४२ श्लोक थे, यरवडा मन्दिरमे १९३२ मे रामदासकी खातिर तैयार की थी, जो उस समय उसी जेल

मे नजरबन्द थे। रामदासको ये सरल और भक्तिरसपूर्ण श्लोक बहुत पसन्द आये और दूसरे लोगोकी राय हुई कि यह पुस्तिका रूपमे प्रकाशित हो तो हरिजन-कार्य करनेवालोके लिए बहुत सहायक सिद्ध होगी। यह श्लोकसग्रह प्रकाशन योग्य है अथवा नही, इसका निश्चय करनके लिए गाधीजीने विनोबा, काकासाहब और बालकृष्ण भावेकी सलाह ली। ये तीनो सज्जन भी उस समय जेलमे थे और 'गीता' के प्रेमी अध्येता थे। इन तीनोने आपसमे परामर्श किया और पुस्तककी उपयोगिता बढानेके विचारसे गाधीजीको सलाह दी कि वे सग्रहके तीन श्लोक निकाल दे और उनके स्थानपर चार नये श्लोक जोड दे। इस प्रकार सशोधित हुआ यह सग्रह स्त्री-पुरुष कार्यकर्त्ताओको तथा 'गीता' के अन्य प्रेमियोको 'गीता' की प्रवेशिकाके रूपमे सुलभ किया गया। लेकिन गाधीजीने उसमे यह चेतावनी जोड दी "इस प्रवेशिका अथवा सम्पूर्ण 'गीता' ही को कठस्थ कर लेनेसे या पूरा अर्थ समझ जानेसे कोई लाभ नही होना है। 'गीता' तो अनुकरणके लिए है" (पृष्ठ ७६-७)। कस्तूरबाको 'गीता' पर लिखे अपने सुन्दर प्रवचनोमे उन्होने सेवामे सहज भक्ति और श्रद्धापर बल दिया (पृष्ठ ४१६-१७ और ४३६-३७)।

सस्कृतमे पाडित्यके अपने अभावको स्वीकार करते हुए गाधीजीने महादेव देसाईको लिखा . "तुम अपना अनुवाद जारी रखो और उसमे मेरे विचारोको व्यक्त करनेमे जिस हदतक मेरे अनुवादसे मदद मिले, उसकी मदद लो, लेकिन बिलकुल मेरे अनुवादकी ही नकल मत करो। जहाँ टिप्पणियाँ व्यर्थ है वहाँ उनको छोड दो। जहाँ टिप्पणी देना जरूरी हो वहाँ अपनी टिप्पणी दे दो। जहाँ फिरसे लिखनेकी जरूरत हो, लिख दो, और जहाँ कुछ जोडना हो वहाँ जोड दो। . तब फिर जब यह सारा परिणाम मेरे हाथमे आयेगा उस समय मै उसपर काम करूँगा और अपने अर्थको स्पष्ट करनेके ख्यालसे जहाँ जो परिवर्तन करने होगे, कर दूँगा। . . उसके बाद हम गुजरातीका सस्करण निकाल सकते है और तुम्हारा किया हुआ अग्रेजी अनुवाद प्रकाशित कर सकते है" (पृष्ठ २७४-७५)। महादेव देसाई का यही अग्रेजी अनुवाद १९४६ मे 'द गॉस्पेल ऑफ सेल्फलेस ऐक्शन' अथवा 'द गीता एकॉर्डिग टु गाधी' शीर्षकसे पुस्तक रूपमे प्रकाशित हुआ।

आभार

इस खण्डकी सामग्रीके लिए हम निम्नलिखित सस्थाओ, व्यक्तियो, पुस्तकोके प्रकाशको तथा पत्र-पत्रिकाओके आभारी है

संस्थाएँ : साबरमती आश्रम सरक्षक तथा स्मारक न्यास और सग्रहालय, नवजीवन ट्रस्ट और गुजरात विद्यापीठ ग्रन्थालय, अहमदाबाद, गाधी स्मारक निधि और सग्रहालय, नई दिल्ली, मैसूर सरकार, राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता, नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्ली, मद्रास पुस्तकालय सघ और वुडब्रुक कॉलेज, बर्मिघम।

व्यक्ति : श्री एम० एस० केलकर, श्री कनुभाई मशरूवाला, अकोला, श्री कान्तिलाल गाधी, श्रीमती गगाबहन वैद्य, बोचासण, श्री घनश्यामदास बिडला, कलकत्ता, श्री जयरामदास दौलतराम, नई दिल्ली, श्री जीवनजी डाह्याभाई देसाई, अहमदाबाद, श्रीमती जेसी हॉयलैंड, फॉवे, कॉर्नवॉल, श्री द० बा० कालेलकर, नई दिल्ली, श्री नारणदास गाधी, राजकोट, श्री प्रभुदास गाधी, श्रीमती प्रेमलीला ठाकरसी, श्रीमती प्रेमाबहन कटक, सासवड, श्री बनारसीलाल बजाज, श्री भगवानजी पुरुषोत्तम पण्ड्या, सेवाग्राम, वर्धा, श्रीमती मनुबहन मशरूवाला, श्री महेश पट्टणी, श्रीमती मीराबहन, गाडने, ऑस्ट्रिया, श्रीमती मेरी बार, श्री रमणीकलाल मोदी, अहमदाबाद, श्रीमती लक्ष्मीबहन खरे, अहमदाबाद, श्रीमती वनमाला देसाई, श्रीमती वसुमती पण्डित, श्री वालजी गोविन्दजी देसाई, पूना और श्री शान्तिकुमार मोरारजी।

पुस्तकें : 'ए बच ऑफ ओल्ड लेटर्स', 'इन द शेडो ऑफ द महात्मा', 'कोई शिकायत नही', 'गाधीजीकी दिल्ली डायरी, खण्ड–१', 'पॉचवे पुत्रको बापूके आशीर्वाद', 'बापूजीनी शीतल छायामा', 'बापुना पत्रो – ६ ग० स्व० गगाबहेनने', 'बापुना पत्रो – ४ मणिबहेन पटेलने', 'बापुना पत्रो – २. सरदार वल्लभभाईने', 'बापुना बाने पत्रो', 'बापुनी प्रसादी', 'मध्यप्रदेश और गाधीजी', 'महात्मा लाइफ ऑफ मोहनदास करमचन्द गाधी', खण्ड-३ और 'माई डियर चाइल्ड'।

पत्र-पत्रिकाएँ : 'अमृतबाजार पत्रिका', 'द इन्डियन एन्युअल रजिस्टर', खण्ड–२, 'द साइनो-इडियन जरनल', 'बॉम्बे क्रॉनिकल', 'मद्रास मेल', 'हरिजन', 'हरिजनबन्धु', 'हरिजन सेवक' 'हितवाद', 'हिन्दुस्तान टाइम्स' तथा 'हिन्दू'।

अनुसन्धान एव सन्दर्भ-सम्बन्धी सुविधाओके लिए सूचना एव प्रसारण मन्त्रालयका अनुसन्धान और सन्दर्भ विभाग, राष्ट्रीय अभिलेखागार और श्री प्यारेलाल नैयर, नई दिल्ली हमारे धन्यवादके पात्र है। प्रलेखोकी फोटो-नकल तैयार करनेमे मदद देनेके लिए हम सूचना एव प्रसारण मन्त्रालयके फोटो-विभाग, नई दिल्लीके भी आभारी है।

पाठकोंको सूचना

हिन्दीकी जो सामग्री हमे गाधीजीके स्वाक्षरोमे मिली है, उसे अविकल रूपमे दिया गया है। किन्तु दूसरो द्वारा सम्पादित उनके भाषण अथवा लेख आदिमे हिज्जोकी स्पष्ट भूले सुधार दी गई है।

अग्रेजी और गुजरातीसे अनुवाद करते समय उसे यथासम्भव मूलके समीप रखनेका पूरा प्रयत्न किया गया है, किन्तु साथ ही भाषाको सुपाठ्य बनानेका भी पूरा ध्यान रखा गया है। जो अनुवाद हमे प्राप्त हो सके है, उनका हमने मूलसे मिलान और सशोधन करनेके बाद उपयोग किया है। नामोको सामान्य उच्चारणके अनुसार ही लिखनेकी नीतिका पालन किया गया है। जिन नामोके उच्चारणमे सशय था, उनको वैसा ही लिखा गया है जैसा गाधीजीने अपने गुजराती लेखोमे लिखा है।

मूल सामग्रीके बीच चौकोर कोष्ठकोमे दिये गये अश सम्पादकीय है। गाधीजीने किसी लेख, भाषण, आदिका जो अश मूल रूपमे उद्धृत किया है, वह हाशिया छोडकर गहरी स्याहीमे छापा गया है। लेकिन यदि ऐसा कोई अश उन्होने अनूदित करके दिया है तो उसका हिन्दी अनुवाद हाशिया छोडकर साधारण टाइपमे छापा गया है। भाषणोकी परोक्ष रिपोर्ट तथा वे शब्द जो गाधीजीके कहे हुए नही है, बिना हाशिया छोडे गहरी स्याहीमे छापे गये है। भाषणो और भेटकी रिपोर्टोके उन अशोमे जो गाधीजीके नही है, कुछ परिवर्तन किया गया है और कही-कही कुछ छोड भी दिया गया है।

शीर्षककी लेखन-तिथि दाये कोनेमे ऊपर दे दी गई है, जहाँ वह उपलब्ध नही है, वहाँ अनुमानसे निश्चित तिथि चौकोर कोष्ठकोमे दी गई है और आवश्यक होनेपर उसका कारण स्पष्ट कर दिया गया है। जिन पत्रोमे केवल मास या वर्षका उल्लेख है उन्हे आवश्यकतानुसार मास या वर्षके अन्तमे रखा गया है। शीर्षकके अन्तमे साधन-सूत्रके साथ दी गई तिथि प्रकाशनकी है। गाधीजीकी सम्पादकीय टिप्पणियाँ और लेख, जहाँ उनकी लेखन-तिथि उपलब्ध है अथवा जहाँ किसी दृढ आधार पर उसका अनुमान किया जा सका है, वहाँ लेखन-तिथिके अनुसार और जहाँ ऐसा सम्भव नही हुआ है, वहाँ उनकी प्रकाशन-तिथिके अनुसार दिये गये है।

साधन-सूत्रोमे 'एस० एन०' सकेत साबरमती सग्रहालय, अहमदाबादमे उपलब्ध सामग्रीका, 'जी० एन०' गाधी स्मारक निधि और संग्रहालय, नई दिल्लीमें उपलब्ध

कागज-पत्रोका, 'एम० एम० यू०' गाधी स्मारक निधि और सग्रहालयकी मोबाइल माइक्रोफिल्म यूनिट द्वारा तैयार कराई गई रीलोका, और 'सी० डब्ल्यू०' सम्पूर्ण गाधी वाङ्मय (कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गाधी) द्वारा सगृहीत पत्रोका सूचक है।

सामग्रीकी पृष्ठभूमि का परिचय देनेके लिए मूलसे सम्बद्ध कुछ परिशिष्ट दिये गये है। अन्तमे साधन-सूत्रोकी सूची और इस खण्डसे सम्बन्धित कालकी तारीखवार घटनाएँ दी गई है।

विषय-सूची

१. कुछ प्रश्न

मेरी फाइलमे हरिजनोके कई पत्र पडे हुए है, जिनमे मुझसे अनेक प्रश्न पूछे गये है। यहाँ मै सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न ही ले रहा हूँ। इन सवालोका जवाब देनेके पहले मै पत्र-लेखकोको एक चेतावनी दे देना चाहता हूँ। वह यह कि वे सिर्फ सवाल पूछनेकी ही नीयतसे सवाल न पूछे, अथवा इससे भी बुरी बात तो यह है कि अपना विज्ञापन करानेकी खातिर प्रश्न न पूछे। उच्च या सवर्ण कहलानेवाले लोगोमे जो दुर्गुण और दोष है, उनसे तो हरिजन भाई अपनेको दूर ही रखे, उनसे मेरी यह प्रार्थना है। हरिजन-कार्यकर्त्ताओकी सख्या अभी बहुत ही थोडी है। मै चाहता हूँ कि वे शुद्ध, निष्कलक चरित्रवाले और स्वार्थशून्य रहे, क्योकि उन्हे बहुत ही बडा बोझ उठाना है। यह तो मै बारम्बार इस पत्रमे कह चुका हूँ कि अस्पृश्यताके शापसे अपनेको मुक्त करना सवर्ण हिन्दुओका धर्म है। अन्तमे, हरिजनोका उद्धार तो उनके अपने निजी प्रयत्नसे ही होगा। ऊपर मैंने जो सलाह दी है, उसके अनुसार मै यहाँ पत्र-लेखकोके नाम नही दे रहा हूँ, और मुझे आशा है कि वे मेरी इस बातको स्वीकार कर लेगे।

पहला प्रश्न जो मै लेता हूँ वह यह है

> **आम तौरसे हरिजन-सेवाका काम शहरोमे हो रहा है, पर गाँवोमे तो लगभग कुछ भी काम नही किया जा रहा है। सेवा-कार्यकी सच्ची आवश्यकता तो गाँवोमे ही है। इसके लिए क्या किया जाये?**

मुझे भय है कि पत्र-लेखकने जो कहा है, वह अधिकाशमे सच है। बदकिस्मतीसे सुधारकके आगे जो भगीरथ कार्य पडा हुआ है, उसे देखते हुए काम करनेवाले तो बहुत ही कम है और ज्यादातर हरिजन-सेवक नागरिक जीवनके अभ्यस्त होनेके कारण गाँवोमे जाकर बसना पसन्द नही करते। इस प्रश्नपर [अखिल भारतीय हरिजन-सेवक सघ] के केन्द्रीय बोर्डने पूरा-पूरा ध्यान दिया है, और गावोमे सेवक भेजनेका प्रयत्न जारी है। इसमे सघको कुछ सफलता भी मिली है। इसलिए इस प्रश्नका कि "इसके लिए क्या किया जाये", जवाब यह है कि यह प्रयत्न और भी तेजीसे चलाया जाये। गाँवोमे हरिजन-सेवाका कार्य करनेवाले या तो खोज निकालने है या तैयार करने है। बस, एक बार गाँवोमे जा बसनेका जहाँ उनका डर दूर हुआ, तहाँ आजकी अपेक्षा वे फिर अधिक सख्यामे मिलने लगेगे। कोशिश जारी रखनेपर सफलता मिल कर रहेगी।

दूसरा प्रश्न यह है

सवर्ण हिन्दू अगर हरिजनोको अपने घरमे नौकर रख ले, तो क्या अस्पृश्यता शीघ्रसे-शीघ्र दूर नही हो जायेगी?

यह कोई नई सलाह नही है। स्वामी श्रद्धानन्दजी तो इसपर बहुत जोर दिया करते थे कि सवर्ण हिन्दू जिस प्रकार दूसरी जातिवालोको घरमे नौकर रखते है, ठीक उसी प्रकार हरिजनोको भी उन्हे नौकर रख लेना चाहिए। पर मेरे विचारसे तो हरिजनोको जब घरमे आम तौरसे नौकर रखने लगेगे, तब अस्पृश्यता-निवारणके लिए यह कार्य सिर्फ उत्तेजनरूप ही नही होगा, बल्कि यह इस बातका चिह्न होगा कि अस्पृश्यताका नाश हो गया। तो भी ऐसे हरएक सुधारकका जिसने अपने घरसे अस्पृश्यताको निकाल दिया है, यह कर्त्तव्य है कि वह अपने घरमे एक हरिजन नौकर रख ले। सुधारक यदि एकाध हरिजन-बालक या कन्या को बतौर नौकरके नही, बल्कि कुटुम्बीके रूपमे रख ले, तो निःसन्देह यह बहुत ही अच्छा काम हो।

तीसरा प्रश्न यह है

अस्पृश्यता-निवारणकी इस लड़ाईमे खुद हरिजनोको किस तरह भाग लेना चाहिए?

इस सवालका जो जवाब मै पहले अनेक बार दे चुका हूं, वही फिर देता हूँ। हरिजनोको खूब जोशके साथ अपने अन्दर सुधार करना चाहिए। किसीके लिए यह कहनेको न रह जाये कि उनमे अमुक बुराई है।

चौथा प्रश्न यह है

खेड़ा जिलेके दो गाँवोमें हरिजनोका इसलिए बहिष्कार कर दिया गया है कि उन्होने मरे हुए ढोर उठानेके लिए सवर्ण हिन्दुओसे यथोचित मजदूरी माँगी थी। ऐसे मामलोमें हरिजन क्या करे?

मै यह बात सहर्ष कह सकता हूं कि एक गावमे तो वहाके हरिजन-सेवक सघके प्रयत्नसे बहिष्कार उठा लिया गया है और इस लेखके लिखते समय दूसरे गाँवके बारेमे इतनी खबर मिली है कि वहाँ भी मैत्रीपूर्ण समझौता हो जानेकी पूरी-पूरी सम्भावना है। मगर मान लो कि किसी गाँवमे सवर्ण हिन्दू हठपर ही तुले हुए है और हरिजनोका बहिष्कार चालू कर रखा है, तो ऐसे अवसर पर हरिजनोमे अगर तनिक भी आत्माभिमान शेष है, तो उन्हे भी बिना उचित मजदूरी पाये काम न करनेका आग्रह जारी रखना चाहिए, और यदि उनसे बहिष्कार बर्दाश्त न किया जाये, तो शान्तिसे उस गाँवको छोडकर वे कही दूसरी जगह चले जाये। मै जानता हूँ कि कहनेमे तो यह बात सहल है, पर करना कठिन है। मुझे यह भी मालूम है कि मेरे कहे अनुसार मार्ग ग्रहण करनेकी हरिजनोमे अभी वह जागृति भी नही आई है। किन्तु मुझे दृढ विश्वास है कि वह समय बडी तेजीसे आ रहा है, जब इस प्रकारका बहिष्कार करनेके पहले सवर्ण हिन्दुओको एक नही सौ बार विचार करना पड़ेगा।

पाँचवाँ प्रश्न यह है

आपने यह प्रस्ताव रखा था कि हरिजन-सेवक संघको सलाह देनेके लिए हरिजनोका अपना एक अखिल भारतीय परामर्शदाता-मण्डल बनना चाहिए। आखिर फिर इसका हुआ क्या?

यह तजवीज मैने अहमदाबादमे पेश की थी, और वह प्रान्तीय सघके सम्बन्धमे थी। लेकिन जो बात प्रान्तीय सघके सम्बन्धमे ठीक है, वही अखिल भारतीय सघके विषयमे भी कही जा सकती है। पर इतना याद रखना चाहिए कि यह सलाह हरिजनोको दी गई थी, इसलिए इस दिशामे काम करना और ऐसी परामर्शदात्री समितियोको नियुक्त करना उन्हीका काम है। नि सन्देह अखिल भारतीय और प्रान्तीय बोर्ड ऐसी समितियोका स्वागत ही करेगे और उनका काम भी बडी अच्छी तरहसे चलेगा। बहुत-कुछ काम उनसे हो सकेगा।

छठा प्रश्न यह है

क्या आपको मालूम है कि कुछ मन्दिर, जो हरिजनोके लिए खोल दिये गये थे, बादमे बन्द कर दिये गये है? इस समस्याका हल आप किस तरह करेगे?

फिलहाल हमे यह मान लेना चाहिए कि वे मन्दिर या तो कुछ दबावके कारण खोल दिये गये थे, या उन्हे हरिजनोके लिए बन्द कर देनेका बादमे ट्रस्टियोपर दबाव डाला गया। ट्रस्टियोको मजबूर करनेके एक-दो उदाहरण मुझे मालूम है। दोनो ही हालतोमे मेरा हल तो यह है कि फिलहाल हमे यह स्थिति सहन ही कर लेनी चाहिए।

सातवाँ सवाल यह है

मन्दिर-प्रवेशका आन्दोलन अब, मालूम होता है, जैसे बिलकुल ठप ही हो गया है। इस सम्बन्धमे क्या आप कुछ करनेका विचार कर रहे है?

मेरा तो ऐसा खयाल नही है कि मन्दिर-प्रवेशका आन्दोलन खत्म हो गया है। आन्दोलनका दिखाऊ रूप बेशक बन्द कर दिया गया है, लेकिन हरिजनोके लिए नये मन्दिर बनवाने और पुराने मन्दिरोके द्वारोको खुलवानेका प्रयत्न तो बराबर वैसी ही दृढताके साथ आज भी जारी है, जैसा कि 'हरिजन' के पृष्ठोमे देखा जा सकता है।

आठवाँ प्रश्न यह है

यदि सभी पक्षके लोग आपसमे समझौता करके यरवडा-समझौतेमे फेरफार करना चाहे, तो क्या आप उसका समर्थन करेगे?

यह तो स्वाभाविक बात है कि अगर सभी पक्ष एकमत हो, तभी समझौतेकी शर्तोंमे रद्दोबदल किया जायेगा। पर जहाँतक मेरा अपना सम्बन्ध है, मै यही कहूँगा कि उस इकरारनामेमे कोई ऐसा फेरफार कभी नही हो सकता, जिससे हरिजनोको कोई नुकसान उठाना पडे।

नवाँ सवाल यह है

बम्बईकी विधान-सभामें जो यह प्रस्ताव पास हुआ था कि हरिजनोंके लिए सार्वजनिक कुएँ खोल दिये जायें, उसपर न तो बम्बई सरकारने और न जनताने ही अबतक कोई अमल किया है। क्या आपकी राय है कि ऐसी स्थितिमें हरिजन सत्याग्रह करें?

पहले तो इस सम्बन्धमें मेरे पास कोई ठीक-ठीक खबर नहीं आई है, दूसरे, मौजूदा परिस्थितिमें, किसी भी तरह मैं सत्याग्रह करनेको सलाह देनेमें असमर्थ हूँ।

दसवाँ और अन्तिम प्रश्न यह है

क्या आप इस विचारसे सहमत हैं कि अस्पृश्यता-निवारणके सम्बन्धमें हरिजन-नेताओंका एक अखिल भारतीय सम्मेलन किया जाये?

निश्चय ही ऐसा कोई भी सम्मेलन, जो पूरी तरह प्रातिनिधिक हो, उपयोगी होगा। इसलिए ऐसे किसी सम्मेलनका तो मुझे स्वागत ही करना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १६-९-१९३३

२. पत्र : मार्गरेट स्पीगलको

१६ सितम्बर, १९३३

चि० अमला[1],

मुझे तुम्हारे कई पत्र मिले। तुम्हें मेरे प्रति अपने मनका भय छोड़ देना चाहिए। आश्रममें मैंने जो-कुछ भी कहा और किया था वह शुद्ध प्रेमभावसे और तुम्हारे भलेके लिए कहा और किया गया था। मैं जो-कुछ कहता हूँ यदि तुम्हें उसमें विश्वास है तो तुम मुझसे क्यों डरो? इसलिए तुम्हें मुझसे कतराने या मुझसे भय करनेकी जरूरत नहीं है। ब्लड-प्रेशर होनेके बावजूद मैं ठीक-ठाक हूँ।

सप्रेम,

बापू

[अंग्रेजीसे]

स्पीगल पेपर्स, सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय

१. एक जर्मन महिला, जो आश्रममें हरिजन सेवा-कार्यका प्रशिक्षण प्राप्त कर रही थीं। गांधीजीने बादमें उनका भारतीय नाम 'अमला' रख दिया था।

३. बातचीत : स्त्री-कार्यकर्त्ताओंसे[1]

[१६ सितम्बर, १९३३][2]

मै तो बरसोसे कहता आया हूँ कि जो बातको समझ गये है उन्हे खादीके उत्पादनमे हाथ बॅटाना चाहिए। लेकिन किसीने मेरी रायको स्वीकार नही किया। यदि यह राय मान ली गई होती तो खादी आज व्यापक हो चुकी होती और इतना कष्ट नही उठाना पडता। यदि रोज आधा घटा काता जाये तो इसमे जाता ही क्या है! परन्तु आज तो लगता है कि इसमे बहुत-कुछ जाता है। जो बुनकर हाथका सूत बुननेको तैयार है उन्हे हाथका सूत नही मिल पाता। ऐसे कितने ही जुलाहे है जिन्हे मुझे मजबूर होकर कहना पडा है कि मै तुम्हारे लिए हाथकते सूतकी व्यवस्था करता हूँ, पर यदि मिल ही न पाये तो तुम लोग भले ही मिलके सूतका उपयोग करो। मुझे कोई तुम्हारा धन्धा थोडे ही बन्द करना है। आधा घटा कातनेकी बात तो मैने तुम लोगोके समक्ष ऐसी पेश की थी जो अत्यन्त सुगम थी, यही माना जाना चाहिए। खादीके बिक्री-कार्यमे तुम्हे लोगोकी बाते सुननी पडती होगी तो उन्हे सहन कर लेना, तुम इसी योग्य हो। पर मैने जो-कुछ कहा है, यदि तुम उसपर चलो तो बाते सुननेका अवसर ही न आये।

प्रश्न : बहने जब कातती थीं तब कातनेकी व्यवस्था नही थी।

गाधीजी : यह सच है, यह बात मेरे ध्यानमे लाई गई थी। लेकिन स्त्रियाँ जो-कुछ कातती थी उसे तो सूत कहा ही नही जा सकता था। यदि बहने रस्से कातने लगे तो बुनकर क्या बुने? बुनकर केन्द्र तो अपने पास कितने ही है। इसलिए दोष तो हमे बहनोको ही देना होगा, क्योकि उन्होने कातना सीखनेका प्रयत्न ही नही किया।

[गुजरातीमे]

हरिजनबन्धु, २४-९-१९३३

१ और २ यह बातचीत चन्द्रशकर शुक्लके "साप्ताहिक पत्र" में "सरल मार्ग" शीर्षकके अन्तर्गत प्रकाशित हुई थी। गाधीजीकी ६५ वी वर्षगाँठपर दो बहनें गाधीजीके पास गईं। उनमें से एक बहनने खादीकी बिक्रीमें जो मदी आ गई थी उसकी शिकायत की थी। गाधीजीकी यह वर्षगाँठ गुजराती विक्रम सम्वतके अनुसार १६ सितम्बरको पड़ी थी।

४. उत्तर : पत्र-लेखकोंको[1]

[१७ सितम्बर, १९३३ से पूर्व]

सुख और दुख गर्मी और सर्दीके समान हमारे पीछे लगे रहते हैं।[2] एक दिन मोटर हो और दूसरे दिन पाँव-प्यादे चलना पडे तो इसमे दुख माननेका क्या कारण है? हिम्मत और धीरज कभी न छोडना। यही सच्ची दौलत है।

जहाँ सेवा करनेका अवसर मिले वहाँ सेवा करना हमारा धर्म है। सुख-दुख तो मनके माननेकी बात है। तुम्हे दुख हो ही क्या सकता हे? रामनामको भूलना ही सच्चा दुख है। यह तो तुम नही भूलते।

इसमे तनिक भी सन्देह नही कि ईश्वरने तुम्हे बचा लिया है। तुमसे उसे अधिक सेवा लेनी है।

जो शरीर एक दिन नष्ट होनेवाला है उसमे यदि कुछ बुराई[3] घुस आये तो हम क्या कर सकते है? लेकिन ऐसी सहनशक्ति सब नवयुवकोको कैसे दी जा सकती है? बूढोके मनसे भी जीनेकी आशा जब नही छूटती तब बच्चोका क्या कहना? परमेश्वर तो मबको बचानेवाला है ही।

जो बात तुमपर और मुझपर लागू होती हे वह हरिजनोपर भी लागू होनी चाहिए, इमका आग्रह नही किया जा सकता। हरिजनोको तो हमने अपने समाजसे बाहर रखा है। और फिर, आज जो वस्तुस्थिति है हमे उस ओर भी देखना चाहिए। यदि हम कुछ-एक लोगोको छोड दे तो आज स्कूल-कालेजोके बहिष्कार पर कहाँ अमल किया जा रहा हे? इसलिए यदि हम हरिजनोसे कहे कि तुम लोग यदि सामान्य स्कूल कालेजोमे जाओगे तो तुम्हे मदद नही मिलेगी, तो यह उनके प्रति घोर अन्याय होगा।[4]

मै अपनी शक्तिका अधिकाश भाग हरिजन सेवा-कार्यमे लगा ही रहा हूँ, और मै जेलके भीतर रहूँ अथवा बाहर, जीवनकी आखिरी घडीतक मै हरिजन-कार्य ही करता रहूँगा।[5]

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, १७-९-१९३३

१. यह और इसके बादके चार शीर्षक १७-९-१९३३ के **हरिजनबन्धु** में प्रकाशित चन्द्रशंकर शुक्लके "साप्ताहिक पत्र" से लिये गये है।

२ पत्र-लेखकने गाधीजीको अपनी आर्थिक स्थितिके बारेमे लिखा था।

३ इस पत्र-लेखककी बाँहकी हड्डी टूट गई थी।

४ असहयोगको माननेवाले एक हरिजन सेवकने पूछा था कि गाधीजी एक समय जिन सरकारी स्कूलो और कालेजोके बहिष्कारकी बात करते थे, अब उन्ही स्कूलो और कालेजोंमें जानेके लिए हरिजनोको छात्रवृत्ति क्यो दिलवाते है।

५ पत्र-लेखकने गाधीजीको अपनी शक्ति हरिजन-सेवामें केन्द्रित करनेके लिए लिखा था।

५. एक पत्र[1]

[१७ सितम्बर, १९३३ से पूर्व]

एक हदतक 'आत्म-निन्दा' भी आवश्यक है। परन्तु मैने देखा है कि कुछ-एक लोगोको आत्म-निन्दामे अतिरेक करनेकी आदत ही पड जाती है, और इस प्रकार वे फिर प्रगति कर ही नही सकते। आत्म-निन्दाका उपयोग तो इतना-भर होना चाहिए कि हम प्रगति कर सके। भूतकालमे हमारे हाथो जो दोष हुए हो और आज हम उन्हे न कर रहे हो तो उनका बार-बार चिन्तन करके आत्माका उत्पीडन करनेका अर्थ तो दोषकी वृद्धि करनेके समान ही है। कोई महादोष हो उसे तो प्रकट कर ही देना चाहिए, इसे मै स्वीकार करता हूँ। सत्यका पुजारी तो इसके अलावा कुछ कर ही नही सकता। पर इस दोषको स्वीकार करते हुए किसी भी प्रकारका बोझ मनपर नही होना चाहिए। चढी हुई मैलको एक बार धो देनेके बाद उसी मैलका बोझ भला खुदपर कोई रहने देगा? परन्तु तुम कुछ ऐसा ही करते जान पडते हो। हममे सत्यके प्रकट होनेपर ही हमारे समक्ष असत्य छिप नही पायेगा। लेकिन हममे कौन-सा असत्य किस स्थानमे छिपा है, इसे हम सदा ही नही खोज पायेंगे। मेरा लिखनेका हेतु केवल इतना ही है कि तुम्हे अपना मन हलका कर लेना चाहिए। यह भक्तिका ही लक्षण है। भगवानका सहारा लेनेके बाद भक्त कभी घबराता नही। भूतकालकी याद करके वह कभी रोने नही बैठेगा। वह भविष्यके विषयमे भी निश्चिन्त रहेगा। वर्तमानपर तो उसका काबू है ही। उसकी सँभाल वह करेगा और उसको सँभालनेकी कुँजी भगवानने उसे दे ही रखी है। "जो-कुछ तू करे वह मुझे अर्पण कर।"[2] भक्त यदि इतना कर पाये तो वह मुक्त होकर नाच सकता है। यदि तुम अपना मन इस प्रकार हलका कर सको तो शारीरिक और मानसिक सारे ही रोग चले जाये और तुमसे भरपूर सेवा ली जा सके। अपना मन अवश्य ही हलका कर लेना।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, १७-९-१९३३

१. यह "भक्तिका लक्षण" शीर्षकसे प्रकाशित किया गया था। यह एक हरिजन-कार्यकर्त्ता के पत्रके उत्तरमे लिखा गया था, जो अपने स्वभावगत दोषोंके कारण अत्यन्त सतप्त था।

२. **श्रीमद्भगवद्गीता**, ९, २७।

६. बातचीत : एक हरिजन-कार्यकर्त्तासे[1]

[१७ सितम्बर, १९३३ से पूर्व]

सेवाकी मेरी रीति ही निराली है। जिसे सर्वोत्तम काम करना है, जो शुद्ध और सच्चा सेवक बनना चाहता है, उसमे इतनी योग्यता तो होनी ही चाहिए। यो तो जिसे जो काम करना हो वह किया करे, उसे क्या कोई रोकता है? परन्तु हमारा काम शीघ्रतासे नही होता, इसका कारण यही हे कि सेवक जन पूरी योग्यता प्राप्त किये बिना ही अपने जिम्मे काम ले लेते है।[2]

विलायत पढ़ने भेजे तो मैं जानेको तैयार हूँ।

इतने-से कामके लिए इतना अधिक खर्च किया जाये! यहॉ धन्धेका जितना शिक्षण मिल सके, उतना ग्रहण करो, विलायतका विचार फिर किया जाये। और फिर, विदेश कितने लोगोको भेजा जा सकता हे?

तो फिर कोई सामाजिक सेवाका काम बताइये।

सब इसीमे आ जाता है। सीखते हुए किसीकी सेवा नही हो सकती, ऐसा थोडे ही हे। तुममे योग्यता होनी चाहिए। योग्यताके बिना जो तुम चाहते हो वह नही मिल सकता। सेवाके नामपर दौड-धूप तो बहुत करते है, पर इससे क्या जनताकी सेवा हो जाती हे? जिसे रचनात्मक काम करना है, जनताकी सच्ची और शुद्ध सेवा करनी है उसका तो तरीका ही जुदा होता हे। लोगोको अगर चरित्रवान् बनाना हो, तो तुममे उतनी शक्ति होनी चाहिए। उद्यममे अगर तुम्हारा मन न लगे तो कोई नोकरी कर लो और ईमानदारीसे नौकरी करो। इसस भी कौमकी सेवा हो सकती हे। अगर तुम्हारी यह छाप लोगोपर पडे कि तुमसे अधिक पवित्र आदमी नही मिलता, तो वह भी तुम्हारी जन-सेवा ही कही जायेगी। किसी मनुष्यके बारेमे यदि लोग यह कह सके कि इसकी इमानदारीकी तो सीमा ही नही है, तो क्या यह कोई छोटी बात है? ऐसे ईमानदार नौकर बडे आदमियोके यहॉ सोलह आने कर्त्ता-धर्त्ता बन गये, इसके कई उदाहरण मै दे सकता हूँ। ऐसे नौकरोकी सेठ लोग पूजा करते है।

मुझे पैसा नही कमाना, मुझे तो त्याग करना है।

इसमे पैसा कमानेकी बात नही है। तुम्हे यदि इतनी प्रतिष्ठा मिल जाये कि हिन्दू-समाज यह कह सके कि एक प्रामाणिक हरिजन देखना चाहते हो तो यह रहा,

१ यह बातचीत "नन्दके समान बनो" शीर्षकसे प्रकाशित हुई थी।

२ हरिजन-कार्यकर्त्ता चरखे द्वारा सेवा करनेमें खुश नहीं थे और वे यह जानना चाहते थे कि बिना किसी पूर्व प्रशिक्षणके तुरन्त सेवा किस प्रकार की जा सकती है?

यह कोई मामूली बात नही है। मुझे आज यह कहना पडता है कि हरिजनोमे नन्द[1]-जैसा एक पुरुष पैदा हो गया है। नन्दको हुए चार-पाँच सौ वर्ष हो गये है, लेकिन उसकी कीर्तिगाथा आज भी गाई जाती है। नन्दके समान हरिजनोमे आज कोई पैदा क्यो नही हो सकता? उनके जमानेमे हो सके और आज नही हो सकते, ऐसा थोडे ही है। यदि हरिजन नन्द-जैसे हो जाये, तो फिर क्या कहना! मै तो सवर्णोमे अस्पृश्यता-निवारणका आन्दोलन चला रहा हूँ, और हरिजनोको भी उनका धर्म बताता हूँ।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, १७-९-१९३३

७. सलाह: एक कार्यकर्त्ताको[2]

[१७ सितम्बर, १९३३ से पूर्व]

प्रचारक तो मालवीयजी-जैसे हो, नारायण शास्त्री[3], लक्ष्मण शास्त्री[4] या श्रीधर शास्त्री पाठक-जैसे हो। वे तो शुद्ध कुन्दन-जैसे चरित्रवाले मानव होते है। भला ऐसे प्रचारक हम विज्ञापन देकर कैसे प्राप्त कर सकते है। ऐसे प्रचारक तो रटे हुए भाषण हमे दे जायेगे। इनसे हमारा काम कैसे बनेगा। अत यदि खरी मुहर नही मिल पाती तो क्या खोटे सिक्के लेकर हम काम चलायेगे। यह तो शेखचिल्लीकी-सी बात होगी। मुझे तो यह जरा भी पसन्द नही है। मैने तो इस प्रकार कभी कोई काम नही किया।

तो अब मै एकाएक यह कैसे कह दूँ कि मै प्रचारक तैयार कर रहा हूँ।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, १७-९-१९३३

१. चिदम्बरमके नन्दनार, तमिलनाडुके ६३ शैव सन्तोमेंसे एक।

२ यह लेख "कार्यकर्ताके गुण" शीर्षकसे प्रकाशित हुआ था। गांधीजीके समक्ष एक ऐसा सुझाव आया था कि कुछ वैतनिक प्रचारक अस्पृश्यताका मुकाबला करनेके लिए भेजे जायें। चन्द्रशंकर शुक्ल इस रिपोर्टके प्रारम्भमें यों लिखते है: "गांधीजी प्रचारकोमें कुछ विशेष गुणोकी अपेक्षा करते है, जैसे धर्म-सम्बन्धी ज्ञान और चरित्रकी पवित्रता आदि। वे कहते है कि हम प्रचारको व्यवसाय तो नही बना सकते। वह तो एक धार्मिक कार्य ही हो सकता है। वैतनिक प्रचारको वाली बात उन्होंने मंजूर नही की।"

३ नारायण शास्त्री मराठे उर्फ स्वामी केवलानन्द।

४. तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री जोशी।

८. बातचीत : गुरुकुल कांगड़ीके विद्यार्थियोंसे[1]

[१७ सितम्बर, १९३३ से पूर्व]

अपने चरित्रको शुद्ध करके ही हम हरिजन-सेवा कर सकते है। इसके लिए जिस शुद्धिकी आवश्यकता है वह भी खरी होनी चाहिए। अर्थात् तुम्हें इसके लिए तपस्या करनी चाहिए। इसी तपस्याके निमित्त मैने उपवास किये। इसका कुछ परिणाम तो तत्काल हुआ। और अभी बरसोतक इसका परिणाम बना रहेगा। सामान्य रूपसे तो हम आत्मशुद्धि करते है, परन्तु हरिजन-सेवाके लिए विशेष शुद्धिकी आवश्यकता है। और यह शुद्धि जितनी अधिक बन पडेगी उतनी ही अधिक हरिजन-सेवा हो सकेगी। यदि ऐसा एक भी मनुष्य हो तो उसका भी असर पडे बिना नही रहेगा। ऐसा मनुष्य हरिजनोके बीच जायेगा तो वहाँ भी काम कर सकेगा। सनातनियोंके बीच पहुँचेगा तो उनका हृदय भी द्रवित कर सकेगा। हरिजनोकी अपेक्षा तो सनातनियोकी शुद्धिकी अधिक आवश्यकता है, इस विषयमे मुझे जरा भी शका नही है। लेकिन जो लोग गर्वमे चूर है उन्हे कौन समझा सकता है? हमे सनातनियोंके बीच जाना होगा और उन्हे ममझाना होगा। यदि वे हमे गालियाँ देगे तो हम बदलेमे गाली नही देगे, यदि वे मारपीट करेगे तो हम मारपीट नही करेगे। यदि वे बीमार होगे तो हम उनकी सेवा-शुश्रूषा करेगे। वे आचार-विचारका बडी कठोरतासे पालन करते होगे तो हम उनसे भी अधिक कठोरताके साथ करेगे। उन्हे वेदादिका जो ज्ञान होगा, उससे कही अधिक ज्ञान हम प्राप्त करेगे। ऐसा करनेसे ही उनपर हमारा असर होगा। अस्पृश्यताका मूलोच्छेदन कठिन कार्य है। यह कार्य कोई स्वार्थका नही है, परमार्थ दृष्टिसे किया जाने योग्य है। इमके लिए हमे दिन-प्रतिदिन अधिकाधिक शुद्ध होना पडेगा।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, १७-९-१९३३

१ यह "शुद्धिरूपी पूँजी" शीर्षकसे प्रकाशित हुई थी।

९. ब्राह्मण क्या करे ?

"ब्राह्मण क्या करे" इस शीर्षकका जो लेख[1] मैंने गताकमे लिखा था, उसके सम्बन्धमे वही महाराष्ट्रीय सज्जन फिर लिखते है[2]

इस पत्रसे बहुत-से प्रश्न उठते है। ब्राह्मणोको जो कठिनाइयाँ उठानी पडती है, वह दूसरोको सहन नही करनी पडती, ऐसी बात नही है। आज एक नही तो अन्य कारणोसे नौकरी प्राप्त करनेमे सभीको थोडी-बहुत कठिनाई होती ही है। अबतक ब्राह्मणोको आसानीसे नौकरी मिल जाती थी। पर अब वह बात नही रही है। इसमे सन्देह नही है कि ब्राह्मणोकी जो हालत आज हो गई है या होती हुई जान पडती है, वैसी हालत अन्य जातियोकी कुछ वर्ष पहले थी। जहाँ जात-पाँतका भेद होता है, वहाँ ऐसी उन्नति-अवनति होती ही रहती है। इसलिए किसीको मन्तोषजनक आश्वासन देना कठिन है।

इस कठिनाईके मूलमे एक बात है जो विचारणीय है। नौकरियोकी सख्या सदा ही सीमित रहेगी। और नौकरीके उम्मीदवारोकी सख्या समयके साथ-साथ बढा ही करती है। इसका सीधा रास्ता यही है कि नौकरीका त्याग करनेकी प्रवृत्ति बढानी चाहिए और अन्य धन्धोकी ओर रुचि पैदा करनी चाहिए और तत्सम्बन्धी योग्यता प्राप्त करनी चाहिए। इस फेरफारके सन्धिकालमे, कष्ट अवश्य होता है, परन्तु फल अच्छा ही निकलता है। अन्य देशोमे यही अनुभव किया गया है, और जो अबतक नौकरी करते थे, वे अब अन्य धन्धोमे लग गये है।

दूसरी बात ध्यान देने योग्य यह है कि खर्च कम किया जाये, पारिवारिक और व्यक्तिगत आवश्यकताएँ कम की जाये। जीवनको सादा बनानेकी आवश्यकता सारे ससारमे अधिकाधिक स्पष्ट होती जाती है। इस आशयकी एक अग्रेजी कहावत है कि 'सादा जीवन और उच्च विचार"। भारतमे तो सादगी निरा सद्गुण ही नही, बल्कि धर्मका एक अग भी है।

कुटुम्बकी स्त्रियोको भी यथाशक्ति घरके खर्चमे सहयोग देनेकी आवश्यकता है। मजदूर वर्गकी स्त्रियाँ तो घरका काम-काज करती हुई भी कुछ कमाई कर लेती है। अन्य स्त्रियाँ भी ऐमा क्यो न करे? एक कुटुम्बमे खानेवाले तो बहुत और कमाने-

१. १० सितम्बर, १९३३ का, देखिए खण्ड ५५ पृ०, ४४०-४१।

२. पत्र यहाँ नही दिया गया है। पत्र-लेखकने इसमें यह बताया था कि ब्राह्मण ब्रह्म-ज्ञानके प्रचार द्वारा अपनी रोजी नही कमा सकते, क्योंकि आम जनताको ये सब बातें पसन्द नहीं हैं। इसलिए बस एक ही विकल्प है कि नौकरी कर ली जाये। ब्राह्मण लोग इस सम्बन्धमें किन्ही खास सुविधाओकी माँग नही करते, लेकिन इतना जरूर चाहते है कि ब्राह्मण होनेके कारण उन्हें नौकरीके मामलेमें किसी कठिनाईका मामना न करना पड़े।

वाला केवल एक ही हो, तो उसके ऊपर अनुचित भार पड़े बिना न रहेगा। इसलिए जिन ब्राह्मणोको नौकरी मिलनेमे कठिनाइयाँ दिखाई पड़े, उन्हे इस सलाहपर भी ध्यान देना चाहिए।

[गुजरातीसे]
हरिजनबन्धु, १७-९-१९३३

१०. पत्र : जमनालाल बजाजको

१७ सितम्बर, १९३३

चि० जमनालाल,

अखबारोंमे तुमने सब पढ़ लिया होगा। मै तुम्हे जानबूझकर ब्योरेवार नही लिखता था। तुम्हे किसी प्रकारका दायित्व सौंपते हुए आजकल मुझे सकोच होता है। चिखल्दासे तुम्हे एकदम वापस आना पड़ा, यह भी अच्छा नही लगा। अब तो जब मिलेगे तब बात करेगे। मुझे भी आरामकी जरूरत होगी। गजानन[1] की बहू गोपी बहुत करके मेरे साथ ही होगी और किसन[2] नामक एक अत्यन्त भली महिलाको भी मैने अपने साथ आनेका न्योता दिया है। उसका स्वास्थ्य अच्छा था, लेकिन अब कुछ गड़बड़ा गया है। अपने स्वभावानुसार इन सबका बोझ तुम अपने कन्धोपर उठा लोगे, यह मै जानता हूँ, लेकिन कोशिश करूँगा कि हम बोझरूप न हो।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

जवाहरलाल आज रात लखनऊ जा रहे है। कदाचित् बादमे वर्धा जाये। ज्ञान आ गई होगी।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९२५) से।

१ रामेश्वरदास बिड़लाके पुत्र।
२. किसन घुमतकर

११. श्रद्धांजलि : एनी बेसेटको

[२० सितम्बर, १९३३][1]

डॉ० बेसेटको उनकी लम्बी और कष्टदायक बीमारीसे मृत्युके हाथो मुक्ति दिलानेके लिए जहाँ लोग ईश्वरको धन्यवाद देगे वही हजारो लोग उनकी मृत्युपर शोक करेगे। जबतक भारत जीवित है तबतक डॉ० बेसेटकी शानदार सेवाओकी याद भी जीवित रहेगी। भारतको अपना देश बनाकर और अपना सर्वस्व उसपर न्योछावर करके उन्होने भारतीयोका प्यार जीत लिया था।

मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, २१-९-१९३३

१२. भाषण : अहमदाबादमे – १[2]

२१ सितम्बर, १९३३

इस शुभ कार्यको सम्पन्न करनेका काम मुझे सौप कर आपने मुझपर अनुग्रह किया है। इसको करते हुए मै सम्मानित हुआ हूँ, यह मेरी मान्यता है। अध्यक्ष महोदय[3] ने वैसे मेरे लिए कहनेके लिए कुछ भी बाकी नही रखा है। सर चिनुभाईकी दानशीलताकी एक लम्बी तालिका उन्होने कह सुनाई है। इसपर विचार करते हुए मेरे मनमे चट यही खयाल आया कि सर चिनुभाईकी दानशीलता पारसियोकी ससार प्रसिद्ध दानशीलताकी कोटिकी हे। सर गिरिजाप्रसादने कहा कि सर चिनुभाईकी दानवृत्ति केवल एक कौम या धर्मके लोगोके लिए ही नही थी, बल्कि सबके लिए थी। अहमदाबाद शहरके सारे निवासी उससे लाभ उठा सके, ऐसी थी। सर चिनुभाईने स्वय जो शिक्षा प्राप्त की और जिसे पाकर उन्होने इतना नाम पाया उसे प्रोत्साहन देनेमे उन्होने कुछ उठा नही रखा। अध्यक्ष महोदयने मुझे स्मरण दिलाया कि पहली बार अहमदाबादमे आनेके अवसरपर मुझे जो मानपत्र दिया गया था उसे प्रदान करनेवाले सर चिनुभाई ही थे।[4] वह प्रसग मेरी आँखोके समक्ष आज भी तरगित हो रहा है। सर गिरिजाप्रसादने सर चिनुभाईकी यह प्रतिमा अहमदाबाद-निवासियोको भेट की है, और अपनी पितृभक्तिकी थोडी-सी झाँकी हमे दी है। 'थोडी-सी झाँकी' मै इसलिए

१. डॉ० एनी बेसेंटका निधन २० सितम्बर, १९३३ को हुआ था।

२. यह भाषण सर चिनुभाई माधवलाल, बैरोनेटकी प्रतिमाका अनावरण करनेके अवसरपर दिया गया था।

३. मणिभाई चतुरभाई शाह, अहमदाबाद नगरपालिकाके अध्यक्ष।

४ देखिए खण्ड १३, पृष्ठ १७।

कह रहा हूँ कि कोई भी पुत्र अपना पितृऋण पूर्ण रूपसे नही चुका सकता। यह बात उन्होने सत्य ही कही है। हम सभी उनसे आशा रखे और ऐसी आशा रखनेके लिए उन्होने हमे एक कारण भी दिया है — कि जिस प्रकार सर चिनुभाईने कमाया और जिस तरह लुटाया वैसे ही उनके चिरजीव भी उतनी ही उदारताके साथ अपनी कमाईको लुटाये।

एक महत्त्वपूर्ण अवसरपर मैने कहा था कि धनवानको धन सचित करने और कमानेका अधिकार है। ससारमे साहस तो सदा कायम रहेगा ही। साहस रोका नही जा सकता। इसीलिए मै कहता हूँ कि धनवान पैसा भले ही कमाये, पर उस पैसेका उपयोग और उसका उदारतापूर्वक दान उसे यह समझकर करना चाहिए कि वह पैसा जनताके हितार्थ है। जिन कई आशाओके आसरे मै जी रहा हूँ, उनमे से मेरी एक आशा यह भी है कि अपने देशमे अमीर और गरीबके बीचमे सघर्ष न हो, कलह-क्लेश न बढे और दोनो ही अपने-अपने धर्मको समझकर उसका पालन करते रहे। आज दुनियामे पूंजीवाद और श्रमजीवी लोगोके बीच या अमीरो और गरीबोके बीच एक भारी सग्राम छिडा हुआ है। ईश्वर इस लडाई-झगडेसे हमारे देशकी रक्षा करे। परन्तु सिर्फ एक मनुष्यके सामना करनेसे क्या होता है? यह आशा तो तभी सफल हो, जब इस आदर्शका हममे से अनेक मनुष्य सिचन करे। इस प्रसगपर गिरिजाप्रसादके बहाने मै अहमदाबादके धनिकोसे कहना चाहता हूँ — क्योकि ईश्वरकी कृपासे यहाँ अनेक धनवान हैं — कि स्वर्गीय सर चिनुभाई जो दानशीलताकी विरासत छोड गये है, उसमे यहाँके धनिकोको अधिकाधिक वृद्धि करनी चाहिए। मैने जो आदर्श बताया है, उसकी पूर्तिका प्रयत्न करना धनिकोका काम है। मेरी यह एक महत्त्वाकाक्षा है कि अहमदाबाद भारतके सामने, ससारके सामने एक आदर्श उपस्थित करे।

इस प्रतिमाके अनावरणका शुभ कार्य करनेसे पूर्व मै एक बातका निवेदन करना चाहूँगा। यह प्रतिमा तो कितने ही दिन पूर्व तैयार हो चुकी थी लेकिन इसका अनावरण सरदार करे या मै करूँ, आप सबके इसी मोहके कारण यह कार्य इतने दिनो रुका रहा।[1] इसी बीच एकाएक मै जेलसे छूट गया और मुझसे यह कार्य करनेको कहा गया। मै इससे इनकार न कर सका। मै इसे ईश्वरका अनुग्रह मानता हूँ कि इस शुभ कार्यको करनेका सुप्रसग मुझे दिया गया। आप सब भाई-बहनोका आभार तो मै क्या मानूं? आप सबने तो यहाँ आकर सर चिनुभाईके प्रति आपके हृदयमे जो सम्मान है उसे अभिव्यक्त किया है। अहमदाबाद के नागरिकोने शहरकी जो सेवा की है उनके प्रति आपके मनमे सम्मान होना ही चाहिए। मेरी प्रार्थना है कि अहमदाबादके निवासी — धनिक और गरीब — सब सुखी हो।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, १-१०-१९३३

१. २२-९-१९३३ के **बॉम्बे क्रॉनिकल** में यहाँ इस प्रकार लिखा है महात्माजीको सरदार वल्लभभाईकी अनुपस्थिति बहुत ज्यादा महसूस हो रही थी और उन्होंने कहा कि यदि यह महान और महत्त्वपूर्ण कार्य उनके हाथों सम्पन्न होता तो ज्यादा अच्छा रहता।

१३. भाषण : अहमदाबादमे – २[1]

२१ सितम्बर, १९३३

आज प्रातःकाल ही आपने मुझसे एक शुभ कार्य करवाया और मुझे सम्मान दिया। अब यह दूसरा शुभ कार्य करवा रहे है। मै इन दोनो सम्मानोके लिए नगर-पालिका और अहमदाबादके नागरिकोका आभार मानता हूँ। इस प्रसगपर मै थोडी कठिनाईका अनुभव कर रहा हूँ। सर्वप्रथम तो मै उस सूचनाके सम्बन्धमे ही कह देना चाहता हूँ जो भाई रसिकलालने अभी दी है। मैने आज प्रातःकाल ही सुना कि इस पुस्तकालयके लिए मेरे नामका उपयोग किये जानेका विचार है। पर ऐसी एक भी सस्था नही है जिसके साथ अपना नाम जोडनेकी इजाजत मैने दी हो। मैने तो यह निश्चय ही कर लिया है कि ऐसा मुझसे नही हो सकता। जिन्होने इसके लिए दान दिया है उनसे क्षमायाचना करते हुए और आपके दिलको बिना दुखाये, यदि मै कह सकूँ तो मै कहना चाहूँगा कि जबसे मैने सार्वजनिक जीवन बितानेका इरादा किया या जबसे मुझे सहज ही यह सद्भाग्य प्राप्त हुआ, उस दिनसे जिस-जिसको मै परामर्श दे पाया हूँ उन्हे मैने अपने दानके साथ उनका खुदका या उनके अपने बडोका नाम जोडनेसे रोका है, अथवा रोकनेका प्रयत्न किया है। दानके साथ अपना या अपने पूर्वजोका नाम जोडना पाप है, मै ऐसा नही कहना चाहता। परन्तु लोगोमे ऐसी प्रथा चल पडी है, उन्हे इसका लोभ रहता है और इसके परिणाम बहुत ही हास्यास्पद होते है, यह बात मैने देखी है। इसीलिए जिन्हे मै रोक पाया हूँ, रोकता आया हूँ। इसमे मुझे बहुत हदतक सफलता भी मिली है, पर जहाँ सफलता नही मिल पाई है उस प्रसगमे मैने अपनी सहमति भी व्यक्त की है, और इस प्रकारके दान मैने स्वीकार भी किये है। मै वह सब अपनी बडाईका गान करने या दूसरोके दोष बतानेकी दृष्टिसे नही कहता, परन्तु इसके जरिये मेरी इच्छा है कि मै जो-कुछ करता-कराता आया हूँ उसके विरुद्ध कुछ करनेका आग्रह मुझसे न किया जाये। मुझमे झूठा विवेक नही है। मेरा अपना एक जीवन-मन्त्र है और उसका अवलम्बन करते हुए मुझसे मिथ्या विवेकका कार्य बन ही नही सकता।

एक दूसरा सबल कारण भी है। ये जो किताबे दी गई है इनके लिए मै तो केवल निमित्तमात्र हूँ। इनमे मेरा कोई स्वामित्व नही है। आश्रममे भी कोई वस्तु ऐसी नही जिसपर मेरा अधिकार हो। मै तो ट्रस्टी भी नही हूँ। मेरे जीवनमे तो यह भी रहा है कि मुझे उस वस्तुका ट्रस्टी भी नही रहना है जो कभी मेरी अपनी रही हो। मुझे तो यह दान करनेका अधिकार भी नही था। पर जो-कुछ नैतिक अधिकार मुझे है उसका उपयोग करते हुए मै ट्रस्टियो और आश्रमवासियोको

१. माणेकलाल जेठालाल पुस्तकालयके शिलान्यासके अवसरपर।

समझा पाया। अत मै तो वाहन-मात्र हूँ, या कहे पोस्ट ऑफिस हूँ। मैने तो आश्रम-का लिफाफा-भर नगरपालिका तक पहुँचाया है। विद्यापीठकी भी यही बात है। उसकी पुस्तके मै नही दे सकता। यह तो काकासाहबका या विद्यापीठकी समितिका अधिकार है। यो विद्यापीठके पुस्तकालयके साथ आश्रमके पुस्तकालयको मिला देनेका विचार था ताकि आश्रमके पुस्तकालयका ठीक उपयोग हो सके। आश्रममे तो मजदूरीका काम ठहरा। फिर वहाँ कोई वैतनिक ग्रन्थपाल नही रखा जा सकता। अत विचार था कि जब शान्तिका समय आयेगा और विद्यापीठ (सरकारसे) वापस लेगे तब दोनो पुस्तकालय एक कर देगे। और अब जबकि आश्रमका पुस्तकालय नगरपालिकाको दे दिया गया तो काकासाहबका पत्र आया कि विद्यापीठकी इमारतो और पुस्तकालयका कब्जा हमारे पास नही हे, पर यदि सरकार पुस्तके दे दे तो वे भी नगरपालिकाको दे दी जाये। इस प्रकार विद्यापीठकी पुस्तके भी नगरपालिकाको दे दी गई। अत इन दोनो ही के लिए मै कोई निमित्त नही। मै इनका श्रेय नही ले सकता।

तीसरा कारण भी दूँ। मेरे नामके साथ ज्ञानका क्या सम्बन्ध? मेरे नामके साथ तो मजदूरीका अवश्य सम्बन्ध है। अत आप मुझे इस भारसे मुक्त रखे। इसके एवजमे क्या करना अधिक ठीक होगा, यह बात मै यहाँ नही कहना चाहता। आज प्रात काल ही मैने अध्यक्ष महोदय और बलुभाईके साथ चर्चा की थी और यदि उन्हे मेरा सुझाव अच्छा लगेगा तो वे उसे आपके सम्मुख पेश करेगे, पर मुझपर तो आप दया ही करना।

अब मै एक भिन्न विषयपर आता हूँ। सरदार आज उपस्थित नही है, इस सम्बन्धमे मैने सुबह भी कहा था। सरदार और मै लगभग १८ वर्षोसे साथ काम करते आ रहे है। दिन-ब-दिन हमारे बीच ऐक्य बढता आया है। हमे शास्त्र शिक्षा देते है कि पति-पत्नी शरीरसे भले ही भिन्न हो, पर दोनोकी आत्मा तो एक ही है। सरदार और मेरे बीच भी यही नियम लागू होता है। आपसे मै यह फैसला तो नही करवाना चाहता कि हममे पति कौन है, और पत्नी कौन। हम अधिक निकट तो इस बार ही आये। काममे साझेदार होते हुए भी हम निश्चिन्ततापूर्वक कभी साथ नही बैठ पाये। खेडामे हम महीनो साथ रहे, पर वहाँ बिना काम कभी वल्लभभाई मेरे पास आये हो ऐसा अवसर याद नही आता। दूसरे मोर्चोमे भी कामकी हदतक ही वे थोडे समयके लिए आते ओर चले जाते थे। यह तो इस बार जेलमे ही पहली बार हम बिना किसी कामके एकसाथ रहे, और इसलिए दोनो ही खूब खुले। रातमे भी खाटे पास-पास डालकर सोते थे और सुख-दु खकी बाते किया करते थे। वैसे दु ख तो हम आप लोगोपर उडेल कर चले गये थे, लेकिन कहनेमे चूँकि ऐसा ही आता है इसलिए कह रहा हूँ कि सुख-दु खकी बाते किया करते थे। वल्लभ-भाईको तो नीदमे भी हिन्दुस्तानके ही बारेमे सपने आते। वे तो अत्यन्त कुशल व्यक्ति है —"यत्पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे" मे विश्वास करनेवाले। जो अहमदाबादके लिए वही गुजरातके लिए और जो गुजरातके लिए वही हिन्दुस्तानके लिए और जो हिन्दुस्तानके लिए वही सारे ससारके लिए —ऐसा कुछ सामान्य नियम उन्होने बना लिया था।

उन्हे अहमदाबादके स्वप्न भी आया करते। मेरी नगरपालिका, मेरा वाटरवर्क्स — भले ही बनाया उसे रणछोडभाईने हो — पर सरदार उसके वारिस जो ठहरे! क्या गिरिजाप्रसाद कह सकते है कि वाटरवर्क्स उनका है? जब रणछोडभाईने उसका कब्जा छोड दिया तो वह अहमदाबादका हो गया अर्थात् वल्लभभाईका हो गया। इस प्रकार आप देखेगे कि अहमदाबादके प्रति सरदारका मोह कितना है। वाडीलाल अस्पताल[1] के विषयमे तो मै कुछ जानता नही। वल्लभभाईके जो खास काम होते थे उनमे मै दखल नही देता था। मुझे तो विश्वास ही होता था कि वल्लभभाई काम ठीक ढगसे चला रहे है। अस्पतालके सम्बन्धमे मुझे जेलमे विस्तारपूर्वक जाननेको मिला। यद्यपि ऐसा कहना छोटे मुँह बडी बात होगी — क्योकि कहाँ ईश्वर और कहाँ मनुष्य? पर जैसा कलापी[2] ने कहा है यदि वैसे कहा जाये तो "जहाँ-जहाँ मेरी नजर पडती है वहाँ-वहाँ अहमदाबादमे सरदारकी ही कृतिके दर्शन करता हूँ।" अत कीर्तिका यह बोझ भी वे ही उठा सकते है, वे समर्थ है। मै यह बोझ नही उठा सकूँगा।

यह नगरपालिका भी धन्यवादकी पात्र है जिसे सरदार-जैसा अध्यक्ष मिला है। अहमदाबादके म्युनिसिपल-जीवनका प्रारम्भ एक धनवानके प्रयत्नोसे हुआ। फिर इसे एक ऐसा अध्यक्ष मिला जो फकीर था। मै उम्मीद किये था कि अहमदाबाद एक सुहावना नगर बने — सुहावना यानी मेरे अर्थोमे। यहाँके स्त्री-पुरुष सुन्दर हो, बागबगीचे हो, बाहरी सौन्दर्य तो होना ही चाहिए परन्तु मै भीतरी सौन्दर्य भी चाहता हूँ। इस प्रकार अहमदाबाद हर दृष्टिसे आदर्श शहर बने और अहमदाबादकी नगरपालिका भी आदर्श बने — सरदार यही स्वप्न साकार करना चाहते है। इसे साकार बनानेकी दिशामे उन्होने अपना हाथ भी बँटाया है, मै भी इसमे उनका साझेदार हूँ। मैने जबसे अहमदाबादमे रहनेका विचार किया तभीसे मै यह स्वप्न देखता रहा हूँ कि अहमदाबादमे धन है, यहाँ व्यवहार-कुशलता है, गुजरातकी यह राजधानी है और मैने यहाँ जन्म लिया है, अत अपने सार्वजनिक जीवनका प्रारम्भ यहीसे करूँगा। मैने यही सोचकर यहाँ रहना शुरू किया। तभीसे यह स्वप्न तो मेरा भी रहा है कि अहमदाबादमे एक बढियासे-बढिया पुस्तकालय हो और यहाँ दूसरी भी अनेक सस्थाएँ हो जिससे कि यहाँ आकर बसनेके लिए लोगोका मन हो। अहमदाबादकी आबोहवा खराब है, ऐसा न माने। एक बार मेरा मसूरी जानेका विचार चल रहा था, उस समय डॉ० कानूगाने कहा कि अहमदाबाद ही मसूरी है। और इसके बाद मैने मसूरी जानेका विचार छोड ही दिया। खराब तो हम स्वय ही है। हमने अहमदाबादको गन्दा कर छोडा है। डॉ० हरिप्रसाद[3] ने इसे साफ करनेके लिए अत्यधिक परिश्रम किया। तो भी मै आज यह प्रमाण-पत्र नही दे सकता कि अहमदाबाद एक स्वच्छ शहर है। यहाँ खुशबूके बदले बदबू छूटती है। स्वय डॉ० हरिप्रसादको यदि पुन स्वयसेवक और सेविकाएँ मिल सके तो शहरकी घनी गलियाँ साफ की जा सकती।

१. वाडीलाल साराभाई अस्पताल।
२ सूरसिंहजी तख्तसिंहजी गोहिल, गुजरातके सुप्रसिद्ध कवि।
३ डॉ० हरिप्रसाद देसाई।

पुस्तकालयोके विषयमे मेरे अपने कुछ आदर्श है, उन्हे मै आपके सम्मुख रख देना चाहता हूँ। इसके लिए आप जो इमारत बाँधे उसे इस प्रकार बनाये कि जैसे-जैसे पुस्तकालय विकसित होता जाये इसकी शाखाएँ बढती जाये और साथ ही इमारतमे भी विस्तार किया जा सके। किन्तु ऐसा करते हुए यह न लगे कि मकानमे और कमरे जोडे गये है और उसके कारण वह टेढा-मेढा प्रतीत हो। इस पुस्तकालयमे भापण हो, विद्यार्थी आकर शान्तिसे अध्ययन कर सके और पढ सके तथा शोध-कार्यमे लगे हुए शिक्षार्थी भी बैठकर अध्ययन कर सके — आप इन सुविधाओको ध्यानमे रखकर ही इमारत बाँधे। हमारा आदर्श तो यह होना चाहिए कि दुनियामे बडेसे-बडा और अच्छेसे-अच्छा पुस्तकालय जैसा हो सकता है इसे हम वैसा बनाये। ईश्वर ऐसा बल आपको देगा ही। काकासाहबने सूचित किया है कि विद्यापीठमे भी साधारण-सा ही सही, एक सग्रहालय तो है ही, उसे भी पुस्तकालय-भवनमे ही रख लिया जाये। गुजरातमे कलाका अभाव नही है। भद्रकी जालीकी जोड सारे ससारमे नही है। अहमदाबादकी कारीगरीकी होड क्वचित ही की जा सकती है। अहमदाबादके कारीगरोकी नक्काशी देखकर तो मै भौचक्का रह गया। मैने इन कारीगरोको अधेरी कोठरियोमे जीवन बिताते देखा है। पर कलाके विशेषज्ञ प्रोत्साहनकी राह देखने नही बैठते। सग्रहालय तो इसी मकानमे खडा हो सकता है बशर्ते कि कोई ५० हजार रुपया और दे दे।

आप कुछ ऐसा करे कि इस पुस्तकालयका दिनोदिन विकास होता जाये। इस कार्यके लिए यदि एक-दो व्यक्ति अधिक समय दे सके तो अच्छा हो। ग्रन्थपाल कोई व्यापारी न नियुक्त किया जाये जो कि केवल पुस्तकोकी सारसँभाल ही कर सके। ग्रन्थपाल तो ऐसा नियुक्त करना कि जिसे पुस्तकोकी जानकारी हो और वह उनका चुनाव कर सके। इस कार्यके लिए यदि कोई स्वयसेवक न मिल सके तो अधिक रुपया खर्च करना। हरिजनोको नि शुल्क प्रवेश देना और उन्हे पुस्तके भी ले जाने देना। यदि उनके हाथोसे पुस्तक खराब हो जाये या चोरी जाये तो भी सहन कर लेना। इन लोगोका तो गरीबोकी श्रेणीमे भी अन्तिम स्थान है। यदि ऐसी रियायत गरीब-मात्रके लिए दी जा सके तो देना। इससे तो आपकी शोभा ही बढेगी।

भाई रसिकलालने जो विनती आपसे की है वही मेरी भी है कि पुस्तकालयकी समितिका गठन आप बराबर करे। इस समितिमे विद्वान लोग हो, इससे पुस्तकालय को जीवित बनाये रखनेमे सहायता मिलेगी। समितिमे केवल व्यवहार-कुशल व्यक्ति ही हो, यह खयाल न रखना। पुस्तकालय कैसा हो और वह आदर्श कैसे बनाया जा सकेगा, यह बात तो विद्वान लोग ही समझ सकेगे। कार्नेगीने अनेक पुस्तकालयोको दान दिया। उसने जो शर्ते रखी, अनेक विद्वानोने उन्हे मान लिया, परन्तु स्कॉटलैडके विद्वान उसके वशीभूत न हुए। उन्होने कार्नेगीसे स्पष्ट कह दिया कि यदि आप कुछ शर्तोके आधारपर ही पैसा देना चाहते है तो हमे आपका दान नही चाहिए। हमे तो केवल किताबे चाहिए, और आपको किताबोकी क्या जानकारी है? कलाके विशेषज्ञ अपनी कलाको बेचने नही जाते। गुजरातमे बडी अमूल्य किताबोका भण्डार पडा है, वह

आज बनियोके हाथमे पडा है। जैनियोका सुन्दर पुस्तक भण्डार है, पर वह केवल रेशममे बँधा पडा है। इन पुस्तकोको देखकर मेरा हृदय रो पडा। ये पुस्तके तो उन अज्ञानी बनियोके हाथमे पडी है जो केवल पैसा पैदा करना जानते है, इनका उपयोग भला क्या हो सकता है? इनके हाथो तो जैन-धर्म भी निष्प्राण होता जा रहा है। क्योकि इन्होने जैन-धर्मको भी पैसेके ही ढाँचेमे उतार दिया है। भला धर्म भी कही पैसेके ढाँचेमे ढाला जा सकता है? पैसेको अवश्य धर्मके ढाँचेमे ढलना चाहिए। इसीलिए मै आपसे कहता हूँ कि आप ऐसा कुछ उपाय करे कि पुस्तकालयकी समितिमे विद्वानोका समावेश हो। भगवान करे पुस्तकालयका विकास हो।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, १-१०-१९३३

१४. जापानसे

सर लल्लूभाई सामलदास जापानसे हरिजन-सेवा-कार्यके लिए रु० १६९९–११–० लाये थे। यह रकम मुझे यरवडा जेलमे प्राप्त हुई थी, लेकिन दाताओकी सूचीवाला पत्र मुझे जेलसे बाहर आनेके बाद दिया गया। इसलिए मै उससे पहले प्राप्ति स्वीकार नही कर सका था। कोबेके इडियन सिल्क मर्चेण्ट्स एसोसिएशनकी ओरसे यह रकम आई है। चेकके साथवाले पत्रमे बयालीस दाताओकी नामावली है। इनमे से अधिकाश सिन्धी व्यापारी है। इसके लिए मै उन्हे धन्यवाद देता हूँ, और साथ ही एक चेतावनी भी — वह यह है कि मै उनसे इससे कही अधिककी आशा कर रहा था। दक्षिण आफ्रिकाके अपने सिन्धी मित्रोकी दानशीलताको मै जानता हूँ। जापानमे भी वैसे ही उदार सिन्धी सज्जन होगे। अत इस चेकको तो मै आगे मिलनेवाले दानका बयाना ही समझूँगा।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २३-९-१९३३

१५. एक और नरक

पाठकोको याद होगा कि कुछ महीने पहले मैने इलाहाबादकी भगी बस्तियोकी दुर्दशाकी ओर जनताका ध्यान खीचा था।[1] अब प्रोफेसर मलकानी[2] ने दिल्लीकी बस्तियोके अपने निजी अनुभव लिखकर मुझे भेजे है। ये 'हिन्दुस्तान टाइम्स' मे प्रकाशित हुए है। इन अनुभवोसे मालूम होता है कि इलाहाबादकी बस्तियोसे दिल्लीकी हरिजन-बस्तियोकी हालत कुछ अधिक अच्छी नही है। अकथनीय गन्दगी और फलस्वरूप वहाँके निवासियोकी अधोगतिकी जो कहानी वहाँ है वही यहाँ भी है। दिल्ली

१. देखिए खण्ड ५४, पृष्ठ ५१५-१७।

२. एन० आर० मलकानी।

निवासियोका स्वास्थ्य अधिकतर जिन भगियोकी सेवापर निर्भर करता है वे ही लोग बिना खिडकियोकी और अधेरी कोठरियोमे रहते है। प्रोफेसर मलकानीके अन्तिम अशको ही ज्यो-का-त्यो मै यहाँ उद्धृत करता हूँ[1]

जबतक हम ऐसे-ऐसे नारकीय स्थलोको सहन करते रहेगे और जबतक हम समाजके अत्यन्त उपयोगी सेवकोके साथ इस प्रकारका व्यवहार करते रहेगे जैसे वे मनुष्य ही न हो, तबतक गन्दगी और अस्वच्छतासे उत्पन्न बीमारियोसे हम सदा दुख ही भोगते रहेगे, इसमे कोई आश्चर्यकी बात नही। जिस प्रकार सडे हुए अगका सारे शरीरपर असर पडता है और उसे सडा देता है, वैसे ही समाजके सडे हुए अगके समान भगियोकी यह दुर्दशा सारे समाजको सडाकर रहेगी। इसलिए यदि हम जल्द ही जाग्रत न हुए और हमने भगियोकी दशाको सुधारनेके तात्कालिक उपाय ग्रहण न किये, तो ईश्वरका कोप हमपर पडे बिना नही रहेगा। हरिजनोके लिए कायदेकी अच्छी आवास-व्यवस्था करनेका प्रश्न केवल हिन्दुओकी ही नही बल्कि सारे समाजकी समस्या है। इसीलिए इस सम्बन्धमे सुधारको और कट्टर सनातनियो, हिन्दुओ और अहिन्दुओमे कुछ भेद नही रहना चाहिए। दिल्लीकी नगरपालिकाका ध्यान अब उसकी बस्तियोकी हालतकी ओर खीचा जा चुका है, अत मुझे आशा है कि वह इस अपमानजनक दुर्दशाको दूर करनेके लिए अवश्य ही तत्काल कोई क्रियात्मक उपाय ग्रहण करेगी।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २३-९-१९३३

१६. सच है, तो भयानक है

दयानन्द-दलितोद्धार-सभाका एक सम्मेलन चम्बामे हुआ था। उसके प्रस्तावोमे से मै निम्नलिखित अश लेता हूँ[2]

यह विश्वास करना कठिन है कि भारतका कोई भी राज्य अमुक जातिके लोगो द्वारा अमुक कार्य को करनेसे इनकार करनेको अपराध समझता है। मुझे आशा है कि रियासतके अधिकारियोके पास इन प्रस्तावोमे उल्लिखित दोषारोपणोका प्रबल उत्तर होगा, अथवा सम्मेलनकी आदरपूर्वक की हुई प्रार्थनाको मानकर रियासत उन प्रथाओका त्याग कर देगी, जिनकी चर्चा सम्मेलनने की है। मै देखता हूँ कि सम्मेलनमे जिन लोगोने भाग लिया था, वे शिक्षित और उत्तरदायी आदमी है।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २३-९-१९३३

१. यहाँ नही दिया गया है। हरिजनोंकी ये बस्तियाँ कितनी गन्दी थी और किस प्रकारके नारकीय वातावरणमें हरिजनोंको रहना पड़ता था, इसका करुण चित्रण इस अशमें किया गया था।

२ यहाँ नही दिया गया है। इसमें हाली तथा अन्य जातियोंके लोगों द्वारा मुर्दा पशु उठाने और बेगार करने तथा नाग देवतापर बकरेकी बलि चढ़ानेसे इनकार करनेके कारण किये जानेवाले अत्याचारके विरुद्ध पास किये गये प्रस्तावका पाठ दिया गया था।

१७. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

२३ सितम्बर, १९३३

असंशोधित

प्रिय जवाहरलाल,

मैं कल जाकर तुम्हें पत्र लिखनेकी स्थितिमें हो सका। तीसरे पहर १ बजे मेरी जाँच-पड़ताल पूरी हुई थी। मैंने कस्तूरभाई, श्रीमती हठीसिंह और शंकरलालसे, जो कि उस परिवारको अच्छी तरह जानते हैं, बात की है। मुझे जो अनुभव हुआ उससे मैं पूरी तरह सन्तुष्ट नहीं हूँ। मुझे स्पष्टवादिताकी कमी अखरी है। इसके बावजूद मेरे पास प्रस्तावित विवाहके विरुद्ध कहनेको कुछ नहीं है। नये वातावरणमें कृष्णा[1] काफी खुश रहेगी। इससे बढ़कर तो यह है कि उसने इस विवाहका निश्चय कर लिया है। वह राजाकी माँके साथ पत्र-व्यवहार करती रही है। उसके मनपसन्द व्यक्तिका प्यारका नाम राजा बाबू है। कृष्णाके नाम कुछ सम्पत्ति वे लोग छोड़ें, इसका तो कोई सवाल ही नहीं है। बेशक मैंने उन लोगोंको यह स्पष्ट कर दिया कि कृष्णाके नाम कुछ सम्पत्ति छोड़नेका सुझाव शुद्ध रूपसे मेरा है, और यह भी कि इसके बावजूद इस बातको विवाहकी शर्त बनानेका मेरा कोई इरादा नहीं है। मैंने उनको बतलाया कि मैंने यह प्रस्ताव इसलिए रखा है, क्योंकि मैं सभी लड़कियोंके मामलेमें, जहाँ सम्भव हो, ऐसी व्यवस्था करनेमें विश्वास रखता हूँ। यह विवाह यदि अन्तिम रूपसे तय होना है तो तुम्हें श्रीमती हठीसिंहको अहमदाबादके पतेपर पत्र लिखकर निश्चित रूपसे प्रस्ताव करना होगा, और वह तुम्हें अपनी स्वीकृति भेज देंगी। वह इस बातके लिए बिलकुल तैयार हैं कि कृष्णा जितनी जल्दी चाहे, विवाह सम्पन्न कर दिया जाये। वह चाहती हैं (और मैं उनसे सहमत हूँ) कि सगाई और विवाह एकसाथ ही कर दिया जाये। अब तुम उनके लड़के (हठीसिंह) को पत्र लिख सकते हो और जब चाहो तब बुला सकते हो।

आशा है माँ और कमला[2] अब पहलेसे बेहतर हैं।

मैं आज सुबह वर्धा पहुँचा। डाक्टरोंने जाँचमें ब्लड-प्रेशरकी शिकायत पाई है, लेकिन इसके सिवा मुझे कोई तकलीफ नहीं है। तथापि अबसे तीन सप्ताह तक, यानी अगले १५ अक्टूबर तक मैं कहीं आऊँ-जाऊँगा नहीं।

१ जवाहरलालजीकी छोटी बहन।

२. जवाहरलालजीकी पत्नी।

मथुरादास[1] बम्बईमे है। बा, मीराबहन और प्रभावतीके अलावा चन्द्रशकर[2] और नायर मेरे साथ है। प्रभुदास[3] भी मेरे साथ है।

सप्रेम,

बापू

[अग्रेजीसे]

गाधी-नेहरू पेपर्स, १९३३, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

१८. तार : जवाहरलाल नेहरूको

वर्धागज
२३ सितम्बर, १९३३

जवाहरलाल नेहरू
लखनऊ

तुम्हारा तार मिला। आज पत्र[4] डाला है। जॉच-पडताल कल समाप्त कर ली। परिणाम कुल मिलाकर सन्तोषजनक। औपचारिक रूपसे विवाहका प्रस्ताव करते हुए तुम श्रीमती हठीसिहको लिखो। माँ पहलेसे अच्छी है, इसकी खुशी है।

बापू

[अग्रेजीसे]

गाधी-नेहरू पेपर्स, १९३३, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

१९. बातचीत : हरिजन-कार्यकर्त्ताओंसे[5]

[२४ सितम्बर, १९३३ से पूर्व][6]

कितने ही सेवक समझते है कि जबतक वे स्वतन्त्र-रूपसे स्वय नही कमा सकेगे, तबतक सेवा-कार्यमे उनका ठीक मूल्य नही आँका जा सकता। इन सेवकोसे मै कहता हूँ कि जितना तुम बाहर कमा सकते हो, यदि उससे कम लो तो तुम सुरक्षित हो,

१. मथुरादास त्रिकमजी।
२ चन्द्रशकर प्राणशकर शुक्ल, **हरिजनबन्धु** के सम्पादक।
३. छगनलाल गाधीके पुत्र।
४ देखिए पिछला शीर्षक।
५ और ६ यह बातचीत "ईश्वरनो आधार के पैसानो" शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित हुई थी। यह और इससे अगला शीर्षक २४-९-१९३३ के **हरिजनबन्धु** में प्रकाशित "साप्ताहिक पत्र" से लिया गया है।

ही न पडे अथवा जरूरत पड ही जाये तो फिर मॉगनेमे शर्म नही आनी चाहिए। अपने देशमे ५६ लाख आदमी भटकते फिरते है, उन्हे जब खानेको मिल जाता है तो तुम लोगोको, जो देशको चौबीसो घटे दे रहे हो, अवश्य ही भोजन पानेका अधिकार है। हमारे पास दो रास्ते है—एक तो यह है कि आवश्यकता पडनेपर मॉग ले और दूसरे, जरूरत पडे तो भी न मॉगने जाये। परिणाम क्या होगा? मर जायेगे, बस यही न? ईश्वर हमसे इससे अधिक नही मॉगता। इसीमे सच्ची स्वतन्त्रता है। पैसेकी परतन्त्रता हम लोग किसलिए भोगे? पैसे पडे है उसकी मदद ले, इसकी अपेक्षा ईश्वरसे सहायता क्यो न ली जाये? मेरे पास तो यह कसौटी है। कई वर्ष हुए, अपने भाईके कहनेपर मैने बम्बईमे दस हजारका बीमा कराया था। बादमे आफ्रिकासे मैने रेवाशकरभाईको पालिसी रद कर देनेको लिखा।[1] सात वर्षतक जो पैसे भर चुका था, उन्हे भी जाने दिया। मैने सोचा कि पैसेपर भरोसा रखनेकी अपेक्षा ईश्वरपर भरोसा क्यो न रखा जाये? मैने मनमे कहा, तुझे जनताकी सेवा करनी है या अपनी? जनताकी सेवा करनी हो तो फिर तेरे पास पैसे किसलिए चाहिए? हमारे बीच कुछ तो अकिचन जन होने ही चाहिए।

जब वह भाई जा रहा था, गांधीजीने कहा:

यह सब जो कहा इसके लिए, भाई, माफ करना। परन्तु यदि मै न सुनाता, तो फिर कौन सुनानेवाला था?

[गुजरातीसे]
हरिजनबन्धु, २४-९-१९३३

२०. अपील: प्रार्थना-सभामे[2]

[२४ सितम्बर, १९३३ से पूर्व]

इस प्रार्थना-सभामे आप जो भाई-बहन आये है, मै उन सबसे कहना चाहता हूँ कि यदि सरकार मुझे स्वतन्त्र रहने देगी तो मै मुख्य रूपसे हरिजन [उद्धार] का काम करना चाहता हूँ। अत हरिजनोके लिए भिक्षा माँगना मेरा धर्म है। जो भाई-बहन प्रार्थनामे आते है यदि वे चाहे तो अपनी शक्तिके अनुसार कुछ लेते आये। इससे दो अर्थ सिद्ध होते है। हरिजनोके लिए कुछ पैसा मिल जाता है और साथ ही इस बातका अन्दाज भी लग जाता है कि हरिजन-सेवाके निमित्त कितने लोग मदद देनेवाले है और इस कार्यमे दिलचस्पी लेनेवाले कितने लोग है। जिन्हे यह कार्य पसन्द नही है उनसे तो मै कौडी भी नही लेना चाहता। और जो केवल मेरे

१. देखिए खण्ड ३९, पृष्ठ २००-२।
२. यह "भिक्षानी झोली" शीर्षकसे प्रकाशित हुई थी।

निमित्त ही देने हैं वह तो निरर्थक ही है। अत मेरी इच्छा है कि इस कार्यमे वे लोग ही पैसा दे जिन्हे इस प्रवृत्तिमे श्रद्धा हो।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, २४-९-१९३३

२१. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

२४ सितम्बर, १९३३

प्रिय जवाहरलाल,

प्रस्तावित विवाह-सम्बन्धके बारेमे मेरी आज जमनालालजीके साथ बातचीत हुई। वह उस परिवारको भली प्रकार जानते लगते है। उनका निश्चित मत है कि कस्तूरभाईको छोडकर शेष परिवार जितना सम्पन्न दिखाई पडता है उतना है नही। उनकी तो यहाँ तक राय है कि वे लोग शायद अभाव-पीडित है। मैने सोचा कि तुम्हे यह खबर दे दूँ। वह भी चाहते है कि उनकी राय मै तुम्हे बता दूँ। लेकिन उनका विचार है कि कृष्णाको यह जान लेना चाहिए। जहाँतक मै देख सकता हूँ, जबतक कृष्णाको लडकेमे निश्चित रूपसे कोई दोष नही दिखाई पडे तबतक अन्य किसी बातका उसके निर्णयपर प्रभाव नही पडेगा। और वह इसमे बिलकुल ठीक होगी। कस्तूरभाईका दृढ मत है कि कृष्णाकी पसन्द ठीक है।

तुम सबोको प्यार।

बापू

[पुनश्च]

तुम मुझ जैसे लोगोको इस बातके लिए राजी करनेमे सफल हो सकते हो कि तुम्हे पण्डित कहकर सम्बोधित न करे, लेकिन मै देखता हूँ कि यह विशेषण तुम्हारे साथ हमेशा लगा रहेगा।

[पुनश्च]

मै जो कहना चाहता था वह यह था कि यदि यह विवाह होना तय हो जाये, और यदि माँकी सहमति हो, तो धार्मिक कार्य वर्धामे सम्पन्न किया जाये। मै कठिनाइयाँ जानता हूँ। मै जानता हूँ कि मै स्वार्थपूर्ण ढगसे सोच रहा हूँ। मैने तो सुझाव-भर दे दिया है। अब देखे कि क्या होता है। मै कस्तूरभाईसे मिलनेवाला हूँ।

[अग्रेजीसे]

गाधी-नेहरू पेपर्स, १९३३, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

२२. पत्र : निर्मल कुमार बोसको

सत्याग्रह आश्रम, वर्धा
२४ सितम्बर, १९३३

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला।

चूंकि श्रीयुत् सतीशचन्द्र दासगुप्त मेरी रचनाओसे अच्छी तरहसे वाकिफ है इसलिए मै चाहूँगा कि आप अपना सग्रह[1] उन्हे दिखाये, और यदि वह उन्हे पसन्द हो तो मुझे आपके पुस्तकको प्रकाशित करनेमे कोई आपत्ति नही है। आप यह पत्र उन्हे दिखला सकते है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०५२२)से।

२३. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

वर्धा
२४ सितम्बर, १९३३

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा १९ तारीखका पत्र बम्बईमे मिला था और २१ तारीखका आज वर्धामे मौन ग्रहण करनेके बाद।

. . [2]

दाँतोके बारेमे मै समझ गया। उनसे थोडे समयतक तो काम चलना चाहिए।

मेरे साथ बा, मीराबहन, चन्द्रशकर, प्रभुदास, नायर, आनन्दी[3], निर्मला (महादेवकी), शारदा (चिमनलालकी) और प्रभावती है। ब्रजकिशन भी है। वह मगलवारको अपने घर जायेगा। रास्तेमे राधा[4] और सन्तोक[5] मिली थी। राधाकी तबीयत बहुत अच्छी है। वह तुम्हारी पडोसिन है। उसे लिखना। लीलावती[6] देवलालीमे

१. सिलेक्शन्स फ्रॉम गाधी।
२ साधन-सूत्रमें यहां कुछ छूट गया है।
३. लक्ष्मीदास आसरकी पुत्री।
४. मगनलाल गाधीकी पुत्री।
५. स्वर्गीय मगनलाल गांधीकी पत्नी।
६ लीलावती आसर।

सेनटोरियममे है। केशू[1] यही है। जमनालालजीके जिन (रुई ओटनेकी मशीन)मे काम करता है? ५० रुपये वेतन तय हुआ है। काम अच्छा है। यदि वह स्थिरचित्त बनेगा तो तरक्की करेगा। जमनालालजी उसके कामसे सन्तुष्ट दीख पडते है। नी०[2] और अमलाका काम कठिन है। नी० अत्यन्त भावुक है, अमला मूर्ख है। उसे कुछ भी नही आता। दोनो ही यहाँ ठीक बोझरूप बनी हुई है। यह बोझ कुछ हल्का हो, ऐसा प्रयत्न करूँगा। डकन और मेरी बार अच्छी तरहसे काम कर रहे है, मेहनती है, ईमानदार है। नरहरिके बच्चे – वनमाला और मोहन – बीमार होनेकी वजहसे कठलाल गये है। मै उनसे अहमदाबादमे मिला था। वे शुक्रवारको कठलाल जानेवाले थे। अमीना[3]के बच्चे बहुत घुल-मिल गये है। वे लाल बगले[4]मे अपनी छुट्टियाँ बितायेगे। सिरियस बीमार था। अब ठीक हो गया है। अस्पतालमे था। मै रमा जोशीसे मिला था। वह अच्छी थी। उसका स्वास्थ्य तो खूब सुधर रहा है। वह अपना हाथ अब ठीक-ठीक ऊँचा उठा सकती है। जिस दिन मैने बम्बई छोडा उसी दिन मणि आई। मेरे साथ ही बहुत समयतक रही। एल्विन[5] को देखने गया था, वहाँ भी उसे साथ ले गया था। मैने उसे तुमसे मिलकर और दाँत तथा आँखका उपचार करनेके बाद मेरे पास आनेकी सलाह दी है। फूफी अभी बम्बईमे है, मथुरादास भी बम्बईमे है। वह खासा थक गया है। उसने बहुत बडी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली थी। शास्त्री ('हरिजन'के) ठीक चल रहे है। चन्द्रशकर समस्त गुजराती सामग्री हम जहाँ है, वहीसे भेजेगा। मैने पृथुराज[6] को कालीकटमे ही रुकनेके लिए लिखा है। इन्दु[7] भावनगरमे है, ठीक चल रहा है। जयप्रकाश अपने पिताके पास गया होगा। मै जब बम्बईसे रवाना हुआ था तब वह वही था। वह मुझसे मिला करता था। वह प्रभावतीसे तो रोज ही मिलता था। उसने मेरे विरुद्ध जो आरोप लगाया है सो मै जानता हूँ, लेकिन मै क्या करूँ? अब तो वह कुछ शान्त हो गया है। रामदासका मन ही उसका बैरी है। इसलिए कुछ नही कहा जा सकता। वह पूर्णतया कब शान्त होगा? नीमु[8] की तबीयत यो ही कभी अच्छी कभी खराब रहती है। बगाल[9] का मामला मेरे ध्यानमे है, देखूँगा। जमनालाल अभी पहाडपर नही जायेगे। वे दस दिनके लिए पहाड हो आये है। [फिरसे जानेके लिए] प्रलोभन तो अवश्य दूँगा। अब उनकी तबीयत ठीक रहती है।

१ केशव, मगनलाल गाधीके पुत्र।
२. एक अमेरिकी महिला। इसमें तथा अगले शीर्षकोमें इनका नाम नही दिया गया है।
३ अमीना कुरेशी, गुलाम रसूल कुरेशीकी पत्नी।
४ आश्रमके समीप डॉ० प्राणजीवनदास मेहताका घर।
५ वेरियर एल्विन।
६ लक्ष्मीदास आसरका पुत्र।
७. इन्दु पारेख, एक आश्रम विद्यार्थी।
८. रामदास गाधीकी पत्नी निर्मला।
९. इसका सम्बन्ध यरवडा-समझौतेके खिलाफ बगालके सवर्ण हिन्दुओंके आन्दोलनसे है।

आनन्दी आदि लडकियाँ और कुरेशीके लडके अनुसूयाबहनके हरिजन छात्रावासमे रहते है। मुझे लगा कि हमारे लिए यही शोभाजनक है। वहाँ वे लोग बहुत सुखी है। नारणदासके पुरुषोत्तमने जीवनलाल[1] के भाई हरखचन्द,[2] की पुत्रीके साथ सगाई की है। यह एक ही जातमे होनेके कारण मुझे अच्छा नही लगा। लेकिन कहते है कि लडकी अच्छी है। इसीसे नारणदासने भी अपनी सम्मति दे दी है। जमना[3] राजकोटमे है। कनु[4] भी वही है। जमनादास[5] के स्कूलमे जो पढाया जाता है उतना पढता है। महादेवका बाबू[6] बलसारमे अपनी मौसीके पास है। उसने दीवालीके बाद आनन्दीके पास आनेके लिए लिखा है। राजेनबाबूकी खबर हर तीसरे दिन मिलती रहती है। उनका स्वास्थ्य अच्छी तरह सुधर रहा है। लक्ष्मी[7] यही है। उसके जालन्धर जानेकी बात थी। सब कुछ विचार करनेके बाद देवदासने उसके जालन्धर जानेके कार्यक्रमको रद कर दिया। लेकिन अभी निश्चय नही हुआ कि क्या किया जाये। प्रभुदासकी समस्या भी अभी नही सुलझी है। इसीसे वह मेरे साथ आया है। [8] को साधु हुआ समझ लो। वह हमेशा असन्तुष्ट ही दिखाई देता है।

यदि तुम्हारा 'गीता' का अध्ययन पूरा हो जाये तो भी माना जायेगा कि तुमने सस्कृतमे अच्छी तरक्की कर ली है।

आश्रमकी गोशाला काकरियामे चल रही है। इसे टाइटस चलाता है और यह शकरलालकी देखरेखमे है। ठीक चलती है। जवाहरलालकी कृष्णाकुमारीकी सगाई बहुत करके कस्तूरभाईकी बहनके लडकेके साथ होगी, जो अभी-अभी विलायतसे बैरिस्टर होकर लौटा है। मै कस्तूरभाई और उसकी बहन तथा उसके लडकेसे मिल चुका हूँ। असली पसन्द तो इन दोनोकी ही है। वे बम्बईमे रावके यहाँ दो-तीन बार मिले थे। सरूपरानी[9] ने अपनी सहमति दे दी है। थोडे ही समयमे विवाह हो जायेगा। यदि विवाह सम्पन्न हो गया तो सरूपरानीके सिरसे एक भारी बोझ उतर जायेगा।

मै ठीक रहता हूँ। रक्तचाप यहाँ रहता है या नही, सो नही कहा जा सकता। यहाँ उस कोटीके और डाक्टर नही है। जरूरत भी नही है। आजकल तो एक पौड दूध लेता हूँ। और दो बार सब्जी लेता हूँ। सब्जीमे लौकी, तोरी आदि मिलती है। यहाँ जब आया था तब मेरा वजन ९९ पौड था। थोडे दिनो बाद फिर वजन लूँगा।

१. जीवनलाल मोतीचन्द शाह।
२ चोखाडके एक सामाजिक कार्यकर्ता।
३. नारणदास गांधीकी पत्नी।
४. नारणदास गांधीके पुत्र।
५. नेशनल स्कूल, राजकोटके जमनादास गाधी।
६. नारायण देसाई, जो सामान्यत बाबलो नामसे पुकारे जाते थे।
७. राजगोपालाचारीकी पुत्री और देवदास गाधीकी पत्नी।
८ साधन-सूत्रमें नाम नही दिया गया है।
९. जवाहरलाल नेहरूकी माँ।

बा मजेमे हे और मीराबहन भी। जमनालालजीकी कमला[1] दिनशा मेहताके आरोग्य भवनमे थी। उसे कुछ लाभ हुआ है। वह मेरे साथ यही आई है। कमलनयन[2] भी यही है। आजकल वकीलकी पाठशाला महामारीके कारण बन्द हे। अब यह पाठशाला विले पार्ले चली जायेगी।

मेरा कार्यक्रम तो ऐसा है कि १५ अक्टूबर तक मै यही विश्राम करूँगा।

चूंकि आश्रमका कब्जा सरकारने नही लिया है[3] इसलिए अब स्थायी रूपसे इसका उपयोग हरिजन निवासके रूपमे किये जानेका विचार है। जमनालालको यह विचार पसन्द आया हे। अहमदाबादके मित्रो — रणछोडभाई आदिको भी यह अच्छा लगा हे। इसमे हरिजन निवास, चर्मशोधनालय, हरिजन छात्रावास और हरिजन सेवा सघका ऑफिस रखनेका विचार है। मेरा इरादा आश्रमकी जमीन और मकान अखिल भारतीय सेवा सघको सौप देनेका है। इस बारेमे यदि तुम्हे कुछ कहना हो तो लिखना। अब तो काफी हो गया न?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो — २ : सरदार वल्लभभाईने, पृष्ठ २६-३०

२४. अपील : उड़ीसाकी बाढ़-सहायताके लिए

२४ सितम्बर, १९३३

उड़ीसाके बाढ़-पीड़ित लोगोकी सहायताके लिए चन्देकी अपील करते हुए श्री गाधीने कहा है कि दो हजार मीलका क्षेत्र बाढ़से प्रभावित है। इससे तीन लाख लोगोपर असर पड़ा है। पन्द्रह सौ गॉव तबाह हो गये है। बीस हजार मकान ढह गये है, और लगभग १५,००,००० रुपयेके मूल्यका नुकसान होनेका अनुमान है। श्री गाधीका कहना है कि जिन लोगोको वास्तवमे भोजन और कपड़ेकी आवश्यकता है उन्हें बारह महीनेतक सहायता देनेकी आवश्यकता होगी, क्योकि अगले वर्षकी फसल होनेतक उनके पास अपनेको जीवित रखनेकी कोई व्यवस्था नहीं होगी। जो लोग सचमुच गरीब सिद्ध किये जा सकते है ऐसे लोगोकी सहायताके लिए कमसे-कम पाँच लाख रुपयेकी जरूरत होगी।

[अग्रेज़ीसे]
द इंडियन एनुअल रजिस्टर, जुलाई-दिसम्बर, १९३३, खण्ड २, पृष्ठ १०

१ रामेश्वरदासकी पत्नी कमला नेवटिया।

२ जमनालाल बजाजके पुत्र।

३. जुलाई, १९३३ मे गाधीजीने सरकारसे आश्रमका कब्जा ले लेनेके लिए कहा था, देखिए खण्ड ५५, पृष्ठ ३१६-१९।

२५. सन्देश : हरिजन-दिवसपर

[२४ सितम्बर, १९३३][1]

'हरिजन-दिवस' के अवसरपर मैं हृदयसे आशा करता हूँ कि सवर्ण हिन्दुओंके मनमें अपने हरिजन भाई-बहनोंके लिए शुद्ध प्रेम जाग्रत होगा और प्रत्येक हिन्दू स्त्री-पुरुषको अस्पृश्यता-उन्मूलनकी आवश्यकता अनुभव होगी।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २५-९-१९३३

२६. पत्र : एन० आर० मलकानीको

सत्याग्रह आश्रम, वर्धा
२६ [सितम्बर][2], १९३३

प्रिय मलकानी,

मेरे इसी २ तारीखके पत्रके उत्तरमें तुम्हारा ८ तारीखका पत्र मुझे मिला। उस पत्रका मैं इससे पहले उत्तर नहीं दे सका, और अब मुझे तुम्हारा सबसे हालका पत्र मिला है जिसके साथ तुमने बस्तियोंके बारेमें अपनी रिपोर्ट भेजी है। तुम्हारी रिपोर्टके प्रथम अंशमें कही गई बातोंको मैंने पहले ही हाथमें ले लिया है।[3] लेकिन पूरी रिपोर्टको पढ़ चुकनेके बाद उसके बारेमें मैं तुम्हें बादमें लिखूँगा।

हरिजन-कार्यके बारेमें तुम्हारे सुझाव अच्छे हैं। मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता, विशेषकर इस समय। लेकिन उनके बारेमें तुम ठक्कर बापासे बातचीत करना। तुम शीघ्र ही औद्योगिक शालाओंके बारेमें कुछ सुनोगे। चमड़ा कमानेके उद्योगके महत्वके बारेमें मैं तुमसे बिलकुल सहमत हूँ। इस समस्यापर मैं अभी भी विचार कर रहा हूँ।

भंगियोंके बीच काम कठिन जरूर है, लेकिन अत्यन्त आवश्यक भी है।

१ यह सन्देश २४ सितम्बरको तृतीय हरिजन-दिवसके अवसरपर वर्धामें जमनालाल बजाजके सभापतित्वमें आयोजित सभामें पढ़कर सुनाया गया था। प्रथम हरिजन-दिवस १८ दिसम्बर, १९३२ को और द्वितीय हरिजन-दिवस ३० अप्रैल, १९३३ को मनाया गया था।

२ साधन-सूत्रमें यह शब्द अस्पष्ट है।

३ देखिए "एक और नरक" २३-९-१९३३।

मैं तुम्हारे इस सुझावका समर्थन करता हूँ कि यात्रा करने और विभिन्न सगठनोका अध्ययन करनेके लिए तुम्हे सुविधाएँ प्रदान की जानी चाहिए।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गाधी

श्रीयुत एन० आर० मलकानी
हरिजन सेवक सघ
बिडला मिल्स, दिल्ली

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९००) से।

२७. पत्र : वी० राघवय्याको[1]

२६ सितम्बर, १९३३

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला।

विभिन्न निर्णयोपर पहुँचनेके लिए मेरे पास सारे तर्क मौजूद थे। इसलिए आप मुझसे यह अपेक्षा नही करेगे, खासतौरसे मेरी मौजूदा सेहतको देखते हुए, कि मै अपने बचावके लिए फिरसे वही सब बाते कहूँ जो मै पहले कह चुका हूँ। लेकिन समय जरूर बतायेगा कि सच क्या है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्रीयुत वेन्नेलाकान्ती राघवय्या
नेल्लूर
(दक्षिण भारत)

अग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०४४८) से, सौजन्य के० लिगराजू

२८. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

२८ सितम्बर, १९३३

प्रिय जवाहरलाल,

मुझे तुम्हारे कई पत्र मिले। मेरी रफी[2] से लम्बी बातचीत हुई। वह तुम्हे उसके बारेमे बतायेगे। मै अब भी अपनी इस रायपर कायम हूँ कि अखिल भारतीय काग्रेस कमेटीकी बैठक करानेसे कोई लाभ नही होगा। लेकिन इसका मतलब यह नही

१. एक काग्रेसी और कबायली कार्यकर्ता जिन्होंने गाधीजीके हरिजन-समस्याको लेकर किये जानेवाले अनशनका विरोध किया था और लिखा था कि ऐसा करके वे आर्थिक समस्याकी उपेक्षा करेंगे।

२ रफी अहमद किदवई।

कि ऐसी कोई बैठक यदि होगी तो उससे मुझे गहरी चोट लगेगी। इसके विपरीत, यदि बहुतसे सदस्य बैठक चाहते हो तो बैठक बुलाये जानेकी माँग करना उनका कर्त्तव्य है। मुझे जो लगता है वह यह कि हमे इसमे पहल नही करनी चाहिए। अगर व्यक्तिगत रूपसे तुम्हे लगता हो कि माँग न होनेपर भी बैठक बुलाना बेहतर है तो तुम्हे बैठक बुला लेनी चाहिए। मै जानता हूँ कि मुझे कार्यकर्त्ताओकी रायका भी पता नही है। इसलिए जिन लोगोका मत निश्चित रूपसे भिन्न है, वे मेरी रायको बिना किसी खतरेके नजरअन्दाज कर सकते है।

मेरी बातचीतके बारेमे रफी अपना जो विवरण तुम्हे देगे, उसके सिवा एक अन्य मुद्दा, जिसे मै स्पष्ट करना चाहूँगा वह कार्यकर्त्ताओके बारेमे है। बेशक मुझसे जो हो सकेगा सो मै करूँगा, लेकिन मेरा यह दृढ मत है कि प्रत्येक प्रान्तको अपने कार्यकर्त्ताओका व्यय सँभालना चाहिए और प्रत्येक जिले या तहसीलको अपने कार्यकर्त्ताओका। जबतक हम इस स्थितिको नही प्राप्त कर लेते तबतक हमारा सगठन ताशके घरके समान रहेगा। मेरी राय है कि तुम्हे अपने प्रान्तमे भिक्षा-पात्र हाथमे लेकर निकल पडना चाहिए और एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। मेरा आदर्श तो यह है कि प्रत्येक कार्यकर्त्ताको अपने गुजारेका खर्च उस क्षेत्रसे प्राप्त होना चाहिए जिसमे कि वह काम करता है, और इस बातपर उसे गर्वका अनुभव करना चाहिए। प्रत्येक मजदूर अपने मेहनतानेका हकदार है।

शेष बाते रफी तुम्हे बतायेगे।

आशा है माँ और कमला, दोनो अब बेहतर है। डॉ० विधानका क्या कहना है, सो तुम मुझे यथासमय बताओगे ही।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च]

व्यक्तिगत पत्रोके बारेमे[1] मुझे कुछ नही कहना है। आशा है [2] लिखे मेरे दो पत्र तुम्हे मिले होगे।

[अग्रेजीसे]

गाधी-नेहरू पेपर्स, १९३३, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

१ देखिए "पत्र: जवाहरलाल नेहरूको", २३-९-१९३३ तथा २४-९-१९३३।

२ साधन-सूत्रमें यहाँ अस्पष्ट है।

२९. पत्र : मेरी बारको

२८ सितम्बर, १९३३

चि० मेरी,[1]

मुझे बहुत खुशी हुई है कि आज तुम सामान्य हो। मेरे खयालसे तुम्हारे लिए यह बेहतर होगा कि तुम पारम्परिक डाक्टरी इलाज करा कर ठीक हो जाओ। आजकल तो इजेक्शन लगाना आम बात है। अच्छा यही है कि तुम उन्हे लगवा लो। और डाक्टर लोग जो खानेको कहे, वह खाओ। यदि तुम्हे नी० की सहायता की आवश्यकता नही है तो उसको चला आने दो। मै जानता हूँ कि एक सुव्यवस्थित अस्पतालमे बाहरी लोगोके रहनेसे डाक्टरोको उलझन होती है।

ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे।

सप्रेम,

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६००७) से। सी० डब्ल्यू० ३३३३ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

३०. पत्र : भगवानजी अ० मेहताको

वर्धा
२८ सितम्बर, १९३३

भाई भगवानजी,

आपका पत्र मिला।[2] आपके प्रयत्न सफल हो। आप कुछ भी उठा न रखे।[3] और यदि व्यवस्थित ढगसे साथ रहते न बने तो [सम्पत्तिका] बँटवारा[4] करते हुए भी सकोच न कीजिएगा।

मै रतुभाई[5] को अलगसे नही लिख रहा हूँ।

मोहनदासके वन्देमातरम्

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५८२०) से। सी० डब्ल्यू० ३०४३ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

१. मेरी बारको लिखे इस पत्रमें तथा अन्य पत्रोंमें ये शब्द देवनागरी लिपिमें हैं।
२ और ३. यहाँ साधन-सूत्रमें कुछ कटा-फटा है।
४ प्राणजीवनदास मेहता की सम्पत्ति का।
५ रतिलाल सेठ, छगनलाल मेहताके ससुर।

३१. पत्र : नानाभाई इ० मशरूवालाको

वर्धा
२८ सितम्बर, १९३३

भाई नानाभाई,[१]

तुम्हारा पत्र मिला। नाजुक तबीयत होते हुए तो तुम्हे यहाँ आनेकी जरूरत हो ही नही सकती। मै ठीक ही हूँ। पूरी शक्ति आनेपर, जब मै यात्रा कर सकनेकी स्थितिमे होऊँगा तब तुम्हारा प्रेम निश्चय ही मुझे अकोला खीच ले जायेगा। मणिलाल[२] काममे खूब फँस गया जान पडता है। उसने अपने सिरपर बहुत बडी जिम्मेदारी ले ली है।

तारा[३] का समाचार जमनालालजीने दिया है।

बापूके आशीर्वाद

श्रीयुत नानाभाई मशरूवाला
अकोला
बरार

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६६८९) से। सी० डब्ल्यू० ४३३४ से भी, सौजन्य : कनुभाई मशरूवाला

३२. पत्र : नलिनीकान्त सेठको

वर्धा
२८ सितम्बर, १९३३

चि० नलिनीकान्त,

तुम्हारे भेजे हुए पत्र मिले है। मैने उत्तर रगूनके पतेपर भेजा है। मै ठीक हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७१७४) से। सी० डब्ल्यू० ४६७० से भी, सौजन्य : नारणदास गाधी

१. मणिलाल गाधीके ससुर।
२. मणिलाल गाधी।
३. नानाभाई मशरूवालाकी पुत्री।

३३. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

२८ सितम्बर, १९३३

मुझे यहाँ पूर्ण शान्ति मिलती है। चार बजेसे पहले किसीको आने ही नही दिया जाता। ४ से ५ के बीच कोई आये तो मिल सकता है। उसी समय कातता हूँ। मै छतपर सोता हूँ। दूध पर्याप्त मात्रामे ले पाता हूँ। . .[1] इसलिए जमनालालजी जो रिपोर्ट दे उसपर भी विश्वास न करना। रक्तचाप खुद-ब-खुद कम हो जायेगा। वजन तो अब ही बढ सकता है।

शारीरिक स्वास्थ्यका ध्यान रखते हुए तुमसे जितनी मेहनत हो सके उतनी करना। सच तो यह है कि तुम्हे कुछ समयके लिए बाहर चले जाना चाहिए और पूरा आराम करना चाहिए। क्या यह सम्भव होगा?

[गुजरातीसे]

बापुनी प्रसादी, पृष्ठ १३६

३४. तार : 'मातृभूमि' को

२९ सितम्बर, १९३३

श्री माधवन नायरकी मृत्युसे एक जबर्दस्त राष्ट्रीय क्षति[3] हुई है। उनके परिवारके प्रति जमनालालजी तथा मै सम्वेदना भेजते है।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, ३०-९-१९३३

३५. पत्र : अगाथा हैरिसनको

सत्याग्रह आश्रम, वर्धा

२९ सितम्बर, १९३३

प्रिय अगाथा,

मै जानता हूँ कि मैने तुम्हारे साथ न्याय नही किया है। तुम तो मुझे पत्रपर-पत्र लिख रही हो और मै तुम्हे एक पंक्ति भेजकर ही सन्तुष्ट हो गया हूँ। सच यह है कि अभीतक मैने अपनी खोई हुई शक्ति पूरी तरह फिरसे प्राप्त नही

१ और २ यहाँ साधन-सूत्रमें कुछ छूट गया है।

३. देखिए "भाषण कालीकटकी सार्वजनिक सभामें", १३-१-१९३४ भी।

की है, और जो-कुछ शक्ति है उसे हाथमे लिये हुए मौजूदा काममे लगाना है। इसलिए मुझे बहुत सारी ऐसी चीजोकी उपेक्षा करनी पडती है जो मै अन्यथा करना चाहूँगा। मै एन्ड्रयूज और मीरा पर निर्भर करता रहा हूँ कि वे तुमको पत्र लिखते रहे। लेकिन इसी ९ तारीख और १६ तारीखके तुम्हारे दो पत्र ऐसे है जिनका मुझे काफी विस्तारसे जवाब देना चाहिए।

तुमने मिदनापुर काण्डके विषयमे जो-कुछ लिखा है और जो-कुछ नही लिखा है उसे मै समझता हूँ। आशा है मैने जो वक्तव्य दिये है उन सबकी प्रतियाँ तुमको मिल गई है। मिदनापुरके बारेमे मैने जो-कुछ कहा हे उसके लिए मै कोई माफी नही माँगता।[1] मै इससे कम कुछ नही कह सकता था, और इससे ज्यादा भी नही, कारण, उस वक्तव्यमे जो-कुछ कहा गया था वह सोलहो आने सच था। लेकिन जान-बूझकर गलत प्रचार करनेका अभियान चलाया जाये तो कोई उससे किस प्रकार निपटे? मै जो-कुछ कहता हूँ उसका एक-एक शब्द तोड-मरोड कर बताया जाता हे। जहाँ तोड-मरोड करना सम्भव नही होता वहाँ मेरे वक्तव्योमे से वाक्यके-वाक्य इस प्रकार निकाल दिये जाते है कि निकाले हुए वाक्योके साथ पढनेपर वक्तव्यका जो अर्थ निकलता, उससे बिलकुल भिन्न अर्थ उसी वक्तव्यसे निकलता है। लेकिन मै इन तरीकोसे विचलित नही होता। मेरे लिए ये कोई नई चीज नही है। मुझे अपने उद्देश्यमे और अपने सत्यमे अपार विश्वास हे। इसलिए जो चीज करनेकी है वह यही है कि विस्तारपूर्वक कैफियत देनेकी कोशिश न की जाये, क्योकि यह व्यर्थ है, बल्कि ठीक अवसर आनेपर उसी सत्यको और बलपूर्वक दोहराया जाये।

इग्लैडके मित्रोकी स्थिति इससे कुछ भिन्न है। स्वभावत वे कुछ करके दिखानेको उत्सुक है। तथापि मै मित्रोसे कहूँगा कि वे ऐसे मोकोपर विचलित न हो, क्योकि इस समय तुम्हारी आवाज नक्कारखानेमे तूती-जैसी होगी, और मैने जो-कुछ कहा हो, यदि उसके बारेमे तुमने कैफियत देनेकी कोशिश की तो ऐसा करके तुम हमारे उद्देश्यको हानि पहुँचाओगी। मै एक जबर्दस्त प्रयोग कर रहा हूँ। मेरी हर साँसमे अहिसा बसी हुई है। मै जो-कुछ लिखता हूँ उसमे नमक-मिर्च नही लगाता। मै कुछ भी नही छिपाता। इसलिए मै यह नही चाहूँगा कि मित्र लोग मेरे किसी कार्य या मेरे किसी कथनको माफ करे। अगर वे उसे नही समझते तो चुप रहे। यदि वे उससे असहमत है और सारे तथ्योको जानने और उनको तोलनेके बाद यदि वे उसका खुलकर विरोध करे तो मै उसका बुरा नही मानूगा। वास्तवमे इससे हमारे उद्देश्यका हित होगा। इसी मिदनापुर-सम्बन्धी वक्तव्यको ही लो। मै जानता हूँ कि जवाबी आतकवादके सरकारी रवैयेके कारण आतकवादकी जडे और गहरी पैठती जा रही है। जवाबी आतकवादका प्रभाव ज्यादा शरारतपूर्ण होता है, क्योकि यह सगठित होता है और सारी जनताको भ्रष्ट कर देता है। जवाबी आतकवाद बजाय आतक-वादको खत्म करनेके आतकवादी तरीकोके समर्थनमे एक वातावरण पैदा करता है, और इस प्रकार उसे कृत्रिम उत्तेजन प्रदान करता है। मुमकिन हे इसके परिणाम

१. देखिए खण्ड ५५, पृष्ठ ४१९।

तुरन्त सामने न आये, लेकिन वह निश्चय ही भविष्यमे ज्यादा बडे पैमानेपर आतकवादी गतिविधियोके लिए भूमिका तैयार करता है। इसलिए जैसा मिदनापुरमे हुआ, उस प्रकारका कोई विस्फोट होनेपर इस बातको जोरदार शब्दोमे स्पष्ट करके रखना चाहिए, और यदि सत्यको जोरदार ढगसे नही कहा जा सकता तो स्पष्ट है कि इसका विकल्प यही है कि चुप रहा जाये। ऑपरेशन न करनेकी अपेक्षा आधे मनसे ऑपरेशन करना कही ज्यादा खतरनाक है। यह सब मै अहिसाके बारेमे अपने ज्ञान, और सुनिश्चित तथ्योकी जानकारीके आधारपर कह रहा हूँ।

फिर, मेरे अनशन या हालके मेरे सभी अनशनोको लो। यदि वहाँके मित्र इन अनशनोको इतनी अच्छी तरह नही समझ सके है कि उनको उचित बता सके, तो वे उनकी उपेक्षा कर सकते है, या वे निर्णय करनेसे पहले सारी जानकारी और तथ्य प्राप्त कर ले और तब यदि निर्णय मेरे विरुद्ध जाता हो तो उन्हे अपना निर्णय घोषित करनेमे हिचकिचाना नही चाहिए, लेकिन यदि वे अनशनोके पक्षमे निर्णय देते है तो उन्हे अपना समर्थन स्पष्ट शब्दोमे देना चाहिए। तुम तो वहाँ बिलकुल अकेली पड गई हो। इसलिए मै इतना ही चाहता हूँ कि तुम जो भी कदम उठाओ उसपर दृढ रहो, बशर्ते कि तुम्हे अपने ऊपर, भारतीय उद्देश्यमे और मुझमे — मै, जो आज भारतके उद्देश्यका तुम्हारे सामने प्रतिनिधित्व करता हूँ — विश्वास है। मै तुम्हे कभी गलत नही समझूँगा। मै जानता हूँ कि तुम मुट्ठीभर लोग जो-कुछ भी करोगे, पूरे दिलसे करोगे। मै इससे ज्यादाकी अपेक्षा नही करता, न कोई अन्य व्यक्ति कर सकता है अथवा करनी चाहिए।

पता नही मै अपनी बात तुम्हे ठीकसे समझा सका हूँ या नही। यदि मै इसमे विफल हुआ होऊँ तो तुम इस पत्रको अपने दिमागसे निकाल देना और मुझे बताना कि कहाँपर तुम मुझे नही समझ सकी हो। जहाँतक मेरे स्वास्थ्यकी बात है, मै धीरे-धीरे शक्ति-लाभ कर रहा हूँ। मुझसे अपेक्षित है कि मै कमसे-कम २३ अक्टूबर तक आराम और शान्तिका सेवन करूँ, जिसके बाद यदि सब ठीक-ठाक रहा तो मेरा एक दौरेका कार्यक्रम निश्चित किया जायेगा। एन्ड्रयूज उडीसामे है। महादेव बेलगाँव जेलमे है और देवदास मुल्तान जेलमे। उसकी पत्नी यहाँ है। प्यारेलाल नासिक जेलमे है। उसकी माता और भाई यहाँ है, और नासिक जानेवाले है। अवश्य मीरा यही है।

सप्रेम,

बापू

कुमारी अगाथा हैरिसन
२, क्रैनबोर्न कोर्ट
एल्बर्ट ब्रिज रोड
लन्दन, एस० डब्ल्यू० ११

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४६८) से।

३६. पत्र : एफ० मेरी बारको

२९ सितम्बर, १९३३

चि० मेरी,

तुम्हारा प्रेम-पत्र मिला। मरीजोको एक हदके आगे लाड नही करना चाहिए। मैंने मत्रमे पहली गलती तो यही की कि नी० को तुम्हारे साथ भेजा। कृपया उसे भेज देनेको मत कहो। जब तुम स्वस्थ हो जाओगी और मेरे पास आ जाओगी तब मैं तुम्हे कायल कर दूंगा कि मैं ठीक था। मै उसे उसी के हितमे यहाँ रोके हुए हूँ। अब मुझे पता चला है कि डकन तुम्हारे पास रहेगे। इसकी मुझे खुशी है। मै सरस्वतीका पता नही चला पा रहा हूँ। पता चलते ही मै उससे बात करूँगा। अगर वह राजी हुई तो उसे भेज दिया जायेगा। इन परिवर्तनोको तुम फिलहाल माफ कर देना। यदि नी० को वापस न बुला लिया गया होता तो कोई परिवर्तन करना जरूरी न होता। एक बार तुम अभ्यस्त हो जाओगी तब कोई परिवर्तन नही किया जायेगा। तथापि मुझे आशा है कि वहाँकी नर्सें काफी योग्य और पर्याप्त सख्यामे है।

ईश्वर तुम्हे शीघ्र स्वस्थ करे।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च]

मै मीराको नही भेज रहा हूँ, क्योकि उसे रोजाना लगभग चार घटे अमलाको देने पडते है। वह अपना समय खराब कर रही है।

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६००८) से। सी० डब्ल्यू० ३३३४ से भी; सोजन्य एफ० मेरी बार

३७. पत्र : रामेश्वरदास पोद्दारको

२९ सितम्बर, १९३३

चि० रामेश्वरदास,

तुम्हारे लिए, मेरे लिए, और जिन्हे विश्वास है उन सबके लिए रामनाम अचूक औषधि है, इसमे तनिक भी सन्देह नही है। रामनाम निर्दोष और निरोगी व्यक्तिके लिए नही वरन् हम-जैसे दोषपूर्ण और व्याधिग्रस्त मनुष्योके लिए है। तात्पर्य यह कि फल मिले या न मिले, तो भी हमे दृढतापूर्वक उसका स्मरण तो करते ही रहना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

श्रीयुत रामेश्वरदास
मार्फत भोलाराम जोहारमल
धुलिया, जिला खानदेश

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २०९) से।

३८. पत्र : परीक्षितलाल एल० मजमूदारको

२९ सितम्बर, १९३३

भाई परीक्षितलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। काठियावाडके आश्रमके लिए जीवनलालभाई और नानाभाई[१] दीवालीके बाद प्रयत्न करनेवाले है। उसमे हमसे जो प्रयत्न बन पडेगा सो हम करेगे। यदि ये लोग कुछ नही कर सकते तो मेरा खयाल है, हम आश्रमको नही चला सकेगे। लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि ये लोग आश्रमको खत्म नही होने देगे। भावनगर और वरतेजके आश्रमोको सम्मिलित कर दिया जाना चाहिए अथवा नही, इसपर विचार किया जाना है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३९९६) से।

१ नरसिंहप्रसाद कालिदास भट्ट।

३९. पत्र : जसभाईको

२९ सितम्बर, १९३३

भाई जसभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। मै यहाँ बैठा हुआ तुम्हारा मार्गदर्शन नही कर सकता। जैसा चिमनलाल कहे वैसा करना। मुझसे पूछनेकी जरूरत महसूस होगी तो वह मुझसे पूछेगा। विवश होकर कुछ भी न करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० २३१७३) से।

४०. पत्र : मणिबहन पटेलको

२९ सितम्बर, १९३३

चि० मणि;

तेरा पोस्टकार्ड मिला है। तुझे जबतक रहना पडे तबतक वहाँ रहना और ठीक होकर आना। बापू[1] का पत्र मुझे भी मिला है। उसपर से पता चला है कि उनके साथ अब चन्दूभाई[2] है। बहुत अच्छा हुआ। मुझे पत्र लिखा करना। डाह्याभाई[3] से कहना कि मैने करमचन्दको जवाब दे दिया है। मै ठीक हूँ।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल
पारेख स्ट्रीट
सैण्डहर्स्ट रोड
बम्बई–४

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ४ : मणिबहेन पटेलने, पृष्ठ १०८

१ मणिबहनके पिता सरदार वल्लभभाई पटेल।

२. डॉ० चन्दूभाई देसाई।

३. मणिबहनके भाई।

४१. पत्र : द० बा० कालेलकरको

[३० सितम्बर, १९३३ से पूर्व][1]

चि० काका,

. . .[2]

मैं आश्रमको सदाके लिए हरिजन निवास, हरिजन छात्रावास और हरिजन-सेवक सघके कार्यालय तथा चर्मालयके लिए अखिल भारतीय हरिजन सेवक सघको सौप देनेका विचार कर रहा हूँ। तुम्हारी इसके बारेमे क्या राय है? जमनालालजीको तो यह विचार बहुत पसन्द आया है। छगनलाल, चिमनलाल और मगनभाईको भी यह बात अच्छी लगी है।

तुम अपना कार्यक्रम बताना।

स्वास्थ्यको देखते हुए मैं यहाँ १५ अक्टूबर तक निश्चित रूपसे हूँ।

मैं ठीक हूँ। मैं अपने साथ भारी फौज लाया हूँ। आनन्दी, बचु[3] और बबु[4] साथ है। प्रभुदास भी है। मोहन[5] और वनमाला[6] कठलाल गये हैं।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९४७८) से, सौजन्य द० बा० कालेलकर

४२. व्याख्याकी आवश्यकता

उरई (सयुक्त प्रान्त)के मुन्सिफकी अदालतमे एक विचित्र मुकदमा दायर किया गया था। सरकारने एक मुसलमानको कोचके हरिजनोके प्रतिनिधिके रूपमे वहाँकी नगरपालिकामे मनोनीत कर दिया था। इसपर तीन हरिजनोने सपरिपद भारत मन्त्री तथा दूसरोपर दावा दायर किया और माँगकी कि इस मनोनीत सदस्यको सदस्यतासे हटा दिया जाये, और यह घोषित कर दिया जाये कि नगरपालिका अधिनियमके अनुसार, केवल किसी हिन्दू हरिजनको ही मनोनीत किया जा सकता है। इस सम्बन्धमे कानूनमे अनिश्चितता तो है ही, इसलिए अदालतका फैसला वादीके विरुद्ध रहा। यहाँ मैं फैसलेके गुण-दोषोकी जाँच नही करना चाहता। मैं तो जनताको केवल यही बताना चाहता हूँ कि कानून न केवल हरिजन-वर्ग, जिसका कि वर्णन फैसलेमे 'दलित

१ पत्रमें सत्याग्रह आश्रमको हरिजन-सेवक सघको सौप देनेका गाधीजीने जो विचार व्यक्त किया है, यह तारीख उसके आधारपर तय की गई है, देखिए "पत्र घनश्यामदास बिड़लाको", ३०-९-१९३३।

२ साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ अंश काट दिया गया है।

३ निर्मला, महादेव देसाईकी सौतेली बहन।

४ शारदा, चिमनलाल शाहकी पुत्री।

५ और ६ नरहरि परीखके पुत्र और पुत्री।

जातियों' के नामसे किया गया है, की व्याख्याके बारेमें ही अनिश्चित है, बल्कि अगर फैसला ठीक है तो, इस शब्दकी अभीतक कोई कानूनी परिभाषा ही नहीं बनी है। यदि यह ठीक है, तो यह समझना कुछ कठिन नहीं है कि इस परिभाषाके अभावमें हरिजनोंके प्रति घोर अन्याय हो सकता है और उससे दुःखदायी परिणाम निकल सकते हैं। इससे तो सवर्णों और हरिजनों, तथा हरिजनों और हरिजनों एवं हिन्दुओं और गैर-हिन्दुओंके बीच बहुत कटुता व लड़ाई-झगड़े पैदा हो सकते हैं। अगर कानून द्वारा अस्पृश्यताको स्थायी नहीं बनाना है, तो यह बहुत जरूरी है कि इस शब्दकी उचित व्याख्या निश्चित करनेकी ओर जनता अपना ध्यान एकाग्र करे। पाठक यदि उक्त मुन्सिफके फैसलेके निम्न अंश[1] को ध्यानसे पढ़ डालें तो वे मेरे अभिप्रायको अधिक अच्छी तरह समझ सकेंगे।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ३०-९-१९३३

४३. हरिजन छात्रावास[2]

एक हरिजन छात्रावासके संचालकने लिखा है:[3]

यह कोई नई बात नहीं है। हरएक छात्रावासमें पाखानेकीसफाई तकका काम विद्यार्थियोंसे कराना चाहिए, इसमें मुझे तनिक भी शंका नहीं। ऐसा करानेसे विद्यार्थियों की पढ़ाईमें कोई बाधा नहीं आती। सच पूछा जाये तो इससे तो उनके अध्ययनमें वास्तविकताका योग होता है और उनके स्वास्थ्यकी भी उन्नति होगी; और पैसेकी बचत होती है, सो अलग। परन्तु जो संचालक विद्यार्थियोंमें सस्ती लोकप्रियता प्राप्त करनेके लोभसे अथवा अपने विद्यार्थियोंके साथ इन बातोंकी चर्चा करनेमें आलस्य करनेके कारण उन्हें छात्रावासके सारे काम करना नहीं समझाता, वह विद्यार्थियोंकी कोई भलाई नहीं करता। ऐसी मेहनतको विद्यार्थियोंकी शिक्षाका एक अंग समझना चाहिए। पर विद्यार्थियोंसे यह दैनिक काम करानेमें एक शर्त जरूरी है। वह यह कि संचालकोंको स्वयं काममें मदद देकर अपना उदाहरण उनके आगे रखना चाहिए। ऐसा किया जाये तो फिर "क्षुद्रताकी भावना बढ़नेका" जरा भी भय नहीं रहेगा।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ३०-९-१९३३

१. यहाँ नहीं दिया गया है। निर्णयमें कहा गया था: "नगरपालिका अधिनियममें 'दलित वर्ग' की कोई व्याख्या नहीं दी गई है। अदालतको यह पता नहीं है कि कानून द्वारा जो मान्य हो, ऐसी कोई कानूनी परिभाषा इस शब्दकी है।..."

२. इस अंग्रेजी लेखको यद्यपि ३०-९-१९३३ के **हरिजन** में प्रकाशित किया गया तथापि इसका गुजराती अनुवाद **हरिजनबन्धु** के २४-९-१९३३ के अंकमें पहले ही छाप दिया गया था।

३. पत्र यहाँ नहीं दिया गया है। पत्र-लेखकने गांधीजीसे पूछा था कि यदि छात्रावासोंमें छात्रोंसे बर्तन मंजवाये जायें तो क्या इसमें अनुचित होगा?

४४. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

सत्याग्रह आश्रम, वर्धा
३० सितम्बर, १९३३

प्रिय घनश्यामदास,

आपको मालूम ही है कि आश्रमवासियोने गत पहली अगस्तको साबरमतीके 'सत्याग्रह आश्रम' और उसकी भूमिको त्याग दिया था। मुझे आशा थी कि सरकार मेरे पत्र[1] के अनुसार इस त्यक्त सम्पत्तिपर अधिकार कर लेगी, लेकिन उसने ऐसा नही किया। ऐसी अवस्थामे मेरे सामने यह सवाल खडा हुआ कि मेरा क्या कर्त्तव्य है। मुझे लगा कि कीमती इमारतोको यो ही नष्ट होने देना बिलकुल गलत होगा। मैंने मित्रो और सहकर्मियोके साथ परामर्श किया और मैं इस नतीजेपर पहुँचा हूँ कि आश्रमका सबसे अच्छा उपयोग यही हो सकता है कि उसे हमेशाके लिए हरिजन सेवाके निमित्त अर्पित कर दिया जाये। मैंने अपना सुझाव आश्रमके न्यासियो[2] के, जो बाहर है, और सहसदस्योके सामने रखा, और मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता होती है कि वे इससे हृदयसे सहमत है। जब इस सम्पत्तिका त्याग किया गया था तो उस समय यह आशा अवश्य की जा रही थी कि किसी दिन सम्मानपूर्ण समझौतेके द्वारा, अथवा भारतकी लक्ष्य-सिद्धि होनेपर, न्यासी लोग इस सम्पत्तिपर पुन अधिकार कर सकेगे। इस नवीन सुझावके अनुरूप न्यासी लोग सम्पत्तिसे पूरी तरह हाथ धो रहे है। न्यास-पत्र[3] के अनुसार ऐसा करनेका उन्हे अधिकार है, क्योकि न्यासका एक उद्देश्य हरिजन सेवा भी है। अतएव यह नया सुझाव आश्रम और न्यासके व्यवस्था-विधानके[4] पूर्णतया अनुरूप है।

ट्रस्टियोके और मेरे लिए विचारणीय प्रश्न यही था कि जिस विशेष उपयोगका मैंने उल्लेख किया है उसके लिए सम्पत्ति किसके सुपुर्द की जाये, और हम सब सर्व-सम्मतिसे इस निष्कर्षपर पहुँचे कि उसे भारत-व्यापी उपयोगके लिए अखिल भारतीय हरिजन सघके सुपुर्द करना चाहिए। ट्रस्टके उद्देश्य निम्नलिखित है (१) भविष्यमे बनाये जानेवाले नियमोपनियमोके अनुरूप आश्रमकी भूमिपर वाछनीय हरिजन परिवार बसाये जाये, (२) हरिजन बालको और बालिकाओके लिए छात्रावास खोला जाये, जिसमे गैर-हरिजनोको भर्ती करनेकी स्वतन्त्रता रहे, (३) खाल उतारने, कमाने, चमड़ा तैयार करने और इस प्रकार तैयार किये गये चमडेके जूते, चप्पल और दैनिक आवश्यकताओकी ऐसी ही अन्य चीजे तैयार करनेकी कलामे दीक्षित करनेके लिए एक तकनीकी विभाग खोला जाये, और अन्तमे, इमारतोको गुजरात प्रान्तीय या

१. २६ जुलाई, १९३३ का, देखिए खण्ड ५५, पृष्ठ ३१६-९।

२. जमनालाल बजाज और छगनलाल गाधी।

३. देखिए खण्ड २९, पृष्ठ ४२७-८।

४. देखिए खण्ड ३६, पृष्ठ ४१९-३१।

केन्द्रीय बोर्डके कार्यालयके रूपमे, और उन सारे उपयोगोके लिए काममे लाया जाये जिन्हे निम्नलिखित अनुच्छेदमे निर्दिष्ट समिति उचित समझे।

मै न्यासियोकी ओरसे यह सुझाव पेश करता हूँ कि हरिजन सेवक सघ एक विशेष समिति नियुक्त करे जिसमे आप और मन्त्री पदेन (एक्स ऑफीशियो) सदस्य रहे और तीन अन्य सदस्य अहमदाबादके तीन नागरिक हो। इस समितिको अपनी सख्यामे वृद्धि करनेका अधिकार रहे, और यही इस न्यासको हाथमे लेकर उसके उद्देश्योकी पूर्ति करे।

दो मित्र, श्री बुधाभाई और श्री जूठाभाई इस आश्रमके साथ हमेशासे रहे है। उन्होने आश्रममे अवैतनिक प्रबन्धकोकी हैसियतसे रहनेकी तत्परता प्रकट की है। इनके जीवन-निर्वाहके अपने स्वतन्त्र साधन है और ये हरिजन सेवा-कार्यमे बहुत कालसे लगे हुए है। एक ऐसा आश्रमवासी[1] भी है जिसने हरिजन सेवाके लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया है। यह भी आश्रममे खुशी-खुशी रहनेको तैयार हो जायेगा। हरिजन बालको और बालिकाओके शिक्षण-कार्यमे तो इसने कमाल हासिल किया है। अतएव मैने जैसी समिति बताई है उसे न्यासका प्रबन्ध करनेमे कोई कठिनाई नही होनी चाहिए, न यह जरूरी है कि मैने जितने काम बताये है वे एक साथ और तुरन्त ही हाथमे ले लिये जाये। आपको पता ही है कि कुछ हरिजन परिवार वहाँ इस समय भी रहते है। आश्रमके सदस्योका यह स्वप्न रहा है कि हरिजन परिवारोकी एक बस्ती बसाई जाये, पर कुछेक को बसानेको छोडकर हम इस दिशामे अधिक आगे नही बढ सके। वहाँ चमडा कमानेका प्रयोग भी जारी रखा गया था और आश्रमवासियोके तितर-बितर होनेके समयतक वहाँ चप्पले भी बनती थी। इमारतमे बडा-सा छात्रावास है जिसमे १०० जन आसानीसे रह सकते है। इसमे बुनाई करनेका काफी बडा शेड है, और मैने जो-जो काम गिनाये है उनके लिए पूरी व्यवस्था है। सम्पत्तिमे १०० एकड भूमि है। इस प्रकार मै कह सकता हूँ कि उपरोक्त उद्देश्योकी पूर्तिके लिए स्थान काफी बडा तो नही है, फिर भी फिलहाल उनकी जितनी पूर्तिकी आवश्यकता है, उसे देखते हुए अच्छा खासा है। आशा है, मेरा प्रस्ताव स्वीकार करनेमे और इस स्वीकृतिजन्य उत्तरदायित्वकी पूर्तिमे सघको कोई आपत्ति नही होगी।[2]

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

श्रीयुत घनश्यामदास बिडला
अध्यक्ष, हरिजन सेवक सघ
बिडला मिल्स, दिल्ली

अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ७९३७) से, सौजन्य घनश्यामदास बिडला

१ भगवानजी पुरुषोत्तम पण्डया, जो आश्रममें स्थायी रूपसे रहनेके लिए बर्मासे चले आये थे।

२. ४ अक्टूबर, १९३३ के अपने पत्रमें बिडलाजीने गाधीजीका प्रस्ताव स्वीकार करते हुए यह अनुरोध किया था कि जो लोग आश्रममे पहलेसे ही है, वे आश्रमकी तथा उसकी भूमिकी देखभाल करते रहें।

४५. पत्र : आत्मा एस० कमलानीको

सत्याग्रह आश्रम, वर्धा
३० सितम्बर, १९३३

प्रिय कमलानी,

तुम्हारा पत्र मिला।

तुमने मुझे अनशनका कोई विकल्प नही बताया है। लेकिन मेरे सम्भावित अनशनोको लेकर तुम्हे उद्विग्न होनेकी जरूरत नही है। वे अकारण और बिना सोचे-विचारे नही किये जाते और अधिकाशत उनके पीछे कोई प्रेरणा होता है, इसलिए उनके लिए मुझे जिम्मेदार नही ठहराया जा सकता। जबतक विभ्रम मनमे बना रहता है तबतक बुद्धि कुछ काम नही करती और बुद्धिकी दुहाई व्यर्थ होती है। इस प्रकारका ईश्वर प्रेरित अनशन करते समय मेरे या मुझे इस अनशनसे विरत करनेका प्रयत्न करनेवाले लोगोके सामने जो अलघनीय कठिनाई होती है उसे क्या तुम नही देख सकते?

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गाधी

श्रीयुत आत्मा एस० कमलानी
अवैतनिक सयुक्त मन्त्री
"फ्रेड्स ऑफ इडिया"
४६ लकास्टर गेट
लन्दन, डब्ल्यू० २

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १५३१) से।

४६. पत्र : सी० एफ० एन्ड्र्यूजको

वर्धा
३० सितम्बर, १९३३

प्रिय चार्ली,

तवा कढाईको काला कह रहा है। मै देखता हूँ कि तुमपर फिर चिन्ताका भूत सवार हो गया है। क्या मैंने कहा नही है कि "अखबारी रिपोर्टोपर विश्वास मत करो?" जबतक डाक्टर लोग मुझे चॅगा करार नही दे देते तबतक मै दौरेपर नही निकलूंगा, और २३ अक्टूबरसे पहले तो किसी भी सूरतमे नही। मै तुम्हे विश्वास दिलाता हूँ कि कोई चीज जल्दबाजीमे नही की जायेगी। और आप मौकेपर मौजूद आदमीपर भरोसा क्यो नही करते? निश्चय ही जमनालालजी जबतक बिलकुल सन्तुष्ट नही हो जायेगे कि मै बाहर जाने लायक चगा हो गया हूँ, तबतक वे मुझे हिलने भी नही देगे।

अन्तत मै वेरियरके कमरेमे झॉकनेके लिए कुछ समय निकाल सका। वह बिलकुल ठीक दिखाई पडता था। वह बहुत ठीक प्रगति कर रहा है।

मेरा वजन बढा है और ब्लड-प्रेशर बम्बईमे जितना था उससे निश्चय ही कम है।

सप्रेम,

मोहन

[पुनश्च]

अमियके क्या हाल है?

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३७९५) से।

४७. पत्र : तेजबहादुर सप्रूको

सत्याग्रह आश्रम, वर्धा
३० सितम्बर, १९३३

प्रिय डॉ० सप्रू,

आपका पत्र पाकर बडी खुशी हुई। बेशक मै जानता था कि आप मुझे पत्र क्यो नही लिख रहे हैं। मै यह सोचनेकी गलती कभी नही कर सकता था कि आपमे स्नेह या शिष्टताकी कमी है।

मै अभी भी अपनी खोई हुई शक्ति प्राप्त करनेकी कोशिश कर रहा हूँ। वह धीरे-धीरे वापस लौट रही है।

हरिजनोके विरुद्ध रूढिपथियोके पूर्वग्रहको दूर करनेके लिए मै भरसक प्रयत्न कर रहा हूँ। मै आपसे बिलकुल सहमत हूँ कि "उनके प्रति हमारा रवैया हमारे चरित्रपर सबसे बडा कलक है"। मै जानता हूँ कि इस मामलेमे मै इस बातपर निर्भर कर सकता हूँ कि आप पूरे दिलसे सहायता करेगे, लेकिन मै यह नही पसन्द करता कि आप मुझे पत्र लिखते समय केवल हरिजन-समस्याके बारेमे ही लिखे। आप राजनीति या राजनीतिक चर्चामे सक्रिय भाग नही लेते तो न ले, लेकिन निश्चय हो आप अपने मित्रोको अपनी सलाह, मार्गदर्शन और परिपक्व अनुभवके लाभसे वचित नही करना चाहेगे। हमारे दृष्टिकोणमे चाहे कितनी ही भिन्नता हो, लेकिन आप जानते है कि मेरे मनमे आपके और आपकी रायके लिए बहुत आदर है। इसलिए मै चाहूँगा कि आप मुझे लन्दनके अपने अनुभवो[1] का सक्षिप्त विवरण और उनपरसे आपने जो धारणा बनाई है, उसके बारेमे लिखे।

मेरे साथ सेठ जमनालालजी भी अपना अभिवादन भेज रहे हैं।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

सर तेजबहादुर सप्रू
१९, अल्बर्ट रोड, इलाहाबाद

[अग्रेजीसे]

गाधी-सप्रू करेस्पाडेन्स जी० २६, सौजन्य . राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता

१. श्री सप्रू सयुक्त ससदीय समितिमें भाग लेनेके लिए अप्रैलकी बैठकोमें लन्दन गये थे।

४८. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

वर्धा
३० सितम्बर, १९३३

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा २६ तारीखका पत्र मिला।

मणिका पत्र कल आया। ऐसा लगता है कि उसका प्लीहा बढ गया है। वह उसका उपचार भी करवा रही है। इसलिए यहाँ आनेमे उसे कुछ समय लगेगा। आश्रमको हरिजनाश्रमके रूपमे चलानेके लिए बुधाभाई, जूठाभाई और भगवानजी तो है ही। तीनो ही व्यक्ति ईमानदार, मेहनती और कुशल है। पहले दो को कुछ देनेकी जरूरत भी नही है।

रामदास धीरे-धीरे ठिकाने आ जायेगा। चिन्ताका कोई कारण नही।

आनन्दी ठीक रहती है। पृथुराज कालीकटमे है। इन्दुके पत्र भावनगरसे आते है। . . .[1]

आशा है, तुम कुशलपूर्वक होगे। चन्दूभाई आनन्दपूर्वक होगे।

यह सम्भव है कि लक्ष्मी थोड़े समयमे मद्रास जायेगी।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृष्ठ ३१

४९. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

३० सितम्बर, १९३३

मेरे बारेमे समाचारपत्रोमे जो रिपोर्ट प्रकाशित हुई है वह सब होते हुए भी झूठ है। डॉक्टर ऐसा ही कहेगे। लेकिन जिन्हे मेरे स्वास्थ्यके बारेमे मालूम है उन्हे घबराना नही चाहिए, क्योकि यहाँ जितना रक्तचाप है इसकी अपेक्षा वहाँ ज्यादा था। वजनका घटना अथवा बढना मेरे स्वास्थ्यकी दृष्टिसे कोई महत्त्व नही रखता। लेकिन अब तो मेरा वजन भी कमसे-कम १०१ पौड हो गया है। मै आराम भी काफी करता हूँ।

[गुजरातीसे]
बापुनी प्रसादी, पृष्ठ १३६

१. साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ छूट गया है।

५०. एक टिप्पणी[1]

वर्धा
३० सितम्बर, १९३३

यह रकम हरिजन-कोषके लिए दिल्ली हरिजन सेवक-सघको भेजी जाये।

मो० क० गांधी

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०७१) से।

५१. भविष्यका वर्ण-धर्म

एक सनातनी सज्जन लिखते है[2]

इस प्रकारके प्रश्नोका सीधा जवाब देना कठिन है। कोई त्रिकालदर्शी ही इनका उत्तर दे सकता है। दूसरे तो कोरा अनुमान ही लगा सकते है। मेरे लिए तो वर्तमानका ज्ञान और तदनुसार आचरण ही पर्याप्त है। 'चूकै मति यह दॉव, कहा आगेकी सोचे', आस्तिक और नास्तिक दोनो ही इसे अन्त करणसे गा सकते है। नास्तिकके अरमान तो खाने-पीने और मौज उडानेमे ही पूरे हो जाते है, और आस्तिकके अरमान भगवद्भक्ति और उससे प्राप्त कर्त्तव्य-कार्यमे तन्मय हो जानेमे सम्पन्न होते है। मै अपनेको आस्तिक मानता हूँ और अपने वर्तमान कर्त्तव्यको पूरा करनेमे ही कृतार्थता मानता हूँ। आज जैसा करूँगा, भविष्यमे वैसा भरूँगा, अर्थात् यह निश्चित है कि वर्तमान कर्मानुसार ही भविष्य बनेगा। इसीलिए वर्ण-धर्मके भविष्यके विषयमे मुझे चिन्ता नही है। इन सनातनी सज्जनसे भी मै यही सिफारिश करूँगा कि वह भविष्यकी चिन्तामे न पडे। मेरी तरह जो वर्ण-धर्म मानता है, और मेरी बताई व्याख्या ही जिसे स्वीकार है वह उसीके अनुसार अपना आचार-विचार रखे तो वह पूर्णतया अपने धर्मका पालन करनेवाला समझा जायेगा।

फिर एक दूसरी बात भी ध्यानमे रखने योग्य है। किसी भी धर्मके मूल सिद्धान्तमे व्यापक बननेकी क्षमता होनी चाहिए। जिन सिद्धान्तोमे ये गुण नही होते, वे सिद्धान्त ही नही कहे जा सकते। यदि वर्ण-धर्मका सिद्धान्त व्यापक न हो तो

१. गांधीजीने १४-१०-१९३३ को अमृतलाल वि० ठक्करको लिखे पत्रमें जिस टिप्पणीकी चर्चा की है, वह सम्भवत यही है।

२. पत्र यहाँ नही दिया गया है। पत्र-लेखकने अपने पत्रमें गुजरातके हरिजनोंको दृष्टिमें रखते हुए लिखा था कि सच्चे अर्थोंमें वर्णाश्रम-धर्मकी प्रतिष्ठा अब दुर्लभ ही है।

उसकी उत्पत्ति किसी विशेष काल, स्थान और सयोगमे होनी चाहिए, और इनमे से किसी एकके भी बदलते ही वर्ण-व्यवस्था भी बदल जानी चाहिए। वर्ण-व्यवस्था अगर इतनी क्षणजीवी वस्तु हो तो चाहे वह रहे या न रहे, उसके सम्बन्धमे कुछ भी विचार करनेकी जरूरत नही है। पर अपनी व्याख्यानुसार, मै वर्ण-धर्मको सर्वव्यापक सिद्धान्त मानता हूँ। उसके पालनपर ही जनसमाजके अस्तित्वका आधार है। यदि मेरे विश्वासमे तथ्य है तो भविष्यमे वर्ण-धर्म अवश्य व्यापक होगा, फिर भले ही वह चाहे जिस नामसे पुकारा जाये। वर्ण-धर्मका अभिप्राय है कि प्रत्येक मनुष्य अपनी पैतृक आजीविकाके साधनसे सन्तुष्ट हो। इस योजनाके मूलमे अहिसा है, ईश्वरीय नियमका ज्ञान है, शुद्ध अर्थशास्त्र है और मनुष्यत्व है। इस वर्ण-धर्मका पालन न हुआ तो अभूतपूर्व पारस्परिक सहार ही होगा। ज्यो-ज्यो करोडोमे जागृति आती जायेगी, सब धनवान होना चाहेगे, सब बडे बनना चाहेगे और नीच कहे जानेवाले धन्धे कोई नही करना चाहेगा, त्यो-त्यो ऊँच-नीचकी भावना और अधिक बढती जायेगी। मुझे लगता है कि इसका परिणाम आपसकी मार-काटके सिवा और कुछ नही होगा।

पर मनुष्यके स्वभावमे ही आत्म-रक्षाका गुण मौजूद है। इसलिए मनुष्य वर्ण-धर्मका आश्रय लेगा और बच जायेगा। सब अपने-अपने पैतृक धन्धोमे लगे रहेगे, किसी धन्धेको ऊँचा-नीचा माने बिना ही सब अपना-अपना जीवन बितायेगे। ऐसा होनेपर अगर कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय, आदि नामोसे प्रसिद्ध न होकर, दूसरे नामोसे प्रसिद्ध हो, तो उसकी चिन्ता नही करनी चाहिए। वर्ण चारके बजाय दो हो सकते है और चारमे अधिक भी। इतना स्पष्ट है कि वर्णके महान नियमोका पालन करनेसे हम पूँजीवाद और मजदूरवाद आदिके कलहसे बच जायेगे। इस व्यवस्थामे एक ओर तो अतिशय लोभ, धन, और मद नही होगा, और दूसरी ओर लाचारी, कगाली और दीनता न होगी। सब मिलकर प्रेमसे रहेगे, कोई किसीको ऊँच या नीच नही मानेगा।

इतना लिखकर अब मै अपनी कल्पनाके घोडेपर सवार होकर थोडी सैर करना चाहूँगा। अगर वर्ण-व्यवस्थाकी रचना कोई मुझे करने दे और मै भारतमे होऊँ, तो उसका श्रीगणेश मै ब्राह्मणोसे ही करूँ। वे निश्चित रूपसे अनुभव-ज्ञान और उसके आधारपर रचे हुए आचारके रक्षक होते है, अत उनके सहयोगसे दूसरे वर्ण स्वय व्यवस्थित हो सकते है। कारण यह है कि उनका अनुभव स्वयसिद्ध होता है और वे निःस्वार्थ होते है, अत सहज ही सब लोग उनका अनुसरण करेगे। उनमे कार्यकुशलता भी होती है। कौन ब्राह्मण है, यह प्रश्न ही तब नही रहेगा। आज जिसे हरिजन कहा जाता है वह ब्राह्मणकी तरह सर्वसामान्य होगा, और जो ब्राह्मण है वह अपनेको शूद्र कहे जानेमे सकोच नही करेगा। मै जिस कालकी कल्पना कर रहा हूँ उसमे मुझे कुछ अडचन नही आयेगी, कारण कि उस समय ऊँच-नीचकी भावनाका सर्वथा उन्मूलन हो चुकेगा और सब अपने-अपने गृहकर्ममे लग जायेगे, तथा सहज ही अपने-अपने स्थानमे सुव्यवस्थित जम चुके होगे। कल्पनाके घोडेकी यात्राका लम्बा वर्णन करनेमे कुछ विशेष लाभ नही होता। इसलिए थोडा मार्गदर्शन करके ही समाप्त

करता हूँ। पर मेरे इस लेखसे इतना तो समझ ही लेना चाहिए कि वर्ण-धर्म यहाँ अहिसा-प्रधान माना गया है, अत उसमे राजदण्ड अथवा बलात्कारके लिए स्थान ही नही है। मनुष्य-स्वभावमे यदि वर्ण-धर्म है, तो उसका उद्धार हो ही जायेगा। वर्ण-धर्म यदि मानव-स्वभावके विपरीत है, तो आज उसका जो लोप हो चला है वह ठीक ही है। मनुष्य पशुजातिका जन्तु-विशेष ही नही है, बल्कि वह प्राणी है, जिसमे से पशुत्व दिन-दिन कम होता जाता है और जो अज्ञानकी मूर्च्छासे जाग्रत होकर आत्मार्थी बनता जाता है। मानवप्राणीकी रचना ही आत्माको पहचाननेके लिए हुई है और वह आत्म-स्वरूप ही है। इसलिए किसी-न-किसी दिन ऊँच-नीचके मिथ्या प्रपचसे निकल कर, वह आत्मैक्य बढानेवाली वर्ण-व्यवस्थाको स्वय स्वीकार करेगा।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, १-१०-१९३३

५२. पत्र : पद्माको

१ अक्टूबर, १९३३

चि० पद्मा[1],

तू मुझे माफ कर देगी न? तुझे लिखनेका मन तो रोज करता है, लेकिन समयकी कमीके कारण तुझे लिख नही पाता। अब तो तू और सरोजिनी देवी[2] अच्छी हो गई होगी। तू मुझे अपना कार्यक्रम बतलाना। तेरा दूसरा पत्र आनेपर ज्यादा लिखूंगा। आनन्दी, बबु, बचु, प्रभावती और मीराबहन और बा मेरे साथ है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१४४) से। सी० डब्ल्यू० ३४९९ से भी, सौजन्य प्रभुदास गाधी

५३. पत्र : सुदर्शन वी० देसाईको

१ अक्टूबर,

चि० मावो,

तू मावे जैसा मीठा है क्या? न हो तो बनना। अपनी लिखावट रोज सुधारना। वहाँ मन अच्छा लग गया है क्या?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५७६३) से, सौजन्य वालजी गो० देसाई

१ सयुक्त प्रान्तके एक काग्रेसी कार्यकर्ता सीतला सहायकी लडकी।

२ पद्माकी माँ।

५४. पत्र : धीरू सी० जोशीको

१ अक्टूबर, १९३३

चि० धीरू,

अब तेरा बुखार उतर गया होगा। तू अपनी छुट्टियाँ वहाँ ही शान्तिके साथ बिताना। गिजुभाई[1] का कहना है कि वहाँ रहा जा सकता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५३१६) से।

५५. पत्र : दूधीबहन बी० देसाईको

वर्धा
१ अक्टूबर, १९३३

चि० दूधीबहन,

तुम्हें पत्र लिखनेकी इच्छा तो बहुत होती है, लेकिन समय ही नहीं मिलता। तुम्हें वह जगह अनुकूल आ गई जान पडती है। मेरा खयाल है यदि कुसुम[2] मान जाये तो उसका धर्म है कि राणावावमें रहकर वह अपने स्वास्थ्यको सुधारे। आशा है तुम आनन्दपूर्वक होगी। वालजीके पत्रमें कुछ जानने योग्य हो तो मुझे लिखना। सबके पत्र इसके साथ हैं, यथा कुसुम, बलभद्र[3], इन्दु, नानु[4], भावो[5] और धीरू।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७४५३) से, सौजन्य वालजी गो० देसाई

१. गिजुभाई बधेका, शिक्षा-शास्त्री और लेखक।

२ कुसुम गांधी, जो तपेदिकसे ग्रस्त थी।

३. बलभद्र एन० पटेल।

४ और ५. दूधीबहनके पुत्र जिनका नाम क्रमसे विमलचन्द्र और सुदर्शन था।

५६. पत्र : द० बा० कालेलकरको

१ अक्टूबर, १९३३

चि० काका,

तुम्हारा पत्र मिला। बहुत प्रतीक्षा करवाई। लेकिन अब उसका कारण समझमे आया।

तुम्हे जमनालालजीकी अनुमति लेनेकी जरूरत नही, क्योकि तुम आश्रमवासी हो।[1]

आश्रमके दानके बारेमे मैने घनश्यामदासको आज ही पत्र[2] भेजा है। वल्लभभाईको लिखा तुम्हारा पत्र मुझे तो ठीक लगा है।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९४७९) से, सौजन्य द० बा० कालेलकर

५७. पत्र : जयश्री रायजीको

१ अक्टूबर, १९३३

प्रिय बहन,

तुमने जो कार्य शुरू किया है उसके लिए तुमने मेरा आशीर्वाद माँगा है, और चूँकि वह देना मुश्किल नही है इसलिए यह लो। इसके अतिरिक्त तुमने किसी चीजकी कामना नही की है। लेकिन मेरे समझनेमे यदि कोई भूल हुई हो तो सुधारना, और बातको साफ-साफ लिखना ताकि मुझसे जो बन पडेगा उसे पूरा करनेमे नही चूकूँगा।

मोहनदासके वन्देमातरम्

बापुजीनी शीतल छायामां मे प्रकाशित गुजरातीकी अनुप्रतिसे, पृष्ठ ८ के सामने।

१. यहाँ कुछ अंश काट दिया गया है।

२. देखिए "पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको", ३०-९-१९३३।

५८. पत्र : एफ० मेरी बारको

२ अक्टूबर, १९३३

चि० मेरी,

मैं छतपर टहल रहा हूँ और इस बीच डकन मेरे पास आया है, वह मुझे तुम्हारा और अपना स्नेहाभिवादन कहता है। मैं तुम्हारे इस स्नेहको अपने हृदयमें सँजोकर रखूंगा। लेकिन मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी कमजोरी दूर हो जाये और तुम जल्दसे-जल्द उठकर काम करने लगो। भगवान करे तुम जल्द ही अच्छी हो जाओ। बेशक, मैं तुम्हारे स्वास्थ्यके सम्बन्धमें पूरी जानकारी रखता हूँ।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६००६) से, सी० डब्ल्यू० ३३३२ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

५९. पत्र : प्रेमलीला ठाकरसीको

२ अक्टूबर, १९३३

प्रिय बहन,

तुम्हारा पत्र मिल गया है। मथुरादास भी लिखता है कि तुम मेरी चिन्ता करती रहती हो। लेकिन यह जगह मेरे मनको खूब भा गई है। मैं ठीक खाना खाता हूँ, वजन भी बढ रहा है, रक्तचाप कम होता जाता है, इसलिए चिन्ता करने जैसी कोई बात नही है और महाबलेश्वर जानेकी भी कोई जरूरत नही है। जो काम मै यहाँ निबटा सकता हूँ सो वहाँ नही कर सकता, ऐसा मुझे लगता है। इसके अलावा इस समय मैं इतना ज्यादा खर्च करनेकी जरूरत भी नही समझता।

तुम्हारा जुकाम तो बिलकुल ठीक हो गया है न?

बा आज खादी-कार्यके लिए नागपुरमें गई है।

लडकियोको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४८३३) से, सौजन्य. प्रेमलीला ठाकरसी

६०. पत्र : सी० एफ० एन्ड्रयूजको

असंशोधित

सत्याग्रह आश्रम, वर्धा
३ अक्टूबर, १९३३

प्रिय चार्ली,

तुम्हारा पत्र मिला।

तुमने उडीसाके बेहतर और अनुकूल वातावरणके बारेमे जो बताया है उसे मै समझता हूँ और उससे मुझे खुशी हुई है। ठक्कर बापा किसी सूरतमे भी उडीसा नही जा सकते, कमसे-कम इस समय तो नही, लेकिन उनके अलावा कोई और योग्य व्यक्ति थोडे ही समयमे वहाँ पहुँच जायेगा।

'आमरण अनशन' का तुमने जिन अर्थोमे उपयोग किया था उसमे मैने सुधार किया था, लेकिन मै देखता हूँ कि तुम फिर उसी अर्थमे उसका उपयोग करने लगे हो। मैने तुम्हे बताया था कि अबतक मैने जितने उपवास[1] रखे है उनके साथ शर्त जुडी रहती थी, यहाँतक कि सबसे आखिरी उपवास भी सशर्त था। मै यह अच्छी तरह समझ सकता हूँ कि किसी व्यक्तिको बिना किसी शर्तके आमरण अनशनकी बात रुचिकर न लगे, हालाँकि मै तुम्हे बता चुका हूँ कि जीवनके प्रति मेरा जो दृष्टिकोण है उसमे अत्यन्त असामान्य परिस्थितियोमे बिना किसी शर्तके उपवासको भी स्थान है। लेकिन मै उस अन्तिम स्थितिकी चर्चा करनेकी कोई जरूरत नही समझता। मै सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूँ कि गुरुदेवसे बातचीत करते हुए तुम्हे इतनी सावधानी बरतनी चाहिए कि 'आमरण अनशन' का जो शाब्दिक अर्थ है, उस अर्थमे उसपर कोई दलील न करो। इसलिए सबसे अच्छा यही होगा कि तुम गुरुदेवके साथ केवल मेरे उन उपवासोकी ही चर्चा करो जिनके बारेमे गुरुदेव सन्तुष्ट नही है, जैसाकि शायद मेरा पिछला उपवास था, और वहाँ भी यह कहना बिलकुल एक बात होगी कि अभीतक जो तथ्य मालूम हुए है उनको देखते हुए उपवास करनेको उचित नही कहा जा सकता, और यह कहना बिलकुल दूसरी बात है कि हरिजनोके बारेमे जो प्रश्न मैने यरवडामे उठाया था, उस प्रश्नपर किसी भी स्थितिमे उपवास करना उचित नही कहा जा सकता। मेरे सामने एक अत्यन्त कष्टकर किन्तु दिलचस्प मामला है, जिसमे मैने एक कार्यकर्त्तासे सत्य और सम्मानकी रक्षाके लिए पश्चात्ताप रूप उपवास रखनेके लिए कहा है। मैने गुजरातीके 'हरिजन'[2] मे इसके बारेमे चर्चा की है। तुम्हे अगले सप्ताहके अंग्रेजीके 'हरिजन'[3] मे भी यह देखनेको मिलेगा।

१. १६ अगस्तसे २३ अगस्त तक, देखिए खण्ड ५५।
२ और ३. देखिए "उपवास कब आवश्यक होता है?", ८-१०-१९३३।

उम्मीद है तुम अपनी शक्ति-सीमासे ज्यादा काम नही कर रहे हो। म खूब मजेमे चल रहा हूँ। मैंने अपने प्रस्तावित दौरेके बारेमे तुम्हे निश्चिन्त करते हुए परसो एक पत्र लिखा था।[1]

सप्रेम,

मोहन

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३७९६) से।

६१. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

असंशोधित

३ अक्टूबर, १९३३

प्रिय कुमारप्पा,

तुम्हारा पत्र ठीक उसी समय आया है जब मुझे उसकी आशा थी। जब तुम इस पत्रका उत्तर दो तब तुम मुझे अपनी शारीरिक अवस्थाके बारेमे भी सब-कुछ लिखना। तुम जब यहाँ आना चाहो तब आ सकते हो और इस महीनेकी २३ तारीखसे पहले किसी भी समय आ सकते हो। यदि डाक्टर लोग मुझे जानेका प्रमाणपत्र दे देंगे तो मै इसके बाद अपनी यात्रा आरम्भ कर सकता हूँ।

मै काफी काम कर रहा हूँ और दिनमे कमसे-कम एक घटा मुलाकातके लिए आनेवालोसे भेंट भी करता हूँ। इसमे हमेशा एक घटेसे ज्यादा समय चला जाता है। इसलिए तुम्हे चिन्ता करनेकी कोई जरूरत नही तथा मै जानता हूँ कि तुम मुझे परेशान नही करोगे।

मै आशा करता हूँ कि तुम्हारी बहनपर जो दैवी आपत्ति आ पडी है उसे वह वीरताके साथ झेल रही है। मैंने तो यह जाना है कि अखडित सुखकी अपेक्षा, जो कि बाहरी परिस्थितियोपर निर्भर करता है, ऐसे दुःख कभी-कभी भगवानकी ओरसे भेजे गये ज्यादा सच्चे वरदान सिद्ध होते है।

चन्द्रशकर, जो कि मेरी मदद कर रहा है, विशेष रूपसे तुम्हे अपना नमस्कार भेजता है। मुझे इस हफ्ते किसी भी समय काका साहबके यहाँ आनेकी उम्मीद है और हो सकता है कि वह कुछ समयतक यहाँ रहे।

सप्रेम,

बापू

श्रीयुत जे० सी० कुमारप्पा
मार्फत श्री सी० वी० नरसय्या
कोयम्बटूर (द० भारत)

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१००) से।

१. देखिए "पत्र सी० एफ० एन्ड्र्यूजको", ३०-९-१९३३।

६२. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

३ अक्टूबर, १९३३

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिला।

. .[१]

आश्रमके बारेमे तुम मेरा पत्र[२] समाचार-पत्रोमे देखोगे। जरूरत जान पडी तो तोतारामजी[३] को भेजूँगा। परीक्षितलाल भी वही रहेगे। कोई दिक्कत नही होगी।

मणिको मैंने लिखा है कि वह ठीक इलाज करवाके ही आये।

. .[४] का काम तो ऐसे ही चलेगा। उसे सुधारना तो कुत्तेकी पूँछको पत्थरके साथ बाँधने जैसा है। कृष्णा नेहरूके बारेमे तुमने पढा ही होगा।

अब चूँकि मुझे और काम करने है इसलिए आज इतनेसे ही समाप्त करता हूँ। जमनालालजी मेरी बगलमे ही बैठे है, और कहते है कि उनके सम्बन्धमे तुम कोई चिन्ता न करना। आवश्यकता हुई तो वे पहाडपर जायेगे। उनका वजन १९० पौडतक तो पहुँच गया है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृष्ठ ३२

६३. सलाह : जापानी बौद्ध स्थविरोंको[५]

४ अक्टूबर, १९३३

मुझे खुशी है कि आपसे मुलाकात हो सकी और काफी दिलचस्प बाते हुई। आपने मुझे जो लम्बा पत्र भेजा था उसे मै सावधानीपूर्वक पढ गया हूँ।

आपके मनमे जो यह इच्छा है कि भारतमे बौद्ध-धर्मकी पुनर्स्थापना हो, उसको मै अच्छी तरह समझ सकता हूँ और मै उसकी सराहना करता हूँ, केवल मै आपको

१. साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ छूट गया है।

२. देखिए "पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको", ३०-९-१९३३, जो ७-१०-१९३३ के **हरिजन** में प्रकाशित हुआ था।

३. तोताराम सनाढ्य, एक आश्रमवासी।

४. साधन-सूत्रमें नाम नहीं दिया गया है।

५. रेवरेंड फूजी और रेवरेंड ओकीत्सु ४ अक्टूबरको गांधीजीसे मिले थे। इस मुलाकातकी संक्षिप्त रिपोर्ट ५-१०-१९३३ के **हिन्दू** में प्रकाशित हुई थी।

यह बताना चाहूँगा कि बौद्ध-धर्मका चाहे जो भी अर्थ हो, भगवान गौतम बुद्धके उपदेशोके सारको हिन्दू-धर्ममे समाविष्ट कर लिया गया है और मेरे खयालसे, तुलनात्मक दृष्टिसे कहे तो, इस महान् सुधारकके उपदेशोकी शुद्धताको भारतमे ही सबसे ज्यादा सुरक्षित रखा गया है। बाहरके जिन देशोने इस धर्मको अपनाया है उन देशोमें, जैसा कि मुझे लगता है, इस धर्मका ह्रास हुआ है उदाहरणके तौरपर, महात्मा बुद्धकी शिक्षा अनिवार्य रूपसे यह थी कि न केवल मनुष्य-मनुष्यमे भ्रातृत्वकी भावनाका विकास हो बल्कि जीवमात्रमे इस भावनाका प्रसार हो। इसमे आश्चर्य की कोई बात भी नही है। मेरे विचारमे महात्मा बुद्धने किसी नवीन धर्मकी स्थापना नही की। उन्होने तो एक सच्चे हिन्दूके नाते हिन्दू-धर्मको एक नई दिशा दी थी। इसलिए मै आपको सुझाव देना चाहूँगा कि आप सस्कृत और पाली का अध्ययन करे और भगवान बुद्धकी शिक्षाके सम्बन्धमे अपने ज्ञानमे अभिवृद्धि करे। सस्कृतका अध्ययन करना इसलिए जरूरी है ताकि आपको मालूम हो सके कि यह उपदेश कहाँसे लिया गया है तथा जिस समय यह उपदेश दिया गया था उस समय क्या परिस्थितियाँ थी; तथा यह बिलकुल स्पष्ट है कि पालीका अध्ययन भी अनिवार्य है, क्योकि बौद्ध-धर्मके मूल धर्मग्रन्थ इसी भाषामे है। और चूँकि आप हिन्दुस्तानियोके सुख-दुखके साथी बन गये है, मै आपसे कहूँगा कि आप हिन्दी अथवा हिन्दुस्तानी पढनेकी अनिवार्यताको समझे और उसपर ध्यान दे।

अन्तमे मेरा आपसे यह निवेदन है कि चाहे जैसे धार्मिक पुनर्जागरण की आवश्यकता हो, वह व्याख्यान और पाण्डित्यसे नही बल्कि अपने जीवनमे पवित्रताको बढाकर और सर्वज्ञपर, उस जीवन्त सत्यपर प्रार्थनापूर्वक श्रद्धा रखनेसे ही सम्पन्न हो सकता है जो इस ब्रह्माण्डके कण-कणमे व्याप्त है, जो इसे प्रकाश देता है और जिसके बलपर यह टिका हुआ है।

[अग्रेजीसे]

हिन्दू, १२-१०-१९३३

६४. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

वर्धा
६ अक्टूबर, १९३३

भाईश्री ठक्कर बापा,

तुम्हारे दो पत्र मिले है। तुमने विधान रायकी खूब याद दिलाई। मेरी स्मरण-शक्ति तो घास चरने चली गई जान पडती है। तुमने याद न दिलाई होती तो रह जाता। अब तो कल पत्र अवश्य जायेगा।

अब दौरेके बारेमे। घनश्यामदास लिखते है कि मुझे १५ नवम्बरसे पहले दौरेपर रवाना नही होना चाहिए। डॉ० खरेका[1] भी यह आग्रह है कि मै कमसे-कम छ सप्ताह तक दौरा न करूँ। इसलिए मैने ८ नवम्बर तक रुके रहना मजूर किया है।

१. डॉ० एन० बी० खरे।

बुधवार ८ तारीखके रोज मै दौरा शुरू करूँगा। इससे जमनालालजीको भी सन्तोष मिलता है। मुझे भी लगता है कि रवाना होनेकी तारीख भले ही ८ नवम्बर हो। इस बीच, मेरे पास कुछ काम पडे हुए है वे भी पूरे हो जायेगे। हरिजन निवासके लिए भी मुझे विचार तो करना ही होगा। अहमदाबादके मजदूरोका मामला भी है, और फिर यहाँका भी बहुत सारा काम देखना बाकी है। यदि तुम इस विलम्बको उचित समझते हो तो उसके अनुरूप फेरबदल करना होगा। दौरेका सम्पूर्ण कार्यक्रम बनाते समय ऐसा करो मध्यप्रान्तके लिए जमनालालजी यहाँके कार्यकर्त्ताओसे मिलकर नमूनेके तौरपर एक कार्यक्रम बनाकर भेजे। अन्य प्रान्तोके सप्ताह निर्धारित कर दो और उनसे उन सप्ताहोका कार्यक्रम लिख भेजनेको कहो। ऐसा करनेके बाद कोई फेरबदल नही करना पडे। इसके बाद हमे नौ मासका पूरा कार्यक्रम एकबारगी प्रकाशित न करके प्रान्त-प्रान्तके दौरेका कार्यक्रम पहले प्रकाशित करना चाहिए जिससे यदि छोटे-मोटे कोई परिवर्तन करने आवश्यक ही हो तो हमे कोई दिक्कत न हो। ऐसा करे तो हमे सबसे पहले दो प्रान्तोका कार्यक्रम प्रकाशित करना चाहिए। और एक प्रान्तके खत्म होनेपर दूसरे प्रान्तका कार्यक्रम प्रकाशित हो। ऐसा करनेसे मेहनत भी कम पडेगी। जब जमनालालजी अपने सुझाव तैयार करेगे तब मै विस्तारसे लिखूँगा।

अब हरिजन निवासके सम्बन्धमे, इसे नाम क्या दिया जाये? मै अनुभव करता हूँ कि हमे हरिजन शब्दका प्रयोग नही करना चाहिए, लेकिन जिस शब्दका प्रयोग करे उसमे हमारा उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए। हमारा उद्देश्य तो अन्तत हरिजन शब्दको भुला देना है अथवा सबको हरिजन बन जाना है। इसीलिए विनोबाका सुझाव है कि हम उसका नाम सर्वोदय मन्दिर अथवा 'समभाव मन्दिर' रखे। मुझे तो निश्चय ही पहला नाम पसन्द है, क्योकि रस्किनकी प्रसिद्ध पुस्तक[1] को आजसे बीस वर्ष पहले मैने यही नाम दिया था। इस तरह हरिजन शब्दका भी समावेश हो ही जाता है। इस नामके बारेमे घनश्यामदासके साथ बातचीत करके मुझे लिखना। पत्रमे लिखी दूसरी चर्चाके बारेमे भी घनश्यामदासको समझाना।

बबलभाई[2] ने तुम्हारा और मेरा कहना माना, इस बातसे मुझे बहुत खुशी हुई है। वह यदि अपना नाम वापस न लेते तो स्थिति बहुत विषम हो जाती।

बापू

[पुनश्च]

जैसे हम काठियावाडको कुछ नही दे सकते उसी तरह दिल्लीको भी नही देगे। श्रीवास्तवजीके पराक्रमका समाचार तो मुझे बहुत पहलेसे मिल गया था। लेकिन घरकी फूटका दुखडा हम किसके आगे जाकर रोये?

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११२४) से।

१. अनटु दिस लास्ट; देखिए खण्ड ८।
२. बबलभाई मेहता।

६५. पत्र : माणेकलालको

६ अक्टूबर, १९३३

चि० माणेकलाल,

तुमने पत्र लिखा सो ठीक किया। आजकल कैसी नौकरी है? कितनी तनख्वाह मिलती है? बाकी सब तो तुम्हे राधाके पत्रसे मालूम हो जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२३, ३६९) से।

६६. पत्र : राधा गांधीको

६ अक्टूबर, १९३३

चि० राधा,

मै तेरा गुनहगार हूँ। मै काममे इतना ज्यादा व्यस्त रहता हूँ कि तेरे जैसे प्रियजनोको भूल जाता हूँ और वे [पत्रोके बिना] रह जाते है। तुम सबकी याद मनमे बनी तो रहती है, लेकिन पत्र लिखना रह जाता है। तुम सब सुखी हो, अपने-अपने ससारमे विचरण करते हो, यही जानकर मै सन्तुष्ट रहता हूँ। तुझे यह आशीर्वाद देता हूँ कि तू दीर्घायु हो। मै लिखूँ अथवा न लिखूँ, लेकिन तू लिखे यह बात जरूर अच्छी लगेगी। तेरा चेहरा तो हर पल मेरी आँखोके आगे नाचता रहता हे। मै ठीक हूँ। बा यही हे। रामदास और उसकी पत्नी भी यही है। देवदास जेलमे है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२३) से।

६७. टिप्पणियाँ

धन कैसे एकत्र किया जाये

बहुत-सी सस्थाओके सचालक समझते है कि जनतासे केवल अपील निकाल देनेसे ही उनकी सस्थाओको पैसा मिल सकता है। पर यह बात तो इने-गिने सुप्रसिद्ध और तपे हुए लोक-सेवकोके मामलेमे ही सही है। मुलर और रामकृष्ण परमहस-जैसे महा-पुरुषोको तो मूक प्रार्थनापर ही पैसा मिल जाता है। ऐसे बिरले सन्तोकी एक मूक इच्छा ही, बेतारकी तारबर्कीके सन्देशके समान, लोगोके पास पहुँच जाती है। पर अधिकाशमे साधारण जन-सेवकोको धन-सग्रह करनेके लिए भारी परिश्रम करना ही पडेगा। और परिश्रम उठानेका अच्छेसे-अच्छा रास्ता यही है कि घर-घर घूमा जाये। कार्य न्यायोचित हो — हमारा कार्य तो न्यायोचित है ही — और कार्य करनेवालोकी प्रामाणिकता लोग जानते हो, तो पैसा अवश्य मिलेगा। घर-घर जाकर भिक्षा माँगना एक प्रकारका उत्तम प्रचार-कार्य भी है। दानी सदा ही कडे होते है और होने ही चाहिए। जिस सस्थाके लिए उनसे मदद माँगी जाती है, उसकी सब आवश्यकताएँ वे पूछते है, जो उचित ही है। इसलिए जो सेवक भिक्षा माँगने जाये, उन्हे वस्तु-स्थिति और यथार्थ आँकडोकी तैयारी करके ही जाना चाहिए। पर सबसे अधिक जरूरत तो धीरजकी है। कही अपमान भी हो जाये तो वह उन्हे सहन कर लेना चाहिए। अन्तमे वे देखेगे कि जहाँ प्रामाणिकता और कार्यशक्तिके विषयमे शका नही होती, वहाँ पैसा मिलनेमे कमसे-कम कठिनता पडती है। ये दोनो गुण जहाँ नही होते वहाँ धन होना भी भार-रूप हो जाता है। यह बात आजकलकी बहुत-सी तथा-कथित धार्मिक सस्थाओमे देखी जाती है, जिनके पास प्रचुर द्रव्य होनेपर भी उनमे सडन फैल गई है।

अप्रामाणिक और निकम्मे न्यासी लोग इन न्यासोकी पूरी देखभाल नही कर सकते। उनके हाथोमे धन या तो व्यर्थ ही जमा रहता है और उसका कुछ सदुपयोग नही होता, या फिर धर्मके नामपर वे घोर अनाचार तथा दूसरी भ्रमपूर्ण प्रथाओमे अपने द्रव्यका दुरुपयोग करते है।

एक अमेरिकावासीका सुझाव

एक अमेरिकी मित्र, जो भारतकी स्थितिसे काफी कुछ परिचित है और हरिजन-कार्यमे जिनकी काफी रुचि है, मेरे एक पत्रके उत्तरमे लिखते है[१]

. . . मुझे लगता है कि यदि जगह हो तो जो-कुछ काम किया गया हो उसके वर्णनके साथ-साथ यह भी बताया जाना चाहिए कि इसके मुकाबले पहले

१. यहाँ पत्रके केवल कुछ अश दिये गये हैं।

क्या दशा थी। . . . फिर यह भी प्रकट कर देना चाहिए कि प्रत्येक बस्तीमें हरिजनोकी तादाद क्या है, जिससे मालूम हो सके कि नई सुविधा का लाभ कितने मनुष्योको मिलता है, और वह सुधार किस हदतक पर्याप्त या अपर्याप्त है। साथ ही यह भी बताना चाहिए कि उन जगहोमें ऊँची कही जानेवाली जातियोको क्या-क्या सुविधाएँ प्राप्त है। . . .

इन अमेरिकी मित्रके सुझावका अभिप्राय यह है कि हमे अधिक कडाईके साथ सत्यका पालन करना चाहिए। हमारे सेवा-कार्यके विवरणोमे कितनी ही सावधानी बरती जाये, वह कम है। इन विवरणोमे हमारी शक्ति और हमारी कमजोरी दोनो प्रतिबिम्बित होनी चाहिए। बहुधा सस्थाओके वर्णन छटायुक्त शब्दचित्रोसे आकर्षक बना दिये जाते है। पर इन वर्णनोमे न तो सत्य ही होता है और न यथार्थ स्थितिका प्रतिम्बिब ही। लेकिन सचाईसे दूर होनेके कारण इन विवरणोका भी वही हाल होता है जो साधारण पत्रोमे छपे हुए लेखो और सार्वजनिक समाचारोका होता है। पाठक इन विवरणोको पढतेतक नही, ओर पढते भी है तो उनपर विश्वास नही करते। जैसाकि पत्र-लेखकका कहना है, पुरानी और नई स्थितिका तुलनात्मक विवरण देनेसे पाठकगण आँकडो और तथ्योको अधिक अच्छी तरह समझ सकेगे। जबतक कोई खास जरूरत न हो, इन विवरणोमे छटायुक्त वक्तृत्व या लेखककी अपनी राय नही आनी चाहिए। वर्णन सक्षिप्त और उद्देश्ययुक्त होने चाहिए। कुछ भी प्रगति न होनेपर, प्राय सेवक-जन कह दिया करते है कि कोई खबर देने योग्य नही है। ये लोग भूल जाते है कि खास जरूरत तो उनके अपने कार्योंके बारेमे सच्ची सूचना की है। इस तरह अगर व्यवस्थित काम हो, तो उनका सच्चा कार्य-विवरण दूसरे कार्यकर्त्ताओके लिए उपयोगी सिद्ध हुए बिना न रहे। हो सकता है कि हमे हमेशा सफलता न मिले, पर सफलताके लिए आवश्यक प्रयत्न ओर दिन-प्रतिदिन एकाग्रता बढाते जाना, इतना तो हम कर ही सकते है। सफलता इनके पीछे-पीछे आती है।

कार्य-विवरणोका मूल्य

ठक्कर बापाने मुझसे अक्सर शिकायतकी है कि बहुत-सी सस्थाएँ अपने कार्य-विवरणकी रिपोर्टे नियमपूर्वक और समय से नही भेजती, और जो विवरण भेजे भी जाते है उनमे भी शब्दाडम्बर ज्यादा होता है, तथ्य और आँकडे कम। इन सगठनोके मन्त्री और कार्यकर्त्ता लोग इस बातका हमेशा ख्याल नही रखते कि इन रिपोर्टोको केन्द्रीय कार्यालय अपने शोकके लिए नही मँगाता, बल्कि इसलिए मँगाता है कि रोज-बरोजकी नीति निर्धारित करनेमे केन्द्र इन रिपोर्टोसे मार्ग-दर्शन ग्रहण करता है, विभिन्न सगठनोके कार्यकी जाँच करने और उनका समन्वय करनेमे इनकी सहायता लेता है, और समय-समयपर जनताको इस आन्दोलनकी प्रगतिकी सूचना भी इनसे मिलती है। रिपोर्टें तैयार करनेका काम यदि पूरी ईमानदारीसे किया जाये तो उससे सभी क्षेत्रोमे कार्यकर्त्ताओके कार्यको उत्तेजन मिलेगा और सभी सगठन अपेक्षित स्तरपर काम करेगे। उदाहरणके लिए 'हरिजन दिवस' (गत २४ सितम्बर) के दिन

किये गये कार्यका विवरण यदि सभी कार्यकर्त्ता भेज दे, तो विभिन्न प्रान्तोमे मिली सफलता और विफलताका अनुमान लगाना सम्भव हो जायेगा, और तब यह भी निश्चित कर सकना सम्भव हो सकेगा कि अगले 'हरिजन-दिवस' के लिए क्या निर्देश जारी किये जाये। इसलिए मुझे आशा है कि ऐसे विवरण यदि पहले ही न भेजे जा चुके हो तो फौरन दिल्लीमे मुख्य कार्यालयको भेज दिये जायेगे। और किसी पाठकको यदि अपने अनुभवोके बारेमे कुछ विशिष्ट बात बतानेको हो, तो मै उससे कहूँगा कि वह उन्हे सीधे मेरे पास भेजे। मै आशा करता हूँ कि 'हरिजन दिवस' मनानेकी तैयारी के सिलसिलेमे जो-कुछ चन्दा जमा किया गया हो और जितना कुछ व्यय हुआ हो, उसका बिलकुल सही ब्योरा इन रिपोर्टोंमे भेजा जायेगा।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ७-१०-१९३३

६८. वे क्या मानते हैं

राव बहादुर एम० सी० राजाने कुछ समय पहले मन्दिर प्रवेश विधेयक[1] के सम्बन्धमे गत २४ अगस्तको विधान-सभामे दिये गये अपने भाषणकी एक प्रति भेजी थी। पाठकोको नीचे उनके भाषणके विपुल उद्धरण मिलेगे।[2] भाषणके दौरान टोक-टाक, उनके प्रत्युत्तर और अन्य गैर-महत्त्वपूर्ण अश छोड दिये गये है।

उनके इस भाषणका महत्त्व उनके ऐतिहासिक वक्तव्योकी यथार्थताकी दृष्टिसे उतना नही है जितना कि इस बातमे है कि बहुतसे लोग वास्तवमे उनमे उतने ही दुराग्रहपूर्वक विश्वास करते है जितने दुराग्रहपूर्वक कि सनातनी लोग, जो कि हरिजनो को किसी मानवीय अधिकारका पात्र मानते ही नही, अस्पृश्यताका समर्थन करनेवाले वक्तव्योमे विश्वास करते है। अन्तत इस प्रश्नका निर्णय ऐतिहासिक साक्ष्यसे या ऐसे सस्कृत ग्रन्थोकी व्याख्याके आधारपर नही होगा जिनका धार्मिक महत्त्व सदिग्ध है, बल्कि यह प्रश्न सर्वथा निर्दोष और शुद्ध मन तथा आचरणवाले सुधारकोके प्रार्थनापूर्ण और अनवरत प्रयत्नोसे तय होगा। कोई भी धर्म अपनी विगत उपलब्धियोपर जीवित नही रह सकता। उसके अनुयायी बराबर अपने तपस द्वारा उसे पोषण और जीवन न देते रहे तो वह धर्म मर जाता है। ज्ञानके बलपर नही बल्कि सही आचरणके बलपर धर्म फलते-फूलते है। जब शुद्ध अभिरक्षकोकी सतर्कता ढीली पड गई तब ही अस्पृश्यता, आज हम उसको जिस रूपमे मानते है, हमारे धर्ममे घुस आई। यह तभी समाप्त होगी जब तपसकी अटूट और अटूटनीय शृखला स्थापित कर दी जायेगी। पीढियोसे जन-साधारणके मनमे ऊँच और नीचका जो विचार भर दिया गया है उसे तमाम पडितो और तमाम शास्त्रियोका सर्वसम्मत निर्णय भी नही निकाल सकता।

१. इसे रगा अय्यरने प्रस्तुत किया था, देखिए खण्ड ५३।

२ यहाँ नही दिये गये हैं।

साधारण जनता उन लोगोके आचरणको साक्षी चाहेगी जिन्हे वह अपने धर्मका शुद्ध हृदय प्रतिनिधि मानती है।

तथापि मै हिन्दू धर्मके अध्येताओसे सिफारिश करूँगा कि वे राव बहादुर राजाके भाषणका ऐतिहासिक दृष्टिकोणसे अध्ययन करे। यह बात यदि असदिग्ध रूपसे सिद्ध हो जाये तो उसका काफी महत्त्व होगा कि कमसे-कम दक्षिणके हरिजन एक ऐसी सभ्यताके प्रतिनिधि है जिसे एक विजेता जातिने, जो मूल निवासियोके प्रति तिरस्कार व्यक्त करनेके लिए अपने-आपको आर्य कहती थी, ध्वस्त कर दिया था और मूल निवासियोका अपने स्वार्थके लिए उपयोग किया और उन्हे गुलामोकी स्थितिमे पहुँचा दिया। मुझे मानना पडेगा कि इस कहानीकी सत्यतामे मुझे हमेशा गम्भीर सन्देह रहा है। श्रेष्ठताके ऐसे दावेदार एक उदात्त धर्मके निधान हो सकते है, इस बातको मै अस्वीकार करता हूँ। यदि ऐतिहासिक साक्ष्य सन्देहातीत हो, तो हमे विवश होकर मानना पडेगा कि हिन्दू-धर्ममे जो-कुछ भी उदात्त है वह विजेताओकी देन नही है बल्कि पराजित और विजित लोगोकी देन है और अस्पृश्यता वह भ्रष्ट तत्त्व है जिसे विजेताओने विजित लोगोकी सस्कृतिको स्वीकार करके उस सस्कृतिपर ऊपरसे थोप दिया था। इस विषयमे जो दो विचारधाराए है उनमे से सत्य किसी मे भी हो, लेकिन यदि हिन्दू-धर्मको जीवित रहना है तो अस्पृश्यताकी सर्वस्वीकृत बुराईको दूर करना नितान्त आवश्यक है। यह बात भी स्पष्ट है कि उक्त दो विचारधाराओके अनुसार हिन्दू-धर्मका उद्भव चाहे इसी देशमे हुआ हो या वह बाहरसे आया हो, लेकिन आरम्भमे उसमे अस्पृश्यताका दोष मौजूद नही था। किसी भी सूरतमे चूँकि अनार्यो और आर्योमे, जिनके बारेमे कहा जाता है कि वे बाहरसे आये थे, अब कोई अन्तर नही है और देशके मूल निवासियोमे वे घुलमिल गये है, इसलिए इस बातको तय करनेका या जाननेका जो कोई व्यावहारिक महत्त्व नही है कि कौन सच्चा आर्य है। जो बात बहुत ही जबर्दस्त महत्त्व रखती है वह यह कि अस्पृश्यताके दानवपर प्राणान्तक आक्रमण करनेके लिए समस्त हिन्दुओको अपनी शक्ति लगानी पडेगी।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, ७-१०-१९३३

६९. पत्र : कृष्णा नेहरूको

[७ अक्टूबर, १९३३][1]

चि० कृष्णा,

तुम्हारा पुनर्जन्म होनेवाला है, क्योंकि शादी एक तरहका पुनर्जन्म ही तो है, है न?

स्वरूप[2] दुलहन बनकर काठियावाडमें आई, पर उसने अपने पतिको अपने पुराने सूबे — यू० पी० — में जाकर बसनेके लिए तैयार कर लिया। लेकिन तुम्हारेमें और स्वरूपमें अन्तर है। रणजीत काठियावाडी और महाराष्ट्रीय होनेका दावा रखता है। गुणोत्तम सिर्फ गुजराती है और मैं नहीं समझता कि उसे तू इलाहाबाद खींच ले जायेगी। तुम्हें तो बहुत करके गुजरात अथवा बम्बईमें ही रहना होगा। मेरी उम्मीद है कहीं भी तू रहे खुश रहेगी और माता-पिताके नामको उज्ज्वल रखेगी। ईश्वर तुझे और गुणोत्तमको सहायता करे। विवाहके समय मेरा आना तो नहीं हो सकता, इसलिए यहींसे आशीर्वाद भेजकर सन्तुष्ट रहना होगा।

बापूके आशीर्वाद

कोई शिकायत नहीं, पृष्ठ ११३-४

७०. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

७ अक्टूबर, १९३३

प्रिय जवाहरलाल,

मुझे तुम्हारे दो पत्र मिले। पहलेका उत्तर देनेकी तो जरूरत नहीं।

मैं देखता हूँ कि कृष्णाका विवाह २० को है। मुझे खुशी है। पर मुझे इलाहाबाद आनेका प्रयत्न नहीं करना चाहिए। मेरे लिए तो पर्देमें रहना ही बेहतर है, जबतक कि डाक्टर लोग यह ऐलान न कर दें कि मैं एकदम स्वस्थ हूँ। साथका यह पत्र कृष्णाके लिए है।[3]

मैं देखता हूँ कि तुम्हारी माँ अभी पूर्ण रूपसे सकटसे बरी नहीं हो पाई हैं। हम सब उम्मीद करें कि विवाहमें शरीक हो सकने लायक वे स्वस्थ हो जायेंगी।

१ सम्भवत. यह पत्र ७ अक्टूबर, १९३३ को जवाहरलाल नेहरूको लिखे पत्रके साथ सलग्न था, देखिए अगला शीर्षक।

२ विजयलक्ष्मी पण्डित; कृष्णा नेहरूकी बड़ी बहन।

३ देखिए पिछला शीर्षक।

डी० एच० के लिए लिखा तुम्हारा लेख[1] मुझे बहुत पसन्द आया। मै इसे अगाथा को भेज रहा हूँ कि वह इसका जैसा-कुछ उचित उपयोग कर सके, करे। वह एक अद्भुत कार्यकर्त्री है।

अपने जेलके अनुभवोके ब्योरेके सम्बन्धमे मीरा बिलकुल ही भूल गई थी। अब उसकी पाण्डुलिपि तैयार है। एन्ड्रयूजको देनेके लिए इसे तुम्हारे पास भेजा जायेगा। और भी तुम जैसा चाहो इसका उपयोग कर सकते हो।

कार्यकर्त्ताओके लिए क्या-कुछ किया जा सकता है, इस सम्बन्धमे मै कुछ विचार कर रहा हूँ।

टडनके मतभेदोके बारेमे अखबारोमे मै जो पढ रहा हूँ, यह सब क्या माजरा है? क्या तुमने वह अनुच्छेद देखा है?

सप्रेम,

बापू

[अग्रेजीसे]

गाधी-नेहरू पेपर्स, १९३३, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

७१. पत्र : मणिबहन पटेलको

वर्धा

७ अक्टूबर, १९३३

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। जिन-जिनसे मिलना हो उन सबसे मिलकर और फुरसत पाकर मेरे पास आना। लेकिन इसका अर्थ यह न करना कि अगले युगमे आओगी तो भी चलेगा। बाबाको[2] जरूर साथ लाना। उसे अच्छा लगेगा। मेरी तबीयत सुधरती जा रही है अर्थात् ताकत आती जा रही है। मै यहाँ ७ नवम्बर तक हूँ।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन पटेल
रामनिवास, पारेख स्ट्रीट
बम्बई–४

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – ४ : मणिबहेन पटेलने, पृष्ठ १०८

१ उपलब्ध नहीं है।

२. डाह्याभाई पटेलके पुत्र।

७२. पत्र : विपिन पटेलको

वर्धा
७ अक्टूबर, १९३३

चि० बाबा,

तुम्हारा पत्र मिला। हर अक्षरको मोती जैसा सुन्दर बनानेकी कोशिश करो। बुआ[1] के साथ अवश्य आओ। मुझे अच्छा लगेगा। तुम्हे खेलनेके मौके जरूर मिलेगे। यहाँ तुम्हारी उम्रके बच्चे है। क्या तुम दादाको पत्र लिखते हो?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ४ : मणिबहेन पटेलने, पृष्ठ १६३

७३. पत्र : जीवनजी डा० देसाईको

७ अक्टूबर, १९३३

भाईश्री जीवनजी,

तुम्हारे दो पत्र मिले है। तुम्हारा नोटिस पढा था, ठीक है। बाबलाको दीवालीके बाद भेजनेका बन्दोबस्त करना। उसने आनेका वचन तो दिया है। बाबला वचनबद्ध है, अत यदि वह उसका पालन करता है तो अच्छा होगा। मुझे अभी तालिका नही मिली है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

जितनी जल्दी बन पडेगा वर्ण-धर्म पर प्रस्तावना[2] लिखूंगा।

श्रीयुत जीवनजी देसाई
नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
गाधी रोड
अहमदाबाद, बी० बी० ऐंड सी० आई० रेलवे

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९९३१) से। सी० डब्ल्यू० ६९०६ से भी, सौजन्य : जीवनजी डाह्याभाई देसाई

१ मणिबहन पटेल, देखिए पिछला शीर्षक भी।

२ "वर्णव्यवस्था" शीर्षकसे प्रकाशित गाधीजीके वर्ण-व्यवस्था सम्बन्धी विचारोका एक संकलन। भूमिकाके लिए देखिए खण्ड ५९।

७४. आश्रमका समर्पण[1]

[८ अक्टूबर, १९३३ से पूर्व][2]

हमने तो [आश्रमका] समर्पण ट्रस्टियोकी तरह किया है। और ट्रस्टियोने ऐसा द्वेष-भावसे नही समत्वकी भावनासे किया है, क्योकि उन्होने देखा कि इसपर अपना कब्जा बनाये रखकर वे अपने धर्मका निर्वाह नही कर सकते। इसे सरकार [भले ही] ले ले पर वह नही लेती। और मै यह नही चाहता कि यह [आश्रम] बरबाद हो जाये। . आश्रमका कब्जा छोड दिया है, पर इसका मतलब यह नही हे कि यहाँ अब कभी रहना ही नही है। मुझे आशा है कि हम रह तो सकेगे ही। सरकार यदि इसे बेच दे तो भी मुझे उम्मीद हे कि आश्रमवासी तो उसी भूमिपर जाकर रहेगे। यह हरिजनोके लिए तीर्थक्षेत्र और मन्दिर-स्वरूप बने। यह ऐसा हो कि सवर्ण हिन्दुओको भी इसके जरिये अपने धर्मका भान हो। सवर्ण हिन्दुओको तो प्रायश्चित्त करना हे और इसके जरिये सवर्ण हिन्दुओकी सेवाका भी समावेश हो जाता है, इस बातको वे समझे।

[गुजरातीसे]
हरिजनबन्धु, ८-१०-१९३३

७५. बातचीत: आपसी विग्रहके भयपर

[८ अक्टूबर, १९३३ से पूर्व]

प्र०: क्या अस्पृश्यता-निवारणकी समस्या इतनी महत्त्वपूर्ण है कि उसका निराकरण आज और अभी हो जाना चाहिए? कई लोगोको भय है कि इसके कारण हिन्दुओमे पारस्परिक विग्रह और झगडे उठ खडे होगे।

उ० इसके बिना हम स्वराज्यके पथपर कदम ही नही रख सकते। और मान लिया जाये कि स्वराज्य प्राप्त भी हो गया तो भी वह स्वराज्य स्वराज्य नही होगा। वह तो अन्धविश्वास और अधर्मका राज्य होगा। बहुत-से हिन्दू आज ऐसा मानते है कि यदि अस्पृश्यता दूर कर दी जायेगी तो हिन्दू-धर्मका नाश हो जायेगा, पर मै तो देख रहा हूँ कि यदि अस्पृश्यता नही जाती तो हिन्दू-धर्म नष्ट हो जायेगा। इस युगमे धर्मके लिए तलवारका युद्ध नही होता। धर्मकी जागृति और धर्मकी रक्षा इस युगमे तलवारसे नही होती और न होनी ही चाहिए। पर विवेक और भावनासे, बुद्धि और हृदयसे धर्मोका मुकाबला, उनकी तुलना होती रहेगी। यह अस्पृश्यता विवेक

१ और २ यह और अगले तीन शीर्षक चन्द्रशकर शुक्लके "साप्ताहिक पत्र" से लिये गये है।

ओर भावनासे प्रतिकूल है। यह तो एक महान् दोष है, यह बात तो काग्रेसियोकी हैसियतसे हमे माननी ही चाहिए। ऐसा करनेके परिणामस्वरूप यदि काग्रेसमे केवल मुट्ठीभर हिन्दू ही रह जाये तो भले ही रहे। यदि ऐसा होगा तो काग्रेस एक महान् सस्था बन जायेगी। आज तो यदुवशियो जैसे गृह-युद्धकी आशकामात्र ही है, पर यदि अस्पृश्यता नही हटी तो फिर तो आपसी विग्रह अवश्यम्भावी है। अस्पृश्यताको हटानेके लिए यदि प्रचण्ड उपाय नही किये गये तो पारस्परिक विग्रह हुए विना नही रहेगा।

[गुजरातीमे]
हरिजनबन्धु, ८-१०-१९३३

७६. बातचीत : एक कार्यकर्त्तासे[1]

[८ अक्टूबर, १९३३ से पूर्व]

प्र० : कांग्रेसके कार्यक्रममे अस्पृश्यता-निवारणके लिए स्थान तो है ही, तब फिर यह आन्दोलन राजनीतिक दृष्टिसे क्यो न चलाया जाये?

उ० इसे राजनीतिक दृष्टिसे चलायेगे, तो यह नष्ट हो जायेगा। इसके राजनीतिक परिणाम होगे और उन्हे कोई रोक नही सकता। परन्तु इसे राजनीतिक कार्य नही माना जाना चाहिए, ऐसेमे यह टिक नही सकेगा, क्योकि यह तो एक विशुद्ध धार्मिक प्रवृत्ति है। इसलिए जो लोग यह कहते है कि यह प्रवृत्ति शुद्ध राजनीतिक दृष्टितक ही सीमित कर दी जाये, इसमे से मन्दिर-प्रवेश जैसी कठिन चीज निकाल दी जाये, उनसे मै कहता हूँ कि ऐसा करनेपर तो हरिजन-आन्दोलनमे कोई तत्त्व ही नही रह जाता।

[गुजरातीसे]
हरिजनबन्धु, ८-१०-१९३३

७७. बातचीत : नम्रताकी आवश्यकतापर

[८ अक्टूबर, १९३३ से पूर्व]

व्रत धारण करके कोई अभिमानसे आकाशमे नही उडने लगना, धरतीपर ही रहना। हम लोग तो अणु-रेणु है, रजकणके समान है। हम मिट्टीके ही मानव है और अन्तमे मिट्टीमे मिल जानेवाले है, इसे मै सत्य मानता हूँ। हम मिट्टीसे ही पैदा हुए है, मिट्टीके ही पुतले है, फिर अभिमान करे तो किस बातका करे? चीटी जैसे जीव अपनी बॉबीकी जैसी सुन्दर कलामयी रचना कर लेते है, वैसी हमसे नही बनती। चिडिया और चीटियॉ इत्यादि सम्पूर्णताको प्राप्त कर चुकी है, पर हम नही। हम लोग तो अपूर्ण है। हम तो शरीरसे भी सम्पूर्ण नही है। इसलिए हम

१ यह बातचीत "शुद्ध धार्मिक कार्य" शीर्षकसे प्रकाशित हुई थी।

सम्पूर्णताको अन्यत्र खोजते रहते है। जिस स्थितिमे हम है उसमे रहते हुए हमे सन्तोष ही नही है। ईश्वरने ही यह 'दैवी असन्तोष' हममे भर दिया है। इससे हम 'यह नही' 'यह नही' ऐसा कहा करते है, और बराबर और-और आगे बढनेके लिए जूझते रहते है। चीटी सम्पूर्ण है, क्योकि वह आगे बढना ही नही चाहती। हमे तो आगे बढना ही है। इसलिए हमे नम्र बनना है। धूलकी तरह या शून्य के समान बनकर रहना है। आजका भौतिक शास्त्र और खगोल शास्त्र कहता है कि एक-एक अणुमे सम्पूर्ण विश्व समाया हुआ है। उपनिषद्के ऋषियोने तो हजारो वर्ष पहले यह समझ लिया था। इसीसे उन्होने कहा है कि 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे'— अर्थात् जो पिण्डमे है वही ब्रह्माण्डमे है। हम जब परमाणुके समान बनकर रहे, शून्यवत् होकर रहे, तभी हम ईश्वरीय अश प्राप्त कर सकते है। कारण यह है कि परमाणु विश्वव्यापी और शाश्वत है। इसलिए हमे आकाशमे उडना नही, किन्तु धूलके समान अकिचन बनना सीखना है।

[गुजरातीमे]
हरिजनबन्धु, ८-१०-१९३३

७८. उत्तर: पत्र-लेखकोको[1]

[८ अक्टूबर, १९३३ से पूर्व]

वर्ण-धर्म और वर्णान्तर विवाह

मै चातुर्वर्ण्यको मानता हूँ।[2] लेकिन वर्ण-व्यवस्थाका उद्देश्य तो चार वर्णोके धन्धोको निश्चित कराना और उनकी मर्यादा बताना या निर्धारित करना था। विवाह और खान-पानका प्रतिबन्ध कभी वर्ण-धर्मका अग नही माना गया था। सामान्य रूपसे तो लोग स्वाभाविक रीतिसे अपने ही वर्णमे विवाह करेगे, किन्तु हम ऐतिहासिक प्रमाणोसे यह जानते है कि कुछ सयोगोमे वर्णान्तर विवाह सदासे होते चले आये है। धीरे-धीरे मेरा यह विश्वास और भी दृढ होता गया है कि धन्धोकी पसन्दगीमे पूरी गडबडी हो जानेसे वर्णोके विषयमे भी अन्धेर चल रहा है। आज तो वर्ण-धर्म नाम-मात्रका ही रह गया है और हिन्दू-समाजमे ऊँच-नीचकी हीन भावना फैलानेमे ही चातुर्वर्ण्यकी सुन्दर व्यवस्थाका दुरुपयोग हो रहा है। सच्चे वर्ण-धर्मकी स्थापना किस तरह की जा सकती है, इस सवालका ठीक-ठीक हल मेरे पास नही है। मगर मुझे इस विषयमे तनिक सन्देह नही है कि वर्तमान पीढी यदि सच्चे मार्गपर चलेगी, तो उसीका आधार लेकर वर्ण-धर्मकी पुन स्थापना हो जायेगी। उसके रूपमे शायद थोडा-कुछ परिवर्तन हो जायेगा। धार्मिक बातोमे इतना तो हमेशा याद रखना चाहिए कि अपने इस कलेवरके पीछे जो आत्मा वास कर रही है हमे उसीका साक्षात्कार करना है— बिना आत्म-साक्षात्कारके यह काया बेकार है।

१. यहाँ गाधीजीकी डाकमें आये हुए भिन्न-भिन्न पत्र-लेखकोके प्रश्नोके उत्तरोंका सार दिया गया है।
२ पत्र-लेखकने गाधीजीसे पूछा था कि जब आप वर्णाश्रम-धर्मको मानते है तो फिर वर्णान्तर विवाहके लिए स्वीकृति किस प्रकार देते है।

प्रतिज्ञासे छुटकारा

तुम्हारे निश्छल पत्रके लिए धन्यवाद।[1] मनुष्य यदि अपनी प्रतिज्ञा तोडता है, तो उसके नैतिक परिणामसे कोई दूसरा आदमी उसे मुक्ति नही दे सकता। यह मुक्ति तो केवल ईश्वर ही दे सकता है। मुझे पता नही है कि ईश्वरने ऐसी मुक्ति दी है, पर तो भी मै तुम्हारी कठिनाईको समझ सकता हूँ। लेकिन मुझे आशा है कि जितना बन सकेगा तुम खादीका ही उपयोग करोगे। हस्ताक्षर लौटानेकी तो जरूरत नही है।

ईश्वरके विषयमे

१ ईश्वर सत्य है।

२ अत ईश्वर-प्राप्ति का मार्ग यह है कि मन, वाणी और कर्मसे सत्यका पालन किया जाये।

३ रामनामका स्मरण यदि हृदयसे किया जाये, तो उससे अवश्य ही आत्म-साक्षात्कार होगा।

४ आत्म-साक्षात्कारका अर्थ है सत्यका साक्षात्कार।

एक हरिजन-सेवकका प्रश्न

सनातनियो और हरिजनोके दरम्यान जहाँ कटुता पैदा हो जाये, वहाँ यथाशक्ति समझौतेका प्रयत्न करे। हरिजनोके लिए विदेशी वस्त्र इत्यादिका दान मिले तो उसका उपयोग तो नही किया जाना चाहिए।

जैन मुनि क्या सेवा करे?[2]

जैन मुनिको आपने जो नीति-नियम बताये है, वे मुझे उचित प्रतीत होते है। किन्तु अपने अन्दर यदि स्वतन्त्र स्फुरणा न हो और जो मेरे परामर्शपर निर्भर करते हो, तो मेरा धर्म यह है कि मै उन्हे वेश बदलनेसे रोकूँ। कारण यह है कि वेशमे कोई दोष नही है, दोष तो उसके दुरुपयोगमे है। यह मुनि यदि पूर्ण अभ्यासी बनकर निर्भयतापूर्वक धर्म-मार्गका दिग्दर्शन कराये और तदनुसार चले, तो वह बहुत सेवा कर सकते है। उन्हे चाहिए कि वे अत्यन्त परिश्रम करके सस्कृत और मागधी भाषाका गहरा अध्ययन करे। जैन मुनिका वेश स्वीकार करनेवालोके लिए निर्धारित नियमोके अन्तर्गत इस बातको प्रथम स्थान दिया गया है, पर अब तो मुनि इसका पालन क्वचित ही करते है। जैन-दर्शनमे अस्पृश्यता और वर्तमान वर्ण-धर्मका निश्चय ही कोई स्थान नही है, यह बात उन्हे दृढतापूर्वक कहनी चाहिए और दूसरोसे कहनेके पहले उन्हे स्वय यह बात हृदयगम कर लेनी चाहिए। जैन-

१ यह पूनाके एक विद्यार्थीके पत्रके जवाबमें लिखा गया था। विद्यार्थीने प्रतिदिन आधा घटा सूत कातनेका अभिवचन देकर गाधीजीके हस्ताक्षर प्राप्त किये थे। पत्रमें उसने चरखा न काननेके लिए अपनी असमर्थता व्यक्त की थी और गाधीजीके हस्ताक्षर लौटानेकी बात भी। देखिए खण्ड ५५, पृष्ठ ४३९ भी।

२. लोक सेवाके इच्छुक एक जैन मुनि अपने साधुवेशको निरर्थक और सेवामें विघ्नरूप मानकर उसका त्याग करना चाहते थे। उनके एक मित्रने इस सम्बन्धमें गाधीजीसे सलाह मागी थी।

मुनिके लिए किसीको पढानेमे कोई बाधा नही है। अत थोडे-से हरिजन बालकोको एकत्र करके वह उन्हे शिक्षा दे। यदि उन्हे यह बात प्रमाणित हो चुकी हो कि जैन-धर्म हिन्दू-धर्मसे भिन्न नही है, तो उन्हे इसका प्रतिपादन करना चाहिए। ऐसा करते हुए यदि उनका बहिष्कार किया जाये, तो उसे वह प्रेमपूर्वक सहन कर ले और अपना सेवाधर्म बराबर जारी रखे। मै समझता हूँ, इसीमे सब-कुछ आ जाता है।

विदेशी शिक्षाका मोह

मै देख रहा हूँ कि आप जल्दबाजी कर रहे है।[1] अच्छे कामके लिए जल्दबाजी की जाये तो इसमे कोई गलती नही है। आपकी महत्त्वाकाक्षा भी अच्छी है, पर मै चाहता हूँ कि आप इसे किसी और अच्छी दिशामे मोड दे। इग्लैड जाकर शिक्षा पानेका मोह युवकोमे है और वह मिथ्या है, यह मै हमेशासे मानता आया हूँ। यह तो एक ऐसा खिलौना है जो बहुत महँगा है। वस्तुस्थिति यह है कि जो-कुछ हमे इग्लैडमे मिल सकता है उसमे का बहुत-कुछ हमे यहाँ भी मिल सकता है। मेरी मान्यता तो यह है कि जिस महत्त्वाकाक्षाको केवल मुट्ठीभर लोग ही पूरी कर पाते हो ऐसी महत्त्वाकाक्षा रखना अनुचित ही है। और यदि ऐसी महत्त्वाकाक्षा पूरी करनी हो तो अपने बलपर ही पूरी करनी चाहिए। इसे सार्वजनिक सस्थाओ अथवा व्यक्तिगत दानकी मददसे भी पूरा नही करना चाहिए। और यदि आप बाहरी सहायतापर अवलम्बित रहना चाहते हो तो आपको ऐसी मदद माँगनी चाहिए जो उन दूसरे लोगोको भी उपलब्ध हो सके जिनकी स्थिति आपके जैसी ही है।

विलायत जानेमे मै तो आपका उद्देश्य इतना ही देखता हूँ कि आप अधिक कमाई कर सके और हरिजन-कार्यमे अधिक धन दे सके। लेकिन आपको इतना तो स्वीकार करना ही होगा कि आप चाहे जितना देगे, तब भी अकेले आपका दान तो [इस कार्यके लिए] सागरमे बूँदके समान होगा। अत अधिक देनेकी दृष्टिसे अधिक कमाई करनेके अटपटे मार्गपर जानेके बजाय आप कोई अच्छा रास्ता क्यो न अख्तियार करे? यह अच्छा रास्ता यह है कि आप स्वय अपनेको ही हरिजन सेवाके लिए अर्पण कर दे। ऐसा करना सागरमे बिन्दु रूप नही होगा। बल्कि वह तो एक उज्ज्वल दृष्टान्त होगा और अनेक लोगोके लिए अनुकरणीय होगा। मै आपके दिमागमे यह ठूँसना चाहता हूँ कि हृदयकी शिक्षाका मूल्य दिमागकी शक्तिकी अपेक्षा अनन्त गुना अधिक है। और हृदयकी शिक्षा तो जितनी अन्यत्र कही मिल सकती है उतनी ही यहाँ भी मिल सकती है। और फिर, उसकी कोई कीमत भी नही चुकानी पडती।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, ८-१०-१९३३

१ यह एक हरिजन शिक्षकके प्रश्नके उत्तरमें दिया गया था जिसने हरिजन सेवक सघसे उच्च शिक्षा पानेके लिए विदेश जानेकी अनुमति माँगी थी।

७९. सत्याग्रह आश्रमका नया रूप[1]

सत्याग्रह आश्रमकी भूमि और भवन हरिजन-सेवाके लिए दिये जानेके कारण अहमदाबादके सवर्ण हिन्दुओं एवं हरिजनोंका उत्तरदायित्व और भी बढ गया है। इतने मकान और इतनी अधिक जमीन बहुत थोडी सस्थाओंके पास है। जहाँतक मैं जानता हूँ, कोई हरिजन-सस्था इतनी बडी नही है। लेकिन बिना मनुष्योंके जमीन और मकान एक तरहसे खण्डहर ही है। स्वय अपना उनका मूल्य कुछ नही होता। हरिजन वहाँ जाकर सिर्फ रहने-भर लगे तो इससे इस विशाल आश्रमकी शोभा नही, और न उसके पीछे जो उनके उद्देश्य है वही पूरे होनेके। यह तो तभी एक आदर्श सस्था और तीर्थ-क्षेत्र बन सकता है, जब उसमे योग्य हरिजन जाकर रहे, निर्धारित नियमोका पालन करे और सवर्ण हिन्दू उनके उत्थानमें दिलचस्पी दिखाये तथा अपना समय, अपनी बुद्धि आदि हरिजन-सेवामे ही समर्पित कर दे। यह सब अहमदाबादके आसपास रहनेवाले सवर्ण हिन्दू और हरिजन ही कर सकते है। मुझे आशा है कि आप दोनो ही अपना-अपना फर्ज निभायेगे।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, ८-१०-१९३३

८०. उपवास कब आवश्यक होता है?

एक हरिजन-सेवकने मुझे एक पत्र लिखा है जिसका सार निम्नलिखित है

स्थानीय हरिजन सेवा सघके अध्यक्षके साथ एक सेविका और मैं एक गाँवको जा रहे थे। हम लोग बैलगाडीमे थे। रास्तेमे अध्यक्ष और सेविका विनोद कर रहे थे, इस बीच सेविका थक गई और विनोद करती हुई वह अध्यक्षकी गोदमे सो गई। मुझे कुछ आघात लगा। गाँवमे लौटते हुए हम एक रेलवे स्टेशनपर गये। वापसीमे हमे बैलगाडीमे नही जाना था। स्टेशनसे हमे शहरके लिए गाडी पकडनी थी। गाडी आनेमे देर थी। अध्यक्ष और सेविका एक बैंचपर बैठ गये। मै थोडी दूर जमीनपर बैठा था। चाँदनी रात थी। दोनोकी हरकते देखनेका मेरा मन हुआ। मुझे उनमे कुछ मलिनता दिखाई दी। मेरी इच्छा उनकी अधिक परीक्षा लेनेकी हुई। मैंने नींदका ढोंग करनेका निश्चय किया। अध्यक्षसे कहा, 'गाडी आनेमे अभी देर है। यदि आप अनुमति दे तो मै सो जाऊँ, मै थक गया हूँ। गाडी आनेपर मुझे उठा दीजिये।' अध्यक्ष यह सुनकर खुश जान पडे। उन्होने मुझे सोनेकी अनुमति दी। मैंने सोनेका

१. यह लेख "टिप्पणियाँ" शीर्षकके अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था।

ढोग किया। अध्यक्षने मेरी परीक्षा भी की। मेरा जवाब न मिलने पर वह निश्चिन्त हो गये। बादका तो कहना ही क्या? अध्यक्ष और सेविका एक झाडीके पीछे गये। थोडी देरमे दोनो वापस आ गये। गाडी समयपर आई। उन्होने मुझे जगाया।

मुझे लगा कि अध्यक्ष इस तरह मलिनतामे लिप्त हो, यह अच्छी बात नही है। आपका २१ दिनोका उपवास और उसके कारण मेरी आँखोके सामने खडे हो गये। मैंने दूसरे दिन साथियोसे बात की। उन्होने अध्यक्षसे कहा। अध्यक्षने "उलटा चोर कोतवालको डाँटे" जैसा व्यवहार किया। यह मनुष्य अध्यक्षपद लेना चाहता है इसीसे मुझसे द्वेष करता है और मुझे निकालनेके लिए इसने यह आरोप मुझपर लगाया है। मै बिलकुल निर्दोष हूँ। इस तरह वह उलटे मुझपर आरोप लगाकर स्वय बच जाना चाहता है और अध्यक्ष पद नही छोडना चाहता। अब मुझे क्या करना चाहिए?

इस दुखद पत्रमे से मैंने कुछेक अनावश्यक भाग छोड दिया है। कोई भी पाठक इस करुण कथाके पात्रोको खोज निकालनेका वृथा प्रयत्न न करे। ऐसा प्रयत्न करनेमे भी दोष है। यदि स्थान अथवा पात्रोका परिचय देनेकी आवश्यकता होती तो मै ही दे देता। मैंने परिचय नही दिया। इसीसे यह स्पष्ट है कि परिचय जाननेकी इच्छा करना दूसरेकी गुप्त बात जाननेकी इच्छा करने जैसा ही दोषपूर्ण है।

अब हम ऊपरकी घटनाकी जाँच करे। पहली बात तो यह है कि उपर्युक्त सेवकने अपने साथी और सरदारकी परीक्षा करने जाकर एक बहुत बडा अपराध किया है। दूसरोके दोष देखना कतई हमारा धर्म नही है। लेकिन जब अनिच्छासे भी यदि किसी मित्र अथवा साथीके दोष दिखाई पडे तो हमे उसे उसी समय बता देना चाहिए। इस किस्सेमे जब उपर्युक्त सेवकको अध्यक्षके आचरणमे मलिनताकी गन्ध आई थी उसे उसी समय अध्यक्षको बता देना चाहिए था और उसे विनयपूर्वक सावधान कर देना चाहिए था। इसके विपरीत उसने तो अन्तिम परीक्षातक करनेकी इच्छा करके अध्यक्षकी स्थितिको विषम बना दिया।

हम सब नित्य अनेक प्रकारके प्रलोभनोके बीच रहते है, लेकिन भाग्यसे हम उनसे बच निकलते है। प्रलोभनोमे फँसनेका सयोग मिलनेपर भी उनमे न फँसनेवाले लोग करोडोमे एक-दो ही मिलते है। यह तो कोई भी निश्चयपूर्वक नही कह सकता कि अध्यक्षको जो सयोग प्राप्त हुआ था यदि स्वयसेवकको वैसा ही सयोग मिला होता तो वह प्रलोभनमे न फंसता। इसीसे अनुभवी लोगोने कहा है कि हमे कभी लालच को न्योता नही देना चाहिए और न किसीको लालचमे डालना ही चाहिए।

अब हमने देखा कि इस न्यायसे सेवकने अध्यक्षको लालचमे डालनेका अपराध किया है। लालचमे डालनेके बाद भी वह दोनोको बचा सकता था। जब उसको यह विश्वास हो गया था कि मलिनता बढती जा रही है तब उसे नीदका ढोग छोडकर दोनोको सावधान करके उन्हे बचा लेना चाहिए था। यदि वह ऐसा करता तो नीदका ढोग रचनेका जो दोष उसने किया बहुताशमे उससे वह बच जाता।

लेकिन यह सब तो हुआ। 'यदि' और 'तो' से जगतका सुधार नही हो सकता। अब क्या सम्भव है?

जबकि सेवकने आरोप लगाया, साथियोको बताया, अध्यक्षने उसे माननेसे इन्कार किया, ऐसी स्थितिमे यदि सेवक सच्चा हो और उसने द्वेषभावसे प्रेरित होकर अध्यक्षपर झूठा आरोप न लगाया हो तो अपने सत्यको सिद्ध करनेके लिए और अध्यक्षसे पश्चात्ताप करवानेके लिए सेवकको चाहिए कि वह अध्यक्षको प्रेमपूर्वक व्यक्तिगत नोटिस दे और यदि वह अपना अपराध स्वीकार न करे तो आमरण उपवासका मार्ग अपनाना चाहिए। मेरा दृढ मत है कि ऐसे समयमे एकमात्र उपवास ही मत्यको सिद्ध करनेका और दोषी व्यक्तिको जाग्रत करनेका अमोघ अस्त्र है। यदि उसमे आमरण उपवास करनेका बल न हो तो वह भले ही २१ दिनोका उपवास रखे। ऐसा करनेसे, सम्भव है अध्यक्ष अपना अपराध स्वीकार कर लेनेपर मजबूर हो सकता है। यदि वह ऐसा नही भी करता तो भी सेवकने अपने दोषका परिष्कार कर लिया यह तो माना ही जायेगा, और जिस तरह शुद्ध हृदयसे किये गये उपवासका परिणाम अवश्य शुद्ध होता है उसी तरह इसका परिणाम भी शुद्ध होगा, ऐसी श्रद्धा रखनी चाहिए। ऐसे कठिन प्रसगोमे उपवासकी आवश्यकताके बारेमे मुझे तनिक भी सन्देह नही है। और इतना कहनेकी कदाचित् ही आवश्यकता होगी कि मेरी यह सलाह केवल उन्ही लोगोपर लागू होती है जिन्हे उपवामके बारेमे श्रद्धा है।

यह दुखद घटना हुई अथवा नही, इसकी सच्चाईमे जानेके लिए यह लेख नही लिखा गया है। हमे इस बातकी कामना करनी चाहिए कि अध्यक्ष और सेविका निर्दोष हो। लेकिन कही-कही ऐसी मलिनताका प्रगट न होना असम्भव बात नही है। मेरी इच्छा है कि इस वर्णनसे सेवक और सेविकाएँ जाग्रत हो और रहे। मेरे विचारसे अस्पृश्यता-निवारण केवल धार्मिक वस्तु है। उसमे [कार्य करनेवाले] सेवक और सेविकाएँ पवित्र होने चाहिए। उनकी पवित्रताके बिना मै करोडो व्यक्तियोके हृदय परिवर्तनकी बातको असम्भव मानता हूँ। धर्म — सत्य — पवित्र हृदयोमे ही बमता है, इस बातकी समस्त ससारके सन्तोने साक्षी दी है। हमे इसकी अवहेलना नही करनी चाहिए।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, ८-१०-१९३३

८१. भूमिका: 'गीता प्रवेशिका' की[1]

वर्धा

८ अक्टूबर, १९३३

इस 'गीता प्रवेशिका' के श्लोकोका चयन[2] गत वर्ष (१९३२ मे) यरवडा मन्दिरमे किया गया था। मेरा तृतीय पुत्र रामदास इसी जेलमे था। उमसे कभी-कभी मिलनेको या पत्र लिखनेकी सुविधा जेलके अधिकारी मुझे दिया करते थे। रामदास 'गीता' पढा करता था, पर पूर्ण रूपमे समझ नही पाता था। रामदासमे भक्तिभाव है, श्रद्धा भी है। उसे मदद मिल सके इस उद्देश्यसे मैंने 'गीता' के सरस और भक्तिप्रदान श्लोकोका संग्रह करके उसे भेजा। यह संग्रह रामदासको पसन्द आया। मैंने इस संग्रहको 'राम गीता' नाम देकर[3] रामदासको प्रोत्साहन दिया।

बाबा राघवदासने[4] यह संग्रह काका साहबके हाथमे देखा, उन्होने इसे पढा और उन्हे लगा कि यह हरिजन सेवकोके लिए उपयोगी बन पडेगा। इसी दृष्टिसे इसे प्रकाशित करनेकी उन्होने अनुमति माँगी। पर मै कोई पंडित तो हूँ नही, अतः मै यह निर्णय नही कर पाया कि यह संग्रह छपवानेके योग्य है या नही। आश्रमवासी श्री विनोबा, काका साहब और बालकृष्ण[5] यही थे। ये तीनो ही 'गीता' के अभ्यासी है और भक्त है। मैंने बाबाजीसे कहा कि यदि ये तीनो आश्रमवासी पसन्द करे तो इस संग्रहको छपवानेमे मुझे कोई आपत्ति नही होगी। इन तीनोने इसपर विचार किया और इसकी उपयोगिता बढानेकी दृष्टिसे तीन श्लोक निकाल देनेकी और चार नये श्लोकोका समावेश करनेकी सलाह दी। यह संग्रह इस प्रकार इतने सुधारके साथ सेवक-सेविकाओ और अन्य गीता-भक्तोके समक्ष रखा जा रहा है। मेरी आशा और आशय यह है कि इस संग्रहका पठन-पाठन केवल एक प्रवेशिकाकी दृष्टिसे ही किया जाये। और इसको ठीक ढंगसे समझ लेनेके बाद ही सम्पूर्ण 'गीता' का अभ्यास किया जाये। साथ ही यह भी स्मरण रहे कि इस प्रवेशिका अथवा सम्पूर्ण 'गीता' ही को

१. यह मूल रूपमें शुद्ध खादी भण्डार, कलकत्तासे हिन्दीमें प्रकाशित की गई थी, जो उपलब्ध नहीं है।

२. जिन श्लोकोंका समावेश इसमें किया गया है वे क्रमशः इस प्रकार हैं: अध्याय ६ श्लोक ५, ६, १४, २९-३२ और ४७, अध्याय ७ श्लोक ७ और १०, अध्याय ८ श्लोक १४, अध्याय ९ श्लोक २२, २६, २७, २९-३१ और ३४, अध्याय १० श्लोक ८-१०, अध्याय ११ श्लोक ५३-५५, अध्याय १२ श्लोक १५, अध्याय १३ श्लोक २७, अध्याय १८ श्लोक ४६, ६१, ६२, ६६ और ७८, अध्याय ११ श्लोक १५, १६, १८-२०, ३८-४०, ४३ और ४४।

३. देखिए खण्ड ५१, पृष्ठ ३९२-९५।

४. संयुक्त प्रान्तके एक किसान नेता।

५. विनोबा भावेके छोटे भाई।

कठस्थ कर लेनेसे या पूरा अर्थ समझ जानेसे कोई लाभ नही होना है। 'गीता' तो अनुकरणके लिए है। इसके पारिभाषिक शब्दोको ठीक समझ लेनेके बाद, इसके मध्य-बिन्दु — अनासक्तियोग — के हृदयमे उतर चुकनेके बाद 'गीता'को समझनेमे क्वचित ही कठिनाई होगी।

[गुजरातीसे]
हरिजनबन्धु, ९-९-१९३४

८२. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

असंशोधित

८ अक्टूबर, १९३३

प्रिय ठक्कर बापा,

हरिजन फडकी जो रकम मेरे पास जमा हुई है उसके सम्बन्धमे तुम्हारा पत्र मिल गया। मथुरादास द्वारा भेजा गया हिसाब मुझे मिल गया है। मै तो चिमनलालकी राह देख रहा हूँ। वह यहाँ शीघ्र ही आनेवाला है। वह आया कि मै इसमे लग जाऊँगा।

दौरेके विषयमे लिखा तुम्हारा पत्र भी मुझे मिला। तुम्हारा दूसरा पत्र मिलनेसे पूर्व ही मै अपना पत्र तुम्हे डाल चुका था। यह बात मेरे मनमे एकदम स्पष्ट है कि समूचे मध्य प्रान्तका कार्य एकसाथ ही पूरा कर दिया जाये। पजाबकी ठडकी मुझे चिन्ता नही है। इसलिए ठडके मौसममे मै कहाँ हूँ, इससे कोई फर्क नही पड़ता। और न मुझे गरमीकी ही चिन्ता है। बचाव तो तुम्हे बरसातसे करना है। अत जून और जुलाईके महीने हम उन प्रान्तोको दे, जहाँ बरसात जल्दी शुरू नही हो जाती।

बखले नगरपालिकाके चुनावसे हट गये, इससे मुझे काफी राहत हुई, जैसीकि तुम्हे भी हुई होगी। अब हम श्री कोदण्डरावके साथ इस बातकी चर्चा करेगे कि तुमने और मैने जो सलाह दी थी उसकी बुनियादमे क्या सिद्धान्त था। मैने उन्हे बतलाया है कि मै ऐसी चर्चाका स्वागत करूँगा।

बापू

श्रीयुत अमृतलाल वि० ठक्कर
महामन्त्री
हरिजन-सेवक-सघ
बिडला मिल्स, दिल्ली

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११२५) से।

८३. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

८ अक्टूबर, १९३३

भाई घनश्यामदास,

तुम्हारा पत्र[1] मिल गया।

तुमने जिस कठिनाईकी बात कही है वह तो मौजूद है ही। उसीकी बात सोचकर तो मैने ट्रस्टबोर्डके गठनकी बात कही थी। मेरी राय है कि यह सम्पत्ति ट्रस्टियोके पास स्थायी रूपसे रहे और उन्हे उसे बेचनेतक का अधिकार रहे। हरिजन सेवक सघका भविष्य चाहे जो हो, तुम और ठक्कर बापा उसके स्थायी सदस्य रहो। इस प्रस्तावसे उस प्रश्नका भी निपटारा हो गया जिससे अपेक्षाकृत अधिक बडे प्रश्न का जन्म हुआ है और जिसकी मै यहाँ समयाभावके कारण चर्चा नही करना चाहता हूँ। इस बीच मै तुम्हे अखिल भारतीय चरखा सघका व्यवस्था-विधान पढ जानेको कहूँगा। मुलाकात होने तक इसकी चर्चा मुल्तवी रखे। मै यहाँ ७ नवम्बर तक तो हूँ ही, इसलिए यदि सम्भव हो तो उस प्रश्नकी खातिर ही सही, एक दिनके लिए आ सकते हो।

तुमने दिल्लीमे छात्रावास खोलनेकी बात कही है। अब आश्रमकी जमीन और इमारते अपने पास होनेके बाद भी क्या दिल्लीवाले छात्रावासकी कोई खास जरूरत रह गई है? एक और नई और बडी योजना आरम्भ करनेसे पहले क्या साबरमतीकी योजनाकी प्रगति देखना अच्छा नही रहेगा? मै तो समझता हूँ कि हमे साबरमती वाली योजनाको पूर्ण सफल बनानेकी ओर ही सारा ध्यान देना चाहिए, और उसे सफल बनानेके काममे हममे से अनेककी पूरी शक्तिकी आवश्यकता पडेगी।

आशा है, तुम स्वस्थ होगे। नाकका क्या रहा? इन दिनो तो दिल्लीका मौसम बडा अच्छा होगा।

बापू

अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ७९३८ तथा ७९३९) से, सौजन्य घनश्यामदास बिडला। **इन द शैडो ऑफ द महात्मा** से भी।

१ ५ अक्टूबरका; इसमें लिखा था अबतक तो हमारे पास कोई सम्पत्ति है नही। . . लेकिन आपका प्रस्ताव मान लेनेपर हम जल्द ही बहुमूल्य सम्पत्ति प्राप्त कर लेंगे। अब तुरन्त यह प्रश्न उठ खड़ा होगा कि इस सम्पत्तिका मालिक कौन हो? क्या हरिजन मण्डल? यदि हाँ, तो सभी व्यावहारिक कार्योंकी दृष्टिसे हरिजन मण्डलका तात्पर्य होगा वे लोग जिनकी मौन अनुमतिपर यह टिका हुआ है तथा हमारे समाजमें मौन अनुमति नामकी कोई चीज तो अबतक है नही। इसलिए हमें यह तय करना पड़ेगा कि भविष्यमें हमारा संविधान किस प्रकारका हो।

८४. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

८ अक्टूबर, १९३३

भाई घनश्यामदास,

गोपीका अच्छी तरह चल रहा है। खुश रहती है। मैंने गजाननको खत लिखा है।

बापूके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ७९३९) से, सौजन्य घनश्यामदास बिडला

८५. भाषण : वर्धाकी सार्वजनिक सभामे[1]

८ अक्टूबर, १९३३

कलतक मुझे इसका ध्यान नही था कि इतने विशाल जनसमूहके आगे मुझे बैठना होगा, और यह भी मालूम नही था कि मुझे यहाँ कुछ बोलना पडेगा। मै बहुत ऊँची आवाजसे नही बोल सकता। बोलनेका प्रयत्न करूँ भी, तो मेरे डाक्टर मित्रोने मुझपर इसका प्रतिबन्ध लगा दिया है। इसलिए मैंने थोडा-सा लिखकर दे दिया है। आप लोग जानते है कि मै एक वर्षतक — ३ अगस्त, १९३४ तक — खासकर हरिजन-सेवाका ही काम करना चाहता हूँ। बचपनसे ही मैंने हिन्दू-धर्मका अभ्यास करनेका प्रयत्न किया है। बचपनसे मुझे जो शिक्षा मिली, उसके अनुसार आचरण करनेकी भी कोशिश की है, और यथाशक्ति हिन्दू-शास्त्रोका अध्ययन किया है। दूसरे धर्मशास्त्रोका अध्ययन भी भक्तिभावसे किया है। बचपनसे ही मै यह मानता हूँ कि जैसी अस्पृश्यता हम लोग आज मानते है, उसके लिए हमारे हिन्दू-धर्मंमे कोई स्थान नही है, और हिन्दू-धर्मके अन्दर यह एक बडा भारी पाप पैठ गया है। अभ्याससे और अनुभवसे भी मुझे ऐसा मालूम होता है। मेरा यह दृढ विश्वास हो गया है कि यदि हमने यह अस्पृश्यतारूपी पाप दूर न किया तो हिन्दू धर्म नष्ट हो जायेगा।

१ स्वास्थ्य खराब होनेके कारण गाधीजी सभामें स्वय नही बोले थे। भाषण हिन्दीमें था और पढ़कर सुनाया गया था। हिन्दी रिपोर्ट उपलब्ध न होनेके कारण इसे चन्द्रशकर शुक्लके “साप्ताहिक पत्र” से लिया गया है।

अस्पृश्यता दूर करनेका अर्थ सिर्फ इतना ही नहीं है कि जिन्हें हम अस्पृश्य मानते हैं, उन्हें हम छूने लगें। अवसर आनेपर प्रेम-भावसे उनका स्पर्श तो करना ही है। किन्तु इसका अर्थ इससे कहीं अधिक है। अस्पृश्यता नष्ट करनेका यह अर्थ है कि हमें ऊँच-नीचका भाव भूल जाना चाहिए। यों तो ऊँच-नीचका भाव साधारणतया सभी देशोंमें देखनेमें आता है। लेकिन यह नहीं कहा जा सकता कि यह भाव वहाँ किसी भी धर्मका अंश माना जाता है। यह बात तो यहीं कही जाती है कि यह हिन्दू-धर्मका अंश है। किन्तु यदि पक्षपात छोड़कर हिन्दू-धर्मके तत्त्वोंका हम निरीक्षण करें, तो हम देखेंगे कि हिन्दू-धर्ममें भी ऊँच-नीचका भाव नहीं है। हाँ, हमारे आचारमें यह भाव भरपूर पैठ गया है और हमें यह सिखाया गया है कि यह भाव हिन्दू-धर्मका एक विशेष अंग है। हिन्दू-धर्मके सिद्धान्तोंमें एक सिद्धान्त यह है कि जो आचरण अपने प्रतिकूल समझा जाये वह दूसरोंके प्रति कभी न बरता जाये। इसी आशयके एक अन्य श्लोकमें कहा गया है कि प्राणिमात्रको अपने ही समान समझना चाहिए। जिस धर्ममें ऐसा आदेश दिया गया हो, उस धर्ममें ऊँच-नीचका भाव किस प्रकार पैदा हो गया है यह मेरी समझमें ही नहीं आता।

सारांश यह है कि गत वर्ष २५[1] सितम्बरको बम्बईमें मालवीयजी महाराजकी अध्यक्षतामें हिन्दू-समाजके नामपर नेताओंकी परिषद्ने अस्पृश्यताको दूर करनेकी जो प्रतिज्ञा की थी, उसका पालन करना प्रत्येक हिन्दूका धर्म है। मुझे आशा है कि आप सब लोग, जो यहाँ आये हैं, इस प्रतिज्ञाका पालन करेंगे। इसी प्रस्तावमें साफ तौरसे यह कहा गया है कि सार्वजनिक मन्दिरों, सार्वजनिक कुओं, सार्वजनिक पाठशालाओं इत्यादिके उपयोगका जो अधिकार दूसरे हिन्दुओंको है, वही प्रत्येक हरिजनको है। जब करोड़ों सवर्ण हिन्दुओंका हृदय पलट जायेगा और हम लोग दया-धर्मको भली-भाँति समझने और उसका पालन करने लगेंगे, तभी हरिजनों और दूसरे हिन्दुओंमें शुद्ध ऐक्य-भाव उत्पन्न होगा। इतना ही नहीं, बल्कि अन्य धर्मावलम्बियोंके साथ भी हम लोग समभावसे रहने लगेंगे और द्वेषमात्र दूर हो जायेगा। परमात्मासे हमारी प्रार्थना है कि इतनी आत्मशुद्धि करनेकी शक्ति वह हमें दे और हिन्दू-धर्ममें जो यह अस्पृश्यताका कलंक पैदा हो गया है, वह निर्मूल हो जाये।

[गुजरातीसे]
हरिजनबन्धु, १५-१०-१९३३

१. साधन-सूत्रमें यहाँ "२४" है। प्रस्तावका मसविदा गांधीजीने तैयार किया था तथा अन्य नेताओंने २४ सितम्बर, १९३२ को पूनामें इसपर अपनी सहमति प्रदान की थी। लेकिन औपचारिक रूपसे प्रस्ताव २५ सितम्बरको बम्बईमें पास किया गया था। देखिए खण्ड ५१, पृष्ठ १४८-४९।

८६. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

[९ अक्टूबर, १९३३ से पूर्व][1]

भाईश्री वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र आज ही मिला है। मेरा काम बढता ही जा रहा है, यह तो तुम समाचारपत्रोंमे देखोगे। मेरा रक्तचाप कम हो गया है। यह १६०–१०० हे और वजन बढकर १०३ पौड हो गया है।

राजा कोयम्बटूरमे हे। ठीक रहते है। लक्ष्मी शनिवारको गई। कृष्णदास[2] पहुँचाने गया है। साथमे मद्रासमे खादी-कार्यको देखता आयेगा। लक्ष्मी कोयम्बटूर हो आयेगी। देवदासके पत्र आते रहते है। वह ठीक चल रहा जान पडता है। वह अध्ययन भी करता है।

कृष्णा (नेहरू)का विवाह गुणोत्तम हठीसिहके साथ २० तारीखको इलाहाबादमे सम्पन्न होगा। मै वहाँ नही जानेवाला हूँ। वे मेरी उपस्थितिकी आशा भी नही रखते। मैंने तो आशीर्वादका पत्र भी भेज दिया है। तुम भी भेज देना।

किशोरलाल दो-तीन दिनोमे आयेगा।

जमनालालजीकी यह राय है कि आनन्दीकी सगाई कर देनी चाहिए। मै भी ऐसा महसूस तो जरूर करता हूँ। [3] आनन्दी तो कहती है कि उसे अभी विवाह नही करना है। लेकिन मै समझता हूँ कि यदि मै उसे विवाह करनेके लिए कहूँ तो वह मेरी बात मान लेगी। तुम अपनी राय मुझे बताना। लक्ष्मीदाससे मिल सको तो उससे मिलकर इस सम्बन्धमे पूछना। मै उसे लिख रहा हूँ।

[4]

मैंने मणिको पत्र लिख दिया है। वह कदाचित् मृदु[5] के साथ भी नही आयेगी।

जमनालाल व्यक्तिगत कामके लिए दो-तीन दिनोके लिए आज बम्बई जा रहे है।

१. पत्रकी तारीख, कृष्णा नेहरूके विवाह और जमनालालके बम्बई जानेकी चर्चा परसे तय की गइ है, देखिए "पत्र जवाहरलाल नेहरूको", ९-१०-१९३३।

२ छगनलाल गाधीके पुत्र।

३ और ४ साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ छूट गया है।

५. मृदुला साराभाई।

मेरा दौरा ८ नवम्बरसे शुरू होनेकी सम्भावना है। साथमें सम्भवत ठक्करबापा, चन्द्रशंकर, मीरा, नायर और रामनारायण चौधरी होंगे। तुम्हें और चन्दूभाईको,

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृष्ठ ३३-४

८७. तार : जवाहरलाल नेहरूको

वर्धा
९ अक्टूबर, १९३३

जवाहरलाल नेहरू
आनन्द भवन, इलाहाबाद

भगवानको धन्यवाद। आशा है माताजीकी तबीयत इतनी ठीक हो जायेगी कि आगामी विवाहमें स्वस्थ होकर शरीक हो सकेंगी।

बापू

[अंग्रेजीसे]

गांधी-नेहरू पेपर्स, १९३३, सौजन्य नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय

८८. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

वर्धा
९ अक्टूबर, १९३३

प्रिय जवाहरलाल,

मुझे तुम्हारा तार मिल गया था जिसका जवाब मैं दोपहरमें ही दे चुका। मैं उम्मीद करता हूँ कि माताजी काफी शक्ति हासिल कर लेंगी और विवाहमें शरीक हो सकेंगी।

यह साथका पत्र मुझे आज सरलादेवी[1] से मिला है। मैंने उनसे कह दिया है कि इन्दु[2] को [इस मामलेमें] स्वतन्त्रता है कि वह जैसा चाहे करे, और यह भी कि फिलहाल तो वह अध्ययनमें लगी हुई है इसलिए विवाह-सम्बन्धी किसी भी प्रस्तावमें

१. सरलादेवी चौधरानी।
२. इन्दिरा नेहरू।

वह शायद ही कोई रुचि लेगी। मैने उन्हे यह भी लिख दिया है कि मै उनका पत्र तुम्हे भेज रहा हूँ। पर अगर इन्दु विवाहके किसी प्रस्तावपर विचार करनेको तैयार हो तो दीपक[1] को मै अवश्य ही अच्छा साथी मानता हूँ।

आज हार्डीकर[2] और कमला चट्टोपाध्याय आये थे। हार्डीकरको भगन्दरकी शिकायत है और उसका ऑपरेशन कराना जरूरी है। विशेष जानकारी कल कर सकूँगा। जमनालालजी बम्बई गये है। उनका एक मित्र आर्थिक सकटमे है और वे उसकी मददके लिए गये है। वे चार दिन बाद लौटेगे।

यदि सब ठीक-ठाक रहा तो मेरा दौरा ८ नवम्बरको शुरू होना है। मुझे काफी आराम मिल रहा है।

कमला आजकल बिलकुल पत्र नही लिखती।

सप्रेम,

बापू

[अग्रेजीसे]

गाधी-नेहरू पेपर्स, १९३३, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

८९. पत्र : एफ० मेरी बारको

९ अक्टूबर, १९३३

चि० मेरी,

तुम्हारे गलत ढगमे रहनेकी पूरी रिपोर्ट मुझे कल मिल गई। डाक्टरोका कहना है कि तुम्हारी तिल्ली बढी हुई है। इसका मतलब है कि तुम्हे दूध, फल और हरी सब्जियोपर रहना चाहिए। लगातार कुनैनकी गोलियाँ लेनेका दड भी तुम्हे भोगना होगा। मुझे विश्वास है तुम एक-दो दिनमे पुन अच्छी हो जाओगी।

स्वामीजीका नाम कुवलयानन्द, [और पता] साताक्रूज, बम्बई है।

सप्रेम

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६००९) से। सी० डब्ल्यू० ३३३६ से भी, सौजन्य : एफ० मेरी बार

1 सरलादेवीका पुत्र।

2 एन० एस० हार्डीकर, हिन्दुस्तानी सेवा दलके सस्थापक और महामत्री।

९०. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

१० अक्टूबर, १९३३

प्रिय कुमारप्पा,

तुम्हारा पत्र मिल गया।

यह तो ठीक ही है कि तुम अपनी सहूलियतसे अपनी बहनके मामलेको व्यवस्थित रूपसे निपटा दोगे। मैं अभी ७ नवम्बर तक यही हूँ, अत. तुम्हारे लिए काफी समय है।

वीणा तो अहमदाबादमे तुम्हारी राहमे है ताकि वह तुम्हारा माकूल इलाज कर सके।

जब तुम यहाँ आओगे तब तुम्हे जो-कुछ कहना है उस सबके लिए तुम्हे पूरा घटा-भर समय मिलेगा। काका साहब अभी कुछ दिन और यहाँ रहेगे पर तुम्हारे आनेतक शायद न रहे।

हृदयसे तुम्हारा,
बापू

श्रीयुत जे० सी० कुमारप्पा
"मनोरमा"
पल्लमकोट्टा, (जिला तिन्नेवेल्ली)

मूल अंग्रेजी (जी० एन० १०१०१) से।

९१. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

१० अक्टूबर, १९३३

भाई ठक्कर बापा,

रोहतकके बारेमे मुझे भी एक पत्र मिला था और मैंने इसके सम्बन्धमे समाचारपत्रोमे भी पढा था। लाला श्यामलाल हालाँकि लाहौरमे है, उन्होने मुझे आश्वस्त कर रखा है कि वह रोहतककी ओरसे जाँच कर लेगे, और चूंकि वह लाहौरमे बहुत पैसा बना रहे है इसलिए और भी विशेष।

यग साहबके कारनामोको हमे सहन करना ही होगा। लकडीका हत्था लगनेपर ही तो कुल्हाडी पेडको काट सकती है न?

लगता है तुमने मथुरादासको परेशानीमे डाल दिया है। उसने तुम्हे जो पत्र लिखा है उसकी नकल मै पढ गया हूँ। ऐसा तुमने क्या लिखा होगा? चाहे जो हो इसमे उसका तनिक भी दोष नही है, यह मै अच्छी तरह जानता हूँ। वह बहुत सावधान रहता है, लेकिन उसे क्रोध भी तुरन्त ही आ जाता है। हम जैसे बूढे और गुलामीमे पले लोग यदि कुछ व्यर्थकी बाते कहे भी तो उसपर क्रोध नही करना चाहिए। लेकिन जवान लोग भला कही बुड्ढोको सहन कर सकते है? इसलिए तुम्हे मरहम-पट्टी करनी चाहिए। मै तो मथुरादासको लिखूँगा ही।[1] डॉ० विधानको लिखे पत्रकी नकल[2] इसके साथ है। देवी बाबूको उसकी नकल भेजी है और हिन्दीमे पत्र भी लिखा है।

आसामसे आया हुआ पत्र इसके साथ रख रहा हूँ। उसमे मेरे उत्तरकी प्रति[3] भी है।

मै देखता हूँ कि मुझे ७ नवम्बर तक तो यहाँ रहना पडेगा और मुझे यह पसन्द भी है, क्योकि धीरे-धीरे जो काम इकट्ठा हो गया था उसको मै निपटा सकूँगा और मुलाकातियोमे मिल सकूँगा। इतनेमे शरीरमे ज्यादा ताकत भी आ जायेगी। जमनालालजीको अचानक किसी मित्रकी सहायताके लिए बम्बई जाना पडा है, इसलिए यहाँके कार्यक्रमका मसविदा नही भेज पाये होगे।

वे चार दिनोमे लौटेगे। जैसाकि मैने सुझाया है यदि तुम मध्य प्रान्तको छोडकर दूसरे ढगसे कार्यक्रम बनाओ तो वह तुरन्त बन जायेगा। सारे मध्य प्रान्तका कार्यक्रम एक बारगी बना डालना चाहिए। हमारे दलमे तुम, मै, मीराबहन, चन्द्रशकर, रामनारायण, नायर और जिन्हे तुम शामिल करोगे, वे लोग होगे।

शास्त्रीका इरादा 'हरिजन' [के कार्यालय] को मद्रास ले जानेका है। उनकी दलील मुझे उचित लगी है। वे व्यर्थ ही पूनामे पडे हुए है। इसलिए सम्भवत पन्द्रह-एक दिनोमे 'हरिजन' वहाँसे बदल जायेगा।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११२६) से।

१. देखिए "पत्र . मथुरादास त्रिकमजीको", पृष्ठ ८८।
२ और ३ उपलब्ध नही है।

९२. पत्र : चिमनलाल पारेखको[1]

[११ अक्टूबर, १९३३ से पूर्व]

मुझे यह जानकर खेद हुआ कि समझौता करा पानेमे तुम सफल नही हुए। मुझे इस बातसे विशेष दु ख हुआ कि प्रारम्भिक कठिनाइयोके कारण समझौता होनेमे बाधाएँ उठी। और दोनो पक्षोकी बातको बिना सुने मै भी कोई निर्णय नही कर सकता कि कौन-कौनसी जानकारी उनसे तलब की गई और जिसे मिल-मालिक लोग नही दे पाये।

यह प्रश्न ऐसा भी नही है जिसपर पचोकी राय माँगी जा सके। लेबर एसोसिएशनके श्री गुलजारी लाल नदा मुझसे मिले। मैने उनसे कहा कि यदि मुझसे फैसला देनेको कहा जाये तो मेरे समक्ष दोनो पक्षोकी दलीलोका होना जरूरी है। और ऐसा लिखित बयानोके जरिये ही किया जा सकता है।

[अग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, ११-१०-१९३३

९३. पत्र : पद्माको

वर्धा

११ अक्टूबर, १९३३

चि० पद्मा,

तेरा पत्र मिला। आशा है तुम सब ठीक हो गये होगे। वहाँ रहनेकी व्यवस्था कैसी है, इसका विवरण देना। मेरा वजन १०३ पौड तक गया है। खानेके लिए दूध और फल तथा कोई सब्जी जैसेकि लौकी, चिचिडा तथा टमाटर आदि लेता हूँ।

थोडे दिनोमे आनन्दी, बाबू और निर्मला अहमदाबाद जायेगे। फिलहाल यहा चालीस-एक लडकियाँ है। बारह वर्षसे नीचेकी उम्रवाली लडकियोने कल खुशी-खुशी अपने बाल कटवाये, बाकी लडकियोको समझा रहा हूँ।

तुझे ब्राण्डीका इन्जेक्शन दिया गया, इसमे तेरा कोई दोष नही है। तूने कोई उसे शौकसे थोडे ही पिया है? और फिर वह वैक्सीन जैसा घिनौना भी नही है। कानके पर्देके लिए किसी औषधिके बारेमे मुझे मालूम नही है। इसके

१ अहमदाबाद मिल-मालिक सघके अध्यक्ष श्री पारेखने समझौता समितिसे त्यागपत्र देनेकी सूचना गाधीजीको दी थी।

लिए तो किसी डाक्टरसे बात करनी चाहिए अथवा किसी वैद्यको इसके बारेमे मालूम हो सकता है।

मेरा दौरा ८ नवम्बरको शुरू होगा। तबतक तो मै यहाँ ही हूँ।

शीला खूब मजेमें होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१४५) से। सी० डब्ल्यू० ३५०० से भी, सौजन्य प्रभुदास गाधी

९४. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

११ अक्टूबर, १९३३

अव आश्रमके बारेमे। इसमे तू भटक गया है। सरकार यदि जमीनका कब्जा नही लेती तो जमीनको वीरान होने दिया जाये, इसमे तो वैरभाव और कृत्रिमता दिखाई देती है। सरकार जमीनको लेकर उसे उजडने देती तो इसमे परेशानीकी कोई बात न थी। लेकिन जिस जमीनका वह कब्जा नही लेती उस जमीनको हम कैसे बरबाद होने दे? यदि ऐसा करे तो क्यो न चल सम्पत्तिको जला डाले? तेरे सिद्धान्तके अनुसार तो जिन्होने अपनी फसलोको जला डाला है उन्होने समझदारीका काम किया है। मेरा तो यह विश्वास है कि आश्रमकी जमीनको हरिजन-कार्यके लिए सौप देनेसे सत्याग्रह आश्रमकी सार्थकता पूर्ण रूपसे सिद्ध हो गई है। आश्रमको सरकारके पास रहने देनेकी अपेक्षा हरिजन सेवक सघको देनेमे इसकी सार्थकता अधिक है। सरकारके पास रखनेके पीछे यह भावना काम कर रही थी कि कभी-न-कभी उसे वापस ले लिया जायेगा। इसमे तो आश्रमवासियोने हमेशाके लिए एक त्याग किया और भविष्यके लिए अपने-आपको ईश्वरपर छोड दिया। जिस ढगसे भी विचार करे, हम देखेगे कि हमने इस समय जो मार्ग ग्रहण किया है वही सत्याग्रहीके लिए शोभनीय है। इसमे पैसेके लोभको कही भी स्थान नही दिया गया था। इसमे तो केवल विवेककी अर्थात् अहिसाकी बात थी। सरकार देशको वीरान होने दे सकती है, लेकिन हम यथासम्भव ऐसा नही होने दे। इतनेसे यदि तेरा समाधान न हुआ हो तो फिर लिखना। इस बारेमे तेरा समाधान करना मुश्किल नही होना चाहिए।

[गुजरातीसे]

बापुनी प्रसादी, पृष्ठ १३७

९५. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

११ अक्टूबर, १९३३

तू एक नियमको भूल गया जान पडता है। पत्रमे काटे हुए शब्दोको कभी नही पढना चाहिए और अगर पढ भी लो तो उसका अर्थ कभी नही करना चाहिए। मनुष्यको अपने विचार सुधारनेका अवसर मिलना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अपने दुष्टमे-दुष्ट विचारोको भी सुधार लेता है तो फिर उसपर दुष्टताका आरोपण करना केवल अज्ञान है। यदि हम सदा अपने विचारोको एक-दूसरेके आगे व्यक्त करे तो ससार एक मिनट भी सुखपूर्वक न चल पाये। मुझे लगता है कि तूने व्यर्थ ही क्रोध किया।[1]

[गुजरातीसे]

बापुनी प्रसादी, पृष्ठ १३८

९६. पत्र : एच० के० हेल्सको

सत्याग्रह आश्रम, वर्धा
१२ अक्टूबर, १९३३

प्रिय मित्र,

आपके इसी ६ तारीखके पत्रका जवाब देनेमे मुझे थोडा विलम्ब हुआ है इसके लिए क्षमा करेगे। बात यह है कि मेरा पत्र-व्यवहार दिनोदिन बढता जा रहा है और उसे निपटा पानेकी मेरी अपनी शक्ति तो सीमित ही है।

आपके सुझावकी निस्बत यह स्पष्ट है कि आप मेरी मर्यादाओको नही समझ पा रहे हैं। पहली बात तो यही कि मुझे इस बातका कोई भरोसा नही है कि सरकार मेरे मिदनापुर जानेकी कल्पनाको पसन्द करेगी, और यदि वह पसन्द कर भी ले तो जिस ढगसे काम करना मैं समुचित समझूँगा वैसा करनेकी स्वतन्त्रता मुझे देगी, इसका कोई भरोसा नही है। और इस सबके अलावा मैं जो विचार प्रकट कर चुका हूँ उनसे तो आप अवगत ही हैं।[2] यदि मुझे हिसाके पक्षपाती दो दलोमे से केवल एक पक्षको ही समझना हो, तो मेरे जैसे पक्के सुदृढ शान्ति सस्थापकके लिए भी सफलता की कोई गुजाइश नही हो सकती। मैं तो सरकार और आतकवादियो, दोनोको हिसाका प्रतिनिधि मानता हूँ—आतकवादियोकी हिसा मेरी दृष्टिमे असघटित, उन्मादपूर्ण और सर्वथा अप्रभावकारी है, इसके विपरीत सरकारकी हिसा सुस-

१ देखिए "पत्र · अमृतलाल वि० ठक्करको", १०-१०-१९३३।

२. देखिए खण्ड ५५, पृष्ठ ४१९।

घटित, सुविचारित और विनाशकारी है, लेकिन वह भी मेरी दृष्टिमे एकदम निष्प्रभावी है। यदि हिसा करनेवाले दो दलोमे से प्रबलतर दलपर मेरा कुछ भी असर नही हो, तब आतकवादी लोग तो मेरी बातपर कान ही नही धरेगे। तो भी आप यह खयाल एक क्षणको भी मनमे न लाये कि यदि मै मिदनापुर नही जा रहा हूँ तो मै आतकवादियोको प्रभावित करनेकी कोई कोशिश भी नही कर रहा हूँ। यह प्रभाव निषेधात्मक हो सकता है। मै भली-भाँति जानता हूँ कि किन अडचनोके बीच मुझे कार्य करना पड रहा है। लेकिन मुझे अपने अहिसाके सिद्धान्तपर अटूट श्रद्धा है, और वह दिन उतनी दूर नही है जितना कि कुछ लोग समझते होगे, जब अहिसाको सफल होते आँखोसे देखा जा सकेगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

श्री एच० के० हेल्स, एम० पी०
५२, गाल्सटॉन बिल्डिंग्स
रसैल स्ट्रीट, कलकत्ता

[अग्रेजीसे]

गाधी-नेहरू पेपर्स, १९३३, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

९७. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

सत्याग्रह आश्रम, वर्धा
१२ अक्टूबर, १९३३

प्रिय ठक्कर बापा,

साहू और अधिकारियोके बीच जो पत्र-व्यवहार हुआ वह और उसकी प्रतिलिपियाँ इसके साथ है, इन्हीके साथ मैने साहूको जो जवाब दिया है उसकी नकल भी है। यह ठीक होगा यदि तुम भी एक औपचारिक पत्र बिहार या उडीसाके कलेक्टरको या गृहसदस्यको इस बातका उल्लेख करते हुए लिख दो कि आन्दोलनकी प्रगतिमे किस प्रकार अनावश्यक बाधाएँ डाली जा रही है।

नी० के सम्बन्धमे तुम्हारा तार मिला। तीन दिन हुए ठीक प्रार्थनाके बाद ही वह एकाएक गायब हो गई। इन दिनो उसका व्यवहार बडा ही अजीब हो चला था। उसका दिमाग तो निश्चय ही कमजोर पड गया है। जवाबमे मैने भी तुम्हे तार भेजा है जो, उम्मीद है, तुम्हे मिल चुका होगा। अब उसके पीछे तुम्हे अपना समय नष्ट नही करना है। लेकिन यदि वह बेकार तुम्हारे रास्तेमे आये तो उसके लिए पुलिसको सूचित कर दे, हालाँकि मेरा खयाल है ऐसा वह शायद ही करेगी।

डॉ० शर्माने भी मुझे तार दिया है और मैंने उन्हें सलाह दी है कि वे उसपर ध्यान देना ही छोड दें।

हृदयसे तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११२७) से।

९८. पत्र : महेन्द्र वी० देसाईको

वर्धा
१२ अक्टूबर, १९३३

चि० मनु,

तेरा हरी और लाल स्याहीसे लिखा पत्र मिला। तूने जो अक्षरोंको गोल-मटोल बनाकर लिखा है सो ठीक नहीं है। चित्रकला आनेपर ऐसा किया जा सकता है। अभी तो अच्छे, साफ और सादे अक्षर लिखना ही ठीक होगा।

बच्चोंके पास तो पत्रमें लिखनेके लिए बहुत कुछ होता है।

नये वर्षके[1] लिए तुम सबको आशीर्वाद। खूब जियो, खूब पढ़ो और खूब अच्छे बनो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ३१६०) से, सौजन्य वालजी गो० देसाई

९९. पत्र : जयश्री रायजीको

१२ अक्टूबर, १९३३

प्रिय बहन,

आपको व्यापार करना नहीं आता। मैं ही आपकी माँगका स्वरूप निर्धारित करूँ, यह तो रेतमें मक्खन बिलोये जानेकी अपेक्षा करना है। मेरे पास तो एक दमड़ी भी नहीं है। लेकिन यदि मैं आपकी किसी ऐसी विशेष जरूरतके बारेमें जो अन्य प्रकारसे पूरी न हो सकती हो, जान लूँ और यदि मेरी दृष्टिमें ऐसा कोई व्यक्ति आ जाये तो मैं उससे भिक्षा माँग लूँ। बाकी आजकल तो मेरा मन हरिजन-कार्य में लगा रहता है।

मोहनदास

[गुजरातीसे]
बापुजीनी शीतल छायामां, पृष्ठ १०७

१. कार्तिक सुदी १, गुजराती नव वर्ष जो २० अक्टूबर, १९३३ को पड़ा था।

१००. पत्र : एफ० मेरी बारको

१३ अक्टूबर, १९३३

चि० मेरी,

मुझे खुशी है कि तुम्हारा बुखार उतर गया। यदि असुविधा न हो तो तुम दोपहरमे ४ बजे आ जाओ, मै तुमसे गाडीमे ही मिल लूँगा, तुम्हे ऊपर नही आना है।

सप्रेम,

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०१०) से। सी० डब्ल्यू० ३३३५ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

१०१. टिप्पणियाँ

अनेक धन्यवाद

समस्त भारतके और पश्चिमी देशोके मित्रोने मुझे मेरे जन्म-दिवसपर बधाइयोके तार भेजे है। इन तारोके लिए मै उनका हृदयसे आभारी हूँ। सभी तारोकी अलग-अलग स्वीकृति भेजनेमे असमर्थ होनेके कारण, आशा है, वे मुझे क्षमा करेगे। मै चाहता हूँ कि मेरे ये मित्र प्रार्थना करे कि परमात्मा मुझे इस अभिनन्दनके योग्य बनाये। मै जानता हूँ कि बधाई भेजनेवाले आशा करते है कि मानव-समाजकी मै कुछ सेवा करूँ। इच्छा तो सदा ही ऐसी रही है, पर यह तो प्रभु ही जानता है कि अपने उद्योगमे मै कहाँतक सफल होऊँगा।

मेरा आगामी दौरा

सब-कुछ ठीक रहा तो हरिजन-कार्यके सिलसिलेमे मेरा देश-भ्रमण आगामी ८ नवम्बरसे प्रारम्भ होगा। कहते है कि मै ठीक-ठीक स्वास्थ्य-लाभ कर रहा हूँ, और डाक्टर खरे, जो इस समय मेरी देख-रेख करते है, की राय है कि उपर्युक्त तारीखसे मै अच्छी तरह अपना दौरा शुरू कर सकूँगा। पर इसका मतलब यह नही है कि पहलेकी तरह मै व्यस्त कार्यक्रमका भार उठा सकता हूँ। सप्ताहमे दो दिन —रविवार और सोमवार अधिक उपयुक्त होगे—यात्रा न करनेका प्रस्ताव है, ताकि उन दिनो 'हरिजन'के सम्पादन और पत्र-व्यवहारका काम मै निबटा सकूँ।

जहाँ-कही मेरे मित्र मुझे ले जायेंगे, वहाँ मैं पैसा इकट्ठा करूँगा। सब जगह सनातनियोसे मिलना मै पसन्द करूँगा। मुझे इसमे सन्देह नही कि इस आन्दोलनका विरोध ज्यादातर भ्रमके कारण हो रहा है। यह तो स्वाभाविक ही है कि हर जगह मै हरिजनोसे मिलूँ और हरिजन बस्तियाँ भी देखूँ। रातको देर तक लम्बा कार्यक्रम न रखा जाये। इन सब मर्यादाओके होते हुए भी, जिन स्थानोके लोग मुझे बुलानेको उत्सुक है, उन्हे जहाँतक हो जल्दी ही ठक्कर बापाको लिखना चाहिए, ताकि कार्यक्रममे कोई परिवर्तन करनेकी आवश्यकता न पडे और न किसीको निराश होना पडे। हरिजन-सेवाके लिए जिन प्रदर्शनोकी आवश्यकता न हो, वे न किये जाये। एक-एक पैसेकी बचतका खयाल रखा जाये। अगर कही मानपत्र दिये जाये, तो उनमे जो-कुछ कार्य किया गया है उसका सक्षिप्त वर्णन, हरिजनोकी स्थिति और उनके व्यवसायके आँकडोका ही वर्णन रहना चाहिए, न कि मेरा बहुत-सा गुणगान। यदि मुझमे कुछ अच्छी बाते होगी तो वे स्वय ही प्रकट होगी।

क्या दूसरे विश्वविद्यालय अनुकरण करेगे?

नागपुर-विश्वविद्यालय और मध्यप्रान्तीय हाई स्कूल बोर्डके सदस्य श्रीयुत नारायण केशव बेहरे लिखते है कि "हरिजनो और पिछडी हुई आदिम जातियोसे परीक्षा-शुल्क न लिया जाये"— इस आशयका एक प्रस्ताव मैने पेश किया था। सौभाग्यसे मेरा वह प्रस्ताव पास हो गया है। युनिवर्सिटीने उसमे "१९४० ईसवी तक" इतना अश और जोड दिया है। और हाई स्कूलके बोर्डने पाँच साल तककी मियाद रखी है। इसलिए इस बीचमे मध्यप्रान्तके इन विद्यार्थियोसे मैट्रिकसे लेकर एम० ए० या एल० एल० बी० तकका परीक्षाशुल्क नही लिया जायेगा।

इस प्रस्तावके पास करनेके लिए मै नागपुर विश्वविद्यालयको, हाई स्कूल-बोर्डको और प्रस्तावक (श्री बेहरे)को धन्यवाद देता हूँ। समयकी मर्यादा रखनेसे प्रस्तावकी उपयोगितामे कोई कमी नही आती। यह मर्यादा तो विश्वविद्यालय और बोर्डके सदस्योके आशावादका एक चिह्न है। उनका विश्वास है कि इतने समयमे इन जातियोकी आर्थिक स्थिति इतनी सुधर जायेगी कि उन्हे तब इतनी माफी देनेकी आवश्यकता न रहेगी। उनकी यह आशा सफल हो! भारतके अन्य विश्वविद्यालय और हाई स्कूल-बोर्ड क्या मध्यप्रान्तके इस सुन्दर दृष्टान्तका अनुकरण करेगे?

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १४-१०-१९३३

१०२. गुलामी बनाम अस्पृश्यता

दीनबन्धु एन्ड्रूज लिखते है

सौ वर्ष हुए, पश्चिममें अस्पृश्यतासे भी अधिक भयानक एक अमानुषी प्रथाका अन्त किया गया था। दास-प्रथाने स्त्री और पुरुषोंको पशुके समान बना दिया था जिन्हे उनके मालिक खरीद सकते थे, बेच सकते थे या अपने पास रख सकते थे। प्राचीन कालसे प्रचलित यह अन्याय सारे ससारमे फैला हुआ था। पर पश्चिममें तो गुलामीने विकराल रूप धारण कर लिया था। हबशियोंको आफ्रिकासे जहाजोमे पशुओकी तरह भर-भरकर लाया जाता था और उन्हे गन्नेके खेतोमे गधोकी तरह जोत दिया जाता था। . गुलामीके व्यापारसे अमेरिकामें और अन्यत्र जो रँग-भेदकी समस्या पैदा हो गई है, वह अभी तक हल नही हुई हे। . . .

बहुधा यह शंका की जाती है कि क्या केवल दयाधर्मकी प्रेरणासे कोई भारी नैतिक सुधार हो सकता है? इस कसौटीके निकटतम पहुँच सके वह चीज गुलामीका नाश है। . . . इस पापपूर्ण प्रथाका अन्त करानेके लिए ग्रेट-ब्रिटेनने अपने राजस्वमे से दो करोड़ पौड दिये। अतः यह कहना ठीक नही है कि राजनीतिमे दयाधर्मकी कभी विजय नही हुई। १८३३ मे दयाधर्मकी विजय हुई थी।

अब १९३३ मे क्या होगा? . . . भारत यदि इसी वर्ष 'अस्पृश्यता' का पूर्णतया अन्त कर दे, और लगभग साढ़े चार करोड़ मनुष्योको नैतिक गुलामीसे मुक्त कर दे, तो निश्चय ही यह एक बहुत जबर्दस्त दयाधर्मका कार्य समझा जायेगा।

कितना अच्छा हो कि दीनबन्धुकी मनोकामना सफल हो। बिना दैवी चमत्कारके, इस वर्षके शेष महीनोमे, और शायद अनेक वर्ष बाद भी, करोडो मनुष्योका एकसाथ हृदय-परिवर्तन हो जाना कठिन मालूम होता है।

पर अस्पृश्यता-उन्मूलनका क्या अर्थ है और १८३३ मे दास-प्रथाके उन्मूलनका क्या अर्थ था? कानूनके अनुसार गुलामी उठ गई थी, पर हृदयकी गुलामी तो उस समय नही हटी थी, और सौ वर्ष बीत जानेपर भी गुलामीका पूरे तौरपर नाश शायद ही हुआ है। इतना लिखनेका अभिप्राय १८३३ के महान् कार्यका महत्त्व कम करनेका

१. यहाँ केवल कुछ अंश दिये गये हैं।

नही है, किन्तु अपने मनमे स्थितिको स्पष्ट करने और १८३३ के प्रयत्नकी सीमाको समझानेका ही है।

जिस तरह १८३३ मे गुलामीका उन्मूलन कर दिया गया था, उसी तरह अस्पृश्यताका अन्त सितम्बर १९३२ मे[1] हिन्दुओके प्रतिनिधियोकी उस सभामे हो गया जो पडित मालवीयजीकी अध्यक्षतामे बम्बईमे की गई थी। वह कोई दिखावेकी चीज नही थी। उसका ठोस परिणाम यह हुआ था कि तुरन्त ही अखिल भारतीय अस्पृश्यता-निवारण-सघकी स्थापना हुई। उस समयसे देशके एक कोनेसे लेकर दूसरे कोने तक अस्पृश्यताके विरुद्ध निरन्तर लडाई लडी जा रही है। यह बात 'हरिजन' के पृष्ठोसे बहुत अच्छी तरह सिद्ध की जा सकती है। गम्भीरतासे की हुई हिन्दुओकी इस प्रतिज्ञा-का समुचित पालन करनेके लिए कम-से-कम एक व्यक्ति है जिसका जीवन बन्धकके रूपमे रखा हुआ है।

यह सही है कि १८३३मे विधान-सभाने कानून बनाकर गुलामीका अन्त किया था। पर सन् १९३२ मे एक स्वैच्छिक सघने अस्पृश्यताका नाश किया है और इसके पीछे सत्ताबल नही है, यह कहकर १९३२ के प्रयासका मूल्य कोई कम न आँके। १९३२ का कार्य ऐच्छिक ही हो सकता था। गुलामी एक इकरारके समान थी और कानूनके बलपर उसका पालन कराया जा सकता था। अस्पृश्यता एक धार्मिक प्रथा है। दीनबन्धु एन्ड्रयूजने सच ही कहा है कि अस्पृश्यता "नैतिक गुलामी" है। इसका कानून द्वारा अन्त नही हो सकता था। इसे नष्ट करनेका एकमात्र औपचारिक उपाय बम्बईमे निश्चित किया गया था। फिर, मै बता ही चुका हूँ कि ऐसा नही है कि इसके पीछे कोई सत्ताबल न हो। यह सच है कि इसके पीछे जो सत्ता है वह नैतिक है, पर अन्तमे कानूनी सत्तासे नैतिक सत्ता ही अधिक प्रबल साबित होती है। पाठक समझ ले कि जिन विधेयकोको केन्द्रीय विधान-सभामे पास करानेका प्रयत्न किया जा रहा है, उनके द्वारा अस्पृश्यताका नाश करानेका इरादा जरा भी नही है। एक विधेयकका उद्देश्य तो हरिजनोके मन्दिर-प्रवेशके लिए नियम बनवाना है, और दूसरे विधेयकका उद्देश्य यह है कि अस्पृश्यताको कानूनन जो स्वीकृति मिली हुई है, उसे समाप्त कर दिया जाये। धार्मिक मान्यताओ और सामाजिक रीतियोपर इन दोनो विधेयकोमे से एकका भी प्रभाव नही पडता। यह काम तो धार्मिक और सामाजिक सुधारकोका है। सुधारोकी गति तेज करनेके लिए विधेयकोका पास होना बहुत जरूरी है, पर इनसे अस्पृश्यताका अन्त नही हो सकता। अस्पृश्यता कोई इकरारकी चीज नही है। 'अस्पृश्य' कहे जानेवाले लोग खरीदे या बेचे नही जा सकते।

अत मुझे आशा है कि इतना तो स्पष्ट समझको आ जायेगा कि सन् १८३३ मे होनेवाले गुलामीके नाशके समान २४ सितम्बर, १९३२ को अस्पृश्यताका नाश हो चुका है। इसकी जयन्ती विधिपूर्वक गत २४ सितम्बरको मनाई गई थी। सारा हिन्दू-समाज बम्बईके प्रस्तावका कब पालन करेगा, यह बात प्रस्ताव पास करनेवालो और

१. देखिए खण्ड ५१, पृष्ठ १४८-९।

पालन करानेकी चेष्टा करनेवालोके पुरुषार्थपर निर्भर करती है। लेकिन यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके बारेमे यह नही कहा जा सकता कि ऐसा किसी अमुक दिन हुआ।

मै जानता हूँ कि दीनबन्धु किसी ऐसे निश्चित दिनकी बाट देखने नही बैठे है, जब कि सारे जनसमाजका एकसाथ हृदय-परिवर्तन दुनिया देख सके। वह जो चाहते है और मै जो चाहता हूँ तथा प्रत्येक सुधारक जिस बातकी चेष्टा कर रहा है, वह यह है कि हिन्दुओकी समस्त शक्तिका ऐसा प्रदर्शन हो कि कोई व्यक्ति चलते-चलते भी देख सके कि हिन्दू-धर्मने ऊँच-नीचकी भावनाको नष्ट कर दिया है, और अब उसमे जन्मसे या कर्मसे कोई उच्च, नीच अथवा अछूत नही समझा जाता। ईश्वरकी दृष्टिमे पापी और साधु दोनो बराबर ही है। दोनोके साथ समान न्याय होना है और ऊर्ध्वगमन या अध पतनका समान अवसर दोनोको मिलना है। दोनो ही ईश्वरके बेटे है, उसीकी रचनाएँ है। जो साधु अपने-आपको पापीसे ऊँचा मानता है, वह अपनी साधुता गँवा बैठता है और पापीसे भी तुच्छ हो जाता है, क्योकि पापीको तो इस बातका ज्ञान ही नही होता कि वह क्या कर रहा है।

अस्पृश्यता-निवारक-समितियोका काम अत्यन्त पुण्यमय है। अत हमे दीनबन्धु एन्ड्रूजके साथ स्वर मिलाकर प्रभुसे प्रार्थना करनी चाहिए कि इन सस्थाओको पर्याप्त आध्यात्मिक बल मिले जिससे कि वे अनेक युगोसे चलते आये इस पुराने अन्धविश्वासको, जो हिन्दू-समाजको गन्दा कर रहा है, समाप्त कर सके। यदि हिन्दू-समाजने युग-धर्म को नही पहचाना, तो यह अन्धविश्वास हिन्दू-धर्मको समाप्त कर डालेगा।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १४-१०-१९३३

१०३. अकेला व्यक्ति क्या कर सकता है?

हरिजन-सेवक बननेकी इच्छा रखनेवाले एक सज्जन लिखते है [1]

मुझे इसमे जरा भी सन्देह नही कि बेचारी उस भगिन और 'कट्टरपथी' कुटुम्ब, इन दोनोकी सेवा करनेका सुनहरा अवसर पत्र-लेखकने यो ही खो दिया। उसे हरिजन-स्पर्शसे 'अपवित्र' हुई लडकीकी माँको नम्रताके साथ समझाना चाहिए था। इस तरह उन्हे लज्जित करके अगर वह उनसे पश्चात्ताप नही करा सकता था, तो कमसे-कम उनका क्रोध तो अपने ऊपर ले ही लेता। और उस हरिजन-लडकीको यह भान होता कि एक हितू तो उसकी सहायताको दौड पडा है। लडकीकी माँ

१ यह पत्र यहाँ नही दिया गया है। इसमें बताया गया था कि किस प्रकार एक हरिजन बालाका धोखेसे स्पर्श हो जानेके कारण एक सवर्ण हिन्दू बाला और अन्य सवर्णोंने उस हरिजन बालाको भद्दी-भद्दी गालियाँ दी। पत्र-लेखकने यह जानना चाहा था कि एक ऐसे गाँवमें, जहाँ कि अन्धविश्वासका बोलबाला है और जहाँ हरिजनोंको पशुओसे भी बदतर समझा जाता है, वे कोई उपयोगी कार्य किस प्रकार कर सकते है।

और उसके अन्य सम्बन्धी कमसे-कम विचार करनेको विवश तो अवश्य हो जाते। शायद पत्र-लेखकको उनके साथ बहस करनी पडती। सारे गाँवके लोगोने शायद उस मामलेमे दिलचस्पी दिखाई होती और यदि पत्र-लेखक स्थितिके अनुसार खरा उतरता तो वह भविष्यमे ठोस सेवा करनेका श्रीगणेश वहीमे कर सकता था, अथवा यदि उसका सिर तोड दिया जाता, तब भी यह आगे सेवा-कार्य करनेके लिए अनुमति-पत्रके समान ही सिद्ध होता। मुझे तो साफ मालूम होता है कि ऐसे अवसरोपर प्रत्येक मानव-प्रेमीको होशियारी और नम्रतापूर्वक, लेकिन साहसके साथ, लाचारोकी रक्षाके लिए बीचमे पड जाना अपना धर्म समझना चाहिए।

अब मै पत्र-लेखकके सामान्य प्रश्नको लेता हूँ। यदि हमने आत्मविश्वास नही खो दिया होता तो यह प्रश्न उठता ही नही कि एक मामूली मनुष्य क्या कर सकता है। कोई भी मनुष्य इतना तुच्छ नही है कि सकटमे पडे हुए किसी प्राणीकी सहायता न कर सके। इसके लिए पहलेसे शिक्षा लेनेकी जरूरत नही होती। जिसमे इच्छा हो, और साथ ही पूरी हिम्मत भी हो, ऐसे प्रत्येक मनुष्यमे पीडितोकी सहायता करनेकी शक्ति होती ही है। पत्र-लेखक अपने गाँवकी हरिजन-बस्तीमे जाकर अनेक प्रकारसे उनको अपना मित्र तो बना ही सकता है। जबतक वह गाँवमे रहे, वह हरिजन-बच्चोको पढा सकता है। उसकी अनुपस्थितिके दौरान क्या होगा, इसका भय करनेकी उसे जरूरत नही है। केवल लिख-पढ सकनेके योग्य हो जानेसे ही शिक्षाकी समाप्ति नही हो जाती। हरिजनोके लिए इसके अन्य अनेक अर्थ है। बालकोको बारहखडी रटवानेसे पहले उन्हे सभ्यता और स्वच्छताका पाठ अवश्य पढाना चाहिए। पत्र-लेखक हरिजन बच्चोको घुमानेके लिए ले जा सकता है, निर्दोष और शिक्षा-प्रद खेल सिखा सकता है, हरिजनोके मकानोको झाड-बुहार कर साफ कर सकता है, और चिकित्साकी सुविधा प्रदान कर सकता है, वह सावधानीके साथ उनकी आर्थिक सामाजिक और दूसरी आवश्यकताओको लिखकर अपने जिले या प्रान्तके हरिजन-सेवा सघ तक कार्य-विवरण पहुँचा सकता है, और इस तरह हरिजनो और सेवा-सघके बीच सम्बन्ध स्थापित करनेमे वह अपनेको एक कडी बना सकता है। एक मनुष्य कितना काम कर सकता है, इसकी सम्पूर्ण सूची तो मैने यहाँ नही दी है। मैने तो कुछ उदाहरण ही बताये है। चतुर सेवक इस कार्य-सूचीको चाहे जितना बढा सकता है। “जहाँ इच्छा हो, वहाँ मार्ग भी निकल ही आता है।”

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १४-१०-१९३३

१०४. पत्र : सी० एफ० एन्ड्रचूजको

सत्याग्रह आश्रम, वर्धा
१४ अक्टूबर, १९३३

प्रिय चार्ली,

तुम्हारा तार मिला था जिसका मैंने निम्नलिखित जवाब भेजा था

तुम्हारा तार मिला। आशा है गुरुदेव शीघ्र ही स्वस्थ हो जायेंगे। सप्रेम। मोहन।

हेल्सने मुझे पत्र लिखा था कि मुझे तुरन्त मिदनापुरके लिए रवाना हो जाना चाहिए, और मै समझता हूँ कि उसने मेरे जवाबकी प्रतीक्षा किये बिना ही वह पत्र प्रकाशित कर दिया। उसको जो जवाब[1] मैंने लिखा है उसकी प्रति तुम्हारे सूचनार्थं यहाँ सलग्न कर रहा हूँ।

तुम जानते हो कि डाक्टरोने जितना आराम बताया है वह मै ले रहा हूँ और ७ नवम्बर तक मै यहाँसे नही निकलूँगा। मेरा वजन बराबर बढा है और ब्लड-प्रेशर बराबर घटता गया है।

मैंने सी० यू० प्रेसको[2] कह दिया है कि अहिसावाला अश वह छाप ले, इसमे मुझे कोई आपत्ति नही है।

सप्रेम,

मोहन

सलग्न २

रेवरेड सी० एफ० एन्ड्रचूज
शान्तिनिकेतन
(बगाल)

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३७९७) से।

१. देखिए "पत्र एच० के० हेल्सको", १२-१०-१९३३।
२ अनुमानत केम्ब्रिज युनिवर्सिटी प्रेस।

१०५. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

शनिवार, १४ अक्टूबर, १९३३

भाई ठक्कर बापा,

लिखना तो था 'अजमेर', और लिखा गया 'आज मर गये'। और यह लिखनेवाला जैसा मूर्ख वैसा ही पढनेवाला भी मूर्ख रहा होगा। यदि ऐसा सोचा होता तो दुबारा पढे बिना नही रहता। मेरा "दिल्ली" नही बल्कि "कलकत्ता" लिखनेका इरादा था।[1] दिल्लीको भी कुछ दिया गया है, मै यह भी नही जानता। नी० की कथा करुणाजनक है। अध्यक्ष यदि १५ नवम्बरको दौरा आरम्भ करनेका सुझाव दे और मै न मानूँ तो इसमे भी क्या शिकायत करने जैसी कोई बात है?

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११२८) से।

१०६. सन्देश : दयानन्द अर्द्ध-शताब्दीपर[2]

१४ अक्टूबर, १९३३

ऋषि दयानन्द[3] हिन्दू-धर्मके महानतम सुधारकोमे से थे। उन्होने वेदोके अध्ययनको प्रोत्साहित किया और अन्य बुराइयोके साथ-साथ अस्पृश्यताका निर्भीकताके साथ विरोध किया।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १५-१०-१९३३

१. देखिए "एक टिप्पणी", ३०-९-१९३३।

२. यह सन्देश दिल्लीसे प्रकाशित होनेवाले उर्दू दैनिक *तेज* को भेजा गया था।

३. आर्य-समाजके संस्थापक दयानन्द सरस्वती।

१०७. बातचीत : एक खादी कार्यकर्त्तासे[1]

[१५ अक्टूबर, १९३३ से पूर्व]

भापके यन्त्रो आदिसे चलनेवाले उद्योगोके लिए हमे बहुतसे यन्त्र चाहिए। ये आज हमारे पास नही है। ये हमे विदेशसे विदेशियोकी सुविधानुसार ही मिल सकते है। ऐसे यन्त्रोको चलानेके लिए अनुभवप्राप्त कुशल व्यक्ति चाहिए। ये भी हमारे देशमे पर्याप्त सख्यामे नही है। इसलिए फिलहाल तो हमे इन लोगोको भी विदेशोसे ही लाना होगा। और तीस करोड लोगोके लिए पर्याप्त पूँजी भी हमारे पास नही है। तात्पर्य यह कि भाप आदि यन्त्रोसे चलनेवाले उद्योगोमे आत्म-निर्भर बनना यदि हमारे लिए सम्भव भी हो तो उसके लिए बहुत लम्बा समय चाहिए। और फिर यदि हिन्दुस्तानमे इस प्रचड शक्तिका उपयोग बहुत बडे पैमानेपर किया जायेगा तो इससे आजकी बेकारीमे और इजाफा होगा। कहते है कि अमेरिकामे इन विशाल यन्त्रोकी सहायतासे एक व्यक्ति ३६ गुलामो जितना काम ले सकता है। तात्पर्य यह कि एक व्यक्ति मशीनोकी मार्फत ३६ व्यक्तियोका काम करता है। यदि हिन्दुस्तानमे ऐसी स्थिति सम्भव हो जाये और यदि हम भारतकी आबादी ३७ करोड माने तो इसमे ३६ करोड व्यक्ति बेकार हो जायेगे। तात्पर्य यह कि इस देशमे एक करोड व्यक्तियोको अमेरिकाके लोगो जैसा बनानेके लिए ३६ करोड व्यक्तियोको "हारा-किरी" अथवा आत्महत्या करनी चाहिए, अथवा किसी चगेज खॉ अथवा रावणको देशके ३६ करोड लोगोका नाश करके हिन्दुस्तानको एक करोड लोगोमे बॉट देना चाहिए। इस देशमे प्रति व्यक्ति दो अथवा तीन बीघे जमीन है। इतनी जमीनसे भरण-पोषण नही हो सकता। इससे प्रत्येकको घर बैठे एक अन्य धन्धेकी जरूरत है, और वह धन्धा सहज ही चरखा है। और उसको व्यापक बनानेके लिए हमे केवल थोडी-सी पूँजीकी जरूरत है। दूसरे साधन हर गॉवमे मिल जायेगे। केवल लोगोका दृष्टिकोण बदलना चाहिए और उनका आलस्य दूर होना चाहिए। हरिजनोकी आर्थिक स्थितिका समाधान भी इसीसे होगा। यदि यन्त्र युग आयेगा तो हरिजन भी इन ३६ करोड लोगोमे शामिल हो जायेगे।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, १५-१०-१९३३

१. यह बातचीत चन्द्रशकर शुक्लके "साप्ताहिक पत्र" में "केवल चरखा ही क्यों?", शीर्षकसे प्रकाशित हुई थी।

१०८. अस्पृश्यताके छींटे

अस्पृश्यताके छींटे कहाँतक उडते है, इसका कुछ आभास हमे श्रीयुत मूलचन्द पारेखके निम्नलिखित पत्रसे होगा[१]

ऐसे अज्ञान और अज्ञानजनित वहमोमे जब अस्पृश्यता आ मिले तब यदि दुखका प्याला छलक उठे तो इसमे आश्चर्यकी क्या बात हे? इसका एकमात्र उपाय तो यही है कि हरिजन सेवकको धैर्यपूर्वक इन सभी विडम्बनाओको एक ही रोगकी निशानी समझकर उसके हलके लिए जुट जाना चाहिए। उमे इस भरवाड (अहीर)के परिवारसे मिलकर, उन्हे धीरजके साथ समझा-बुझाकर उनके अज्ञानको दूर करना चाहिए। यदि किसी ईर्ष्यालु व्यक्तिने उनके इस वहमी स्वभावका दुरुपयोग किया हो तो उसे समझानेका शान्तिपूर्वक प्रयत्न करना चाहिए। यह अनुभव हमे बताता है कि सेवकोको गाँवोमे जाना होगा और ग्रामीण लोगोके जीवनसे एकाकार होना होगा। इसके अतिरिक्त दुखी भरवाडको भी ढाढस बँधाना चाहिए, बहिष्कारके भडक उठनेकी अनावश्यकताके बारेमे उसे बताना चाहिए और उसकी रक्षाके लिए हर तरहसे तत्पर रहकर उसे अभयदान देना चाहिए।

[गुजरातीसे]
हरिजनबन्धु, १५-१०-१९३३

१०९. पत्र : मदनमोहन मालवीयको

सत्याग्रह आश्रम, वर्धा
१५ अक्टूबर, १९३३

जितनी शक्ति मुझे वापस मिली है उसे मै हाथमे लिये हुए काममे लगाता रहा, इस कारण मै आपको पत्र नही लिख सका। मेरे पास कहनेको कोई नई बात नही थी और मै जानता था कि मै कोई भी कार्य करूँगा उसे आप गलत नही समझेगे। इसलिए ऐसा मानकर कि मेरे किसी भी कार्यकी कैफियत यदि देनी जरूरी होगी तो आप उसे माँगनेमे हिचकेगे नही, मैने अपनी कैफियत आपको नही भेजी थी।

१. पत्र यहाँ नही दिया गया है। इसमें पत्र-लेखकने एक घटनाका जिक्र किया था जिसमें एक भरवाडको हरिजनोके साथ सम्पर्क रखनेके कारण मवेशियोमें रोग फैलाने और मृत्युके लिए जिम्मेदार ठहराया गया था, और उसे जातिसे बाहर निकालने की अथवा उससे भी बुरी धमकी दी गई थी।

आपके स्वास्थ्यकी, बल्कि कहूँ कि आपके अस्वास्थ्यके बारेमे, मै जानकारी रखता रहा हूँ। और यह बात मैने बहुत पहले ही अनुभव कर ली थी कि आपसे यह अनुरोध करना व्यर्थ हे कि आप यह परिवर्तन कर ले या वह कर ले। अन्य मामलोकी तरह इस मामलेमे भी आप अपना ही कानून मानते है। इसलिए मै यही प्रार्थना करके सन्तोप कर लेता हूँ कि जिस प्रभुने इतने लम्बे समयतक आपका ध्यान रखा है और आपको ऐसी शक्ति प्रदान की है जिससे भारतके युवक भी ईर्ष्या कर सकते है, वही प्रभु, जबतक उसे आपकी सेवाओकी आवश्यकता है तबतक आपकी रक्षा करता रहेगा।

मै यह पत्र आपके सबसे हालके वक्तव्यके सन्दर्भमे लिख रहा हूँ। मेरा अपना खयाल है कि अगर अखिल भारतीय काग्रेस कमेटीकी बैठक हुई तो वह बहुत बड़े बहुमतमे सविनय अवज्ञा आन्दोलनको जारी रखनेके निर्णयका समर्थन करेगी। चूँकि मेरा यह विश्वास हे, इसलिए मुझे निर्णयकी पुष्टिके लिए ऐसी कोई बैठक बुलानेका कोई कारण नही दिखता, क्योकि इस पुष्टिसे सविनय अवज्ञाकी रफ्तार तेज नही हो जायेगी। लेकिन यदि आपको ऐसा विश्वास हो कि अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी सविनय अवज्ञाको छोडकर कोई नया कार्यक्रम स्वीकार करेगी तो कोई कारण नही है कि आप बैठक बुलानेकी माँग करानेका सक्रिय रूपसे प्रयत्न क्यो न करे, और सदस्यो द्वारा बैठककी माँगकी सूचना प्राप्त होनेपर जवाहरलाल बैठक बुलानेको बाध्य है। और मै यह कहनेकी भी धृष्टता करूँगा कि यदि आप बैठक बुलानेकी माँग करवानेका निश्चय करे तो आपको बैठककी माँग करनेवाले सदस्योके साथ परामर्श करके एक निश्चित नीति और कार्यक्रम निर्धारित कर लेना चाहिए, और उसे बिना झिझके कार्यान्वित करना चाहिए। यदि यह नही किया जाता और केवल बैठक बुलाने की माँग की जाती है, तो बैठकमे महज बेसिलसिला बहस-मुबाहिसा होगा और बिना सोचे-विचारे तैयार किये गये प्रस्ताव पास किये जायेगे। ऐसी किसी भी बैठकमे मै खुशीसे शामिल होऊँगा और मुझे जो कहना है सो कहूँगा, लेकिन यदि आप अथवा कुछ जिम्मेदार सदस्य उच्चतम मशाके कारण ऐसा चाहे कि मुझे बैठकमे शामिल नही होना चाहिए तो मै खुशी-खुशी इसमे शामिल नही होऊँगा।

पडित मदनमोहन मालवीय
मसूरी

[अग्रेजीसे]

गाधी-नेहरू पेपर्स, १९३३, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

११०. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

सत्याग्रह आश्रम, वर्धा
१५ अक्टूबर, १९३३

प्रिय जवाहरलाल,

मुझे तुम्हारा पत्र मिला जिसके साथ तुमने मदुराके कृष्णमूर्तिको लिखे अपने पत्रकी नकल भेजी थी।

हेल्सको लिखे अपने उस पत्रकी[1] प्रति मैं यहाँ सलग्न कर रहा हूँ जो उनके पत्रके जवाबमें मैंने लिखा है। उनका पत्र तुमने अखबारोमें देखा ही होगा। और यह रही मालवीयजीको लिखे मेरे पत्रकी[2] प्रति। यह स्वयमें काफी स्पष्ट है।

विवाहके अवसरपर मेरी शुभकामनाएँ। उस दिन मेरी आत्मा तुम्हारे साथ होगी।

सप्रेम,

बापू

सलग्न २

[अग्रेजीसे]

गाधी-नेहरू पेपर्स, १९३३, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

१११. पत्र : स्वरूपरानी नेहरूको

वर्धा
१५ अक्टूबर, १९३३

प्रिय भगिनी,

मैं आपको पत्र नहि लिखता हू। परतु हम सब आपका स्मरण करते रहते हैं। जवाहरलालसे खबर पाते हैं। मेरी उम्मीद है कि आपको २०मी के दिन आराम रहेगा। मुझे दुःख है कि मैं वहाँ नहि आ सकता। मेरा दिल तो उस रोज वहीं रहेगा। ईश्वर आपको जल्दी आराम देवे।

आपका,
मोहनदास

गाधी-इन्दिरा गाधी पेपर्स, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय। जी० एन० ११४०६ से भी।

१ देखिए "पत्र एच० के० हेल्सको", १२-१०-१९३३।
२. देखिए पिछला शीर्षक।

११२. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

१५ अक्टूबर, १९३३

प्रिय जवाहरलाल,

यह रहा माँ के नाम एक पत्र।[1] हम सबको आशा करनी चाहिए कि उनकी तबियत इतनी अच्छी होगी कि वे समारोहमे भाग ले सके।

क्या तुमने हिन्दी रोमन लिपिमे लिखनी शुरू कर दी है।

मालवीयजीको लिखे मेरे पत्रकी एक प्रतिके साथ तुम्हे [आज][2] एक टाइपशुदा पत्र[3] भेजा जा रहा है।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी अनुप्रति (सी० डब्ल्यू० १०१०८) से।

११३. पत्र : जनकधारी प्रसादको

१५ अक्टूबर, १९३३

प्रिय जनकधारी बाबू,

बकाया पत्रोको देखते हुए मुझे आपका गत २८ अगस्तका पत्र मिला। लेकिन उसके मिलनेसे पहले भी मै अक्सर आपके बारेमे सोचता रहता था और अभी उस दिन ही मैने जमनालालजीके साथ आपकी चर्चा की थी।

आपके बच्चे इतने छोटे है कि जबतक आप और आपकी पत्नी साथ न हो तबतक उन्हे कोई सस्था अपने यहाँ नही लेगी। इसका मतलब है कि आपको वही कुछ प्रबन्ध करना होगा। पहली चीज तो यह है कि आपको विनम्र बनना पडेगा और अपनेको साधारण मजदूरके स्तरपर रखना होगा तथा अपने बच्चोको इस तरह पालना होगा कि वे आगे चलकर मजदूर बने। लेकिन मजदूरोको भी शिक्षा मिलनी चाहिए। यह शिक्षा आपको देनी चाहिए। आपकी पत्नीको भी मजदूरी करनी चाहिए। यदि आप अपने-आपको इस प्रकारके जीवनमे ढाल लेगे तो आपके दिमागपर से बहुत बडा बोझ उतर जायेगा जिससे आपका मानसिक तनाव अपने-आप कम होगा, और नये प्रकारके जीवनके उत्तेजनकारी प्रभावसे आपका अजीर्ण भी बहुत-कुछ दूर हो

१. देखिए पिछला शीर्षक।

२. साधन-सूत्रमें यह शब्द अस्पष्ट है।

३. देखिए पृष्ठ० १०२।

जायेगा। लेकिन शर्त यही है कि आप इस जीवनको हर्षपूर्वक अपनायेंगे, तब। जबतक हम लोग, जिन्होने काफी भरपूर शिक्षा पाई है, अपने जीवनमे क्रान्ति नही लायेंगे, तबतक हम भूखो मर रहे किसानोके खून-पसीनेपर जीवित रहनेवाले पराश्रयी ही बने रहेगे। आपको इस बारेमे ब्रजकिशोर बाबू और अन्य लोगोसे बात करनी चाहिए।

मै चाहूँगा कि आप इस नई विचारधारा और नये आन्दोलनके अग्रदूत हो, और फिर भी यह कोई नई चीज नही है क्योकि १९१५ मे जब मै भारत आया तब मैने इस चीजको बहुत प्रचलित कर दिया था और तबसे मै इसके अनुरूप ही रहनेका प्रयत्न करता रहा हूँ, भले ही मेरा यह प्रयत्न कितना ही अपूर्ण क्यो न हो। इसलिए आपको इसे पूर्ण बनाना है।

हृदयसे आपका,
बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५४) से।

११४. पत्र : अगाथा हैरिसनको

१५ अक्टूबर, १९३३

प्रिय अगाथा,

विट्ठलभाई पटेलके बारेमे लिखे तुम्हारे पत्रका[1] जवाब मैने समुद्री-डाकसे न देकर मूर्खता की। इसलिए यह पत्र हवाई-डाकसे भेज कर मै अपने-आपको दडित कर रहा हूँ। मुझे कहना होगा कि हवाई-डाकको मै अभी तक पसन्द नही कर सका हूँ। यह तो रईसोके विलासकी वस्तु है और इसकी आवश्यकता उन लोगोने पैदा की है जो थल, जल और आकाशपर और उनके निवासियोपर शासन करनेकी इच्छा रखते है। तुम्हे पता नही कि वि० झ० पटेलके बारेमे जैसा पत्र तुमने लिखा उस तरहके पत्रोकी मै कितनी कद्र करता हूँ। तुम्हारा सामयिक तार पाते ही मैने बोसको तार किया था और बोसने तत्परतासे उत्तर भेजा।

मुझे खुशी है कि उस सभामे भाग लेनेके लिए तुम जिनेवा गई थी। तुम्हे किसी सूचना या स्पष्टीकरणकी जरूरत पडे तो उसे मॉगनेमे सकोच मत करना। तुम्हारी आवश्यकताओका यहाँ हम लोगोको कोई पूर्वानुमान होना हमेशा सम्भव नही है।

१. अगाथा हैरिसनने इस पत्रपर यह लिख दिया था· "जब मै अक्टूबर, १९३३ में जिनेवामें थी उस समय मैं ग्लैंड (स्विट्ज़रलैंड)के एक सेनिटोरियममें विट्ठलभाई पटेलको देखने गई थी, जो कि उस समय मृत्यु-शय्यापर पड़े थे। सुभाष बोस उनकी देख-भाल कर रहे थे, और मैने इसका हाल गाधीजीको लिखकर भेजा था।"

मिदनापुरके बारेमे हेल्स, एम० पी०, को लिखे अपने पत्रकी[१] प्रति सलग्न कर रहा हूँ। रायटरके जरिये तुम्हे उस पत्रका जो स्वरूप देखनेको मिलेगा वह शायद विकृत होगा। इसलिए यह प्रति तुम्हारी जानकारी और जरूरत हो तो उपयोगके लिए है। हेल्सने अपना पत्र मेरे उत्तरकी प्रतीक्षा किये बिना अखबारोमे छपवा दिया था। तुमने उसे देखा होगा।

महादेव बेलगाँवमे है जहाँ गाडी-भर किताबोके सिवा उसके पास और कोई नही है।[२] देवदास मुल्तानमे और प्यारेलाल नासिकमे है।

पता नही तुम्हे यहाँसे कोई दैनिक या साप्ताहिक अखबार मिलता हे या नही। अगर तुम्हे या अन्य किसीको अवकाश हो तो मै आसानीसे कुछ चुने हुए अखबार भेज सकता हूँ। तुम स्वय चुनाव करना चाहो तो और बात है।

सप्रेम,

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४७१) से।

११५. पत्र : अब्बास तैयबजीको

१५ अक्टूबर, १९३३

प्रिय भुर्रर[३],

कमला देवीको नापसन्द करने और उनपर अविश्वास करनेका आपको मुझे कारण बताना होगा। मुझे सलाह देनी है, और बिना आपकी मददके मै वैसा नही कर सकता।

रेहाना[४] इधर काफी दिनोसे चुप्पी साधे हुए है।

हमीदा[५] कैसी है?

आप सबको मेरा प्यार,

भुर्रर

अग्रेजीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९५८७) से।

१. देखिए "पत्र : एच० के० हेल्सको", १२-१०-१९३३।

२. महादेव उस समय **अनासक्तियोग** का अग्रेजीमें अनुवाद करनेमें लगे हुए थे, जो बादमें **द गीता एकॉर्डिंग टु गांधी** शीर्षकसे प्रकाशित हुई थी, देखिए खण्ड ४१।

३. गाधीजी और अब्बास तैयबजी एक दूसरेको 'भुर्रर' कहकर सम्बोधित करते थे।

४. तैयबजीकी पुत्री।

५. तैयबजीकी पौत्री।

११६. पत्र : प्रभावतीको

वर्धा
१५ अक्टूबर, १९३३

चि० प्रभावती,

तेरा पत्र आज ही मिला। मुझे थोडी चिन्ता हो रही थी। वहाँ रहनेकी जबतक जरूरत महसूस हो तबतक अवश्य वही रहना। मैने तो तुझे यहाँ दौड आनेकी छूट दी है। लेकिन जहाँ रहना तेरा धर्म हो तुझे वही रहना चाहिए। मातासे अवश्य मिलना। स्वास्थ्यका ध्यान रखना। मुझे लिखा करना। मेरा वजन १०३ पौड है। ब्लड-प्रेशर १६०-१०० है। यह ठीक कहा जायेगा। खानेमे वही चलता है। कोई फेरबदल नही है। बा की आनन्दी और ओम[1] मदद करती है। २० तारीखके बाद आनन्दी, बचु और बबु जायेगी। गोपीको तेरे बिना सूना तो जरूर लगता है। मुझे भी जब तू थी तब गोपीकी चिन्ता नही थी। गोपी दीवालीमे बम्बई जायेगी। मगलवारको[2] यहाँसे रवाना होगी। नी० चुपचाप ही भाग गई है। मुझे तो उसकी दिल्ली तककी खबर है। अमला बहन यही है। वह आजकल तो ठीक काम कर रही है।

कृष्णाका विवाह २० तारीखको इलाहाबादमे होगा। प्रभुदासका विवाह यही १७ तारीखको होगा। कन्या[3] अच्छी है। प्रभुदासकी अपनी पसन्द है। मेरा खयाल है वह सुखी होगा। लक्ष्मीका पत्र आया है। तू गोपीको पत्र लिखती रहना। प्रभुदासको भी लिखना। मै जानता हूँ कि पत्र लिखनेके बारेमे तुझे कुछ कहनेकी जरूरत नही है। रोज पढनेकी आदत बनाये रखना। थोडी अग्रेजी, थोडी 'रामायण' और थोडा गणितका अभ्यास करना। 'गीता' तो है ही। सुरेन्द्र छूट गया है। वह थोडे दिनोमे यहाँ आयेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३४३४) से।

१. जमनालाल बजाजकी छोटी पुत्री उमा।

२. १७ अक्टूबरको।

३. बिजनौरके लाला लालचन्दकी पुत्री अम्बादेवी।

११७. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

सत्याग्रह आश्रम, वर्धा
१६ अक्टूबर, १९३३

प्रिय जवाहरलाल,

यह रहा जमनालालजीका त्यागपत्र[१]। यदि तुम समझते हो कि यह नही भेजा जाना चाहिए और इससे कुछ उलझन पैदा होगी तो तुम्हे इसपर कोई कार्रवाई करनेकी जरूरत नही है। और जब तुम विवाह-सम्बन्धी प्रबन्धसे निबट जाओ तब तुम अपने कारण बताते हुए इसे वापस कर सकते हो। तथापि, यदि तुम यह समझते हो कि त्यागपत्र स्वीकार कर लिया जाना चाहिए तो तुम इसे प्रकाशित कर सकते हो। मै जानता हूँ कि कोषाध्यक्षकी नियुक्ति केवल अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी ही कर सकती है। इसलिए कुछ समयके लिए कोषाध्यक्ष पदपर जमनालालजी बने रह सकते है। मुख्य बात यह है कि वह कार्यकारी समितिकी सदस्यतासे अलग हो जाये। मै समझता हूँ कि यह कदम बुद्धिमत्तापूर्ण और आवश्यक है। इस समय उनकी जो स्थिति है, उसको देखते हुए फिलहाल उनके लिए जेल जाना खतरनाक है अथात् उन सब चीजोके बिना उनका जेल जाना खतरनाक है जिन्हे अनुभवी व्यक्ति आवश्यक समझता है। लेकिन आम तौरपर योद्धा अपने स्वास्थ्यकी उतनी परवाह नही करते जितनी जमनालालजीकी शरीर रचनाको देखते हुए उनके लिए आवश्यक है, और चूंकि सत्याग्रहीके कर्त्तव्यके विषयमे उनका वही विचार है जो कि मेरा है, इसलिए जबतक काग्रेसमे वे एक जिम्मेदारीके पदपर बने हुए है तबतक उनको चैन नही मिल सकता।

जमनालालजीके त्यागपत्र देनेके सुझावको मैने किन कारणोसे स्वीकार किया वे कारण मैने तुम्हे बता दिये है।

तुम्हारा,
बापू

सलग्न : १

[अंग्रेजीसे]

गाधी-नेहरू पेपर्स, १९३३, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

१. काग्रेसकी कार्यकारी समितिसे।

११८. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

वर्धागंज

१७ अक्टूबर, १९३३

मुझे जनताको यह बताते हुए दुख होता है कि लगभग दस दिन हुए, श्रीमती नी० अकस्मात वर्धा आश्रमसे गायब हो गई है। इधर कुछ समयसे उनका दिमाग गैर-मामूली ढगसे असन्तुलित हो गया था। माता-पिता, भाई या बहन जितना प्यार दे सकते है उतना प्यार उनको दिया गया था, लेकिन स्पष्ट है कि उनका विगत भयावना जीवन उनके ऊपर हावी होकर रहा। सम्भव है कि वह अब फिरसे अपना पुराना अविचारपूर्ण, असत्यमय और भ्रष्ट जीवन बिना रही है।

मै यह सूचना नवयुवकोको यह चेतावनी देनेके उद्देश्यसे दे रहा हूँ कि वे उनको लुभानेकी कोशिश न करे और न उनके लुभानेमे आये। मै चाहूँगा कि उनके सम्पर्कमे आनेवाले लोग उनको कोई आर्थिक मदद न दे। वह अपना विवेक खो चुकी है और अगर कोई लोकोपकारी सस्था उनकी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ले तो उनका उद्धार हो जायेगा। अगर वह यह सूचना देखे तो मै चाहूँगा कि वह वे सब वादे याद करे जो उन्होने अपने-आपसे और मुझसे किये थे, और पूरे विनम्र भावसे ईश्वरसे प्रार्थना करे कि उनके ऊपर जो भूत सवार हो गया है उससे उन्हे मुक्ति दिलाये। वह जानती है कि यदि वह सच्चे मनसे प्रार्थना करेगी तो वह व्यर्थ नही जायेगी। उन्हे अपने होशके क्षणोमे ऐसे अनुभव हो चुके है।

अन्तिम बार खबर मिली थी उस समय वह दिल्लीमे थी।

[अग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, १८-१०-१९३३

११९. पत्र : सी० एफ० एन्ड्रचूजको

१७ अक्टूबर, १९३३

प्रिय चार्ली,

मेरा खयाल है, तुमने मुझे बताया था कि तुम टस्कीगीमे बुकर वाशिगटन इस्टिट्यूशन देखने गये थे। हरिजनोकी खातिर मै इस अद्भुत सस्थाके बारेमे प्रकाशित साहित्यको पढता रहा हूँ। किताबोमे उसके बारेमे जो-कुछ लिखा है क्या तुम्हारे निजी निरीक्षणसे उसकी पुष्टि होती है? क्या तुम "टस्कीगीमे मैने क्या देखा" शीर्षकसे उसका एक सक्षिप्त विवरण लिख दोगे? क्या तुम किसी रेड इडियनसे

मिले ? क्या तुम उनके बारेमे अपने विचार मुझे बता सकते हो ? सयुक्त राज्य अमेरिकाकी सरकार उनकी शिक्षा और उनके सुधारके ऊपर काफी बडी धन-राशि व्यय करती दिखती है।

सप्रेम,

मोहन

रेवरेड सी० एफ० एन्ड्रयूज
आनन्द भवन
इलाहाबाद

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३७९८) से।

१२०. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

[१८ अक्टूबर, १९३३][1]

भाई घनश्यामदास,

लिखनेका बहुत इरादा होते हुए भी मै आजतक लिख न सका। जमनालाल दर्शनाभिलाषीओसे तो खूब बचा लेते है लेकिन खतोसे कौन बचा सके ? कभी डेस्क साफ नहि कर पाता हू। क्योकि जल्दी सो जानेका भी कानून लगा दिया है। यह खत तीन बजे उठकर लिख रहा हू। अर्थ यह नहि कि इसी खतके कारण मै उठा हू। रात्रिको जहा तक जागनेकी इजाजत है उसमे भी जतु इतने सताते है कुछ काम नहि करने देते।

जवाहरलालके बारेमे तुमारा लेख पढा। अच्छा है। लिखनेमे कोई हानि नहिं हुई। एक दूसरोके अभिप्रायको दबानेकी कुछ भी जरूरत नहि हो सकती है। जहा सत्यकी हि शोधना करनी है वहा अभिप्राय छुपाना दोष बन जाता है। जवाहरलालको तो लेख भेजा होगा। अथवा भेजो। वह बहुत सीधा पुरुष है। अपनी भूल सुधारता है। मुझे, विश्वास है कि अतमे वह सत्यके पथपर ही आ जायगा। और उसीकी विचारश्रेणी योग्य होगी तो पीछे कहना ही क्या था ? समानताका अर्थ एकरूप कभी नहि हो सकता। समानताका अर्थ एकन्याय ही है। अणु और हिमालयमे ईश्वरके सामने कोई फर्क नही हो सकता है। जैसा हिमालयको ऐसे ही अणुको।

गोपी कल गई। मै ज्यादा बात तो नहि कर सका। लेकिन नित्य मेरे पास आकर बैठ जाती थी। अत्यत सरल लडकी है। यहा बहुत आनन्दमे रहती थी। सबसे बोलती थी। दीवालीके कारण मुबई चली गई। मुबईकी रोशनी भी देखना चाहती थी। दीवालीके बाद फिर आ जावे तो अच्छा होगा। वह शीघ्र तैयार हो

१ तिथिका निर्धारण गोपीके बम्बई जानेके उल्लेखसे किया गया है, देखिए "पत्र प्रभावतीको", १५-१०-१९३३।

जायगी इसमे मुझे कुछ सदेह नहि है। गजाननको मैने लिखा था उसका उत्तर उसने दिया है। गोपीसे भी खत लिखवाया था। तुमारा स्वास्थ्यके बारेमे लिखो।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च]

हरिजनके बारेमे इग्रेजीमे लिखवाऊगा। आखरमे गो [पी] रही बहुत अच्छा हु [आ]।

सी० डब्ल्यू० ७९४० से, सौजन्य घनश्यामदास बिडला

१२१. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

१८ अक्टूबर, १९३३

प्रिय जवाहरलाल,

साथमे दो मालाएँ है। वे वर-वधूके लिए आज मेरे खास तौरपर काते हुए सूतसे बनाई गई है। इनके साथ मेरे शुभ आशीर्वाद जुडे हुए है। इन्हे मेरी तरफसे उनके गलेमे डाल देना। आशा है, ये तुम्हारे पास समयपर पहुँच जायेगी।

मुझे इस बातका जरूर दुख है कि श्रीमती हठीसिहने इस सस्कारके विरुद्ध राय दी है, परन्तु मेरा खयाल है कि इन मामलोमे मै पिछडा हुआ हूँ।

दीपकके बारेमे मैने तुम्हारा कहना समझ लिया। मै सरलादेवीको जितने कोमल ढगसे लिख सकता हूँ, लिखूँगा।

तुम सबको प्यार।

बापू

[पुनश्च]

जब सब काम निपट जाये तब मै चाहता हूँ कि तुम मुझे तारसे बताओ कि माताजीने यह सब श्रम सहन कर लिया है।

[अग्रेजीसे]

ए बंच ऑफ ओल्ड लेटर्स, पृष्ठ ११२

१२२. भाषण: प्रभुदास गांधीके विवाहके अवसरपर

वर्धागंज
१८ अक्टूबर, १९३३

विवाह-संस्कार समाप्त होनेके बाद वर-वधूको सम्बोधित करते हुए गांधीजीने कहा कि यह एक अन्तर्जातीय विवाह नहीं, बल्कि अन्तर्प्रान्तीय विवाह है। सुनिर्धारित मर्यादाओके भीतर अन्तर्जातीय विवाहका समर्थन करनेमे मुझे कोई आपत्ति नहीं है, क्योकि मेरी मान्यता है कि वर्णके मूल अर्थोंमे कोई वर्ण या विभाजन नही है, और विवाहको समान वर्णके लोगोतक ही सीमित करना वर्णाश्रमकी प्रमुख विशेषता नही है।

उन्होने दम्पतिका ध्यान इस ओर दिलाया कि उनके विवाहका उद्देश्य वासनाकी तृप्ति करना नहीं है, बल्कि उनके ऊपर नियन्त्रण लगाना है। उन्होने कहा, मुझे आशा है तुम दोनों देश-सेवाको अपने जीवनका ध्येय बनाओगे और तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संयुक्त जीवन सुख, सन्तोष और उत्तरोत्तर बढ़ते हुए संयमका जीवन होगा।

गांधीजीने कहा, मुझे यह देखकर खुशी है कि वधू एक आर्यसमाजी कुलकी कन्या है। आर्यसमाजियोके साथ मेरे घनिष्ठ सम्बन्ध रहे है, हालाँकि वे जानते है कि मेरे और उनके बीच सच्चे मतभेद है। इस विवाहसे मै और वे एक-दूसरेके और निकट आये है।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, १९-१०-१९३३

१२३. पत्र: रमाबहन जोशीको

वर्धा
१८ अक्टूबर, १९३३

चि० रमा,

यदि डॉक्टर कहे कि अस्पतालमे रहनेकी जरूरत नही तो मेरी सलाह यह है कि तुम यहाँ आ जाओ। यहाँकी आबोहवा निश्चय ही अच्छी है। यहाँ बहुत लड़कियाँ हैं। तुम लक्ष्मीबहनकी थोडी मदद भी कर सकोगी और तुम्हारे हाथकी मालिश भी हो सकेगी। अन्य किसी स्थानपर रहनेकी बात मुझे पसन्द भी नही होगी और हाथकी चिन्ता भी बराबर बनी रहेगी। हाथसे अभी ज्यादा काम नही करना चाहिए। डॉक्टर वगैरहकी मदद भी तुम्हे यहाँ मिलेगी। यदि यहाँ आना बन सके तो जितनी जल्दी

बने उतनी जल्दी आ जाओ, जिससे हम साथ रह सके। यहाँ लगभग ६० व्यक्तियो की रसोई होती है। इसमे ४० से ज्यादा तो लडकियाँ है। आनन्दी, बचु और बबु आज रवाना होगी। ताराबहनको अब आ जाना चाहिए।

प्रभुदासका विवाह आज उत्तर भारतकी एक बालाके साथ हुआ। वह २४ वर्षकी है और उसका नाम अम्बा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५३५७) से।

१२४. पत्र: अमृतलाल वि० ठक्करको

१९/२० अक्टूबर, १९३३[1]

चि० ठक्कर बापा,

मै हर रोज तुम्हे एक लम्बा पत्र लिखनेकी बात सोचता हूँ और हर रोज लिख नही पाता। जमनालाल मदद कर सकते है और मुलाकातोको रोक सकते है, लेकिन पत्रोके इस बढते हुए प्रवाहको कौन रोक सकता है? चूँकि मुझे जल्दी सोना पडता है इसलिए कुछ पत्र छूट ही जाते है और इस तरह कागजोका ढेर बढता चला जाता है। मेरा काम जैसे-तैसे चल रहा है।

मै नी० के बारेमे क्या लिखूँ? मुझसे जो हो सकता था वह मैने उसके लिए किया। मेरा खयाल है उसने ईमानदारीके साथ अपनी वासनाओपर काबू पानेका प्रयत्न किया। लेकिन अपने इन प्रयत्नोमे वह नाकामयाब रही और अन्तत भाग गई। यदि वह कही डूब मरती है तो मुझे आश्चर्य अथवा दुख न होगा। यदि वह जीवित है तो मै उसके सुधरनेकी उम्मीद नही छोड़ूँगा। उसे आश्रममे फिरसे लेनेकी बातका मुझे कोई पश्चात्ताप नही है। यह मेरा कर्त्तव्य था। उसे न केवल यहाँ बल्कि साबरमतीमे भी लोगोसे बहुत प्यार-दुलार मिला। वह मुझे लिखा करती थी कि उसे ऐसा स्नेह अपने माता-पितासे भी नही मिला। उसने स्वेच्छासे अपनेपर जो थोडा बहुत सयम रखा था उसीसे सब लोग सन्तुष्ट थे। लेकिन जो कई वर्षोसे बेलगाम रहा हो वह एकाएक कैसे बदल सकता है? मै अभीतक एस० को समझ नही सका हूँ। नी० को लेकर मुझे उसमे कभी कोई दोष नही दिखाई दिया।

आगरा काण्ड बहुत अफसोसजनक है। हम जैसा बोते है वैसा काटते है। यदि तथाकथित सनातनी लोग समय रहते नही चेतेगे और मिथ्याभिमानके वश होकर भीडकी

१ पत्रके दूसरे अनुच्छेदके अन्तमें १९ अक्टूबर, १९३३ तारीख दी गई है। इसके अन्तमें गांधीजीने अपने हस्ताक्षरके साथ जो तिथि दी है वह है "वर्धा, २०-११-१९३३"। लगता है कि भूलसे मासका अंक १० के बजाय ११ लिखा गया है। यह पत्र स्पष्टत गांधीजीके मध्यप्रान्तके दौरेसे पूर्व लिखा गया था। यह दौरा ८ नवम्बर, १९३३ को आरम्भ होनेवाला था। सम्भव है, गांधीजीने पत्र लिखवाना १९ तारीखको आरम्भ किया और इसे पूरा किया २० अक्टूबरको।

मददसे गुण्डागर्दी करेगे तो हिन्दू-धर्म नष्ट हो जायेगा। हम अपने कर्त्तव्यका पालन करते रहे, यही पर्याप्त है। अन्तत ईश्वरकी इच्छा ही सर्वोपरि है। समरना और धोलकामे जो घटनाएँ हुई है वे दुखजनक ही नही बल्कि लज्जाजनक भी है। ऐसी ही छोटी-मोटी घटनाएँ यहाँ भी होती है। इस सम्बन्धमे मै 'हरिजन' मे कुछ लिखनेका इरादा रखता हूँ।[१]

'हरिजन' (का कार्यालय) मद्रास चला गया है, यह मेरे विचारमे एक अच्छी बात है। शास्त्रीकी सेवाओका पूरी तरहसे उपयोग करनेका एकमात्र तरीका यही था। कोदण्डरावने शास्त्रीके सम्मानमे एक छोटेसे उत्सवका आयोजन किया था। उत्सवमे देवधरने भाषण दिया। उन्होने भी वही बात कही। उन्होने कहा कि शास्त्री पूनामे मुरझा रहे थे और अब मद्रासमे वे खिल उठेगे। शास्त्रीने अपनेमे 'हरिजन' को चलानेका विश्वास पैदा कर लिया है। उन्हे कुछ और लोगोकी सहायता भी मिलेगी। 'हरिजन' दिल्लीसे दूर होगा, लेकिन इससे कोई असुविधा नही होगी। 'हरिजन' का हिन्दी सस्करण पहले ही दिल्लीसे निकलता है। यदि शास्त्री पूनामे रह कर 'हरिजन' को अपना पूरा समय नही दे पाते थे तो दिल्लीमे तो और भी नही दे सकते थे। उनका कष्ट मानसिक और सच्चा था। और चूँकि हम शास्त्रीकी मददसे 'हरिजन' निकालनेवाले थे इसलिए उनकी सुविधाका ध्यान रखना हमारा फर्ज था। शास्त्रीने मुझे जो पत्र लिखा है यदि मैने उसे नष्ट नही किया है तो वह पत्र मै तुम्हे भेजूँगा जिससे तुम उनके मानसिक कष्टका अन्दाज लगा सकोगे। मेरा हमेशा यह मत रहा है कि सबसे अच्छा और सस्ता अग्रेजी सस्करण मद्राससे ही निकाला जा सकता है। लेकिन यदि तुम और घनश्यामदास मेरे इस पत्रसे पूर्णतया सन्तुष्ट नही हो तो तुम शास्त्रीको सीधे पत्र लिख सकते हो और उनके आगे अपनी बात रख सकते हो।

मैने रविवार और सोमवारको विश्राम करनेकी जो बात लिखी है उसे तुम भूल समझकर दरगुजर कर सकते हो। तुम जो कार्यक्रम निर्धारित करोगे उसमे सोमवार और मगलवार शामिल कर सकते हो।

मध्यप्रान्तका यात्रा-कार्यक्रम तुम्हारे द्वारा बताये गये समयके अन्दर पूरा हो जायेगा। डॉ० खरेने मध्यप्रान्त (मराठी) के लिए कार्यक्रम पहले ही जारी कर दिया है। तुमने वह देखा होगा। वे तुम्हे भी लिखने वाले थे। सतीशबाबूने बगालसे पत्र लिखा है। उन्होने तुम्हे भी लिखा है।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११३३) से। सी० डब्ल्यू० १०४८९ से भी, सौजन्य हरिजन सेवक सघ

१. देखिए "क्रूरताकी दो कथाएँ", ३-११-१९३३।

१२५. पत्र : एच० के० हेलसको[1]

सत्याग्रह आश्रम, वर्धा
२० अक्टूबर, १९३३

प्रिय मित्र,

इस बार मै आपके इसी १८ तारीखके पत्रका जवाब लौटती डाकसे दे रहा हूँ।

आपने मुझे जैसा विनम्र माना है वैसी कोई विनम्रता मुझमे नही है। मैने अपनी सीमाओके बारेमे जो-कुछ लिखा वह अक्षरश सही है। वे बिलकुल स्पष्ट है। मै किसीके और हरएकके साथ, और निश्चय ही सरकारके साथ ऐसी शान्ति स्थापित करनेके काममे सहयोग करनेको व्याकुल हूँ जो जीवन्त और वास्तविक हो, मृत्युकी शान्ति जैसी न हो। जीवन्त शान्ति सगीनके बलपर स्थापित नही की जा सकती, और न कभी की जा सकेगी। सरकारकी योजना उस डॉक्टर जैसी है, या कमसे-कम मुझे ऐसी लगती है, जो बिना कारणका पता चलाये और उनको दूर करनेकी कोशिश किये ही एक भयकर रोगको समाप्त कर देना चाहता है। मै ऐसी किसी भी योजनामे सहयोग नही कर सकता। और लगातार ४० वर्षसे भी अधिक समय तक कभी-कभी अत्यन्त उत्तेजनात्मक परिस्थितियोके बीच अहिसात्मक जीवन बितानेके बाद भी यदि मुझे अहिसाके प्रति अपनी ईमानदारीका और अधिक सबूत देनेकी जरूरत हो तो ऐसा मान लेना चाहिए कि मै उसे सिद्ध नही कर सकता।

जहाँ तक सर्व-दलीय बैठकका आपका सुझाव है, तो मान्य मापदण्डके अनुसार मै एक असफल व्यक्ति सिद्ध हुआ हूँ, जैसाकि साम्प्रदायिक समझौता करानेके विचारसे बुलाई गई ऐसी ही एक बैठकमे[2] मैने जो-कुछ किया उससे देखा जा सकता है। इसी उद्देश्यसे भारतमे हमने जो दो अन्य बैठके बुलाई थी, उनमे भी मै इतना ही असफल सिद्ध हुआ था।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४७२ ए) से।

१. यह पत्र मामूली फेर-बदलके साथ २९-१०-१९३३ के **हिन्दू** में प्रकाशित हुआ था।

२. सम्भवत लन्दनमें हुई अनौपचारिक बैठकोमें से एक बैठक, देखिए खण्ड ४८, पृष्ठ १२८ और १६६।

१२६. पत्र : अगाथा हैरिसनको

असंशोधित

२० अक्टूबर, १९३३

प्रिय अगाथा,

तुम्हारा लम्बा पत्र मिला। मुझे पता नही कि प्रतियाँ तुमने मेरे दोनो साथियो को भेजी थी कि नही। किसी भी सूरतमे मैंने उसे एन्ड्र्यूजके पास डाकसे भेज दिया है। तुमने सोचा कि हम सब एक ही जगह होगे। लेकिन फिलहाल हम साथ नही है।

जिनेवामे तुमने शानदार काम किया। मै जानता हूँ कि तुम जहाँ भी होगी, बढिया काम कर सकती हो। लेकिन कुछ समय पहले मैंने तुम्हे जो राय दी थी वही राय मेरी अब भी है कि यदि तुम एक प्रतिनिधिकी हैसियतसे आती हो तो तुम्हारा खर्च तुम्हारे क्षेत्रके लोगोको उठाना चाहिए। लेकिन यदि तुम चीजोको अपनी आँखसे देखनेके उद्देश्यसे आओगी तो तुम्हारे खर्चका इन्तजाम यहीसे किया जा सकता है। तुम्हारा इस विशेष उद्देश्यसे यहाँ आना उपयोगी है अथवा नही, यह केवल तुम्ही तय कर सकती हो। यदि तुम्हे जरूरी लगे तो तुम्हे आना चाहिए। अगर तुम्हे जलयात्राका अच्छा अभ्यास हो तो तुम निश्चय ही बिना किसी कठिनाईके तीसरे दर्जेमे आ सकती हो और जीवनका ज्यादा नजारा देख सकती हो, क्योकि सैलून-यात्रीकी अपेक्षा एक तीसरे दर्जेके यात्रीकी हैसियतसे तुम्हे साधारण लोगोको देखनेका ज्यादा अवसर मिलेगा। यह मेरा स्वयका और उन लोगोका अनुभव है जो सभी दर्जोमे यात्रा कर चुके है।

बोसके पासपोर्टपर लगे प्रतिबन्धका जहाँतक सवाल है, मुझे पूरा विश्वास है कि सरकार फिलहाल अगर प्रतिबन्ध उठायेगी तो अपमानकारी शर्तोपर ही उठायेगी। मै तुमसे पूरी तरह सहमत हूँ कि बगालके बारेमे उनके बराबर जानकारी किसीको नही है, और यह भी जानता हूँ कि शान्ति-स्थापनामे वह बहुत मदद कर सकते है, लेकिन उनके सामने भी वे ही कठिनाइयाँ होगी जो मेरे सामने है।

मुझे श्री हेल्सको जो पत्र[१] लिखना पडा है उसकी भी एक प्रति मै तुम्हे भेज रहा हूँ। तथ्य यह है कि सरकार अपनी शर्तपर सहयोगकी माँग करती है, जो कोई भी व्यक्ति मुक्त मनसे कभी नही देता और जो कोई भी आत्मसम्मानी व्यक्ति कभी नही दे सकता।

१. देखिए पिछला शीर्षक।

तुमने अपने पत्रमे जो महत्त्वपूर्ण मुद्दे उठाये है, मेरा खयाल है उन सबका जवाब इसमे आ गया है।

हृदयसे तुम्हारा,
बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४७२) से।

१२७. पत्र : रुक्मिणी बजाजको

२० अक्टूबर, १९३३

चि० रुक्मिणी,

वहुत दिनो बाद तेरा पत्र मिला। आज प्रतिपदा है। मै एक बार फिर कहता हूँ कि नियमोका पालन करनेसे ही जीवन सुव्यवस्थित होता है। हर हफ्ते नही तो पन्द्रह दिन, हर पन्द्रह दिन नही तो हर महीने यदि तू मुझे पत्र लिखनेका नियम बनाये तो यह अच्छी बात होगी। मै तो इस आदर्शमे विश्वास करता हूँ कि हम जो कार्य करे सो नियमपूर्वक करे। कल प्रभुदासका विवाह हो गया। कन्या अच्छी जान पडती है। तुम दोनोको,

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९७०१) से, सौजन्य बनारसीलाल बजाज

१२८. एक एम० ए० की अधीरता

केरलसे एक एम० ए० पास भाईने एक लम्बा पत्र भेजा है। पत्रके सार्वजनिक महत्त्वसे पूर्ण कुछ अश[1] नीचे दिये जाते है:

पत्र-लेखकके इस कथनका मै हार्दिक समर्थन कर सकता हूँ कि "अगर हमारे देशमे अस्पृश्यता बनी रही तो मुझे या लेखकको और उनके मित्रोको शान्ति नही मिल सकती"। मेरा वह वचन भी ज्यो-का-त्यो कायम है। पर अस्पृश्यता ताकतसे अथवा कानूनसे दूर नही की जा सकती और न इन साधनोसे मन्दिर ही खुल सकते है। कुछ कानूनी फैसलोने अस्पृश्यता-निवारणमे जो बाधा डाल रखी है, उसे हटानेके लिए ही कानूनमे सशोधनकी अत्यन्त आवश्यकता है, पर यह जरूरी नही है कि इन

१ यहाँ नही दिये गये हैं। पत्र-लेखकने शिकायत की थी कि अस्पृश्यताकी बुराई अभी भी जारी है, खादी कार्यकर्त्ता हरिजन-कार्यमें कोई दिलचस्पी नही लेते, गाँववालोका रवैया हरिजनोके प्रति खराब है, और साथ ही सुझाव दिया था कि हरिजनोंमें साहस, आत्म-विश्वास आदिका भाव भरा जाना चाहिए।

दोनो विधेयकोके पास हो जानेसे ही हिन्दू-हृदयमे पैठी हुई अस्पृश्यता नष्ट हो जायेगी, और आपसे-आप सार्वजनिक मन्दिर खुल जायेगे। हिन्दू-हृदयके द्रवित होनेपर ही अस्पृश्यता नष्ट होगी। जब पूजा करनेवालोको यह पता लग जायेगा कि परमात्मा मनुष्यमात्रके साथ भेद-भावका व्यवहार नही करता और उसका उन मन्दिरोमे निवास नही है, जो मनुष्यकी धृष्टता या अज्ञानताके कारण ऐसे लोगोके लिए बन्द कर दिये गये है जो समान शर्तोपर उपासना करनेके उत्सुक है, तब तत्काल ही सार्वजनिक मन्दिरोके द्वार सर्व-साधारणके लिए खुल जायेगे।

पत्र-लेखक गुरुवायूरके मन्दिरके खोले जानेकी सारी जिम्मेदारी मेरे ऊपर डालना चाहते है। उन्हे जान लेना चाहिए कि यह किसी एक आदमीका काम नही है। ईश्वर जब चाहेगा, तभी यह मन्दिर खुल जायेगा। कार्यकर्त्ता लोग तो बस अपनी योग्यता-भर काम ही कर सकते है। वह यह भी स्मरण रखे कि केलप्पनकी प्रतिज्ञा[1] अभी समाप्त नही हुई है। वह थोडे दिनोके लिए ही कोलम्बो गये है। जेलमे होनेपर भी राजगोपालाचारी प्रार्थना द्वारा तो सेवा कर ही रहे है। केरलके महान और सच्चे सेवक श्री माधवन् नायर अब नही रहे। पर इसमे मुझे सन्देह नही कि उनकी आत्मा हमारे अच्छे-बुरे कामोको देख रही है। जबतक अस्पृश्यताके कलकसे हिन्दू-धर्म मुक्त नही हो जायेगा, तबतक उनकी आत्माको शान्ति नही मिलेगी। पत्र-लेखक विश्वास रखे कि उपयुक्त समय आनेपर और परमेश्वरकी इच्छा होनेपर केलप्पन और मै दोनो ही न सिर्फ गुरुवायूरके बल्कि और भी बहुत-से मन्दिरोके कपाट खुलवानेके लिए एक बार फिर अपने प्राणोकी बाजी लगा देगे।

खादी-सेवकोके बारेमे पत्र-लेखककी शिकायत तो सर्वथा अनुचित है। खादी-सेवामे लगे हुए लोगोसे यह आशा नही रखी जा सकती कि वे अपना सारा समय हरिजन-सेवामे लगा दे। पर मै जानता हूँ कि अधिकाश खादी-सेवकोके हृदयोमे अस्पृश्यताकी भावना नही है, और वे हरिजनोकी कुछ-न-कुछ प्रत्यक्ष सेवा कर सकनेका कोई मौका हाथसे नही जाने देते। खादी-सेवामे हरिजनोको लेनेका कोई प्रतिबन्ध नही। अन्तमे, मै कहूँगा कि खादी-सस्थाएँ सारे देशमे फैली हुई है, और उनसे हजारो हरिजन-परिवारोका पालन हो रहा है।

भारतके अनेक भागोमे [हरिजनोके प्रति] गाँववालोके रुखके सम्बन्धमे पत्र-लेखककी शिकायत अधिक ठीक है। गाँववालोकी अज्ञानता बेहद बढी हुई है। ऊँच-नीचकी भावना उनमे कूट-कूट कर भरी हुई है। गाँवोकी सख्याको देखते हुए ग्राम-सेवकोकी सख्या बहुत ही छोटी है। पर निराशाका कोई कारण नही। गाँवके लोगोमे जागृति आ रही है। वे समझने लगे है कि जो दर्जा स्वय उन्होने अपने लिए रखा है उससे अपने दूसरे भाई-बहनोको वचित रखना ईश्वरकी 'समदर्शिता' मे अविश्वास करना है। बहुत-से सेवक गाँवो और गाँवोके आसपास जो मौन किन्तु ठोस सेवा-कार्य कर रहे है, उसकी खबर इस पत्र-लेखकको शायद नही है। हरिजन-सेवाका कार्य चूँकि विशुद्ध धार्मिक है, इसलिए उसमे दिखावेके लिए ज्यादा गुजाइश नही

१ देखिए खण्ड ५२।

है। कार्यकर्त्ताओंमें जितनी ही शुद्धि और तपस्या होगी, उतना ही यह कार्य सफल होगा। कार्यकर्त्ताओंमें अगर मलिनता, स्वार्थवृत्ति या मिश्रित भावना होगी, तो जरूर ही इस कार्यको धक्का पहुँचेगा।

अब रही हरिजनोंमें प्राण-संचारण करनेकी बात। जीवन-शक्तिकी स्फूर्ति तो उनमें उसी क्षण आ जायेगी, जिस क्षण अस्पृश्यताका कमर तोड़ देनेवाला भारी बोझा उनके सिर परसे उतार लिया जायेगा। जो अनेक पाठशालाएँ इनके लिए खुली हैं और खुलती जा रही हैं, उनमें इन्हें धार्मिक और अन्य विषयोंकी शिक्षा मिलती है और मिलनी ही चाहिए। समय हमारे पक्षमें है। युग-धर्म भी हमारा साथ दे रहा है। समस्त धर्मोंपर आज विश्वके लोकमतका प्रखर प्रकाश पड़ रहा है और यह असम्भव है कि इस प्रचण्ड प्रकाशमें इन धर्मोंकी बुराइयाँ और अन्धविश्वास टिके रह सकें।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २१-१०-१९३३

१२९. . . . तो फिर भंगियोंका क्या होगा?

एक अंग्रेज मित्र भारतमें आनेवाली दो अंग्रेज महिलाओंके सम्बन्धमें लिखते हैं:[1]

> **ये दोनों चाहती हैं कि अपना "भंगी" वाला काम वे स्वयं करें, चाहे इस काममें कुछ स्थानीय सवर्ण हिन्दुओंके हाथों . . . उन्हें तकलीफ ही क्यों न उठानी पड़े। . . . स्थानीय भंगियोंके कारण वे मुसीबतमें पड़ सकती हैं, क्योंकि बहुत सम्भव है कि वे भंगी इस बातकी शिकायत करें कि उनका अच्छा धन्धा और अच्छी मजदूरी मारी जा रही है। तब इस सवालका ठीक-ठीक जवाब क्या है? मान लीजिए कि सारे भारतके हजारों और लाखों सवर्ण हिन्दू और दूसरे लोग अपना पाखाना-पेशाब स्वयं साफ करनेका निश्चय इसलिए कर लें कि उन्हें प्रायश्चित्त करना है, और इस बातका स्पष्ट प्रमाण देना है कि वे अपने-आपको भंगियोंसे अच्छा नहीं समझते, तो बहुत-से भंगियोंकी रोजी मारी जायेगी। . . . यह तो समाजके उत्तरोत्तर विकासके साथ श्रमिकोंके विस्थापित होते चले जाने की उसी पुरानी कहानीका एक नया रूप है। मुझे याद नहीं पड़ता कि इस सम्बन्धमें आपकी या किसी दूसरेकी चर्चा मैंने 'हरिजन' में पढ़ी है। . . .**

यह सच है कि एक कठिनाईके रूपमें इस प्रश्नकी चर्चा मैंने 'हरिजन' में नहीं की है, क्योंकि यह कठिनाई अभीतक सामने आई ही नहीं थी। साबरमतीमें जो आश्रम था उसमें और उसकी वर्धाकी शाखामें तथा और भी कई स्थानोंमें आश्रमवासी अपनी टट्टियाँ स्वयं साफ करते रहे हैं, और इससे स्थानीय भंगियोंको कभी भी क्षोभ नहीं

१. यहाँ केवल कुछ अंश ही दिये गये हैं।

हुआ। गुरू-गुरूमे साबरमतीमे भगी रखे गये थे और उन्हे थोडी-सी तनख्वाह दी जाती थी। दो घटेके कामके लिए उन्हे अधिक वेतन देना सम्भव नही था। और उनका काम बहुत अच्छा होनेपर भी यथेष्ट सन्तोषजनक नही होता था। न तो वे स्वच्छतासे टट्टी साफ करनेकी रीति जानते थे, और न सुगमतासे इसे सीखते ही थे।

पाखानेकी सफाईका धन्धा कुछ बहुत प्राचीन समयसे पुश्तैनी नही चला आ रहा है। अबतक मैने जितने प्रमाण इकट्ठे किये है, उनसे तो यही पता चलता है कि मुसलमानो द्वारा इस देशको जीतनेसे पहले अपने यहाँ भगीका धन्धा करनेवाले लोग नही थे। हिन्दू सामाजिक व्यवस्था ग्रामजीवनके आधारपर रची हुई होनेके कारण, तब इस तरहकी सफाईके धन्धेकी जरूरत नही थी, मगर इस समय, जबकि शहर तेजीके साथ बढते जा रहे है, टट्टियोकी सफाईका धन्धा अत्यन्त आवश्यक हो गया है। पर इसमे मेरा यह मतलब नही है कि हिन्दू-कालमे गाँवोकी सफाई आदर्श या सन्तोषजनक रूपमे होती थी। इसके विपरीत, पता तो यह चलता है कि सफाई बहुत-कुछ अव्यवस्थित ही होती थी। पश्चिममे सफाईके जिन वैज्ञानिक उपायोका विकास हुआ है और होता जा रहा है वह हाल ही मे हुआ है और बेशक है भी बहुत ही लाभदायक।

चूँकि मेरा यह मत है, इसलिए मै तो दोनो अग्रेज बहनोके इस निश्चयका स्वागत ही करूँगा कि वे अपनी टट्टियाँ खुद साफ करे। अगर मै उनके स्थानमे होऊँ, और मेरे पडोसके भगी बेकार हो जाये, तो मै उनसे दूसरे काम-धन्धे करनेको और यदि उनकी इच्छा हो तो उनसे पाखाना साफ करनेकी नीरोगी और स्वच्छ रीति सीखनेको कहूँ। वे दूसरा काम करनेको उद्यत हो या न हो, सफाईकी उत्तम रीतियाँ सीखनेको वे तैयार हो या न हो, पर वे अपने मनमे यह भाव बहुत दिनोतक नही रख सकते कि उन बहनोकी टट्टियाँ साफ करनेके लिए उनसे नही कहा गया और इस प्रकार उनकी हानि हुई, कारण, उन बहनोसे मै यह आशा रखूँगा कि वे हरिजनोकी उन्नतिके लिए दूसरे उपायोका सब तरहसे प्रयत्न करेगी। कठिनाई केवल तभी होती है, जब हरिजनोको आश्रित समझकर, या स्वार्थवृत्तिसे काम दिया जाता है। ऐसी दशामे सदा कठिनाई पडनी ही चाहिए। उदाहरणके लिए अगर मै अपने भगीके साथ कभी-कभी कुछ काम इस तरह करूँ कि उसका स्पर्श न हो, और सार्वजनिक सभाओमे कह दूँ कि अपने भगीके साथ-साथ मैने टट्टी तक साफ की है, तो इसमे हरिजनोको अपना आश्रित समझनेका भाव आ जाता है। मेरा यह काम तब स्वार्थपूर्ण होगा जब भगीके हाथो जितनी सफाई होती है, उससे अधिक साफ रखनेके लिए मै अपनी टट्टियाँ स्वय साफ करूँ और अपने भगीको सफाईकी आधुनिक रीति सिखानेमे अपना समय नष्ट न करूँ, या अधिक योग्य और अच्छी सेवाके लिए उसे अधिक वेतन न देना चाहूँ। पर जब मै अपने पडोसी भगियोंकी अनेक प्रकारसे सेवा करता हूँ, और अपनी टट्टी स्वय साफ करके उन्हे प्रत्यक्ष उदाहरण द्वारा सिखाता हूँ कि सफाईका काम कोई नीच कर्म तो है नही, बल्कि वह सम्मान-योग्य एक अत्यन्त उपयोगी धन्धा है जो सभीको सीख

लेना चाहिए, और यदि सेवा-वृत्तिसे प्रेरित होकर बहुत-से लोग इसे करने लगे, तो समाजका बहुत-कुछ हित हो सकता है, और मेरे इस कामसे किसीको असन्तोष नही हो सकता।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २१-१०-१९३३

१३०. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

वर्धा
२१ अक्टूबर, १९३३

चि० प्रेमा,

मैंने अपने किसी पत्रमे तुझे लिखा था कि मै जान-बूझकर तुझे पत्र नही लिखता ताकि धुरन्धरके[1] सभी पत्र तुझे मिल सके। लेकिन अमतुलके पत्रपरसे देखता हूँ कि तू मेरे पत्रकी आशा रखती है और वे तुझे मिल भी सकते है। मै लिखनेका विचार कर ही रहा था कि इतनेमे मुझे कल सुशीलाका[2] कार्ड मिला। इसलिए मै यह पत्र सवेरेकी प्रार्थनासे पहले लिख रहा हूँ।

मै देखता हूँ कि वहाँ तेरी गाडी ठीक चल रही है। तुझसे लिखा जा सके तो तू मुझे अपनी दिनचर्या लिख भेजना — और खाने-पीने आदिका अन्य जो ब्योरा दे सके वह भी देना।

मेरे पास फिलहाल बा, मीरा, चन्द्रशकर और नायर है। काका अभी यही है। किशोरलाल और गोमती[3] परसो चले गये। स्वामी[4] जल्द आयेगा, ताराबहन भी आयेगी। पन्नालाल,[5] नानी बहन,[6] गगाबहन,[7] अहमदाबादमे है। आश्रम हमेशाके लिए हरिजन-निवास बनेगा। उसमे उसका कार्यालय आदि होगा। यह सब तूने पढा होगा। तुझे और अन्य सब बहनोको यह अच्छा लगा होगा।

महादेवके लम्बे पत्र आते रहते है। वह बेलगाँवमे पुस्तकालय खोलकर बैठा हुआ है। दुर्गाको[8] उसके पत्र मिलते होगे। देवदास मुल्तानमे आनन्द कर रहा है, और प्यारेलाल नासिकमे है। बा [जेल जानेकी] तैयारी कर रही है।

१. प्रेमाबहनके भूतपूर्व अध्यापक।
२. प्रेमाबहनकी मित्र सुशीला पाई।
३. किशोरलाल मशरूवालाकी पत्नी।
४. स्वामी आनन्दानन्द।
५ ६ और ७. झवेरी-परिवारके लोग।
८ महादेव देसाईकी पत्नी।

लक्ष्मीबहनके[1] पास ४०से अधिक लड़कियाँ हो गई है। द्वारकानाथ[2] उसकी मददके लिए उसके पास है। नर्मदा नालवाडीमे विनोबाके पास है।

प्रभुदासका विवाह बुधवारको सम्पन्न हुआ। उसे जैसी कन्या चाहिए थी वैसी मिल गई है। २४ वर्षकी है। गुरुकुलमे पढी है। होशियार लगती है।

मेरा दौरा ८ तारीखसे शुरू हो रहा है। उम्मीद है, सब बहने आनन्दपूर्वक होगी और क्षण-क्षणका उपयोग कर रही होगी। बाकी तेरा पत्र आनेपर।

तुम सबको,

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

इस पत्रको लिखनेके बाद मैने नही पढा है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३५१) से। सी० डब्ल्यू० ६७९० से भी, सौजन्य प्रेमाबहन कटक

१३१. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

२१ अक्टूबर, १९३३

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिला था। मै तुम्हारी इच्छापर अमल कर रहा हूँ। धर्म आडे नही आयेगा। मै चाहूँगा कि तुम चिन्ता करना छोड दो।[3] तुम्हारे पास प्रेमलीला-बहनकी दूरबीनकी अपेक्षा अधिक जोरदार दूरबीन होनी चाहिए। उनकी दूरबीनसे तो राई भी पहाड जैसी दिखाई देती है। युनो[4] ग्रह याद है न?

प्रभुदासका विवाह बुधवारको हुआ। उसे जैसी कन्या चाहिए थी वैसी ही मिली है और यह उसके ही पुरुषार्थका फल है। लडकी २४ वर्षकी है और बिलकुल सादी है। वह उत्तर भारतकी है, इसलिए उसे न तो टीकेकी और न चूडीकी ही परवाह है। विवाहके समय भी उसके हाथमे चूडी न थी। अब जानकीबहनने उसे जबरदस्ती कॉंचकी चूडियॉं पहनाई है। खासी पढी-लिखी है, आर्यसमाजी है।

महादेवका (बेलगॉंव जेलसे) मुझे काफी लम्बा पत्र मिला है। यह तो एक लम्बी कविताके समान है। इस पत्रके साथ मै तुम्हे उसके कुछ अश भेज रहा हूँ।

१. लक्ष्मीबहन खरे।

२ द्वारकानाथ हरकरे।

३ वल्लभभाईने गाधीजीसे आराम करनेका अनुरोध किया था।

४ यह प्लूटो होना चाहिए, जिसका पता १९३० में लगा था।

ब्रजकिशन[1] दिल्लीमे जाकर बीमार हो गया था। बा (जेलमे जानेकी) अपनी तैयारी कर रही है। किशोरलाल और गोमती परसो चले गये। आनन्दी, बचु और बबु भी गई। किशोरलाल अकोला गया। आनन्दी लक्ष्मीदाससे मिलनेके लिए राहमे उतरनेवाली थी। लक्ष्मीदासका अभी भी कोई पत्र नही आया। यदि आनन्दी विवाह कर ले तो भी उसे आश्रममे पूरी छूट तो होगी ही।

तुम्हारा वजन कितना रहता है। तुम क्या खाते हो? दूध, दही कितना लेते हो? क्या कुछ भेजूं? मॉगे बिना तो मॉ भी खाना नही देती और फिर मॉ भी मेरे जैसी? अब सवेरेको प्रार्थनामे जानेका समय हो गया, इसलिए यही खत्म करता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २: सरदार वल्लभभाईने, पृष्ठ ३४-५

१३२. पत्र: एफ० मेरी बारको

२१ अक्टूबर, १९३३

चि० मेरी,

तुम्हारे पास कुछ जौ है इसलिए नही, बल्कि तुम्हे यदि उसकी जरूरत हो तो तुम जौ ले सकती हो। लेकिन अगर तुम्हे कब्ज हो, तो तुम्हे जौ की नही बल्कि कुछ सब्जियोकी, जैसे लौकी[2] आदिकी जरूरत है।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०११) से। सी० डब्ल्यू० ३३३७ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

१. ब्रजकृष्ण चांदीवाला।
२ साधन-सूत्रमें यहाँ देवनागरी लिपिमें 'दूधी' लिखा हुआ है।

१३३. पत्र : कोतवालको

२१ अक्टूबर, १९३३

भाई कोतवाल,

सामान्यतया यह कहा जा सकता है कि जिस व्यक्तिकी सविनय अवज्ञा आन्दोलनमे श्रद्धा है और जो उसमे लगा हुआ है उसे किसी दूसरे काममे नही लगना चाहिए। इसके विपरीत श्रद्धा होनेपर भी यदि कोई व्यक्ति पहलेसे ही किसी अन्य कार्यको अपने हाथमे लिये हुए है तो वह उस कामको अधूरा छोडकर सविनय अवज्ञा मे शामिल नही हो सकता। श्रेयानस्वधर्मो विगुण[1]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३६०५) से।

१३४. पत्र : वनमाला एन० परीखको

२१ अक्टूबर, १९३३

चि० वनमाला,

तू अब तो बिलकुल रोगमुक्त हो गई होगी। अब तू जल्दी ही आनन्दी, बचु, और बबुके पास पहुँच जाना। तू यदि स्वस्थ होती और यहाँ आ गई होती तो तू और मैं — हम दोनो ही आनन्द मनाते।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५७८२) से। सी० डब्ल्यू० ३००५ से भी, सौजन्य वनमालाबहन एम० देसाई

१. **भगवद्गीता**, अध्याय ३, श्लोक ३५।

१३५. पत्र : मोहन एन० परीखको

२१ अक्टूबर, १९३३

चि० मोहन,

तेरा पत्र मिला था। तू अब तो बिलकुल ठीक हो गया होगा। इसलिए यदि आनन्दीके साथ रहे तो अच्छा होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१८६) से।

१३६. पत्र : जयसुखलाल गांधीको

२१ अक्टूबर, १९३३

चि० जयसुखलाल[1],

तेरा पत्र मिला है।

उमियाके[2] बीमार होनेकी खबर मुझे मिली थी। मैंने जमनालालजीसे उसके बारेमे बातचीत की थी। चरखा-सम्बन्धी समस्याका समाधान तुम्हे वही करना चाहिए। तुममेसे किसीको वहांके चरखेपर कपास लोढनेके लिए उसमे आवश्यक परिवर्तन कर लेना चाहिए। केशूका पत्र इसके साथ है।

विनोद और कुसुमके पत्र मुझे भी आये थे। आशा है तुम्हारी तबियत अच्छी रहती होगी।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

प्रभुदासके विवाहके बारेमे तुमने सब-कुछ पढा होगा।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/३) से।

१. जयसुखलाल अमृतलाल गांधी, एक कांग्रेसी कार्यकर्त्ता।

२ जयसुखलाल गांधी की पुत्री।

१३७. पत्र : केशवराम एस० त्रिवेदीको

२१ अक्टूबर, १९३३

भाई केशवराम,

तुम्हारा पत्र मिला। खादी भाई हरखचन्द मोतीचन्दको उडीसा बाढ सहायता समिति, कटक, उडीसाकी मार्फत भेजना।

बापूके आशीर्वाद

श्री केशवराम त्रिवेदी
शुद्ध खादी भण्डार
नवसारी

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२२) से।

१३८. पत्र : शंकरलाल डी० परीखको

२१ अक्टूबर, १९३३

भाई शकरलाल,

तुम्हारा पत्र कुछ दिन पूर्व आया था, पर मै उसका उत्तर नही दे पाया। अब तो जवाब लिखे बिना चारा ही नही है, अत लिख डालता हूँ। वनमाला और मोहन अब बिलकुल अच्छे हो गये होगे। मेरी सलाह है कि दोनोमे से एकको भी कठलाल मत रख छोडो। नरहरिका तो एक पत्र ही विशेष रूपसे उनके बारेमे था, जिसमे उन्होने भी कहा है कि दोनो को आनन्दी आदिके साथ ही रहना चाहिए। यह वाछनीय है कि अन्य लोगोके साथ रहते हुए दोनोमे अपने भविष्यका निर्माण करनेकी आदत पड जाये। स्वस्थ-अस्वस्थ तो चलते ही रहते है। यदि ये दोनो जानेको बिलकुल ही तैयार न हो तब तो मेरे लिए मजबूरी होगी, पर उन्हे समझाकर तुम भेज सको तो तुम्हे उन्हे भेज देना चाहिए, ऐसा मेरा खयाल है। जहाँतक मेरा खयाल है वनमालाको तो आनन्दी वगैरहके साथ रहना काफी अच्छा लगा है, पर कदाचित् यह हो सकता है कि मोहनसे अभी कठलालका मोह नही छूटेगा। पर वह भोला है और तुम उसे समझा दोगे तो समझ जायेगा। नरहरि और मणिका[1] कुछ समाचार

१ नरहरि परीखकी पत्नी।

आया हो तो मुझे लिखना। तुम अभी क्या करते हो यह भी सूचित करना। तुम वैसी ही सुघडताका परिचय दे रहे हो जैसाकि मैंने अनुभव किया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० २६८५) से।

१३९. पत्र : भगवानजी पु० पण्ड्याको

२१ अक्टूबर, १९३३

चि० भगवानजी,

तुम्हारा पिछला पत्र मिल गया था, पर जवाब लिखनेके लिए समय कहाँसे निकालूँ? कच्चे और पक्के सूतके भाव लिखना तो भूल ही गया था। तुम्हारा पत्र भाई शंकरलालको भेज दिया है। उनकी राय माँगी है। वे कदाचित् तुम्हारे साथ भी बात करेंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ३६३) से, सौजन्य भगवानजी पुरुषोत्तम पण्ड्या

१४०. भेंट : 'उन्नति' के प्रतिनिधिको

[२२ अक्टूबर, १९३३ से पूर्व][1]

प्रश्न : समाज-सुधारकोंकी कोशिशोंके बावजूद सिन्धमें शिक्षित वर्गोंका जीवन-स्तर बड़ी तेजीसे बढ़ता रहा है; ऐसी परिस्थितिमें आप क्या सलाह देंगे?

उत्तर : जो लोग इसको गलत मानते हैं उनको मैं सलाह दूँगा कि वे सादा जीवन व्यतीत करें और अच्छा सोचें और अच्छे काम करें।

प्रश्न : नवयुवकोंका विश्वास है कि जबतक वे १५० से २०० रुपये महीनेतक अर्जित करनेकी स्थितिमें न हों तबतक वे विवाह करनेकी कल्पना भी नहीं कर सकते। साथ ही, ऐसे नवयुवकोंकी संख्या बढ़ती जा रही है जो सोचते हैं कि विवाहित-जीवनके दायित्व उठाये बिना ही काम-वासनाकी तृप्ति किसी-न-किसी प्रकार कर लेना बिलकुल जायज है; ऐसी मनोवृत्तिके बारेमें आप क्या सोचते हैं?

उत्तर : मैं इस मनोवृत्तिपर लज्जा और गहरे खेदका ही अनुभव कर सकता हूँ। ऐसी मनोवृत्तिका परिणाम केवल आत्मघात ही हो सकता है। इसका एकमात्र

१. यह भेंट-वार्ता इस तारीखको हैदराबाद (सिन्ध) से प्रकाशनार्थ जारी की गई थी।

उपाय यही है कि जो नौजवान इस बुराईकी भयकरताको समझते है वे स्वय अपने जीवनकी शुद्धता और सही आचरणकी मिसाल पेश करके इसका विरोध करे।

प्रश्न : आप उन युवतियोको क्या सलाह देगे जिन्हे मजबूरन कुँआरी रहना पड़ता है या जो विवाह नही करना चाहती ?

उत्तर ऐसी लडकियोको अपने छोटे-छोटे कुल-समूहो या प्रान्तोकी सीमासे बाहर निकलकर उपयुक्त जीवन-साथीकी तलाश करनी चाहिए। जितनी जल्दी हम प्रान्तीयता और जातिकी भावनाका त्याग कर दे उतना ही हमारे लिए अच्छा होगा। मेरी समझमे नही आता कि एक शिक्षित आमिल लडका या लडकी आमिल साथीकी ही तलाश क्यो करे और क्यो न वह लडका या लडकी भारतके किसी भी भागसे अपना एक उपयुक्त जीवन-साथी चुने ? शर्त इतनी ही होनी चाहिए कि उनका उद्देश्य काम-वासनाकी तृप्ति नही बल्कि आध्यात्मिक विकास और राष्ट्रीय हितवर्द्धन हो।

प्रश्न : क्या आप आमिल लडकियोको यह सलाह नही देगे कि वे आमिलवादकी दीवारोको तोड़ डाले और किसी गैर-आमिलसे विवाह करनेके लिए तैयार रहे, फिर वह गैर-आमिल लड़का कोई भाईबन्द हो या भाटिया या और किसी जातिका हो ? सिन्धियो और गुजरातियोके बीच अन्तर्विवाहके बारेमे आपके क्या विचार है ?

उत्तर इसका जवाब ऊपर पहले ही दिया जा चुका है।

प्रश्न : यदि आप मानते है कि "पुरुष और स्त्रीको आत्माभिव्यक्तिका ज्यादासे-ज्यादा अवसर दिया जाना चाहिए", तो क्या आप सलाह देगे कि युवा लड़के-लड़कियोंको एक दूसरेसे मिलने-जुलनेकी पूरी आजादी दे दी जानी चाहिए, और यह जरूरी नही है कि उनके माता-पिताको इसकी जानकारी हो या इस प्रकारके मामलोमे उनका कोई नियन्त्रण हो ? यह भी, कि क्या लड़कियोको लड़कोंकी तरह जहाँ चाहे वहाँ आने-जानेकी छूट होनी चाहिए ?

उत्तर निश्चय ही नही। मै मध्यम मार्गमे विश्वास रखता हूँ। अधिकाश लडके-लडकियोको अपने माता-पिताके निर्देशमे रहना चाहिए और उनका कहा मानना चाहिए। माता-पिताको भी अपने अभिभावकत्व या निरीक्षणमे रहनेवाले अपने लडके-लडकियोकी स्वतन्त्रताका आदर करना चाहिए और उसको बढावा देना चाहिए। देशके युवकोको यदि शुद्ध बनना है तो उन्हे कोई काम छिपाकर नही करना चाहिए।

प्रश्न : बूढे लोग कहते है कि सिन्धकी विशेष परिस्थितियोको देखते हुए पर्देका त्याग करना सुरक्षित नही है, लेकिन युवक-जन स्वभावतः पर्देकी प्रथाको अत्यन्त हानिकर समझते है और इसका विरोध करते है। युवको और बूढ़ोके बीच इस प्रश्न पर विवाद को बचानेके लिए आप क्या सुझाव देते है ?

उत्तर मुझे पर्दा-प्रथामे कभी विश्वास नही रहा। मै मानता हूँ कि यह प्रथा तेजीसे समाप्त हो रही है और जो लडकियाँ यह साहस कर सकती है कि पर्देको फाडकर फेक दे और अपने पडोसियोको दिखा दे कि उन्हे किसी प्रकारकी कोई हानि नही उठानी पडी है, वे लडकियाँ पर्देकी प्रथासे सम्बन्धित पूर्वग्रह या भयको दूर

करनेके पक्षमे सबसे समर्थ सबूत सिद्ध होगी। पर्दा फाडकर फेक देनेका यह अर्थ नही है कि लडकियाँ कही भी या सभी जगह घूम-फिर या आ-जा सकती हैं। मै तो अन्य लोगोके सामने मुखडा छिपानेकी रीतिकी बात करता हूँ जिसे मे लडकियोके आत्मविकास या आत्माभिव्यक्तिके लिए अत्यन्त हानिकारी मानता हूँ। सबसे अच्छी सुरक्षा और सबसे सुन्दर पर्दा लडकीकी अपनी शालीनता है।

प्रश्न : सह-शिक्षाके बारेमे आपके क्या विचार हैं?

उत्तर मै सुनियन्त्रित और सुचिन्तित सह-शिक्षामे विश्वास करता हूँ।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, २६-१०-१९३३

१४१. बातचीत : एक मित्रसे[1]

[२२ अक्टूबर, १९३३ से पूर्व]

जिस समय इग्लैडमे गोलमेज सम्मेलन चल रहा था उस समय तथाकथित अल्पसख्यक जातियोमे जो समझौता[2] हुआ उसके बारेमे आप जानते ही हैं। इसमे हरिजनोको भी शामिल किया गया था। उस समय मैने हरिजनोके लिए अपने प्राणोकी बाजी लगा दी।[3] एक दूरदर्शी व्यक्तिके रूपमे मैने देखा कि किसी-न-किसी प्रकारका सविधान तो बनने ही वाला है, उसके लिए यदि इस समझौतेकी योजनाको सरकार स्वीकार कर लेगी तो हरिजनोके साथ हमारा जो सम्बन्ध है वह टूट जायेगा और हिन्दू-धर्मके टुकडे हो जायेगे। हरिजन या तो हिन्दुओसे अलग एक नई जाति बन जायेगे अथवा किसी अन्य जातिसे मिल जायेगे, लेकिन हिन्दू-धर्ममे तो वे कदापि न रहेगे। मैने देखा कि यदि ऐसा हुआ तो हिन्दू-धर्मका नाश हो जायेगा। यदि छ करोड व्यक्ति धर्म छोडकर चले जायेगे तो उससे धर्मका नाश हो जायेगा सो बात नही, लेकिन उसमे निहित कारणोको लेकर उसका नाश हो जायेगा। कोई भी व्यक्ति यदि हिन्दू-धर्म छोडकर जाना चाहे तो जा सकता है, लेकिन हम सवर्णोको इसमे कारणरूप नही बनना चाहिए। अतएव प्राणोकी बाजी लगाकर भी हिन्दू-धर्मके टुकडे हो जानेसे रोकनेके अपने धर्मको मैने समझा।

जिस समय ब्रिटिश मन्त्रिमण्डलने निर्वाचक मण्डलोके सम्बन्धमे अपना निर्णय[4] दिया उस समय यद्यपि मै जेलमे था तथापि मुझे लगा कि मुझे इसका विरोध करनेकी अपनी प्रतिज्ञाका पालन करना ही होगा। इसलिए सितम्बर, १९३२ में[5] मैने आमरण अनशन किया। और आज लोग कहते हैं कि भले ही अनपेक्षित रूपसे ऐसा हुआ हो, लेकिन इससे हिन्दू-धर्मकी महान सेवा हुई। यदि आप यह मानते है कि ब्रिटिश मन्त्रि-

१ यह और अगला शीर्षक चन्द्रशकर शुक्लके "साप्ताहिक पत्र" से लिये गये है। यह लेख "मैंने हरिजन कार्य हाथमें क्यों लिया?" शीर्षकसे प्रकाशित हुआ था।

२ और ३ देखिए खण्ड ४८, पृष्ठ ३२६ और ३३१।

४. १७ अगस्त, १९३२ को; देखिए खण्ड ५०, पृष्ठ ३९३।

५ देखिए खण्ड ५१।

मण्डलके निर्णयके सम्बन्धमे मैने जो विरोध किया वह सही कदम था तो उससे अन्य सब कदम उचित है।

प्र० : क्या आप इस बातको जरा अधिक विस्तारसे समझायेगे — १९३२ के उपवास द्वारा जब आप हरिजनोको अलगसे मताधिकार देनेकी योजनाको बदलवानेमे समर्थ हो गये थे तो फिर अन्य कदम उठानेकी क्या जरूरत थी ?

उ० ब्रिटिश मन्त्रिमण्डलके निर्णयको बदलवाना तो इस उपवासका एक कारण-मात्र था। लेकिन उसके बदलनेके बाद सवर्ण हिन्दुओके कर्त्तव्य का प्रश्न उठ खडा हुआ। फलत जब सर पुरुषोत्तमदास[1] और श्री घनश्यामदास जेलमे मेरे पास आये तो मैने उनसे कहा कि ब्रिटिश मन्त्रिमण्डलके निर्णयमे फेरबदल होने-भरसे मुझे सन्तोष नही होनेवाला है। सवर्ण हिन्दुओको बहुत-कुछ करना होगा। इसके बाद मैने उस बातको प्रस्तावका आकार दिया। और यही मसविदा लगभग इन्ही शब्दोमे २५ सितम्बरकी बम्बईकी सभामे पास हुआ।[2] इसमे कहा गया है कि अबसे हिन्दू-धर्ममे किसीको भी अस्पृश्य नही माना जायेगा। मन्दिर और अन्य स्थान जितने अशो तक अन्य हिन्दुओके लिए खुले है उतने ही अशो तक हरिजनोके लिए भी खुले रहेगे। इस प्रस्तावके पास होनेके बाद जब नेतागण मुझसे मिलने आये तब मैने हरिजन नेताओसे कहा कि इस प्रस्तावके पालनके लिए मै अपने प्राण आपको जमानतके रूपमे सौपता हूँ। इसलिए मेरे लिए यरवडा मन्दिरमे रहकर भी यह काम करना आवश्यक हो गया। इस उपवासके बाद जेलके बन्द दरवाजोको खुलवानेके लिए मैने सरकारसे जो पत्र-व्यवहार किया उसमे लिखा कि मुझे सवर्ण हिन्दुओको उनके कर्त्तव्यके प्रति जाग्रत करना होगा और इसके लिए उनके और मेरे बीच कोई सम्पर्क न रहनेसे काम नही चलेगा। इसके फलस्वरूप सरकारने मुझे जेलमे रहते हुए हरिजन-कार्य करनेकी पूरी छूट दी।[3] बादमे जब मैने हरिजन-सेवकोमे मलिनता देखी तब मुझे सहज ही २१ दिनोका उपवास रखना पडा और अगस्तमे पुन जेलमे जानेपर मैने पहले जैसी कामकी सुविधाएँ माँगी और जब वे नही मिली तो आठ दिनका और उपवास करना पडा।

प्र० : क्या आप इस मलिनताका खुलासा दे सकते है ?

उ० यह उपवास सेवकोकी शुद्धिके लिए था। शुद्धिके लिए उपवास कब आवश्यक होता है, इसका एक उदाहरण मैने 'हरिजन' मे दिया है,[4] यह आप उसमे देखेगे। यदि हममे ऐसी मलिनता भर जाये तो धार्मिक सुधार करोडोके जनसमूहमे व्यापक नही हो सकता, अस्पृश्यता रूपी जो अधर्म हमारे गाँवोमें गहरे पैठ गया है उसे नही निकाला जा सकता। उपवासके निर्णयपर पहुँचनेमे मेरे हृदयमे जो महा मथन हुआ, जिन भयकर झझावातोसे मुझे गुजरना पडा इसका वर्णन तो मै दे चुका

१. सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास।
२. देखिए खण्ड ५१, पृष्ठ १४८-९।
३ देखिए खण्ड ५१, पृष्ठ ३५६-७, पाद-टिप्पणी १।
४. देखिए "उपवास कब आवश्यक होता है?", २७-१०-१९३३।

हूँ। मलिनताकी जो घटनाएँ मेरे देखनेमे आईं उन सबका जिक्र मैंने 'हरिजन' मे नही किया है। उपवासके दौरान और उसके बाद कितनी ही अन्य चीजे मेरी जानकारीमे आई। कितने ही हरिजन-सेवक जाग्रत हुए और उन्होने कहा कि हम लोग तो यह मानते थे कि हम बिलकुल शुद्ध है, लेकिन हममे निहित दोष अब हम देख सकते है। एक ओवरसीयरने मजदूरोसे पैसा लिया था, उसकी स्वीकारोक्तिको तो मैंने प्रकाशित किया ही है।[1] यदि मै सब किस्से कहने लगूँ तो 'हरिजन' के पृष्ठोसे दुर्गन्ध आने लगे, इसलिए मैंने उन्हे प्रकाशित नही किया। दुनिया शुद्ध हो, इसकी चिन्ता हम न करे लेकिन जिन लोगोने इस धार्मिक कार्यके लिए अपने प्राण अर्पण कर दिये है उन्हे तो अवश्य ही शुद्ध रहना चाहिए, ऐसी अपेक्षा हम जरूर करते है। हिन्दू-धर्ममे तो उपवास अत्यन्त सामान्य चीज है, लेकिन अन्य धर्मोमे भी शुद्धिके लिए उपवासका निर्देश किया गया है।

प्र० : आपने विधान-सभामे मन्दिर-प्रवेश विधेयक[2] पास करवानेके प्रयत्न किये और इस सिलसिलेमे आपने राजाजीको दिल्ली भेजा, इससे बहुत सारे लोगोको ऐसा लगता है कि आपने कांग्रेसके असहयोग सिद्धान्तका उल्लंघन किया है। क्या आप इसपर कुछ प्रकाश डालेंगे?

उ० — कांग्रेसके सिद्धान्त उसके कार्यको मदद देनेके लिए है। आपको यह मालूम है न कि १९२१ मे जिस समय असहयोग आन्दोलन पूरे जोरपर था उस समय उत्कलके एक कांग्रेसीने यह सोचकर पैसे खाये थे कि चूँकि कांग्रेसने अदालतोका बहिष्कार किया है इसलिए वह उसपर मुकदमा नही चलायेगी। मेरे पास जब यह खबर आई तब मैंने तार किया कि उस व्यक्तिको गिरफ्तार करवाया जाये। कांग्रेसके नियम ऐसे तो नही हो सकते जिससे उसके ध्येयको ही नुकसान पहुँचे। मन्दिर-प्रवेशके बारेमे मैंने देखा कि इसमे कानूनी बाधा है, उसे दूर करवाये बिना यदि काम न चले तो उसे दूर करवानेका प्रयत्न करना चाहिए और यदि किसी अदूरदर्शी व्यक्तिको इसमे कुछ विरोधाभास दिखाई दे तो हम उसे सहन करे। एक ग्रेन विष ले अथवा ३० ग्रेन ले, क्या इसमे कोई भेद नही है? औषधिका उपयोग दर्द मिटानेके लिए होता है, आत्महत्या करनेके लिए नहीं। जिन लोगोने बम्बई प्रस्तावको पास किया है उनका तो यह कर्त्तव्य है कि हरिजनोपर लगे प्रतिबन्धोको दूर करवानेके लिए यदि उन्हे कानूनकी सहायता लेनी पडे तो भी वे ले, यह बात प्रस्तावमे स्पष्ट है। इस प्रस्ताव पर अपनी सहमति देनेवाला व्यक्ति इस विधेयकका विरोध कैसे कर सकता है? अथवा विधान-सभाके सदस्योकी मदद लेनेमे कैसे हिचकिचा सकता है? हमने सहयोग दिया नही वरन् लिया है। और मान लीजिए कि कल सरकार सम्पूर्ण मद्यनिषेधका कानून बनाती है तो क्या हम उससे यह कहेगे कि हमे ऐसा कानून नही चाहिए?

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, २२-१०-१९३३

१ देखिए खण्ड ५५, पृष्ठ ३३५।

२. इसे विधान-सभामें रंगा अय्यरने पेश किया था, देखिए खण्ड ५३, पृष्ठ १५-६, पाद-टिप्पणी ३।

१४२. हरिजनोंके लिए सीटे[1]

[२२ अक्टूबर, १९३३ से पूर्व]

हरिजन मताधिकारका अच्छा उपयोग नही कर सकते और वे राष्ट्रहितको नही समझ सकते, ऐसा कहना तो लोकतन्त्रके सिद्धान्तपर कुल्हाडी मारनेके समान है। साम्राज्यवादी हमसे कहते है कि तुम लोग लोकतन्त्रके लायक ही नही हो, तुम्हे मताधिकारका उपयोग करना आ ही नही सकता। यह बात भी उन्हीके कथनके समान है। हमसे भूले तो होगी ही। भूलोके बीच ही हम आगे बढेगे। लेकिन इससे क्या यह कहना उचित है कि हमे मताधिकार ही नही मिलना चाहिए? जब हरिजन लोग मताधिकारका उपयोग करने लगेगे तब उन्हे उससे शिक्षा मिलेगी। वे लोग राष्ट्रहितको नही समझते, यह कहना भी ठीक नही है। ये लोग हमारी वोटोसे ही चुने हुए लोग होगे। हरिजनोकी प्रत्येक सीटके लिए हरिजन चार व्यक्ति चुनेगे और इनमे से एक व्यक्तिको हमे चुनना होगा। क्या इन चारोमे से हमे एक भी राष्ट्रहित करनेवाला व्यक्ति नही मिलेगा? और यदि नही मिल सकता है तो इसमे भी हमारा ही दोप है कि हमने इनकी इतनी ज्यादा उपेक्षा की है। हमारे लिए शुद्ध मार्ग यही है कि हम इन्हे अपनाये, इनकी सेवा करे और इनके दिलोको जीत ले। उनके प्रति अविश्वासको लेकर काम नही चल मकता।

[गुजरातीसे]
हरिजनबन्धु, २२-१०-१९३३

१४३. उत्तर: पत्र-लेखकोंको[2]

[२२ अक्टूबर, १९३३ से पूर्व]

स्वजनकी अमर स्मृति[3]

तुम्हारे दुःखमे पूर्णतया भागीदार हूँ। मेरे अनेक मित्रोकी भी ऐसी ही स्थिति हुई है, इसकी याद मुझे तुम्हारे पत्रसे हो आई है। लेकिन मैंने अनुभवसे यह जाना है कि प्रियजनके प्रति हमारा जो प्रेम होता है वह उनकी देहको लेकर नही अपितु उस देहमे वास करनेवाले अमर तत्त्वको लेकर होता है। अनेक वर्ष बीतनेपर भी तुम्हारे

१ यवरडा समझौतेके अन्तर्गत हरिजनोके लिए जितनी सीटे सुरक्षित की गई थी उसपर बहुत आलोचना हुई थी। गाधीजीने आलोचकोको उपर्युक्त उत्तर दिया था।

२ यह लेख "डाकके थैलेसे" शीर्षकसे प्रकाशित हुआ था।

३. यह एक पत्र-लेखकके उत्तरमें लिखा गया था। अपने पत्रमें उक्त पत्र-लेखकने अपनी पत्नीकी मृत्युका जिक्र किया था और गाधीजीसे पूछा था कि वह बिना किसी दुःखकी छायाके अपनी पत्नीकी स्मृतिको अपने हृदयमें कैसे बनाये रख सकता है, जिससे कि वह उसके लिए आनन्दका स्रोत बन सके।

हृदयमे तुम्हारी पत्नीकी स्मृति धूमिल नही पडेगी अपितु वह अधिक दृढ और अधिक समृद्ध होगी। इस विचार ही से तुम्हारा दुख दूर हो जाना चाहिए और तुम्हारा हृदय आनन्दसे भर उठना चाहिए, और इस बातका भी सच्चा ज्ञान होना चाहिए कि ससारमे क्या सार है और क्या असार है। यदि एक व्यक्तिके अनुभवमे दूसरा व्यक्ति भागीदार हो सकता है तो जिस प्रकार मै तुम्हारे दुखमे भागीदार बन रहा हूँ, तुम मेरे अनुभवके भागीदार बनो, ऐसी मेरी इच्छा है।

मृत्युका उपहार[1]

यदि तुम्हे (इस ससारसे) विदा होना पडे तो अपने घर जाना है, ऐसा समझकर शान्तिपूर्वक हृदयमे भगवानका नाम अकित करके इस ससारसे विदा होना। और यदि ईश्वरने इस देहमे ही तुमसे कोई सेवा लेनी हुई तो वह तुम्हे स्वस्थ कर देगा।

आश्रमका उत्तम उपयोग

मैने सत्याग्रह आश्रमको हमेशाके लिए हरिजन सेवार्थ अर्पित कर दिया है। मुझे लगता है कि यही इसका उत्तम उपयोग है। सरकारने इसका कब्जा नही लिया, इसलिए इसका इससे अच्छा उपयोग और कोई हो ही नही सकता था। सम्पूर्ण त्याग की बात भी इसमे आ सकी। आश्रमके समस्त आदर्शोकी जॉच करनेपर यहॉ तो सबको इसका यही उपयोग सर्वोत्तम जान पडा। इसके लिए विशेष समिति नियुक्त की जायेगी। इसमे हर कोई हरिजन नही रह सकेगा। लेकिन जो रहना चाहेगे उन्हे आश्रमके नियमोका पालन करना होगा। यदि आश्रमवासी 'अनिकेत' और 'येनकेन चित्त सन्तुष्ट' रहे तो इसमे मुझे कोई दोष दिखाई नही देता। जब सब कार्य सम्पन्न हो जायेगा, तब भले हम नये आश्रमकी स्थापना करे, यही शोभनीय भी है।

एक हरिजन-सेवकके प्रश्न[2]

अनेक हरिजन-सेवक अपना पेट भरनेसे ज्यादा पैसा लेते है, यह बात मै माननेके लिए तैयार नही हूँ। कितने ही कार्यकर्त्ता तो कुछ भी नही लेते। "भारी वेतन"से तुम्हारा क्या अभिप्राय है, सो मै नही जानता। जो कार्यकर्त्ता अपनी खुराक और कपडेकी जरूरत जितना ही लेता है उसे मै उत्तम प्रचारक कहता हूँ। हमारे जैसे गरीब देशमे हमारे पास ऐसा फुर्सतवाला वर्ग ही नही है जिसमे से हमे राष्ट्रीय सेवक प्राप्त हो सके।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, २२-१०-१९३३

१. यह एक ऐसी स्त्रीको लिखा गया था जो मृत्युशय्या पर पड़ी थी।

२. हरिजन कार्यकर्त्ताने निम्नलिखित शिकायतें की थीं १. मन्दिर काफी तादादमें नही खोले जा रहे है। २. ये हरिजन-सेवक भारी-भारी वेतन लेते है। ३. खादी कार्यकर्त्ता हरिजन-कार्यमें रुचि नही लेते। ४. गाँवोमें तो अज्ञान और वहमने घर कर रखा है।

शिकायत सख्या १, ३ और ४ के सम्बन्धमें गाधीजीके जवाब यह नही दिये गये है, क्योंकि उनसे सम्बन्धित विस्तृत जवाब "एक एम० ए० की अधीरता", २१-१०-१९३३ में आ जाते है।

१४४. नगरपालिकाओं आदिके सम्बन्धमे

एक सज्जन, नगरपालिका, लोकल बोर्ड आदिके सम्बन्धमे निम्नलिखित सुझाव[1] देते है

मुझे लगता है कि यह सुझाव निश्चय ही विचारणीय है। नगरपालिकाएँ भले ही ऐसे सुझावको कार्यान्वित न करे, लेकिन जहाँ स्थानीय हरिजन सेवक सघ जिम्मेदारी लेनेको तैयार हो वहाँ मकान और फर्नीचर आदि सही सलामत रखनेकी शर्तके साथ स्कूलके समयसे अतिरिक्त समयमे हरिजनोको उसका [स्कूलकी इमारतका] उपयोग बिना भाडेके करने दिया जाये। इससे भाडा भी बचेगा और हरिजन अच्छे और सुविधाजनक मकानोका उपयोग भी कर सकेगे।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, २२-१०-१९३३

१४५. कुछ नैतिक प्रश्न

जिन सज्जनने नगरपालिकाओ आदिसे सम्बन्धित सुझाव दिये है उन्होने ऐसे प्रश्न पूछे है जो समस्त सेवकोके लिए उपयोगी है। प्रश्न निम्नलिखित है।[2]

इन प्रश्नोका मै यहाँ क्रमसे उत्तर दे रहा हूँ

(१) जो व्रत लेना हो उसे स्पष्ट भाषामे लिख लेना चाहिए। उस समय यदि कोई साक्षी मिल जाये तो व्रत उसकी उपस्थितिमे लेना चाहिए। भविष्यमे भी प्रसग

१. यहाँ नही दिया गया है। सुझाव यह था कि नगरपालिकाओंको हरिजनोंके लिए रातको स्कूल चलाने चाहिए और उन्हें आर्थिक सहायता देकर प्रोत्साहित करना चाहिए।

२ प्रश्न यहाँ नही दिये गये है। पत्र-लेखकने पूछा था•

(१) व्रत लेनेसे पूर्व किन बातोंपर विचार किया जाना चाहिए और क्या उनमें बादमें फेरबदल किया जा सकता है?

(२) क्या प्रार्थनाका समय निश्चित रूपसे सवेरे उठनेके तुरन्त बाद और सोनेसे ठीक पहले ही हो सकता है? कोई मनुष्य लम्बे समयके लिए एकाग्रचित्त कैसे हो सकता है?

(३) दैनन्दिनी लिखनेका सबसे अच्छा तरीका कौन-सा है, जिससे कि वह भविष्यमें मार्गदर्शकका काम कर सके?

(४) आप अपनी बात सूत्रोंमें कह देते है जिसके कारण अनेक बातें अस्पष्ट रह जाती है। एकाग्रचित्त स्थितिको प्राप्त होनेके लिए मनुष्यको क्या निश्चित कदम उठाने चाहिए?

(५) **गीता** के १२ वें अध्यायके १९ वें श्लोकमें पूर्ण सन्तोषकी बात कही गई है। क्या पूर्ण सन्तोष किसी प्रकारकी शर्त पर निर्भर करता है?

उपस्थित होनेपर उसका कडा अर्थ करना चाहिए, शिथिल नही। और यदि ऐसा प्रतीत हो कि उसे हलका करनेकी दृष्टिसे कुछ रह गया है तो ऐसी कोई सुविधा उसमे नही जोडी जानी चाहिए। मान लो कि मैने व्रत लिया कि मै शराब कभी नही पीऊँगा। इसमे देशकी बात नही बताई गई। मै विलायत गया। किसीने आरोग्य की दृष्टिसे शराब पीनेका आग्रह किया। इसपर मै यह नही कह सकता था कि व्रत लेते समय मै हिन्दुस्तानमे था इसलिए मेरा यह व्रत केवल हिन्दुस्तानके लिए ही है, और इसलिए विलायतमे शराब लेनेकी मुझे छूट है। न उसमे दवाका ही उल्लेख था, इसलिए दवाके रूपमे भी मुझे उसे लेनेकी छूट नही हो सकती।

(२) प्रार्थनाका समय भी अन्य प्रवृत्तियोके समान ही निश्चित होना चाहिए। फिर यह समय चाहे कभी भी क्यो न निश्चित हो, इसकी कोई चिन्ता नही। सोनेसे पूर्व और सवेरे उठनेके बाद दातुन आदि करनेके बाद प्रार्थनाका समय रखना उत्तम है। सवेरे उठनेका समय भी निश्चित करनेकी आवश्यकता है। चित्तकी एकाग्रता किसीको भी एकदम उपलब्ध नही होती। "रसरी आवत जात ते सिलपर परत निसान" इस न्यायसे नियमित रूपमे प्रार्थना करते-करते एकाग्रता स्वयमेव आ जायेगी। जबतक वह प्राप्त न हो जाये तबतक चिन्ता छोडकर धैर्यपूर्वक नित्य प्रार्थना करनी चाहिए। "कदी नही हारना भावे साढी जान जावे।"

(३) दैनन्दिनी लिखनेका नियम बनानेके बाद फिर उसे कभी छोडना नही चाहिए। इसका लाभ तुरन्त नही तो बादमे अवश्य मालूम पडेगा। दैनन्दिनी लिखनेकी आदत ही हमे अनेक दोषोसे बचा लेगी, क्योकि वह हमारे दोषकी साक्षी रूप रहेगी। उसमे अपने किये दोषोका उल्लेख होना ही चाहिए। उसपर टीका करनेकी कोई जरूरत नही है। उसमे टीका निहित ही रहती है। "आज 'ब'पर क्रोध आया", "आज 'क'को धोखा दिया", इतना उल्लेख पर्याप्त है। "यह बहुत बुरा हुआ", "अरे मन अब ऐसा न करना" आदि-आदि लिखनेकी कोई जरूरत नही। उसमे आत्मप्रशसा परक शब्द लिखनेकी कतई आवश्यकता नही। किये हुए कामका और दोषोका उल्लेख भर होना काफी होगा। दूसरोके दोषोका उल्लेख अपनी दैनन्दिनीमे कदापि नही होना चाहिए।

(४) यह प्रश्न समुचित नही जान पडता। 'गीता'की अथवा मेरी भाषा सूत्र-रूप नही है। 'गीता'की भाषाके साथ मेरी भाषाकी तुलना नही की जा सकती, और यह शोभा भी नही देता। 'गीता'की भाषा यदि मुझे आती हो तो मुझे अच्छा लगेगा, लेकिन मै उससे दूर हूँ। हमे जिस विषयका ज्ञान कम होता है उसके बारेमे हम जो भी पढते है वह हमे सूत्र रूप ही जान पडता है। शास्त्रीय भाषा यानी विषयके प्रतिपादनके लिए पर्याप्त भाषा। जो लोग इसे नही जानते उन्हे यह सूत्र रूप लगती है। यह अलग चीज है और पतजलिके सूत्र अलग। पतजलिके सूत्रोमे तो बहुत अध्याहार होते है। 'गीता'के बारेमे ऐसा नही कहा जा सकता। अपितु गीताकारने 'गीता'मे पुराने शब्दोको नये अर्थमे प्रस्तुत किया है, इसीसे उसे समझनेमे कठिनाई होती है। मेरी भाषा सक्षिप्त होती है, इतना गुण उसमे अवश्य है। लेकिन

वह अपूर्ण है, जबकि 'गीता' की भाषा पूर्ण है। जब मै यह कहता हूँ कि मेरी भाषा अपूर्ण है तो मेरे कहनेका तात्पर्य यह नही कि मेरा भाषापर अधिकार कम है, हालाँकि अधिकार भी कम ही है। यहाँ तो ऐसा ही समझना चाहिए कि मेरे विचार अपूर्ण है, इससे मेरी भाषाको समझनेमे कठिनाई तो होगी ही। जब मेरे विचार पूर्ण होगे तब मै उन्हे इस रूपमे प्रस्तुत करूँगा कि उन्हे समझनेमे आसानी होगी। अपनी भाषाका इतना दोष स्वीकार करनेके बाद मै इतना अवश्य कहूँगा कि कितने ही पाठक उसे समझनेका पूरा प्रयत्न नही करते, इसीसे पूर्ण रूपसे व्यक्त किये गये विचारोको भी वे नही समझते और बादमे मुझे दोष देते है। जैसे कि हम उक्त पत्र-लेखकके दृष्टान्तको ही ले। कातनेकी क्रिया चूकि प्रत्यक्ष है, इसलिए इसे प्रत्यक्ष बनाया जा सकता है। चित्तकी व्यग्रता अप्रत्यक्ष वस्तु है। "अभ्यास करनेसे व्यग्रता दूर होगी" ऐसा कहना अपने-आपमे पूर्ण है। उसे प्रत्यक्ष रूपसे बतानेका हमारे पास आज तो कोई साधन नही है। यदि हम किसी दिन विचारोको भी रेखाचित्रोमे व्यक्त करना सीख सकेगे तो कातनेके समान इस 'अभ्यास' का भी प्रत्यक्ष चित्र खीचा जा सकेगा। अभी तो यही कहा जा सकता है कि धैर्यपूर्वक प्रार्थना करते रहनेमे व्यग्रता अवश्य दूर होगी। इसमे अभ्यासीकी सत्यता अथवा सत्यपरायणतापर निर्भर करना पडता है। जो मनुष्य प्रार्थनाका आडम्बर करता हो और व्यग्र रहता हो उसे कौन जान सकता है? अथवा जो रोज अपने-आपको धोखा देता हो, और रोज प्रार्थनाके समय अनेक घोडे दौडाता हो उसे कौन टोक सकता है? इसलिए अभ्यासकी सफलता केवल अभ्यासी की प्रामाणिकतापर ही निर्भर करती है। कातनेकी क्रियामे यदि अप्रामाणिकता हो तो वह प्रत्यक्ष देखी जा सकती है, अत उसे कातनेवालेको बताया जा सकता है।

(५) 'सन्तुष्टो येनकेनचित्'—का अर्थ यह नही कि आलसी मनुष्यको जो मिले उससे वह सन्तोष मान ले। इसमे सतत और ईमानदारीसे उद्यम करनेपर भी जो मिले उससे सन्तोष करनेकी बात है। तात्पर्य यह कि पुरुषार्थ करनेके बाद भी उसका उत्तरदायित्व ईश्वरेच्छा पर है। यदि प्रयत्न सफल होता न दीख पडे तो निराश होनेकी तनिक भी जरूरत नही, गीताकारका यही कहना है।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, २२-१०-१९३३

१४६. पत्र : माधवदास और कृष्णा कापड़ियाको

वर्धा
२२ अक्टूबर, १९३३

चि० माधवदास और कृष्णा,[१]

तुम्हारा पत्र मिला। तुम दोनोंको आशीर्वाद। यह वर्ष तुम्हारे लिए सुखपूर्ण और शान्तिमय हो।

दौरा ८ तारीखको शुरू होगा।

बा को तुम्हारा पता तो मालूम ही है।

रामदास मजेमें है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२२) से।

१४७. पत्र : कान्ति एन० पारेखको

२२ अक्टूबर, १९३३

चि० कान्ति,

तेरा पत्र पढ़कर बहुत खुश हुआ। तुझे और जयन्तीको इस वर्षके लिए आशीर्वाद। तुम दोनों अधिक सेवापरायण बनो और दीर्घायु हो।

प्रभुदासका विवाह यहाँ बुधवारको सम्पन्न हुआ। कन्या बिजनौरकी है और सादगीमें प्रभुदाससे बढ़कर है, मेहनती है, अच्छी जान पड़ती है। वह बहादुर है, उसे सेवा करना पसन्द है। उसे शौक किसी चीजका नहीं है। रामदासकी गाड़ी ठीक चलती है। केशू जिनिंग मिलमें काम करने लगा है। कृष्णदास खादी विभागमें है। यहाँ ४० से अधिक लड़कियाँ हैं। सारा भार लक्ष्मीबहन और द्वारकानाथ वहन कर रहे हैं। गाड़ी ठीक चल रही है। आनन्दी, बचु और बबु अभी-अभी अहमदाबाद गई हैं। बलभद्र और धीरू जोशी भावनगरमें हैं। वहाँ वे खूब व्यस्त हैं। लगता है इन्दु टिकी रहेगी। दूधीबहन बच्चोंको लेकर भावनगरमें ही रहती है।

१. कस्तूरबा गांधीके भाई और उनकी पत्नी।

देवदासके और महादेवके पत्र आते रहते है, सरदारके तो होते ही है। आज . [1] का पत्र भी आया है। पृथुराज[2] कालीकटमे है। उसके पत्र भी आते है। उम्मीद है मणि अहमदाबाद गई होगी। स्वामी आज यहाँ आये है। किशोरलाल और गोमती बहन यहाँ रहकर वापस अकोला चले गये है।

मेरा दौरा ८ तारीखको शुरू होगा।

इस बार तो बहुत लिखा है न? प्रत्येक क्षणका सदुपयोग करना। अब भी मुझे लिखा जा सकता हो तो लिखना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

मेरे साथ मीराबहन, चन्द्रशकर और नायर होगे। फिलहाल तो बा भी साथ है। लेकिन वह थोडे दिनो बाद मन्दिर चली जायेगी।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६२७६) से।

१४८. पत्र : मणिबहन पटेलको

२२ अक्टूबर, १९३३

चि० मणि,

तेरा कार्ड मिला। मै बुधवारको तुम तीनोकी प्रतीक्षा करूँगा। बाबा आयेगा न? आशा है, तेरी तबीयत अच्छी हो रही होगी। स्वामी आज पहुँचे है। अन्य सारी बाते बुधवारको।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ४ : मणिबहेन पटेलने, पृष्ठ १०९

१. साधन-सूत्रमें शब्द स्पष्ट नही है।
२ लक्ष्मीदास आसरके पुत्र।

१४९. पत्र : गंगा तो० हिंगोरानीको[1]

वर्धा
२२ अक्टूबर, १९३३

प्रिय भगिनी,

चि० विद्याने[2] आनदपरका तुमारा खत मुझे पढा दिया है। तुमार दोनोकी चिता छोडना चाहिये। आनद और विद्या अब बालक नहि है। उनका श्रेय जो करते है वही करने देनेमे है। आनद तो तुमको मिलेगा। आनदको आशीर्वाद दीजीये। अनुचित मोह छोडो। विद्याको शातिकी आवश्यकता है। यहा उसकी प्रकृनि भी अच्छी रहती है। कुछ अभ्यास भी करनी है। सहीयर भी अच्छी मिली है। महादेव[3] भी अच्छा रहता है। उसके लिये भी चिता मत करो। बडे लडके मातापिताके साथ कहा तक रह सकते है? उनको स्वतत्रता मिलनी चाहिये। तुमको तो भगवानने धन-सपत्ति दी है। इसलिये आनद अथवा विद्याके पाससे कुछ शारीरिक सेवाकी हाजत भी नहि रहती। विद्याका तो शरीर भी सेवाके लायक नहि। वह खुद सेवाकी हाजत रखती है।

मोहनदास गांधीके आशीर्वाद

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे, सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

१५०. पत्र : एफ० मेरी बारको

२३ अक्टूबर, १९३३

चि० मेरी,

सब बडे लोगोके विचार एक जैसे होते है। मै आश्चर्य कर रहा था कि कल रात तुमने यहाँ भोजन करनेसे क्यो इनकार कर दिया। बेशक तुम दोनो वक्तका भोजन यही कर सकती हो। तरल भोजनका अजीर्णसे कोई सम्बन्ध नही है। इससे यही पता चलता है कि प्रोटीन कम होनी चाहिए। लेकिन तुम जब आओ तो मुझसे कुछ समय मिलकर जाना।

सप्रेम,

बापू

१. आनन्द तो० हिंगोरानीकी माता।
२ और ३ आनन्द तो० हिंगोरानीकी पत्नी और पुत्र।

[पुनश्च]

यदि पेट साफ न होता हो और तुम्हे अजीर्णका अनुभव हो तो तुम एक हिस्सा दूध मिला सकती हो। हाँ, शायद तीन बार खुराक लेना पर्याप्त होगा।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०१२) से। सी० डब्ल्यू० ३३३८ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

१५१. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

वर्धा
२३ अक्टूबर, १९३३

प्रिय जवाहरलाल,

मुझे दो तार मिले, एक तुम्हारा और दूसरा कृष्णा और राजाका। माँका साहस देखकर श्रद्धा होती है। उनसे पहली बार मिलनेके बादसे ही मेरे मनमे उनकी जो तस्वीर बनी है वह एक शान्त, गरिमामय साहस और त्यागकी मूर्तिमन्त व्यक्तिकी है।

एक बात मै तुम्हे लिखना बराबर भूलता रहा। अगर तुम्हे कभी लगे कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीकी बैठक बुलानी चाहिए तो उसे बुलानेमे मत हिचकना। मेरी नापसन्दगीकी परवाह मत करना। मै इसके पक्षमे नही हूँ, क्योंकि मुझे लगता है कि इससे गडबडी और भ्रम और ज्यादा बढेगा तथा इसमे शक्ति, समय और धनकी बर्बादी होगी। लेकिन मुमकिन है मै बिलकुल गलत होऊँ।

तुम सबको प्यार।

बापू

[अंग्रेजीसे]

गांधी-नेहरू पेपर्स, १९३३, सौजन्य नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय

१५२. पत्र : मीठुबहन पेटिटको

२३ अक्टूबर, १९३३

चि० मीठुबहन,

मैं तुम्हारा गुनहगार हूँ, लेकिन मैं लाचार हो गया हूँ।

तुम्हारे नमूने देख गया हूँ। इनके लिए ग्राहककी तलाश करूँगा। तुम्हारा सारा माल ले लिया जाये, ऐसी तजवीज भी करूँगा। तुमने लिखा है कि नुक्सान उठाकर भी तुम देनेको तैयार हो। सो कैसे और कितना नुक्सान उठाकर? यह मुझे बताना।

तुमने मुझसे सिफारिशी पत्र जैसी कुछ चीज माँगी थी। वह निम्नलिखित है

तुम खादी और औषधालयके द्वारा गरीबोंकी जो सेवा कर रही हो उसका इनाम तो तुम्हें ईश्वर ही दे सकता है। लेकिन तुम्हारी जैसी त्यागी बहनोंकी सेवाको देश भी कभी भूल तो नहीं सकता। देश तुम्हारी कद्र तो इसी प्रकार कर सकता है कि वह तुम जो काम कर रही हो उसका स्वागत करे, उसे अपनाये और इस तरह सेवाकी तुम्हारी शक्तिमें वृद्धि करे।

तुम्हारी मार्फत तैयार की गई खादी यदि लोगोंको मँहगी जान पड़े तो भी उन्हें मालूम होना चाहिए कि इसके लिए दी गई कौड़ी-कौड़ी गरीबोंकी ही जेबमें जायेगी। खुद तुम्हें तो उसमें से कोडी भी नहीं चाहिए। तुम्हें जो चाहिए सो ईश्वर ने दे दिया है और उससे तुम सन्तोष मानती हो, इतना ही नहीं बल्कि उसमें से भी तो गरीबोंकी सहायतार्थ खर्च करती हो।

उम्मीद है तुम्हारी तबीयत अच्छी होगी। दौरा ८ नवम्बरसे शुरू होगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

जायजी का [स]माचार और पता लिखना।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २७०६) से।

१५३. पत्र : पद्माको

२३ अक्टूबर, १९३३

चि० पद्मा,

तेरा पत्र मिला है। अभी मै दौरेमे तुझे अपने साथ नही ले जाना चाहता। अभी तू और परिपक्व तथा स्थिर बन, बादमे सयोग मिलनेपर मै तुझे अवश्य अपने साथ ले जाऊँगा। प्रभुदासके विवाहके बारेमे तो तूने पढा होगा। बहुत लोग [मिलनेके लिए] आये है, इसलिए पत्र समाप्त करता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१४६) से। सी० डब्ल्यू० ३५०१ से भी, सौजन्य प्रभुदास गाधी

१५४. पत्र : एफ० मेरी बारको[1]

वर्धा
२४ अक्टूबर, १९३३

चि० मेरी,

अगर मुझे पता होता कि नी० कहाँ है तो मै उसको तुरन्त लौट आनेके लिए तार करता। मै तलाशमे हूँ, लेकिन अभी तक विफल रहा हूँ।

प्यार।

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०१३) से। सी० डब्ल्यू० ३३३९ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

१ मेरी बारने गाधीजीसे नी० को लानेके लिए जानेकी इजाजत माँगी थी, यह पत्र इसी अनुरोधके उत्तरमें भेजा गया था।

१५५. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

२४ अक्टूबर, १९३३

प्रिय ठक्कर बापा,

इसके साथ जॉर्ज जोजेफका पत्र और उसको लिखे मेरे उत्तरकी[1] प्रति भी सलग्न है।

और इसके साथ ही वह पत्र भी है जिसमे बेचारे बापीनीडुके विरुद्ध शिकायत की गई है और मैंने उसे जो उत्तर[2] लिखा है उसकी प्रति भी।

हृदयसे तुम्हारा,
बापू

[पुनश्च]

नी० के बारेमे तुम्हारा पत्र मिला। ['नेशनल] कॉल'ने एस० और नी० के साथ घोर अन्याय किया है। मैंने सहानीको पत्र लिखा है। उसका उत्तर आज मिल जाना चाहिए था।[3]

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११२९) से।

१५६. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

२४ अक्टूबर, १९३३

तेरे क्रोधके बारेमे जब मुझे कुछ कहना उचित जान पडे तब कहे बिना कैसे छोड दूं? [4] लेकिन तुझसे जबरदस्ती माफी नही मॅगवानी है। जब मै किसी-पर जोर-जबरदस्ती नही करता तो फिर तुझपर भी क्यो करूँ? और करने जाऊँ तो तू मुझे सहन भी कैसे कर सकता है? लेकिन जहाँ मुझे कहना चाहिए वहाँ कहनेका अधिकार तो मुझे है और मेरा यह धर्म भी है। [5] मनुष्य जब क्षमा माँगता है तब दूसरोके लिए नही वरन् अपने लिए माँगता है। समान गुणवाले व्यक्तियोमे वयको स्थान है। यह प्रकरण मै यही बन्द करता हूँ। मेरी लिखी बातको भूल जाना।

१ और २ पत्र उपलब्ध नही है।
३ पुनश्च वाला अंश गुजरातीमें है।
४ और ५ साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ छूट गया है।

ट्रस्टी[1] बननेका इस मामलेके साथ क्या सम्बन्ध है? तुझे जब ट्रस्टी बनाये जानेका सुझाव रखा गया था उसमे मै भी शामिल था। यदि मुझे तुझसे अधिक गुणोवाला व्यक्ति मिले तो मै तेरा नाम अवश्य वापस ले लूगा और यदि तेरे समान गुणोवाला ही कोई व्यक्ति मेरे ध्यानमे आयेगा तो मै तटस्थ रहूँगा।

[गुजरातीसे]
बापुनी प्रसादी, पृष्ठ १३८

१५७. पत्र : मूलचन्द अग्रवालको

२४ अक्टूबर, १९३३

भाई मूलचन्द,

तुमारा पत्र आया है। तुमारे शिक्षाका ही काम करना उचित होगा। उसीमे खादीका जो कुछ हो सके किया जाय। लेकिन उसके लिये खादी शास्त्रका पूर्ण अभ्यास कर लेना आवश्यक है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७५२) से।

१५८. पत्र : रमादेवी चौधरीको[2]

वर्धा
२४ अक्टूबर, १९३३

प्रिय भगिनी,

तुमारा खत मिला। पुत्र और कन्या पढना चाहे तो पढाईका प्रबध कर देना उचित है। कुछ भी उद्यम सीखे तो बहूत अच्छा होगा। पुत्रको मेरे साथ घुमाना शक्य नहि है। इस वखतका दौरा कुछ क[ठिन है][3]

बापुके आशीर्वाद

श्री रमादेवी चौधरी
चादनी चौक
कटक
उडीसा

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २७८२) से।

१ गाधी सेवा सघके।
२ गोपबन्धु चौधरीकी पत्नी।
३ मूलमें यहाँ कटा-फटा है।

१५९. श्रद्धांजलि : विट्ठलभाई पटेलको[1]

२४ अक्टूबर, १९३३

श्री विट्ठलभाई पटेलकी मृत्युसे[2] हमारे बीचसे एक अत्यन्त परिश्रमी और अत्यन्त योग्य राजनीतिज्ञ उठ गया। उनका आत्म-त्याग और उनकी हार्दिक निष्ठा और लगन ऐसी थी जिसकी तारीफ नही की जा सकती। काम करनेकी उनकी क्षमता अद्भुत थी। उनके बारेमे बिलकुल ठीक ही कहा गया है कि बम्बई कार्पोरेशनके अध्यक्षकी हैसियतसे या विधान-सभाके अध्यक्षकी हैसियतसे, वह अपना दिन-भरका सारा काम रोजका रोज निपटा डालते थे और कलपर कुछ नही उठा रखते थे। इस अवसरपर उनका निधन देशके लिए एक बडी क्षति है। इस श्रद्धाजलिको समाप्त करनेसे पहले मै श्री सुभाष चन्द्र बोसकी प्रशसा किये बगैर नही रह सकता, जिन्होने स्वय अपने स्वास्थ्यको जोखिममे डालकर भी विट्ठलभाईकी शानदार और लगनसे सेवा-शुश्रूषा की थी।

[अग्रेजीसे]

हिन्दू, २८-१०-१९३३

१६०. पत्र : जनकधारी प्रसादको

सत्याग्रह आश्रम, वर्धा
२५ अक्टूबर, १९३३

प्रिय जनकधारी बाबू,

आपका दुखभरा पत्र मिला। आप जिस प्रकार शोकसे अभिभूत हो गये है वैसा नही होना चाहिए। आशा है मैने इसी १५ तारीखको आपको जो पत्र लिखा था वह आपको मिल गया है। मुझे पत्र लिखनेमे क्षमा माँगनेकी कोई जरूरत नही है। आप जब भी चाहे बेशक बराबर लिखे। आपको मेरी राय और मेरी सलाह माँगने का पूरा अधिकार है। मैने इससे पहलेवाले पत्रमे जो सलाह दी है यदि आप उसे स्वीकार कर सके तो उससे सारी कठिनाइयाँ हल हो जायेगी।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५) से।

१. गाधीजीने यह श्रद्धाजलि एसोसिएटेड प्रेसके प्रतिनिधिसे एक भेंटमें दी थी।
२ जो २२ अक्टूबरको हुई थी।

१६१. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

२५ अक्टूबर, १९३३

प्रिय ठक्कर बापा,

साथमे नरसिहनका[1] पत्र है जो उसने दक्षिण भारतके दौरेके विषयमे लिखा है। मै नही जानता कि राजगोपालाचारीके यह चाहनेका क्या कारण है कि मै यथाशीघ्र दक्षिणका दौरा करूँ। तुम्हे शायद मालूम हो। मै नरसिहनको कारणका पता लगानेके लिए लिख रहा हूँ।

नी० के बारेमे तुम्हारे पत्रसे मुझे लगता है तुम सोचते हो कि मै अब उसमे कोई मतलब नही रखना चाहता, लेकिन ऐसी बात नही है। मै उसे वापस पानेको उत्सुक हूँ। लेकिन वह इतनी बौरा गई है कि हो सकता है बिलकुल न लौटे। किसी भी सूरतमे, मै आज तुमको और अमेरिकी मिशनको तार भेज रहा हूँ। मै जानता हूँ कि 'नेशनल कॉल'ने एस० के बारेमे जो-कुछ कहा है वह झूठ और द्वेषपूर्ण है। उसने नी० के साथ कोई बुराई नही की है। नी० स्वय नही जानती कि साबरमतीमे जब उसने एस० को देखा तो उसकी वासना क्यो भडक उठी। जिस पत्रमे उसने मुझे यह लिखा उसमे उसने एस० को दोषमुक्त कर दिया था। बहुतसे पुरुष स्त्रियोको देखकर उत्तेजित हो उठते है और उसी प्रकार बहुत-सी स्त्रियाँ भी पुरुषोको देखकर अक्सर उत्तेजित हो उठती है, और सदा स्वच्छदताका जीवन व्यतीत करनेवाली नी० के लिए उत्तेजित हो जाना स्वाभाविक ही है। मै एस० को कह रहा हू कि वह तुमसे मिल ले ताकि तुम उससे परिचय कर सको और उसे समझ सको। अब चूँकि तुम इस मामलेमे पड ही गये हो इसलिए यह ज्यादा अच्छा होगा कि तुम सभी पात्रोको समझ लो। इन पात्रोके बारेमे तुम्हारी राय जाननेसे मुझे मदद मिलेगी, क्योकि इन सभीके साथ अभी मेरा वास्ता खत्म नही हुआ है।

मै देखता हूँ कि रामनारायण दो महीनो तक नही आ सकता, क्योकि रामनाथ 'सुमन' इस बातकी अनुमति माँग रहा था कि उसे रामनारायणकी एवजीमे दो-तीन महीनो तक रख लिया जाये। और सवाल यह था कि तुम सहमत होगे या नही तथा रामनाथके पक्षमे रामनारायण अपना हक छोडेगा या नही। मेरा खयाल है कि तुम उसे जानते हो। वह काफी योग्य है और तुम जो अपेक्षा करते हो वह सारा काम करेगा। यह तो है ही कि चन्द्रशकरके लिए पत्र-व्यवहार, सम्पादन और अखबारोकी रिपोर्टे आदि तैयार करनेका सारा काम अकेले सँभाल सकना सम्भव नही है।

१. राजगोपालाचारीके पुत्र।

नेगीको लिखे तुम्हारे पत्रकी प्रति मुझे मिली है। लगता है कि बिहारीलालके बारेमे तुमने जो पत्र लिखा था तुम्हे उसका मुझसे जवाब पानेकी आशा थी, लेकिन उसका लम्बा पत्र सलग्न करते हुए तुमने जो पत्र लिखा था उसमे तुमने कहा था कि तुम उसके बारेमे मुझे आगे लिखोगे। अत स्वाभावत मैने पत्र नही लिखा, लेकिन अब मै कह सकता हूँ कि हमे उसके लिए कोई काम नही निकालना चाहिए। अगर कोई काम है जिसके कि वह योग्य हो तो नि सन्देह वह उसे दे दिया जाये, भले ही हम उसे जो वेतन देगे उससे कम वेतनपर वही काम कराया जा सकता हो।

हृदयसे तुम्हारा,

बापू

सलग्न एक पत्र[1]

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११३०) से।

१६२. पत्र: वसुमती पण्डितको

२५ अक्टूबर, १९३३

चि० वसुमती,

तेरे समाचार ताराके जरिये मिले है। वह अब यहाँ आ जानी चाहिए। सुरेन्द्र यही है। उसका स्वास्थ्य ठीक है। शरीर काफी दुर्बल हो गया है। स्वामी भी यही है। मणि और मृदुला आ रहे है। प्रभुदासने उत्तर प्रदेशकी किसी कन्यासे विवाह कर लिया है। विवाह सस्कार यही हुआ। कन्याका नाम अम्बा है। दोनो अभी यही है। मेरा दौरा ८ तारीखसे शुरू होगा। बा, मीरा और चन्द्रशकर मेरे ही साथ है। बा अब मन्दिर [जेल] जानेकी तैयारी कर रही है। नानीबहन, गगाबहन और पन्नालाल अहमदाबाद है। तुझसे जब लिखा जा सके तब पत्र लिखना। थोडा बहुत पठन-वाचन होता है क्या?

श्रीमती वसुमती पण्डित
प्रिजनर, डिस्ट्रिक्ट प्रिजन, थाना
जी० आई० पी० रेलवे

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९३३७) से। सी० डब्ल्यू० ५८३ मे भी, सौजन्य: वसुमती पण्डित

१ यह उपलब्ध नही है।

१६३. पत्र : जानकीदेवी बजाजको[1]

२५ अक्टूबर, १९३३

प्रिय भगिनी;

आप बहनोसे परदा तुडवानेके लिये कलकत्ता जा रही है इसलिये धन्यवाद। परदा वहम ही नही है उसमे मुझे पापकी बू आती है। परदा किससे रखे? क्या पुरुषमात्र विषयासक्त रहते है? क्या स्त्री अपनी पवित्रता बगैर परदा नही रख सकती है? पवित्रता मानसिक बात है, सभी पुरुषमे सहज होनी चाहिये। यदि इस बुध्धि प्रधान युगमे स्त्री धर्मकी रक्षा करना चाहती है तो उसे दरिद्रनारायणकी सेवा करनी होगी, शिक्षण लेना होगा। दरिद्रनारायणकी सेवा करनेका अर्थ खादी प्रचार, कातना इत्यादि। हरिजन सेवाका अर्थ अस्पृश्यता रूप कलक धोना, ये दो बडे भगवानके कार्य है। और विद्या पानेका कार्य परदा रखनेके साथ कभी नही चल सकता है।

परदा रखकर सीता रामजीके साथ जगलोमे भटकी होगी? सीतासे बडी पवित्र स्त्री जगतमे कभी हुई है? बहनोसे कहो परदा तोडो, धर्म रखो।

आपका,
मोहनदास गाधी

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृष्ठ ११८

१ जानकीदेवी बजाजको कलकत्तामें अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलनकी अध्यक्षता करनी थी। यह पत्र प्रतिनिधियोके नाम एक सन्देशके तौरपर था, जो २९-१०-१९३३ के **विश्वामित्र** में प्रकाशित हुआ था।

१६४. पत्र : एफ० मेरी बारको

२६ अक्टूबर, १९३३

चि० मेरी,

यह सब एक भूलका दुखद परिणाम है। जो व्यक्ति पहला पत्र लेकर आया था उसने कहा कि जवाबकी जरूरत नही है। अब मदनमोहनने उसका स्मरण दिलाते हुए पत्र लिखा है।[1] तुम दोनो ४ बजे अवश्य आओ।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०१४) से। सी० डब्ल्यू० ३३४० से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

१६५. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

वर्धा

२६ अक्टूबर, १९३३

प्रिय जवाहरलाल,

इसके साथ मै डॉ० आलमका इस्तीफा सलग्न कर रहा हूँ। मै इसे स्वीकार करनेकी सलाह देता हूं। यह इस्तीफा देनेका कारण यह है कि उनके विरुद्ध लाहौरसे एक बहुत ही कटु शिकायती पत्र प्राप्त हुआ है। उसकी एक प्रति मैने उनको भेज दी थी। उन्होने पत्रमे लगाये गये कुछ आरोपोको बिलकुल अस्वीकार कर दिया। लेकिन प्रैक्टिस करनेके बारेमे जो आरोप था उसे उन्होने मान लिया।

जमनालालजी अपने इस्तीफेके बारेमे चिन्तित है। मेरी अपनी राय है कि उनका इस्तीफा भी स्वीकार कर लेना चाहिए। वह जेल जानेको उत्सुक है, लेकिन उन्हे इस बातकी चिन्ता है कि वह तुरन्त नही जा पा रहे है।

मेरा खयाल है कृष्णा अब बम्बईमे है।

माँके बारेमे आजकल मै अखबारोमे कुछ नही देखता। क्या वह पहलेसे बेहतर है?

१ मेरी बारने अपनी पुस्तक **बापू** में इस पत्रको निम्नलिखित टिप्पणीके साथ प्रकाशित किया है: "मैने गांधीजीको एक पत्र लिखकर पूछा कि क्या मै अपने एक अंग्रेज मित्रको जो वर्धासे होकर गुजर रहे है, मिलानेके लिए ला सकती हूँ। यह पहली बार हुआ कि गांधीजीका जवाब मुझे नहीं मिला। अत मैंने आश्रमको जानेवाले एक व्यक्तिके हाथो एक स्मरण-पत्र भेजा।"

विट्ठलभाईकी मृत्यु तो मै निश्चित मान ही रहा था लेकिन वास्तविकतासे मै विचलित हो उठा हूँ। उनका विरोध भी मै मूल्यवान मानता था। उससे मेरे विचार और साफ हो जाते थे और जितनी स्पष्टताके साथ मै देशके सामने अपनी स्थितिको अन्यथा प्रस्तुत करता उससे ज्यादा स्पष्टताके साथ प्रस्तुत कर पाता था।

सप्रेम,

बापू

सलग्न :

[अंग्रेजीसे]

गाधी-नेहरू पेपर्स, १९३३, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

१६६. पत्र : अब्बास तैयबजीको

२६ अक्टूबर, १९३३

प्रिय बूढी दाढी,

कमलाके बारेमे आपका पत्र आपके योग्य ही है। चूंकि मुझे उसको सलाह देनी है, इसलिए आपकी रायका कारण जानना मेरे लिए जरूरी था। आपने मुझे बिलकुल स्पष्ट राय दी है। रेहाना की राय उसके विपरीत है। आपकी राय मुख्यत सहज-बुद्धि पर आधारित है, और रेहानाकी राय भी सहज-बुद्धि पर आधारित है। मेरी सहज-बुद्धि भी उसके विरुद्ध ही रही है। लेकिन उसके जोरदार खण्डनके आगे मैंने अपनी सहज-बुद्धिका कहना माननेसे इनकार कर दिया है। बेशक, मैंने अपनी शकाओसे उसको अवगत करा दिया था।

आशा है अमरेलीमे आपको सफलता मिली होगी। क्या उससे काफी कुछ फायदा हुआ? क्या आपने बहुत सारी खादी बेची? क्या आप कुछ ठोस हरिजन-कार्य कर सके?

आप सबको प्यार सहित,

आपका,
भुर्र

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९५८८) से।

१६७. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

२६ अक्टूबर, १९३३

प्रिय घनश्यामदास,

तुम्हारे हिन्दीके पत्रका उत्तर अग्रेजीमे बोलकर लिखा रहा हूँ।

हरिजन सेवा सघके सविधानके मम्बन्धमे और अधिक लिखना जरूरी नही था। विचारणीय प्रश्न यही है कि हमे एक अर्द्ध-प्रजातन्त्रीय सस्थाको तुरन्त ही जन्म देना चाहिए या नही। मुझे पता नही कि नियुक्तिके अन्तर्गत यह अधिकार दिया गया है या नही, पर मैने जो वात सुझाई है[1] वह व्यवहार्य है और उसपर तुरन्त ही अमल किया जा सकता है। मेरा सुझाव यही है कि जिन न्यासियोके नाम मैने सुझाये है, उनके नाम आश्रमका पजीयन करा दिया जाये। तुम्हे अपने विचारके सम्बन्धमे ठक्कर बापा और हरिजीके साथ बात करनी चाहिए।

रही चरखा सघकी बात, सो इस सम्बन्धमे मुझे पूरी स्वतन्त्रता थी, इसलिए मैने जो योजना बनाई उसके फलस्वरूप एक मजबूत और आसानीसे चलनेवाली सस्था बन गई, जिसे प्रजातन्त्रीय रूप देनेकी सम्भावनाएँ असीम थी। आश्रमको [हरिजन सेवक-सघके निमित्त] देनेका निश्चय होनेके तुरन्त बाद ही मै तुम्हे लिखना चाहता था कि दिल्लीवाली महत्त्वाकाक्षापूर्ण योजनाको न्याग दिया जाये। लेकिन छात्रावास योजना अवश्य ठोस योजना है। इसमे सन्देह नही है कि हमे ऐसे अनेक छात्रावासोकी जरूरत पडेगी और यदि उनकी व्यवस्था ठीक-ठीक हो सकी तो उनके द्वारा बहुत कुछ ठोस काम होनेकी सम्भावना है। जब मै दिल्लीमे होऊँ तो मुझसे जो काम चाहो, ले सकते हो।

बिहारीलाल यदि छात्रावास आदिकी योजनाओके सिलसिलेमे काम करनेको तैयार हो तो उससे काम लिया जा सकता है। पर मै वेतनभोगी उपदेशक रखनेके बिलकुल खिलाफ हूँ, चाहे वह हरिजन हो, चाहे कोई ओर। इस मामलेमे जितनी दृढता बरती जाये, थोडी है।

दिल्लीमे रहनेका प्रबन्ध आपकी ही इच्छासे होगा। मै स्वय तो लक्ष्मीनारायणके[2] यहाँ ठहरना चाहूँगा। जबतक परिवर्तन करनेका कोई ठोस कारण न मिले तबतक मै पुरानी जगहोपर ही ठहरनेमे विश्वास करता हूँ। मेरे स्वास्थ्यके लिहाजसे परमेश्वरीका घर आदर्श होगा। लेकिन ऐसा नही होना चाहिए कि कोई मुझसे मिल ही न सके। वैसा करनेसे तो इस यात्राका जो उद्देश्य है, वही पूरा नही होगा। मेरा वहाँ ठहरना इस बातपर निर्भर करना चाहिए कि मुझसे क्या काम लिया जाना

१ देखिए "पत्र घनश्यामदास बिड़लाको", ३०-९-१९३३।

२. लक्ष्मीनारायण गाडोदिया।

है। यदि तुम हमेशा मेरी सुविधाका विचार करोगे तो गलत निष्कर्षोंपर पहुँचोगे। तुम इत्मीनान रखो कि मुझे चाहे जहाँ ठहराओ, मैं अपनी सुविधाका प्रबन्ध कर लूँगा। कलकत्तेमें मेरे ठहरनेके बारेमें तुम्हें डॉ० विधान, सतीश बाबू आदिसे परामर्श करना चाहिए।

श्रीमती लाहिड़ीके बारेमें तुम्हारा जो कहना है उसे मैं समझता हूँ। चूँकि मेरी कोई राय इस विषयमें नहीं थी इसलिए कोई राय मैंने दी भी नहीं। चूँकि उन्होंने तुम्हारे नामका उल्लेख किया था और चूँकि तुम कलकत्तेमें लगभग सभी लोगोंको जानते हो इसलिए मैंने सोचा कि मैं उनका पत्र तुम्हें भेजकर तुम्हारी राय ले लूँ। मैंने डॉ० विधानको भी, जिन्होंने कि प्रमाण-पत्र दिया है, पत्र लिखा है। तुम इस मामलेको कमसे-कम फिलहाल अपने दिमागसे निकाल सकते हो। यदि मेरी कोई राय बनी जिसे कार्यान्वित करनेके लिए मुझे तुम्हारी मददकी जरूरत हुई तो मैं तुम्हें तुरन्त सूचित कर दूँगा।

हृदयसे तुम्हारा,
बापू[1]

[पुनश्च :]

गोपी अच्छी तरह है। खुश तो है ही। तुमारी प्रकृति कैसी है।[2]

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ७९४१) से, सौजन्य घनश्यामदास बिड़ला

१६८. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

२६ अक्टूबर, १९३३

प्रिय ठक्कर बापा,

परीक्षितलालको[3] भेजे गये तुम्हारे दो पत्रोंकी प्रतियाँ मुझे मिलीं।

तुमने जो-कुछ सुना है वह बिलकुल सच है। घास एक गड़रियेको दे दी गई है। मेरे खयालमें कुछ रुपये बयानेके प्राप्त हुए हैं जिसे सघके खातेमें डलवाना होगा। रामजीसे[4] तथा दूसरे लोगोंसे जो वहाँ पहलेसे ही रहे हैं, रह नाममात्रका किराया वसूलना है। मेरा विश्वास है कि आश्रमका एक पूरा नक्शा है। मैं चिमनलालसे उसके बारेमें तुम्हें लिखनेके लिए कह रहा हूँ। बुधाभाई क्या करेंगे, इस सम्बन्धमें उनका पत्र इसके साथ है। मेरे खयालमें जूठाभाई पहलेसे ही आश्रममें रह रहे हैं और इसी तरह भगवानजी भी। यह देखना जूठाभाईका काम होना चाहिए कि मैदान

१. हस्ताक्षर देवनागरी लिपिमें है।
२. पुनश्चके बादका अंश हिन्दीमें है।
३. परीक्षितलाल एल० मजमूदार।
४. एक बुनकर।

और घरोकी उचित देखरेख है कि नही। वृक्ष आश्रमकी सम्पदाके अत्यन्त बहुमूल्य अग हैं।

तुमने परीक्षितलालको नियमोका मसौदा भेजनेके लिए कहा है। स्पष्ट है कि जब तुमने पत्र भेजा उस समय तक तुम्हे मेरा वह पत्र नही मिला था जिसके साथ मैने नियमोकी प्रति भेजी थी।

इस पत्रके साथ मै चन्देसे सम्बन्धित डॉ० विधानका पत्र भेज रहा हूँ। तुम पत्रको पढनेके बाद नष्ट कर देना।

हृदयसे तुम्हारा,
बापू

[पुनश्च]

यह तो अच्छा हुआ कि तुम नी० की रक्षाके लिए आ गये हो।[1]

सलग्न २ पत्र

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११३१) से।

१६९. मद्रासमे 'हरिजन'

पाठकोको यह देखकर आश्चर्य हुआ होगा कि 'हरिजन' का प्रकाशन अब पूनासे बदल कर मद्रासमे किया जायेगा। श्रीयुत आर० वी० शास्त्री और श्रीमती शास्त्रीने स्वयको हरिजन सेवाके लिए अर्पित कर दिया है। श्रीयुत शास्त्रीको लगता था कि वह पूनामे इस कार्यपर पूरा समय नही लगा पा रहे थे और मद्रासमे वह अपनी ईश्वरप्रदत्त सारी प्रतिभाका उपयोग इस काममे कर सकेगे। उनकी यह बात मुझे जँच गई। उसीका परिणाम है कि 'हरिजन' का तबादला मद्रास कर दिया गया। अगले ३ अगस्तके बाद क्या होगा या क्या हो सकता है, उसके बारेमे पाठकोको या मुझे चिन्ता करनेकी जरूरत नही है। 'मेरे लिए एक कदम ही काफी है', यह बात सगठनोके मामलेमे भी उतनी ही सही है जितनी व्यक्तियोके बारेमे। मद्राससे प्रकाशन करनेका एक अतिरिक्त लाभ यह है कि अग्रेजीकी छपाईके खयालसे यह भारतका सर्वाधिक और सबसे सस्ता नगर है। और इससे बेहतर क्या हो सकता है कि 'हरिजन' एक ऐसे प्रान्तमे प्रकाशित हो जहाँ अस्पृश्यता अपनी सारी कुरूपताके साथ फैली हुई है? मै आशा करता हू कि इस तबादलेका दक्षिण भारतके सुधारक, सनातनी और हरिजन लोग न केवल स्वागत करेगे बल्कि कद्र भी करेगे। 'हरिजन'-का उद्देश्य इन तीनोकी ही सेवा करना है। इस तबादलेकी कद्र हुई, इसकी कसौटी यही होगी कि इसकी बिक्री बढ जाये।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २७-१०-१९३३

१. पुनश्चके बादका अंश गुजरातीमें है।

१७०. एक दुखद घटना

मेरी आयु जितनी ज्यादा होती जाती है उतना ही ज्यादा मै इस बातको अनुभव करता हूँ कि मै आनन्दका जो सुख भोगता हूँ — और जिससे मेरे मित्रोको इतनी ईर्ष्या होती है — वह उन दुखद प्रसगोके बावजूद कायम है जो मेरे हिस्से पडे है, और ऐसे प्रसग कम नही आये है। सबसे ताजा दुखद प्रसग नी०का लापता होना है। मुझे कोई सन्देह नही है कि उसका पश्चात्ताप सच्चा था। उसने अपने अतीतके खिलाफ बहुत बहादुरीसे सघर्ष किया है, लेकिन वर्धा आनेपर मुझे यह जरूर लगा कि यह सघर्ष उसके लिए बहुत भारी पड रहा है। वह धीरे-धीरे विक्षिप्त होती जा रही थी और उसका आत्मनियन्त्रण छूटता जा रहा था। इससे पहले, वर्धासे लिखे अपने एक पत्रमे उसने सकेत किया था कि वह शायद पागल हो जायेगी। उसके प्रति जितना स्नेह दिखाया जा सकता था, दिखाया गया था। इस स्नेहको वह समझती थी। इसका वह अत्यन्त अनुकूल उत्तर देती थी। लेकिन साथ ही वह अत्यन्त आवेगशील भी थी। वह बिना कुछ पैसा या सामान लिये ही चली गई है। दिल्लीके अखबारोमे उसके बारेमे छपी रिपोर्टे मनगढन्त है जिनका उद्देश्य सनसनी पैदा करना है, और इनमे उसके साथ गम्भीर अन्याय किया गया है। उसकी जो वर्तमान मानसिक दशा है उसमे उसको उसके कार्योके लिए जिम्मेदार नही ठहराया जा सकता। कोई धर्मार्थ स्थापित सस्था या पागलखाना ही उसके लिए ठीक जगह है। जो लोग झूठी दयावश या अपना पिड छुडानेके लिए उसको चन्द रुपये देगे वे उसके साथ कोई दया नही बरतेगे। वह गैरजिम्मेदार है, इसलिए उसे जो-कुछ मिला है उसे वह व्यर्थ फेकती रही है। उसके सम्पर्कमे जो लोग आये यदि वे उसका पता मुझको सूचित करेगे और यह लेख उसको दिखा देगे, तो मै उनका आभार मानूंगा।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २७-१०-१९३३

१७१. खादी और हरिजन

बहुत ही थोडे लोग जानते है कि खादीका हरिजनोके लिए क्या महत्त्व है। हम कह सकते है कि खादी बुनाईका धन्धा अकेले हरिजन ही करते है, और हालॉकि मिलकी कताई और बुनाईने बहुत-से हरिजनोकी रोजीका एक जरिया छीन लिया है, मगर अब भी हजारो हरिजन हाथ-बुनाई पर ही गुजर करते है। किन्तु एक मित्र यह दलील देते है कि "नष्टप्राय धन्धेको जीवित रखनेसे क्या लाभ? इसके बजाय उन्हे किसी ऐसे धन्धेमे क्यो न लगा दिया जाये, जो उन्नति कर रहा हो? उनके उद्धारके लिए जब आप अनेक प्रकारके साधनोको ग्रहण कर रहे है तो अवश्य ही आप उन्हे जीर्ण-शीर्ण व्यवसायोमे ही लगाये रखना नही चाहेगे।" वास्तवमे, हरिजनो अथवा किसीको भी कताई-बुनाई या किसी और धन्धेमे लगानेकी मेरी तनिक भी इच्छा नही है, बशर्ते कि किसी अन्य उद्योग-धन्धेमे उन्हे अधिक लाभ हो सकता है। किन्तु मै तो आपत्ति करनेवाले उक्त मित्रकी तरह हाथकी कताई और बुनाईके धन्धेका भविष्य निश्चय ही अन्धकारपूर्ण नही देखता। मेरा अपना विश्वास तो यह है कि हाथकी ओटाई, धुनाई, कताई और बुनाईका भविष्य, कमसे-कम भारतवर्षमे, अत्यन्त उज्ज्वल और आशामय है। करोडो मनुष्योको अगर कुछ सुखसे रहना है, तो मिलोको तो अपना माल भारतके बाहर खपाना चाहिए। अपनी छोटी आय बढानेके लिए हाथकी कताई और बुनाई आदिमे लग जानेके लिए गॉववालोको हमे समझाना चाहिए। मान लिया जाये कि करोडो गॉववालोको अधिक आयवाला अच्छा धन्धा मिल गया, तो भी स्वदेशी मिलोको समस्त राष्ट्रकी आवश्यकताएँ पूरी करनेमे बहुत देर लग जायेगी — शायद कई दशाब्दियॉ। इसके अतिरिक्त बहुत बडी पूँजीकी भी तो जरूरत पडेगी और यन्त्रो तथा तकनीकी ज्ञानके लिए हमे विदेशोपर निर्भर रहना पडेगा। सिद्धान्तके तौरपर तो विलायती मशीनो और विशेषज्ञोपर निर्भर रहना कोई ऐसी बुरी बात नही है, पर व्यावहारिक दृष्टिसे यह बात मिल-उद्योगकी उन्नतिमे अवश्य ही एक भयानक रुकावट होगी। जबतक इस उद्योगको बाहरी सहायतापर निर्भर रहना पडेगा, तबतक उसे स्वदेशी उद्योगका नाम देना गलत होगा।

इसके विपरीत गॉवके उद्योग-धन्धेके रूपमे खादीके लिए तो बहुत ही कम पूँजी चाहिए। गॉवमे ही सब औजार बनाये जा सकते है, और ऐसे कारीगरोकी भी वहॉ कमी नही है। सबसे जरूरी बात तो लोगोकी मनोवृत्ति बदलनेकी है। खादीके विरुद्ध यद्यपि अत्यन्त चातुर्यपूर्ण युक्तियॉ दी जाती है, और मिलोमे मालके उत्पादनके प्रभावशाली ऑकडे भी पेश किये जाते है, फिर भी मै अपने इस मतमे तो अडिग ही हूँ कि भारतमे खादीका भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल है। जो चीज हम स्वेच्छासे या कायल होकर नही करेगे वही चीज हमे परिस्थितियोसे विवश होकर करनी पड़ेगी। भारतको

जीवित रहना है, अर्थात् करोडो भारतीयोको जीवित रहना है। इस विषयमे जरा भी मतभेद नही है कि आजकल वे मृतक-समान है, वे तो सिर्फ नाममात्रको अपनी हस्ती कायम रखे हुए है। ससारमे और कोई भी देश ऐसा नही है, जहॉके कई करोड लोग इस तरह आधे बेकार हो और जहॉकी सभ्यता मुख्यत ग्राम्य-सभ्यता होते हुए भी, प्रति मनुष्यके हिस्सेमे मुश्किलसे दो एकड जमीन पडती हो। अगर भारत भाप या बिजलीसे अथवा मानव-शक्तिके अतिरिक्त किसी अन्य शक्तिसे कलोको चलाकर अपने कपडेकी सारी आवश्यकता पूरी करने लगा, तो जनताकी बेकारी और भी अधिक भयकर हो जायेगी। औद्योगीकृत भारतका अर्थ होगा करोडो लोगोका सर्वनाश, जिनमे स्वभावत वे हरिजन भी शामिल होगे, जिन बेचारोको, यह बडी ही शर्मकी बात है, हमारे समाजमे निम्नतम स्थान मिला हुआ है।

कहते है कि बडे-बडे यन्त्रोसे उद्योग चलाकर अमेरिकाका प्रत्येक मनुष्य उतना काम कर लेता है, जितना काम कि वहॉ ३६ गुलाम करते थे। अगर अमेरिकाको अपना आदर्श बना ले और प्रत्येक भारतवासीको ३६ के बजाय ३० ही गुलाम रखने दे, तो भारतके ३१ करोड मनुष्योमे से ३० करोडको तो आत्महत्या ही करनी पडे। मै जानता हूँ कि ऐसा हो तो कुछ उत्साही देशभक्त इसकी परवाह नही करेगे — इतना ही नही, बल्कि इसका वे स्वागत करेगे। वे कहेगे कि भारतमे ३० करोड अपग और निहत्थे प्राणियोकी अपेक्षा सुखी, सन्तुष्ट, सम्पन्न और नखसे शिख तक शस्त्र-सज्जित एक करोड मनुष्य कही अधिक अच्छे होगे। इस फलसफेका मेरे पास कोई जवाब नही है क्योकि मेरे दिमागमे तो हरिजनोकी मनोवृत्ति भरी हुई है और इसलिए मै तो अपने करोडो ग्रामवासियोकी दृष्टिसे ही विचार कर सकता हूँ और मै तभी सुखी हो सकता हूँ, जब यहॉका गरीबसे-गरीब आदमी सुखी हो, और वे जीवित रह सके तभी मै जीना चाहता हूँ। मेरा यह बहुत ही सादा मन तो उस छोटे-से चरखेके उस तकुवेके परे जा ही नही सकता, जिसे मै सर्वत्र अपने साथ ले जा सकता हूँ और बडी आसानीसे जिसे मै बना सकता हूँ। इस सम्बन्धमे एक मित्रने अखबारोमे प्रकाशित नीचेका लेखाश[1] मुझे भेजा है

> **कुछ उद्योग-धन्धोमे जो बेकारी फैल गई है उसे दूर करनेके लिए जर्मनीमें नाजियोंने यह हुक्म जारी किया है कि जिन यन्त्रोंसे मनुष्योंकी रोजीमे बाधा आ रही हो उनको उपयोग में लाना बन्द कर दिया जाये। इस निषेधादेशपर चर्चा करते हुए इंग्लैंडके 'मैनचेस्टर गार्जियन' पत्रने यह टिप्पणी लिखी है: 'इस विषयकी चर्चा तो काफी हुई है कि बेकारीके प्रश्नको इतना जटिल बनानेमे यन्त्रोंका अधिक हाथ है, पर इस विचारको अमलमे लाने तथा यन्त्रोंका उपयोग बन्द करानेका तो नाजियोने ही काम किया है। . . . गांधीजी सूत कातनेके सॉचेके बजाय चरखे और करघा यन्त्रके स्थानपर हाथके करघे चलानेका**

१. यहॉ इसके केवल कुछ अश ही दिये गये है।

जो प्रयत्न कर रहे हैं, उसीसे मिलता-जुलता प्रयत्न जर्मनीके सिगार और काँचके उद्योगोंमें चल रहा है'।

इस टिप्पणीके अन्तमें 'गार्जियन' लिखता है कि 'जब जर्मनीमें आज वही मध्य-युगकी सदाचार-भावना पुनः बरती जा रही है, तो कोई कारण नहीं कि वहाँका अर्थशास्त्र भी मध्ययुगीन क्यों न बन जाये।' इस आलोचनाका उत्तर देते हुए एक पत्र-लेखकने 'गार्जियन'में लिखा है:[१]

> **हिटलर, गांधी और अन्य लोग भिन्न-भिन्न रीतिसे मालका उत्पादन उस हदतक घटानेकी कोशिश कर रहे हैं कि जितना माल पैदा हो वह सब काममें आ जाये, या जितना माल खप सके उतना ही पैदा किया जाये। भले ही उसे कोई मध्ययुगकी बात कहे, लेकिन हाथसे चलाये जानेवाले उद्योग-धन्धे न तो पिछड़े हुए कहे जा सकते हैं और न जंगली ही। प्रत्येक प्रगतिशील प्रारम्भिक और माध्यमिक पाठशालाओंमें इनकी शिक्षा दी जाती है। . . . जहाँतक यन्त्रोंके द्वारा विशेष वर्गों और सामान्य वर्गोंकी सम्पन्नता और खुशहाली बढ़ती हो, वहीं तक ये यन्त्र कल्याणकारक हैं। पर जब इनके फलस्वरूप बेकारी फैल रही हो और करोड़ों लोगोंके भूखों मरनेकी नौबत आ जाये — जैसा कि आज पश्चिमके यान्त्रिक उद्योगवाले देशोंमें हो रहा है — तो फिर ये यन्त्र अभिशापरूप बन जाते हैं। यन्त्र मनुष्यके लिए हैं, मनुष्य यन्त्रके लिए नहीं। इसलिए ऐसा करना चाहिए कि यन्त्रोंका उपयोग मनुष्यके कल्याणार्थ हो, उन्हें मनुष्यका स्वामी नहीं बनने देना चाहिए।**

जर्मनीमें तलवारके जोरसे ग्राम्योद्योगोंको पुनर्जीवित किया जा रहा है, यह बात यहाँ प्रासंगिक नहीं है। यहाँ तो जो प्रासंगिक है वह यह बात है कि एक ऐसा देश जिसने उच्चतम तकनीकी कौशलका परिचय दिया है और जो यान्त्रिक उद्योगोंमें सबसे अधिक समुन्नत देशोंमें से है, भयंकर बेकारीका सवाल सुलझानेके लिए फिरसे ग्रामीण उद्योग-धन्धोंको पुनरुज्जीवित करनेका प्रयास कर रहा है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २७-१०-१९३३

१. यहाँ केवल कुछ अंश ही उद्धृत किये गये हैं।

१७२. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको[1]

वर्धा

सवेरे ३ बजे, २७ अक्टूबर, १९३३

तोतारामजी कहते है कि तुम्हारा उनसे परिचय है। तोतारामजीसे हरिजन लोग भी भली-भाँति परिचित है। लेकिन हरिजन आश्रम अथवा मन्दिर, जो भी कहो, चलानेका काम तुम्हारा है। इसलिए तुम्हारे मनमे जो योजना हो उसपर अमल करना। मुझसे तो कही कोई अडचन आनेपर ही सलाह लेना। मैने तो अपनी आदतके अनुसार सुझाव दिया है और देता रहूँगा। लेकिन इतना जानो कि इनमे से एक पर भी अमल करनेके लिए तुम बँधे हुए नही हो।

तुम नी० की खोजमे निकल पडे हो, इसका मेरे मनपर आश्चर्यजनक प्रभाव पडा है। तुम्हारी परोपकार वृत्तिके बारेमे मुझे बहुत कुछ मालूम था, परन्तु नी० के प्रति तुममे जो असीम दयाभाव है उसे देखकर मै आश्चर्यचकित रह गया हूँ। नी० की मर्यादामे बाहर जाकर मैने जो सहायता की है उसके लिए अन्य मित्रोंने मुझे बहुत बुरा-भला कहा है। लेकिन मेरी इस प्रत्यक्ष दीखती उदासीनतापर तुम्हे तो गुस्सा आ रहा है। तुम्हे मेरा हजारो बार नमस्कार। मेरा प्रेम जिससे हार गया है, भगवान करे तुम्हारे प्रेमसे उसका हृदय पिघल जाये। तुमने चन्द्रशकरको उत्कलके बारेमे जो पत्र लिखा है उसे मैने समझ लिया है।

बापू

[पुनश्च]

हरिजन आश्रमके लिए तुम घनश्यामदाससे मिलकर तुरन्त नामकरण सस्कार कर डालो, यह अभीष्ट है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११३२) से।

१ गांधीजीने इसे चन्द्रशंकर शुक्ल द्वारा लिखे गये पत्रमें ही जोड दिया था।

१७३. पत्र : मोतीलाल रायको

२७ अक्टूबर, १९३३

प्रिय मोतीबाबू,

मै हैरान था कि मुझे अपने पोस्टकार्डके उत्तरमे तुम्हारे बारेमे किसीसे कोई समाचार क्यो नही मिला है। लेकिन देरीका परिणाम जरूरतसे ज्यादा अच्छा निकला, और तुम्हारा लम्बा और स्नेहपूर्ण पत्र मिला।

हमे भगवानका शुक्रगुजार होना चाहिए कि अभी हालके लिए एक आँख बची है। लेकिन, जैसा कि तुम कहते हो, यदि ईश्वरकी इच्छा हुई कि इसकी आँख भी चली जाये तो उसका हुक्म सिर-माथे।

स्वामी ब्रह्मानन्दकी मृत्युका समाचार सुनकर दुःख हुआ। मृत्यु एक ऐसा मित्र है जो हमे कभी धोखा नही देती। वह कभी-कभी ऐसे समय मे हमारी सहायताके लिए आती है जब उसकी कतई उम्मीद नही होती। और यह तो हममे विश्वासकी कमी है जो हम उसके आनेका दुःख मनाते है।

मुझे खुशी है कि तुम नित्य बढते हुए विश्वासके साथ अपने खादी-कार्यक्रमको क्रियान्वित कर रहे हो।

जब मै बगालकी यात्रा करूँगा तब मेरी स्थिति हिरासतमे लिये गये कैदीके समान होगी, मेरे रखवाले मुझे जहाँ ले जायेगे वहाँ मै जाऊँगा, और यदि वे मुझे तुम्हारे आश्रममे ले जायेगे तब मुझे निश्चय ही बहुत खुशी होगी। इसलिए तुम्हे इस सम्बन्धमे मुख्य जेलर डॉ० विधान रायसे बात करनी होगी, अथवा आप सहायक जेलरो, सतकौडी बाबू और सतीशबाबूको लिख सकते है।

जहाँ तक जवाहरलालके दृष्टिकोणका सवाल है, क्या तुमने हममे जो पत्र-व्यवहार[1] हुआ है उसे नही पढा है? मैने अपने पत्रोमे निश्चयात्मक रूपसे दर्शाया है कि मै किन बातोमे उनसे सहमत हूँ और किनमे नही हूँ। लेकिन यदि तुम किन्ही खास मुद्दोपर, मैने जो राय व्यक्त की है उससे अधिक स्पष्ट राय जानना चाहो तो निस्संकोच होकर मुझे लिखना।

तुम्हे प्यार। मीराबहन तुम्हे प्यार भेजती है।

श्रीयुत् मोतीलाल राय
चन्द्रनगर

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११०४६) से।

१. देखिए खण्ड ५५, पृष्ठ ४४६ और परिशिष्ट १४।

१७४. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

२७ अक्टूबर, १९३३

भाईश्री वल्लभभाई,

मणि, मृदु, मृदुके चाचा और बाबोको आये हुए आज तीन दिन हो गये है। बाबो इस बार मेरे साथ हिल-मिल गया है। उसका स्वास्थ्य भी अच्छा है। वह मेरे माथ जापानी साधुका ढोल बजाता है। जापानी साधु तो आभूषण है। वह अत्यन्त निर्मल मन, विनम्र, हॅसमुख और विनयी है। हिन्दी सीख रहा है। चरखा और तकली चलाता है। सब नियमोका सूक्ष्म रूपसे पालन करता है। दोनो बहनोको मैने काफी घटे दिये है। आज सवेरे लगभग दो घटे दिये है। अभी ११ ३० बजे फिर समय देनेवाला हूँ। दोनो मानो घोडेपर सवार होकर आई है और विमानपर चढकर जानेवाली है, इसीलिए तो उन्होने मुझे आज मेलसे वापस जानेका नोटिस दिया है। मणिके पाँवको बिजलीके उपचारकी जरूरत जान पडती है। मृदुको किन्ही बहनोकी देखभाल करनी है। दोनोका अच्छा मेल बन पडा है।

* * *[1]

पट्टाभि[2] आ गये है। मै तो उनसे कदाचित् ही दस मिनट तक मिल पाया हूँ। वे बिना कोई सूचना दिये आये थे। जमनालालजी कदाचित् ही किसीको ज्यादा समय लेने देते है। (अहमदावाद)के मिल-मजदूर प्रतिनिधियोको भी कुल मिलाकर (तीन हिस्सेमे) डेढ घटेका समय लेने दिया। उनका पहरा कडा है।

विट्ठलभाईकी मृत्युका दुःख तो अवश्य हुआ। वे तो मरकर मुक्त हो गये। हम तो पहलेसे ही यह मानते थे कि उनकी मृत्यु विदेशमे ही होगी। उनकी देखभाल तो अच्छी हुई जान पडती थी। सुभाषने तो हद कर दी। जहाँ-तहाँसे उसके द्वारा विट्ठलभाईकी अनन्य सेवा-शुश्रूषाके समाचार मिलते रहते है। मैने उसे पत्र लिखा है। तुम भी लिखना। मेरा पत्र मृत्युके समाचारसे पहले चला गया था।

स्वामी अभी थोडे समय यहाँ रहेगे। नी० को खोजनेके लिए ठक्करबापा वृन्दावन गये है। उनकी दयाकी कोई सीमा नही। इस महिलाका दिमाग खराब हो गया है। यहाँ तो उसने कोई बुरा व्यवहार नही किया। वह चित्तभ्रान्त हो गई थी। अभी भी वह जगलोमे भटकती जान पडती है। वह आयेगी तो मै उसे अपने साथ रखूँगा। अमला तो अब खूब काम करती है। डकन गाँवोमे समाधिस्थ है। मेरी बार अभी यही है। वह बीमार थी, अब ठीक हो गई है। विनोबा गाँवोमे खूब सेवा कर रहे है।

१. साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ छूट गया है।

२. पट्टाभि सीतारमय्या।

आनन्दीके साथ मणि गई है। बाबलो भी गया है।

देवदासके पत्र आते रहते है। डॉ० दत्ता उससे मिल आये है। खुर्शेद[1] कुछ बीमार हो गई लगती है। मैने डॉ० दत्ताको उससे भी मिलनेके लिए लिखा है। मेरे दौरेके बारेमे चिन्ता न करना। मै सँभल कर रहूँगा। राजाकी इच्छा है कि मै पहले दक्षिणका दौरा करूँ। आनन्दी लक्ष्मीदाससे मिल आई है। वह [अभी] विवाह न करनेकी बात पर दृढ है। चन्दुलालको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृष्ठ ३६-८

१७५. तार : अद्वैतकुमार गोस्वामीको

वर्धा
२८ अक्टूबर, १९३३

अद्वैतकुमार
राधारमण मन्दिर
वृन्दावन

यदि नी० मन्दिरोमे जाना चाहे तो उसे अवश्य ले जाये।

गाधी

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८०६) से।

१७६. पत्र : मुन्नालाल जी० शाहको

२८ अक्टूबर, १९३३

भाई मुन्नालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरे साथ रहना था तो इतने दिनो तक कहाँ सोये रहे? तुम्हारी आकुलता ठीक नही। तुम मेरे साथ दौरेपर नही जा सकते। यदि तुम एक स्थानपर बैठकर काम करना चाहते हो तो तुम्हे विनोबाके अथवा जमनालालजीके नीचे काम करना चाहिए। लेकिन मुझे आशका है कि तुम कदाचित् ही कही टिक सकोगे। यदि तुम मेरे भयको निर्मूल सिद्ध कर सको तो करना। तुम्हे मै अच्छी तरहसे पहचानता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६४६) से।

१. दादाभाई नौरोजीकी पौत्री।

१७७. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

२८ अक्टूबर, १९३३

भाई वल्लभभाई,

आज सुभाषका तार आया है जिसमे लिखा है कि विट्ठलभाईका शव ९ तारीख को बम्बई पहुँचेगा और तुम्हे दाह-सस्कार करना है। मैंने प्रेसकी मार्फत जवाब दिया है कि तुम रिहा होनेकी माँग करोगे, ऐसा मै नही समझता। इसलिए दाह-सस्कार तुम्हारे बिना ही होना चाहिए। डाह्याभाईको यह सस्कार करना चाहिए। तुम्हारी राय जाननेका समय न था और मैंने उचित भी नही समझा। कुछ कहना हो तो कहना। मै डाह्याभाईको लिख रहा हूँ।

काकाके उपवासके बारेमे मैंने तुम्हे कल पत्र लिखा था, वह मिला होगा। आज तीसरा दिन है। वजन अभी वैसा-का-वैसा बना है। विस्तरपर पडे-पडे काम करते है। मजेमे है। [1] अभी यही है। लेकिन इन तिलोमे तेल नही दिखाई देता।

प्रभुदास और अम्बाका ठीक चल रहा है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृष्ठ ३८

१७८. पत्र : जयश्री रायजीको

२८ अक्टूबर, १९३३

प्रिय बहन,

तुम पिताके [2] नामको सुशोभित कर रही हो। एक राजनीतिज्ञके घर ली हुई तालीम निष्फल नही गई। तुमने अन्त तक अपना मुँह नही खोला। तुमने यदि अभी तक वहाँके हरिजन सेवा सघमे अपनी अर्जी नही दी है तो अब देना। उसकी नकल मुझे भेजना। बादमे मुझसे जो बनेगा, मै करूँगा।

मोहनदासके आशीर्वाद

बापुजीनी शीतल छायामां मे उपलब्ध गुजरातीकी अनुप्रतिसे, पृष्ठ ९ के सामने।

१ साधन-सूत्रमें नाम नही दिया गया।
२. बड़ौदा राज्यके दीवान सर मनुभाई मेहता।

१७९. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

२८ अक्टूबर, १९३३

तेरे स्वभावको लेकर किसीने ऐसी कोई शिकायत नहीं की है जिससे कि मैं तुझे नालायक मानूं?[१] और किसीके कहनेपर तू मेरी दृष्टिमें लायक अथवा नालायक बनें, यह कैसे हो सकता है? क्या मुझे दूसरोंकी मारफत तुझे जानना होगा? तू नींदसे जाग। यहाँ आकर मनको हल्का कर जा। तेरे दुःखसे मैं दुःखी होता हूं।

[गुजरातीसे]

बापुनी प्रसादी, पृष्ठ १३८-९

१८०. एक शिक्षकके प्रश्न

'मंगलप्रभात' में[२] से मेरे लेखोंको अपने शिष्योंको समझाते हुए एक शिक्षक कुछ उलझनमें पड़ गये। उस बारेमें उन्होंने कुछेक प्रश्न किये हैं। उनमें से पहला निम्नलिखित है[३]

मेरा आज तकका अनुभव यही बताता है कि खुदको जो सत्य जान पड़ता हो उसी मार्गपर चलनेमें ही श्रेय है। महान् विभूतियोंका मार्ग कौन-सा है यह भी मनुष्य को स्वयं ही खोज निकालना होगा और महान विभूतिको भी स्वयं उसे ही पहचानना होगा। जो विभूति एकके लिए आदर्श रूप हो वह दूसरेके लिए तुच्छ हो सकती है। एक ही विभूतिको माननेवाले दो व्यक्ति उसके वचन और आचरणके दो विरोधी अर्थ करते हुए देखे गये हैं। विरोचन और इन्द्रकी कथा प्रसिद्ध है।[४] पग-पग पर 'स्वयं' कुछ करनेकी बात ही हमारे सामने आ खड़ी होती है। लेकिन मैंने इतना जो कहा उससे भी काम पूरा नहीं हो जाता। स्वयंको हमेशा सत्य सूझता ही है, यह तो नहीं कहा जा सकता। मुझे आज जो सत्य प्रतीत होता है वह दो दिनों बाद असत्य लग सकता है। कितने ही लोगोंने जिसे सत्य माना है उसकी लगभग अन्य सब लोगोंने भर्त्सना की है। इसीसे हम इस भयंकर परिणामपर आते हैं कि मनुष्य

१. गांधीजीने गांधी सेवा संघके न्यासी पदके लिए मथुरादास त्रिकमजीका नाम प्रस्तावित किया था। देखिए "पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको", २४-१०-१९३३ भी।

२. यरवडा सेन्ट्रल जेलमें लिखे गये गांधीजीके लेखोंका एक संग्रह, देखिए खण्ड ४४, पृष्ठ ४१ की पाद-टिप्पणी।

३. यहाँ नहीं दिया गया। प्रश्न यह था : अपनी दृष्टिसे देखे हुए मार्ग पर चलनेसे सत्यका विकास हो सकता है अथवा महान् विभूतिके चरण-चिह्नों पर चलनेसे हो सकता है?

४. **छान्दोग्योपनिषद्**, ८, ७।

भूले करते हुए, ठोकरे खाते हुए और विकट मार्गोको लाँघकर ही सत्यकी झाँकी पा सकता है।

लेकिन सारी उलझन तो सत्यान्वेषणकी शर्तोकी उपेक्षाके परिणामस्वरूप ही पैदा होती है। जिस प्रकार अन्य विषयोके सम्बन्धमे अधिकारकी योग्यताकी जरूरत रहती है उसी प्रकार सत्यके सम्बन्धमे भी रहती है। जो मनुष्य सत्येश्वरका दर्शन करना चाहता है उसे यमनियमका पालन करना ही चाहिए। जो व्यक्ति ऐसी योग्यता प्राप्त नही करता उसकी अपनी दृष्टि तो होती ही नही, वह तो अन्धे मनुष्यके समान होता है। यदि कोई व्यक्ति खगोल विद्याका अभ्यास किये बिना उसका ज्ञान देनेका दावा करे तो हास्यास्पद लगेगा, उसी तरह सत्यको जाननेकी दृष्टि प्राप्त करनेका तनिक भी प्रयत्न किये बिना जो व्यक्ति सत्य देखनेका दावा करता है वह भी हास्यास्पद ही होगा।

शिक्षकका दूसरा प्रश्न यह है[१]

"तीर पर आ गये" कहनेका तात्पर्य केवल इतना ही है कि अब हम इस विषयमे सहज ही प्रवेश करते है। सत्यकी चर्चा करते हुए हम अहिसा तक पहुँच ही जाते है। अहिसा बिना सत्यके सिद्ध हो ही नही सकती। यह बात अनुभवके आधारपर ऐसी सिद्ध है जैसे दो और दो चार।

शिक्षकका तीसरा प्रश्न यह है[२]

इसमे कहा गया वाक्य मेरी अपरिपक्व भाषाका एक अच्छा नमूना है। मुझे याद है कि इस लेखको लिखते समय भी मुझे मुश्किल हो रही थी। मै जो भाषा चाहता था वह मुझे सूझ नही रही थी। लेकिन यदि मेरी स्थिति इतनी दयनीय है तो शिक्षककी स्थिति भी मुझसे कोई कम दयनीय नही है।

हम सभी अहिसाका नाम तो बहुत रटते है लेकिन वह क्या है इसकी छानबीन कम ही करते है। उसके बारेमे जो लिखा गया है हम उसके अनुरूप आचरण नही करते और इसलिए इसके लिए प्रयुक्त की जानेवाली भाषा हमे चीनी पहेलीके समान जान पडती है। शिक्षकने 'नाश', 'मुसीबते', 'सामना करना', 'सहना', 'अपनाना', आदि शब्द प्रयुक्त किये है, लेकिन उसके सामने उसके अर्थका सही चित्र उपस्थित नही हो पाया है, यह तो [शिक्षककी] भाषा ही सूचित कर रही है। और इसमे मै उसका दोष नही मानता, क्योकि यह अपूर्णता तो लगभग सर्वव्यापक है।

यह सब कहकर तो मैने पाठकोके सामने अपनी कठिनाई और विषयके प्रति हमारे अपने अज्ञानको प्रस्तुत किया है। मै यह मानता हूँ कि मै जो कहना चाहता हूँ उसे मै अच्छी तरह समझता हूँ, लेकिन अभी तक मेरे हाथ ऐसी भाषा नही लगी

१ प्रश्न था "सत्य" नामक लेखके उपसहारमें आप कहते है कि "अब हम अहिसाके तीरपर आ गये।" क्या आपके कहनेका अर्थ यह है कि सत्य साधन और अहिसा साध्य है।

२ प्रश्न था जब आप यह कहते है कि विपत्तियोका प्रतिरोध न कर उन्हें सह लेनेसे मनुष्य उन्नतिकी ओर अग्रसर होता है तब आपका कहनेका अभिप्राय क्या है? अहिसाकी आप सीमित अर्थमें क्या व्याख्या करते है?

है जो मेरे अर्थको ज्यो-का-त्यो पाठको तक पहुँचा दे। लेकिन मै हारनेवाला नही, प्रयत्न करनेमे सफलता अवश्य मिलेगी।

अहिसा नाशक नही, पोपक है। इसीसे वह 'मुसीबतोका' 'सामना' उन्हे लाँघकर करती है। मेरा सूत अनेक बार उलझ जाता है और उस गुत्थीको तोड दूँ तो सूत हाथसे जाता ही है। हालाँकि तोडना आसान काम है और तुरन्त हो जाता है, लेकिन इससे सत्य मेरे हाथ नही लगता। मै गुत्थीका 'सामना' उसे खोलकर करता हूँ, तो समय जरूर लगता है लेकिन उससे सूत बचता है और मै धीरजका पाठ सीख पाता हूँ। इसके अतिरिक्त उस गुत्थीके सुलझनेपर मेरे आनन्दका पार ही नही रह जाता। दूसरे कातनेवालोका मार्ग मै साफ करता हूँ। मेरे ज्ञानमे इजाफा होता है। और मै देखता हूँ कि उसमे जो समय लगता है वह जाया नही गया। और मुझे उससे शिक्षा मिलती है कि उस गुत्थीको तोड फेकनेका सहल और सक्षिप्त जान पडनेवाला मार्ग खोटा और लम्बा था। गुत्थीको सुलझाते हुए मैने उसका 'सामना' तो किया ही, लेकिन उसको सहकर, अपनाकर मैने यह भी सीखा कि उस उलझनका कर्त्ता स्वय मै था। उसके अस्तित्वकी जिम्मेदारी मेरी थी।

इस तरह सहन करनेमे अनेक सद्‌गुण कैसे आ गये यह बात भी, मै समझता हूँ, मैने उपर्युक्त दृष्टान्तसे स्पष्ट कर दी है। मेरा खयाल है कि ऐसे ही अन्य दृष्टान्तोको घटाकर मेरे लिखनेके सिद्धान्तको ज्यादा अच्छी तरह समझा जा सकता है। दृष्टान्त तो अनेक मिल जायेगे, लेकिन इसका अर्थ यह नही कि अहिसाकी समस्त समस्याएँ सुलझ सकती है। अथवा इसकी सारी कुजियाँ किसी मनुष्यके हाथमे धरी है। यह शास्त्र सम्पूर्णताको प्राप्त नही हुआ है। भला कोई भी शास्त्र सम्पूर्णताको प्राप्त हुआ कहा जा सकता है? किसी भी शास्त्रज्ञका ज्ञान उसके बढते जाते अज्ञानको माप सकनेमे ही निहित है। अहिसा एक गूढ शास्त्र है। हमे अनेक प्रयोग करने पडेगे, अनेक मनुष्योको अपनी आहुति देनी होगी। अभी तो इतना ही निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि अहिसा ही सत्येश्वर के दर्शन करनेका सीधा और सबसे छोटा मार्ग जान पडता है। और हिसाकी मजिल तो हम दीर्घकालमे काटते चले आये है और फिर भी हम सत्यसे दूर जाते हुए प्रतीत होते है।

कुत्ते, बिल्लियो, सूक्ष्म जीवो और वनस्पतिका नाश भी हिसा ही है, इसलिए वह भी पाप ही है। मनुष्य मात्र पाप बिना देहको धारण नही कर सकता, लेकिन लौकिक दृष्टिमे विचार करते हुए केवल देहका पोपण करनेके निमित्त की गई ओछीसे-ओछी अनिवार्य हिसाको पाप नही माना जाता।

हिंसाकी अब उसके सकुचित अर्थमे व्याख्या की जा सकती है। स्वेच्छासे, अपने शौकके लिए, बिना किसी कारणके चीटीमे भी छोटे जन्तुका नाश करना हिसा है। उसके नाशकी इच्छा न करना, नाश न करना, और नाश न करवाना अहिसा है।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, २९-१०-१९३३

१८१. पत्र: आनन्द तो० हिंगोरानीको

वर्धा

२९ अक्टूबर, १९३३

प्रिय आनन्द,

तुम्हे मलेरियाको जडमूलसे उखाड फेकना चाहिए। मुझे उम्मीद है कि तुम्हे मुल्तान जानेमे ज्यादा श्रम नही पडा है। विद्या धीरे-धीरे खुल रही है। कभी उदास और कभी प्रसन्न, अब उसकी मन स्थिति ऐसी नही है। वह मेरे साथ टहलनेको जाती है। उसे क्लबकी व्यवस्था पसन्द है। उसका स्वास्थ्य अच्छा है और महादेवका भी अच्छा है। तुम्हे उसके बारेमे कोई चिन्ता नही करनी चाहिए। वह आज अपनेको उपयोगी काममे लगाये हुए है। वह मेरे लिए कुछ काम कर रही है। वह नियमित रूपसे अंग्रेजी पढ रही है। उसने मुझसे तुम्हारी माँको एक लम्बा पत्र लिखवाया।[1] आज उसने पहली बार अपने लिए मक्खन तैयार किया। इसलिए उसे ईश्वर पर छोड दो।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी माइक्रोफिल्मसे, सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

१८२. पत्र: कान्ति पारेख और जयन्ती पारेखको

२९ अक्टूबर, १९३३

चि० कान्ति, जयन्ती,

तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला। मै समझता हूँ कि तुम दोनोने खूब कमाई की है। स्वास्थ्यका ध्यान रखना। शुद्धतम रहना। जब लिखा जा सके तब लिखना। काका साहब यही है। आज उनके उपवासका चौथा दिन है। सात दिवसका व्रत है। वे गुरुवारको सवा बजे उपवास तोडेंगे। उनकी तबीयत अच्छी रहती है। यह उपवास प्रायश्चित्त स्वरूप है। सुरेन्द्रजी और दरबारी उनकी सेवामे रहते है। प्रभुदास लिखने का काम करता है। खूब प्रफुल्लित रहते है। वे बराबर पानी पी सकते है, इसलिए

१. देखिए "पत्र गंगा तो० हिंगोरानीको", २२-१०-१९३३।

उन्हे कोई दिक्कत नही होती। किशोरलाल और गोमतीबहन अकोलामे है। वे इस मासके अन्तमे बम्बई जायेगे।

रमाबहन जोशीका हाथ अभी ठीक है। वे कल यहाँ आयेगी और रहेगी। यहाँ अभी लडकियोकी भर्ती चालू है। चार घटे उद्योग और चार घटे पढाई चलती है। मराठी सीखना अनिवार्य है।

बालकृष्ण स्वास्थ्य बनानेके लिए दूधके प्रयोग कर रहा है। चार दिन उपवास करनेके बाद चार दिन फलोपर रहा। अब केवल दूध पीता है, पानी भी नही लेता। आज दूधका तीसरा दिन है। रोज बीस तोले बढाता है। आज तीन पाव पियेगा। अभी परिणामके बारेमे कुछ नही बताया जा सकता।

स्वामी आनन्द यही है। इन सबको थोडे दिनोका मेहमान समझो। कुमारप्पा आकर चले गये।

विनोबाने एक श्लोककी रचना की है जिसमे ग्यारह व्रत बताये गये है। उसे रोज दो बार गाया जाता है[1]

> अहिसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असग्रह
> शरीरश्रम, अस्वाद, सर्वत्र भयवर्जन
> सर्वधर्मीसमानत्व, स्वदेशी, स्पर्शभावना
> ही एकादश सेवावी, नम्रत्वे व्रतनिश्चये ।।

मणि और बाबलो आनन्दीके साथ गये है। वनमाला और मोहन काठलालसे शामिल हो गये होगे।

तोतारामजी और हरिप्रसाद[2] यही है। उन्हे हरिजन सेवाके लिए साबरमती भेजना है।

विट्ठलभाईका शव ९ तारीखको बम्बई पहुँचेगा। अन्त्येष्टि धूमधामसे होगी। डाह्याभाई अग्नि देगे। मणिबहन और मृदुलाबहन तीन दिन आकर रह गई।

यदि इनमे से कुछ खबरे मै दोबारा लिख गया हूँ तो बूढा समझकर मुझे माफ कर दोगे न? मै जितने पत्र लिखता हूँ यदि उन सबको याद रखूँ तो उनके बोझ तले मै दब ही जाऊँ। जिस तरह स्मरण-शक्तिको बनाये रखना स्पृहणीय है उसी तरह भूल जानेकी शक्तिका विकास भी किया जाना चाहिए। यदि यह न हो तो हम या तो हमेशा हँसते ही रहे और या फिर हमेशा रोते ही रहे। लेकिन यह तो मैने बीच मे थोडा-सा व्याख्यान ही दे डाला। कुछ रह जानेकी अपेक्षा कई खबरे दुबारा देनेमे क्या हर्ज है?

अब तुम्हारे सवाल और तुम्हारी बाते सोनेकी मुहरो जैसी है, लेकिन "निग्रह किं करिष्यति?"[3] किसीको हम जबरदस्ती कुँवारा रख सकते है? देवदास और प्रभुदास बत्तीस वर्षतक रुके लेकिन अपने पर वश न चलनेके कारण उन्होने विवाह

१ श्लोक मराठीमें है।
२ तोतारामजीके दत्तक पुत्र।
३ **भगवद्गीता**, ३, ३३। देखिए खण्ड ३२, पृष्ठ १७४-५।

कर लिया। मनमे विषयोका सेवन करनेसे तो विनम्रतापूर्वक अपनी असमर्थताको स्वीकार करना बेहतर है न? दोनो ने प्रयत्न तो खूब किया, इसकी साक्षी मै हूँ।

कर्मेन्द्रियाणि सयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्
इन्द्रियार्थान् विमूढात्मा मिथ्याचार स उच्यते ॥[1]

अब यदि दोनो नम्रभावसे अपनी इच्छा व्यक्त करे तो उन्हे आशीर्वाद न देना हिसा होगी। आदर्शका पालन करनेके लिए जी-तोड प्रयत्न करना चाहिए। लेकिन यदि वैसा करनेके बावजूद मनपर अकुश न रह सके तो मिथ्याचारी न होकर जो-कुछ बन सके उससे सन्तुष्ट रहना चाहिए। ऐसा व्यवहार करनेवाले लोग बडोके आशीर्वादके पात्र है। चादरको देखकर पैर पसारने चाहिए। सक्षेपमे, जो मनुष्य अपनेको और जगतको धोखा नही देता वह अन्तत आगे निकल जाता है। अब यदि मै तुम्हे अपनी बात न समझा सका होऊँ तो समय आनेपर मुझसे पूछना।

अभी इधर मुझे इन्दुका कोई पत्र नही मिला है लेकिन केशूके नाम उसका पत्र आया था। वह मजेमे है। बलभद्र और धीरू भी उसके साथ है। मणिभाई कोठारी बढवानमे है। वहाँ वे हरिजन और खादीका काम करते है। मेरा दौरा आठको शुरू हो रहा है। साथियोके नाम तो मै दे चुका हूँ। उसमे रामनाथ 'सुमन'का नाम जोडना है। वे हिन्दी साहित्यके प्रेमी है, और अच्छे लेखक है। अन्तमे उनका विचार आश्रममे शामिल हो जानेका है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६२७५) से।

१८३. पत्र : डॉ० एम० एस० केलकरको

सत्याग्रह आश्रम, वर्धा
३० अक्टूबर, १९३३

प्रिय डॉ० केलकर,

दुग्ध-चिकित्साके अन्तर्गत आप बीमारोको जितना दूध पीनेके लिए कहते है उतनी ही मात्रामे उन्हे पानी पीनेकी सलाह देते है, क्या आप मुझे यथासम्भव सक्षेपमे इसके कारण लिखकर भेजेगे? उम्मीद है आपके प्रयोग वहाँ सफलतापूर्वक चल रहे होगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१०८) से। सी० डब्ल्यू० ३३०१ से भी; सौजन्य एम० एस० केलकर

[1] भगवद्गीता, ३, ६। देखिए खण्ड ३२, पृष्ठ १४७-८ भी।

१८४. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

३० अक्टूबर, १९३३

प्रिय जवाहरलाल,

अस्पतालके[1] सम्बन्धमे तुम्हारा पत्र मिला। तुममे विरोधका भय किये बिना यह कहनेकी क्षमता होनी चाहिए कि स्वराज्य भवन डिस्पेसरी बिलकुल धोखा है और इसका पूरी तरह बहिष्कार किया जाना चाहिए। बिना किसी सुनिश्चित प्रमाणके मै यह माननेको तैयार नही हूँ कि वे 'केस' बनाते है। मै इस प्रमाणको पानेके लिए उत्सुक हूँ, क्योकि काग्रेस-अस्पतालके सम्बन्धमे अपनी राय कायम करनेमे मुझे इसकी जरूरत है और मै समझता हू कि यदि सरकारी प्रबन्ध विफल साबित हुआ हो तो हमे स्वराज्य भवन पूरी तौरपर अस्पतालके कार्यके लिए लेनेमे समर्थ होना चाहिए। यदि तुम समझते हो कि काग्रेस अस्पताल या डिस्पेसरी जहाँ इस समय चल रही है वही चलनी चाहिए और स्वराज्य भवनको दुबारा कब्जेमे लेनेका कोई भी प्रयत्न नही करना चाहिए तो ऐसी हालतमे एक अपील जारी करना अत्यन्त जरूरी हो जाता है और यह अपील मोहनलाल नेहरु[2] और कमलाके नामोसे जारी होनी चाहिए।

मुझे खुशी है कि माताजीकी हालतमे धीरे-धीरे सुधार हो रहा है। वास्तवमे विवाहके सफलतापूर्वक सम्पन्न हो जानेका भी उनके मानसिक तनावको शान्त करनेमे कुछ-न-कुछ हाथ रहा है।

एन्ड्रयूजके यहाँपर बुधवारको पहुँचनेकी आशा है।

जमनालालजीके बारेमे जो तुम्हारा कहना है उसे मै समझता हूँ। तुम्हारी रायमे इसकी घोषणा बिना जोखिम कब की जा सकती है?

ठक्कर बापा लिखते है कि तुमने काग्रेसियोको हरिजनोके हितके लिए काम करनेसे मना कर दिया है, भले ही वे सविनय अवज्ञामे भाग नही भी ले रहे हो।

१ स्वराज्य भवनमें काग्रेस द्वारा चलाये जानेवाले अस्पतालको १९३१ में सरकारने अपने हाथमें ले लिया था। कुछ समय बाद ब्रिटिश अधिकारियोने 'दिखावे' के तौरपर जनताके लिए एक डिस्पेंसरी बराबर खुली रखनेका निश्चय किया। जवाहरलालने लिखा, "लेकिन इसका कोई प्रमाण नही है कि जनताके किसी एक भी व्यक्तिने इसका फायदा उठाया हो। मुझे बताया गया है कि रजिस्टरमें झूठे इन्दराज किये जाते है, यह दिखानेके लिए कि बहुतसे रोगियोका उपचार किया जा रहा है।" इस अस्पतालके सरकारी नियन्त्रणमें ले लिये जानेके बाद काग्रेसने एक अस्पताल खोल दिया है जो अप्रैल, १९३२ से स्वराज्य भवनसे लगी एक कुटियामे चल रहा है। काग्रेस अस्पतालको चलानेवाले सभी साधन "लगभग समाप्त" हो चुके है।

२ जवाहरलाल नेहरूके चचेरे भाई।

इसमे कहाँ तक सचाई है! इस प्रकारके किसी प्रतिबन्धके सम्बन्धमे मुझे कुछ पता नही है।

सप्रेम,

बापू

[अंग्रेजीसे]

गांधी-नेहरू पेपर्स, १९३३, सौजन्य नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय

१८५. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

३० अक्टूबर, १९३३

विट्ठलभाईका अग्नि-संस्कार मेरे हाथो हो, क्या इस बातमे तेरा भी कोई हाथ है? तूने मेरी टिप्पणी तो पढी होगी। यदि किसीको मेरी उपस्थितिकी आशा हो तो तू उसे निरुत्साहित करना — यदि तुझसे बन सके तो। मेरे ऊपर दबाव डाला गया तो मै उसका उपाय कर लूंगा। लेकिन बेहतर यह होगा कि कोई दबाव न डाला जाये। मेरा मन बाहरकी चीजोमे जाता ही नही है, जेलमे ही रहता है। मैं येन केन प्रकारेण हरिजन यात्रा-भर करूँगा। इसके अलावा मै अन्य चीजोपर कदाचित् ही कोई विचार करता हूँ।

[गुजरातीसे]

बापुनी प्रसादी, पृष्ठ १३९

१८६. पत्र : एच० के० हेल्सको

सत्याग्रह आश्रम, वर्धा
३१ अक्टूबर, १९३३

प्रिय मित्र,

आपका इसी २५ तारीखका पत्र मिला। इस वर्तमान फूट और कलह मे उस अमुक व्यक्तिके स्थानपर जो भी व्यक्ति मेल-मिलापका वातावरण पैदा कर देगा उसको धन्यवाद देनेवाला मै पहला व्यक्ति होऊँगा। आपको अपने काममे पूरी सफलता मिले, इसकी मै कामना करता हूँ।

निःसन्देह हिन्दू-मुस्लिम तनाव बुरी चीज है। बस मेरी समझमे ही नही आता कि इसे दूर कैसे किया जाये। मुझमे जितनी भी सामर्थ्य है उसके अनुसार मै व्यक्तिगत तौरपर पूरा प्रयत्न कर रहा हूँ, लेकिन यह तो कोई बहुत बडा आश्वासन नही हो सकता।

बेशक, अपनी असफलताओंमें मैं घबराता नहीं। मैं हरेक असफलताको सफलताकी ओर ले जानेवाली एक-एक सीढ़ी मानता हूँ। लेकिन यह एक चीज है और सफलताकी थोड़ी भी आशा न करते हुए भी प्रयत्न करना दूसरी चीज है। इसलिए आप मेरी इस बातका विश्वास कीजिए कि मैं जब भी समझौते द्वारा इस मामलेको आगे बढ़ानेका थोड़ा भी अवसर देखूँगा और उसमें सहयोग दे सकूँगा, तो मैं इस मामलेमें कूदते हुए हिचकूँगा नहीं।

'व्हाइट पेपर' जब पहले-पहल प्रकाशमें आया तो मुझे उससे खुशी नहीं हुई। और आज तो और भी कम खुशी है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २६-११-१९३३

१८७. पत्र: आनन्द तो० हिंगोरानीको

३१ अक्टूबर, १९३३

प्रिय आनन्द,

देवदासके बारेमें मुझे तुम्हारा पत्र मिला। तुमने अच्छा विवरण दिया है। इससे मैं देख सकता हूँ कि एक प्रत्यक्षदर्शीसे समाचार पाकर देवदासका मन कितना मुदित हुआ होगा। लेकिन मुझे इस पत्रमें उस बमकी ही बात करनी चाहिए जो तुम पर आ गिरा है।

तुम्हें पिताकी बातोंको बढ़ा-चढ़ा कर नहीं कहना चाहिए। तुम्हें इन सब चीजोंके लिए तैयार रहना होगा और यदि तुम शान्त और अपने निश्चय पर दृढ़ रहोगे तो सारे बादल छँट जायेंगे। तुम्हें अपने माता-पितासे कोमलतापूर्वक लेकिन दृढ़ शब्दोंमें बातचीत करनी चाहिए और बताना चाहिए कि वे तुम्हें अपना भविष्य आप निर्धारित करने दें। उन्होंने तुम्हें उदार शिक्षा दी है। अब उन्हें उसके परिणामको लेकर झगड़ा नहीं करना चाहिए। जितने विनम्र शब्दोंमें हो सके उतने विनम्र शब्दोंमें अपनी स्थिति स्पष्ट करनेके बाद तुम्हें अपना कार्यक्रम तय करना चाहिए। तुम्हें कराचीमें गिरफ्तार होनेसे बचना चाहिए। आखिरकार हैदराबाद तुम्हारा कार्यक्षेत्र है और वहाँ तुम मित्रोंकी सलाहसे काम करोगे। एक अच्छे सत्याग्रहीकी तरह तुम्हें एक चीजसे बचना चाहिए। कार्यक्षेत्रका चुनाव करते समय तुम्हें अपनी सुविधाओंका अथवा उन कष्टोंका ध्यान नहीं करना चाहिए। इसलिए तुम्हें वर्धाके आसपास अपने-आपको गिरफ्तार होने देनेका विचार छोड़ देना चाहिए। यह सत्याग्रहकी भावनाके विरुद्ध होगा।

मैंने विद्याके साथ सारी स्थिति पर बातचीत की है और मेरा खयाल है कि वह मुझसे सहमत है। मुझे उसके साथ तर्क नहीं करना पड़ा, उसने स्वयं ही कहा

कि जब उसने तुम्हारे अपनेको गिरफ्तार होने देनेकी और अपने वर्धा रहनेकी बातको स्वीकार कर लिया तब उसने यह भी मान लिया कि वह कैदकी अवधिके दौरान तुमसे नही मिलेगी। उसने कहा कि यदि तुम्हे पत्र लिखनेकी अनुमति दी जाती है, जैसाकि तुम्हे निश्चय ही दी जायेगी, तो इतना ही पर्याप्त होगा और मेरा खयाल है कि यदि तुम कराचीमे ही गिरफ्तार हो जाते हो तब भी यही स्थिति ठीक है। विद्या सचमुच बहुत अच्छी चल रही है। वह अब अन्यमनस्क दिखाई नही देती, वह उद्भ्रान्त नही है और वह अधिकाधिक प्रसन्नचित्त दिखाई देती है। और मै चाहता हूँ कि तुम भी प्रसन्न रहो और प्रसन्न मनसे उसे पत्र लिखो।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी माइक्रोफिल्मसे, सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

१८८. पत्र : छगनलाल जोशीको

३१ अक्टूबर, १९३३

चि० छगनलाल,

कल रमा और विमला[1] आई थी। और चूँकि तुम दोनोसे अभी हाल ही मे मिले थे इसलिए उनके बारेमे कुछ नही लिखता। रमासे मुझे मालूम हुआ है कि तुम्हे पत्र लिखा जाये तो वह तुम्हे मिल सकता है और तुम मेरे पत्रकी उम्मीद लगाये बैठे हो। उम्मीद करनी तो अवश्य चाहिए। लेकिन स्वयं रमा ही जब थोडे पत्र लिख सकती है तो उसमे मै क्योंकर हिस्सा बँटाऊँ, यह सोचकर ही मैने तुम्हे कोई पत्र नही लिखा। लेकिन दमयन्ती जैसे पेडोसे नलका समाचार पूछती फिरती थी उसी तरह जो कोई मेरे हाथ लग जाता था उससे मै तुम्हारा समाचार पूछ लेता था और इस तरह कुछ-न-कुछ जान लेता था।

मेरे पास तुम इतने समय तक रहे इसका कोई-न-कोई बदला तो अवश्य चुकाना चाहिए और वह तुमने अच्छी तरह चुकाया है। महादेवने भी चुकाया है और आज भी चुका रहा है। लेकिन सूर्य जिस प्रकार अपने साथ छाया लेकर चलता है और उस छायाके पीछे उजाला भी अवश्य रहता है उसी तरह महादेव कही-न-कहीसे शान्ति तो प्राप्त कर ही लेता है। तुम पर भी यही बात लागू होती है। तुम्हे पुस्तकोका सत्संग मिलता रहता है और फिर तुम्हे बाहरसे मक्खन मँगवानेकी अनुमति भी मिल गई है, सो अब बाकी क्या बचा? चाहे कैसी भी परिस्थितियाँ क्यो न हो लेकिन मनको सदैव प्रसन्न रखनेका 'गीता' का पाठ तुमने कितने ही वर्षोसे कण्ठस्थ कर रखा है। उसको व्यवहारमे लानेका प्रसग उपस्थित होनेपर यदि हम उसे व्यवहारमे न लाये तो यह हमारे लिए शर्मकी बात होगी न? इसलिए मै तुम्हारे बारेमे निश्चिन्त

१ छगनलाल जोशीकी पुत्री।

हूँ और यह माने हुए हूँ कि तुम परीक्षामे असफल नही होगे अपितु प्रथम वर्गके अक प्राप्त करोगे।

काकाका उपवास चल रहा है। सात दिनोका व्रत था। यह परसो अर्थात् गुरुवारको पूरा होगा। यह उपवास के[1] लिए है। वे बहुत प्रसन्न है। उपवासका उनपर कोई विशेष प्रभाव नही पडा हे। थोडी कमजोरी तो होगी ही। वे खुले आकाशके नीचे सोते है। अच्छी नीद आती है। वे अच्छी मात्रामे पानी पी सकते है। इस बारेमे वे मुझसे खूब आगे जा सकते है। सुरेन्द्र और अपनेको इनका शिष्य माननेवाले दरबारी इनकी सेवामे रहते है। इसलिए यह बात तुम सहज ही समझ सकते हो कि उनकी सेवा अच्छी तरहसे की जाती है। प्रभुदास उनके सचिवका काम करता है। उन्हे जो थोडे पत्र लिखवाने होते है सो लिखता है। उन्हे 'गीता', 'उपनिषद' आदि पढकर सुनाता है। स्वामी भी फिलहाल यही है। किशोरलाल और गोमती आज आये है। यहाँका मौसम तो इन दिनोमे बहुत अच्छा होता ही है। वर्धा आश्रम कन्या आश्रम बन गया है। यहाँ इस समय चालीससे अधिक लडकियाँ है। लक्ष्मीबहन जी-तोड मेहनत कर रही है। उनकी सहायताके लिए द्वारकानाथ है। अभी-अभी एक सगीत शास्त्रीको नियुक्त किया है। लेकिन प्रार्थना तो लक्ष्मीबहन स्वय ही चलाती है। उनका स्वर मधुर है, यह बात तो मै पहलेसे ही जानता था लेकिन उन्हे एकाध सौ भजन कण्ठस्थ है, इसकी मुझे खबर नही थी। बृहस्पतिवार और शुक्रवारको शामके दो भजन मथुरी[2] गाती है और गुरुवारको गाई जानेवाली गजलमे उसका साथ योगा[3] देती है।

प्रभुदासका विवाह अभी हाल ही मे सम्पन्न हुआ है। कन्या उत्तर भारतकी है। उसका नाम अम्बा है, २५ वॉ वर्ष चल रहा है। यह पसन्द प्रभुदासकी ही है। उसको खोज निकालनेका पुरुषार्थ भी उसीका है। अम्बाकी सादगी प्रभुदासकी सादगीसे बढकर है। उसमे साहस भी बहुत है। प्रभुदास बहुत खुश है। मै जबतक हू तबतक तो दोनो यही है। मेरा दौरा ८ तारीखसे शुरू होगा। विवाहके समय काशी[4], छगनलाल[5] अथवा बाहरके भी सगे-सम्बन्धी अथवा मित्रको निमन्त्रण नही दिया गया था। कन्यापक्षकी ओरसे भी छ व्यक्ति ही आये थे। तात्पर्य यह कि यह विवाह अत्यन्त सादगीके साथ सम्पन्न हुआ, ऐसा कह सकते है। विवाह सम्पन्न करवानेके लिए वर्धाके ही एक शास्त्री थे और उसकी देखरेखके लिए काका थे।

तुम जिन लडकियोको जानते हो उनमे चन्द्रकान्ता[6] भी यही है। विद्या हिंगोरानी[7] भी यही है और एक वर्ष तक तो अवश्य रहेगी। विनोबा यहाँसे एक मील

१ नाम नही दिया गया है।

२ लक्ष्मीबहन खरेकी पुत्री।

३ पण्डित खरेके भाईकी पुत्री श्रीमती सोमण।

४ और ५ प्रभुदासके माता-पिता।

६ सुमगल प्रकाशकी बहन।

७. आनन्द हिंगोरानीकी पत्नी।

दूर (हरिजनोके एक) गाँवमे रहते है, यह तो तुम्हे मालूम ही है। लेकिन कन्या आश्रमके लिए नैतिक जिम्मेदारी उन्हीकी है। आनन्दी, बबु और बचु मेरे साथ आये थे, अब वापस चले गये हैं। तुम्हे यह जानकर आश्चर्य होगा कि लडकियोको शारदा मन्दिर पढनेके लिए जाना अच्छा नही लगता। वे घरमे पढाये जानेकी व्यवस्थाकी माँग करती है। मै इसकी तजवीज कर रहा हूँ, कोई दिक्कत नही होगी। इनके अलावा वनमाला, मोहन, मणि और बाबलो तो है ही। और ये सब अनुसूयाबहनके हरिजन बालाश्रममे हैं। वे वहाँ खुशीसे रहने गये हैं। खुराक वगैरहमे अवश्य थोडी दिक्कत पेश आती है। हरिजन कन्याओकी खुराक तो बहुत सादी होती है। इन्हे दूध, घी भी कम ही मिलता है। अपने बच्चोको यदि हम उनके जैसी खुराकपर रखनेका आग्रह करे तो उनके शरीर ही सूख जाये। इसलिए वहाँ रहते हुए भी उन्हे उचित खुराक मिल सके, मै इस सम्भावनापर विचार कर रहा हूँ। इस बीच वे किसी-न-किसी तरह आवश्यक खुराक तो लेते ही है। अमीनाके बच्चे भी इसी आश्रममे है और वे घुलमिल गये है। सारा दिन ऊधम मचाते है। उनको 'कुरान' और उर्दू सिखानेके लिए एक मुन्शी रखा है।

आश्रमको अन्तत हरिजन कार्यके लिए अर्पित कर दिया गया है, यह बात तो तुम्हे मालूम हो ही गई होगी। तोतारामजीको आश्रम भेजनेका निश्चय किया गया है। हरिप्रसाद भी वही जायेगा। ये दोनो फिलहाल यही हैं। पन्नालाल[1] स्वतन्त्र रूपसे गोशाला खोलना चाहता है। उसे मैने यही आनेके लिए पत्र तो लिखा है। वह फिलहाल नानीबहन[2] और गगाबहनके[3] साथ अहमदाबाद मे है। हमारी दुग्धशाला कॉकरिया तालाब पर शकरलालकी[4] देखरेखमे टाइटस चला रहा है, अच्छी चल रही है। अब उसके सम्बन्धमे भी हमारी कोई जिम्मेदारी नही है।

आश्रम और विद्यापीठके पुस्तकालय नगरपालिकाको सौप दिये गये है, यह तो तुम जानते ही होगे। रावजीभाई[5] और मोहनलाल भट्टको[6] एक दो दिनमे यहाँ पहुँच जाना चाहिए। बा मन्दिरमे जानेकी तैयारी कर रही है। मनु यही है। धीरू, बलभद्र और इन्दुने भावनगरमे अड्डा जमा लिया है। दूधीबहन अपने बच्चोके साथ वही रहती है। का शारदा मन्दिरमे है। यह लिखावट तो तुम पहचानते ही होगे। इतनेमे मैने तुम्हे काफी समाचार दे दिये है। अभी और भी दे सकता हूँ, लेकिन समय कहाँ से लाऊँ? इसलिए बाकी की पूर्ति स्वामी करेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५१३) से।

१. पन्नालाल झवेरी।
२. पन्नालालकी पत्नी।
३ पन्नालालकी सौतेली माँ।
४ शकरलाल बैंकर।
५ रावजीभाई नाथभाई पटेल, जो साबरमती आश्रममें खादी-विभागके अध्यक्ष थे।
६ नवजीवन प्रेसके मैनेजर।

१८९. तार : आनन्द तो० हिंगोरानीको

वर्धा
१ नवम्बर, १९३३

आनन्द हिंगोरानी
सहितीपुर
बन्दर रोड
कराची

तुम्हारा पत्र मिला। कार्यवाही हैदराबादमे हो। सिन्धके बाहर अनावश्यक।[1]

बापू

अंग्रेजीकी माइक्रोफिल्मसे, राष्ट्रीय अभिलेखागार तथा आनन्द तो० हिंगोरानी

१९०. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

असंशोधित

१ नवम्बर, १९३३

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे बहुतसे पत्र मिले। मै देखता हूँ कि तुमने दोनो त्यागपत्र[2] अखबारोको दे दिये है। उनसे थोडी बहुत बात साफ हो जानी चाहिए।

हिन्दू सभाकी गतिविधियाँ मेरी समझमे नही आई। वे दुष्टतापूर्ण है। यदि वे शुद्धिके सम्बन्धमे मेरे नामका प्रयोग कर रहे है तो यह बहुत बेईमानीकी बात है। यदि तुम्हारे पास [इस सम्बन्धमे] कोई प्रकाशित सामग्री हो तो कृपया मुझे दे देना। मेरे विचारमे तथाकथित या वास्तविक राष्ट्रीय अखबारोने इसकी गतिविधियोका स्वागत नही किया है और अक्सर इसकी आलोचना ही की है। मौलाना अबुलकलाम आजादकी पुस्तकपर प्रतिबन्ध लगानेके सम्बन्धमे मुझे कुछ पता नही है। हरिजनोके लिए कार्योका जहाँतक सवाल है, शिकायत बिल्कुल अनुचित है। मेरी अन्तरात्मा बिलकुल साफ है। जहाँ तक तुम्हारा और मेरा सम्बन्ध है, यदि तुम चाहो तो हम

१. देखिए "पत्र आनन्द तो० हिंगोरानीको", ३१-१०-१९३३।
२ जमनालाल बजाज और डॉ० शेख मुहम्मद आलमके।

पत्र-व्यवहार द्वारा अपने मन और हाथ दोनो साफ कर सकते है। मुझे नही मालूम कि विशिष्ट कार्योकी जोरदार शब्दोमे निन्दा करनेके अलावा और कौन-सी आक्रामक कार्रवाई सम्भव है या वाछनीय है।

गोरखपुरके बारेमे क्या किया जा सकता है, यह मेरी समझमे नही आ रहा। तुम्हारे कार्यकर्त्ताओ और दलके लोगोके लिए चन्दा हासिल करनेमे मुझे कठिनाई हो रही है। मै अभी भी इन दोनोके बारेमे बातचीत कर रहा हूँ। बाबा राघवदासने मुझसे कहा है कि वे सकटग्रस्त किसानोके लिए अनाज इकट्ठा करनेकी कोशिश कर रहे है। उन्होने मुझे अत्याचारका प्रामाणिक विवरण भेजनेका वायदा कर रखा है।

कल नरीमन[1] यहाँपर आये थे। मैने उन्हे तुमसे मिलनेकी सलाह दी है और उन्हे बता दिया है कि तुम मेरे 'राजनैतिक मुखिया हो।' इसके अलावा मै क्या कर सकता था? मै तो पूरी तरह बदनाम हूँ कि मै एक धार्मिक सनकी हूँ और मुख्यत एक समाज-सेवक हूँ। मैने उनसे कहा है कि यदि मुझे इस बातका यकीन हो जाये कि अखिल भारतीय काग्रेस कमेटीके सदस्य सविनय अवज्ञाको समाप्त करने और कौसिल-प्रवेश कार्यक्रमको अपनानेके इच्छुक है तो मै तुरन्त तुमसे अखिल भारतीय काग्रेस कमेटीकी बैठक बुलानेके लिए कहूँगा। मै यह सब इसलिए नही करता क्योकि मुझे भरोसा है कि अधिकाश सदस्य सविनय अवज्ञा कार्यक्रमपर आग्रह करेगे और दूसरे, मै यह नही चाहता कि सरकारको अध्यादेश रूपी तलवारका प्रयोग करनेका अवसर दूँ। मैने उनसे कह भी दिया है कि अ० भा० का० क० जो कार्यक्रम चाहेगी मै उसका विरोध नही करूँगा, हालाँकि सविनय अवज्ञाको बन्द करनेकी स्वीकृति मै नही दे सकता। मेरे विचारमे केलकरके[2] विचार शुद्ध और दृढ है। वह स्पष्ट रूपसे असहयोग आन्दोलन और सविनय अवज्ञाको नापसन्द करते है। आतकवादी कहे या किसी और नामसे पुकारे, केलकर उनका साथ नही देगे। इसके बाद राजनीतिक कार्य करनेवाले व्यक्तिके लिए कौसिल-प्रवेश ही एक कार्यक्रम रह जाता है। निराशा-जनक अकर्मण्यता सबसे बुरी चीज है और इसको प्रोत्साहन नही देना चाहिए।

मेरे खयालमे तुमने अपने पत्रोमे जो मुद्दे उठाये थे मैने उन सबका जवाब दे दिया है, यहाँ तक कि जो मुद्दे नही उठाये थे उनका भी। इस समय सुबहके चार बजनेवाले है।

उम्मीद है माँके स्वास्थ्यमे सुधार जारी है। इस पत्रके साथ एक पत्र[3] कमलाके लिए है।

सप्रेम,

बापू

[अग्रेजीसे]

गाधी-नेहरू पेपर्स, १९३३, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

१. के० एफ० नरीमन।
२. एन० सी० केलकर।
३. उपलब्ध नही है।

१९१. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

१ नवम्बर, १९३३

भाई वल्लभभाई,

अंग्रेजीमे कहावत है कि महान् पुरुष एक जैसा ही सोचते है। हम भी तो महान् ही कहलाते है अत विट्ठलभाईके दाह सस्कारके बारेमे दोनोने एक जैसा ही सोचा।[1] मैंने डाह्याभाईको लिख दिया है। तुम्हारे विचारानुसार मै कुछ भी प्रकाशित करनेवाला नही हूँ। तुम्हे जो तार मिले हैं उनके बारेमे जो पत्र तुम मुझे लिखोगे मेजरसे[2] पूछकर एक यह पक्ति लिखना, "जिन लोगोने मुझे सम्वेदनाके तार और पत्र भेजे है मेरी ओरसे उन सब लोगोके आभार प्रेस द्वारा माने।" यदि मेजर इसे पास न कर सके तो आई० जी० से पूछवाये और यदि अनुमति मिल जाये तो हम प्रकाशित करेगे।[3]

नरीमन कल यहाँ आये थे। उन्होने मेरा खासा समय लिया और मैंने दिया। मेरे दरोगाने[4] देने दिया। लेकिन अब तो हम चाहे कितने ही प्रयत्न क्यो न करे, हमे कुछ हासिल होनेवाला नही है।

आज दीनबन्धु आ रहे है। खूब घूमे है, इसलिए मुझसे खासा समय माँगेगे और मुझे देना ही होगा। काका का उपवास कल पूरा होगा। वह प्रसन्न है। उपवासका उनपर कोई खास असर नही हुआ है। काका को [पेशाबके समय] मेरी तरह जलन नही होती। वे खूब पानी पी सकते है। उसमे नमक पडा हो तो भी, सोडा हो तो भी, और ठडा हो तो भी अथवा गर्म हो तब भी। यदि ईश्वर मुझे यह शक्ति दे दे तो मै इस उम्रमे भी भणसालीसे[5] प्रतिस्पर्धा करूँ। बादमे उनके जैसा ही पागलपन मुझपर ही चढ आये तो भले आ जाये। वह सनईकी मोटी रस्सीके साथ कमरमे टाटकी लँगोटी डाले रहते है। आटा पानीमे घोलकर पीते है और घूमते फिरते है। कभी-कभी कार्ड लिखकर दर्शन देते है और लिखते है कि सच्चा अनुभव तो वे केवल अब प्राप्त कर रहे है।

१ २९ अक्टूबर, १९३३के अपने पत्रमें सरदार वल्लभभाई पटेलने लिखा था कि उन्होंने मित्रोंको सूचित कर दिया है कि एक सत्याग्रहीके नाते दाह-सस्कारके लिए सरकारसे रिहा किये जानेकी माँग करना उनके लिए उचित नही है।

२. नासिक जेलके सुपरिटेंडेंट।

३ साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ नही दिया है।

४ जमनालाल बजाज।

५ जयकृष्णदास प्रभुदास भणसाली, जो अपने लम्बे-लम्बे उपवासोंके लिए प्रसिद्ध थे।

उपवासके दौरान काकाने कुछ लिखवानेका काम किया है। प्रभुदास उनका अवैतनिक मत्री है और काकाके पास गीता-पाठ आदि भी करता है। प्रभुदास उनका पट्टशिष्य है इसलिए काकाको वह अनुकूल बैठा है। कल किशोरलाल और गोमती भी आये। उनके आनेका कारण तो मै हूँ।

\+ \+ \+[1]

काकाने मित्र-धर्म और पिताके धर्मका अच्छी तरह पालन किया है। [2] अपने घमण्डमे खिचता ही जा रहा है। लेकिन मै कोई उसकी आशा छोडकर नही बैठा हूँ। मै यह अवश्य मानता हू कि ठोकर खाये बिना उसकी आँखे नही खुलेगी। तुम जो लिखते हो सो सच है। कायरका ज्ञान उसे दूरतक नही ले जा सकता और . [3] जैसे हवामे उडनेवाले लडके यदि ज्ञान प्राप्त करे तो उनका यह ज्ञान फाँसीके तख्तेपर चढनेतक भी टिका रह सकता है। ऐसा दिन कहाँसे। मै मानता हूँ कि काका का शरीर तुरन्त कस जायेगा, चिन्ता न करना। उपवासके दौरान मैने नीम-हकीमके रूपमे अपने ज्ञानको यूँही नही जाने दिया। फलत काका को उपवासका जो आध्यात्मिक लाभ मिलना होगा सो तो मिलेगा ही, लेकिन शारीरिक लाभ तो मिला ही है। [4] और पण्डयाको[5] तुमने ठीक मात्रा दी,[6] लेकिन जल्दी असर करनेवाली दवाओका परिणाम लम्बे समयतक नही टिक पाता और उनका रिऐक्शन अर्थात् प्रतिक्रिया अनेक बार भयानक होती है। यह बात मैने कोई तुम्हारी दवाका दोप बतानेके लिए नही लिखी है। यह तो मैने वस्तुस्थितिका भान करानेके लिए ही लिखी है। महादेवके पत्र आते रहते है। वह चारो ओरसे पुस्तके इकट्ठा किया करता है। किसी-न-किसी दिन ये पुस्तके भी सार्वजनिक पुस्तकालयमे जायेगी न? जेलमे पढ-पढकर महादेव अन्धा न बन जाये तो गनीमत है। मै उसे हल्की-सी निषेधाज्ञा भेजनेका इरादा कर रहा हूँ। डॉ० दत्ता [जेलमे] देवदाससे मिल आये है। वह समय का ठीक उपयोग कर रहा प्रतीत होता है। वह पढता है, सिखाता है, खेलता है और कातता है। मेरा कार्यक्रम अभी तो इस प्रकार है इस महीने मध्य प्रान्तमे, बादमे दिल्ली, फिर पजाब, फिर सिध, फिर राजपूताना, सयुक्त प्रान्त और फिर बगाल, आसाम आदि। अभी तो केवल इतना ही है। इस कार्यक्रममे कदाचित् कुछ परिवर्तन हो और पहले मद्रास जाना पडे तो आश्चर्य नही है। ८ तारीखको यहाँसे रवाना होना है। बादमे मुझे दो-तीन दिनोके लिए फिर वर्धा तहसीलके दौरेके

१ साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ छूट गया है।

२, ३ और ४. साधन-सूत्रमें नाम नही दिये गये हैं।

५ मोहनलाल कामेश्वर पण्ड्या, खेडा जिलेके एक कार्यकर्ता।

६ सरदार पटेलने अपने पत्रमें (जिसकी चर्चा पहले की गई है) दवाकी मात्राको हिरण्य गर्भ मात्रा कहा था और जेल जानेका सुझाव दिया था।

लिए आना पड़ेगा। देवदरको तुम्हारे पत्रके बारेमें लिखूँगा। राजेन्द्र बाबूको फिर अस्पतालमें ले गये हैं। मुझे लगता है कि अब तो उन्हें वहीं रखा जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृष्ठ ३९-४३

१९२. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

१ नवम्बर, १९३३

नेतृत्व छोड़नेकी मेरी वृत्ति तनिक भी कम नहीं हुई है, अपितु दिन-ब-दिन तीव्रतर होती जाती है। लेकिन उसे चाहकर भी नहीं छोड़ा जा सकता, क्योंकि मैं स्वयं उसे लेनेके लिए नहीं निकला था।

[गुजरातीसे]
बापुनी प्रसादी, पृष्ठ १४०

१९३. पत्र : बंगालके गवर्नरको

वर्धा
२ नवम्बर, १९३३

प्रिय मित्र,

हालाँकि आपसे व्यक्तिगत रूपसे परिचित होनेका सौभाग्य मुझे नहीं है, फिर भी मैं जब १९३१ में इंग्लैंडमें था तब सर सैमुअल होरकी मार्फत आपके बारेमें जाननेका सौभाग्य मुझे मिल गया था। उस परिचयके आधारपर मैं संलग्न पत्रोंको[1] आपको दिखानेका साहस करता हूँ। ये एक सम्मानित कार्यकर्त्ताके पत्र हैं। इन पत्रोंका मुद्दा उन्हींमें स्पष्ट हो जाता है। मेरा खयाल है कि पत्रमें जिस कार्रवाईका विवरण दिया गया है उसका सम्भवतः आप समर्थन नहीं करेंगे। पत्रमें जिस सविनय प्रतिरोधीका जिक्र है वह लेखकका भाई है। इसमें शक नहीं कि सविनय प्रतिरोधी कष्टसहनके लिए तैयार रहता है, लेकिन मेरा ऐसा विचार है कि आज जो आदर्श स्पष्ट रूपसे स्वीकार किया गया है उसके अनुसार अपनेको सभ्य कहनेवाली सरकार यातना देनेके सारे तरीकोंका बहिष्कार करेगी।

१. २७ और २८ अक्टूबरके अपने पत्रोंमें सतीशचन्द्र दासगुप्तने अपने भाई क्षितीशचन्द्र दासगुप्त तथा हिजली जेलके दूसरे कैदियों द्वारा जेल-अधिकारियोंको सलाम करनेसे इनकार करनेके फलस्वरूप उनके साथ हुए अमानवीय व्यवहारका वर्णन किया था।

जिस मामलेको आपकी नजरमे लानेका मैने साहस किया है, उसमे आप निजी दिलचस्पी ले रहे है, इस सूचनाके लिए मै आपका आभार मानूँगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

बगालके गवर्नर
कलकत्ता

[अग्रेजीसे]

गाधी-नेहरू पेपर्स, १९३३, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

१९४. बातचीत: डॉ० कोंगरसे[1]

२ नवम्बर, १९३३

डॉ० कोगर: क्या ईश्वरका हाथ केवल भलाईके ही पीछे रहता है या बुराईके पीछे भी?

गाधीजी भलाईके ही पीछे रहता है, लेकिन ईश्वरके हाथमे वह केवल भलाई ही नही रह जाती। उसका हाथ बुराईके पीछे भी रहता है, लेकिन फिर वह बुराई बुराई नही रह जाती। "भलाई" और "बुराई" तो हमारी अपनी अपूर्ण भाषामे होने है। ईश्वर तो "भलाई" और "बुराई" दोनोसे परे होता है।

प्र०: हमारे प्रत्येक कार्यके पीछे ईश्वरकी इच्छा रहती है, क्या ऐसा नहीं है?

उ० मान भी ले कि प्रत्येक कार्य के पीछे उसकी इच्छा रहती है तो मनुष्य कह सकता है कि ईश्वर कुछ चीजोकी अनुमति देता है, इच्छा करता है या निषेध करता है। ये सब बाते उसकी "इच्छा" मान ली जाती है।

प्र०: आप कहते है कि आपके २१ दिनके उपवासके पीछे ईश्वरीय प्रेरणा थी। आपने 'रेसलिंग' की बात कही है। इससे आपका ठीक आशय क्या है?

उ० ये सब तो अपूर्ण मनुष्य की बकवास है। मनुष्य का ईश्वर के साथ झगडना वैसा ही है जैसा किसी बच्चे का अपनी माँके साथ। बच्चा तो माँके साथ अवश्य लडता है और जब माँ बच्चेको अपना स्तन दे देती है तो बच्चा कहता है "मैने इसे माँसे बलपूर्वक छीन लिया है।"

यहाँपर गांधीजीने अंग्रेजी शब्द "रेसिल" (कुश्ती) और 'रेस्ट' (छीनना) के शब्दकोषमें क्या अर्थ है वे बताये।

इस प्रकार जब ईश्वर किसी वस्तुको देता है तो वह खुशी के साथ देता है, बशर्ते कि हम मान ले कि उसे खुशी और दु:ख दोनो ही होते है। जो व्यक्ति उसके

१ यह रिपोर्ट चन्द्रशकर शुक्लने लिखी थी, जो उस समय गाधीजीके सचिवके रूपमें कार्य कर रहे थे। उन्होने बातचीतको लिखकर रख लिया था और बादमें इसका विवरण अपनी पुस्तक **कन्वरसेशन्स विद महात्मा गाधी** में प्रकाशित किया था।

चरणोमे प्रत्येक वस्तु निछावर कर देता है वह उससे कहता है· "यदि तूने मुझे अमुक वस्तु नही दी तो मै मर जाऊँगा।" वह ईश्वरका विरोध करता है और उसे ललकारता है। लाखो उदाहरण ऐसे होते है जहाँ ईश्वर ऐसे मनुष्यो को मृत्युकी अवस्थातक पहुँचने देता है। तब हम यह कहते है कि उसने मनुष्यकी अच्छी तरह परीक्षा ले ली है। तथापि यह हमारी अपनी निजी मनोभावना है। यदि मनुष्य किसी तरह चीजोको व्यक्त करनेके ईश्वरीय ढगको जान सकता तो पता नही वह क्या कहता। हम मूर्ख प्राणी यह समझते है कि उसके सग लडते-झगडते हुए हमने अपना बल समाप्त कर लिया है। ईश्वरके साथ न लडाई-झगडा होता है न छीना-झपटी। यदि ईश्वर निष्पक्ष है तो वह अपने भक्त को पीडा नही पहुँचायेगा।

प्र० : ईश्वर निष्पक्ष है या नही ?

उ० ईश्वर निष्पक्ष है। शायद वह निष्पक्ष नही, बल्कि दयालु है। क्योकि वह दयालु है इसलिए ही वह निष्पक्ष है। हालाँकि ये सब हमारी दुर्बल भावनाकी ही प्रतिध्वनियाँ है। कभी-कभी मनुष्य ईश्वर को उसका देय देनेकी भी बात करता है। लेकिन एक दास अपने स्वामीको क्या दे सकता है? ईश्वरके सामने मनुष्यकी परिस्थिति हमेशा ऋणीकी ही रहती है, ऋणदाताकी नही।

प्र० : श्रद्धा आवश्यक है या प्रयत्न ?

उ० वास्तव मे श्रद्धा और प्रयत्न दोनो आवश्यक है।

प्र० : क्या मनुष्यके सामने अपनी पसन्दका चुनाव करनेका अवसर है ?

उ० मनुष्यको चुननेका अवसर है, लेकिन उसी हदतक जिस हदतक कि जहाज पर सवार किसी यात्रीको है। उसके लिए इतना ही काफी है। यदि हम इसका उपयोग नही करते तो हम लगभग मृतप्राय ही है।

प्र० : ईश्वरका एक उद्देश्य है जिसे वह संसारमे कार्यान्वित कर रहा है, क्या ऐसा नही है ?

उ० मै इस बातमे यह सशोधन कर देता हूँ कि यह तो मनुष्यका कहना है। ईश्वरका उद्देश्य क्या है यह मुझे नही मालूम, क्योकि मै ईश्वर तो हूँ नही। मै तो मनुष्य हूँ। इसलिए मै ईश्वरको और उसके उद्देश्यको वाणी द्वारा नही बल्कि जीवनके माध्यमसे समझनेका प्रयत्न करता हूँ। मै इस ससारके करीडो लोगोका एक एकाशके रूपमे सामना नही कर सकता। मै उनमे से हर एकके हृदयमे प्रवेश नही कर सकता, क्योकि वे असख्य है। लेकिन ईश्वर सर्वशक्तिमान है। जिस प्रकार ब्रह्माण्ड रूपी एकाशके लिए उसका एक निर्धारित उद्देश्य है उसी प्रकार जीवनके प्रत्येक अणुके लिए एक उद्देश्य है — मनुष्यके लिए भी और चीटीके लिए भी।

प्र० : क्या यह एक अच्छा उद्देश्य है ?

उ० यह एक अच्छा उद्देश्य है, लेकिन "अच्छा" हमारी सीमित मानवीय भाषामे।

[अग्रेजीसे]

सिनो-इंडियन जरनल, गाधी मेमोरियल नवम्बर, दिसम्बर, १९४८

१९५. टिप्पणियाँ

रोहतकमें संकट[1]

यह एक दुखद कथा है जिससे प्रभावित होकर दयालुओंको कार्रवाई करनी चाहिए। जो दान सम्पादक, 'हरिजन', सी पाईक्रॉफ्ट्स रोड, ट्रिप्लीकेन, मद्रासके पतेपर भेजा जायेगा उसकी प्राप्ति-सूचना भेजी जायेगी और वह रकम उचित स्थानपर भिजवा दी जायेगी।

मेरा आगामी दौरा

कई हरिजन-सेवकोंने यह प्रश्न पूछा है कि "आपके आगामी दौरेमें जो धन इकट्ठा किया जायेगा, उसका बँटवारा किस तरह होगा?" यह धन इस आदेशके साथ केन्द्रीय बोर्डको सौंप दिया जायेगा कि जिस प्रान्त, जिला, ताल्लुका या शहरमें जितना धन एकत्र हुआ हो उतना धन जहाँतक हो सके, वहीं खर्च किया जाये। यह तो एक सामान्य नियम हुआ। किन्तु मैं आशा करता हूँ कि कुछ स्थानों से बड़ी-बड़ी रकमें दानमें मिलेंगी। इन दानोंका उपयोग तो जहाँ हरिजन कार्यमें सबसे अधिक आवश्यकता मालूम होगी, वहीं किया जायेगा। इतना तो साफ समझ लेना चाहिए कि जिस जगहपर जो धन इकट्ठा किया जाये वहीं उसे खर्च करनेका अगर कोई सख्त नियम बना दिया जायेगा तो वह उद्देश्य ही मारा जायेगा जिस उद्देश्य से कि धन-संग्रह किया जाना है। निस्सन्देह हर जगह स्थानीय कार्यकर्त्ता या दाता यह तो मुझे बतायेंगे ही कि उस धनका उपयोग किस प्रकार किया जाये।

किसी कार्यकर्त्ता या दाताको इस बातसे डरनेकी आवश्यकता नहीं है कि संकलित धनका उनके खास जिलेमें या अच्छेसे-अच्छे तरीकेसे उपयोग नहीं किया जायेगा। उन्हें मालूम होना चाहिए कि हरिजन-सेवक-संघका केन्द्रीय बोर्ड हिसाब-किताब बड़े अच्छे ढंगसे रखता है और सारा हिसाब बराबर जाँचा जाता है। और मेरा विश्वास है कि वह नियमित रूपसे प्रकाशित भी होता रहता है।[2]

स्व० विट्ठलभाई और हरिजन

अखबारोंमें श्री विट्ठलभाई पटेलको श्रद्धांजलि देते हुए[3] मैंने जो कहा उसमें एक बात तो छूट ही गई जो नहीं छूटनी चाहिए। सन् १९१७ की गोधराकी राज-

१ पंजाबके रोहतक जिलेके, जहाँ सितम्बर १९३३ में भारी वर्षाके कारण २१,००० घर तबाह हो गये थे, हरिजनोंके पुनर्वासके लिए हरिजन सेवक संघ द्वारा खोले गये कोषमें धन देनेके हेतु अमृतलाल वि० ठक्करने जो अपील निकाली थी, यह टिप्पणी उसीमें संलग्न थी, देखिए "पत्र अमृतलाल वि० ठक्करको", १०-१०-१९३३ भी।

२ यहाँ तकका अंश **हरिजन** में से अंग्रेजीसे लिया गया है। इसके बादका अंश **हरिजनबन्धु** में उपलब्ध मूल गुजराती से अनुवाद करके लिया गया है।

३ देखिए "श्रद्धांजलि विट्ठलभाई पटेलको", २४-१०-१९३३।

नीतिक परिषद्के अवसरपर विट्ठलभाईको मैने हरिजन बस्तीमे देखा था। वह दृश्य कभी भुलाया नही जा सकता। जैसाकि हुआ करता है, राजनीतिक परिषद्के साथ-साथ गोधरामे दूसरे सम्मेलनोका आयोजन किया गया था। उनमे एक विश्व सुधार सम्मेलन भी था। उसमे एक प्रस्ताव हरिजनोके सम्बन्धमे था। मैने परिषद्मे कहा कि जहाँ अँगुलियो पर गिनने लायक भी हरिजन मौजूद न हो, वहाँ उस प्रस्तावका रखना निरर्थक ही है। इससे यह अच्छा होगा कि रातको हरिजन-बस्तीमे जाकर वह प्रस्ताव पास किया जाये। सभाको यह बात पसन्द आ गई। हरिजन-बस्ती सवर्ण हिन्दुओसे खूब भर गई। गोधराके इतिहासमे यह बात अपूर्व थी। तिल रखनेको जगह न थी। अब्बास साहब, उनकी बेगम साहिबा वगैरा तो थे ही। पर वहाँ मैने एक दाढीवाले भाईको कफनी, धोती और साधुओ जैसा कनटोप लगाये देखा। इस अजीब भेसमे विट्ठलभाई को इससे पहले मैने कभी नही देखा था। इसलिए मै उन्हे झटसे न पहचान सका। पर जब पहचाना तो हम एक-दूसरेसे लिपट गये और मुक्त कठसे हँसे। इस भेसमे विट्ठलभाई का एक नाटकीय स्वाग तो था ही, किन्तु इसके अन्दर उनकी सादगी और जन-साधारणमे घुल-मिल जानेकी एक रुचि थी। वहाँ श्री विट्ठलभाईकी उपस्थितिसे मुझे उनके हरिजन-प्रेमका परिचय मिला। और फिर ज्यो-ज्यो उनका अधिक अनुभव मुझे होता गया, मुझे विश्वास हो गया कि उनकी हरिजन बस्तीमे उस दिनकी उपस्थिति शुद्ध हार्दिक थी।

उनके अन्दर छुआछूतके लिए जरा भी जगह न थी, ऊँच-नीचका भाव भी उनमे नही था। उनका दृढ विश्वास था कि जो अधिकार या पद सवर्ण हिन्दुओको प्राप्त हो सके, वे सबके-सब हरिजनोको भी मिलने चाहिए। और ऐसा ही उनका व्यवहार भी था। इसीसे मै आशा करता हूँ कि आगामी ९ नवम्बरको जब उनके शवका अग्नि-सस्कार बम्बईमे होगा, उस दिन समस्त जनताके आँसुओमे हरिजनोकी अश्रुधारा भी सम्मिलित रूपसे बहेगी।

हरिजन, ३-११-१९३३ और **हरिजनबन्धु**, ५-११-१९३३

१९६. उड़ीसाकी पुकार

१७ अक्टूबरको प्रात काल हम खण्डायतता गये। घरघराते हुए जोरके पानीने किनारोको तोड डाला था, और अनेक घरोको ढहाती हुई मीलो लम्बी एक नई नदी ही वहाँ बन गई थी। बचे हुए बहुत ही थोडे घर दिखाई देते थे। मारवाडी-सघ यहाँ काम कर रहा है। यह सघ २५ गाँवोके ३५०० आदमियोको भोजन पहुँचा रहा है और प्रतिव्यक्ति सात सेर चावल माहवारी दिया जाता है। (कटकका डेढ सेर चार पौडके बराबर होता है)। सूती चादरे और ढोरोके लिए भूसा भी सघ बाँट रहा है। इस तरह इन लोगोपर सघने ५००० रुपये खर्च किये है। एक दूसरे केन्द्रमे सघ २७ गाँवोके ५७०० बाढ-पीडितोकी सेवा-सहायता कर रहा है। यहाँ फी आदमीको ५ छटाँक और एक तोला चावल मिलता है। इतनी थोडी-सी सहायताके लिए भी बडी रेलपेल

मचती है। सहायताके दो मुख्य केन्द्र कटकमे और दो पुरीमे खोले गये है। वहाँ लगभग १५००० रुपये खर्च किये जा चुके है। खडायतासे हम खडरदा गये। हरिजन-बस्तियोके आधे घर यहाँ मिट्टीमे मिल गये है। जो बच गये है, वे जर्जर हो गये है। वहाँ हमे एक बहन मिली। उसके आधे तनपर ही कपडा था। बेचारीका कोई आसरा नही था। वह कोई काम न मिलनेकी शिकायत करती थी। पास ही एक घरमे हमने एक बहन गीले फर्शपर पडी हुई देखी। वह तेज बुखारसे जल रही थी। जाडेका मौसम आ रहा है। इन गरीबोको कपडोकी तो जरूरत होगी ही। खडरदासे हम लोग झारपाडा गये। वहाँ हमने आठ स्वयसेवकोको अत्यन्त कठिन परिस्थितिमे काम करते हुए देखा। रोगियोके लिए वे दवादारूका प्रबन्ध करते है और जिन मरीजो की हालत बहुत ही असाध्य है उन्हे टिकानेकी भी उन्होने किसी तरह कुछ व्यवस्था कर ली है। इन बेचारे रोगियोको किस प्रकारकी सेवा-शुश्रूषा मिल सकती है, उसकी आप कल्पना कर सकते है। यहाँ बालिग व्यक्तियोको तो हर सप्ताह चार पौड चावल (जिसकी कीमत ६ पैसे होती है) दिये जाते है और नाबालिगोको दो पौड। समर्थ और स्वस्थ लोगोको कुछ नही दिया जाता। अत सहायता मुख्यतया औरतो और बच्चोको ही मिलती है। मै नही समझता कि दयावान धर्मभीरु व्यक्तियोके धनका इस समय इससे अधिक अच्छा कोई उपयोग हो सकता है। पर आप कही इससे यह कल्पना न कर ले कि जो सहायता दी जा रही है वह किसी भी दृष्टिसे पर्याप्त है। यदि और पैसा हो तो और भी केन्द्र खोले जा सकते है। प्रति माह चालीस से लेकर पचास हजार रुपये तकका उत्तम-से-उत्तम उपयोग किया जा सकता है, क्योकि ५०,००० रुपयेसे, आठ आने माहवारके हिसाबमे भी, सिर्फ एक लाख आदमियोकी ही सहायता की जा सकती है। मगर बाढ-पीडितोकी सख्या तो इससे कही अधिक है।

श्री हरखचन्द मोतीचन्दके पत्रोके कुछ अशोका उल्था मैने ऊपर दिया है। उन्हे स्थानीय बाढ-सहायता समितिकी मदद करनेके लिए ही उडीसा भेजा गया है। इस समितिका प्रधान-पद दीनबन्धु एन्ड्र्यूजने स्वीकार कर लिया है। ठक्कर बापाने मुझे यह मीठी झिडकी दी है — और ऐसा करनेका उन्हे अधिकार है कि

बेचारे बाढ़-पीड़ितोकी संकट-कहानियाँ आप 'हरिजन' में क्यो नहीं प्रकाशित करने देते? उनकी दशा हरिजनोंसे कुछ अधिक अच्छी नहीं है। और अगर आप हरिजनोकी ही बात कहते है, तो उनमें आपके हजारों हरिजन भी बाढ़-पीड़ित निकल आयेगे। अगर आप देवदास-लक्ष्मीके विवाह-वर्णनके लिए अपने पत्रमे कुछ स्थान दे सकते है, तो उड़ीसाके उन बाढ-पीडितोके कष्टोंकी ओर आपका ध्यान जाना ही चाहिए। उड़ीसाके लिए आप एक हृदयस्पर्शी अपील निकाल ही चुके है। अगर आप समय-समयपर 'हरिजन' में उडीसाके बाढ़-पीड़ितोंकी हालत छापते रहे, तो इसमे मर्यादाका उल्लंघन नहीं होगा।

'हरिजन' मे देवदास-लक्ष्मीके विवाहकी चर्चा हरिजन-कार्यके हितार्थ आवश्यक थी, इस बातको भूल जानेके लिए ठक्कर बापाको क्षमा करना होगा। पर प्रेम अन्धा होता है, और ठक्कर बापा समस्त पीडित मानवसमाजके प्रेमी है, फिर वे पीडित जन ससारके चाहे किसी भी भागके हो। सर्वशक्तिमान प्रभुने जो एक सीमा निर्धारित कर दी है, उस हदतक ही उनका प्रेम सीमित है। इसीलिए वह पुकार-पुकार कर कहते है "देखिए, पचमहालके मेरे भीलोके लिए उस दिन मेरे कार्यकर्त्ताओको कितना पैसा मिल गया था? फिर उन भीलोकी अपेक्षा एक पूरे प्रान्तकी कही अधिक पीडित जन-सख्याके लिए आपको उससे भी अधिक धन क्यो नही मिल सकता।" वह ठीक कहते है, और मै अत्यन्त नम्रतापूर्वक इस लेखके पाठकोसे सहायताकी अपील करता हूँ। इसमे कोई सन्देह नही कि वहाँके लोग सकटमे है। मै सदासे मानता आया हूँ कि उडीसा भारतका अत्यन्त असहाय और दरिद्र देश है। पुण्योपार्जनके लिए सहस्रो तीर्थ-यात्री पुरीके प्राचीन मन्दिरका दर्शन करने जाते है। यात्रियोमे सैकडो ही व्यक्ति इतने धनी होते है कि वे भूखोकी भूख शान्त कर सकते है और नगोको कपडे पहना सकते है। समय बेशक खराब है, पर धनवानोके लिए यही उपयुक्त अवसर है कि वे अपने सुख और भोग-विलासकी जिन वस्तुओको अभीतक आवश्यक मानते रहे है उनका त्याग करके, ईश्वरने उन्हे जो धन प्रदान किया है उस धनपर असहाय दीन-दरिद्रोकी सेवा-सहायता करते हुए अपना उचित अधिकार स्थापित कर ले।

१९१५ मे जब मै भारत लौटा तभीसे मुझे ऐसा लगता है मानो देशकी सारी मुसीबत और बेबसी उडीसामे ही सिमटकर आ गई हो। बम्बईकी सहायता समिति भी वहाँ काम कर रही है, पर बम्बईके नागरिकोसे मै कहूँगा कि उनका उद्योग तो बहुत ही अल्प है। यह लेख लिखते हुए मुझे मालूम हुआ है कि बम्बईने सिर्फ १२,००० रुपये ही दिये है। भूख और वस्त्रहीनताकी स्थिति उत्पन्न हो जानेपर बम्बईने कभी खराब समयकी दलील दी हो, ऐसा कोई प्रसग मुझे याद नही आता। जब बम्बईवासियोके कानमे सहायताकी पुकार गूँजने लगती है, तो वे अपने सिनेमा और थियेटर-जैसे मनोरजनके स्थानोमे भी बेचैन हो उठते है। पहलेके मुकाबले आज उन्हे कम उद्योग नही करना चाहिए। और भारतके अन्य प्रान्तोके भी धनवान क्यो न जाग पडे? दिल खोलकर दान देनेमे बम्बईवालोके साथ वे क्यो न बाजी लगा दे? जो दान सम्पादक, 'हरिजन', पाईक्रॉफ्ट्स रोड, ट्रिप्लीकेन, मद्रासके पतेपर भेजा जायेगा, उसकी प्राप्ति-सूचना पत्रमे प्रकाशित की जायेगी, और वह रकम उचित स्थानपर भिजवा दी जायेगी।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ३-११-१९३३

१९७. क्रूरताकी दो कथाएँ

इस पत्रमे प्रति सप्ताह हरिजन-कार्यकी सुस्थिर प्रगतिके सुखद समाचार प्रकाशित हुआ करते है। पर यह आनन्द हरिजनोके प्रति किये गये उन अमानुषी अत्याचारोमे ढँक जाता है, जिनकी खबरे समय-समय पर प्रकाशमे आती रहती है। गुजरातके खेडा जिलेमे समरखा नामका एक गाँव है। खबर आई है कि वहाँके सवर्णोने ईसाई हरिजनोकी फसल इसलिए जला दी कि उनमे से एक या एकाधिक लोगोने एक सार्वजनिक कुएँसे पानी भरनेका साहस किया था। सुना है कि अदालतमे यह मामला चल रहा है।

अहमदाबादके धोलका ताल्लुकाके एक गाँवमे हरिजनोको चाबुकोसे पीटे जानेके समाचार आये है, जिनमे से दो तो सख्त घायल हुए है। कारण यह बताया जाता है कि एक हरिजनने सार्वजनिक तालाबमे नहानेकी धृष्टता की थी।

इस प्रकारके सिर्फ ये ही दो मामले नही है। बहुत सगीन होनेके कारण ही ये मामले प्रकाशमे आये है। हमे बहुत-से उन छोटे-छोटे अन्यायोका तो पता ही नही है, जो निरपराध हरिजनो पर प्राय होते रहते है, और सो भी सिर्फ इसलिए कि वे कानूनसे स्वीकृत मानवीय अधिकारोका उपयोग करते है।

इन घटनाओसे सनातनियोकी आँखे खुल जानी चाहिए। मै एक भी ऐसे सनातनीको नही जानता जिसने इस प्रकारकी बर्बरताका समर्थन किया हो। इन दुर्घटनाओको रोकने, या इनसे निबटनेके लिए वे चाहे तो सुधारकोके साथ काम करे, पर उन्हे खूब प्रभावपूर्ण रीतिसे काम करना चाहिए।

हरिजन-सेवकोका कर्त्तव्य स्पष्ट है। जब आवश्यक ही हो जाये, तो अदालत तक ऐसे मामले ले जानेमे वे सकोच न करे। पर ऐसा करनेसे पहले उन्हे इस बातकी पूरी कोशिश करनी चाहिए कि अन्याय करनेवालोको यह भान करा दे कि उन्होने अन्याय किया है और उस अन्यायकी यथेष्ट क्षतिपूर्ति करनेके लिए भी उन्हे राजी करे। मेरा विश्वास है कि ऐसा किया जा सकता है। उदाहरणके तौरपर, यदि समरखा गाँवमे नडियादके, और जरूरी हो तो अहमदाबादके भी, खास-खास व्यक्ति जाये और उन अत्याचारियोको दलीलसे समझाये तो ऐसा किया जा सकता है। ये लोग अपने पूर्वजोके समयसे यही समझते चले आ रहे है कि सवर्ण हिन्दू लोग हरिजनोके साथ मनुष्यताका नही, बल्कि जड सम्पत्तिका-सा बरताव कर सकते है। मनुष्यके मानवोचित अधिकारोके विषयमे जो घोर अज्ञान फैला हुआ है वह तभी दूर हो सकता है, जब इस पर लोकमतका प्रकाश पडेगा। मुझे आशा है कि कोई हिन्दू यह खयाल नही करता होगा कि ईसाई हरिजनोके लिए उसे चिन्ता करनेकी कोई जरूरत नही है। जो अधिकार सवर्ण हिन्दुओको प्राप्त है, निश्चय ही वे ही सार्वजनिक

अधिकार हिन्दू-हरिजनोको प्राप्त है, और इसीलिए वे ही सार्वजनिक अधिकार ईसाई हरिजनोको भी प्राप्त है। सवर्ण हिन्दू यदि सार्वजनिक सस्थाओका उपयोग नही करना चाहते तो वे केवल अपने ही उपयोगके लिए अपने खर्च पर दूसरी सस्थाएँ खडी कर सकते है। भिन्न-भिन्न जाति और सम्प्रदायवाले चदा इकट्ठा करके अपने लिए पृथक पाठशालाएँ और अलग अस्पताल बनाते है। इसमे कोई आपत्ति नही करता। पर जो वस्तु जन-साधारणकी है, उसे उपयोगमे लानेसे कोई किसीको कैसे रोक सकता है? फिर यह भी स्मरण रहे कि इन ईसाई हरिजनोकी सृष्टिके लिए हम ही जिम्मेदार है। सर्वथा अप्रत्याशित स्थानोमे भी अस्पृश्यताका पाप फैल गया है। सदियोसे जिस पापको हम आसरा देते आ रहे है, उसके लिए अगर अब हमे दण्ड भोगना पडे, तो हमे दुखी नही होना चाहिए।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, ३-११-१९३३

१९८. चर्मालयकी जरूरत नहीं है?

एक सज्जनने नीचे लिखा प्रश्न उठाया है

> **हरिजन-सेवाके लिए समर्पित आश्रममे हरिजन-सेवक-संघका अखिल भारतीय अथवा प्रान्तीय बोर्डका कार्यालय रखा जाये, यह बात मै समझ सकता हूँ। और वहाँ छात्रालय और एक आदर्श हरिजन-बस्ती बनानेकी योजना भी समझ सकता हूँ। किन्तु चमडेका कारखाना वहाँ खोलना मुझे ठीक नही लगता। और अगर वहाँ चर्मालय ही रखना है, तो फिर भगीका काम और सफाई सिखानेका भी एक विभाग क्यों न खोला जाये? चमड़ा कमानेका काम अगर हरिजनोका है, तो वह भी तो उन्हीका काम है।**

यह तो एक मिथ्या हेतुका तर्क है। लेखकने चर्मालय रखनेका हेतु नही समझा। उसके रखनेका उद्देश्य यह है कि चमडा कमानेके काम को एक महान राष्ट्रीय उद्योग बनाया जाये। चमडेका रोजगार बहुत बडा है। जो कच्चा चमडा हम हिन्दुस्तानसे बाहर भेज देते है, उसे अपने देशमे ही रखना चाहिए और उससे अपनी आवश्यकता की चीजे बनानी चाहिए। इससे अवश्य ही अपने देशकी सम्पत्तिमे बहुत वृद्धि होगी। हजारो हरिजन आज चमडा कमानेके काममे लगे हुए है। यह एक इज्जतका धन्धा है, और इस रोजगारमे बहुत लाभ है। इसका अगर अच्छी तरहसे सगठन किया जाये, तो यह और भी अधिक लाभदायक हो सकता है। लेकिन गाँवोमे तो चमडा सिझानेका काम बडे ही बेढगे तरीकेमे किया जाता है। इसके अलावा उसकी तमाम क्रियाएँ सफाईके साथ और वैज्ञानिक रीतिसे नही की जाती। यदि वे वैज्ञानिक पद्धतिसे की जाती, तो ढोरोकी खाल उतारने व सिझानेके प्रति लोगोके मनमे से जो घिन है, वह न रहती। इसलिए इस नई सस्थामे चमडेका कारखाना खोलनेके पीछे यह विचार है

कि इस धन्धेको प्रतिष्ठित बनाया जाये और अभी इसमे जो गन्दगी और बेढगापन नजर आ रहा है, वह सब दूर कर दिया जाये। फिर यह भी बात नही है कि इस कामको वहाँ केवल हरिजन ही करेगे। वे लोग गैर-हरिजनोके साथ-साथ यह काम करेगे। यह काम सीखनेके लिए कोई मजबूर नही किया जायेगा, और यह तो कोई कह ही नही सकता है कि इस कामको वैज्ञानिक रीतिसे या अधिक स्वच्छताके साथ करनेका ढग सीखनेके लिए कोई भी हरिजन तैयार नही होगा। अन्तमे एक बात और कह देना चाहता हूँ। वह यह कि मैंने तकनीकी विभागकी जो चर्चा की है, वह तो एक उदाहरणके रूपमे है। अगर सब काम ठीक-ठीक चला, तो और भी अनेक विभाग खोल दिये जायेगे। सफाई करनेकी अच्छीसे-अच्छी पद्धति ढूंढ निकालनेका भी एक विभाग होगा, जहाँ सब लोग एक साथ भाग ले सकेगे। सफाईके प्रति हमारी लापरवाहीके कारण ही हम लोगोमे बीमारियाँ बढी है और गन्दी आदते जड पकड चुकी है। मुझे तो आशा है कि वहाँ ऐसा एक भी रोजगार या धन्धा उपेक्षाकी दृष्टिसे नही देखा जायेगा जो हरिजनोके लिए लाभदायक हो, फिर भले ही वह धन्धा उन्होने आजतक कभी किया हो या न किया हो।

[अग्रेजीमे]
हरिजन, ३-११-१९३३

१९९. पत्र : अगाथा हैरिसनको

सत्याग्रह आश्रम, वर्धा
३ नवम्बर, १९३३

प्रिय अगाथा,

बगालके गवर्नरको भेजे गये अपने पत्र[1] की एक प्रति मै इस पत्रके साथ सलग्न कर रहा हूँ। गवर्नरको लिखे पत्रके साथ भेजे गये सलग्न पत्रोके लेखक श्रीयुत सतीशचन्द्र दासगुप्त सम्मानित और हमारे एक जाने-माने सहयोगी है। उनमे अहिसाकी भावना कूट-कूट कर भरी हुई है, वह दिखावटी बिलकुल नही है। और जिन सच्चे लोगोसे मिलनेका सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है उनमे से वे एक है। हिजली जेलकी प्रथाका उन्हे पहले-पहल तब पता चला जब उन्होने यह जाना कि उनके भाईको, जो एक सविनय प्रतिरोधी है, हथकडियाँ पहना कर हाथ ऊपर रखते हुए खडा रहनेकी सजा दी गई थी। लोहेकी बेडियाँ हथकडियोमे अलग होती है। लोहे की बेडियाँ पैरोके लिए होती है।

इस समय तो जो बाते मेरे ध्यानमे आती है उनके सम्बन्धमे कोई सार्वजनिक आन्दोलन चलानेका मेरा इरादा नही है। मै ऐसी चीजे अधिकारियोंको सौप देता

१. २ नवम्बर, १९३३ का।

हूँ। इसलिए जबतक मै तुमसे कहूँ नही तबतक इस प्रकारका कोई पत्र-व्यवहार तुम्हारी ओरसे भी नही छपना चाहिए। इसके अलावा इस प्रकारकी सूचनाका उपयोग करनेकी तुम्हे मनाही नही है।

सीमा प्रान्तमे प्राप्त एक पत्रकी प्रति भी मै तुम्हे भेज रहा हूँ। मुझे भेजे गये सतीश बाबूके पत्रमे हिजली जेलमे होनेवाले व्यवहारका जो वर्णन किया गया उससे भी कही ज्यादा खराब व्यवहारको कहानी इस पत्रमे कही गई है। स्वाभाविक है कि सीमा प्रान्तमे प्राप्त सूचनाकी सत्यताको कोई भी प्रमाणित नही कर सकता। लेकिन फादर एल्विनने वहाँकी हालतका जैसा उद्घाटन किया है उसके बाद पत्रमे यदि वहाँकी स्थितिको कुछ घटाकर ही बताया गया हो तो मुझे आश्चर्य नही होगा। यह पत्र मुझे अभी-अभी मिला है और मैने अभी यह निश्चय नही किया है कि मैं उसका यहाँ पर कैसे उपयोग करूँ।

सी० एफ० एन्ड्रचूज यहीपर है।

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४७३)मे।

२००. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

३ नवम्बर, १९३३

प्रिय जवाहरलाल,

मेरी अपनी तो यह राय है कि सीमा प्रान्तमे मिले पत्रमे जिस नृशसताका उल्लेख किया गया है उसपर निजी स्तरपर कार्रवाई करनी चाहिए तथा अधिकारियोको इससे कम क्रूर साधनोको अपनानेके हेतु प्रेरित करनेके लिए हमे सारे उपायोको उपयोगमे ले आना चाहिए। मै एन्ड्रचूजसे सीमा प्रान्त वाले पत्रपर कार्रवाई करनेको कह रहा हूँ। और यदि तुम्हे कोई आपत्ति न हो तो मै चाहूँगा कि तुम यह टिप्पणी सर तेजबहादुरको दिखा दो और देखो कि उनका क्या कहना है और वह इस मामलेमे कुछ करनेको तैयार है या नही।

हिजलीमे क्या कुछ हो रहा है इस सम्बन्धमे बगालके गवर्नरको भेजे गये अपने पत्रकी एक प्रति मै इस पत्रके साथ सलग्न कर रहा हूँ।

सप्रेम,

बापू

[अग्रेजीसे]

गांधी-नेहरू पेपर्स, १९३३, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

२०१. पत्र : प्रभाशंकर पट्टणीको

वर्धा
४ नवम्बर, १९३३

सुज्ञ भाईश्री,

दीनबन्धु एन्ड्रयूज यहीं है। आज जायेंगे और ११ तारीखको इंग्लैंडके लिए रवाना होंगे। आपने विलायतमें उनसे शान्तिनिकेतनके लिए ५,००० रुपये देने अथवा दिलवानेके लिए कहा था, लेकिन एन्ड्रयूज इसका माँग क्योंकर करें? यदि यह रकम भेजी जा सके तो भेजना। गुरुदेवको पैसोंकी हमेशा तंगी रहती है और यदि उन्होंने आपके ५,००० रुपये मिलने की आशामें कोई योजना बनाई होगी तो उसे छोड़ना पड़ेगा और इससे वे परेशान होंगे। आशा है, आपकी तबीयत अच्छी रहती होगी। एन्ड्रयूजने मुझे आपका पत्र पढ़वाया। मेरी चिन्ता क्या की जाये? ईश्वरको यदि मेरा दौरा पूरा करवाना होगा तो वह मेरे शरीरकी रक्षा करेगा। उससे अच्छा चौकीदार अथवा डाक्टर कहाँ ढूँढ़ने जाऊँ?

मोहनदासके वन्देमातरम्

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५९३०) से। सी० डब्ल्यू० ३२४६ से भी, सौजन्य महेश पी० पट्टणी

२०२. पत्र : मणिबहन पटेलको

४ नवम्बर, १९३३

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। डाह्याभाई अच्छी तरह जूझ[1] रहा है। जहाँ गन्दगी अथवा कृत्रिमता दिखाई दे वहाँ वह भले ही जूझे। तेरी देखभाल ठीक तरहसे हो रही होगी। मुझे नियमपूर्वक लिखती रहना। बाबो यहाँ आ गया, यह तो बहुत अच्छा हुआ। मेरे जानेके बाद बा [जेल जानेके लिए] निकलेगी। इसके लिए हमें तैयारी तो कर ही लेनी चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ४ : मणिबहेन पटेलने, पृष्ठ ११०

१ मणिबहनके अनुसार गांधीजीने उक्त बात विट्ठलभाईके दाह-संस्कारके सम्बन्धमें क्या व्यवस्था की जानी चाहिए, इसको लेकर कही थी।

२०३. उत्तर: पत्र-लेखकोंको[1]

[५ नवम्बर, १९३३ से पूर्व]

हम कमसे-कम क्या कर सकते हैं?[2]

सेवाका भी मोह हो सकता है। मोहमात्रका त्याग करनेसे ही सच्ची सेवा हो सकती है। क्या अपग मनुष्य भक्ति नही कर सकते? सेवा मनसे भी की जा मकती है। एक-दो हरिजन बालाओको घरमे रखो और उनका पालन पोषण करो।

स्वप्नदोषका उपाय

दूध, रोटी और उबली हुई सब्जी खानी चाहिए, मिर्च मसाले आदि छोडने चाहिए। खुली हवामे परिमित व्यायाम करना चाहिए। राष्ट्र-पोषक उद्योगमे तल्लीन रहना और रामनाम लेना चाहिए। इतना किया जाये तो स्वप्नदोषके दूर होनेकी सम्भावना है।

यह रोग कैसे दूर हो?

तुम्हारा रोग उपचार-साध्य है, ऐसा मेरा विश्वास है। तुम्हे पौष्टिक खुराक और औषधियोका त्याग करना चाहिए? यदि तुम घरसे बाहर खुली हवामे रहोगे और ताजा दूध, ताजे फल, हरी सब्जियाँ और रोटी खाओगे, जितना शरीरको माफिक आये वैसा परिमित व्यायाम करोगे, और जिससे विकार उत्पन्न हो ऐसा साहित्य नही पढोगे, सिनेमा और नाटक नही देखोगे तो तुम अच्छे हो सकोगे।

एकाग्रचित्त कैसे हुआ जाये?

एकाग्रचित्त होनेका सबसे अच्छा उपाय है जो शारीरिक काम किया जाये उसमे तन्मय हो जाना, और उसे अच्छेसे-अच्छा करनेका प्रयत्न करनेसे उसमे तन्मयता आ ही जाती है।

ईश्वरके नामोमे जिसका हमे अभ्यास हो उसे तो सबसे अधिक उपयोगी समझना चाहिए। मुझे तो रामनाम बहुत ही प्रिय है।

१ यह लेख "डाकके थैलेसे" शीर्षकसे प्रकाशित हुआ था।

२ यह एक ऐसी स्त्रीको लिखा गया था जो अस्वस्थ रहती थी और जो अस्वस्थताके कारण हरिजनोकी सेवा करनेमें असमर्थ होनेकी वजहसे दुखी रहती थी।

अन्तर्नाद क्या है?[1]

तुम जो कहते हो वह तात्त्विक दृष्टिसे ठीक है, लेकिन अन्तर्नाद किसे कहा जाये, यदि इसकी तुम्हे स्पष्ट कल्पना न हो तो इस सिद्धान्तको व्यवहारमे नही उतारा जा सकता। सत्यके यथार्थ ज्ञानके साक्षात्कारको ही मै अन्तर्नाद मानता हूँ। और चूँकि हम सत्यका सम्पूर्ण दर्शन हो नही पाता, तथा हम जिस सत्यको देखते है वह अपूर्ण होता है, इसलिए हम जगतके ऋषियोको अपना मार्गदर्शक मान लेते है और उनका अनुकरण करने लगते है। सत्यका साक्षात्कार किया जा सके, इसके लिए स्पष्ट नियम बनाये गये है, और उनका पालन करनेसे ही सत्यके दर्शन किये जा सकते है। कहनेका तात्पर्य यह कि जिस तरह भूमितिकी शिक्षा ग्रहण किये बिना भूमितिका ज्ञान प्राप्त नही हो सकता उसी प्रकार आवश्यक साधना किये बिना किसीको अन्तर्नाद सुनाई दे सकता है, ऐसा नही कहा जा सकता। अतएव मेरी व्याख्याके अनुसार खूनी अपने खूनका बचाव अन्तर्नादकी दुहाई देकर नही कर सकता।

उपवासकी मर्यादा[2]

मेरी दृढ मान्यता है कि निजी स्वार्थके कारण किसीको कतई उपवास नही करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति अपने दुखके लिए दूसरोके सामने उपवास करने लगे तो सार्वजनिक जीवन अस्त-व्यस्त हो जाये। इसलिए इस भाईको समझाकर उसका उपवास तुडवा देना चाहिए।

करोड़ो लोगोका विचार करो[3]

धर्मका पालन करने वाला विवशताका अनुभव नही करता। कर्ज लेकर दवा-दारूमे पैसे खर्च नही किये जाने चाहिए। यदि तुम करोडो लोगोके साथ अपनी तुलना करोगे तो तुम्हे अपनी स्थिति दूसरोसे हजार गुना बेहतर लगेगी। इस समय तुम पर जो आर्थिक सकट आ पडा है यदि तुम उसे सहन करनेकी शक्ति का विकास कर लोगे तो सारा दुख. सुखमे परिवर्तित हो जायेगा। आठ व्यक्तियोमे से जो मजदूरी करने लायक हो उसे मजदूरी करनी चाहिए।

[गुजरातीसे]
हरिजनबन्धु, ५-११-१९३३

१. एक पत्र-लेखकने गाधीजीसे पूछा था, क्या हरएक व्यक्तिको आपका अनुकरण करनेका और अपने अच्छे-बुरे सभी कार्योके पक्षमें 'अन्तर्नाद' की दुहाई देनेका अधिकार नही है?

२ यह उत्तर एक व्यक्तिके मित्रको दिया गया था जो अपनी नौकरीसे हाथ धो बैठा था और उसे दुबारा हासिल करनेके लिए उपवास कर रहा था।

३ यह एक ऐसे पत्र-लेखकके प्रश्नके उत्तरमें दिया गया था जिसकी आर्थिक स्थिति खराब थी और जिसने इस सम्बन्धमें गाधीजीसे सलाह माँगी थी।

२०३. उत्तर : पत्र-लेखकोंको[1]

[५ नवम्बर, १९३३ से पूर्व]

हम कमसे-कम क्या कर सकते हैं?[2]

सेवाका भी मोह हो सकता है। मोहमात्रका त्याग करनेमे ही सच्ची सेवा हो सकती है। क्या अपग मनुष्य भक्ति नही कर सकते? सेवा मनसे भी की जा सकती है। एक-दो हरिजन बालाओको घरमे रखो और उनका पालन पोषण करो।

स्वप्नदोषका उपाय

दूध, रोटी और उबली हुई सब्जी खानी चाहिए, मिर्च मसाले आदि छोडने चाहिए। खुली हवामे परिमित व्यायाम करना चाहिए। राष्ट्र-पोषक उद्योगमे तल्लीन रहना और रामनाम लेना चाहिए। इतना किया जाये तो स्वप्नदोषके दूर होनेकी सम्भावना है।

यह रोग कैसे दूर हो?

तुम्हारा रोग उपचार-साध्य है, ऐसा मेरा विश्वास है। तुम्हे पौष्टिक खुराक और औषधियोका त्याग करना चाहिए? यदि तुम घरसे बाहर खुली हवामे रहोगे और ताजा दूध, ताजे फल, हरी सब्जियाँ और रोटी खाओगे, जितना शरीरको माफिक आये वैसा परिमित व्यायाम करोगे, और जिससे विकार उत्पन्न हो ऐसा साहित्य नही पढोगे, सिनेमा और नाटक नही देखोगे तो तुम अच्छे हो सकोगे।

एकाग्रचित्त कैसे हुआ जाये?

एकाग्रचित्त होनेका सबसे अच्छा उपाय है जो शारीरिक काम किया जाये उसमे तन्मय हो जाना, और उसे अच्छेसे-अच्छा करनेका प्रयत्न करनेसे उसमे तन्मयता आ ही जाती है।

ईश्वरके नामोमे जिसका हमे अभ्यास हो उसे तो सबसे अधिक उपयोगी समझना चाहिए। मुझे तो रामनाम बहुत ही प्रिय है।

१ यह लेख "डाकके थैलेसे" शीर्षकसे प्रकाशित हुआ था।

२. यह एक ऐसी स्त्रीको लिखा गया था जो अस्वस्थ रहती थी और जो अस्वस्थताके कारण हरिजनोकी सेवा करनेमें असमर्थ होनेकी वजहसे दुखी रहती थी।

अन्तर्नाद क्या है?[1]

तुम जा कहते हो वह तात्त्विक दृष्टिसे ठीक है, लेकिन अर्न्तर्नाद किसे कहा जाये, यदि इसकी तुम्हे स्पष्ट कल्पना न हो तो इस सिद्धान्तको व्यवहारमे नही उतारा जा सकता। सत्यके यथार्थ ज्ञानके साक्षात्कारको ही मै अन्तर्नाद मानता हूँ। और चूँकि हम सत्यका सम्पूर्ण दर्शन हो नही पाता, तथा हम जिस सत्यको देखते हे वह अपूर्ण होता है, इसलिए हम जगतके ऋषियोको अपना मार्गदर्शक मान लेते हे और उनका अनुकरण करने लगते है। सत्यका साक्षात्कार किया जा सके, इसके लिए स्पष्ट नियम बनाये गये है, और उनका पालन करनेसे ही सत्यके दर्शन किये जा सकत है। कहनेका तात्पर्य यह कि जिस तरह भूमितिकी शिक्षा ग्रहण किये विना भूमितिका ज्ञान प्राप्त नही हो सकता उसी प्रकार आवश्यक साधना किये बिना किसीको अन्तर्नाद सुनाई दे सकता है, ऐसा नही कहा जा सकता। अतएव मेरी व्याख्याके अनुसार खूनी अपने खूनका बचाव अन्तर्नादकी दुहाई देकर नही कर सकता।

उपवासकी मर्यादा[2]

मेरी दृढ मान्यता है कि निजी स्वार्थके कारण किसीको कतई उपवास नही करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति अपने दुखके लिए दूसरोके सामने उपवास करने लगे तो सार्वजनिक जीवन अस्त-व्यस्त हो जाये। इसलिए इस भाईको समझाकर उसका उपवास तुडवा देना चाहिए।

करोड़ो लोगोका विचार करो[3]

धर्मका पालन करने वाला विवशताका अनुभव नही करता। कर्ज लेकर दवा-दारूमे पैसे खर्च नही किये जाने चाहिए। यदि तुम करोडो लोगोके साथ अपनी तुलना करोगे तो तुम्हे अपनी स्थिति दूसरोसे हजार गुना बेहतर लगेगी। इस समय तुम पर जो आर्थिक सकट आ पडा है यदि तुम उसे सहन करनेकी शक्ति का विकास कर लोगे तो सारा दुख सुखमे परिवर्तित हो जायेगा। आठ व्यक्तियोमे से जो मजदूरी करने लायक हो उसे मजदूरी करनी चाहिए।

[गुजरातीसे]
हरिजनबन्धु, ५-११-१९३३

१. एक पत्र-लेखकने गाधीजीसे पूछा था, क्या हरएक व्यक्तिको आपका अनुकरण करनेका और अपने अच्छे-बुरे सभी कार्योंके पक्षमें 'अन्तर्नाद' की दुहाई देनेका अधिकार नही है?

२ यह उत्तर एक व्यक्तिके मित्रको दिया गया था जो अपनी नौकरीसे हाथ धो बैठा था और उसे दुबारा हासिल करनेके लिए उपवास कर रहा था।

३ यह एक ऐसे पत्र-लेखकके प्रश्नके उत्तरमें दिया गया था जिसकी आर्थिक स्थिति खराब थी और जिसने इस सम्बन्धमें गाधीजीसे सलाह माँगी थी।

२०४. एक कार्यकर्त्ताकी समस्या

एक हरिजन-सेवकने अपने मामाके श्राद्धपर मिली एक सोने, रुद्राक्ष तथा मूँगेकी बनी दोहरी माला तथा साढ़े तेरह रुपये हरिजन-सेवाके लिए भेजे हैं। इन्हें भेजते हुए उक्त भाईने लिखा है:[1]

इसका संक्षिप्त और सीधा उत्तर यह है कि मनुष्यको किसीको सन्तोष प्रदान करनेके लिए अपने सिद्धान्तके विरुद्ध कोई काम नहीं करना चाहिए। हमसे यदि कोई व्यक्ति कुछ काम करवाना चाहे और यदि हमें साफ तौरपर यह लगे कि वह काम हमारे सिद्धान्तके विरुद्ध है तो हमें किसीके आग्रहके आगे कदापि नहीं झुकना चाहिए।

लेकिन मेरे इस उत्तरसे प्रश्नकर्त्ताको सन्तोष नहीं होनेवाला, सो मैं जानता हूँ। समस्त मानसिक दुर्बलताओंका मूल एक ही होता है और वह है ईश्वरके प्रति हमारा अविश्वास। मुँहसे ईश्वरका नाम लेना अथवा रूढ़िके वश होकर देवदर्शन इत्यादि करना हमारी आस्तिकता का चिह्न नहीं है। ईश्वरके प्रति विश्वास हृदयगत वस्तु होनी चाहिए और यह बात जिसके हृदयमें पैठ गई हो उसे अन्य किसीको सन्तुष्ट करनेकी कोई जरूरत नहीं होती। जिसने ईश्वरको सन्तुष्ट किया वह जीत गया और जिसने उसे नहीं पहचाना वह हजारोंको सन्तुष्ट करनेके बावजूद हार गया है, क्योंकि एक-एक व्यक्तिको सन्तुष्ट करनेके लिए मनुष्यको अपने-आपको खोना पड़ता है। ईश्वर अर्थात् अन्तरात्मा, क्योंकि ईश्वरके सम्बन्धमें ऐसी धारणा है कि वह कण-कण में व्याप्त है और यह कोरी धारणा नहीं है बल्कि सिद्ध की हुई चीज है। कोई इसे ईश्वर नामसे न जानकर प्रकृतिके नामसे जानता है। कोई इसे महाशक्तिके नामसे पहचानता है। आधुनिक वैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं कि प्रत्येक अणुमें छिपी ऐसी कोई शक्ति है जिसके आधार पर यह संसार टिका हुआ है। इस महाशक्तिके अधीन होकर जो व्यक्ति व्यवहार करता है उसमें दुर्बलता टिक ही नहीं सकती। उसका मनोबल दिनोंदिन बढ़ता जाता है। इस शक्तिको प्रकट करनेके लिए जगतके ज्ञानी लोगोंने जो साधन बताये हैं वे सर्वप्रसिद्ध हैं। जो व्यक्ति उसका आधार लेता है उसमें वह शक्ति प्रकट हुए बिना नहीं रहती। इन साधनोंके बारेमें मैं 'हरिजनबन्धु' में उल्लेख कर चुका हूँ।[2] इसलिए यहाँ लिखनेको कुछ नहीं रह जाता।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, ५-११-१९३३

१. पत्र यहाँ नहीं दिया गया है। पत्र-लेखकने पूछा था: उस दुर्बलतासे कैसे छुटकारा पाया जाये जिसके वशीभूत हो दूसरोंको प्रसन्न करनेके लिए हम अपने सिद्धान्तोंके विरुद्ध काम करने लगते हैं।

२. देखिए "कुछ नैतिक प्रश्न", २२-१०-१९३३।

२०५. हरिजन-कार्यकर्त्ताकी पिटाई

भाई गोकुलदास खीमजी माडवी कच्छके प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता और हरिजन-सेवक है। इनके बारेमे लिखते हुए एक भाई कहते है कि जब मै कच्छ गया था तब मैने उन्हे एक गरीब गायकी उपमा दी थी। यह प्रसग मुझे याद आता है। गोकुलदास सचमुच ऐसे विनम्र है। उनसे जो सेवा बन सकती हे वह अवश्य करते है। किसीको कष्ट पहुँचानेका उनका स्वभाव ही नही है। उन्होने गुजरात अस्पृश्यता-निवारण सघके मन्त्री भाई परीक्षितलालको निम्नलिखित पत्र लिखा है [1]

इसमे जीत मारनेवालेकी नही हुई वरन् मार खानेवालेकी हुई है। गोकुलदास जैसे गरीब सेवकोपर पडनेवाली मारसे ऐसी सात्विक शक्ति पैदा होगी कि जिसके द्वारा सवर्ण हिन्दुओकी हड्डियाँ पिघल जायेगी और हरिजनोके बन्धन टूट जायेगे। कच्छके समझदार सनातनी हिन्दुओको ऐसी गुण्डागर्दीको रोकनेके लिए प्रयत्न करना चाहिए। अस्पृश्यता यदि धर्म है, तो भी इस धर्मकी रक्षा तपोबलसे हो सकती है। पशुबलसे इसकी रक्षा की जा सकती है, यह बात कभी सुननेमे नही आई।

[गुजरातीसे]
हरिजनबन्धु, ५-११-१९३३

२०६. पत्र : तोताराम हिंगोरानीको

वर्धा
५ नवम्बर, १९३३

प्रिय मित्र,

मुझे आपका पत्र अच्छा लगा। उसमे आनन्द और विद्याके प्रति प्रेम-भाव झलकता है। नि सन्देह वे दोनो भावुक है। लेकिन वे दोनो सोनेकी तरह खरे है। आपको उनपर गर्व होना ही चाहिए। मुझे भी आपका उन दोनोके लिए रचनात्मक कार्य ढूँढनेका विचार पसन्द है। लेकिन आपकी इस इच्छामे मुझे जरूरतसे ज्यादा स्नेहकी झलक मिलती है। मै आपसे विनती करूँगा कि आप सयमसे काम ले। आनन्द ने परमात्माको जो पवित्र वचन दिया है यदि उसे भग किया जाता है अथवा उसे भग करनेके लिए उकसाया जाता है तो इससे आनन्दकी आत्माको कष्ट पहुँचेगा। इस बातके लिए आपको मेरे आश्वासनकी कोई जरूरत नही कि आनन्द आपकी और

१ पत्र यहाँ नही दिया गया है। गोकुलदासने किसी सड़क विशेषपर हरिजन बच्चोंको ले जानेका आग्रह किया था जिसका राजपूतोंने विरोध किया और उन्हें मारा।

आपकी नेक पत्नीकी पूजा करता है। वह आपकी अनुमति और आशीर्वाद पानेके लिए कुछ भी करनेको तैयार है। माता-पिताके प्रति ऐसा पूजा-भाव रखनेका उपयोग यदि उसे कमजोर बनानेके लिए किया जाता है तो यह गलत होगा। इसलिए फिलहाल आप उसे वह काम करने दें जिसके करनेका उसने ईश्वरको वचन दिया है। वह सुरक्षित रहेगा। ईश्वर उसका ध्यान रखेगा। जहाँतक विद्याका ताल्लुक है, प्यारी सासके अन्धे प्रेमसे उसका दम घुटा जा रहा था। वह यहाँ खादी-कार्य कर रही है। आप यकीन मानें, उसका स्वास्थ्य अच्छा है और महादेवका भी अच्छा है। उसे अच्छे लोगोंका साथ मिला हुआ है और वह अपने ढंगसे रहती है। वह अंग्रेजी पाठ सीखती है। और यदि उसकी तबीयत ठीक रही और वह चाहे तो मैं हिन्दीकी शिक्षा भी देना चाहता हूँ। यदि ईश्वरने चाहा तो एक सालके अर्सेमें तो वह आपके पास मन और शरीरसे अधिक सशक्त और स्नेहमयी पुत्रीके रूपमें लौटेगी।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी माइक्रोफिल्मसे, सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी।

२०७. पत्र : प्रेमी जयरामदासको

५ नवम्बर, १९३३

प्रिय प्रेमी[1],

तुम्हारा पत्र और पिताजीकी खबर पाकर मुझे खुशी हुई। निःसन्देह हैदराबादमें मेरे लिए कोई ऐसा घर नहीं है जो मुझे तुम्हारे घर जितना प्रिय हो। जब मैं वहाँ पहुँचूँगा तो तुम मुझे वहीं रखना और या फिर जहाँ तुम्हारी ओरसे कमेटी मुझे और मेरे साथ चलनेवाली लम्बी पलटनको रखना चाहे, वहाँ रखना। क्या पिताजीको बहुतसे पत्र पानेकी इजाजत है? उन्हें मेरा प्यार देना और उनसे कहना कि विद्या उन्नति कर रही है।

बापू

श्रीमती प्रेमीबहन
मार्फत श्री जयरामदास दौलतराम
मार्केट रोड, हैदराबाद (सिन्ध)

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ९२४८) से, सौजन्य जयरामदास दौलतराम

१. जयरामदास दौलतरामकी पुत्री।

२०८. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

५ नवम्बर, १९३३

प्रिय कुमारप्पा,

तुम्हारा पत्र मिला।

आशा है कि अब तुम्हारे रहनेका ठीक प्रबन्ध होगा और इलाजसे फायदा हो रहा होगा।

बा और मनुके बहुत जल्द अहमदाबाद पहुँचनेकी सम्भावना है।

मेरी यात्रा सही तौरपर इसी ८ तारीखको शुरू हो रही है। कार्यक्रम तुम्हे मिल जायेगा। लेकिन मेरा पता वर्धाका ही मानना।

तुम्हारे बहुतसे साथी इस समय यहाँ है—मोरारजी[1], स्वामी, गोकुलभाई, दीवानजी। वे अभी ही आये है और बस अभी ही जानेवाले है।

हम सबकी ओरसे प्यार,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१०२) से।

२०९. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

[५ नवम्बर, १९३३][2]

भाईश्री वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र आज मिला। विट्ठलभाई श्राद्ध समितिके बारेमे तुम्हे जहाँसे जितना मालूम हुआ है वहीसे उतना ही मुझे भी मालूम हुआ है। मणि क्या अकेले तुम्हारी बेटी है?

ने[3] जो विश्लेषण किया सो स्वामीने मुझे पढाया था अन्यथा कदाचित् मैं इस साहित्यको पढनेसे वचित हो जाता। सीधी बात तो यह कहो कि तुम मेरे पास नही हो। यह बात जितना तुम्हे सालती है उतना ही मुझे भी सालती है। इसलिए मैं एकलव्यका अनुकरण करता हूँ। जब द्रोणाचार्यने उसे निकाल बाहर किया तब वह उनका पुतला सामने रखकर धनुर्धर बन गया। मुझे धनुर्धर नही बनना है।

१ मोरारजी देसाई।

२ इस पत्रकी तारीख सी० एफ० एन्ड्रयूजके वर्धा छोडनेकी बात परसे तय की गई है, देखिए "पत्र प्रभाशकर पट्टणीको," ४-११-१९३३।

३ साधन सूत्रमें नाम नही दिया गया है।

तुम्हे बाण चढाना नही आता। तुमने तो बाण तोडकर उसका हल बना लिया है। अत मुझे भी हल तो चलाना ही होगा।

मै रोज पार्थेश्वर चिन्तामणिकी रचना करता हूँ और उससे पूछ लेता हूँ। पर उससे सही उत्तर ही मिलता होगा, यह तो कैसे कहा जा सकता है? लेकिन सवाल तो यह है कि तुम्हारी इच्छा क्या हो सकती है अथवा तुम क्या करोगे, इसका मै बराबर ध्यान रखता हूँ।

बा के जानेकी तैयारी हो रही है। चार्लीभाई ११ तारीखको यहाँसे रवाना होगे। यहाँसे वे कल चले गये। वे सब जगह घूमे है, सब लोगोसे मिले भी है, लेकिन फिर भी वहीके वही है।

काकाके उपवासकी बात कही फैली जान नही पडती। यहाँ भी हमने जरा भी शोर नही होने दिया। उनमे ताकत अच्छी तरह आ रही है।

प्रभुदास आखिरकार तो अल्मोडा जायेगा। दौरेमे भी मुझे तुम्हारे पत्र मिलने चाहिए। मेरे पत्र तो तुम्हे मिलते ही रहेगे।

जहाँ बा जायेगी वही (जेलमे) काका, स्वामी आदिका मण्डल पहुँचेगा। मोरारजी इत्यादि यही है। वे सकुशल है। उनकी तनिक भी चिन्ता न करना। तुम्हारे इस बारके . ।[1]

खुर्शीदकी तबीयत सुधरती जा रही है।

तुम्हे और चन्दूलाल को,

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृष्ठ ४३-४

२१०. पत्र : मणिबहन पटेलको

५ नवम्बर, १९३३

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। डाह्याभाई मलिन वातावरणको ठीक तरहसे शुद्ध कर रहा है। मेरा वहाँ आना नही हो सकेगा। मुझे विस्तारसे लिखती रहना। बा कदाचित् यहाँसे १३ तारीखको रवाना होगी। नागपुरका दौरा पूरा करनेके बाद मुझे फिर यहाँ आना है, इसलिए उसके मनमे इतने समयके लिए यही रह जानेका लोभ है। मेरा खयाल है कि अहमदाबादमे वह रणछोडभाई[2] के बँगलेमे रहेगी अथवा लाल बँगला[3]

१ शेष भाग जेल-अधिकारियों द्वारा काट दिया गया था।
२ रणछोडभाई सेठ।
३. साबरमतीमें स्वर्गीय प्राणजीवन मेहताका मकान।

तो है ही। यह निर्णय तो मुझे करना होगा। इस बारेमें तू क्या कुछ कहना चाहती है? पैर के बारेमें जो इलाज कर सके उतना तो अवश्य करना। बिना सोचे-विचारे उतावलीसे काम न लेना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ४ : मणिबहेन पटेलने, पृष्ठ १११

२११. पत्र : नारायण मोरेश्वर खरेको

५ नवम्बर, १९३३

चि० पण्डितजी,

तुम्हारे बारेमें समाचार जानता रहता हूँ। मैं देखता हूँ कि तुम्हारा समय अच्छा बीत रहा है। यहाँ लक्ष्मीबहन भारी सेवा कर रही हैं। उन्होंने बहुत सारा काम अपने हाथोंमें ले लिया है। हालाँकि संगीतशास्त्री आ गये हैं फिर भी मेरे कहनेपर प्रार्थनामें भजनादि वे ही गाती हैं। बृहस्पतिवार और शुक्रवारके भजन मधुरी मीठे स्वरमें गाती हैं। उसकी आवाज इतनी ऊँची आती है, यह मुझे मालूम न था। बाकी सब तो लक्ष्मीबहन तुम्हें लिखेंगी ही, इसलिए समय बचानेको खातिर नहीं लिखता। काकाके सात उपवास बृहस्पतिवारको पूरे हो गये। ये आवश्यक थे। तुम सब-कुछ जान गये होगे, ऐसा मान लेता हूँ। दौरेमें मेरे साथ चन्द्रशंकर, मीराबहन, नायर और जमनालालजीकी ओम होंगे। हरिभाऊके एक मित्र रामनाथ 'सुमन' भी होंगे। ठक्कर बापा तो हैं ही। यह दौरा लगातार ९ महीनेतक चलेगा।

रामभाऊ[1] अहमदाबादमें क्या करता है, इसकी पूरी जानकारी मुझे नहीं मिलती। वह तो लिखता ही नहीं है। कदाचित् तुम्हें समाचार मिलते रहते हैं। गजानन[2] और धीरूकी गाडी ठीक चल रही है। गजाननके मनमें असन्तोष है। उसका कहना है कि उसे पूरी शिक्षा नहीं मिलती। योगा[3] मुझे अच्छी लडकी लगी है, होशियार भी है। मुझे मालूम नहीं कि वह इतनी अच्छी गुजराती जानती है।

सबको —

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० २४७) से, सौजन्य लक्ष्मीबहन एन० खरे

१ रामचन्द्र, नारायण मोरेश्वर खरेके पुत्र।
२ और ३ ना० मो० खरेके भाईका पुत्र और पुत्री।

२१२. भाषण : हरिजनोंके समक्ष[1]

नालवाडी
[७ नवम्बर, १९३३ से पूर्व][2]

विनोबा यहाँ तुम लोगोकी सेवाके लिए आये है। यहाँ हमेशा आश्रमका कार्यक्रम चलता है। आशा है कि तुम उसका पूरा लाभ उठाओगे। सेठजीने अभी-अभी याद दिलाया है कि यहाँ एक बैल मर गया था, उसे कोई उठानेको तैयार नही था। उसे आश्रमके लोगोने उठाया और गाड दिया। हरिजन भाइयोको यह बात अच्छी नही लगी, क्योकि अस्पृश्योमे भी अस्पृश्यतम लोग है, उनका यह कार्य दूसरे कैसे करे — ऐसा वे लोग मानते है। विनोबाने शास्त्रोका पठन-पाठन किया है, उनका अभ्यास किया है। वे कहते है कि भगवानने कहीं भी यह नही बताया है कि कोई उच्च है और कोई नीच है, कोई स्पृश्य है और कोई अस्पृश्य है। इस भेदको मिटाने के लिए वे हरिजनोमे काम कर रहे है। डॉ० अम्बेडकरको सवर्णोके अत्याचारसे दुःख होता है, क्रोध आता है। सवर्णोने हरिजनो पर जितना अत्याचार किया है यदि उतना अत्याचार होगा तो गुस्सा क्यो नही आयेगा? तो फिर तुम लोग अपने बीच ऊँच-नीचका भेद क्यो करते हो? मैला उठानेका, मरे हुए पशुको उठानेका काम केवल भगीका ही है यदि ऐसा माना जाये तो हरिजनोमे जो काम चल रहा है वह रुक जायेगा। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, ये चार वर्ण माने गये है। इनमे से कुछ लोगोको पंचम वर्णका अर्थात् अवर्ण माना गया है। ये वर्ण आज अपने मूल रूपमे नही रह गये है। जो बच गया है वह केवल ऊँच-नीचकी भावना है। ईश्वरने किसी को ऊँचा या नीचा नही बनाया है। हम यहाँ बैठकर यदि तुम्हारे भगी बनते है तो तुम्हे इस पर रोष नही करना चाहिए। हम हरिजनोकी सेवा किस प्रकार करे? महारकी सेवा करे और भगीकी सेवा न करे? क्या हम हरिजनोमे भेदभाव करे? यदि यह भेदभाव दूर नही होगा तो हिन्दू-धर्मका नाश हो जायेगा। हिन्दुस्तानमे अधिकाश आबादी हिन्दुओंकी है। इनका यदि नाश हो जाये तो हिन्दुस्तानका शेष क्या रह जाता है? हा, हिन्दू मात्र मुसलमान अथवा ईसाई हो जाये तो यह एक अलहदा चीज है। लेकिन यदि हमे यह लगे कि हिन्दू-धर्म अच्छा है तो हमे उसे डूबनेसे बचाना चाहिए। इस धर्ममे अनेक ऋषि-मुनि हो गये है। 'गीता' यदि सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ नही तो सर्वश्रेष्ठ कहे जाने-वाले ग्रन्थोमे से एक अवश्य है। जिस धर्ममे ऐसे ग्रन्थ मिलते है, जिस धर्ममे ज्ञानेश्वर, तुकाराम और समर्थ रामदास जैसे सन्त हुए है, वह धर्म नष्ट होनेके लिए थोडे

१ इसका अनुवाद चन्द्रशंकर शुक्लके "साप्ताहिक पत्र" से किया गया है।

२. यह और अगला शीर्षक "वर्धा, ७ नवम्बर, १९३३", के अन्तर्गत छपी रिपोर्टसे लिये गये है।

ही है। वह हमेशाके लिए है, सनातन है, ऐसा समझना चाहिए। उसमे जो खामी हो, जो बुराई आ गई हो उसे निकाल बाहर करना चाहिए। उसमे अस्पृश्यता-रूपी जो मैल घुस गया है उसे निकालना चाहिए। महार, माग, भगी आदि नाम तो धन्धेके भेदको लेकर है, लेकिन इससे महार मागसे अथवा माग भगीसे श्रेष्ठ है, ऐसा नही कहा जा सकता। माग, भगी, महार और इसी तरह अन्य सारे हरिजन समाजकी सेवा करते है। न करे तो समाज छिन्न-भिन्न हो जाये। जो सेवक यहॉ आये है वे केवल सेवाके लिए आये है, पैसे लेने नही आये है। इनको तो तुम्हीको दो कौडी देकर सन्तोष होगा। इनकी सेवाको स्वीकार करो और ईश्वरका उपकार मानो।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, १२-११-१९३३

२१३. सलाह : एक हरिजन कार्यकर्त्ताको[1]

[७ नवम्बर, १९३३ से पूर्व]

मुझे तो अनुभवसे ऐसा लगता है कि प्रार्थनाके समय हमारे मनमे जो तरह-तरहके विचार आते है उनका हमे न तो खयाल ही करना चाहिए और न दुःख ही मानना चाहिए। यदि हम यह सोचकर चले कि ऐसे विचार नही आने देगे तो उनका हमला और भी जोरसे होता है। भयभीत मनुष्य को हर तरफ भय ही भय दिखाई देता है। यही बात अवाछित विचारोपर भी लागू होती है। ऐसे विचार मनमे क्यो आते है, इस बातकी चिन्ता करनेका मतलब शत्रुताके भावसे उन विचारोको आमन्त्रित करना है। जब अनावश्यक विचार मनमे उठे तब समझ लेना चाहिए कि शत्रु आये है, लेकिन हमे उनका आह्वान नही करना चाहिए। जिस प्रकार बिना बुलाये यदि कोई मेहमान घरमे आ जाता है और उचित स्वागत न पाने पर जिस प्रकार वह उपेक्षित होकर भाग खडा होता है उसी प्रकार अनचाहे विचारोके उठने पर यदि हम उनकी परवाह नही करेगे तो वे भी भाग खडे होगे। लेकिन जिस तरह हम बिन बुलाये मेहमानके आनेपर आमन्त्रित अतिथिको नही भूल जाते उसी प्रकार अनचाहे विचारोका हमला होने पर हमे अपनी मनचाही प्रार्थनाको बन्द नही करना चाहिए और अनचाहे विचारो के हमले से घबराना नही चाहिए। जैसे-जैसे उनकी ओर हमारा ध्यान कम आकर्षित होगा वैसे-वैसे वे मन्द पडते जायेगे और हमारा ध्यान ज्यादासे-ज्यादा प्रार्थनाकी ओर झुकता चला जायेगा। दूसरे विचार मनमे उठते है इसलिए हम प्रार्थना ही न करे—हमारा ऐसा सोचना तभी उचित हो सकता है जब हम अनचाहे विचारोको स्वय बुलाते हो। प्रार्थना

१ यह चन्द्रशकर शुक्लके "साप्ताहिक पत्र" से लिया गया है और यह "प्रार्थनामें कठिनाई" नामक शीर्षकसे लिखा गया था।

करने बैठे और अन्य विचारोको बुलाये – ऐसा करना तो दम्भ है। बुरे विचारोके साथ मानसिक असहयोग होना चाहिए।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, १२-११-१९३३

२१४. पत्र : दूधीबहन वी० देसाईको

७ नवम्बर, १९३३

चि० दूधीबहन,

धीरू बीमार रहता जान पडता है। रमाबहन – जो यही है – इमसे दुखी है। उसके समाचार मुझे लिखना और सीधे रमाबहनको भी लिखना। धीरू आदिको तुमने अपनी देखभालमे रखा है न?

तुम्हे राजकोटमे मेरा पत्र मिला होगा। मुझे लिखती रहना। वालजीका समाचार मिले तो देती रहना। मनु और मावोसे लिखनेके लिए कहना।

कुसुमके क्या हाल हैं?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ३१३७)से, सौजन्य वालजी गो० देसाई

२१५. पत्र : धीरू सी० जोशीको

वर्धा
७ नवम्बर, १९३३

चि० धीरू,

तेरा पत्र मिला है। तूने रमाको जो पत्र लिखा है देखता हूँ उसमे तेरी लिखावट बहुत खराब है। हमे किसीको भी खराब लिखावटमे नही लिखना चाहिए। पक्तियाँ भी टेढी थी। अब तू बिलकुल बच्चा नही है। तेरे पत्रमे क्रोधका भाव भी निहित था। माता पर बच्चे कभी क्रोध नही करते। हम गरीब हैं, यह बात तू स्वीकार करता है या नही? गरीब लोग एक-दूसरेसे मिलने जानेके लिए पैसे कहाँसे लाये?

तुझे अपनी तबीयतका ध्यान रखना चाहिए। तू मुझे अपना वजन लिख भेजना। खानेका ध्यान रखना। दाल यदि फिलहाल थोडे दिनोके लिए न खाये

तो अच्छा होगा। चावल और दूधसे गुजारा कर ले?[1] क्या तुझे फल मिलते है? कॉडलिवर [ऑयल][2] पीता है क्या? जरूरतसे ज्यादा मत खाना।[3] यदि तू अपना ध्यान रखेगा तो तेरा शरीर लोहे जैसा मजबूत हो जायेगा। तेरे पत्रका उत्तर किसी और समय दूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५३१४) से।

२१६. पत्र : महेन्द्र और सुदर्शन देसाईको

वर्धा
७ नवम्बर, १९३३

चि० मनु और मावो,

तुम लोगोको नये वर्षके आशीर्वादका पत्र[4] तो मिला था न? मुझे पत्र लिखते रहना। खूब पढना। कलसे मेरा दौरा शुरू होता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ३१६१) से, सौजन्य वालजी गो० देसाई

२१७. भाषण : सेलूमे

७ नवम्बर, १९३३

यह भी सौभाग्यकी बात है कि मेरी यात्रा इस पवित्र कार्यसे शुरू होती है।[5] मै कह नही सकता कि आगामी ९ महीनोके कार्यक्रमको मै पूरा कर सकूँगा, पर मेरा विश्वास मुझसे कहता है कि जो कार्य ऐसी शुभ परिस्थितियोसे शुरू होता है उसका परिणाम भी अच्छा ही होता है। मन्दिरकी मूर्ति ईश्वर नही है, पर ईश्वर चूँकि कण-कणमे मौजूद रहता है, अत मूर्तिमे भी बसता है। प्राण-प्रतिष्ठा सम्पन्न करनेके बाद मूर्तिको विशेष पवित्र माना जाता है और जो लोग मन्दिरोमे विश्वास रखते है वे दर्शनके लिए मन्दिरोमे जाकर पूजा अर्पित करते है। जिस मन्दिरमे भगवानमे श्रद्धा रखनेवाला और एक ही धर्मको माननेवाला एक वर्ग-विशेष नही जा

१, २ और ३ साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ कटा-फटा है।
४. देखिए "पत्र महेन्द्र वी० देसाई को", १२-१०-१९३३।
५ गाधीजीने एक मन्दिरको हरिजनोके लिए खोला था।

सकता उसमे ईश्वर रहता है, ऐसा कहना भी पाप है। इसलिए रामदेवजीने ठीक ही कहा कि आज हरिजनोके लिए खुल जानेके बाद से ही यह मन्दिर सच्चा मन्दिर हुआ है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १७-११-१९३३

२१८. भाषण : सेलूकी सार्वजनिक सभामें

७ नवम्बर, १९३३

गत ५० वर्षोसे यह मेरा विश्वास रहा है कि जिस प्रकारकी अस्पृश्यता आज हम मानते है उसके लिए हिन्दू-धर्ममे कोई स्थान नही है। मैने अपनी योग्यता और शक्तिके मुताबिक ससारके सभी धर्मोका अध्ययन किया है और उससे भी मै इसी निष्कर्षपर पहुँचा हूँ। अस्पृश्यताके इस अभिशापको दूर करनेके पवित्र कार्यमे मेरे प्राण चले जाये तो मै इसे कोई बहुत बडा त्याग न समझूँगा। मेरे मनमे जरा भी सन्देह नही है कि यदि अस्पृश्यता जडमूलसे उखाडकर न फेक दी गई तो हिन्दू-धर्मका नाश निश्चित है, क्योकि कोई धर्म अपने माननेवालोकी अनीतिपर फल-फूल नही सकता।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १७-११-१९३३

२१९. भाषण : वर्धाकी सार्वजनिक सभामे

७ नवम्बर, १९३३

यह मेरा सौभाग्य है कि मेरे हरिजन-कार्यके लिए घूमनेका प्रारम्भ भारतवर्षके इस मध्यबिन्दु — वर्धा — से होता है। मै चाहता हूँ कि यह स्थान इस आन्दोलनका भी मध्यबिन्दु बन जाये। और जिस शुभ इच्छासे जमनालालजीने कई वर्ष पहले अपना मन्दिर हरिजनोके लिए खोल दिया था और जिस भावनाके साथ विनोबा तथा उनके साथी हरिजनोके लिए काम कर रहे है, वह भावना सक्रामक सिद्ध होगी और सारे देशमे फैल जायेगी।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १७-११-१९३३

२२०. भाषण : भंगियोंकी सभा, नागपुरमें

८ नवम्बर, १९३३

श्रीमती अभ्यकरने अपनी जैसी सैकडो बहनोकी ओरसे जो-कुछ कहा उसका मेरे दिलपर गहरा असर हुआ।[1] जब वह बोल रही थी उस समय मैंने श्रीयुत अभ्यकरकी ओर देखा और मैंने देखा कि उनकी आँखे नम हो आई है। मैंने तो अपने हृदयको पत्थरका बना लिया है और आसानीसे मेरी आँखोसे आँसू नही निकलते, किन्तु इन शब्दोने मुझे विचलित कर दिया। मै मानता हूँ कि कितने ही व्यापारियो, डाक्टरो तथा गृहस्थोको भिखारी बनानेमे मै कारण रहा हूँ। पर उसका मुझे दुख नही है बल्कि खुशी है कि बहुतोने स्वेच्छासे गरीबीको गले लगाया है। श्रीमती अभ्यकर जो अपने पतिका अनुगमन करते हुए भगियोके साथ तादात्म्य स्थापित करना चाहती है, सोनेकी चूडियाँ क्यो पहने? भारत-जैसे गरीब देशमे, जहाँ एक पैसेकी खैरात लेनेके लिए लोग मीलोसे दौडते है, जैसा आज उडीसामे हो रहा है, दीन-दुखियोकी चिन्ता रखनेवाले किसी व्यक्तिको कीमती गहने पहनना शोभा नही देता। हरिजनोके साथ तादात्म्य स्थापित करनेका हमारे सामने अन्य कोई तरीका नही है। जिन लोगोके पास और कुछ भी नही है उनके पास ईश्वरका बल है और वे हरिजन है। जिन लोगोके पास धन है वे धनीजन है। इसलिए मोतीलालजी, दास[2], विट्ठलभाई तथा अन्य बहुतसे लोग, जिनके कि मै नाम गिना सकता हूँ, बधाई और प्रशसाके पात्र है, क्योकि उन्होने गरीबोकी खातिर अपना सर्वस्व त्याग दिया।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १७-११-१९३३

२२१. सलाह : हरिजनोंको

नागपुर

८ नवम्बर, १९३३

बेशक मैंने सवर्ण हिन्दुओसे कह दिया है कि हरिजनोमे जो भी बुरी आदते पाई जाती है उनके लिए वे ही जिम्मेदार है। लेकिन इसका मतलब यह नही है कि आप अपनी आदतोसे चिपके रहे। हरिजनोको चाहिए कि वे तन और मन दोनोसे

१ अपने हाथकी दो सोनेकी चूडियाँ उतारकर गाधीजीको देते हुए श्रीमती अभ्यकरने कहा था "आज आदमी लोग अपनी पत्नियोके पास छोडते ही क्या है। इसलिए मै हरिजनोकी सेवाके लिए केवल यही तुच्छ भेंट दे सकती हूँ।"

२ चित्तरजनदास।

स्वच्छ-साफ रहकर मुरदार मासका, जिसे सारा समाज ही घृणा की दृष्टिसे देखता है, त्याग करके, मद्य-पानका त्याग करके, तथा उनमे परस्पर जो ऊँच-नीचका भेद पाया जाता है उसका त्याग करके, इस आन्दोलनमे योग दे। जब वे मन्दिरमे जाते है तो उन्हे मन्दिरमे जानेवाले सब लोगोपर जो नियम लागू होते है उनका पालन करना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १७-११-१९३३

२२२. भाषण : नागपुरकी सार्वजनिक सभामें[1]

८ नवम्बर, १९३३

आपने मेरे प्रति यह जो स्नेहभाव व्यक्त किया हे उसके लिए मै आपका हृदयसे आभारी हूँ। भगवानका धन्यवाद है कि आप इतनी बडी तादादमे मेरा सन्देश सुननेके लिए यहाँ इकट्ठे हुए है। अध्यक्ष[2] महोदयका यह कथन ठीक ही है कि मेरे विचारानुसार हरिजन सेवाका कार्य अनिवार्यत धार्मिक कार्य है। और यह भी सच है कि इसके और भी बहुतसे परिणाम निकलते है। कोई भी सच्चा धार्मिक कार्य ऐसा नही है जिसका जीवनके एकाधिक अगो पर असर न पडता हो। किसी महान आन्दोलनको परखनेकी कसौटियोमे से यह सम्भवत एक कसौटी है। मै विनम्रतापूर्वक लेकिन पूरे विश्वासके साथ आपको यह बताना चाहूँगा कि मैने यह आन्दोलन किमी धर्म अथवा समुदायके प्रति द्वेषभाव व्यक्त करनेके लिए नही शुरू किया है। किसी व्यक्तिके लिए यह कह सकना असम्भव होगा कि पिछले पचास वर्षोमे मैने एक भी ऐसा काम किया हो जो किसी व्यक्ति अथवा समुदायके प्रति द्वेषभावसे किया गया हो। मैने कभी भी किसीको अपना शत्रु नही माना है। मेरा धर्म कहता है कि मै किसीको शत्रु न समझूँ। मै किसी भी जीवका बुरा नही चाह सकता। मेरा यह विश्वास है कि यदि हिन्दुओके दिलोपर से अस्पृश्यता-रूपी कलकका धब्बा पूरी तरहसे धुल जाये तो इस घटनाका न केवल भारतके सभी समुदायो पर बल्कि समस्त ससार पर अनिवार्य रूपसे प्रभाव पडेगा। मेरा यह विश्वास दिन-ब-दिन दृढ होता जा रहा हे। ऐसा नही हो सकता कि मै अपने हृदयसे कुछ लाख लोगोके प्रति अस्पृश्यताकी भावनाको दूर कर दूँ और उसकी जगह दूसरे कुछ लाख लोगोके प्रति यह भावना मनमे रखूँ। जब हिन्दुओके दिलोसे ऊँच-नीचका भेद मिट जायेगा तब हममे और अन्य समुदायोमे जो पारस्परिक द्वेष और अविश्वास दिखाई देता है वह भी दूर हो जायेगा। यही कारण है कि मैने इस प्रश्नपर अपने जीवनको दाँवपर लगा दिया है। अस्पृश्यताकी इस लडाईमें मै न केवल सवर्णो और अस्पृश्योके बीच एकता स्थापित करनेके

१. गाधीजीने अपना यह भाषण हिन्दीमें दिया था।

२ डॉ० एन० बी० खरे।

लिए संघर्ष कर रहा हूँ बल्कि हिन्दुओ, मुसलमानो, ईसाइयो और अन्य सब विभिन्न मतावलम्बियोमे भी एकता स्थापित करनेके लिए यह सघर्ष कर रहा हूँ। आप एक मिनटके लिए भी ऐसा न माने कि मै हिन्दुओका सख्या-बल बढानेमे रुचि रखता हूँ। मैने सारी जिन्दगी कभी भी सख्यापर जोर नही दिया है। मैने तो सदा सख्याके बजाय गुणोपर बल दिया है। यदि मै दस लाख खोटे सिक्के इकट्ठे करता हूँ तो वे मेरे लिए निरर्थक भार रूप होगे। इसके विपरीत एक असली सिक्केका भी अपना मूल्य होगा। यदि किसी धर्मके अनुयायी अपने जीवनमे उसके सिद्धान्तोको माननेसे इन्कार कर देते है तो वह धर्म जीवित नही रह सकता और यदि हिन्दू-धर्मके अनुयायी अपने दिलोसे अस्पृश्यताको निकाल बाहर नही करते तो इन तथाकथित लाखो अनुयायियोके बावजूद यह महान हिन्दू-धर्म भी अपने-आप खत्म हो जायेगा। अस्पृश्योकी सख्या लाखोमे है इसलिए ऐसा होगा सो बात नही। मुटठीभर अस्पृश्य होगे तो भी हिन्दू-धर्म नष्ट हो जायेगा। दूधमे चाहे आप थोडा-सा जहर डाले अथवा ज्यादा, लेकिन जहर मिले दूधको तो फेकना ही पडेगा। यदि हम यह मानते है कि हम सब एक ही ईश्वरकी साक्षात सन्तान है और भगवान सत्य और न्याय है तो हममे, जो कि उसकी सन्ताने है, अस्पृश्यताकी भावना कैसे हो सकती है? इसलिए मै बिना किसी भेदभावके सभी धर्मो और समुदायोसे अनुरोध करूँगा कि इस आन्दोलनकी पूर्ण सफलताके लिए प्रार्थना करके उसमे अपना सहयोग प्रदान करे, जिससे कि हम सब लोग शान्तिपूर्वक और मैत्रीपूर्वक रह सके।

और यदि मै विभिन्न धर्मोको माननेवाले सभी समुदायोके लोगोके बीच मेल स्थापित करना चाहता हूँ तो मै तथाकथित सनातनियो और सुधारकोमे फूट डालना भी नही चाह सकता। मै सनातनियोके प्रति अपने मनमे कोई बुरा भाव नही रख सकता। मेरा सनातनियोसे यही कहना है कि वे सुधारकोके प्रति वैसी ही सहिष्णुता बरते जैसी सहिष्णुताकी अपेक्षा वे सुधारकोसे रखते है। यदि सनातनी लोग अन्य धर्मावलम्बियोके धर्म और रीति-रिवाजोके प्रति सहिष्णु है तो वे सुधारकोके धर्म और रीति-रिवाजके प्रति सहिष्णु क्यो नही है? जबतक वे अस्पृश्यताको हिन्दू-धर्मका अभिन्न अग मानते है तबतक वे हमारी सहायता नही कर सकते। मै और मेरे साथी सुधारकोकी यह दृढ मान्यता है कि अस्पृश्यता एक बुराई है, और यदि ऐसा है और यदि सुधारक लोग धैर्यसे काम लेगे और विनम्रतापूर्वक व्यवहार करेगे तो सनातनियोके हृदय अवश्य पिघल जायेगे। इस महान आन्दोलनमे जोर-जबरदस्ती और हिसाके लिए कोई स्थान नही है। मै विशाल हिन्दू जन-समुदायके आगे अपने उस विश्वासके परिणामोको रखना चाहता हूँ जो मैने भक्तिपूर्ण हृदयसे और जितना मुझसे बन सका उतना अध्ययन करके तथा विद्वान शास्त्रियोके साथ अपने सम्पर्कके फलस्वरूप तथा इससे भी बडी बात यह कि उस विश्वासपर आचरण करके प्राप्त किया है। निस्सन्देह, उससे आन्तरिक फूटको, द्वेषभावको बढावा नही मिल सकता। मै देखता हूँ कि ऐसे बहुत सारे लोगोने, जो इस आन्दोलनका विरोध करते है, इस आन्दोलनके परिणामोको समझनेकी कोशिश ही नही की है। मेरी इस यात्राका उद्देश्य जनताके सम्मुख

सुधारकोकी स्थितिको स्पष्ट करके रखना है। और मै आशा करता हूँ कि जब लोग हरिजन सेवक सघकी गतिविधियोसे भलीभाँति परिचित हो जायेगे तब वे विरोध करना छोड देगे। हम उन लोगोका हृदय परिवर्तन करना चाहते है जो आज इस आन्दोलनका विरोध करते है। हम उनके अविश्वासको दूर करना चाहते है। हम उन्हे उनकी इच्छाके विरुद्ध कार्य करनेके लिए विवश नही करना चाहते। हम तो नम्रतम शब्दोमे अनुनय-विनय करके उन्हे अपने पक्षमे करना चाहते है, उनके दिल और दिमागपर विजय पाना चाहते है। ऐसा कोई भी मनुष्य जिसके हृदयमे प्रेम हो, दूसरोको कष्ट नही दे सकता। प्रेमकी अभिव्यक्ति तो आत्म-पीडन और आत्मशुद्धि करके ही की जा सकती है। मुझे इस बातका पूरा-पूरा यकीन है कि यदि सुधारक लोग अपने जीवनमे उत्तरोत्तर शुद्धता, आत्म-त्याग और कष्ट सहनेकी क्षमताका परिचय देगे तो उससे ऐसे अनेक लोगोके हृदय पसीज उठेगे जिनके हृदयमे आज अस्पृश्यताकी भावना भरी हुई है, क्योकि उनका विश्वास हे कि अस्पृश्यता हिन्दू-धर्मका एक वाछनीय अग है।

यह कहा जाता है कि अस्पृश्य लोग अपने अन्दरकी बुराइयोके कारण अस्पृश्य है? लेकिन क्या 'स्पृश्य' लोग उनसे बेहतर है? क्या वे निष्पाप है? बेशक अस्पृश्यताके पृष्ठपोषकोका यह दावा है कि कुछ लोग हमेशा अस्पृश्य ही रहेगे, और वे चाहे कितना ही पवित्र आचरण क्यो न करे लेकिन जन्मसे ही उनके माथेपर अस्पृश्यताका जो दाग लगा है वह कभी नही मिट सकता। उन्हे हमेशा सामाजिक कुष्ठ-रोगियोकी भाँति रहना होगा। सच तो यह है कि हमे अस्पृश्योमे जो कमजोरियाँ दिखाई देती है वे हमारी अपनी कमजोरियो और पापोका प्रतिबिम्बमात्र है। हमने उनके भक्तिपूरित हृदयोके साथ जो दुर्व्यवहार किया है वे उसका सीधा परिणाम है। वे सच्चे अर्थोमे तभी ऊपर उठ सकेगे जब हम अस्पृश्यताको जडमूलसे उखाड फेकेगे और अपने जीवनमे उत्तरोत्तर शुद्धताका विकास करते जायेगे। इसलिए इस आन्दोलनकी सफलता आर्थिक सहायतापर उतनी निर्भर नही करती जितनी कि सही आचरणपर करती है। आर्थिक सहायता तो इस बुराईको दूर करनेके हमारे दृढ निश्चयकी अभिव्यक्ति-मात्र है और इस बातका परिचायक है कि हम आत्मशुद्धि करना चाहते है।

मुझसे यह प्रश्न बार-बार पूछा जाता हे कि इस सुधारमे क्या अन्तर्जातीय भोज भी शामिल हे? हालाँकि इस प्रश्नका मने वार-बार उत्तर दिया है, फिर भी मुझे इसका उत्तर तबतक देते रहना चाहिए जवतक मुझसे यह प्रश्न पूछा जाता रहे। इस सम्बन्धमे मेरे अपने विचार क्या है, इससे सभी लोग परिचित है। अपनी युवावस्थामे ही मै लगातार हर सम्प्रदायके लोगोके साथ भोजन करता आया हूँ, मुझे उनके साथ खानेमे कोई आपत्ति नही है बशर्ते कि वे सफाईके नियमोका पालन करते है। लेकिन उसका वर्तमान आन्दोलनसे कोई सम्बन्ध नही है। अन्तर्जातीय भोज और इस तरहकी अन्य बाते तो हर व्यक्तिकी अपनी इच्छापर निर्भर करती है। हरिजन सेवक सघका यह जो आन्दोलन है उसका उद्देश्य अस्पृश्यताको उस हदतक हर तरहसे दूर करना है जिस हदतक कि वह तथाकथित अस्पृश्योको प्रभावित करती है।

हरिजनोको भी वही नागरिक सुविधाएँ और अधिकार प्राप्त होगे जो प्रत्येक अन्य हिन्दूको प्राप्त है अर्थात् उन्हे कुओ, स्कूलो, सडको और मन्दिरोका उपयोग करनेकी सुविधा होनी चाहिए।

अस्पृश्यता विषयक विधेयकोको लेकर जो आपत्तियाँ की जाती है उनके बारेमे मै आपसे चन्द शब्द कहूँगा। सनातनियोका कहना है कि इन विधेयकोमे धार्मिक मामलोमे राज्य द्वारा हस्तक्षेप किये जानेकी बात विहित है। मेरा खयाल है यहाँ हस्तक्षेपका तात्पर्य अनुचित हस्तक्षेपसे है। क्योकि ऐसे मामलोके उदाहरण दिये जा सकते है जिनमे धार्मिक मामलोमे लोगोकी ओरसे राज्य द्वारा हस्तक्षेप किये जानेकी माँग की गई है और ऐसी माँग करना अनिवार्य भी था। कहनेका तात्पर्य यह है कि बाहरी दबाव न डाला जाये। सनातनियोकी तरह मै भी धार्मिक मामलोमे जोर-जबरदस्ती और अनुचित हस्तक्षेप किये जानेके पक्षमे नही हूँ। इन विधेयकोमे ऐसी जोर-जबरदस्ती किये जानेकी अथवा सरकारकी ओरसे अनुचित हस्तक्षेप करनेकी बात नही कही गई है। इन विधेयकोमे सरकारके हस्तक्षेप करनेकी जो माँग की गई है वह लाभकारी है और अनिवार्य है। यदि सरकार लोगोको हरिजनोके लिए मन्दिर खोलनेके लिए विवश करती है तो यह निस्सन्देह अनुचित हस्तक्षेप होगा, लेकिन जब मन्दिर जानेवाले लोगोका कथित बहुमत अथवा मन्दिरके न्यासी, स्वेच्छासे हरिजनोके लिए मन्दिर खोलनेकी बात को कानूनी मान्यता देनेके लिए सरकारसे माँग करे तो यह हस्तक्षेप अनुचित नही हो सकता। ऐसा न करना जोर-जबरदस्ती करना होगा। मन्दिर प्रवेश विधेयकका उद्देश्य तो केवल बहुमतके कार्यको कानूनी रूप प्रदान करना है। दूसरा विधेयक तो आजसे बहुत पहले पास हो जाना चाहिए था। यह विधेयक पूरी तरह से अस्पृश्यताका निवारण नही करता। इसका उद्देश्य तो अस्पृश्यतासे उत्पन्न सामाजिक दुष्परिणामोको रोकना है। अस्पृश्यताके साथ ऐसे दुष्परिणामोको जोडना धर्म-पालनमे हस्तक्षप करना है। इससे कोई इन्कार नही कर सकता कि आपके धार्मिक दायित्वको कानूनी दायित्व बनाना सरकार द्वारा घोर और अनुचित हस्तक्षेप होगा। अस्पृश्यताका पालन तो तभी अपेक्षित है जब अस्पृश्य और स्पृश्य स्वेच्छामे उसे स्वीकार करे। यदि सरकार अस्पृश्योसे जबरदस्ती अस्पृश्यताका पालन करवाती है तो वह धार्मिक मामलोमे घोर हस्तक्षेप करती है। इसलिए अस्पृश्यताको जो कानूनी मान्यता प्राप्त है, विधेयकमे उस मान्यताको दूर करनेकी व्यवस्था की गई है। यह विधेयक किसी भी तरह अस्पृश्यताके धार्मिक पालनमे अथवा अस्पृश्यताके नियमका उल्लघन करनेके धार्मिक परिणामोमे हस्तक्षेप नही करता। यदि विधेयकोके विरोधी लोग भी यही चाहते है और विधेयकोका अच्छी तरह अध्ययन करनेके बाद पाते है कि विधेयकोमे बाध्यकारिताका कोई तत्त्व नही है तो उन्हे अपनी आपत्तियाँ वापस ले लेनी चाहिए।[1]

१ भाषणकी समाप्तिपर गांधीजीने उपहारमें प्राप्त हुई सब चीजें नीलाम कर दी जिसमें एक कौडी भी शामिल थी। यह कौडी उन्हें कटोलमें एक व्यक्तिने अर्पित की थी। इसके बादका अश चन्द्रशकर शुक्लक "साप्ताहिक पत्र" से लिया गया है।

उस गरीब आदमीके पास कदाचित् देनके लिए कुछ नही था और उसने अपना सब-कुछ दे दिया जाना पडता है। मालवीयजीके शब्दोमे, यह ईमानदारीसे कमाई हुई निर्मल कौडी है। हम जो कमाते है वह अपनी किस्मतका कमाते है। लेकिन हम ईश्वरके नामपर और उसके बनाये प्राणियोके सेवार्थ जो चीज दान देते है उससे हमे पुण्य लाभ होता है। अतएव इस कौडीको यदि हम त्यागके चिह्न स्वरूप देखे तो यह स्वर्णसे भी अधिक मूल्यवान है।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १७-११-१९३३

२२३. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

नागपुर

सवेरेकी प्रार्थनासे पहले, ९ नवम्बर, १९३३

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। यदि तुम दौरेके दौरान मुझे पत्र नही लिखोगे तो ऐसे काम नही चलेगा। मै भी लिखा करूँगा। विट्ठलभाईके सम्बन्धमे जो-कुछ हुआ वह मेरे ध्यानसे बाहर नही है। मुझपर भी अच्छी तरह चोट की गई है। इन सबपर मैने कोई ध्यान नही दिया। ध्यान देकर करे भी क्या? मैलको हिलाया जाये तो वह और भी उभर कर आती है। मैने तो केवल सुभाषकी सेवा की ओर ही ध्यान दिया। बाकी विट्ठलभाईकी अन्तिम इच्छा[1] के बारेमे जो अफवाहे सुननेमे आती है उनका तो कहना ही क्या? जैसे तुम्हे शक है वैसे मुझे भी है।

मेरा काम मगलवारसे शुरू हुआ। सब जगह लोगोके झुण्डके झुण्ड चले आते है। जब मै अस्पृश्यताकी बात करता हूँ उससे कोई चिढता नही जान पडता। मैने हरिजनोके लिए वर्धाके पास एक सुन्दर मन्दिर खोला।[2] नागपुरमे तो लोगोकी इतनी भीड जमा थी, जितनी पहले कभी देखनेमे नही आई। मेरी आवाजने मेरा ठीक साथ दिया। मुझे कुछ थकावट महसूस हुई हो, सो भी नही। १०८ अथवा १०९ वजन लेकर निकला हूँ। और मै समझता हूं, पैसा भी अच्छा इकट्ठा हुआ है। मध्यप्रान्तका दौरा पूरा करके दिल्ली जाना है और वहाँसे सीधे दक्षिण। राजाका कहना है कि दक्षिणमे पहले करनेकी आवश्यकता है। सनातनियोका सारा विरोध तो वहीसे शुरू होता है। शनिवारके बाद वर्धा जाना है। वर्धा तहसीलका दौरा अभी पूरा करना है। इस बीच जवाहरलाल आदि मुझे मिल जायेगे। अन्सारी[3] आ गये

१ स्वर्गीय विट्ठलभाईने वसीयत लिखकर एक लाखसे अधिक रुपया स्वर्गीय सुभाषचन्द्र बोसको उनकी इच्छानुसार विदेशमें प्रचारार्थ व्यय करनेके लिए देनेके लिए कहा था। बादमें बम्बईके उच्च न्यायालयने निर्णय दिया कि तमाम रकम उनके वारिसोंको मिलनी चाहिए। गाधीजीने सब कुटुम्बियोंको समझा-बुझाकर यह रुपया देशकार्यके लिए कांग्रेसको दिलवा दिया था।

२ देखिए "भाषण : सेलूमें", ७-११-१९३३।

३. डॉ० मु० अ० अन्सारी।

है। इसलिए कदाचित् वे भी आये। मेरे साथ मीरा, चन्द्रशकर, नायर, रामनाथ (दिल्लीके सस्ता साहित्यवाले), ओम और रामेश्वर बिडला[1] के लडकेकी बहू है। वह तो थोडे दिन ही रहेगी। ओम बडी हिम्मतवाली हो गई है। ठक्कर बापा तो रहेगे ही।

बा १३ तारीखको वर्धा छोडेगी। वह १५-१६ के आसपास अहमदाबाद पहुँच जायेगी। बा का मन इस बार खूब डोल रहा है। वह अस्वस्थ तो है ही। लेकिन वह [जेलमें] पहुँच जायेगी। उसे विश्वास है कि होना भी ऐसा ही चाहिए।

तुम वर्धाके पतेपर ही लिखा करना।

दोनोको,

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृष्ठ ४५-६

२२४. पत्र : मणिबहन पटेलको

९ नवम्बर, १९३३

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। तूने मुझे सब-कुछ साफ-साफ लिखकर समझदारी की है। हमेशा ऐसा ही करना। तू नही लिखेगी तो कौन लिखेगा? डाह्याभाईको मुझे लेकर गलतफहमी हुई और उसने क्रोध किया, यह आश्चर्यकी बात है। लेकिन हमे इसपर ध्यान नही देना चाहिए। उसे कदाचित् सब-कुछ मालूम भी न हो। उसे दु:ख हुआ, यह मैं समझ सकता हूँ। तू ही उसका जितना समाधान कर सके उतना करना। यदि तू चाहे तो मैं उसे लिखूँ और उसका दु:ख कम करूँ। मुझे यह बात ज्यादा अच्छी लगेगी। यह पत्र भी यदि तू उसे पढवाना चाहे तो पढवाना।

बा मगलवारको वर्धा छोडेगी। थोडे समयके लिए अर्थात् कुछ घटोके लिए वह अकोलामे रहेगी। बादमे तेरी ओर आयेगी। बा अभी कुछ दुविधामे है। चिन्तित भी है, लेकिन जेल जानेका निश्चय उसने स्वयमेव व्यक्त किया है। तू उसके इस निश्चयको पुष्ट करना।

अच्छी तरह खा-पीकर तू अपने शरीरको जितना बने उतना सुधार लेना। मुझे तो नियमपूर्वक लिखती रहना। बिजलीका उपचार तो जितना कर सके उतना कर ही लेना। बिजली तो अहमदाबादमे भी ली जा सकती है। दाँतका क्या किया?

शनिवारको वर्धामे जवाहरलालजी आदि आयेगे।

मृदु[2] इलाहाबादमे क्या करके आई है? क्या वह सन्तुष्ट होकर आई है? उससे पत्र लिखनेके लिए कहना। उसने दाँतोके बारेमे क्या किया। सरलादेवी[3] के बारेमे यदि तुझे ज्यादा मालूम हो तो लिखना।

१ घनश्यामदास बिड़लाके बडे भाई।
२ मृदुला साराभाई।
३ मृदुला साराभाईकी माँ।

नागपुरमे बहुत अच्छी सभा हुई थी। श्रीगणेश तो अच्छा हुआ। विट्ठलभाईके दाह-सस्कारका समाचार लिखना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ४ : मणिबहेन पटेलने, पृष्ठ १११-२

२२५. पत्र : गंगाबहन बी० झवेरीको

९ नवम्बर, १९३३

चि० गगाबहन,

तुम्हारा पत्र मिला। तुमसे जितनी सेवा बन सके उतनी किये जाओ और सन्तोष मानो। किसीके महलको देखकर हम अपनी झोपडीको नही उखाड देते। जो सुख महलमे होता है वह झोपडीमे भी होता है। तुम हरिजन स्कूल चलाती हो, यह एक अच्छी बात है। तुम यदि केवल दूध और फलका सेवन करोगी तो लाभ अवश्य होगा। और कुछ लेनेकी जरूरत नही। नानी बहनको मुझे लिखना चाहिए। वर्धाके पतेसे ही लिखना चाहिए। महेशसे लिखनेके लिए कहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३११९) से।

२२६. भेंट : पत्र-प्रतिनिधियोंको

९ नवम्बर, १९३३

यह पूछे जानेपर कि अपनी अखिल भारतीय अस्पृश्यता-विरोधी यात्राके सिलसिलेमें क्या आप कोई वक्तव्य अखबारोको देंगे, महात्मा गाधीने कहा कि वक्तव्य देने जैसी कोई बात नही है। मुझे जो-कुछ कहना था सो मै कल रात नागपुरकी सार्वजनिक सभामें अपने भाषणमे कह चुका हूँ। उन्होने कहा कि मै प्रश्नोके उत्तर देनेको तैयार हूँ, लेकिन सवाल खामखाह न किये जायें।[1]

प्रश्न . इस आन्दोलनकी वर्तमान प्रगतिको देखते हुए आपके खयालमें अस्पृश्यताको पूरी तरह दूर होनेमें कितना समय लगेगा?

उत्तर यह प्रश्न तो ऐसा है, जिसका उत्तर मै नही दे सकता। क्योकि यह तो करोडो मनुष्योके हृदय-परिवर्तनका प्रश्न है।

१. यह अनुच्छेद **हितवाद** से लिया गया है।

प्रश्न : अस्पृश्यता नष्ट होनेके पहले आप स्वराज्य स्वीकार कर लेगे या नही ?

उत्तर यह प्रश्न ही ठीक नही है। यह पूछना ही व्यर्थ है कि तबतक अगर अस्पृश्यता दूर न हुई तो मै स्वराज्य स्वीकार करनेके लिए तैयार होऊँगा या नही। स्वराज्य तो किसीसे पाने या लेनेकी चीज नही है। वह तो हमारे विकासके ऊपर निर्भर है। या तो हम उसकी ओर दिन-दिन बढते रहे है या पीछे हटते जाते है। यदि हमे एक राष्ट्रके रूपमे उत्तरोत्तर आत्मज्ञान हो रहा है, करोडो लोगोकी मौलिक एकताका अहसास हो रहा है तो हम निश्चय ही स्वराज्य की ओर बढ रहे है। और अगर हम विघटित हो रहे है, तो अपने लक्ष्यसे पीछे हट रहे है।

प्रश्न : क्या आप यह महसूस नही करते कि दलित जातियोंमे अब भी अपने वहम है, और जब उनसे ब्राह्मण आदि सवर्ण हिन्दुओसे मिलनेको कहा जाता है तो वे बहुत हिचकते है ?

उत्तर नही, मेरा ऐसा खयाल नही है। आप जो कहते है अगर वह सच है तो इसका यह अर्थ हुआ कि वे अपनी मौजूदा पतनावस्थामे ही बने रहना चाहते है। मेरी समझमे नही आता कि एक सामाजिक कोढी अपने कोढीपनपर गर्व कैसे कर सकता है? अगर वे दलित कही जानेवाली जातियाँ उच्च-जातीय हिन्दुओकी तरफसे अत्यन्त निराश होकर अपने-आपको हिन्दुओ और हिन्दू-धर्मसे बिलकुल अलग कर देना चाहती है, तो या तो उन्हे अपनी एक जुदी हस्ती बनानी होगी, अर्थात् किसी एक नये धर्मका प्रवर्तन करना होगा, या भारतके अन्य किसी एक प्रचलित धर्मको स्वीकार करना पडेगा। यदि सवर्ण हिन्दुओने अपनी उच्चताके काल्पनिक स्वप्नोमे ही मग्न रहकर हरिजनोके प्रति अपने सामान्य कर्त्तव्योका पालन न किया, अर्थात् उन्हे अपने बन्धु-बान्धवोकी तरह न समझा तो हो सकता है कि वैसा ही हो। अस्पृश्यता-निवारणका यह आन्दोलन हरिजनोके प्रति इसी बुनियादी कर्त्तव्यको निभानेका एक प्रयत्न है।

प्रश्न : मालूम होता है कि हरिजन सवर्ण हिन्दुओसे अलग ही रहना चाहते है, उनसे मिलना नहीं चाहते। क्या यह बात सच नही है ?

उत्तर मेरा अनुभव तो इससे कतई भिन्न है। मैने हजारो हरिजनोसे बात की है। वे लोग तो सवर्ण हिन्दुओसे मिलनेके लिए बहुत उत्सुक है, बशर्ते कि उनके साथ अच्छा बर्ताव किया जाये। यह बात जरूर सच है कि सवर्णोपर उनका विश्वास नही है, और अगर अविश्वास नही है तो वे उनसे डरते है। एक दुर्भाग्यकी बात और है। उनमे जन्मसे ही हीनताका भाव इतना भर दिया गया है कि वे समझते है कि उन्हे तो ईश्वरने ही सदाके लिए नीच बना दिया है। यह तो प्रत्येक विचारशील सवर्ण हिन्दूके लिए लज्जा और दु खकी बात होनी चाहिए।[1]

सवर्ण हिन्दुओके लिए सबसे अच्छा यही है कि वे भूल जाये कि वे किसीसे ऊँचे है। आज उच्च जातियोके बीच जो ऊँच-नीचकी भावना है, वही हरिजनोकी

१ इसके बादका अनुच्छेद **हितवाद** से लिया गया है।

हीनभावना और हिचकमे प्रतिबिम्बित होती है। उच्च जातिके लोगोको यह पता चलनेपर आश्चर्य नही होना चाहिए कि अस्पृश्यतामे और इसी कारणसे अस्पृश्योके बीच भी कई प्रकारके भेद है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १-१२-१९३३, तथा **हितवाद**, १२-११-१९३३

२२७. भाषण : छात्रोंकी सभा, नागपुरमे

९ नवम्बर, १९३३

मै जानता हूँ कि अंग्रेजी और हिन्दीका यह झगडा शाश्वत है।[1] छात्रोंकी सभाओमे भाषणके समय अंग्रेजीमे बोलनेकी माँगसे मुझे आश्चर्य हुआ है। आप जानते होगे, या जानना चाहिए कि मै अंग्रेजी भाषाका प्रेमी हूँ। लेकिन मै यह अवश्य मानता हूँ कि भारतके विद्यार्थी जिनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपना भाग्य भारतके करोडो साधारण जनोके साथ जोडकर उनकी सेवा करेगे, वे यदि अंग्रेजीकी अपेक्षा हिन्दीपर ज्यादा जोर दे तो ऐसी सेवा करनेके अधिक योग्य बन सकेगे। मै यह नही कहता कि आपको अंग्रेजी नही सीखनी चाहिए, जरूर सीखिए। लेकिन जहाँ तक मै देख सकता हूँ अंग्रेजी भारतके करोडो घरोकी भाषा नही बन सकती। अंग्रेजी हजारो या दसियो हजार लोगो तक सीमित रहेगी, लेकिन वह करोडो लोगो तक नही पहुँचेगी। इसलिए जब विद्यार्थी लोग मुझसे हिन्दीमे बोलनेकी माँग करते है तो मुझे बहुत खुशी होती है।

आप दोनो वक्ताओने मेरे विषयमे जो कहा है उसे मै यदि सच मान लूँ, तो मै नही जानता कि मेरा स्थान कहाँ होगा। पर मै यह जानता हूँ कि मेरा स्थान असलमे कहाँ है। मै तो भारतका एक विनम्र सेवक हूँ, और भारतकी सेवा करनेके प्रयत्नमे मै समस्त मानवजातिकी सेवा कर रहा हूँ। मैने अपने जीवनके आरम्भ कालमे ही यह देख लिया था कि भारतकी सेवाका विश्व-सेवामे विरोध नही है। और फिर ज्यो-ज्यो मेरी उम्र बढती गई और साथ ही साथ समझ भी, त्यो-त्यो मै देखता गया कि मैने यह ठीक ही समझा। ५० वर्षके सार्वजनिक जीवनके बाद मै आज कह सकता हूँ कि राष्ट्रकी सेवा और जगतकी सेवा परस्पर-विरोधी नही है और इस सिद्धान्तपर मेरी श्रद्धा दृढ हुई है। यह एक श्रेष्ठ सिद्धान्त है। इस सिद्धान्तके स्वीकार करनेसे ही जगतमे शान्ति स्थापित हो सकती है और पृथ्वीपर बसे हुए राष्ट्रोका आपसी ईर्ष्या-द्वेष-भाव शान्त हो सकता है। पूर्व वक्ताने यह सत्य ही कहा है कि अस्पृश्यताके विरुद्ध मैने जो यह युद्ध छेडा है उसमे मेरी दृष्टि सिर्फ हिन्दू-धर्म पर ही नही है। मैने यह अनेक बार कहा है कि हिन्दुओके हृदयसे अस्पृश्यता यदि जडमूलसे नष्ट

१. गांधीजीने अपना भाषण हिन्दीमें आरम्भ किया था, लेकिन चूँकि श्रोताओंने अंग्रेजीमें बोलनेकी माँग की, इसलिए वह अंग्रेजीमें बोले।

हो जाये तो इससे बडा विशद परिणाम निकलेगा, क्योकि इसका सम्बन्ध करोडो लोगोसे है। कल रात नागपुरकी विराट् सार्वजनिक सभामे मैंने कहा था कि अगर सचमुच अस्पृश्यता हिन्दुओके हृदयसे दूर हो जाये, अर्थात् सवर्ण हिन्दू इस भयानक कलकको धोकर बहा दे, तो हमे थोडे ही दिनोमे मालूम हो जायेगा कि हम सब हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी आदि एक ही है, अलग-अलग नही। अस्पृश्यताकी यह दीवार हटते ही हमे अपनी इस एकताका भान हो जायेगा। मै सैकडो बार कह चुका हूँ कि अस्पृश्यता एक सहस्रमुखी राक्षसी है। उसने अनेक रूप धारण कर रखे है। उसके कुछ रूप तो अत्यन्त सूक्ष्म है। मेरे मनमे किसी मनुष्यके प्रति ईर्ष्या होती है, तो यह भी एक प्रकारकी अस्पृश्यता ही है। मै नही जानता कि मेरे जीवनकालमे मेरा यह अस्पृश्यता-नाशका स्वप्न कभी पूरी तरह साकार होगा या नही। जिन लोगोमे धर्म-बुद्धि है, जो धर्मके बाहरी विधि-विधान रूपी शरीरपर नही, किन्तु उसके वास्तविक जीवन-तत्व पर विश्वास रखते है, उन्हे इतना तो मानना ही पडेगा कि जो सूक्ष्म अस्पृश्यता मनुष्य-जातिके एक बडे समुदायके जीवनको कलुषित कर रही है, वह अस्पृश्यता नष्ट होनी ही चाहिए। हिन्दुओका हृदय यदि उस पाप-कलकसे मुक्त हो सका, तो हमारे ज्ञान-नेत्र अधिकसे-अधिक खुल जायेगे। अस्पृश्यताका जिस दिन सचमुच नाश हो जायेगा, उस दिन मनुष्य-जातिके अपार लाभका अनुमान कौन कर सकता है? अब आप लोग सहज ही समझ सकते है कि इस एक चीजके लिए मैंने अपने प्राणोकी बाजी क्यो लगा रखी है।

आप विद्यार्थियोने, जो यहाँ एकत्रित हुए है, मेरा इतना आशय यदि समझ लिया है, और मेरे इस कार्यका पूरा अर्थ आपके ध्यानमे आ गया है, तो आपसे मुझे जो सहायता चाहिए, वह आप मुझे तुरन्त ही देगे। अनेक विद्यार्थियोने पत्र लिख-लिख कर मुझसे पूछा है कि वे लोग इस आन्दोलनमे क्या योगदान दे सकते है? मुझे आश्चर्य होता है कि विद्यार्थियोको यह प्रश्न पूछना पडता है। यह क्षेत्र तो इतना विशाल है और आपके इतना अधिक समीप है कि आपको इस प्रश्नके पूछनेकी आवश्यकता ही नही होनी चाहिए कि हम क्या करे और क्या न करे। यह कोई राजनीतिक प्रश्न नही है। सम्भव है कि यह प्रश्न राजनीतिक बन जाये, लेकिन फिलहाल आपके या मेरे लिए तो इसका राजनीतिके साथ कुछ सरोकार नही है। मेरा जीवन धर्मके सहारे चल रहा है। मै कह चुका हूँ कि मेरी राजनीतिके मूलमे भी धर्म ही है। राजनीतिमे जब मैंने भाग लेना शुरू किया तब भी मैंने अपने जीवनका नियमन करनेवाले इस सिद्धान्तकी कभी उपेक्षा नही की। चूँकि यह एक दयाधर्मका कार्य है, इसलिए विद्यार्थियोको अपने अवकाशका अधिक नही तो थोडा समय तो हजारो हरिजनोकी सेवामे देना ही चाहिए। आपने मुझे इतनी सुन्दर थैली देकर उन भारतीय विद्यार्थियोकी प्रथम पक्तिमे अपना स्थान प्राप्त कर लिया है, जिनकी अनेक सभाओमे अपनी भारत-यात्राओमे मैंने भाषण दिये है। पर मुझे तो आपसे इससे अधिककी आशा है। मै देखता हूँ कि अगर मुझे अपने अवकाशका समय देने-वाले बहुतसे सहायक मिल जाये, तो बहुत बडा काम पूरा हो सकता है। यह काम किरायेके आदमियोसे होनेका नही। हरिजन-बस्तियोमे जाना, उनकी गलियाँ साफ करना,

उनके घरोको देखना, उनके बच्चोको नहलाना-धुलाना यह काम भाडेके आदमियोके द्वारा नही कराया जा सकता। विद्यार्थी क्या सेवा कर सकते है, यह मै 'हरिजन' के एक गताकमे बता चुका हूँ।[1] एक हरिजन-सेवकने मुझे बताया है कि यह कितना बडा भगीरथ-कार्य है और इसमे कितनी कठिनाइयाँ पडी है। मेरा खयाल है कि हरिजन-बालकोकी अपेक्षा तो जगली बालकोकी दशा भी अच्छी होती है। हरिजन बालक जिस अध पतनकी दशामे दिन काट रहे है, उस वातावरणमे जगली बालक नही रहते। जगली बालकोके आसपास गन्दगीका यह वातावरण भी नही होता। यह सवाल भाडेके टट्टुओसे हल नही हो सकता। चाहे जितना पैसा हमे मिल जाये, तो भी यह काम पूरा नही हो सकता। इस कार्यको करनेका गौरव तो आपका होना चाहिए। आपको स्कूल-कालेजोमे जो शिक्षा मिलती है, उसकी यह सच्ची कसौटी है। आपकी कीमत इससे नही आँकी जाती है कि आप लच्छेदार अग्रेजी भाषामे व्याख्यान दे सकते है। अगर ६० रु० मासिक या ६०० रु० मासिककी कोई सरकारी नौकरी आपको मिल गई, तो इससे भी आपकी कीमत नही आँकी जायेगी। दीन-दुखियोकी आप जो सेवा करेगे उसीसे आपकी कीमतका पता लगेगा। मै चाहता हूँ कि मैने जो कहा है उसी भावनासे आप लोग हरिजन-सेवा करे। मुझे आजतक एक भी विद्यार्थी ऐसा नही मिला जिसने यह कहा हो कि मै नित्य एक घटा अवकाशका नही निकाल सकता। आप लोग आज अगर डायरी लिखनेकी आदत डाल ले, तो आपको मालूम होगा कि सालके ३६५ दिनोमे आप कितने कीमती घटे यो ही नष्ट कर देते है। आपको यदि अपनी शिक्षा सफल करनी है, तो इस महान आन्दोलनकी ओर ध्यान दीजिए। कुछ दिनोसे वर्धाके आसपास पाँच मीलके घेरेमे स्कूल-कालेजके कुछ विद्यार्थी हरिजन-सेवा कर रहे है। चुपचाप शान्तरूपमे वे बडी अच्छी सेवा कर रहे है, इसलिए आप उनका नाम नही जानते। अच्छा हो कि आप लोग उनका काम देख आइए। यह सेवा-कार्य कठिन तो जरूर है, पर आनन्ददायी है। क्रिकेट और टेनिससे भी अधिक आनन्द आपको इस कार्यमे मिलेगा। मै बार-बार कहता हूँ कि मेरे पास यदि सच्चे, चतुर और ईमानदार कार्यकर्त्ता होगे, तो पैसा तो मिल ही जायेगा। मै १८ वर्षका था, तभीसे भीख माँगनेकी कला सीखने लगा था। मैने देखा कि यदि हमारे पास सही ढगके कार्यकर्त्ता हो, तो पैसा तो अनायास ही मिल सकता है। सिर्फ पैसेसे मुझे कभी सन्तोष नही होता। मै तो आप लोगोसे आज यह भीख माँगता हूँ कि अपने अवकाशके समयमे से कुछ घटे हरिजन-सेवामे लगानेकी प्रतिज्ञा कर लीजिए। सभापति महोदयने कहा है कि मै एक स्वप्नद्रष्टा हूँ। हाँ, मै एक व्यावहारिक स्वप्नद्रष्टा अवश्य हूँ, किन्तु मेरे सामने कोरी हवाई चीजे नही है। मै तो अपने स्वप्नोको यथाशक्ति कार्यरूपमे परिणत करना चाहता हूँ, इसलिए आप लोगोसे मुझे जो उपहार प्राप्त हुए है, उनका नीलाम मुझे यही कर देना चाहिए।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १७-११-१९३३

१ देखिए खण्ड ५४, पृष्ठ २८७-९।

२२८. भाषणोंके कुछ अंश[1]

[१० नवम्बर, १९३३ से पूर्व][2]

आप जो पैसा देते है उसे मै इस बातका प्रतीक मानता हूँ कि आपने इस उद्देश्यको अपना बना लिया है। लेकिन केवल पैसा देनेसे काम नही चलेगा, इस पैसेके साथ-साथ इस कार्यमे आपका दिल भी होना चाहिए।[3]

आप यह न समझना कि आपका पैसा व्यर्थ गया। जिन लोगोने पैसा दिया है वस्तुत उन्होने पुण्यलाभ किया है और जिन लोगोने समर्थ होते हुए भी पैसा नही दिया, सच पूछो तो, उन्होने पुण्य गँवाया है। जुआ, शराब और भोग-विलास पर जो पैसा खर्च किया जाता है उससे दोहरा नुकसान होता है। एक तो इससे आपका धन व्यर्थ जाता है, और दूसरे, आप अपना स्वास्थ्य और अपनी मान-प्रतिष्ठा भी खो बैठते है। जबकि वे लोग जिन्होने मानवताके सेवार्थ एक पैसा भी दान दिया है उन्हे उससे दुगना लाभ हुआ है। अस्पृश्यता हिन्दू-धर्मके माथेपर एक कलक है। यह एक नासूर है जो हिन्दू-धर्मके शरीरको गलाये डाल रहा है। मै अपनी ऑखोसे देख रहा हूँ कि हिन्दू-धर्मका शरीर धीरे-धीरे नष्ट हो रहा है। इसकी सडाध मेरी नाक अनुभव करती है। यदि आप मेरे विचारोसे सहमत है तो आपको इस उद्देश्यमे यथाशक्ति अपना योगदान देना चाहिए। यदि एक बार हम हिन्दू-धर्मकी आध्यात्मिक शक्तिको खो बैठे तो मै नही जानता कि हमारी क्या स्थिति होगी। धर्म बिना मनुष्य वैसा ही है जैसी बिना पतवारकी नाव। इसलिए आप मुझे जो पैसा देते है वह मेरे लिए इस इच्छाका द्योतक है कि आप हिन्दू-धर्मको आध्यात्मिक नाशसे बचाना चाहते है।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १७-११-१९३३

१ और २ ये अश चन्द्रशकर शुक्लके "साप्ताहिक पत्र" से लिये गये है जिसके अनुसार गाधीजी १० नवम्बर, १९३३ को गोंडिया गये थे, और ये भाषण उन्होने गोंडिया जानेसे पहले दिये थे।

३ इसके बादका अश उस भाषणसे लिया गया है जो रास्तेमें जमा हो गये ग्रामीणोके सामने गया था।

२२९. टिप्पणी

सच्ची अहिंसा

श्री जमशेद मेहता, जो कि मानवताके एक सच्चे सेवक है, को उनके एक मित्रने 'ज्ञानेश्वरी गीता'[1] के अध्याय १३ मे से अहिंसाके बारेमे एक प्रवचन निकाल कर भेजा है जिसे श्री मेहताने अंग्रेजीमे अनुवाद करके मेरे पास भेजा है। मैने इसे और सक्षिप्त कर दिया है और मूल पाठके अर्थको कायम रखते हुए ऐसे रूपमे प्रस्तुत किया है जिसे शायद ज्यादा आसानीसे समझा जा सकता है। जो लोग अस्पृश्यताको अपने मनमे अभी भी स्थान दिये हुए है उन्हे चाहिए कि महाराष्ट्रके इस महान सन्तकी बताई हुई कसौटीपर अस्पृश्यताको कसकर देखे। अहिंसाकी उन्होने जो व्याख्या की है क्या उसके साथ अस्पृश्यताका मेल बैठता है? नीचे उद्धृत अशको पढकर आप स्वय देखे

> सच्ची अहिंसा क्या है, इसपर विचार करनेसे पहले यह देखना जरूरी है कि यह क्या नही है। अच्छी वर्षा हो, इसके लिए लोग बलि देते है जिसमे पशुओकी हत्या की जाती है। यह अहिंसा नही है। क्या यह ऐसा ही नही है जैसे कि कोई व्यक्ति स्वय अपने हाथोको काट डाले ताकि उसे पकाकर भोजनके रूपमे परोसा जा सके? क्या किसी पेडके चारो ओर बाडी लगानेके उद्देश्यसे उस पेडकी सभी डालियोको काट कर बाडीमे लगा देना बुद्धिमानी है? फिर, बहुतसे मनुष्योको बीमारियोसे बचानेके लिए लोग समूचे पेड ही काट डालते है, या पेडकी पूरी छाल उतार लेते है, या जीवित पशुओका अर्क खीचते है और अन्य प्राणियोके शरीरसे द्रवपदार्थ निकालते है। क्या यह ऐसा ही नही है जैसे कि कोई व्यक्ति मकानमे एक बरामदा या सायबान बनानेके लिए उस मकानको ही गिरा दे और आग तापनेके लिए अपने कपडोको ही जला दे?
>
> सच्ची अहिंसा या प्रेम हृदयमे पैदा होता है, और जिस प्रकार स्वर्ण अपने गुणोसे पहचाना जाता है उसी प्रकार प्रेम भी मनुष्यके आचरणमे प्रकट होता है। प्रेम-पूरित मनुष्य यह कभी नही भूलता कि जैसा जीवधारी वह है वैसे ही ससारमे असख्य जीवधारी भरे हुए है और वह इस बातकी बडी सावधानी बरतता है कि कही उसके हाथो किसी प्राणीको हानि न पहुचे। वह जिन लोगोसे मिलता है उनकी आखोमे अपने प्रेमकी झलक पाता है। वह सभीका मित्र है। जिस प्रकार बिल्ली अपने बच्चेको बिना चोट पहुँचाये दातोसे पकड

1 यहाँ गाधीजीका सकेत गीता पर ज्ञानेश्वरकी मराठी टीकाकी ओर है।

कर उठाती है उसी प्रकार प्रेमका पुजारी अपने सम्पर्कमे आनेवाले व्यक्तियोसे व्यवहार करता है। वह दबे पॉव और बिना आहट किये चलता है ताकि उसकी पदचापसे दूसरोकी नीदमे बाधा न पडे। जिनको जरूरत हो, उनके लिए वह हमेशा स्थान कर देता है। वह अपनी वाणीका स्वर सदैव इतना सयमित रखता है कि दूसरोके कानोको वह खटके नही। बोलनेकी जरूरत न होनेपर वह मौन रहता है। वह दूसरेको दुख पहुँचानेवाली कोई बात नही कहता। वह दूसरोकी योजनाओमे गडबडी पैदा करने या उनको भयभीत करनेकी इच्छा नही रखता। वह ऐसे शब्द कभी नही बोलता जिनसे बहस या विवादको जन्म मिले, या जिनसे दूसरोकी भावनाओको ठेस पहुँचे। उसकी बातचीतमे कोई छल नही होता, न सन्देह होता है और न कोई अस्पष्टता होती है। वह कभी किसीको घूर कर नही देखता ताकि कही उसका घूरना लोगोको बुरा लग सकता है। वह निरुद्देश्य अपना हाथ नही हिलाता, क्योकि वह एक मच्छर तकको हानि नही पहुँचाना चाहता। दूसरे हथियारोकी कौन कहे वह एक छडी भी लेकर नही चलता। उसके हाथ या तो अभिवादन करते हैं या सेवा।

जिस प्रकार वृक्ष जन्म देनेवाले बीजका प्रकट रूप है, उसी प्रकार ऊपर बताई गई बाते अन्तरके स्थायी प्रेमभावके बाहरी चिह्न है। उसका मस्तिष्क सभी अगोका स्वामी हैं। इसलिए सच्ची अहिसा मस्तिष्ककी प्रवृत्तिमे है जो शरीरकी अन्य ज्ञानेन्द्रियोके माध्यम से व्यक्त होती है। जो व्यक्ति सभी जीवधारियोके प्रति प्रेमभावसे भरा हुआ है और जिसके मन, वचन और कर्ममे एकता है, वही सचमुच महान है।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, १०-११-१९३३

२३०. लक्ष्य तो एक ही है

एक पत्र-लेखकने मद्रास-हाईकोर्टके भूतपूर्व जज सर सी० वी० कुमारस्वामी शास्त्रीका एक लेख मेरे पास भेजा है। छपे हुए तीन फुलस्केप पन्नेका वह लेख है। 'सनातनियो' के पक्षमे वह लिखा गया है। उसमे यह बतानेका प्रयत्न किया गया है कि अस्पृश्यता अनादि कालसे चली आ रही है और विधान-सभामे लोग उसके सम्बन्धमे जो कानून पास कराना चाहते है, वह निरर्थक है। पर उस लेखका यह अन्तिम अनुच्छेद महत्त्वका है

कितनी ही सामाजिक असमानताएँ और सकीर्ण दृष्टियाँ समय और शिक्षाके प्रभावसे शिथिल या समाप्त होती जा रही हैं। पुरानी व्यवस्था बदलती जा रही है, और उसके साथ ही लोगोके पुराने विचारोमे भी परिवर्तन होता जाता है। कई जातियोको, जो पहले दलित या गुलाम समझी जाती थी, आज

शिक्षा और आर्थिक उन्नतिके कारण अधिकार और सुख-सुविधाएँ मिल गई है। भारतका कोई भी हित-चिन्तक छाती ठोककर यह न कहेगा कि एक कौम या जाति दूसरी कौम या जातिसे हमेशा लडती ही रहे और सामाजिक अन्याय और असमानताएँ दूर न की जाये। लेकिन आज जो तरीके अपनाये जा रहे है और जिन साधनोका प्रयोग किया जा रहा है उसे देखकर किसके दिलमे दुःख और भय पैदा न होगा? ये तरीके तो सवर्णो और दलित जातियोके बीच कटुता ही बढायेगे, और दलित जातियोका इससे कोई खास लाभ नही होगा। उनकी दलितावस्थाके तो अन्य तथा बहुत गहरे कारण है। उनका यह दलितपना तभी दूर होगा, जब तमाम सवर्ण हिन्दू मिलकर उनकी आर्थिक और शिक्षा सम्बन्धी उन्नति करनेका प्रयत्न करेगे।

मेरी विनम्र रायमे तो ऊपरका यह अन्तिम अश लेखकी उस युक्तिको काट देता है, जिससे यह सिद्ध किया गया है कि अस्पृश्यता एक पवित्र और धार्मिक प्रथा है। लेखके इस अशसे तो यह मालूम होता है कि अस्पृश्यता एक सामाजिक बुराई है और विद्वान भूतपूर्व न्यायाधीश महोदयको उसका उन्मूलन देखकर प्रसन्नता ही होगी। उनके इस कथनमे तो प्रत्येक सुधारक सहमत होगा कि "आज जो तरीके अपनाये जा रहे है और जिन साधनोका उपयोग किया जा रहा है उसे देखकर किसके दिलमे दुःख और भय पैदा न होगा? ये तरीके तो सवर्णो और दलित जातियोके बीच कटुता ही बढायेगे और दलित जातियोका इससे कोई खास लाभ नही होगा।" सुधारकको इसमे सिर्फ इतना और जोड देना पडेगा कि 'सर कुमारस्वामीका यह सारा भय काल्पनिक है।' सुधारकोने कटुता पैदा करनेवाला न तो कोई तरीका ही अपनाया है और न ऐसे किसी साधनका ही प्रयोग किया है। सर कुमारस्वामीने इस बातका अध्ययन करनेका कष्ट नही उठाया है कि सुधारक क्या काम कर रहे है और किस ढगसे काम कर रहे है। सचमुच, मै उन्हे दिखा सकता हूँ कि जहाँ पारस्परिक कटुता पहले ही से मौजूद है और यह कटुता बढकर मारपीट तककी नौबत आ सकती है, वहाँ सुधारक हरिजनोके आर्थिक सुधार तकको आगेके लिए टाल देते है। उदाहरणके लिए, हरिजनोको जिन सार्वजनिक कुओसे पानी भरनेका असदिग्ध रूपसे कानूनन अधिकार प्राप्त है उन कुओमे भी पानी भरवानेका काम सुधारक मुल्तवी करते आये है। अब साधनोके प्रयोगकी बात ले। यह तो सुधारक तुरन्त स्वीकार कर लेगे कि सामाजिक पूर्वग्रह कानूनी सहायता लेनेसे दूर नही हो सकते। पर जब कानूनकी ऐसी व्याख्या होती हो जिससे अस्पृश्यताको समर्थन मिलता हो, तब तो सुधारक कानून और विधान-सभाकी मदद मॉगेगे ही, और मौजूदा कानूनमे सुधार करनेका आग्रह अवश्य करेगे। किसी बुराईको अगर कानून आश्रय दे रहा हो तो उस कानूनी आश्रयके मुकाबलेमे कोई भी सुधार सफल नही हो सकता। यह कहनेकी आवश्यकता नही कि कानूनी बाधाएँ कानूनमे परिवर्तन करके ही दूर हो सकती है, अन्य किसी रीतिसे नही। सुधारक सिर्फ ये कानूनी बाधाएँ ही दूर करना चाहते है, इससे अधिक कुछ नही। उनकी सिर्फ इतनी ही इच्छा है कि अस्पृश्यताको

कानूनी स्वीकृति नही मिलनी चाहिए। वे समझते है कि कानूनी रुकावटे दूर हो जानेपर भी सामाजिक बुराईके रूपमे अस्पृश्यता तुरन्त ही नष्ट हो जायेगी, और उसकी ओर भविष्यमे अभी बहुत लम्बे समय तक ध्यान रखना पडेगा।

लेखसे उद्धृत अशके अन्तिम वाक्यका मै स्वागत करता हूँ। जब तमाम सवर्ण हिन्दू मिलकर उनकी (हरिजनोकी) आर्थिक और शिक्षा-सम्बन्धी उन्नति करनेका प्रयत्न करेगे, तब अस्पृश्यताको इस देशसे नष्ट होते अधिक समय नही लगेगा। सुधारकोपर सनातनियोका यदि विश्वास न हो, तो वे उनसे अलग स्वतन्त्र रीतिसे काम करे। क्या सर कुमारस्वामी 'सनातनियो' से काम करनेके लिए कहेगे? इसमे उन्हे सफलता मिल जाये, तो कटुता जरा भी न रह जायेगी। क्या उन्हे मालूम है कि सनातन-धर्मके नामपर अपनेको सनातनी कहनेवालोने निरपराध हरिजनोकी फसले जला दी है, उन्हे मारा-पीटा है और जब वे अपने उचित और न्याय्य अधिकारोका प्रयोग कर रहे थे तब उन गरीबोको दूसरे तरीकोसे सताया है।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, १०-११-१९३३

२३१. हरिजन-शिक्षकोंके लिए

एक सज्जन पच्चीससे ऊपर हरिजन-पाठशालाएँ चला रहे है। उन्होने एक लम्बा पत्र पाठशालाओकी व्यवस्था-सम्बन्धी कठिनाइयोके बारेमे मुझे लिखा है, और पूछा है कि अगर मुझे स्वय इन पाठशालाओको चलाना पडे, तो मै उन्हे किस तरह चलाऊँगा। उन्होने अपनी कठिनाइयाँ बडी सावधानीसे लिखी है, लेकिन यहाँ उन सबके उद्धृत करनेकी मुझे कोई आवश्यकता नही जान पडती। मै तो यहाँ उनकी कठिनाइयोका उत्तर देनेका ही प्रयत्न करूँगा।

आज जो सार्वजनिक पाठशालाएँ चल रही है उनमे पढनेवाले हरिजन लडको और लडकियोको छात्रवृत्तियाँ तथा अन्य सहायता तो हमे देनी ही चाहिए। पर जो पाठशालाएँ हमारी अपनी देख-रेखमे चल रही है, उनमे सामान्य पाठशालाओके रग-ढगके अन्धानुकरण करनेका कोई कारण नही है।

हमे समझ लेना चाहिए कि किसी भी पाठशालामे पढानेके लिए हमे हरिजन बच्चे बडी दिक्कतसे मिलते है। उनमे किसी भी तरहकी नियमितता तो हमे मिलेगी ही नही। इसके अलावा हमारी भूतकालकी भयकर उपेक्षाके कारण वे इतने अनगढ होते है कि शुरू-शुरूमे तो हमे सामान्य बच्चोकी अपेक्षा उन्हे बिलकुल जुदा ही तरीकेसे हाथमे लेना होगा।

पाठशालामे जब पहले-पहल हम उन्हे भरती करे, तब उनके शरीरकी बारीकीसे जाँच करके उसे खूब साफ करना चाहिए। उनके कपडे-लत्ते भी शायद धोने और सीने पडे। इसलिए कुछ समय तक तो उनके लिए सबसे पहला दैनिक पाठ यह होगा कि वे अपने शरीरको स्वच्छ रखे, आसपास की जगह साफ रखे और मामूली

सिलाई करना सीखे। पहले साल शायद मै उनके हाथमे कोई किताब नही दूँगा। जिन वस्तुओसे वे परिचित होगे, मै उन्हीके बारेमे बात करूँगा और ऐसा करते हुए उनका उच्चारण सुधारूँगा और व्याकरणकी गलतियाँ ठीक करूँगा तथा नये-नये शब्द सिखाऊँगा। जो नये-नये शब्द वे सीखते जायेगे, उन्हे मै लिखता जाऊँगा और बार-बार उनका प्रयोग इस तरह करूँगा कि वे शब्द उनके मनमे अकित हो जाये। शिक्षक व्याख्यान न दे, बल्कि बातचीतके रूपमे उन्हे पढाये। बातचीत करते हुए ही वह अपने विद्यार्थियोको इतिहास, भूगोल और अकगणितका नया-नया ज्ञान देता जाये। इतिहास अपने ही समयसे शुरू होगा, और सो भी अपने अत्यन्त निकटकी घटनाओ और मनुष्योमे। इसी तरह भूगोलका आरम्भ अपनी पाठशालाके आसपासके स्थानोसे ही होगा। और गणित शुरू कराया जायेगा विद्यार्थीके घरू हिसाब-किताबसे। इस पद्धतिकी जाँच मै स्वय कर चुका हूँ और मै जानता हूँ कि अमुक नियत समयमे विद्यार्थियोको प्रचलित पद्धतिकी अपेक्षा इस तरीकेसे कही अधिक ज्ञान दिया जा सकता है, साथ ही, उनके मस्तिष्कपर कुछ भार भी नहीं पडेगा। वर्णमालाका ज्ञान तो एक जुदा ही विषय समझना चाहिए। बालकोको बताना चाहिए कि अक्षर एक प्रकारके चित्र ही है। अक्षरोकी पहचान कराके फिर उनका नाम बताना चाहिए। इसके बाद चित्रकारी (ड्राइग) के पाठके रूपमे बच्चोको अक्षर लिखना सिखाना चाहिए। ऐसा करना चाहिए कि कीडे-मकोडे जैसे अक्षर बनानेके बजाय बालक नमूनोकी बिलकुल हूबहू नकल कर सके। इसलिए जबतक उनका अपनी उँगलियो और कलमपर पूरा काबू न हो जाये, तबतक उनसे अक्षर लिखनेके लिए न कहा जाये। सालभरमे जैसे-तैसे किसी तरह एक किताब पढवा कर बालकको उससे जो ज्ञान हो सके, उतना करके उसका मानसिक विकास रोकना एक पाप है। हम यह महसूस नही करते कि अगर बालक घरके जीवनसे बिलकुल अलग कर दिया जाये, और सिर्फ पाठशालामे ही रखा जाये तो वह कई साल तक गावदी ही बना रहेगा। घरमे वह अनजाने ही नई-नई बाते और भाषा सीख लेता है, पाठशालामे नही। इसलिए हमे सस्कारी तथा असस्कारी घरोके बालकोके बीचमे जमीन-आसमानका अन्तर दिखाई देता है। वास्तवमे, असस्कारी घरोको घर कहना ही ठीक नही है।

मैंने जिस योजनाका ऊपर वर्णन किया है, उसके अनुसार अध्यापकसे आशा की जाती है कि वह अपना कार्य एकाग्रतासे करेगा और अपने विद्यार्थियोके साथ काफी घुलमिल जायेगा। मै जानता हूँ कि इस योजनाको अमलमे लानेके लिए योग्य अध्यापकोका मिलना सबसे मुश्किल काम है। पर जबतक हम इसका उचित दिशामे आरम्भ नही करेगे, तबतक योग्य अध्यापक भी मिलनेके नही।

इतना करनेके बाद जब बालकोके हाथमे किताबे देनी होगी, उस स्थितिका विचार तो मै पीछे करूँगा।[1]

[अग्रेजीसे]
हरिजन, १०-११-१९३३

१. देखिए 'स्कूलकी पुस्तकें", १-१२-१९३३।

२३२. पत्र : मानशंकर जे० त्रिवेदीको

१० नवम्बर, १९३३

चि० मनु,

तूने प्रिन्सेसको[1] मिलकर ठीक ही किया। अब तू ही उससे सब बात करना। मै तो उसे सक्षिप्त पत्र ही लिख पाया हूँ। मैने उससे सारा विवेचन नही किया है। मुझे लिखना। एलिजाबेथ[2] भी यदि लिखना चाहे तो लिख सकती है। काका साहबके सात दिनोके उपवासकी बात तो तुझे मालूम हो गई होगी। [3]ने मुझे निराश किया है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

पता वर्धा।

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० २२६२१) से।

२३३. भेट : पत्र-प्रतिनिधियोंको

नागपुर

[१० नवम्बर, १९३३][4]

मेरे सामने जो नौ महीने पडे हुए है उसकी तुलनामे चार दिन तो बहुत ही कम समय है। इसलिए मै कह नही सकता कि मै इस अत्यधिक भार को सहन भी कर सकूँगा या नही। मै तो सिर्फ इतना कह सकता हूँ कि यदि ईश्वरकी इच्छा हुई कि मै यह यात्रा पूरी कर लूँ तो इस सब घोर परिश्रमके बावजूद वह मुझे इसे पूरा करनेकी शक्ति देगा।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, १७-११-१९३३

१ एफी एरिस्टार्शी।

२ एक रोमन कैथॉलिक लड़की जिसे गाधीजी सामान्यतया विमलाके नामसे पुकारते थे और जिससे मानशकर त्रिवेदी विवाह करना चाहते थे।

३ नाम नही दिया गया है।

४ यह भेंट गाधीजीने यात्राके चौथे दिन दी थी। यात्रा ७ नवम्बर, १९३३को शुरू हुई थी।

२३४. भाषण: गोंडियामे

१० नवम्बर, १९३३

गाधीजीने कहा कि यदि हरिजन लडके द्वारा लगाये गये आरोप[1] सच है तो हरिजनोके प्रति उच्च वर्णके लोगोका रवैया निन्दनीय है। उन्होने कहा कि मै केवल दिखावा नही चाहता, मै लोगोके हृदयोको शुद्ध देखना चाहता हूँ। लेकिन अगर वे लोग अभी भी अपने-आपको हरिजनोसे अलग-थलग रखना चाहते है तो उन्हे खुल कर ऐसा कह देना चाहिए और फिर उससे उत्पन्न परिस्थितिके लिए तैयार रहना चाहिए। गाधीजीने कहा, मै उस आरोपके बारेमे कुछ नहीं कह सकता जो कि बीडीवालोके विरुद्ध लगाया गया है, क्योकि उसके बारेमे मुझे कोई जानकारी नही है। गांधीजीसे पहले जो वक्ता बोले थे उन्होने 'हरिजन' शब्दपर आपत्ति की थी जिसपर महात्माजीने कहा कि 'हरिजन' शब्द उनकी अपनी खोज न होकर स्वय एक हरिजन द्वारा चुना हुआ शब्द है। उन्होने कहा कि मै अपने-आपको भी 'हरिजन' कहना अधिक पसन्द करता हूँ। उन्होने बीड़ी व्यापारियोसे अपने मजदूरोके साथ अच्छा व्यवहार करनेका अनुरोध करते हुए उन्हे हरिजन उद्देश्यके लिए खुले हाथ दान देनेके लिए धन्यवाद दिया। इसके बाद महात्माजीने स्थानीय भण्डार-गृहमे खादीकी बिक्रीकी चर्चा की और बताया कि खादीकी बिक्री बहुत कम हुई है। गोडिया जैसे शहरमे प्रतिमास केवल १,००० रुपयेकी खादी बेची जाती है। उन्होने लोगोको बताया कि लोगोके खादी खरीदनेसे हरिजनोको कितना और कैसे लाभ होता है।

[अंग्रेजीसे]

हितवाद, १६-११-१९३३

१. एक हरिजन बालकने यह शिकायत की थी कि सवर्ण हिन्दू एकता और सहानुभूतिका स्वाग भरते है। उसने बीड़ी फैक्टरीके मालिकोंके विरुद्ध भी यह शिकायत की थी कि वे अपने हरिजन मजदूरोंके प्रति अच्छा व्यवहार नही करते।

२३५. तार : जवाहरलाल नेहरूको

[११ नवम्बर, १९३३][1]

दो दिन देनेके लिए अपनेको असमर्थ पाता हूँ। किसी भी सोमवार तीसरे पहर तीन घंटे दे सकता हूँ। २७ नवम्बरको रायपुर और ४ दिसम्बरको जबलपुर होऊँगा।

[अंग्रेजीसे]

गांधी-नेहरू पेपर्स, १९३३, सौजन्य नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय

२३६. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

वर्धा
११ नवम्बर, १९३३

प्रिय जवाहरलाल,

मैं बहुत व्यस्त यात्रा-कार्यक्रमके बाद अभी-अभी लौटा हूँ और तुम्हारे पत्रको पढ़नेके बाद मैंने निम्नलिखित तार तुम्हें भेजा है :[2]

एक दिनसे ज्यादा और तीन घंटेसे ज्यादा समय देना असम्भव है। तीन घंटे देना ही काफी मुश्किल है। कार्यक्रम इतना व्यस्त है कि विश्रामके लिए भी मुश्किलसे समय मिलता है। विश्राम, स्नान तथा भोजनके लिए जो चार घंटे थे वे अब घटाकर दो घंटे रह गये हैं। जिस कार्यक्रमसे दसियों हजार व्यक्ति सम्बन्धित हों उसे आसानीसे न तो आगेके लिए टाला जा सकता है और न उसमें फेरबदल की जा सकती है। साथकी प्रतिसे[3] तुम्हें कार्यका अन्दाजा लग जायेगा और जहाँ तुम विश्रामके घंटे देखोगे उनमें, शुक्रवारके तीसरे पहरको छोड़कर, कमी कर दी गई है और विश्रामका समय प्रातः १० बजेसे दोपहर २ बजे तकके बजाय दोपहर १२ से २ बजे तकका कर दिया गया है।

मैं तुम्हारी इस बातसे बिलकुल सहमत हूँ कि प्रस्तावित बातचीतसे बातें सन्तोषजनक रूपसे साफ नहीं होंगी। यदि अ० भा० का० क० की बैठक होती है तो मुझे नहीं मालूम कि मैं उसकी बैठकोंमें कैसे भाग ले सकूँगा। क्या मेरे लिए इनमें

१. देखिए अगला शीर्षक।
२. देखिए पिछला शीर्षक।
३. देखिए परिशिष्ट १।

भाग न लेना बेहतर नही होगा? यदि ऐसा करना उचित हो तो मै अपने विचार लिखकर भेज दूँगा। तुम्हे भेजे अपने सार्वजनिक पत्रमे[1] जो राय मैने जाहिर की है वह निरन्तर पुष्ट होती जा रही है।

तुमने हिजली जेलके सम्बन्धमे लाहिडीके वक्तव्यको तो देखा ही होगा। इससे सतीश बाबूके पत्रमे कही गई बातोकी पुष्टि होती है। मुझे गवर्नरका पत्र मिला है।[2] उनके सचिवका कहना है कि "आपने जिस मामलेका उल्लेख किया है गवर्नर महोदय उसकी जाँच करेगे।"

अस्पतालके सम्बन्धमे जो अपील है वह मैने देखी है।[3] उम्मीद है कि इसकी जैसी प्रतिक्रिया होनी चाहिए वैसी होगी।

सरकारकी माँगसे सम्बन्धित तुम्हारे पत्रको मैने ध्यानसे पढा है। स्वराज्य भवनसे सम्बन्धित कुछ भी करते हुए क्या तुम यह नही समझते कि तुम्हे न्यासियोको केवल सूचना देनेके बजाय उनसे राय भी लेनी चाहिए? महज समयकी कमीके कारण मै तुम्हारा पत्र जमनालालजीको दिखा तक नही सका हूँ। वह मुझपर यह कहते हुए ताना कसते है कि चूँकि मै वर्धामे हूँ इसलिए तुम उनकी बिलकुल उपेक्षा कर रहे हो, यहाँतक कि उनके पत्रोका जवाब भी नही दे रहे हो। मैने उनसे कहा कि तुम्हारे पत्र जैसे मेरे लिए है वैसे ही आपके लिए है और इस समय हममे से जो थोडेसे लोग बाहर है उनके पास महज शिष्टाचार निभानेका समय बहुत कम है।

माँ जैसी पुराने रोगीके स्वास्थ्यके तेजीसे सुधरनेकी आशा तुम्हे नही करनी चाहिए। मुझे तो यह आश्चर्य है कि रोगका जो आक्रमण उनपर हुआ था उससे वह बच गई। आशा है कि सुधार चाहे धीमा ही हो, जारी रहेगा।

सप्रेम,

बापू

सलग्न १

[अग्रेजीमे]

गाधी-नेहरू पेपर्स, १९३३, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

१ १४ सितम्बर, १९३३ का, देखिए खण्ड ५५, पृष्ठ ४४६-५०।

२ गाधीजीने बगालके गवर्नरको २ नवम्बर, १९३३ को पत्र भेजा था।

३ देखिए "पत्र जवाहरलाल नेहरूको" ३०-१०-१९३३।

२३७. भेट : पत्र-प्रतिनिधियोंको

वर्धा
११ नवम्बर, १९३३

मै नही जानता कि कोई भी आलोचक इन सभाओ और प्रदर्शनोसे बेहतर और क्या सबूत चाह सकता है कि अस्पृश्यता तेजीके साथ छिन्न-भिन्न हो रही है। इसका तात्पर्य यह नही कि इस प्रश्नको लेकर जनमानसमे एकदम परिवर्तन आ गया है। लेकिन पिछले चार दिनोमे जो-कुछ प्रमाण मुझे मिला है यदि पूरी यात्राके दौरान ऐसा ही प्रमाण मिलता रहा तो मै निश्चयके साथ मान सकता हूँ कि अस्पृश्यता-रूपी राक्षसकी अत्येष्टि-क्रिया निकट भविष्यमे ही सम्पन्न हो जायेगी।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १७-११-१९३३

२३८. भाषण : देवलीमें[1]

११ नवम्बर, १९३३[2]

मै स्वभावत शान्ति-प्रेमी हूँ। हिन्दुओमे फूट पैदा करनेकी मेरी तनिक भी इच्छा नही है। सनातनियो तथा सुधारवादियोके लिए यही सबसे अच्छा होगा कि वे आपसमे बातचीत करके कोई समझौता करनेका प्रयत्न करे। यदि वह प्रयत्न असफल हो जाता है तो दोनो पक्षोको चाहिए कि वे शान्तिपूर्ण और उचित तरीकोको अपनाये और एक-दूसरेकी बातको सहन करना सीखे। मै अपनेको सनातनी तथा सुधारवादी दोनो ही मानता हूँ। हरिजनोके प्रति एक सवर्ण हिन्दू अधिकसे-अधिक जितना सद्भाव रख सकता है मैंने अपने अन्दर वैसा सद्भाव पैदा करनेका प्रयत्न किया है। ईश्वर ही जानता है कि अपने इस प्रयत्नमे मुझे कहाँतक सफलता मिली है। मुझ जैसे एक अपूर्ण मनुष्यके लिए जिस हदतक सम्भव है, उस हदतक मै भी चीजोको हरिजनोकी आँखोसे देखनेका तथा यह जाननेका प्रयत्न कर रहा हूँ कि उन लोगोके मनमे क्या-कुछ विचार चल रहे है। सारी सचाईको जान लेना तो मनुष्यके बसकी बात नही है। उसका तो यही कर्त्तव्य है कि वह जो-कुछ सचाई देखता है उसका पालन करे और ऐसा करते हुए शुद्धतम साधनका, अर्थात् अहिसाका आश्रय ले।

१ गाधीजी हरिजनोके लिए मन्दिर खोलने देवली गये थे, लेकिन कुछ सनातनियोंने इसका विरोध किया। दक्षिणके एक शास्त्रीने गाधीजीसे आन्दोलन रोकने तथा हिन्दू-समाजमे फूट न फैलानेका अनुरोध किया।

२ **बॉम्बे क्रॉनिकल** से।

सनातनियोकी भावनाओको मै ठेस नही पहुँचाना चाहता। मै ज्यादासे-ज्यादा विनम्र रूपसे उन्हे अपने मतका समर्थक बनाना चाहता हूँ। यदि मै कर मकूँ तो मै उनका मन मोह लेना चाहता हूँ। मै स्वय अपने कष्ट-सहनसे उनके मनको पिघला देना चाहूँगा। मेरा यह दृढ विश्वास है कि जिस रूपमे आज हमारे यहाँ अस्पृश्यता प्रचलित है उसे शास्त्रोकी मान्यता प्राप्त नही है। लेकिन मै इस चर्चामे नही पडना चाहता कि शास्त्र किस चीजका समर्थन करते है और किसका नही करते। जो-कुछ भी सचाई मै देखता हूँ उसे मै आपके सामने जितने विनम्र रूपसे हो सकता है, पेश कर देता हूँ और यदि आवश्यकता पडे तो मै अनवरत रूपसे उम सत्यका पालन करनेके प्रयत्नमे अपना जीवन भी बलिदान कर देनेको तैयार हूँ। मेरे मनमे यह बात असदिग्ध रूपसे स्पष्ट हो गई है कि यदि अस्पृश्यताको दूर नही किया गया तो हिन्दू-धर्म और हिन्दू-जाति, दोनो ही का नाश अवश्यम्भावी है। मै जब १० वर्षका बालक था तबसे मै अस्पृश्यताको एक पाप मानता आया हूँ। जन्मपर आधारित अस्पृश्यताके विचारको तो मेरा मन कभी स्वीकार कर ही नही पाया है। अपनी योग्यतानुसार मैंने शास्त्रोका अध्ययन करनेका प्रयत्न किया है। यथासम्भव अधिकसे-अधिक पडितोसे सलाह की है और उनमे से अधिकाशने मेरे मनका समर्थन किया है। लेकिन सत्य पुस्तकोमे नही मिलता। सत्य तो प्रत्येक मनुष्यके हृदयमे रहता है। प्रत्येक व्यक्तिको वही इसकी खोज करनी है और उसे मत्य जैमा दिखाई देता है उससे ही अपना मार्ग निर्धारित करना है। लेकिन किसी व्यक्तिको यह अधिकार नही है कि सत्यको जैसा वह समझता है दूसरेको उमके अनुमार ही कार्य करनेके लिए मजबूर करे।

यहाँ उपस्थित मन्दिरमे जानेवाले उन लोगोंसे, जो मन्दिरमे हरिजनोके प्रवेशके पक्षमे है, मै यह अपील करूँगा कि वे मन्दिरमे तभी जाये जब मनातनी लोग, जिन्होने उनका रास्ता रोक रखा है, उस स्थानसे हट जाये। हम उनपर विजय नही पाना चाहते। उनसे नाराज मत होइए, उनका अपमान मत करिए, इमके विपरीत, यदि वे भूखे हो और आपका आतिथ्य उन्हे स्वीकार हो तो आप उन्हे भोजन खिलाइए। हमे उन्हे प्यारसे जीतना है। हमे उनसे निपटनेके लिए पुलिसकी मदद नही लेनी है।

गाधीजीने आशा व्यक्त की कि जिन लोगोको गिरफ्तार किया गया है उन्हे छोड दिया जायेगा और मन्दिर तुरन्त तथा बिना किसी सघर्षके हरिजनोके लिए खोल दिया जायेगा।[1]

मै यह बात इसलिए नही कह रहा हूँ कि मै असहयोगी हूँ बल्कि इसलिए कि मै अप्रतिकारके सिद्धान्तमे विश्वास रखता हूँ। और फिर मेरा विश्वास है कि धर्मकी रक्षा बल-प्रयोग अथवा हुडदगसे कदापि नही की जा सकती बल्कि प्रायश्चित्त तथा कष्ट-सहन द्वारा ही की जा सकती है। इसलिए आवश्यकता पडनेपर मै प्रायश्चित्त स्वरूप अन्तमे अपनी जान भी देनेको तैयार हूँ।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २८-११-१९३३

१. इसके बादका अनुच्छेद **हरिजन**, १७-११-१९३३ से लिया गया है।

२३९. प्रति व्यक्ति एक पैसा

श्री हरखचन्द २६ अक्टूबरके अपने पत्रमे लिखते है[1]

मै आशा करता हूँ कि इतना सब लिखनेके लिए पाठक मुझपर रोष नही करेगे। यदि कोई कहे कि यह तो पुरानी बात है, बाढका किस्सा भी पुराना है तो यह ठीक नही है। जब बाढ आई, उस समय जिनकी मौत आई वे तो तुरन्त मर गये। जीवितोको तुरन्त ही जो सहायता दी जानी चाहिए थी वह भी दे दी गई। लेकिन बेघर लोगोके लिए दूसरा मौसम आनेतक तथा उनकी फसलोके पकनेतक उनको निबाह लेना दयालु लोगोका नैतिक कर्त्तव्य है और इस तरहके पत्र इस बातको सिद्ध करते है कि यह समय इस कर्त्तव्यको पूरा करनेका है।

पाठक देखेगे कि कितने ही स्थानोपर रोज प्रतिव्यक्ति एक पैसेसे भी कमके चावल दिये जाते है और यदि यह चित्र उनके हृदयपटल पर स्पष्ट रूपसे अकित हो गया है तो वे ऐसे दुखियोके लिए रोज कुछ भाग निकाले बिना स्वय सुख-शान्तिसे नही खायेगे। इसमे अगर सब कोई यथाशक्ति अपना योगदान देगे तो हजारो लोगोको जीवित रहनेके लिए पर्याप्त भोजन मिल सकेगा। मिल-मालिक कपडा भेज सकते है। खादी-भक्त खादी भेज सकते है। अभी-अभी हरखचन्दको गुमनाम एक हजारकी हुडी खादी बेचनेके लिए मिली है।

[गुजरातीसे]
हरिजनबन्धु, १२-११-१९३३

२४०. पत्र : गंगा पोद्दारको

[१२ नवम्बर, १९३३][2]

मै रामेश्वरको लिखता हू। पाप तो वडा हुआ। लेकिन प्रायश्चित करके भूल जाओ। दागीना वापिस लाना और निश्चय कर लेना ऐसा अपराध कही नहि होगा।

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २१६) से।

२४१. पत्र : रामेश्वरदास पोद्दारको

वर्धा
१२ नवम्बर, १९३३

चि० रामेश्वरदास,

गगाने भूल तो वडी की है। लेकिन अब पश्चात्ताप करती है। जिसने पश्चात्ताप किया है वह क्षमाके पात्र है। गगाको एक शब्द भी मत कहो प्रेमसे मिलो। दागिना

१ पत्र यहाँ नही दिया गया है। देखिए "प्रतिदिन एक पैसा" १७-११-१९३३।
२ देखिए अगला शीर्षक।

तो वापिस लाना हि है। वह लायेगी। उसके पश्चात् उसे वापिस भेज दो। शाति रखो। रामनाम लो। हम सब दोष करते है। लेकिन जो दोष कबूल करते है उसे धन्य है। हम सब इच्छे कि गगाका पश्चात्ताप शुद्ध हो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १७४) से।

२४२. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको

वर्धा
१३ नवम्बर, १९३३

चि० मणिलाल और सुशीला,

तुम्हारे पत्रोका उत्तर मै तुरन्त ही नही दे सकता। आज भी समय तो नही है, लेकिन किसी-न-किसी तरह समय निकालकर लिख रहा हूँ, क्योकि किशोरलालने नानाभाई को लिखे तुम्हारे पत्रका सार मुझे बताया। वहाँके झगडेके बारेमे यदि तुम लोगोका मै मार्गदर्शन कर सकता तो अवश्य करता।[1] लेकिन सचमुच ही लोगोसे मिले बिना ऐसे कार्योको मै ठीक समझ नही पाता। लेकिन तू ऐसा लाचार क्यो? जो तुझे सत्य लगे उसे निधडक होकर करते जा। भले ही इसमे तुझसे भूल हो। भूले तो जहाँ तुझे दिखाई दे वहाँ निसकोच होकर और परिणामकी चिन्ता किये बिना उन्हे सुधार लेना। ऐसा करते हुए प्रत्येक मामलेके बारेमे तुझे सत्यका पता चल जायेगा। मै तो आज हूँ और कल नही। अपने बलसे ही तू तरे, यही बात शोभाजनक है। तैरते हुए यदि तू डूब जाये तो इसमे चिन्ताकी कोई बात नही। अभी भी जो-कुछ चल रहा है उसमे यदि तुझे कोई भूल दिखाई दे तो उसमे से मुक्त हो जाना चाहिए। और यदि तुझे कोई भूल न दिखाई दे तो भले ही तुझे मरना पडे, तू कगाल हो जाये, तब भी तुझे अपने मार्गसे विचलित नही होना चाहिए। ऐसा करते हुए किसीपर रोष न करना, असत्याचरण न करना, अशान्त न होना, धीरज न छोडना और जो सकट आये तो सहन करना। अपूर्ण पिताके सरक्षणमे शान्तिकी खोज करनेकी अपेक्षा पिताके पिता अर्थात् पूर्ण परमेश्वरके सरक्षणमे शान्तिकी खोज कर। इससे तू बलवान बनेगा। तुझे मेरी यही शिक्षा है। और यदि तूने इसे सीख लिया है तो विश्वास रख कि तू पूर्ण शिक्षा पा चुका है।

मेरे दौरेका विवरण तुझे अनेक स्थानोसे मिलेगा। अन्य समाचार देनेका भी मेरे पास समय नही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८११) से।

१. देखिए "पत्र : वल्लभभाई पटेलको", २५-१२-१९३३।

२४३. पत्र : विद्या आनन्द हिंगोरानीको

वर्धा आश्रम
१३ नवम्बर, १९३३

हिंदुकी बडी गलती है। हिंदु डरपोक बन गये है। त्याग कुछ करना नहि चाहते निजी शुद्धि करना नहि चाहते, बूरी आदते छोडना नहि चाहते। इसका और नतीजा क्या आ सकता है?[1] ऐसे मौके पर हम जो समझने है वे शुद्ध बनकर त्याग करके अपने कर्त्तव्यका पालन करे और विश्वास रखे कि इसीसे अतमे झगडा मीटेगा।

बापू

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे, सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

२४४. पत्र : एफ० मेरी बारको

हिंगनघाट
१३ नवम्बर, १९३३

चि० मेरी,

तुम बैतूल इतनी जल्दी जा रही हो, इसका मुझे पता नही था। यह पत्र मैं हिंगनघाटमें मुझे जो-कुछ मिनट खाली मिले हैं उसके दौरान लिख रहा हूँ। मेरे कार्योंका लेखा-जोखा तुम्हें 'हरिजन' में पढनेको मिलेगा।

मैंने सोचा था कि यदि अमलाको यह पता लग जाता कि यह सुझाव किसने दिया था तो वह शायद ध्यान देती। उसका मामला जरा टेढा है। लेकिन जहाँ और जब हम असफल होते हैं वहाँ ईश्वर सफल हो जाता है। हम उसे ईश्वरके भरोसे छोड दें। उम्मीद है कि तुम शरीर और मनसे स्वस्थ होगी।

तुम्हें कभी-कभी पत्र लिखते रहना चाहिए, लेकिन वर्धाके पतेपर ही, जहाँसे उन्हें मेरे पास भेज दिया जायेगा।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०१५) से। सी० डब्ल्यू० ३३४१ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

१. यहाँ संकेत एक हिन्दू कन्या और मुसलमान युवकके विवाहके फलस्वरूप होनेवाले सिंधके दगोंकी ओर है।

२४५. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

असंशोधित

चाँदा
१३ नवम्बर, १९३३

प्रिय जवाहरलाल,

मैं अभी-अभी चाँदा पहुँचा हूँ और दूसरे लोग पीछे-पीछे आ रहे हैं। इस बीच मैंने तुम्हारा पत्र उठा लिया है। इस समय रात्रिके ९ बजे हैं। कार्यक्रम काफी थकानेवाला है। शाम ६ बजे मैं हिंगनघाटमें था।

तिवारीने मुझे तुम्हारा पत्र दे दिया है। तुमने ज०[1] को जो पत्र लिखा था उसे भी मैंने पढ़ा है। जहाँतक उसे मालूम है अ० भा० कां० क० के खातेमें शायद बहुत कम रुपया रह गया है। किताबें उसके पास नहीं हैं। उसने हिसाब-किताब मँगवाया है। इस बीच मैंने यह सुझाव दिया है कि ५०० रुपये कमसे-कम उसके खाता-नामे में भेज देने चाहिए। अगर पैसे खत्म हो गये हैं तो मुझे नहीं पता कि क्या किया जाये। मेरे पास एक सुरक्षित खाता है। मैं उस रुपयेको देना पसन्द नहीं करूँगा। मैं इसमें से हार्डिकरको रुपया देता हूँ, और ऐसा ही मैं उन कार्यकर्त्ताओंके लिए करना चाहता हूँ जिनकी सूची तुमने मुझे भेजी है। यह सब पैसा भी जल्दी ही खत्म हो जायेगा। इन हालातोंमें, यदि हमें सविनय अवज्ञा आन्दोलनको जारी रखना है तो हम कार्यालयके सभी कर्मचारियोंको न भी अलग करें तो भी उन्हें कम अवश्य करना पड़ेगा। मैं जितना ही अपने चारों ओर देखता हूँ उतनी ही मेरी यह भावना दृढ़ होती जाती है कि जो इस समय लड़ाईमें शामिल हैं उन्हें बिना धनके ही काम चलाना पड़ेगा, उस थोड़े-बहुत धनको छोड़कर जो मेरे जैसे कुछ लोगोंके हाथमें हो। अभी-अभी मैंने गुजरात और कर्नाटकके लिए रुपयेकी व्यवस्था की है। जो महिला ५०,००० रुपये देनेवाली थीं उन्होंने अभी-अभी यह सन्देशा भिजवाया है कि वह १०,००० रुपये तुम्हें देना चाहेंगी। अगर वह ऐसा करती हैं तो मैं यह अपेक्षा करूँगा कि इसमें से तुम संयुक्त प्रान्तके कार्यकर्त्ताओंका भुगतान कर दोगे। खैर मेरे खयाल से सबसे अच्छा यही है कि इस समय जो पैसा उपलब्ध है उसकी व्यवस्था के सम्बन्धमें तुम जमनालालजीसे, तथा जरूरत पड़े तो मेरे साथ बातचीत कर लो। मैंने सब जगह नोटिस भिजवा दिये हैं कि आगेसे मुझसे मददकी आशा न की जाये। जो-कुछ मेरे पास है मैं उससे ही खर्च चलानेकी कोशिश कर रहा हूँ।

अब औपचारिक सभाके सम्बन्धमें। इस पत्रके साथ जो कार्यक्रम है उससे तुम्हें पता चल जायेगा कि १० और १४ दिसम्बरके बीच मैं दिल्लीमें हूँ। ठक्कर बापाका

१. जमनालाल बजाज, जो इस समय अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके कोषाध्यक्ष थे।

कहना है कि मै १४ तारीखका अधिकाश समय हमारी जो बैठक हो रही है, उसमे दे सकता हूँ। १४ तारीखकी शाम ४ बजेके तुरन्त बादमे आन्ध्रके लिए ट्रेन पकड़ूँगा। अन्सारीने, जो रविवारको मेरे साथ थे, दिल्ली जानेका सुझाव दिया था। यदि वाकई सम्मेलन होना है तो तुम २४ नवम्बर, ४ दिसम्बर या १४ दिसम्बरमे से कोई भी तिथि चुन लेना।

अब हरिजन-यात्राको ले। सयुक्त प्रान्तमे इसके बहिष्कारकी जो सम्भावना है उससे मुझे कोई भी परेशानी नही है। यहाँ मुझे कोई दिक्कत पेश नही आ रही है। काग्रेसी और गैर-काग्रेसी दोनो ही मेरी यात्राकी व्यवस्था करनेमे सहयोग दे रहे है। नरम दलवालोके प्रति, जिन्हे मै गैर-काग्रेसियोमे शामिल करूँगा, तुम व्यर्थ ही नाराज हो। हमे तो उनसे भी काम लेना है। वे सब अपनी-अपनी समझके अनुसार कार्य करते है। मै किसी भी हालतमे यह नही चाहूँगा कि हरिजन-आन्दोलनमे कोई ऐसा काग्रेसी भाग ले जो जेल जानेकी इच्छा रखता हो। जो भी मेरे पास आया है मैंने उससे यह बात कह दी है। मै तो कुछ अच्छे कार्यकर्त्ताओको, जो हाल ही मै जेलसे बाहर आये है, वापस जेल भेज रहा हूँ। मेरा खयाल है कि बा भी जल्दी ही जेल जा रही है और मणिबहन पटेल भी। काकासाहब, स्वामी, सुरेन्द्र भी जा रहे है। मै इस हरिजन आन्दोलनमे केवल उन्ही काग्रेसियोको शामिल कर रहा हूँ जो या तो शरीरसे इतने कमजोर है कि वे जेल नही जा सकते अथवा जिनका सविनय अवज्ञामे विश्वास नही रहा है, और जो हरिजनोकी सेवा करनेको तैयार है, लेकिन उनको नही जो हरिजन-कार्यको केवल आडके रूपमे इस्तेमाल करना चाहते है। इस आन्दोलनको अगर सार्वजनिक बनाना है तो इसे हरेक काग्रेसी के जेल चले जानेकी हालतमे भी जारी रहना है, अन्यथा इसे बन्द कर देना चाहिए। मेरा यह खयाल भी है कि काग्रेसियोको इस आन्दोलनका उपयोग सविनय अवज्ञा आन्दोलनको मजबूत करनेके लिए अथवा जनतापर काग्रेसका प्रभुत्व जमानेके लिए नही करना चाहिए। ऐसा करनेका यह तरीका गलत होगा। इस प्रकारकी मनोवृत्तिसे काग्रेस और हरिजन, दोनोके हितोको ठेस पहुँचेगी। इस प्रकारके मामले मेरी नजरमे आये है। मैंने ऐसे किसी कार्यकी कडी आलोचना की है। मेरे खयालमे मैंने तुम्हारे प्रश्नोका सन्तोषजनक उत्तर दे दिया है। यदि नही, तो कृपया फिर पूछ लेना।

तुमने देखा होगा कि हिजली [जेल] मे [कैदियोसे] सरकार सलाम[1] कहलाना बन्द कर दिया गया है। सीमा प्रान्तमे होनेवाले दुर्व्यवहारके सम्बन्धमे क्या मै सर तेजको लिखूँ?

मुझे कृष्णाका एक सुन्दर पत्र मिला था। वह अपने नये घरमे प्रसन्न दिखती है।

आशा है कि माताजीकी हालतमे सुधार जारी है।

सप्रेम,

बापू

[अंग्रेजीसे]

गाधी-नेहरू पेपर्स, १९३३, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

१ देखिए "पत्र बगालके गवर्नरको," २-११-१९३३।

२४६. पत्र : रमणीकलाल मोदीको

चाँदा
१४ नवम्बर, १९३३

चि० रमणीकलाल,

तुम ताराकी चिन्ता करते जान पडते हो। मै आशा करता हूँ कि यह विवेक की भाषा है। तुम और मैं हर समय चिन्ता नही कर सकते। यदि ऐसा करे, तो ज्ञानके लिए वह लज्जास्पद है। हम रोज 'गीता' का गान करे, रोज पढे कि 'चिन्ता न करो' और फिर भी रोज चिन्ता करते रहे तो क्या यह अच्छी बात होगी? तारासे मैं मिला हूँ। उसका स्वभाव आदि बाते मुझे अच्छी लगी हैं। दाँतका कष्ट है, जिसका उपचार वह करा रही है।

तुम्हारे बारेमे मैंने सुरेन्द्रसे सब सुना है। आजकल हम सबकी अच्छी परीक्षा हो रही है। इसे हम प्राथमिक शिक्षा कहेगे।

यह पत्र मै यात्राके दौरान लिख रहा हूँ। सवेरे तीन बजे उठकर दतोन करनेके बाद यह पहला काम है। प्रार्थना तो ४-२० पर होगी। इस समय मैं चाँदामे हूँ। छ बजे सावली जानेके लिए रवाना होगे। वहाँ हरिजन कातते-बुनते है, यह तुम जानते ही होगे। सावली जानेवाला दल बडा है। इसमे जानकीबहन, राधाकिसन[1], धोत्रे आदि है। मेरे साथियोमे तो ठक्कर बापा, विश्वनाथ, चन्द्रशेकर, रामनाथ, मीराबहन, नायर और ओम है। दौरेमे हमे काफी काम करना पडता है। लोगोकी भीड उतनी ही रहती है। बाकी तो अब क्या लिखूँ? तारासे तुम्हे सारी जानकारी मिल ही जाती है। यदि मुझे फुरसत होती तो मैं लम्बा पत्र लिखता। तुम्हे और अनेक लोगोको भी नही लिख पाता, लिख सकता ही नही। इच्छा तो होती है, लेकिन उसे मारना पडता है।

सुरेन्द्र, दरबारी वर्धामे ही हैं। वहा एक जापानी साधु है। उसके आनन्दको देखकर हर्ष होता है। वह हिन्दी सीख रहा है। बा कल अहमदाबाद जानेके लिए स्वामीके साथ रवाना हुई।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४१७५) से। सी० डब्ल्यू० १६७४ से भी, सौजन्य रमणीकलाल मोदी

१ राधाकृष्ण बजाज।

२४७. पत्र : ताराबहन आर० मोदीको

१४ नवम्बर, १९३३

चि० तारा,

मैंने तुम्हे रमणीकलालके लिए पत्र लिखकर देनेके लिए कहा था, लेकिन मेरा खयाल है मैं ऐसा नही कर सका और इस बातसे मैं खिन्न था। सो आज सवेरे मैंने सबसे पहला काम तुम्हे पत्र लिखनेका किया। इसके साथ वह पत्र[1] है। अब यह पत्र रमणीकलालको कब मिलेगा? मुझे पत्र वर्धा ही लिखना। दाँतके बारेमे तुमने जो-कुछ किया है सो मुझे बताना। मनमे जो विचार उठे उन्हे मेरे आगे रखना। जो अनुभव मिले, सो बताना। तुम्हारी 'हरिजनबन्धु' पढनेकी आदत तो होगी ही।

दौरेमे मेरे साथ ओम घूम रही है, यह तुम्हे मालूम है न? इस बार तो सावलीतक अन्य बहुत सारे लोग है। हमे ठीक अनुभव मिल रहा है। शरीर इस बोझको अबतक सहन तो कर रहा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४१७६) से। सी० डब्ल्यू० १६७५ से भी, सौजन्य रमणीकलाल मोदी

२४८. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

चाँदा
१४ नवम्बर, १९३३

भाई वल्लभभाई,

मुझे तुम्हारे पत्र मिलने ही चाहिए, तुमने मुझे आदत ही कुछ ऐसी डाल दी है। आज हम चाँदामे है। चार बजे है। ६ बजे सावलीके लिए निकलना है।

विट्ठलभाईके बारेमे जो हुआ वह मुझे बिलकुल भी पसन्द नही आया। तथापि जिस तरहसे बडी सख्यामे लोग इकट्ठे हुए उससे मैंने यही बैठे-बैठे बहुत सीख लिया है। लोग मनुष्यको नही पूजते। उसके बारेमे उनके मनमे जो कल्पना है और जिसे वे चाहते है उस वस्तुको वे अपने ढगसे और अपनी शर्तोके आधारपर पूजते है। मैंने अखबारोमे वर्णन तो नही पढे और न विस्तारसे ही कुछ जाना है, लेकिन सारी वस्तुस्थितिका चित्र मेरी आँखोके सामने खडा हो गया।

१. देखिए पिछला शीर्षक।

नागपुरमे विद्यार्थियोकी सभामे[1] अडा फेके जानेकी बात मुझे 'टाइम्स ऑफ इडिया' से ही मालूम हुई। मैंने तो हॉलमे कुछ भी नही देखा। खलबली मची हो, सो बात भी मुझे दिखाई नही दी। हॉलमे किसीने कुछ देखा हो, सो भी मुझे मालूम नही। हॉ, चन्द्रशकरने मुझे इतना जरूर बताया कि ओमके समीप एक अडा फूटा था। यह अडा उसीको उद्देश्य करके फेका गया था अथवा उसके पास बैठे भूतपूर्व अध्यक्ष पर अथवा मुझे लक्ष्य करके फेका गया था सो नही जानता। बात यह है कि राईका पहाड बना दिया गया है। विद्यार्थियोके प्रेमका तो पार ही न था। उन्होने मुझे सात सौ रुपयेकी तो थैली दी, ऐसा ही सयुक्त प्रान्तका भी समझना।

अन्सारी रविवारको आकर मिल गये। उनकी तबीयत कुछ ठीक है। विट्ठलभाईसे मिलना चाहकर भी वे नही मिल पाये। अन्तिम दिनोमे वे बहुत अशान्त हो गये थे। अन्सारीके पास कुछ खास कहनेको न था। केवल मिलनेके लिए आये थे, यही कहा जा सकता है। वह राजवशी रोगियोको देखने गये है। वह उसी रात चले गये। मेरा तो मौन था। जब वह वापस आये तब मौन नही था। अभी तक दौरेमे कोई दिक्कत पेश नही आई है। अब खानेका और मोटरमे बैठनेका समय हो गया है इसलिए आज इतना ही। बा और स्वामीने कल वर्धा छोडा है। बा अकोला होकर अहमदाबाद जायेगी। रामी[2] की लडकी बीमार है, इसलिए मनु राजकोट गई है। तुम तो मुझे वर्धा ही पत्र लिखना।

[गुजरातीसे]

बापूना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृष्ठ ४६-७

२४९. पत्र : मणिबहन पटेलको

चॉदा

१८ नवम्बर, १९३३

चि० मणि,

तेरा लम्बा पत्र मिला। तूने लिखा सो अच्छा किया। मेरे सामने तू परदा रखेगी तो तेरा नुकसान ही होगा। अवश्य ही मनुष्यके मरते समय हम उसके दोषोको याद न करे बल्कि हम उसके गुणोका ही स्मरण करे। मेरे उपस्थित न रहनेका उनके व्यवहारके साथ कोई सम्बन्ध नही। उनके गुण मै नही पहचान सका सो बात नही। मै वहॉ इसलिए नही आ सका कि मै कही किसी दूसरे कार्यक्रममे शामिल नही हो सकता था।[3] आजकल या तो मै यरवडामे शोभा दे सकता हूँ या हरिजन-कार्यमे। हरिजन-कार्यके खातिर ही मै [जेलसे] बाहर हूँ, यह केवल सरकार या जनताको कहनेके लिए नही, परन्तु मेरे हृदयमे भी यही चीज है। दूसरे काम मे मै पड ही नही सकता। मालूम होता है लोग भी यह चीज समझने लगे है। मुझसे सरकारके अकुश सहन

१. यह सभा ९ नवम्बर, १९३३ को हुई थी।

२. रामी कुँवरजी पारेख, हरिलाल गाधीकी पुत्री।

३. गांधीजी विट्ठलभाई पटेलके दाहसंस्कारमें शामिल नही हुए थे। मणिबहन पटेलने इस सम्बन्धमें गाधीजीसे पूछताछ की थी।

न होते, मै अपने ढगमे कुछ कर न पाता। मै तेरा या डाह्याभाईका पथप्रदर्शन भी नही कर सकता। इसीलिए मै मन मारकर बैठा रहा। इसके सिवा मेरे जीवनमे दूसरी बात भी है, यह भी तू जान ले। रसिक (गाधी)[1] मृत्युशय्या पर था, वह चाहता भी रहा होगा कि मै उसके पास पहुँचूँ। परन्तु मै दिल्ली नही गया, बा गई। रसिक मर गया। मैने आँसू तक नही बहाया। मै खा रहा था तब तार आया। खाना खत्म किया और अपने काममे लग गया। मेरे जीवनमे ऐसी घटनाएँ बहुत हुई है। मौतके बारेमे मैने कुछ विचार बना रखे है, वे दृढ होते जा रहे है। मै मृत्युको भयानक चीज नही समझता। विवाह भयानक हो सकता है, मृत्यु कभी नही। क्या इससे तेरी शकाका समाधान हो जाता है? न हो तो मुझसे फिर पूछना।

वहाँका वर्णन तूने बढिया किया है। बडा दुखद है। लोगोका प्रेम समझने लायक है। यह प्रेम व्यक्तिके प्रति नही है, परन्तु जो चीज लोगोको चाहिए उसे वे जिस व्यक्तिमे मानते है उसीके लिए वह प्रेम है। इसलिए यह बडी निर्मल वस्तु है। यह वस्तु लोक-जागृतिकी सूचक है, दुनियाकी आँखे खोलनेवाली है। विट्ठलभाई स्वतन्त्रताके पुजारी थे, इस विषयमे कोई शका कर ही नही सकता।

अब बा के बारेमे। मेरे पास समय होता तो मै उस पत्रमे[2] अधिक समझाता। बा का दिल कमजोर हो गया है। वह मन्दिर (जेल) जाना चाहती भी है और नही भी चाहती। भीतर ही भीतर वह समझती है कि जेल जाना उसका धर्म है इसलिए उसे छोड नही सकती, मगर मै बाहर हूँ इसलिए उसे अन्दर जाना अच्छा नही लगता। मैने कोई आग्रह नही किया। उसकी मरजीपर छोड दिया है। मेरे लिखनेका आशय यह था कि तू उसे धर्म-पालनमे दृढ बनाना और उसे समझाना। तुझपर उसे आस्था और प्रेम है। मै कुछ भी कहूँगा तो वह हुक्मके रूपमे माना जायेगा और बा दब जायेगी। इसलिए कुछ नही कहता। नही कहता, इसका अर्थ भी बा तो एक ही करती है कि उसे जेल जाना ही चाहिए।

तेरे दाँतो और पैरके सम्बन्धमे जाना। जैसा डाक्टर कहते है वैसा ही करना। थोडी राह देखनी ही पडे तो हठ करनेकी जरूरत नही। डाह्याभाईको पत्र लिख रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

पत्र वर्धा ही लिखना।

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – ४ : मणिबहेन पटेलने, पृष्ठ ११३-४

१. हरिलालका पुत्र जिसकी ८ फरवरी, १९२९ को मृत्यु हो गई थी, देखिए खण्ड ३९, पृष्ठ ४१०।

२. ९ नवम्बर, १९३३ के।

२५०. पत्र : डाह्याभाई पटेलको

चाँदा
१४ नवम्बर, १९३३

चि० डाह्याभाई,

मै तुम्हारी भावना ओर तुम्हारे दुःख को समझता हूँ। मेरी भावना और मन स्थितिको तुम मणिबहनको लिखे मेरे पत्रसे[1] समझ सकोगे। जहाँ मै असहाय हूँ वहाँ मै क्या कर सकता हूँ? सिपाहीके हाथसे तलवार ले लेनेपर जैसे वह निकम्मा बन जाता है उसी तरह यदि मेरे हाथमे सविनय अवज्ञाका अधिकार ले लिया जाये तो मै निकम्मा बन जाऊँगा। इसके अतिरिक्त मेरा सारा जीवन ही प्रतिज्ञाबद्ध हो गया है। मेरी प्रतिज्ञा तो यह है कि या तो मै जेलमे रहूँगा अथवा हरिजन-कार्यमे लगा रहूँगा। अन्य कार्योके लिए तो मै अपने मनको भी नही रोक सकता। विट्ठलभाईके दोष तो उनके साथ गये। उनमे गुण बहुत थे। उनकी स्मृतिको हम सबको अपने मनमे सॅजोना है। और तुम्हे शायद मालूम भी न हो कि विट्ठलभाईको मैंने पत्र भी लिखा था और उन्होने मुझे प्रेमसे पगा उत्तर भी दिया था। मेरा उनके साथ निजी सम्बन्ध कभी टूटा नही था। मतभेद पारस्परिक सम्बन्धोके आडे नही आते। मुझे तुम्हे यह सब समझानेकी जरूरत नही होनी चाहिए। लेकिन मणिबहन लिखती है कि तुम्हे और अन्य भतीजोको कुछ दुःख तो जरूर हुआ है। इसलिए मैंने तुम्हे इतना समझानेका प्रयत्न किया है। वल्लभभाईके [जेलसे] बाहर न होनेके कारण मुझे बहुत परेशानी होती है। वे बाहर हो तो पारिवारिक गलतफहमियोको दूर करनेका कार्य मै उनको ही सौप दूँ। उनके जेलमे होनेके कारण गलतफहमी दूर करनेका मेरा दायित्व दूना हो जाता है। यदि तुम्हे मैंने जो लिखा है वह कम लगे तो मुझे दिल खोलकर लिखनेमे तनिक भी सकोच न करना।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाई वल्लभभाई पटेल
रामनिवास
पारेख स्ट्रीट
बम्बई–४

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ४ : मणिबहेन पटेलने, पृष्ठ १५५

१ देखिए पिछला शीर्षक।

२५१. पत्र : रुक्मिणीदेवी बजाजको

१४ नवम्बर, १९३३

चि० रुक्मिणी,

तेरा पत्र मिला था। नियमका पालन करना। आज मैं पत्र सवेरे तीन बजे उठकर लिख रहा हूँ। आजकल मैं रोज तीन बजे ही उठता हूँ। एक घंटेमें जितने पत्र लिखे जा सके उतने लिखता हूँ। आज छ बजे सावली जाना है। सावली तक मेरे साथ मोटरमें जानकीबहन और अन्य बड़े लोग होंगे। सावली हरिजनोंका बहुत बड़ा खादीका क्षेत्र है। वहाँ हमारी ओरसे खादीका कार्य होता है। आशा है तुम सब कुशलपूर्वक होंगे। तेरे श्वसुर[1] के पत्र आते रहते हैं। केशु मजेमें है।

तुम दोनोंको,

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

पत्र वर्धाके पतेपर ही लिखना।

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९७०२) से, सौजन्य बनारसीलाल बजाज

२५२. बातचीत : सावलीके खादी-कार्यकर्त्ताओंसे

१४ नवम्बर, १९३३

गांधीजीने खादी-कार्यकर्त्ताओंसे कहा कि वे अपने औजारोंको सुधारें जिससे कि उत्पादनमें वृद्धि हो और उसके फलस्वरूप वेतनोंमें भी बढ़ोत्तरी हो।[2] उन्होंने कहा :

और तब भी यदि आप बुरी आदतोंका त्याग नहीं करते तो वेतनोंमें वृद्धि होनेसे ही आपके जीवन सुखी नहीं हो जायेंगे, क्योंकि आप जो धन पायेंगे उसे उड़ा डालेंगे। इसलिए आपके लिए सबसे ज्यादा जिस बातकी जरूरत है वह यह है कि आप बुरी आदतोंको छोड़ दें और अपने जीवनको शुद्ध बनायें, इस तरह आप न केवल अपने साधनोंमें वृद्धि करेंगे बल्कि अपने जीवनको अधिक सुखी और समृद्ध बनायेंगे।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २४-११-१९३३

१. रामेश्वरलाल बजाज।

२ कुछ स्त्री-कार्यकर्त्ताओंने बहुत कम वेतन होनेके बारेमें शिकायत की थी।

२५३. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

चाँदा
१५ नवम्बर, १९३३

अपने शरीरके साथ तू अत्याचार न करे तो अच्छा होगा। मुर्देके पीछे-पीछे जानेकी कोई जरूरत नही थी।[1] ऐसा कोई स्वतन्त्र धर्म तो नही है। मै जानता था कि मेरे न जानेका गलत अर्थ तो किया ही जायेगा। लेकिन कोई मेरे धर्मको नही समझेगा, इस भयसे भला मै अपने कर्त्तव्यसे क्यो च्युत होऊँ? मेरा मन यदि जेलके बाहर बसता है तो वह केवल हरिजन-सेवाके अर्थ ही। वहाँ स्वतन्त्र रूपसे तो मै कुछ भी नही कर सकता। सविनय आन्दोलनके बिना मै पख-विहीन पक्षीके समान हूँ। वहाँ जो-कुछ हुआ उसमे से कुछ बातोको मै कदापि सहन नही कर सकता था। इसलिए इस दृष्टिसे भी मेरा वहाँ आना नही हो सकता था। इसके अतिरिक्त हरिजन-दौरेके लिए दिन भी मुकर्रर था। मोतीलालजीकी विधवासे भी मिलने नही गया। रामीकी लडकीसे भी, जो इस समय मृत्युशय्या पर पडी है, मिलने नही गया। पुत्रके समान प्रिय ब्रजकिशन मृत्युशय्या पर है, वहाँ भी नही जाता। [2] तू उसे पत्र लिखना। कदाचित् तार देनेकी जरूरत जान पडे। [3] रसिक मृत्युशय्यापर पडा था, नही गया। बादमे उसकी मृत्यु हो गई तो भी नही गया। लेकिन गायके घर दूध क्या ले जाऊँ अर्थात् तुम्हे यह सब लिखनेकी क्या जरूरत है? तथापि यह सोचकर लिख गया कि कदाचित् तुझे मेरे जीवनके इस पहलूके बारेमे जानकारी न हो। बाकी मुझपर लगाये गये ऐसे आक्षेपोका उत्तर तुझे नही देना। मुझे जो लोग आजतक नही समझ पाये है वे अब दलीलोसे समझनेवाले नही है। मेरा समग्र जीवन ही उनपर जो छाप डाले वही सच्चा है। जो कर्म हमने किये है वे तो स्वय ही प्रतिफलित होगे। शब्दोके जरिये उन्हे मिथ्या नही किया जा सकता।

तू नही आया, यह बात अच्छी नही लगी। रविवारको तो अचानक कही मेरे सामने आ खडा होगा, ऐसा मैने सोचा था। ऐसा लगता है कि अन्तत सभा[4] नही होगी। यदि हुई तो दिल्लीमे १४ दिसम्बरको होगी। अन्सारी इसी दिन करना चाहते है। यह सभा हो तो तू आना।

उत्कलके बारेमे तुझसे जो बने सो कर दे। 'हरिजन'के लेखसे[6] कुछ पैसे आये जान पडते है, इस सम्बन्धमे तू चिन्ता न करना। शरीरको रगडनेकी जरूरत

१ मथुरादास त्रिकमजीने विट्ठलभाईकी शवयात्रामें भाग लिया था।
२ और ३. साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ छूट गया है।
४ अखिल भारतीय काग्रेस कमेटीकी।
५. साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ छूट गया है।
६ देखिए "उडीसाकी पुकार", ३-११-१९३३।

नही है। जिस तरह आलस्य त्याज्य है उसी तरह अत्यधिक परिश्रम भी त्याज्य है। "समत्व योग उच्यते"[1] यह श्लोक हमेशा मेरे मनमे रमा रहता है। 'गीता' मेरे लिए तो जीवित माँ है, कामधेनु है। इसमे तनिक भी अतिशयोक्ति नही है।

[गुजरातीसे]

बापुनी प्रसादी, पृष्ठ १३९-४०

२५४. पत्र : जमनालाल बजाजको

१५ नवम्बर, १९३३

चि० जमनालाल,

श्री सालपेकरजीके स्मारकके सिलसिलेमें भाई हरकरे मुझसे मिले है। यदि सालपेकर स्मारक सेवा निधि नामसे कोष खोला जाता है और उसमे धन इकट्ठा किया जाता है तो उसके लिए मेरे नामका उपयोग किया जा सकता है। लेकिन मैंने उनसे कहा कि यदि इसमे तुम्हारी सहमति और सहयोग हो तभी इस तरह किया जाना चाहिए। इसमे कमसे-कम ५,००० रुपये मिलने चाहिए और यह रकम पर्सके रूपमे मुझे छिदवाडामे दी जा सकती है। इसके लिए एक छोटी समिति बनाई जानी चाहिए और वह इस पैसेका उपयोग हरिजन-सेवाकार्यमे मुझसे पूछकर करे। यह ठीक लगे तो भाई हरकरेको इसके बारेमे समझाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९२६) से।

२५५. भाषण : वुनकी सार्वजनिक सभामें

१५ नवम्बर, १९३३

अगर आप न जानते हो तो अब बता देता हूँ कि बापूजी अणेके साथ मेरी मैत्री समयके साथ-साथ बढती ही गई है। उनके मधुर आचार, उनकी मितभाषिता, सूझबूझ और उद्यमशीलताके मै आपको अनेक सस्मरण सुना सकता हूँ। मै आपसे यह बात नही छिपा सकता कि आज हमारे बीच उनके उपस्थित न रहनेका मुझे कितना दुःख है।[2]

मै आपसे यह बात सुननेको तैयार नही था।[3] मै आपसे निर्दोष पैसा चाहता हूँ अर्थात् मै चाहता हूँ कि आप अपने थोडेसे ऐशोआरामका त्याग करके हरिजनोके

१ **भगवद्गीता**, अध्याय २, ४८।

२ एम० एस० अणे उस समय जेलमें थे।

३ वनके लोगोने हाल ही में आई बाढके कारण गांधीजीको थैली भेंट करनेकी असमर्थता व्यक्त की थी।

लिए पैसा दे। मै नही समझता कि आपमेसे किसी भी व्यक्तिने बाढ-पीडितोके प्रति सहानुभूति स्वरूप अपने एक बारके भोजनका अथवा किसी सुख-सुविधाका त्याग किया होगा। और यदि यह सच है तो यह बात आपको शोभा नही देती कि जब आपसे इस कामके लिए, जो हम सवर्ण हिन्दुओके लिए पश्चात्ताप और शुद्धीकरणका काम है, कुछ देनेके लिए कहा जाये तब आप अपनी असमर्थता व्यक्त करे।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २४-११-१९३३

२५६. भाषण : यवतमालकी सार्वजनिक सभामें

१५ नवम्बर, १९३३

यह गीत[1] शान्ति और निर्भयताका सन्देश देता है। जब हम अपनी प्रार्थनामे समस्त विश्वके साथ शान्तिपूर्वक रहनेकी बात करते है तब हम उसके साथ अस्पृश्यताको कैसे बनाये रख सकते है? यदि हम सारे ससारके प्रति ईमानदार रहना चाहते है तो हमे हरिजनोके प्रति भी ईमानदार रहना होगा।

जबसे मैने बरारकी भूमिमे पैर रखे है तबसे मेरे कानोमे बापूजी अणेका नाम गूंज रहा है। वर्षोके साहचर्यके बाद हममे ऐसी मित्रताका विकास हुआ है जिसका ठीक-ठीक अन्दाज मै आपको नही दे सकता। मै बरारके कोने-कोनेमे उनका नाम गूंजते सुनना चाहता हूँ।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २४-११-१९३३

२५७. पत्र : अगाथा हैरिसनको

स्थायी पता अमरावती
१६ नवम्बर, १९३३

प्रिय अगाथा,

तुम्हारा लम्बा पत्र मिला।

मै देखता हूँ तुम एन्ड्रयूजके बारेमे हमेशा उसी प्रकार सोचती रहती हो जिस प्रकार कोई अच्छी माता अपने बेटेके बारेमे सोचती है। तुम उनकी देखभाल करती हो, उनकी जरूरतोका खयाल रखती हो और उन्हे सब प्रकारकी हानिसे बचाती रहती हो। तुम्हारा यह कहना बिलकुल ठीक है कि ऐसी देखभालके बिना उनके ऊपर चिन्ताका भूत सवार हो जाता हे, और तब वह स्वय तकलीफ पाते है और

१. झण्डा-गान।

उनके कामका भी हर्ज होता हे। तथापि यदि तुम्हे लगता हो कि ज्यादा अच्छी तरह काम करनेकी दृष्टिसे तुम्हे एक या दो महीनेके लिए भारत आना चाहिए तो सकोच मत करो। इस बातपर मै और वह (एन्ड्रयूज) दोनो ही सहमत है, लेकिन वह मौकेपर मौजूद है, और तुम्हे जो उचित लगे सो उनसे और अन्य मित्रोसे परामर्श करके करना। फिलहाल इस समय कोई ठोस काम किया जा सके सो बात तो है नही। सर सैमुअल होरने हर चीजके बारेमे अपना मन निश्चित कर लिया है। वह अपने 'उद्देश्य' मे विश्वास रखते है। वह लगभग मानते है कि हम लोग अपना कामकाज चलानेके अयोग्य है और यह भी नही जानते कि हमारे लिए क्या अच्छा है। वह हमे गलतियाँ नही करने देगे। अग्रेजोकी तात्कालिक आवश्यकताओने उनको वास्तविकताओकी ओरसे अन्धा कर दिया है। मुझे लगता है कि इन परिस्थितियोमें वहाँ हमारे जो मित्र है वे स्थितिको देखने, अवसर की प्रतीक्षा करने और प्रार्थना करनेके सिवा और कुछ नही कर सकते। हमे अपना ध्यान स्वय रखना होगा, और हम अपनी मदद आप कर मकते है, इस बातको यदि हम सफलतापूर्वक करके दिखा देगे तो तुम लोग वहाँ काफी ठोस काम कर सकोगी।

हिजली-काण्ड सन्तोषजनक ढगसे सुलझ गया दिखता है। मेरा खयाल है कि मेरा यह मानना ठीक ही है कि बगालके गवर्नरको मैने जो बहुत सीधा-मादा पत्र लिखा था, उसका प्रभाव हुआ।

ऐसा कहा जा सकता है कि विट्ठलभाई पटेलके पार्थिव अवशेषोकी अन्त्येष्टि क्रिया काफी अच्छे ढगसे सम्पन्न हो गई। जहाँतक जनताका सम्बन्ध है, उसने बिलकुल स्पष्ट रूपसे दिखा दिया कि वह क्या चाहती है? ऐग्लो इडियन अखबारोके अनुसार जुलूस कमसे-कम एक मील लम्बा था। दिवगत नेताके प्रति श्रद्धाजलि देनेके लिए सारा बम्बई उमड पडा था। विट्ठलभाई जिस उद्देश्यके लिए लड रहे थे वह यह था कि भारतको ब्रिटेनके नियन्त्रणसे पूरी स्वतन्त्रता मिले, यह नही था कि भारत ब्रिटेनके साथ कोई सम्बन्ध नही रखेगा। जनताने उनके इस उद्देश्यके प्रति अपना पूरा समर्थन इस अवसरपर व्यक्त किया। जनता आज लाचार है और अपनी मदद आप कर सकनेमे असमर्थ है, लेकिन इससे उसकी मनोवृत्तिपर कोई प्रभाव नही पडता। जनताको मालूम है कि वह क्या चाहती है और दुनिया को अपनी इच्छासे अवगत करानेका कोई अवसर वह हाथसे नही जाने देती।

मेरी कामना है कि सुभाष बोसको इग्लैड लानेमे तुम्हे सफलता मिले।

मोटरसे अगले पडावके लिए रवाना होनेसे पहले मुझे जो चन्द मिनटका समय मिला है उसमे मै यह पत्र बोलकर लिखवा रहा हूँ। मुझे मालूम है कि पिछले हफ्ते तुम्हे चन्द्रशकर शुक्लका एक यथार्थ-चित्रणवाला पत्र मिला था। मै तुम्हे एक और विवरणात्मक पत्र भेजकर उसके ऊपर बोझ नही डालना चाहता। वैसे ही प्रदर्शन और वैसा ही उत्साह सभी जगह दिखाई पडा है। मुझे अवश्य ऐसा लगता है कि बहुतसे लोगोकी जैसी कल्पना है, उससे कही तेजीसे अस्पृश्यता समाप्त हो रही है। अभी तक जो बहुत-सी सभाएँ और प्रदर्शन हुए है इनमे कमसे-कम १,५०,००० लोगोने भाग लिया होगा। अगर ये लोग आन्दोलनका समर्थन न करना चाहते, तो मै

सोचता हूँ कि वे इतनी बडी सख्यामे शायद शामिल न हुए होते। वे जानते है कि इस समय मै केवल अस्पृश्यताके सिलसिलेमे दौरा कर रहा हूँ और इसके साथ कोई राजनीतिक उद्देश्य जुडा हुआ नही है, लेकिन फिर भी वे सभाओमे शामिल होते है, और हालाँकि हम लोग तगीके दौरसे गुजर रहे है, लेकिन इसके बावजूद वे अपनी सामर्थ्यके अनुसार पैसे और रुपये देते है। इसलिए यह सोचते हुए दुख होता है कि ऐंग्लो इडियन अखबार मेरे इस दौरेके महत्त्वको घटाकर बतानेकी कोशिश कर रहे है, यहाँ तक कि उसे बदनाम करनेकी भी कोशिश कर रहे है। पता नही तुम्हे नागपुरमे अडे फेकनेकी घटना और सयुक्त प्रान्तमे बहिष्कार करनेकी तैयारियोकी सूचना तारसे भेज दी गई थी या नही। इस घटनाके बारेमे अखबारी रिपोर्टो और अपने बहुत सक्षिप्त उत्तरकी कतरने मै सलग्न कर रहा हूँ। अवश्य, सनातनियोका विरोध बेशक मौजूद है। लेकिन अभी तक मैने जन-सामान्यको उनका समर्थन करते नही देखा है। यदि सनातनियोको नाममात्रका भी लोक-समर्थन प्राप्त होता तो वे आन्दोलनको नुकसान पहुँचानेमे नही हिचकते। इससे ज्यादा कहनेका मेरे पास समय नही है। लेकिन तुम्हे 'हरिजन' को मेरे साप्ताहिक पत्रके अशके रूपमे पढना चाहिए। उसकी जितनी प्रतियाँ तुम चाहो, बाँटो, और अगर तुम और ज्यादा प्रतियाँ चाहो तो माँगने-भरकी देर है। और तुम यह विश्वास रख सकती हो कि इसमे आन्दोलनके विरोधसे सम्बन्धित कोई चीज छिपाई नही जायेगी। मैने 'हरिजन' मे अडे फेकनेके सवाल पर और सयुक्त प्रान्तमे विरोधके बारेमे चर्चा नही की है। उसका पहला कारण तो यह है कि इन दोनो चीजोके बारेमे मै सार्वजनिक अखबारोमे चर्चा कर चुका हूँ और दूसरा यह कि उनका आन्दोलनसे कोई सम्बन्ध नही है। इनका राजनीतिक महत्त्व जरूर है, क्योकि ऐंग्लो-इडियन अखबार बेईमानीके तौर-तरीकोसे काम ले रहे है। लेकिन मै ऐसी बातोकी चर्चा 'हरिजन' के पृष्ठोमे नही करना चाहता। हालाँकि इस समय मै जेलसे बाहर हूँ तथापि मै उसे राजनीतिक विवादसे मुक्त रखना चाहता हूँ। जेलके अन्दर पहुँच जानेपर मै राजनीतिक प्रश्नोपर ध्यान भी नही दूँगा, भले ही उनका हरिजन-आन्दोलनपर गहरा प्रभाव पडता हो। और जहाँ तक किसी आदमीके लिए सम्भव है, उस हद तक मै ऐसा ही आचरण करनेकी कोशिश कर रहा हूँ जैसे कि मै एक कैदी हूँ। तथापि यदि तुम्हे 'हरिजन' मे या मेरे पत्रोमे किसी चीजका छूटना खटके तो तुम उसकी तरफ मेरा ध्यान दिलानेमे मत हिचकना।

मै यह मान रहा हूँ कि तुम्हारी रायमे जिन मित्रोको यह पत्र देखना चाहिए उन्हे तुम इसे पढवा दोगी।

हृदयसे तुम्हारा,
बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४७४) से।

२५८. पत्र : एफी एरिस्टार्शीको

अमरावती
१६ नवम्बर, १९३३

प्रिय एफी,

मुझे तुम्हारा पत्र और उसके साथ वह बहुत ही सुन्दर कार्ड मिला जिसे तुम चाहती हो कि मै 'भगवद्गीता' की अपनी प्रतिके अन्दर रख लूँ। मै तुम्हारी इच्छाका अक्षरश पालन नही करने जा रहा हूँ, क्योकि उससे तो तुम्हारी इच्छाका उद्देश्य ही विफल हो जायेगा। मै 'गीता' नित्य नही पढता। मै प्रात काल उसका पाठ सुनता हूँ और चूँकि मेरी समझसे तुम्हारा विचार यह है कि पुस्तकमे पृष्ठ-चिह्नके रूपमे मै उस चित्रको प्रतिदिन रखूँ, इसलिए मेरा विचार यह है कि मै उसे उस किताबमे रखूँ जिसे मै पढ रहा होऊँ, और जो भी किताब पढता होऊँ उसीमे रखता जाऊँ।

मै देखता हूँ कि तुम गुजरातीकी शिक्षा ले रही हो, शायद मनुसे, क्योकि तुमने अपना नाम गुजरातीमे लिखा है।

मुझे खुशी है कि तुम मनु और एलिजाबेथके घनिष्ठ सम्पर्कमे आ रही हो। तुमने पूछा है कि मै इस प्रेम-व्यापारके बारेमे क्या कामना करता हूँ। मै इन दोनोको अत्यन्त प्रीतिकारी, बहुत ही सच्चा और बहुत गम्भीर मानता हूँ, लेकिन मुझे जिस बातका भय है वह यह है कि वे प्रस्तावित विवाहके पूरे परिणामोको नही समझते। मै उनका दृष्टिकोण समझता हूँ। उन दोनोके लिए इतना ही काफी है कि वे एक-दूसरेको प्यार करते है। लेकिन मेरी यह मान्यता रही है कि युवा लोगोको पहले अपना चुनाव तो कर लेना चाहिए, लेकिन उनकी पसन्दका अन्तिम निर्णय बडोकी स्वीकृति और आशीर्वादपर निर्भर करना चाहिए। मैने युवावस्थाके प्रेमियोको बादमे अक्सर निराशा भोगते देखा है। [जीवन-सगीका] चुनाव कितना ही सोच-विचार कर क्यो न किया गया हो, किसी-न-किसी प्रकार बादमे ऐसा सिद्ध हुआ है कि चुनाव गलत था। इस मामलेमे मुझे आगे खतरा दिखाई पडता है। इस प्रस्तावित विवाहके खिलाफ जो सबसे घातक आपत्ति मै देख पा सकता हूँ वह यह है कि एलिजाबेथ चाहती है कि उसकी सन्तान रोमन कैथॉलिक धर्मके सस्कारोमे पले। यह इच्छा उसके अपने दृष्टिकोणके अनुसार शायद स्वाभाविक है। मुझे इसमे जरा भी आपत्ति नही है। लेकिन मनुको भले ही इसमे कोई आपत्ति न हो, तथापि उसके माता-पिता और उसके स्वजन, जिन्हे वह बहुत प्यार करता है, इस बातको कभी स्वीकार नही कर पायेगे कि उनके पोते-पोतियाँ स्वधर्मको छोडकर किसी अन्य धर्ममे दीक्षित किये जाये।

फिर, सम्पूर्ण हिन्दू सस्कृतिका भी सवाल है। मै इस समय भी भारतीयोकी हिन्दू सस्कृति और ईसाइयोकी ईसाई सस्कृतिके बीच एक सघर्ष चलते देख रहा हूँ। भारतीयोको दो लगभग विरोधी शक्तियाँ अलग-अलग दिशाओमे खीच रही है। क्या जाने कुछ ऐसा है कि ईसाई-धर्म पश्चिमी सभ्यताका पर्याय बन गया है। शायद यह ठीक ही है, क्योकि पश्चिमी देशोके लोगोका धर्म प्रधानतया ईसाई-धर्म है और इसीलिए पाश्चात्य सस्कृतिको उसी प्रकार ईसाई-सस्कृति कहना बिलकुल ठीक होगा जिस प्रकार भारतीय सस्कृतिको निश्चित रूपसे हिन्दू सस्कृति कहा जायेगा। एलिजाबेथका लालन-पालन जिस वातावरणमे हुआ है, उसके बच्चोका उससे सर्वथा भिन्न परिवेशमे लालन-पालन होगा बशर्ते कि मनु स्वय ही अपने समाजसे बिलकुल सम्बन्ध-विच्छेद करके अलग रहनेका निश्चय न कर ले या पश्चिमके किसी देशमे जाकर न बस जाये। मेरी रायमे, आध्यात्मिक दृष्टिसे देखा जाये तो स्वय एलिजाबेथको ऐसा कुछ नही करना चाहिए जिसके कारण मनुको अपने समाजसे सम्बन्ध-विच्छेद करना पडे।

फिर, स्वय एलिजाबेथका अपना भी सवाल है। उसे भारतीय वातावरणके अनुकूल अपनेको ढालनेमे काफी कठिनाईका सामना करना पडेगा। उसके स्वास्थ्यपर बुरा असर पड सकता है या उसे इस प्रकारका जीवन जीना पडेगा जिसका उसके आजतकके वातावरणसे कोई मेल ही नही होगा। यूरोपीयोके यह कहनेका काफी उचित कारण है कि भारतीय लोग औसतन जितना खर्च करते है उससे कही ज्यादा खर्च उठाये बिना वे शायद भारतमे जीवित ही नही रह सकते। मीराके मनमे भारतके प्रति जबर्दस्त प्रेम है, उसकी इच्छा-शक्ति फौलादकी तरह मजबूत है, लेकिन इसके बावजूद उसके लिए भारतीयो जैसी सादगीका जीवन अपना पाना काफी कठिन पड रहा है, और मीराको सामान्य औसतका व्यक्ति कहा जा सकता है। लेकिन उसे भी स्वय अपने ऊपर अत्याचार करनेसे रोकनेकी जरूरत रहती है और उसे ऐसी सुविधाएँ लेनेको बाध्य किया जाता है जो कि उसके साथियोको नही दी जाती। अगर मैंने शुरूसे ही ऐसा नियम न लागू कर दिया होता तो वह बहुत पहले ही चारपाई पकड चुकी होती, और मै जानता हूँ कि उसने भारतीय जीवनके अनुरूप अपनेको असाधारण रूपसे ढाल लिया है। लेकिन यदि उसने किसी भारतीयसे शादी कर ली होती और अपने बच्चोको भारतीय ढगसे पालनेकी व्यर्थ कोशिश करती तो वह तब पूरी तरहसे विफल ही हुई होती। जो व्यक्ति भारतमे भारतीयोकी तरह रहा नही है उसे इस बातका कोई अन्दाज ही नही हो सकता कि मै क्या लिख रहा हूँ। भारत ससारका सबसे गरीब देश है। किसी पाश्चात्य देशकी लडकीके लिए इस दृढ सकल्पके साथ भारत आकर किसी भारतीयसे शादी कर लेना एक जबर्दस्त काम है कि वह शुद्ध भारतीयो जैसा जीवन व्यतीत करेगी। मै किसी भी ऐसे भारतीयको नही जानता जिसने किसी यूरोपीय लडकीसे शादी की हो और फिर भी औसत भारतीयोकी तरहका जीवन व्यतीत करता हो। अगर उसे पत्नीके साथ न्याय करना है तो वह ऐसा कर ही नही सकता। और मनुको एलिजाबेथकी खातिर अपने आदर्शोको नीचा करना पडे, इस बातको सहज स्वीकार करनेके लिए मेरा मन

तैयार नही हे। ऐसे ही कारणोवश मैंने उन लोगोके लिए ब्रह्मचर्य धारण करनेकी बात कही है जिन्होंने ईश्वरकी सेवा, अर्थात् ईश्वरकी सृष्टिकी सेवा करनेका व्रत लिया है। मेरे लिए मीराको या तुम्हे पुत्रीवत माननेमे कोई कठिनाई नही है, लेकिन किसी यूरोपीय लडकीको मैं पुत्रवधू बनाऊँ, जरा इसकी कल्पना तो करो। मुझे भय लगेगा। मै इस भारको नही उठा पाऊँगा, क्योकि उदाहरणके तौरपर देवदासको अपने स्वाभाविक वातावरणसे अलग होना पडे, यह बात मेरा मन स्वीकार नही कर सकता। मुझे लगता है कि भारतीयोका यूरोपीयोके साथ विवाह-सम्बन्ध करना अभी असामयिक है। जब भारत अपनी दशा सुधार लेगा, या जब यूरोपीयोके ऐसे लडके-लडकियाँ होगे जो अत्यधिक सादगीके अभ्यस्त बन गये है और भारतमे ही बस गये है, तभी मै भारतीयो और यूरोपीयोके बीच विवाहकी सम्भावनाको खुशीके साथ देख सकूँगा।

अब मेरे खयालसे मैंने तुम्हे खूब लम्बा पत्र लिख डाला है और सोचनेके लिए काफी मसाला दे दिया है। तुम्हे इस बातका थोडा-बहुत ज्ञान तो है ही कि मैं क्या चाहूँगा किन्तु मैंने जो-कुछ कहा है यदि वह तुम्हे जमे नही तो मैं तुमसे किसी भी रूपमे यह अपेक्षा नही करता कि तुम मेरी इच्छापर अमल करो। और यदि मनु और एलिजाबेथके भविष्यके बारेमें तुम्हारे विचार भिन्न हो तो तुम मुझे वैसा बतानेमे सकोच मत करना। मैं इस बातकी कद्र करता हूँ कि तुमने अपना व्यक्तित्व मेरे व्यक्तित्वमें समा दिया है, लेकिन मै तुम्हारी बुद्धि या तुम्हारे हृदयको गुलाम बनानेका अपराध कभी नही करूँगा। मैं अपूर्ण हूँ, और मै अपनी गलतियोमे तुम्हे अपना भागीदार नही बनाना चाहता। इसलिए तुम मेरे साथ मिलकर जो-कुछ भी करो, उसमे सही-गलतका निर्णय पूरी तरह अपनी बुद्धिसे करो। जब तुम्हे विचार, भाषण या कार्यमें मुझसे असहमत होनेकी आवश्यकता प्रतीत हो उस समय यदि तुम मुझसे असहमत होगी, तो मेरा प्रेम तुम्हारे प्रति कम नही होगा।

एक और चीज मैंने तुम्हारे सामने नही रखी है जिसेकि मैंने एलिजाबेथको लिखे अपने पत्रमे बताया है। उस बातको मै बिना उसके पक्षमे कोई तर्क दिये बस कहे देता हूँ।

मेरा विश्वास है कि जब पति और पत्नी भिन्न धर्मके माननेवाले हो, तो उनकी सन्तानको पिताके धार्मिक सस्कारोके अनुसार पाला जाना चाहिए। इस बातके पक्षमे मेरी रायमे ठोस धार्मिक और दार्शनिक कारण है। यदि तुम्हे मेरी बात ठीक न लगे तो तुम एलिजाबेथसे कहना कि मेरा पत्र वह तुमको दिखा दे।

इस समय मेरे ऊपर जबर्दस्त कार्य-भार है। पत्राचारके लिए मुझे बहुत कम समय मिलता है। यह पत्र भी मैं क्लान्तिकर स्थितियोमे बोलकर लिखवा रहा हूँ। इसलिए मै चाहूँगा कि यदि तुम ठीक समझो तो इस पत्रको एलिजाबेथ और मनुको भी पढवा देना। लेकिन यदि ऐसा न करना ही तुम्हे बुद्धिमत्तापूर्ण लगे तो कृपया उन दोनोसे कह देना कि मुझे उनका सयुक्त पत्र, और उससे पहलेका लिखा एलिजाबेथका पत्र मिल गये थे। और यह भी कि इन दोनो पत्रोकी मैं कद्र करता हूँ और इनके बारेमे मैंने तुम्हे लिखा है।

आशा है तुम्हें मेरा वह पत्र मिला होगा जिसमें मैंने तुम्हारे भेजे १५ पौंडकी रकमकी प्राप्ति-सूचना दी थी। मैं तुम्हें फिर चेतावनी दूँगा कि तुम अनुचित रूपसे आत्म-त्याग मत करो।

सप्रेम,

बापू

प्रिंसेस एफी एरिस्टार्शी
होटेल स्कोट्जकी
फ्रीबर्ग १–बी
(जर्मनी)

[अंग्रेजीसे]
महात्मा, खण्ड ३ में पृष्ठ ३४४ के सामने प्रकाशित अनुप्रति से।

२५९. पत्र: मनु गांधीको

१६ नवम्बर, १९३३

चि० मनुडी,

तेरे दो पत्र आज ही मिले। तू चली गई यह ठीक ही हुआ। अब कुसुमको स्वस्थ बनाना। वह तन्दुरुस्त हो जाये फिर वर्धा जाना है न? बलीको[1] भी आनन्द हुआ। बलीको मैं अलहदासे पत्र नहीं लिखता। मुझे पत्र वर्धाके पतेपर लिखा करना।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती बलीबहन
मार्फत वोरा हरिदास वखतचंद
हाईस्कूलके पीछे
राजकोट

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १६६२) से, सौजन्य मनुबहन एस० मशरूवाला

1 बलीबहन एम० अडालजा, हरिलाल गांधीकी साली।

२६०. भाषण : हनुमान व्यायामशाला, अमरावतीमें

१६ नवम्बर, १९३३

इस विशाल जनसमुदायने यह देखा ही होगा कि सवर्ण हिन्दुओ और हरिजनोमे कोई ईश्वरका बनाया हुआ भेद नही है।[1] यह भेद तो विशुद्ध रूपसे मनुष्यका बनाया हुआ है, और ईश्वरकी दृष्टिमे यह अपराध है। यदि हरिजनोको तरक्की करनेका पूरा-पूरा अवसर दिया जाये तो वे जीवनके अनेक क्षेत्रोमे अन्य लोगोसे यदि आगे नही बढ जायेगे तो कमसे-कम समकक्ष अवश्य ठहरेगे। आज हमने जिस बलका प्रदर्शन देखा है उससे हमारी आँखे खुल जानी चाहिए और उससे हमे अपने विचारोसे अस्पृश्यताके कलकको धो डालनेकी प्रेरणा मिलनी चाहिए।

[अग्रेजीसे]

हिन्दू, २४-११-१९३३

२६१. भाषण : अमरावतीकी सार्वजनिक सभामे

१६ नवम्बर, १९३३

मैने भारतके सभी कोनोमे बहुतसे स्थानोकी यात्रा की है, और ऐसी बडी सभाओको मै ईश्वरीय कृपाका चिह्न मानता हूँ। मै मानता हूँ कि केवल ईश्वरकी कृपासे ही इतनी विशाल सभाओका हम सचालन कर सकते है। यह एक धार्मिक कार्य है और इसलिए इसे सत्य, शान्ति और त्यागके साथ किया जाना चाहिए। किसी और ढगसे इसे नही किया जा सकता। हरिजनोके प्रति जो अन्याय किये गये है और जो अन्याय हम सवर्ण हिन्दू अभी भी उनके साथ कर रहे है, यदि उसके लिए हमे प्रायश्चित्त करना है तो हमे उनके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा कि हम अन्य सवर्ण हिन्दुओके साथ करते है। मै आप सबको बताना चाहता हूँ कि जबतक हम उनके साथ बराबरीका बर्ताव नही करेगे तबतक हमारी दशा भी नही सुधर सकती। मैने यहाँ डॉ० पटवर्धनकी सहायतासे हरिजनोके मकानोको देखा है और अन्य कार्य भी देखे है, और अब मैने स्थानीय नगरपालिका द्वारा मेरे सम्मानमे पढा गया अभिनन्दनपत्र भी सुना है। यदि यहाँकी नगरपालिका इस विषयमे कुछ नही कर सकी तो इसमे इसका दोष नही है। मैने अन्य बहुत-सी नगरपालिकाएँ देखी है और सभी जगह स्थिति एक जैसी है। लेकिन अब तो पाश्चात्य वैज्ञानिक भी अपनी

१. लगभग एक सौ हरिजन लड़कोने विशाल जनसमुदायके सम्मुख बैंडके साथ कवायद करके दिखाई थी।

शोधोके बाद इस परिणामपर पहुँचे है कि यदि हम किसी वर्ग-विशेषको अपने समाजसे अलहदा रखते है तो हमारा आर्थिक पतन निश्चित है। इन २५ वर्षोके अध्ययनके बाद मेरा यह विश्वास दृढ हुआ है कि धनके साथ-साथ धर्मको बराबर चल सकना चाहिए। धर्म और धनके बीच समरसता होनी चाहिए। अपने हरिजन-कार्यपर से मुझे अनुभव हुआ है कि जो व्यक्ति धर्मके अनुसार धनोपार्जन करता है, उसे दोनोकी ही प्राप्ति होती है। मै इसे प्रत्येक सवर्ण हिन्दूका कर्त्तव्य मानता हूँ कि वह हरिजनोको अपने समाजमे शामिल करे। यदि हम हरिजनोके प्रति अपना कर्त्तव्य करेगे तो हम सभी, हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई आदि शान्तिपूर्वक रहेगे। मेरी समझमे इन सभी लोगोमे एकता स्थापित करनेके लिए हरिजन-कार्यसे अच्छा और कोई तरीका नही है। अब मै आपको बताऊँगा कि इस विषयमे आपमे से प्रत्येक व्यक्ति क्या कर सकता है। हरिजन आन्दोलन एक महान यज्ञ है और आपमे से प्रत्येक व्यक्ति इसमे अपना अशदान कर सकता है। जिनके पास धन है वे इस कार्यके लिए धन दे सकते है। जिनके पास अवकाश और बुद्धि है वे हरिजन बालकोको शिक्षा दे सकते है और शारीरिक स्वच्छता तथा सफाईके बारेमे सिखा सकते है। इस समय यह कार्य काग्रेमी कर रहे है। लेकिन मै चाहता हूँ कि गैर-काग्रेसी लोग भी इस कामको करे। इस कामको करना आप सबका धार्मिक कर्त्तव्य है।

मेरी दृष्टिमे राजनीतिका उतना मूल्य नही है जितना इस कामका। राजनीतिका मेरे लिए कोई महत्त्व नही है। मेरा विश्वास है कि यदि इस कामको हम लोग उत्साहके साथ करे तो सभी चीजे मिल जायेगी। इस काममे अन्य किसी और इरादेको लेकर मै दौरा नही कर रहा हूँ। और जब मै देखता हूँ कि मुझे सुननेके लिए लोग इतनी बडी सख्यामे इकट्ठा होते है तो मुझे आशा होती है कि इस काममे वे मेरे साथ खडे होगे। पिछली जुलाईमे हरिजन सेवक सघकी स्थापना की गई थी, और आपमे से कुछ लोगोने शायद अस्पृश्यताके इस अभिशापको मिटा डालनेका व्रत लिया होगा। हरिजनोको सार्वजनिक सस्थाओका उपयोग करने और मन्दिरोमे प्रवेश करनेका जन्मसिद्ध अधिकार है। लेकिन जबतक हरिजन होनेके कारण एक भी व्यक्तिका बहिष्कार किया जाता है तबतक मै यह नही मानूँगा कि अस्पृश्यता पूरी तरह मिट गई है। अत अपने दिलोको बदलना और हरिजनोको अपना भाई समझना अब आपके हाथमे है।

हरिजन सेवक सघमे विभिन्न विचारधाराओके लोग है, लेकिन यह काम वे सब मिल-जुलकर कर सकते है। इस क्षेत्रमे काम करनेवाले कार्यकर्त्ताओको किसी प्रकारका सम्मान या उपाधि पानेकी कामना नही करनी चाहिए। व्यक्तिगत स्वार्थ या स्वार्थपूर्ण इरादेका उनमे लेशमात्र भी नही होना चाहिए। इस काममे राजनीतिका भी कोई पुट नही होना चाहिए। इसमे कोई शक नही कि इस कामका कुछ राजनीतिक अर्थ भी होगा, लेकिन मै राजनीतिकी बातोको वह महत्त्व नही देता जो इसको देता हूँ। हरिजन-कार्यका उद्देश्य हिन्दू-धर्मको शुद्ध बनाना है। मुझे इस मामलेमे बडी आशाएँ है। मै हमेशासे आशावादी रहा हूँ और इस मामलेमे मेरी आशावादिता दिन-दिन

बढ रही है। लेकिन यदि मै विफल भी होऊँ, तो भी मेरा कर्त्तव्य इस कामको जारी रखना है। अभी तक बहुत कम ईमानदार कार्यकर्त्ता सामने आये है। इसलिए मै ईश्वरसे प्रार्थना करता हूँ कि वह इस मामलेमे अपना कर्त्तव्य करनेकी आपको शक्ति दे और आपको मार्ग दिखाये।[1]

पिछले वर्ष आप लोगोके नामपर की गई प्रतिज्ञाकी मै आपको याद दिलाता हूँ। आपको याद होगा कि पिछले वर्ष सितम्बरमे बम्बईमे हिन्दुओके प्रतिनिधियोकी एक सभा हुई थी जिसकी अध्यक्षता पडित मालवीयजीने की थी। अन्य बातोके अलावा प्रतिनिधियोने सकल्प किया था कि हिन्दू-धर्म पर कलक स्वरूप अस्पृश्यताको मिटाना है और हरिजन लोगोको सार्वजनिक सुविधाओका वैसा ही अधिकार है जैसा कि सवर्ण हिन्दुओको है। उस प्रस्तावमे हिन्दू-मन्दिरोका विशेष उल्लेख था और ऐसा कहा गया था कि उद्देश्यकी पूर्तिके लिए आवश्यक होनेपर कानून बनवाया जायेगा। इसलिए अब प्रत्येक सवर्ण हिन्दूका यह परम कर्त्तव्य है कि वे हरिजनोके लिए सवर्ण हिन्दुओके साथ समानताके आधारपर मन्दिरो, कुओ और अन्य सस्थाओको खोलकर इस प्रतिज्ञाको पूरा करे।

हरिजनोकी वर्तमान पतनावस्थाके कारण हम लोग है। यदि अन्यायका अन्त करना है तो हमे धन खर्च करना होगा। इस कामके लिए जो व्यक्ति भी धन देगा उसका लाभ होगा। इसलिए उसे फाजिल धन देकर ही सन्तोष नही कर लेना चाहिए, बल्कि यदि देनेके फलस्वरूप थोडी कठिनाईमे भी गुजारा करना पडे तो भी हमे पैसा देना चाहिए। हममे से कुछ लोगोको हरिजन-सेवाके लिए अपना सर्वस्व देना होगा।

मुझे यह देखकर खुशी होती है कि इस आन्दोलनमे काग्रेसी और गैर-काग्रेसी, सभी लोग काम कर रहे है। चूँकि यह सवाल पूछा जा रहा है कि काग्रेसी लोग इस आन्दोलनमे किस हदतक शामिल हो सकते है, इसलिए मै वह बात फिरसे दोहराना चाहूँगा जो मै पहले कह चुका हूँ। काग्रेसने १९२० मे अस्पृश्यता-निवारणको अपने कार्यक्रमका अभिन्न अग बनाया था। इसलिए प्रत्येक हिन्दू काग्रेसीका कर्त्तव्य है कि वह अस्पृश्यतासे लडे और सभी उचित तरीकोसे हरिजनोकी सहायता करे। लेकिन यदि आन्दोलन केवल काग्रेसियोतक ही सीमित रहा तो आन्दोलन वैसी वाछित प्रगति नही कर सकता जैसीकि हम सब चाहते है। प्रत्येक सवर्ण हिन्दूको आन्दोलनमे यथाशक्ति सहयोग देना है। काग्रेसियोसे यह तो अपेक्षित है कि वे इस बुराईसे लडे, लेकिन उनसे अधिकृत रूपसे यह अपेक्षित नही है कि वे हरिजन-सेवाका कार्य करनेवाले सगठनोमे शामिल हो। यदि वे सक्रिय सविनय अवज्ञा करनेवाले सत्याग्रही है तो उन्हे इन सगठनोमे कोई पद नही ग्रहण करना चाहिए। सविनय अवज्ञामे विश्वास रखनेवाले और सविनय अवज्ञा करनेवाले किसी काग्रेसीको सविनय अवज्ञा स्थगित करने या बिलकुल छोड देनेकी जरूरत नही है। उन लोगोकी बात बिलकुल भिन्न है जो हरिजन सेवाकी खातिर सविनय अवज्ञाको छोड देनेकी आवश्यकता अनुभव करते है या जिनका सविनय अवज्ञापर से विश्वास उठ गया है।

१ अन्तिम अनुच्छेदको छोडकर इसके बादका शेष अश १-१२-१९३३ के **हरिजन** से लिया गया है।

सत्याग्रहकी भाँति ही आत्म-शुद्धिके इस आन्दोलनमे किसी प्रकारके छद्मको कोई स्थान नही है।

हरिजनोने शिकायते की है कि बहुतसे स्वार्थी लोग इस आन्दोलनमे घुस आये है। एक विशुद्ध धार्मिक आन्दोलनमे ऐसे लोगोके लिए कोई स्थान नही है। केवल वे ही लोग सगठनोमे पद ले सकते है, या उन्हे ही पद स्वीकार करना चाहिए जिनके अन्दर सेवाकी भावना है।

इस स्थानकी कुछ महिलाओने मुझे जेवर दिये है और छोटेबच्चोने मुझे एक चाँदीकी मजूषा भेट की है। मै इन्हे नीलाम करना चाहता हूँ। मै आप सबसे पैसे स्वीकार करूँगा, भले ही वह एक कौडी क्यो न हो, लेकिन जो भी दिया जाये शुद्ध मनसे दिया जाये। मै आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इससे आपको खुशी हासिल होगी और हरिजनोके लिए आपका दान सहायक सिद्ध होगा।

[अंग्रेजीसे]

हितवाद, २३-११-१९३३ और **हरिजन**, १-१२-१९३३

२६२. पत्र : कीकाभाई एल० वघेलाको[1]

[१७ नवम्बर, १९३३ से पूर्व][2]

मै जिन स्कूलोका उद्घाटन करता हूँ वे केवल हरिजनोके लिए नही होते और मै निश्चय ही ऐसे स्कूलोका उद्घाटन नही करता जिनमे हरिजनोको प्रवेश नही मिल सकता। नगरपालिकाओके हरिजन कर्मचारियोकी स्थितिकी जाँचके बारेमे आपने जो-कुछ कहा है मै उसे नजरन्दाज नही करूँगा।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, १८-११-१९३३

१ कीकाभाई एक हरिजन नेता थे। उन्होने गाधीजीसे अनुरोध किया था कि वे हरिजन बच्चोके लिए पृथक् स्कूल न खोलें।

२ यह पत्र **हिन्दू** में दिनाक "अहमदाबाद, १७ नवम्बर" के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था।

२६३. भेट : एसोसिएटेड प्रेसके प्रतिनिधिको

अकोला
[१७ नवम्बर, १९३३ या उससे पूर्व][1]

एसोसिएटेड प्रेसके प्रतिनिधि द्वारा यह पूछे जानेपर कि अमेरिकासे प्राप्त हुई एक प्राइवेट रिपोर्टके अनुसार क्या वे शरद् ऋतुमे न्यूयॉर्क जा रहे है, गाधीजीने कहा कि मै अमेरिका नही जा रहा हूँ और मुझे ऐसा कोई निमन्त्रण पत्र भी नही मिला है।

इसके आगे उन्होने कहा कि मैने अभी हाल ही मे एक सम्वाददाताके आगे अमेरिका अथवा कही भी जानेकी असमर्थता व्यक्त की थी और कहा था कि मैने यह जो प्रतिज्ञा की है कि जुलाईके अन्त तक मै अपनी पूरी शक्ति केवल हरिजन उद्देश्यमे लगाऊँगा, मै उस प्रतिज्ञाको तोडनेवाला नही हूँ।

[अग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, १८-११-१९३३

२६४. प्रतिदिन एक पैसा

२६ अक्टूबरके अपने पत्रमे श्रीयुत हरखचन्द लिखते है[2]

यहाँ पाठकको अपनी कल्पनाशक्तिसे काम लेना चाहिए और अपने-आपसे पूछना चाहिए कि जब कोई व्यक्ति खैरातके रूपमे एक पैसेसे भी कम भर चावल लेनेके लिए खुशी-खुशी मीलो चलकर आता है तब इसका क्या अर्थ होता है? और तब उसे अपने हृदयको टटोलना चाहिए कि जब उससे उडीसाके नर-ककालोको कुछ भोजन मिल सके, इसके हेतु चन्दा देनेको कहा जाता है तब क्या वह ईमानदारीके साथ तगीकी हालतमे होनेकी दुहाई दे सकता है? इसके लिए उसे इस बातकी प्रतीक्षा नही करनी चाहिए कि जब कोई व्यक्ति चन्दा लेनेके लिए उसके पास आयेगा तभी वह चन्दा देगा। उसे तो अविलम्ब जो पैसा अथवा रुपया वह दे सकता हो, मनीआर्डर द्वारा भेज देना चाहिए। और यदि वह मनीआर्डरका कमीशन बचाना

१ यह रिपोर्ट दिनाक "अकोला, १७ नवम्बर"के अन्तर्गत प्रकाशित हुई थी।

२. पत्र यहाँ नही दिया गया है। पत्र-लेखकने उडीसाके सहायता-कार्यकी गुरुताको बताते हुए चन्देकी तुरन्त ही कितनी सख्त जरूरत है, इस बातपर जोर दिया था। देखिए "प्रति व्यक्ति एक पैसा", १२-११-१९३३ भी।

चाहता है तो उसे चाहिए कि वह अपनी दानराशिको पडोसियोकी दानराशिके साथ भेजे जिससे कि ज्यादासे-ज्यादा रकम पर कमसे-कम खर्च आये।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १७-११-१९३३

२६५. प्रशंसनीय कार्य

पिछले सप्ताह डॉक्टर खरे और उनकी हरिजन-सेवक-समितिने कार्यक्रमके सम्बन्धमे बडी ही सुन्दर व्यवस्था की थी। यदि डॉक्टर खरेको स्वेच्छासे काम करनेवाले अनेक सुयोग्य साथियोकी सहायता न मिलती, तो यह कार्यक्रम पूरा ही नही हो सकता था। डॉक्टर साहबने, हृदयकी पुरानी व्याधिसे पीडित होते हुए भी, इन कठिन दिनोमे परिश्रम करनेमे कोई कसर उठा नही रखी, और अपने साथियोसे भी उन्होने खूब काम लिया। विराट् जन-सभामे बिजलीकी सैकडो बत्तियाँ लगाने और ऊँचा पक्का मच तैयार करनेमे जो खर्च पडा वह कुछ सज्जनोने आपसमे ही इकट्ठा करके दे दिया था, दानकी थैलियोमे से इस खर्चके लिए एक पैसा भी नही निकाला गया। मेरे मेजबानका मकान मेरे ठहरनेके दौरान एक तरहसे धर्मशाला बन गया था। टिकेकर-बन्धुओने हमारे बडे दलको तथा दूसरे समारोहोके सम्बन्धमे आये हुए अन्य लोगोको आराम और सुविधाएँ पहुँचानेमे परिश्रम तथा खर्चमे जरा भी कमी नही रखी। मैने देखा कि नागपुर और आसपासके क्षेत्रोमे मेरे दौरेको सफल बनानेमे काग्रेस-वालो और गैर-काग्रेसियोने पूरा सहयोग दिया, और बेशक वह खूब सफल रहा। डॉक्टर खरे और उनके साथियोने इस अवसरपर जो असीम परिश्रम उठाया उसके लिए मै उन्हे धन्यवाद देता हूँ। इस महान् शुद्धि-कार्यमे जो परिश्रम और सावधानी उन्होने दिखाई वह आवश्यक ही थी।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १७-११-१९३३

२६६. दानका उपयोग

यह मै इन स्तम्भोमे लिख चुका हूँ कि हरिजन-यात्रामे प्राप्त दानकी रकमका उपयोग किस प्रकार किया जायेगा। फिर भी कार्यकर्त्ता लोग इस बारेमे और अधिक स्पष्टीकरण चाहते है। ठक्कर बापासे मै इस बारेमे बात कर चुका हूँ और मै निश्चित रूपसे कह सकता हूँ कि जिन स्थानोसे जितना दान मिलेगा वहाँ हरिजन-सेवाके अर्थ प्राप्त रकमका कमसे-कम ७५ प्रतिशत वही खर्च किया जायेगा। शर्त इतनी ही है कि [उस स्थानकी हरिजन-सेवक-समिति] सन्तोषजनक बजट पेश करे और उसपर प्रधान कार्यालय मजूरी दे दे। जहाँ जरूरत मालूम होगी वहाँ सारीकी सारी जमा रकम [उस जगहकी समितिको ही] दे दी जायेगी। इसलिए अब इतना ही कहनेको

रहा कि प्रत्येक केन्द्रके हरिजन-सेवक व्यावहारिक योजनाएँ तैयार कर ले और उन योजनाओको भली-भाँति अमलमे लानेके लिए ईमानदार और उद्योगी आदमी तलाश ले। इतना होनेके बाद पैसा मिलनेमे देर नही लगेगी। जिन स्थानोमे दानकी रकमे मिली है वहाँसे उन्हे दूसरे स्थानोमे अकारण ले जानेकी तनिक भी इच्छा नही है। प्रधान कार्यालयके लिए कुछ भाग रखनेका विचार है, पर वहाँ भी कार्यालयके वेतन इत्यादि खर्चके लिए नही, बल्कि उस रचनात्मक-कार्यके लिए जो सीधे उसके द्वारा चलाया जा रहा है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १७-११-१९३३

२६७. भाषण : अंजुमन मुफीद-उल-इस्लाम, खामगाँवमें

१७ नवम्बर, १९३३

जब मैने सुना कि आपके अजुमनने मुझे बुलाया है तो मुझे बेहद खुशी हुई। आपके अभिनन्दनपत्रके लिए, तथा हरिजनोके कामके लिए आपने मुझे जो थैली भेट की है उसके लिए मै आपका शुक्रगुजार हूँ। आपके अभिनन्दनपत्रको पढकर मुझे बहुत खुशी हुई। आपने ठीक ही कहा है कि जबतक अस्पृश्यता बनी हुई है तबतक हिन्दू-धर्मका कोई भविष्य नही है। मै अपनी जिन्दगी-भर मुसलमानोके साथ रहा हूँ। इस्लाममे जो बडी खूबी मुझे देखनेको मिली वह यह कि इस्लाम इन्सानकी बराबरी और भाईचारा सिखाता है — इन्सान चाहे राजा हो या गुलाम। आपमे से अधिकाश लोग हाफिज होगे और 'कुरान' पढ चुके होगे। मैने भी 'कुरान' को पढनेकी और इसमे जो अच्छी बाते है उन्हे समझनेकी कोशिश की है।

हिन्दू-मुस्लिम एकताके बारेमे आपने जो-कुछ कहा है उससे मै सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ हूँ। मैने देखा है कि गलतफहमियाँ बहुत ज्यादा है। फिर भी हिन्दू और मुसलमान इस तरहसे अलग नही रह सकते। आखिरकार ऐसे कबतक चलेगा? हालाँकि मैने देख लिया है कि इस समय तो मै एकता कायम करनेमे कामयाब नही हुआ लेकिन निश्चय ही इस विफलतामे भी मै सफलता ही छिपी देखता हूँ। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि एकताके अर्थ यह नही है कि किसी तीसरेको तबाह करनेके लिए दो बलवान पक्ष आपसमे मिल जाये। अगर एकताके बारेमे हमारी ऐसी सकल्पना है तो बेहतर है कि हम जैसे है वैसे ही बने रहे। इस वक्त तो मै हरिजनोके कामपर ही ध्यान दे रहा हूँ और मैने इस [एकताके] सवालको फिलहाल छोड रखा है।

अपनी सस्कृतिको कायम रखनेकी आपकी उत्सुकताको मै अच्छी तरह समझ सकता हूँ। लगता है आप लोग सर्वसामान्य शिक्षण सस्थाओमे विश्वास नही रखते है। आपकी रायमे ऐसी सस्थाओका उद्देश्य आपको अपनी धार्मिक और सास्कृतिक सम्पदाके मार्गसे भटकाना है। मै इस साम्प्रदायिक शिक्षाके सवालको दूसरी दृष्टिसे

देखता हूँ। सर्वसामान्य स्कूल या साम्प्रदायिक स्कूलसे मुझे कोई फर्क नही पडता। ऐसे सर्वसामान्य स्कूलो का क्या फायदा जहाँ पूर्वग्रहोके कारण हृदयोमे मतभेद उत्पन्न होता है? ऐसे साम्प्रदायिक स्कूलोमे क्या बुराई है जहाँ सबके लिए हृदयमे शुद्धता हो? इस तरह आप देखेगे कि साम्प्रदायिक स्कूलो या सार्वजनिक स्कूलोका कोई महत्त्व नही है। साम्प्रदायिक शिक्षाके सवालकी बनिस्बत हृदयकी शुद्धता, परस्पर विश्वास और एक-दूसरेके प्रति प्रेम, ये चीजे कही ज्यादा महत्त्वपूर्ण है।

मुझे आपसे थैलीकी वाकई उम्मीद नही थी। इससे भी ज्यादा तो मुझे अस्पृश्यतासे जूझनेमे मुझे ताकत देनेके लिए आपकी दुआओकी जरूरत है। भारतको एक भयकर अभिशापसे मुक्त करानेके लिए मुझे आपकी मददकी जरूरत है। यह तो हमारा सबका मामला है, केवल भारतके लिए ही नही, बल्कि सारे ससारके लिए। यह तो मानवताकी सेवा है। आपने मुझे जो सुन्दर अभिनन्दनपत्र और थैली भेट की है उसके लिए मै आपका शुक्रगुजार हूँ।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दुस्तान टाइम्स, २५-११-१९३३

२६८. भाषण: खामगाँवकी सार्वजनिक सभामें

१७ नवम्बर, १९३३

आपने जो मानपत्र एव थैली, रुपये तथा नोट दिये है इन सबके लिए आप भाइयो और बहनोका मै आभार मानता हूँ। मुसलमान भाइयोकी अजुमनने जो थैली दी है उसके लिए उनका आभार मानता हूँ। जब मै चोखामेला[1] हरिजन बोर्डिगको देखने गया था, तो वहाँ भाइयोने मुझे जो रुपये दिये तथा बहनोने अगूठी दी, उसका भी मै आभार मानता हूँ। अस्पृश्यता-निवारणके लिए आपने खामगाँव और उनके आसपास जो काम किया है उसके लिए भी धन्यवाद।

आज शाम लासूरमे ठक्कर बापाने हरिजन भाइयोके लिए उदासीजी[2] का शिव-मन्दिर खोल दिया है। उन्होने यह पवित्र कार्य हरिजन भाइयोके लिए कर दिया है। मुझे बताया गया है कि उस अवसर पर वहाँ कोई भी हरिजन उपस्थित नही था। पर हरिजन भाई तो हमारे व्यवहारसे अभीतक शकित है। हिन्दू जनताका या जो अपनेको सवर्ण हिन्दू मानते है उनका कर्त्तव्य है कि वे उनके लिए इन्साफ करे और आजतक उन्होने उनके साथ जो बुराइयाँ की है उनका प्रायश्चित्त करे और आज भी अज्ञानवश जो यह माना जा रहा है कि मन्दिर केवल सवर्णोके लिए ही है, उसे दूर कर दे। उदासीजीने यह कार्य करके अपने कर्त्तव्यका पालन किया है। हरिजन भाई आये या न आये, हम उनके प्रति प्रेमसे अपना कर्त्तव्य पालन कर ले तो उसका

१ महाराष्ट्रके एक हरिजन सन्यासी।

२. विष्णुदास उदासी।

फल अच्छा ही होगा। जब हरिजन भाई समझ जायेगे कि हम उन्हे प्रेमसे बुलाना चाहते है तो वे अपने-आप चले आयेगे।

यहाँ एक बात मै यह कह देना चाहता हूँ कि जो कानून सब हिन्दुओके लिए है वही हरिजनोके लिए भी है। सार्वजनिक नियम तो सभीके लिए एकसे होने चाहिए। सार्वजनिक सस्थाओमे जानेके नियमोका पालन हरिजन भाइयोको करना ही चाहिए। उन्हे शरीर तथा कपडोको साफ रखने तथा शौचादिके नियमोका पालन करना चाहिए। जो हरिजन भाई मुर्दार मास खाते है उनको मन्दिरमे जानेका अधिकार नही है। दुनियामे इतना घूमकर और इतिहासका अध्ययन करके मैने देखा है कि सर्वत्र मुर्दार मास खानेवालेके प्रति घृणा पैदा होती है। इसमे सन्देह नही कि जिनके दिलमे ईश्वरका भय है और जिनमे ज्ञान और शुद्धि पैदा हो गई है वे तो उसे छोड सकते है। इसी तरह मेरी प्रार्थना है कि वे मद्यपान भी छोड दे। हम जानते है कि यह दलील दी जा सकती है कि सवर्ण हिन्दुओमे भी तो बहुतसे मद्यपान करते है, पर जो बात बुरी है उसमे उनकी नकल करना ठीक नही है। जो मनुष्य मद्यपान करता है वह मनुष्यताको खो देता है। वह माँ, बहन, बेटी और स्त्रीमे क्या भेद है, यह भी भूल जाता है। यद्यपि मै जन्मसे सवर्ण हूँ पर स्वेच्छासे हरिजन हूँ। इस दृष्टिसे अपनेको हरिजन मानकर मै उनसे प्रार्थना करता हूँ कि वे इस बुराईको छोड दे। मै जानता हूँ कि उनके यहाँ पूजामे भी मद्य चलता है। यह तो कुछ झूठे धर्म पडितोने उनको जैसा बता दिया है वैसा ही उन्होने मान लिया है। इसमे धर्मका तो लेश भी नही हो सकता, अधर्म अवश्य है। इसलिए आपसे प्रार्थना है कि मनुष्यको जानवर बनानेवाली इस चीजको आप छोड दे। वास्तवमे यह चीज ही अस्पृश्य है। इसी प्रकार महार, चमार, भगी, इत्यादिके बीच जो भेद-भाव है उसे भी दूर कर देना चाहिए। आत्म-शुद्धिके इस कार्यमे इतना करना हरिजन भाइयोके कर्त्तव्यका भाग है।

अब मै सवर्ण भाइयोसे कुछ कहना चाहता हूँ। जो इतनी जनता व्याख्यान सुननेके लिए जमा हो जाती है उससे मै क्या समझता हूँ, यह भी मै बता देना चाहता हूँ। जबसे मै हिन्दुस्तान लौटा हूँ तबसे मै जो दिलमे आता है वही करता हूँ। कोई भाई यह न सोचे कि यह करता कुछ है, पर इसके दिलमे दूसरी बात है। मै अपनेको आस्तिक मानता हूँ। उसे चाहे खुदा कहो, अल्लाह कहो या ईश्वर कहो, मै उसका डर मानता हूँ। उसे साक्षी रखकर काम करता हूँ। और उसे साक्षी रखकर मै प्रतिज्ञा कर चुका हूँ कि सच्चा धर्म मानकर ही मै हरिजन-सेवा करूँगा। मै भी बहुत-सी बाते जानता हूँ और कर भी सकता हूँ, पर वैसा करनेसे तो मेरे जीवनका पतन हो जायेगा। मै जेलके बाहर रहकर केवल एक ही कार्य कर लेना चाहता हूँ, अन्यथा मेरा जीवन मिथ्या है। मैं तो अपनेको साधारण मनुष्य मानता हूँ, पर साधारण क्या और विद्वान क्या, अपने धर्मका पालन करना तो सबका कर्त्तव्य है। मै इस कार्यको धार्मिक कर्त्तव्य मानता हूँ। अपने माता-पिता, शिक्षको और अपने अनुभवसे मैने जो पाया है वह सब मै आपके सामने रख देना चाहता

हूँ। मैंने पहले जो-कुछ मेवा की है उसका फल मुझे मिल चुका है। मेरी सेवाका फल तो ईश्वर ही दे सकता है। इस समय तो मै अस्पृश्यता-निवारणके लिए ही काम करना चाहता हूँ। आपको मेरी बात पसन्द हो तो आप मेरे पास आ सकते है और मेरी बात पसन्द न हो तो मुझे छोड सकते है। आजकल मुझे आपसे प्रेम मिला है, इसलिए आज यदि आपसे गालियाँ भी मिलेगी तो भी मै उन्हे सहन कर लूँगा और यदि आप मुझे मारेगे तो उसे भी सह लूँगा, तथा ईश्वरसे यही प्रार्थना करूँगा कि वह आपको माफ कर दे। पर यदि आपको मेरी बात पसन्द न हो तो शिष्टाचार तो यह है कि आप यहाँ न आये। मै तो देखता हूँ कि आप यहाँ आते है, हँसते-हँसते रुपये-पैसे देते है, जेवर देते है, इससे मै यह समझता हूँ कि आप मेरे साथ है। क्या मैंने पहले जो काम किया है आप उसकी फीस देते है? मुझे तो फीस नही चाहिए। मेरी फीस तो ईश्वर मुझे दे देता है। पर आप जो इतनी अधिक सख्यामे यहाँ आते है और रुपये-पैसेसे सहायता करते है उससे मै यही निष्कर्ष निकालता हूँ कि जो-कुछ कार्य मै इस समय कर रहा हूँ आप उसके साथ है, अर्थात् आज यही सनातन-धर्म बन गया है। आज मै करीब-करीब डेढ लाख लोगोसे मिल चुका हूँ। क्या वे सब सुधारक है? नही, वे सनातनी है और आज वे यही कार्य कर रहे है। आज यदि आप अस्पृश्यता-निवारणके इस कार्यमे स्वेच्छासे भाग नही लेगे तो कल यही काम आपको अनिच्छासे करना होगा। क्या आप समझते है कि जब हमारे यहाँ एक सार्वजनिक सत्ता कायम हो जायेगी तो फिर क्या हरिजन भाइयोको मदरसेमे नही जाने देगे, या अन्य अधिकारोसे रोक देगे? एक समय था जब लोग रेलमे उनके साथ नही जाते थे, पर अब क्यो जाते है? इसी तरह मिल-मालिकोसे मै पूछूँ कि क्या वे अस्पृश्योको नही छूते है? छूते तो है पर यह सब आर्थिक लाभके लिए। पर इसमे तो धर्म है नही। मै कहता हूँ कि जो काम आप अर्थलाभके लिए जबरदस्ती करते है, उसे आप स्वेच्छासे धर्म समझकर क्यो न करे?

नगरपालिकाकी ओरसे जो मानपत्र मुझे दिया गया है उसमे कहा गया है कि मन्दिर-प्रवेशके लिए कानून बनानेकी चेष्टा हमे छोड देनी चाहिए, क्योकि बहुत-से भाई जानते है कि धर्ममे कानूनका हस्तक्षेप ठीक नही है। मै इन भाइयोसे कहना चाहता हूँ कि मन्दिरमे यदि पाठ-पूजाके लिए हम जाते है तो वहाँ हरिजनोको जानेका भी उतना ही अधिकार है। पर कानूनका जो मसविदा पेश किया गया है उसमे जोर-जबरदस्तीकी तो कोई बात ही नही है। उलटे आज कानूनमे जो जोर-जबरदस्ती है उसे मिटानेके लिए वह है। धर्ममे कानूनी हस्तक्षेप तो मै खुद नही चाहता, पर इन विधेयकोसे धर्ममे हस्तक्षेप कहाँ होता है? यदि कोई वकील इसे सावित कर दे तो मै इसका त्याग कर दूँगा, पर मै जानता हूँ कि बात ऐसी है नही और आखिर किसी जमानेमे मै भी तो वकील था। वकील भाई कहते है कि आज तो यदि जनता किसी मन्दिरको हरिजन भाइयोके लिए खोलना चाहे और ट्रस्टियोका बहुमत भी इसके पक्षमे हो, पर यदि एक भी ट्रस्टी विरुद्ध हो तो मन्दिर नही खुल सकता। कानूनमे स्वतन्त्र निर्णयकी सुविधा नही है, इसलिए जोर-जबरदस्तीकी बात है। उस

मजबूरीको दूर कर देना ही इसका उद्देश्य है। कानूनमे जो दोष है वह तो कानूनसे ही मिट सकता है, दूसरा कोई उपाय उसके लिए है नही। धर्ममे हस्तक्षेप तो तब होता, जब उसमे कानूनन सब मन्दिरोको खोलनेकी बात होती। पर वैसी तो कोई बात है नही। इसमे तो कोई जबर्दस्ती नही है। जब ट्रस्टी या जनता चाहे तभी मन्दिर खुल सकते है। वे न चाहे तो कोई जबर्दस्ती नही है। हिन्दू समाजके नामपर बम्बईके सम्मेलनमे हिन्दू नेताओने हरिजनोको देव-दर्शनका अधिकार दिलानेकी प्रतिज्ञा की थी। पर प्रतिज्ञा-पालनमे कानूनकी जो रुकावट है उसे कानून द्वारा ही दूर करना है। बस, इस विधेयकका इतना ही मतलब है। इससे धर्ममे कानूनी हस्तक्षेप नही होता। अब नगरपालिकाके सदस्य मेरी बातोपर विचार करे।

आज जब मै हरिजन भाइयोके पास गया, तब उन्होने कई शिकायते की और पूछा कि जो लोग हरिजनोके सेवक बनते है उन्हे क्या आप सच्चा हरिजन-सेवक मानते है? मैने कहा कि मुझे यहाँके लोगोका ज्ञान तो नही है, पर यह नही कहा जा सकता कि हर-एक आन्दोलनमे जितने लोग आ जाते है वे सब अच्छे और सच्चे ही होते है। उन्होने जो शिकायते की उनसे मालूम हुआ कि मलकापुरमे हरिजनोको पाखानेमे नही जाने दिया जाता। यदि यह बात सच है तो कैसा अन्याय है कि पाखाने साफ तो वे करे पर स्वय उनका कुछ भी उपयोग न कर सके। यदि कल वे सफाईका काम छोड दे तो आप क्या कर सकते है? सवर्ण हिन्दुओमे तो इतना भी सगठन नही है कि वे एक-दूसरेकी सफाई कर ले। इस तरहके व्यवहारसे कुछ लाभ नही होना है। इसी तरह मोनार नामक जगहके सम्बन्धमे भी उन्होने शिकायत की। वहाँसे जो पानी निकलता है उसमे सब स्नान करते है, पर हरिजन भाइयोके लिए उस पानीसे स्नान करनेकी मनाही है। वे केवल हमारे नहाये हुए मैले पानीसे ही स्नान कर सकते है। मै नही कह सकता कि यह बात कहाँतक सच है, पर यदि सच है तो बडे शर्मकी बात है। यह पानी तो पशुओके लिए भी ठीक नही है। पशुओको भी हम साफ पानीसे नहलाते है। फिर क्या ये हरिजन भाई पशुओसे भी गये बीते है? उन्होने ऐसा क्या गुनाह किया है और अगर किया भी है तो गुनहगारोके साथ भी क्या ऐसा ही व्यवहार होता है? यह तो हमारा अत्याचार है। हमने अधर्मको धर्म बना लिया है। राजपूतानेसे जो दु खद सूचना मिली उसे भी यहाँ बता दूँ। और वह यह है कि जहाँ पशु पानी पीते है उसीमे ही हरिजन भाई भी पी लेते है। यदि यही हमारा धर्म है तो उसका नाश होनेवाला है। जहाँ ऐसी घृणा है, ऐसा द्वेष है वहाँ तो नाश अवश्यम्भावी है। यदि हम इसे शास्त्र-सम्मत माने और यह कहे कि यही हिन्दू-धर्म है तो मै कहूँगा कि यह सार्वजनिक अनुभवके बिलकुल विपरीत है और वह ज्यादा टिक नही सकता। हम अपनेको धोखा दे सकते है, दूसरोको भी धोखा दे सकते है, पर ईश्वरको धोखा नही दे सकते। अनुभव और अध्ययनके आधारपर हिन्दू-धर्मको जिस रूपमे मै जान सका हूँ उसमे अस्पृश्यताके वर्तमान रूपको बिलकुल स्थान नही है और इसीलिए मैने प्रतिज्ञा की कि भले प्राण चले जाये, पर अस्पृश्यताको तो निर्मूल करना ही है। मेरी नाकसे २४ घटेमे जो साँस निकलता है वह यही कहता है कि अस्पृश्यता मिटा दो। हरिजनोकी सेवा तो

उनका सेवक बनकर ही हो सकती है, हमे हरिजनोका सरदार नही, उनका सेवक बनना है। मैने आपसे यह नही कहा कि उनके साथ बैठकर खाओ, यद्यपि अपने लिए तो मेरा यह नियम है कि स्वच्छतापूर्वक बनाया गया भोजन जैसा मै खाता हूँ वैसा यदि मुझे खानेके लिए मिले तो कही भी खा लूँगा। पर आपसे तो मै यही कहता हूँ कि यह जो आपने हरिजन भाइयोको तुच्छ समझकर हटा दिया है, वह भूल की है।

सन्त कबीरने और दूसरे सन्तोने भी कहा है कि ईश्वर उसके पास रहता है जिसे दुनिया त्याग देती है। जब दुनिया त्याग देती है तब ईश्वर आता है। ऐसे दृष्टान्त तो सभी धर्मोमे मिलते है। हजरत उमरके जमानेकी मुझे एक बात याद आती है कि जब उनके एक सरदारने ५,००० अशर्फियाँ उन्हे भेजी, उसे देखकर वह रोने लगे। जब बीबीने पूछा — क्यो रोते हो? तब बोले — "आजतक ईश्वर मेरे यहाँ था, आज दुनिया मेरे पास आ गई है।" तो इन हरिजन भाइयोको आपने त्याग दिया है, पर ईश्वर तो सचमुच उन्हीके यहाँ है। इसलिए आपके अन्दर जो घृणाका यह भाव आ गया है, उसे दूर कर दे।

कई भाइयोको यह कहते सुना है कि पूर्व-जन्ममे जिसने जैसा किया वैसा ही फल भोग रहा हे। पर यह कहना तो अनुचित है, अधर्म है। इसमे अहकार है। जब हमारे माता-पिता, स्त्री-बच्चे कष्टमे होते है तब क्या हम यह कहकर उनकी उपेक्षा करते है कि यह पूर्व-जन्मके कियेका फल है? तब तो हम उनकी सेवा करते है। फिर दूसरोके प्रति ऐसी उपेक्षा क्यो? पूर्व-जन्मको मै भी मानता हूँ, पर उसका ऐसा प्रयोग नही किया जा सकता। ऐसी बात तो हम अपने ही लिए कह सकते है। दूसरोको कष्टमे देखकर उनकी उपेक्षा करना और हँसी उडाना तथा यह कहना कि तुमने पूर्व-जन्ममे जो किया है उसे भोगो, ईश्वरको, जिसे हम दयासागर और न्यायसागर कहते है, राक्षस बना देना है। ऐसा पूर्व-जन्म मै नही मानता। इसलिए मेरी आपसे विनय है कि मेरी बातपर गौर करके देखे और समझमे आये तो यह घृणाका, उपेक्षाका, ऊँच-नीचका भाव छोड दे। यदि आप स्वय उसे उचित समझते हो लेकिन जनताका भय हो, तो जनता तो यही है। सच पूछे तो यह आपके दिलका भय है। इस भयको आप निकाल दे और घृणाका भाव छोड दे तो अस्पृश्यताका कलक हिन्दू-धर्मसे मिट जायेगा और हम सबका भला होगा।

मै जहाँ जाता हूँ वहाँ आप मुझे पैसे देते है। यह पैसा देना भी हरिजन-कार्यमे सहायता करना है, पर पैसा आप इस तरह न दे कि १० रुपये है तो उसमे से दो इस तरह उठाकर फेक दिये कि चलो आखिर इतने कामोमे पैसे खर्च तो होते ही है, इसमे भी सही। नही, चाहे आप एक पैसा दे पर हृदयसे दे, प्रेमसे दे, अपनी जरूरतमे से निकाल कर दे। इस तरह जो एक पैसा देता है वह हजार पैसे कमा लेता है, इसलिए इसे पुण्यका कार्य समझ कर जितना हो सके, इसमे आप सहायता दे।

हरिजन-सेवक, ८-१२-१९३३

२६९. तार : श्रीकृष्ण चाँदीवालाको

अकोला
१८ नवम्बर, १९३३

श्रीकृष्ण[१]
कटरा खुशाल
दिल्ली

ईश्वर का धन्यवाद। आशीर्वाद। सोमवारतक चिखलदामे हूँ।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २४०१) से।

२७०. बातचीत : स्वामी लालनाथसे

१८ नवम्बर, १९३३

[स्वामी] ने कहा कि मै चाहता हूँ कि आप (गांधीजी) अपनी यात्रा बन्द कर दें या विधेयकोके बारेमे बात करना बन्द कर दें, और यही कारण है कि मै सत्याग्रह कर रहा हूँ और आपके ही तरीकेसे आपको जवाब दे रहा हूँ।[२]

लेकिन यह तो सत्याग्रह नही है, बल्कि उसको नकारना है। आप चाहते है कि या तो मैं पुलिससे आपको गिरफ्तार करवा दूं या आप लोगोके शरीरपर से मोटर ले जाऊँ। मै इन दोनोमे से एक भी चीज नही करूँगा। मै पैदल जाऊँगा। तब शायद आप मेरे पैर पकड लेगे और मुझे अपना बन्दी बना लेगे।

हाँ, मै आपके पैर पकड़ लूँगा और आपसे अनुरोध करूँगा कि यह यात्रा समाप्त कर दे।

यह तो निश्चय ही हिसा होगी।

हम लोगोंका जो इरादा है, उसे मै आपसे नहीं छिपा सकता। हम चाहते हैं कि पुलिस या आपके स्वयसेवक लोग हमें चोट पहुँचायें। ऐसा होनेपर मै जानता हूँ कि आप अपना दौरा रद्द कर देगे।

लेकिन मै आपको बता चुका हूँ कि मै पुलिस नही बुलाऊँगा और स्वयसेवकोको आपपर आघात नही करने दूंगा।

१. ब्रजकृष्ण चाँदीवालाके भाई। ब्रजकृष्णजी उस समय सख्त बीमार थे, देखिए "पत्र : वल्लभभाई पटेलको", २१-१०-१९३३ तथा "पत्र मथुरादास त्रिकमजीको", १५-११-१९३३ और "पत्र वल्लभभाई पटेलको", ४-१२-१९३३ तथा "पत्र : कस्तूरबा गाधीको", ७-१२-१९३३।

२ स्वामी लालनाथने धमनगाँव और अमरावतीमें गाधीजीकी मोटर-कारके सामने लेटकर उनकी यात्राको रोकनेका विफल प्रयत्न किया था।

तब हमें आपका रास्ता रोके रखना पड़ेगा।

आप बड़े ही अविवेकी है। सत्याग्रहीको अविवेकी नही होना चाहिए। आप चाहते है कि जनताको हिंसा करनेके लिए उत्तेजित करें। सत्याग्रही कभी किसीको गलत काम करनेके लिए प्रलोभित नही करता, विशेष रूपसे धार्मिक मामलोमें। ससारकी कोई शक्ति मुझे मेरे विश्वासके विरुद्ध काम करनेके लिए मजबूर नही कर सकती।

तब आप हमें कोई बेहतर रास्ता सुझाइए।

यह मै निश्चय ही कर सकता हूँ। आपको बनारस जाना चाहिए और भगवान विश्वनाथसे कहना चाहिए कि वह मुझे गलत कामोसे विमुख करे। मैने जिस प्रकार उपवास किया था वैसे ही आपको भी करना चाहिए।

ऐसा करनेकी हमारे अन्दर सामर्थ्य नही है।

तब मुझे बहुत दुख है। मुझे यह अशोभनीय चक्कर पसन्द नही है। आपको अपने सलाहकारोके पास जाकर उनसे कहना चाहिए कि वे मुझे तर्क करके या ईश्वरसे प्रार्थना करके इस पथसे विमुख करे। यदि वे ऐसा नही कर सकते तो जो कुछ मै कर रहा हूँ उसको उन्हे सहन करना चाहिए, वैसे ही जैसे मै उनके विरोधको सहन करता हूँ। आप देख सकते है कि जो हजारो लोग मेरा भाषण सुनने आते है, मै केवल उनके सामने [अस्पृश्यताकी] बुराई समझाता हूँ।[1]

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १-१२-१९३३

२७१. भाषण : अकोलामें

१८ नवम्बर, १९३३

आजके मुख्य विषयपर आनेसे पहले, यहाँ आनेमे मुझे जो देर हुई उसके बारेमे कहना आवश्यक है। बनारससे आये कुछ लोग मेरे पीछे-पीछे चलते है। उनमे एक स्वामी है। यो घूमनेका उन्हे अधिकार है। मेरे दौरेका कार्यक्रम इतनी तेजीसे चलता है कि वे सब कही तो मेरे साथ नही आ सकते लेकिन जहाँ आ सकते है वहाँ वे आते है। मै जिस मोटरमे जाता हूँ वे उसके रास्तेमे आकर लेट जाते है। स्वयसेवक इन्हे उठा लेते है और मोटर आगे बढ जाती है। ये भाई किसी को गाली नही देते, मारपीट नही करते और मेरा विश्वास है कि स्वयसेवक इनसे मारपीट नही करते। आज भी वे दरवाजेपर आये। इससे मुझे दुख हुआ। दुख तो मुझे हमेशा होता था कि जो सनातन धर्मके नामपर आते है उनमे सभ्यता क्यो नही है? इन्हे उठाकर चलना मुझे अच्छा नही लगता था। इसलिए मैने इनके नेता स्वामीको बुलवाया और उसे समझानेकी कोशिश की।[2] इसीसे यहाँ आनेमे देर हुई। मैने स्वामीसे कहा

१ देखिए अगला शीर्षक भी।
२ देखिए पिछला शीर्षक।

कि जो लोग धर्मकी रक्षा करनेका दावा करते है उनके लिए ऐसा करना उचित नही है। आधुनिक सत्याग्रह-शास्त्रके प्रणेताके रूपमे मै आपसे कहता हूँ कि इसमे सत्याग्रह नही है। आप ऐसा व्यवहार करते-करते स्वय थक जायेगे। यदि मुझे पकडेगे, मारेगे, गाली देगे तो मै उसका उत्तर गालीसे नही दूँगा अपितु स्नेहभावसे सब कुछ सह लूँगा। आप मोटरको अटकायेगे तो मै पैदल चलूँगा। तब स्वामीने कहा कि हम आपके पाँव पकड लेगे और आपको हमारे शरीरपर चलकर जाना पडेगा। मैने कहा, मै यह भी नही करूँगा, और पुलिसकी मदद भी नही लूँगा। ऐसा करना मुझे शोभा भी नही देगा। यदि मुझे भय हो तो मै पुलिसकी मदद लूँ, लेकिन मुझे भय तो है ही नही। इस जीवनमे मै मारपीट भी सह चुका हूँ फिर भी मैने कभी पुलिसकी मदद नही ली, तो क्या अब अपनी उत्तरावस्थामे धर्म-कार्य करते हुए क्या मै पुलिसकी मदद लूँगा? इसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे रास्ता दे। आपको समझना चाहिए कि सनातन धर्ममे — हिन्दू-धर्ममे — हर तरहके मत व्यक्त करनेकी छूट है। आखिरकार स्वामी बाहर गया और अपने साथियोसे मिल आनेके बाद उसने मुझसे कहा कि आज तो आप दूसरे रास्तेसे चले जाइए, वहाँ हम आपको नही रोकेगे और हमारी बात भी रह जायेगी। मैने इसे स्वीकार किया और दूसरे रास्तेसे निकलकर आया।

स्वामीके साथ जो आये है वे उत्साही नवयुवक है। इन्हे किसीने गलतफहमीमे डाल दिया है कि मै सनातन धर्मका नाश कर रहा हूँ। वे मानते है कि मेरा कथन शास्त्र-सम्मत नही है। ऐसा माननेका उन्हे अधिकार है। मै यदि भूलपर हूँ तो मुझे समझानेके लिए भले वे तपस्या करे। हिन्दू-धर्मका तो यह मार्ग ही है, इसमे सभ्यता है। लेकिन इनके असभ्य व्यवहारसे सनातन धर्मकी निन्दा हो, यह मुझे अच्छा नही लगता। इसलिए जो लोग सनातन धर्मके नामपर मेरा विरोध करते है उनसे मै कहना चाहूँगा कि आप लोग मेरी बुद्धिको, मेरे हृदयको छूकर मुझे रोक सकेगे, जोर-जबरदस्ती अथवा अविनयसे नही रोक सकेगे। मै तो प्रतिज्ञाबद्ध मनुष्य हूँ। जीवनके उत्तरार्द्धमे मैने जो प्रतिज्ञा ली है उसका पालन करना मेरा धर्म है। आप श्रोताजन जब मेरा भाषण सुननेके लिए आते है तब मेरे हृदयमे जो वस्तु है वह मै आपको सुनाता हूँ। इसके अनुसार आचरण करना न करना आपके हाथकी बात है। आप उसके अनुरूप आचरण करेगे अथवा नही सो तो ईश्वर ही जाने, मै तो उसे देखने नही आनेवाला हूँ।

आज सवेरे मेरा विरोध करनेवाले कितने ही लोग, जिस राहसे होकर मै आया हूँ उस राहपर काले झण्डे लेकर खडे थे। इनके प्रति रोष न कर प्रेमभाव रखना मेरा धर्म है। मै अनुचित कार्य कर रहा हूँ ऐसा यदि वे मानते है तो वे काले झण्डोसे मेरा स्वागत कर सकते है। हरिजन सेवकके लिए स्तुति और निन्दा एक समान होने चाहिए। यह नियम कोई मुझ अकेलेके लिए नही है अपितु समस्त ससारमे जो लोग सार्वजनिक जीवनमे कार्य कर रहे है उन सबके लिए है। जो ऐसा नही करते वे मनसे दुखी होते है। मै इस तरह क्योकर दु खी होऊँ? कोई काला झण्डा

फहराये अथवा सफेद झण्डा, उससे मुझे क्या? मेरा कार्य ही मेरी सच्ची स्तुति अथवा निन्दाके लिए पर्याप्त है।

मैने सुना है कि सनातनियोने आज मेरा पुतला भी जलाया है। मेरे करोडो पुतले जले तो भी मुझे क्या? हाँ, इसपर जो थोडा पैसा बरबाद होता है उसका मुझे दुख होता है, लेकिन उससे मेरा कोई नुकसान नही होनेवाला है। जनताको यदि मेरी बात पसन्द न आये, वह उसे छोड दे तो मै जनतापर बलात्कार नही कर सकता। मै बलात् उन्हे अपनी बात नही सुना सकता। यह मेरा रास्ता नही। मेरा रास्ता तो सीधा है (यहाँपर किसीने कहा कि मजिस्ट्रेटने पुतला नही जलाने दिया)। सरकारने नही जलाने दिया तो भी जिन लोगोने जलानेकी इच्छा की [मनसे तो] उन्होने जला ही दिया। किसी स्त्रीपर यदि मैने बुरी नजर डाली तो उतने भरसे व्यभिचार तो हो ही गया। यदि किसी कारणवश मै अपने कुविचारपर अमल नही कर सका तो इससे ईश्वर मुझे क्षमा थोडे ही करनेवाला है। वह तो कहेगा "दुष्कर्मको रोका तो मैने ही। तू तो कर ही चुका था।" इस प्रकार यदि ये भाई मेरा पुतला नही जला सके तो उससे क्या? उनके मनसे तो वह जलानेके समान ही है। उन्होने उसे भले ही जला दिया लेकिन धर्मकी खातिर मै इतना अवश्य कहूँगा कि यदि उन्होने न जलाया होता तो ठीक होता।

सनातनियोने एक पुस्तिका प्रकाशित की है जिसमे उन्होने कहा है कि स्वयसेवकोने भी उन्हे मारापीटा। स्वयसेवकोने यदि ऐसा किया हो तो यह बुरी बात है। मै यह बात सहन नही कर सकता। जो लोग मेरी रक्षा करना चाहते है वे किसीको गाली दे, तू-तडाक करे, मारपीट करे तो यह मुझे अच्छा नही लगता। बियाणजी[1] का कहना है कि स्वयसेवकोने ऐसा कुछ नही किया। मै तो स्वयसेवकोको सावधान करना चाहता हूँ। सनातनी भाइयोको यह बात कदाचित् बुरी लगती होगी कि सभाओमे इतने ज्यादा लोग कैसे चले आते है? वे कदाचित् उन्हे रोकनेका प्रयत्न करेगे। वैसा करनेका उन्हे पूरा अधिकार है। इसके लिए कोई रोकटोक नही करे अपितु उन्हे विनयपूर्वक समझाये। वे न समझे तो वे जो चाहे सो करने दे। पुलिसको खबर न दे। मेरी रक्षाके लिए कोई कुछ न करे। ईश्वरने तीन-चार बार मुझे इस तरह बचा लिया है। ईश्वर जबतक मुझसे इस देहसे काम लेना चाहेगा तबतक वह मुझे स्वस्थ और सुरक्षित रखेगा। और जब मेरी आयु समाप्त हो जायेगी तब जगतकी कोई शक्ति मुझे जीवित नही रख सकेगी।

आज जो कार्य चल रहा है उसके द्वारा हिन्दू समाजकी परीक्षा हो रही है, इस बारेमे आप तनिक भी सन्देह न करना। सारा ससार देख रहा है कि हिन्दू-धर्मसे अस्पृश्यता रूपी मैल दूर होता है कि नही। और यदि हिन्दुओके दिलमेसे अस्पृश्यता दूर हो जाये तो हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी सबमे परस्पर स्नेहभाव स्थापित हो जाये। अस्पृश्यताके हजार मुँह है। वह हजारो और लाखो हाथ फैलाये हुए है। जिन्हे हम विधर्मी मानते है उनके पास भी यह अस्पृश्यता पहुँच गई है। इसे मै

१ ब्रजलाल बियाणी, विदर्भ काग्रेस कमेटीके अध्यक्ष तथा बादमें मध्य प्रदेश मन्त्रिमण्डलमें अर्थ-मन्त्री।

धर्म नही मानता। हिन्दू-धर्ममे द्वेषको, तिरस्कारको स्थान ही नही है। कितने ही शास्त्रियोने मुझसे कहा है कि आज जैसी अस्पृश्यता है उसके लिए हिन्दू धर्म-शास्त्रोमे कोई प्रमाण नही, लेकिन यदि हो तो इसे हमे छोडना होगा, अन्यथा हमे यह दावा छोडना पडेगा कि हिन्दू-धर्म अहिसा प्रधान है, और सहिष्णु है। हमारा यह आन्दोलन सारे ससारकी नजरके आगे चल रहा है, कही किसी कोनेमे नही चल रहा। आपका और मेरा धर्म है कि हम जो करे वह सभ्यता, सचाई, शान्ति और विनयपूर्वक करे। सनातनियोसे भी मेरी विनती है कि वे सारा काम सभ्यता, शान्ति सचाई, और नियमके साथ करे। मोटरको रोकनेके प्रयत्नमे मै सभ्यता नही देखता। काले झण्डे दिखाना और पुतले जलाना यदि वे छोड दे तो अच्छा हो। आजकल विरोध प्रकट करनेके एक उपायके रूपमे काले झण्डोका उपयोग होता है। जब सत्याग्रह आन्दोलन चल रहा था उस समय कभी-कभी विरोध व्यक्त करनेके लिए काले झण्डे दिखाये जाते थे। मैने उस बातको पसन्द नही किया था। इसमे सभ्यता नही, इसमे सत्याग्रहका अश नही। सत्याग्रहीका धर्म तो यह हे कि जो व्यक्ति दुश्मन बना है उसके मनको मित्रतासे हर ले और उसका हृदय-परिवर्तन करवाये। सत्याग्रहका नियम हिन्दू-हिन्दूमे भिन्न, हिन्दू-मुसलमानके बीच भिन्न, हिन्दू-अग्रेजके बीच भिन्न है, सो बात नही है। सत्याग्रहका नियम सबके लिए एक समान ही है। इसमे अशान्ति, अविनय और हिसा-द्वेषको स्थान हो ही नही सकता। यदि नियमके अनुसार सनातनी और सुधारक दोनो चले तो हिन्दू-धर्मकी विजय हो, फिर भले अस्पृश्यता रहे या न रहे। अस्पृश्यताके रहते हिन्दू-धर्म जीवित रहे, ऐसा कदापि नही हो सकता। लेकिन यदि दोनो पक्ष सत्यके मार्गपर चले तो अच्छी बात है। यह एक प्रचण्ड आन्दोलन है। इसमे २२ करोड हिन्दुओकी परीक्षा है। हरिजनोकी भी परीक्षा है। पाप सवर्ण हिन्दुओने किया है इसलिए प्रायश्चित्त भी उन्हे ही करना होगा। हरिजन भी हिन्दू ही है, इसीसे कहता हूँ कि उनकी भी परीक्षा हो रही है।

ये जो १०-१२ लोग काशीसे आये है, ये क्या चाहते है सो समझने योग्य बात है। ये कहते है कि आप भले ही अस्पृश्यता-निवारणका काम करे, भले ही मन्दिर-प्रवेशका काम भी करे, लेकिन मन्दिर-प्रवेश और अस्पृश्यता-निवारण सम्बन्धी जो विधेयक विधान-सभाके समक्ष रखे हुए है उनके बारेमे लोगोको नही समझाये। उन्हे पास करवानेकी कोशिश न करे। अन्य लोगोका भी यह कहना है कि कानूनसे धर्ममे हस्तक्षेप होता है। यह बात मै दो-तीन दिनोसे सुन रहा हूँ। यथाशक्ति इसका मैने उत्तर भी दिया है। हम प्रतिज्ञासे बँधे हुए है। गत वर्ष सितम्बरमे बम्बईमे हिन्दुओके प्रतिनिधियोने मालवीयजी महाराजके नेतृत्वमे यह प्रतिज्ञा की है। इस प्रतिज्ञाका मूल मसविदा मैने तैयार किया था। मैने जो मसविदा दिया था लगभग उसी रूपमे प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। मैने डॉ० अम्बेडकर और रावबहादुर राजाको वचन दिया कि हिन्दू समाज इस धर्मका पालन करेगा इसके लिए आपको मै अपने शरीरकी साक्षी देता हूँ। इसलिए मेरा कर्त्तव्य है कि मै सवर्ण हिन्दुओको इस प्रतिज्ञाका पालन करनेके लिए समझाऊँ। इस प्रतिज्ञामे मन्दिर-प्रवेशकी बात आती है, कानूनी मददकी

वात भी आती है। मन्दिर-प्रवेश विधेयक निर्दोष है। और फिर मेरे कहने-भरसे यह थोडे ही पास होनेवाला है। मेरे कहनेसे ही अगर इमे पास होना होता तो यह कबका हो गया होता। इनमें से एक विधेयक लोकमत पुष्ट करनेके लिए बनाया गया है। इसे पास करवानेके लिए आन्दोलन करना आपका और मेरा कर्त्तव्य है। यह विधेयक कानूनी हस्तक्षेपको दूर करता है। जो मन्दिर अमुक परिस्थितियोमे हरिजनोके लिए आज नही खुल सकते यह विधेयक उन मन्दिरोके खोले जानेकी अनुमति प्रदान करता है। आज तो स्थिति यह है कि यदि बहुत सारे लोग हरिजनोके लिए मन्दिर खोले जानेके पक्षमे हो तो भी एक व्यक्ति उसे रुकवा सकता है। इस स्थितिको दूर करनेके लिए ही यह विधेयक है। इसमे किसीपर जोर-जबरदस्ती करनेकी कोई बात नही है। हरिजनोके मन्दिर जानेसे मूर्ति अपवित्र हो जाती है, ऐसा जो लोग मानते है वे भले ही उस मन्दिरमे न जाये। लेकिन बडी सख्या ऐसे लोगोकी है जो मानते है कि हरिजनोके प्रवेश बिना मूर्तिमे देवताका वास ही नही होता। ऐसा जो मानते है वे क्या करे? वे यदि कानूनी बाधाको दूर नही करवाते तो उससे उनकी प्रतिज्ञा भग होती है। इस विधेयकसे किसीको कोई हानि नही है, इसमे बलात्कार की बू तक नही है।

दूसरा विधेयक धार्मिक अस्पृश्यतासे ताल्लुक नही रखता। वह केवल इतना ही कहता है कि कानूनमे, अदालतमे अस्पृश्यताका कोई स्थान नही है। हम एक ओर तो चाहते है कि कानून धर्ममे हस्तक्षेप न करे तथा दूसरी ओर दीवानी कानूनमे अस्पृश्यताके स्थानको बनवाये रखना चाहते है। ऐसा कैसे हो सकता है? आज कानूनमे अस्पृश्यताको स्थान है, ऐसा लोगोका कहना है। यदि दोनो विधेयक पास हो जाये तो इससे कोई अस्पृश्यता दूर हो जानेवाली नही है। अस्पृश्यता-निवारणके लिए तो सवर्ण हिन्दुओका हृदय-परिवर्तन करवाना होगा। इन विधेयकोसे तो अस्पृश्यता दूर करनेवालेकी और अस्पृश्यकी रक्षा होती है जो आज उन्हे उपलब्ध नही है।

अस्पृश्यताको यदि आज हम स्वेच्छासे दूर नही करते तो कल हमे जबरदस्ती ऐसा करना पडेगा। हरिजनोको हमने स्वेच्छासे रेलगाडीमे नही बैठने दिया, आज वे बलपूर्वक बैठते है। मिलमे हम उन्हे बलात् स्वार्थवश होकर रखते है। दबावमे आकर किये गये कार्यमे पुण्य नही है।

आज हम जो उनके कन्धोपर चढ बैठे है हमे वहाँसे उतर जाना चाहिए। उनको न्याय प्रदान करनेकी खातिर मै आपसे धन माँगता हूँ। हरिजन जिन घरोमे रहते है उन घरोमे आप और मै नही रहना चाहेगे। वे शौच-सम्बन्धी नियमोका पालन नही कर सकते, क्योकि उसके लिए उनके पास सुविधा नही है। वे निरक्षर है। उनकी इन असुविधाओको दूर करनेका कार्य पैसेके बिना नही हो सकता, इसीसे मै आपसे धन माँगता हूँ। आप मुझे कजूसीसे न दे। हम नाटक-थियेटरमे पैसा खर्च करते है यह बात उस तरह पैसा खर्च करनेकी नही है। यह तो त्यागकी, बलिदानकी बात है। आप यदि त्याग-बुद्धिसे देगे तो मै समझूँगा कि आपने कुछ दिया है। त्यागकी भावनासे दी गई एक कौडी भी पर्याप्त होगी, कजूसीसे दिये गये रुपयेकी भी कोई कीमत नही। हरिजन-सेवाका कार्य अन्तत ईश्वरका कार्य है, लेकिन ईश्वर

मनुष्यकी मार्फत ही तो काम लेता है। जो मनुष्य ईश्वरको साक्षी मानकर, उससे डरकर चलता है, उसीके द्वारा ईश्वर अपना काम लेता है। केवल आपके धनसे हरिजनका पेट भरनेवाला नही है। आपका दान इस कार्यके प्रति सहानुभूतिके रूपमे होना चाहिए। श्रीमती दुर्गाबाईने सवेरे सोनेकी चूडी और चाँदीका लोटा व प्याला मेरे सामने रखते हुए कहा कि "ये मेरी प्रिय वस्तुएँ थी। मैने इन्हे सँभालकर रखा था, ये आज मै हरिजन सेवाके लिए देती हूँ।" मै सब हरिजन भाई-बहनोसे ऐसे त्यागकी अपेक्षा रखता हूँ।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, ३-१२-१९३३

२७२. पत्र : गोरधनभाई पटेलको

[१९ नवम्बर, १९३३][1]

प्रिय गोरधनभाई,

मणिबहनने लिखा है कि विट्ठलभाईके दाह-सस्कारके समय मै बम्बई नही आया, इसका आपको दुख हुआ। एक तरहसे यह बात मुझे अच्छी लगती है। आपका दुख इस बातका परिचायक है कि आप मुझे परिवारका एक सदस्य मानते है। ऐसा माननेका आपको अधिकार है। लेकिन यदि आप मुझे परिवारका सदस्य मानते है तो जहाँ मेरा कार्य आपकी समझमे न आये वहाँ मुझसे पूछना चाहिए। विट्ठलभाई और मेरे बीच जो मतभेद था उसका मेरे न आनेके साथ कोई भी सम्बन्ध नही है। मेरे न आनेका कारण तो मेरी आजकी परिस्थिति ही थी। मै केवल हरिजन-कार्यके लिए ही जेलसे बाहर रहा हूँ। यह कार्यक्रम पहले ही तय हो चुका था। मै किसी ऐसे किसी सरकारी अकुशको माननेके लिए तैयार नही हूँ जो सहन करने योग्य न हो। दूसरी तरहसे भी मुझे लगा कि मेरा वहाँ कोई उपयोग नही है। मृत्युके पश्चातकी उत्तर क्रियाओके सम्बन्धमे जो मेरे विचार है उनको देखते हुए भी मेरा वहाँ कोई उपयोग न था। इसलिए जिस दृष्टिसे भी विचार करे मेरा वहाँ आना जरूरी न था। इतना ही नही बल्कि अनुचित भी था। जो थोडा-कुछ हुआ मै तो उसे भी नही होने देता। आपको तो मेरा केवल इतना ही बताना पर्याप्त होना चाहिए कि विट्ठलभाईके साथ मेरे जो मतभेद थे वे इसमे तनिक भी कारणभूत न थे। आप शायद नही जानते कि उनकी बीमारीकी खबर पाते ही मैने उन्हे पत्र लिखा था और उसका उन्होने एक लम्बा और मधुर उत्तर भी दिया था। जब बीमारी बहुत ज्यादा बढ गई तब मैने तार भी दिया था। उसका भी मुझे उत्तर मिला था। और फिर उन्होने मुझे जानकारी देते रहनेके लिए आपको भी लिखा था। आपके तारको मै (अहमदाबाद)के मिल-मालिकके सचिव गोरधनभाईका तार समझा था

१ देखिए "पत्र डाह्याभाई पटेलको", १९-११-१९३३।

और उन्हे धन्यवाद-पत्र भी लिखा था। उन्होने खबर दी थी कि तार भेजनेवाले वे न थे। मुझे उम्मीद है कि इस खुलासेसे आपका समाधान होगा। यदि न हो पाये तो फिर लिखे।

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ४ : मणिबहेन पटेलने, पृष्ठ १५६-७

२७३. पत्र : मणिबहन पटेलको

[चिखलदा]
१९ नवम्बर, १९३३

चि० मणि,

तू अपने और कुटुम्बियोके विचारोको मेरे आगे उँडेल रही है, यह बहुत समझदारीकी बात है। डाह्याभाई अथवा गोरधनभाईके मनमे मेरे प्रति लेशमात्र भी गलतफहमी हो तो यह मेरे लिए असह्य है। यदि तू बम्बईमे हुई तब तो मैंने गोरधनभाईको जो पत्र लिखा है[1] उसे तू पढेगी ही। उसे पढनेके बाद यदि तुझे कुछ कहना हो तो मुझे लिखना।

मेरा पत्र तो तुझे मिला ही होगा। मै अखबारोमे कुछ लिखनेकी जरूरत नही समझता। अखबारवाले मुझे न समझ पाये अथवा जान-बूझकर मेरे बारेमे गलतफहमी फैलाये तो मै उसका जवाब देनेकी जरूरत हमेशा महसूस नही करता। लेकिन यदि तुम दोनो भाई-बहन ऐसा चाहो तो मै अवश्य दूँगा। मेरी स्थिति बिलकुल साफ है। डाह्याभाई जो कहता है वह बिलकुल सच है। [चित्तरजन] दास आदिके चरित्रमे दोष अवश्य बताया जा सकता है। दोष बिना [इस ससार]मे कौन है? लेकिन मेरे न आनेका विट्ठलभाईके दोषोके साथ कोई सम्बन्ध नही है। जो सम्मान अन्य नेताओको मिला उस सम्मानके विट्ठलभाई भी अवश्य अधिकारी थे। उनका त्याग, उनका धैर्य, उनकी कुशलता काग्रेसके प्रति उनकी वफादारी, ये सब उनमे किसीसे कम न थे।

तेरी खुदकी उदारतासे मै चकित हूँ। लेकिन यह तेरा विशेष गुण है, ऐसा न समझना। मैंने यह गुण असख्य स्त्रियोमे देखा है। स्त्रियाँ अपने प्रति किये गये बुरे व्यवहारको भूल जानेके लिए हमेशा तैयार रहती है। इसी गुणसे स्त्री जातिकी शोभा है। लेकिन इस गुणका दुरुपयोग पुरुष जातिने खूब किया है। लेकिन यह तो विषयान्तर हुआ। तू इस समय मेरी नजरोमे इतनी शोभा पा रही है, इसके लिए मै अपने-आप पर गर्व कर सकता हूँ न?

वर्धाके पतेपर लिखना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ४ : मणिबहेन पटेलने, पृष्ठ ११५-६

१. देखिए पिछला शीर्षक।

२७४. पत्र : डाह्याभाई पटेलको

१९ नवम्बर, १९३३

चि० डाह्याभाई,

तुम्हे मैंने पत्र लिखा है[1] वह मिला होगा। साथमे एक पत्र गोरधनभाईके लिए है। उसे पढकर उन्हे दे देना। यदि तुम्हारा समाधान न हो तो यह न भूलना कि मेरे साथ जूझनेका तुम्हारा धर्म है। बा और मणिके पत्र भी उन्हे पहुँचा देना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – ४ : मणिबहेन पटेलने, पृष्ठ १५६

२७५. पत्र किशन घुमतकरको

असशोधित

स्थायी पता वर्धा
२० नवम्बर, १९३३

प्रिय किशन,

बेचारे बूढे आदमी पर तरस खाओ। जब मै तुमसे कहता हूँ कि मै तुमसे नाराज नही हूँ तो तुम्हे शका क्यो होती है? क्या तुमने मुझे गुस्सा करनेकी कोई बात की है? अब भी मै तुम्हारे खिलाफ ऐसी कोई बात नही जानता जिसमे गुस्सा आये। बूढे लोगोको न समझ सकना तो युवाजनोके लिए स्वाभाविक ही है। तुम यह कैसे समझोगी कि दाँत या स्वास्थ्यके बिना कैसा लगता है या २० वर्षकी अवस्थामे यह कैसे जानोगी कि जब तुम ८० वर्षकी होगी तो तुम्हे स्वय कैसा लगेगा? बूढे लोग इतने रहस्यपूर्ण नही होते कि युवाजन उन्हे समझ ही नही सके। हो सकता है कि वे जडबुद्धि हो। दूसरे लोगोके बारेमे तुम्हारा अनुभव कैसा भी हो, लेकिन मेरे मामलेमे तो वह लागू नही होगा।

क्या ही अच्छा होता कि तुम भी मेरे पास वर्धामे आ जातो। मुझे तो तुम्हे अब भी पाकर खुशी होगी। लेकिन क्या तुम यात्राके इस भारी बोझको सहन कर सकती हो? क्या तुममे लगातार दौडभागको झेलनेकी शारीरिक और मानसिक शक्ति है?[2] धुरधरका क्या कहना है?

१ देखिए "पत्र डाह्याभाई पटेलको", १४-११-१९३३।

२ किशन घुमतकरका स्वास्थ्य थाना जेलमें कैद भुगतनेके बाद खराब हो गया था।

प्रेमाके साथियोंसे जो लोग मिलने जाते हैं उनके जरिये मुझे प्रेमाके बारेमें खबरें तो मिल जाती हैं। लेकिन तुम्हें भी उसके बारेमें जो जानकारी मिले उसे मुझे बताती रहना।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९०६९) से। सी० डब्ल्यू० ९६८८ से भी।

२७६. पत्र : माणेकलाल कोठारीको

२० नवम्बर, १९३३

चि० माणेकलाल,

तुम्हारा लम्बा पत्र मुझे अच्छा लगा है। जितनी सादगी रखोगे उतना अधिक अच्छा है। बालकोंको उद्यमकी आदत डालनेसे वे तन और मन दोनोंसे स्वस्थ रहेंगे।

तुमने देशी राज्यों और अंग्रेजोंके बीच जो तुलना की है वह कुछ अंशोंमें सही है। लेकिन उसका कारण तो यह है कि देशी राज्य स्वयं गुलाम हैं। मालिकके दोष गुलाममें हमेशा दुगने नजर आते हैं। इससे तुम्हें जिस बातका अनुभव हुआ है वह ब्रिटिश राज्यका ही परिणाम है। इसका अर्थ यह नहीं कि पहले देशी राज्य ज्यादा अच्छे हुआ करते थे। लेकिन पहले देशी राज्योंमें जो दोष हुआ करते थे उनका निवारण राजा और प्रजा दोनों मिलकर किया करते थे। आज ऐसा करना लगभग असम्भव हो गया है, क्योंकि मूलमें ही खराबी है।

यन्त्रोंको लानेसे हिन्दुस्तानमें थोड़ेसे लोगोंकी आर्थिक स्थितिमें अवश्य सुधार होगा। लेकिन ३० करोड़ लोगोंको यन्त्र रोजी नहीं दे सकते। उन्हें खेतीके उपरान्त अन्य कुछ धन्धा मिलना चाहिए और वह कताई ही हो सकता है। इससे यदि तुम घरमें खादीका इस्तेमाल करने लग जाओ तो अच्छा होगा। यदि कपड़े पहननेका शौक कम हो जाये तो खादी पुसा सकती है, ऐसा अनेक लोगोंका अनुभव है। तुम सब लोग यदि रोज थोड़े समयके लिए कातो और सूतको बुनवा लो तो तुम्हें कपड़ा बिलकुल सस्ता पड़ेगा। पुरुषोत्तम, जमनादास आदि इस बारेमें तुम्हारी मदद भी कर सकते हैं।

रामदास वर्धामें है। केशु, कृष्णो भी वहीं हैं। मनु राजकोट गई है, क्योंकि कुसुम बीमार है। यह बात कदाचित् तुम्हें मालूम होगी। बा अहमदाबाद गई है।

मेरी तबीयत अच्छी रहती है। 'हरिजनबन्धु' न पढ़ते हो तो अब पढ़ना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्चः]

मुझे वर्धाके पतेपर लिखना।

गुजरातीकी माइक्रोफिलम (एम० एम० यू०/२३) से।

२७७. पत्र : राधाबहन एम० कोठारीको

२० नवम्बर, १९३३

चि० राधा,

माणेकलालको मैंने एक लम्बा पत्र[1] लिखा है इसलिए तुम्हे अधिक नही लिख रहा हूँ। यदि तुम अपनी पूरी सामर्थ्यसे सेवा करोगी तो मैं इतनेसे ही सन्तुष्ट हो जाऊँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२३) से।

२७८. पत्र : कोतवालको

२० नवम्बर, १९३३

भाई कोतवाल,

जो हमे सहज ही प्राप्त हो गया है वह स्वधर्म है। जो व्यक्ति किसी सस्थाका वरण कर चुका है उसे आजके युद्धमे भाग नही लेना चाहिए, ऐसा सामान्य रूपसे कहा जा सकता है। किसीके कहनेसे मनुष्यको अपना धर्म नही सूझता। जो अपने धर्मको जान लेता है वह समस्त ससारका मुकाबला करते हुए भी उसका पालन करता है।

हम किसीके काजी नही बन सकते। अन्तत तो प्रत्येक मामलेपर उसके गुणदोषको देखते हुए विचार करना चाहिए। अतएव स्वतन्त्र रूपसे किसी काल्पनिक समस्याको सुलझानेमे खतरा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३६०४) से।

१. देखिए पिछला शीर्षक।

२७९. पत्र : विद्या आनन्द हिंगोरानीको

२० नवम्बर, १९३३

चि० विद्या,

तु क्यो नहि लिखती है? आनदको कितनी सजा मिली? तुमारी शिक्षा अच्छी होती है? तुमारा पकानेका काम अच्छा चलता है। हारना नहि। अपना पकाया हुआ खानेमे पुण्य है ऐसा समजो। सीनेका सचा मिला? वर्ग चलता है?

महादेव कैसे है?

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च]

कातासे कहो लिखे। दूसरी लडकीयोसे भी कहो।

पत्रकी माइक्रोफिल्म से, सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

२८०. पत्र : धीरू सी० जोशीको

२१ नवम्बर, १९३३

चि० धीरू,

अब रमा पर तेरा गुस्सा उतर गया न?[1] अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखना। मुझे पत्र लिखा करना। तू रमाको लिखे चाहे मुझे अथवा किसी और को, लेकिन तेरी लिखावट अच्छी होनी ही चाहिए। बलभद्रसे कहना कि वह पत्र दे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५३१६) से।

१. देखिए "पत्र धीरू सी० जोशीको", ७-११-१९३३।

२८१. भाषण : मोरसीकी सार्वजनिक सभामें

२१ नवम्बर, १९३३

ये मतभेद[1] वस्तुत अस्पृश्यताके अभिशापका ही एक अग है, क्योकि इनकी पैदाइश ऊँच और नीचकी भावनासे ही होती है। वर्णोंका चौहरा विभाजन कर्त्तव्यो पर आधारित है, अधिकारोपर नही। धर्म कर्तव्योका निर्धारण करता है, अधिकार नही प्रदान करता। जिस समाजमे लोग अपने-अपने हिस्सेमे पडे कर्त्तव्यका पालन करते है, वहाँ कोई ऊँचा या नीचा नही है। एक बार अपने अन्दरसे अस्पृश्यता और उसके साथ ही ऊँच-नीचकी भावनाको निकाल फेकनेके बाद हम देखेगे कि सभी जातियो और धर्मोंमे एक आधारभूत एकता मौजूद है। जातियो और धर्मोंकी भिन्नताके बावजूद हम एक-दूसरेके प्रति सहिष्णुता बरतना और एक-दूसरेका आदर करना सीख जायेंगे और सभी मनुष्योको एक ही ईश्वरकी सन्तान और इसीलिए एक-दूसरेके भाई-बहन मानेंगे। ईश्वर ही सारे जीवोका रचयिता है, इसलिए ईश्वरकी दृष्टिमे सभी जीव समान हैं। मानवजाति एक विराट वृक्षके समान है जिसमे बहुत-सी शाखाएँ और पत्तियाँ है, और इन सभीमे एक ही जीवन-प्राण स्पन्दित होता है। अस्पृश्यता-निवारणमे इस बातकी प्रतीति निहित है कि विविधतामे भी एकता है।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १-१२-१९३३

२८२ पत्र : द० बा० कालेलकरको

ट्रेनमे

२२ नवम्बर, १९३३

चि० काका,

मैंने तुम्हारा उत्तर किशोरलालकी मार्फत भेजा था, आशा है वह तो मिल ही गया होगा। तुमने पहाडीपर चढनेका प्रयत्न किया, वह उचित न था। अभी ताकत तुरन्त नही आयेगी। अब ध्यानसे खाना, पीना और घूमना।

[2] के लडकेको जवाब नही दे सका। पत्रोका अम्बार बढता जा रहा है। दौरेका कार्यक्रम कुछ ऐसा बना है कि मौन-दिवसको और रोज सवेरे ३-४ बजेके बीच जो समय मिलता है वही समय चिट्ठी-पत्री लिखनेको मिल पाता है। [3] के

१. मतभेदोंसे गाधीजीका तात्पर्य स्थानीय ब्राह्मणो और गैर-ब्राह्मणोंके बीच मौजूद कटुतासे था।
२ और ३ नाम नहीं दिये गये है।

लडकेकी अभी कुछ मदद की जा सकती है, ऐसा मै नही देखता। किससे पैसा लिया जाये? [1] की भी समस्या अभी वैसी की वैसी है। उसे अभी तो अपने बलबूते पर ही काम करना होगा। भविष्यमे यदि किसी दिन मुझे शान्तिसे बैठनेका समय मिलेगा तो मै सम्भवत ऐसे लोगोके लिए कुछ कर सकूँगा। लेकिन ऐसा आराम भला मुझे जीते-जी थोडे ही मिलनेवाला है? उसे अलगसे पत्र अवश्य लिखना चाहिए, यदि तुम्हे ऐसा लगे तो जरूर लिखना। मेरे दाँतकी जाँच तो जब हो जाये तभी ठीक। कुहनीके दर्दमे दाँतोका कारण हो सकता है, ऐसा मैने सुना है। लेकिन ऐसी सम्भावना कम ही है, क्योकि मुझे अन्य कोई शिकायत नही है। रक्तचाप तो अब है ही कहाँ? वजन बढता जाता है। १०९ पौड तक तो आ ही गया है।

सोमण[2] का पत्र मुझे भी आया है।

. . [3]

चन्द्रशकरके कार्यसे मुझे पूरा सन्तोष है। स्वास्थ्यको सँभालकर रखनेकी कला उसने अच्छी तरह सीख ली जान पडती है। वह महादेवका अनुकरण ठीक ढगसे कर रहा है। अग्रेजी इतनी अच्छी लिख सकता है, इसकी मुझे खबर न थी। उसने मेरे कामके बोझको काफी कम कर दिया है। वह काममे व्यस्त रहता है।

आशा है, दौरे सम्बन्धी विवरणके लिए तुम 'हरिजन' पढते ही होगे।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९४८०) से, सौजन्य द० बा० कालेलकर

२८३. पत्र : जीवनजी डा० देसाईको

ट्रेनमे
२२ नवम्बर, १९३३

भाई जीवनजी,

प्रस्तावना मेरे ध्यानसे बाहर नही है। रतिलालके बारेमे आपने जो कहा है सो मै समझा हूँ। उसे कुछ कहा जाये ऐसी स्थिति नही है। जैसा नसीबमे होगा वैसा होगा। बाबूराव कुछ कहे तो वह लिखना। पहलीवाली पावर ऑफ एटर्नी यदि रद नही हो सकती तो यह वाली कदाचित् व्यर्थ होगी।

एस० की खबर देते रहना। उसे किसी दिन मिलना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९९३२) से। सी० डब्ल्यू० ९६०७ से भी, सौजन्य जीवनजी डाह्याभाई देसाई

१. नाम नहीं दिया गया है।
२. रामचन्द्र सोमण।
३. यहाँ कुछ पंक्तियाँ छोड़ दी गई है।

२८४. पत्र : प्रभाशंकर पट्टणीको

ट्रेनमे
२२ नवम्बर, १९३३

सुज्ञ भाईश्री,

आपका स्नेहपूर्ण पत्र मिला। श्लोक पढा। प्रभु अच्छे-बुरे सब लोगोकी पीठ पर है, यह जानता हूँ इसलिए स्वस्थ हूँ। यदि वह केवल अच्छे लोगोकी पीठपर ही होता तो मै अवश्य अस्वस्थ महसूस करता। अच्छा तो केवल स्वय वही एक है। यदि मै आपको अपने इस दौरेमे साथ चलनेके लिए राजी कर सकूँ तो आपका शरीर अपने-आप स्वस्थ हो जाये, लेकिन यह तो असम्भव है। उम्मीद है आप 'हरिजन' को एक नजर देख जाते होगे।

रमाबहन[1] मुझे क्यो नही याद करती ?

मोहनदास

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५९३१) से। सी० डब्ल्यू० ३२४७ से भी, सौजन्य महेश पी० पट्टणी

२८५. सन्देश : बरारकी जनताके नाम[2]

२२ नवम्बर, १९३३

महात्माजीने अपने सन्देशमे कहा है कि हरिजनोकी सेवाके लिए मैंने जो आह्वान किया था, उसका बरारकी जनताने असीम अनुकूल उत्तर दिया है। प्रबन्ध बहुत सफल रहा, और यात्रामे सभी सुविधाओंका ध्यान रखा गया था और वह बड़ी सुखद रही।

पूरी यात्राके दौरान होनेवाली सार्वजनिक सभाओमे लोगोकी जैसी भीड देखनेमे आई, वैसी पहले कभी नही देखी गई थी, और इससे मुझे यह आशा होती है कि अस्पृश्यता बहुत तेजीसे समाप्त हो रही है।

[अंग्रेजीसे]
हितवाद, २६-११-१९३३

१. सर प्रभाशंकर पट्टणीकी पत्नी।
२ यह सन्देश **टाइम्स ऑफ इंडिया** के प्रतिनिधिसे भेंट करते हुए दिया गया था।

२८६. पत्र : महादेव देसाईको

असंशोधित

रायपुर
२३ नवम्बर, १९३३

प्रिय महादेव,

प्रात ३ बजे उठनेपर मैंने मीराके नाम तुम्हारा पत्र उस तिपाईपर पडा पाया जिसे हम अपने साथ-साथ रखते है ताकि पैर फैलानेकी जरूरत होनेपर मैं उसका पायदानकी तरह इस्तेमाल कर सकूँ। उसे पूरा पढनेमे मुझे करीब ४० मिनट लगे, और तिसपर भी निर्दिष्ट छन्दोके अनुवादके बारेमे तुम्हारी टिप्पणी पढना अभी शेष है।[1] मूल पाठका जो अनुवाद मैंने किया है उसे पढनेमे और मुझे क्या कहना चाहिए यह सोचनेमे मुझे कमसे-कम बारह घटे लगेगे। और फिर उसको लिखकर प्रकट करनेमे तीन घटे और लगेगे। इतना समय मै इस समय नही दे सकता। फिर यह सवाल है कि क्या मै तुम्हारी मदद कर सकूँगा? मुझे भय है कि नही कर सकूँगा। क्योकि तुम जो कहते हो वह बिलकुल ठीक है। मित्रोको दिखानेके लिए मै अनुवाद करूँ, इस हदतक तो स्वामीकी माँग ठीक थी, लेकिन उसको प्रकाशित करानेकी उसकी माँग मुझे स्वीकार नही करनी चाहिए थी। अनुवाद करते समय भी मैंने इस कार्यके लिए अपनी अयोग्यताका अनुभव तो किया, लेकिन फिर भी उसे मैंने जारी रखा। तुमने जो त्रुटियाँ देखी है वे उसमे है। जो मेरे पास है ही नही वह चीज — यानी पाडित्य — मै कैसे दे सकता हूँ? सस्कृतके अच्छे ज्ञानका अभाव एक बहुत बडी कमजोरी थी। इसका उपाय स्पष्ट है। तुम अपना अनुवाद जारी रखो और उसमे मेरे विचारोको व्यक्त करनेमे जिस हदतक मेरे अनुवादसे मदद मिले, उसकी मदद लो, लेकिन बिलकुल मेरे अनुवादकी ही नकल मत करो। जो तुम्हे स्वीकार्य हो, तुम वैसा ही अर्थ देते हुए अनुवाद करो। जहाँ टिप्पणियाँ व्यर्थ है, वहाँ उनको छोड दो। जहाँ टिप्पणी देना जरूरी हो वहाँ अपनी टिप्पणी दे दो। इतना कर चुकनेके बाद तुम गुजराती अनुवाद ले लो और उसमे जहाँ गलती है वहाँ सुधार दो, जहाँ भाषाको माँजनेकी जरूरत हो वहाँ माँज दो। जहाँ फिरसे लिखनेकी जरूरत हो लिख दो और जहाँ कुछ जोडना हो वहाँ जोड दो। इसके साथ तुम्हारा काम पूरा हो जायेगा। तब फिर जब यह सारा परिणाम मेरे हाथमे आयेगा उस समय मै उसपर काम करूँगा और अपने अर्थको स्पष्ट करनेके खयालसे जहाँ जो परिवर्तन करने होगे, कर दूँगा। यह काम मै आसानीसे कर सकता हूँ।

१. महादेव देसाई **अनासक्तियोग**का अंग्रेजीमें अनुवाद कर रहे थे। देखिए पृष्ठ १०५ की पाद टिप्पणी २।

उसके बाद हम गुजरातीका सशोधित सस्करण निकाल सकते है और तुम्हारा किया हुआ अग्रेजी अनुवाद प्रकाशित कर सकते है।[1] ऐसा करते हुए तुम्हे अपनी टिप्पणियोके बारेमे मेरा विस्तृत उत्तर पानेकी प्रतीक्षा करनेकी जरूरत नही है। मै तुम्हारी टिप्पणियोको मित्रोको दिखाऊँगा, और उनकी राय प्राप्त करके वह सब तुम्हे भेज दूँगा।

तुम्हारे अन्य सब सन्देशोका ध्यान रखा जायेगा।

मुझे खुशी है कि तुम्हे तरह-तरहकी परीक्षाओमे से गुजरना पड रहा है। सिर्फ इतना ही करना कि केवल साहित्यिक काममे ही अपने-आपको न खपा देना। तुम्हे खूब व्यायाम करना चाहिए और शरीरको चुस्त रखना चाहिए। किसी भी हालतमे तुम्हे अपनी आँखोको नुकसान नही पहुँचने देना चाहिए।

आज इससे ज्यादा नही।

हम सबोकी ओरसे प्यार।

बापू

अग्रेजीकी नकल (एस० एन० २६९०६) से।

२८७. पत्र : प्रभावतीको

रायपुर
२३ नवम्बर, १९३३

चि० प्रभावती,

तेरा पत्र मिला है। तूने दो पत्र दिये है। पिछले पत्रमे तूने सीवानका पता दिया था और अब सीताबदियाराका दिया है। मै तो यह पत्र सीताबदियाराको लिख रहा हूँ।

जयप्रकाशके बारेमे मै लिख चुका हूँ। मैने वह पत्र सीवानके पतेपर भेजा था। जिनके सिरपर कर्ज है, जिन्हे अपने भाई-बहनका खर्च उठाना है वर्तमान सघर्ष उनके लिए नही है। इस सघर्षमे तो सब-कुछ होम देनेकी बात है। गरीबोके भाई-बहन किस तरह पढते है? हमे तो ऐसा रास्ता खोज निकालना चाहिए कि जिससे हमारे भाई-बहन गरीबीमे पढ सके और अपना झटपट निर्वाह करनेके योग्य बन जाये। रही बात पिताजीकी, सो पिताजीको ५० रुपये मिलते है वह पर्याप्त होने चाहिए। उनकी सम्पत्ति परसे तुम दोनोको अपना अधिकार छोड देना चाहिए। इस तरह यदि जय प्रकाश इस फकीरीको अपनानेके लिए तैयार हो तभी वह इस लडाईमे शामिल हो सकता है। सिपाहीका यही धर्म है। दूसरा धर्म कुटुम्बके प्रति है। यदि कोई उस

१. अग्रेजी अनुवाद **द गॉस्पेल ऑफ सेल्फलेस ऐक्शन** या **द गीता एकॉर्डिंग टु गांधी** शीर्षकसे १९४६ में प्रकाशित हुआ था, देखिए खण्ड ४१।

धर्मका पालन करना चाहे तो वह भी उचित है। यह धर्म जब स्वतन्त्र रूप धारण करता है तब वह समाजके हितका विरोधी होता है। हममे आज ऐसा ही चलता है। सत्याग्रहका आशय इसी धर्मको टालना है। लेकिन जो इसे नही समझता और इसका पालन करनेका प्रयत्न करता है वह दोनोसे हाथ धो बैठता है, क्योकि उसे सन्तोष नही रहता। यह सारी बात यदि तेरी समझमे न आई हो तो मुझसे फिर पूछना। तुझे समझनेमे दिक्कत नही होनी चाहिए।

मैने अपने दौरेका कार्यक्रम तुझे पहले ही भेज दिया है। इसलिए यहाँसे फिर नही भेजता। मेरे साथ बातचीत करनेके लिए विशेष रूपसे यहाँ आनेकी अब कोई जरूरत नही रह गई है। लेकिन मै मगलवार को जबलपुरमे होऊँगा, बादमे दिल्ली।

मेरा वजन १०९ पौड है और ब्लड-प्रेशर १५५-१०० है। खुराक पहले जैसी ही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३४३५) से।

२८८. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

रायपुर
२३ नवम्बर, १९३३

भाई वल्लभभाई,

तुमने तो पत्र लिखना सचमुच ही बन्द कर दिया लगता है। जमनालालजीका त्यागपत्र उनकी मानसिक शान्तिके विचारसे भी अनिवार्य था। दूसरोके लिए भी उचित ही था। इससे वातावरण बहुत साफ हो गया है। जमनालालजी परसे बोझ उतर गया है और उन्हे नया बल मिला है। ज्यादा तो नही लिखूंगा। लेकिन इस कदमके औचित्यके बारेमे मनमे शका न लाना।

मैने सुना है कि तुम्हारी तबीयत कुछ गडबड है। यदि ऐसी कोई बात हो तो मुझे बताना। वजन बता सको तो बताना। नाक तो परेशान नही कर रही है न? मुझसे कुछ छुपानेकी जरूरत तो नही है।

महादेवकी अच्छी कसौटी हो रही है। मुझे यह अच्छा लगता है। अब गुजराती पत्रोमे दिक्कत होती है। इस सम्बन्धमे मै कर्नल[1] को लिखनेका इरादा रखता हूँ। यद्यपि इतना भी मुझे पसन्द तो नही है।

देवदासका पत्र इन दिनो नही आया है। खुर्शीदकी तबीयतमे सुधार हो रहा है। उसने खासी बीमारी पाई। डाक जाने ही वाली है इससे ज्यादा नही लिखता।

१. ई० ई० डॉयल, इन्स्पेक्टर-जनरल ऑफ प्रिजन्स, बम्बई।

मेरी गाडी ठीक चल रही है। लोगोकी भीड पहले जैसी ही है, कदाचित् अधिक ही है और वे उतने ही प्रेमोन्मत्त भी है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृष्ठ ४८

२८९. भाषण : रायपुरकी सार्वजनिक सभामें[1]

२३ नवम्बर, १९३३

मैं यह बात बार-बार कह चुका हूँ कि यह काम केवल वे ही लोग कर सकते है जो वाकई अस्पृश्यताको हिन्दू-धर्मके नामपर धब्बा समझते है। यह वह आन्दोलन है जिसमे करोडो लोगोसे हृदय-परिवर्तत करनेकी अपेक्षा की जाती है। इसे किसी राजनीतिक चाल द्वारा सफल नही बनाया जा सकता। यह तो केवल आत्म-शुद्धि द्वारा ही किया जा सकता है। यह एक महान यज्ञकी अग्नि है जिसमें हमे अपने पापोके ढेरकी आहुति देनी है और उसमे से शुद्ध होकर निकलना है। जो लोग इस कामको श्रद्धाके साथ और सच्चे मनसे नही करेगे वे करोडो लोगोके हृदयोको द्रवित करनेमे सफल नही होगे। यदि हमने अपने-आपको या हरिजनोको धोखा दिया तो हम कहीके नही रहेगे। इस आन्दोलनकी सफलता या असफलता हमे सही ढगके कार्यकर्त्ताओके मिलनेपर निर्भर करती है। आज हमारी परीक्षा हो रही है। ईश्वरने हमे जो मौका दिया है यदि आज हम उससे चूक गये तो इस पीढीमे ऐसा मौका दोबारा मिलनेकी हम आशा नही कर सकते। आज हम जो काम स्वेच्छया करनेसे इनकार कर रहे है वह काम हमे भविष्यमे डडेके भयसे करना पडेगा और फिर हमे इस मौकेको खो देनेका पछतावा होगा। मेरी ईश्वरसे प्रार्थना है कि हम इस परीक्षामे सफल उतरे और हिन्दू-धर्म तथा अपने-आपको विनाशसे बचाये।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १-१२-१९३३

१ चन्द्रशकर शुक्लकी रिपोर्टके अनुसार यह भाषण हरिजनकार्यकर्त्ताओंके सामने दिया गया था। तथापि २९-११-१९३३ के **बॉम्बे क्रॉनिकल**, तथा ३-१२-१९३३ के **हितवाद** के अनुसार यह भाषण स्थानीय नगरपालिका, स्थानीय बोर्ड तथा अन्य सस्थाओं द्वारा भेंट किये गये अभिनन्दनपत्रोके उत्तरमें दिया गया था।

२९०. भाषण : अखिल भारतीय स्वदेशी प्रदर्शनी, रायपुरमे

२३ नवम्बर, १९३३

एक ऐसे देशमे जहॉकी ९५ प्रतिशत जनता कृषिके सहारे जीती है, यदि कृषि सम्बन्धी सारे कार्य यन्त्रोके जरिये किये जाये तो भी एक सहायक कुटीर उद्योगकी आवश्यकता रहेगी। अनादि कालसे भारतीय किसानोको चरखेके रूपमे वह सहायक धन्धा प्राप्त रहा था। आज सहायक धन्धेके रूपमे कई छोटे उद्योगोका सुझाव दिया जाता है, लेकिन इनमे मे कोई भी उद्योग उतने व्यापक पैमानेपर नही अपनाया जा सकता जितना कि खादी-उत्पादनका उद्योग। मैने इस प्रदर्शनीका उद्घाटन करना इस कारण स्वीकार किया, क्योकि मै जानता हूँ कि हजारो हरिजन खादीके सहारे जीविकोपार्जन कर रहे है — खादी, जिसने उन्हे अभावग्रस्त होनेसे बचाया है। हम अन्य बहुत-से घरेलू धन्धोको फिरसे जीवित कर सकते है, बल्कि नये-नये घरेलू धन्धे भी शुरू कर सकते है, लेकिन खादी, जो कि स्वदेशीका मूलाधार है, उसको हम नही छोड सकते।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १-१२-१९३३

२९१. भाषणोंके अंश[1]

[२४ नवम्बर, १९३३ से पूर्व][2]

अन्याय तो ससार-भरमे किया जा रहा है, लेकिन हमने उसे धर्मका समर्थन प्रदान कर दिया है। ये भेद ईश्वरने नही पैदा किये है। हरिजन लोग यदि समाजके सबसे निचले पायेपर है तो अपने किन्ही अन्तर्निहित दोषोके कारण नही बल्कि इसलिए है कि तथाकथित ऊँची जातियोने उन्हे दबाकर रखा है। ईश्वरने उन्हे भी वे सभी प्रतिभाएँ प्रदान की है जो उसने हमे दी है, लेकिन हम उनको इन प्रतिभाओका प्रयोग करने ही नही देते। निश्चय ही वे सभी अधिकार और सुविधाएँ तथा विकासके वे सभी अवसर उन्हे भी मिलने चाहिए जो हमे प्राप्त है।

हमने उनके प्रति जो अन्याय किया है, उसका अहसास अब हमको है और प्रायश्चित्त-स्वरूप अब हम कमसे-कम जो चीज कर सकते है वह यह है कि उनके

१ और २. इसे चन्द्रशकर शुक्लके "साप्ताहिक पत्र" में से लिया गया है जिसपर दिनांक-रेखा "रायपुर, २४-११-१९३३" पडी हुई है। गांधीजीने जिन-जिन स्थानोंपर भाषण दिये थे इसमें उनका उल्लेख नहीं किया गया है।

उत्थानके लिए धनका दान दे और अपने लिए हमने जो सुविधाएँ पैदा की है उसका लाभ उन्हे भी प्रदान करे। हम सब उसी परमात्माकी सन्तान है और उसकी आँखमे समान है।

आप इस अनुष्ठानके लिए जितना धन देगे, उसका सौ-गुना लाभ आपको मिलेगा, क्योकि यह तो अच्छी उर्वर भूमिमे अनाज बोनेके समान है। इसके विपरीत, विलासिता और लालसापर खर्च किया जानेवाला धन बजर भूमिमे बोये गये अनाजके समान है।[1]

मुझे बताया गया है कि आपको भारी हानि सहनी पडी है। लेकिन आपको जानना चाहिए कि कोई भी राष्ट्र जबर्दस्त कष्टोको झेले बिना और अग्नि-परीक्षासे गुजरे बिना अपनी पूरी महत्ताको नही प्राप्त कर पाया है। स्वेच्छया कष्ट-सहनसे हमारी शक्ति बढती ही है। इसलिए कष्ट-सहन करनेके लिए मै आपको बधाई देता हूँ। लेकिन मै आपको यह भी याद दिलाना चाहूँगा कि हमारे कष्टोको बढानेवाले कारणो मे से एक कारण यह अस्पृश्यताका अभिशाप है। हमने कमजोरोको सताया है। हमने जैसा बोया है वैसा काट रहे है। अब यह हमारे ऊपर है कि हरिजनोके प्रति जो अन्याय हमने किये है उन्हे दूर करे और उनके कन्धोपर से गुलामीका जुआ हटा दे।[2]

सवर्ण हिन्दुओको चाहिए कि आपके प्रति किये गये अपने अन्यायोके लिए वे आपसे क्षमा माँगे। लेकिन स्वेच्छासे अपनेको हरिजन माननेवाला मै आपसे यह भी कहूँगा कि आपको अपनी बुरी आदतें, विशेष रूपसे मुर्दा पशुओ और गायोका मास खानेकी आदत का त्याग करना चाहिए। सारी दुनिया मुर्दा पशुको घृणाकी दृष्टिसे देखती है। और गोमास-भक्षणका त्याग इसलिए करना चाहिए क्योकि किसी हिन्दूके लिए गोमास-भक्षण न करना एक अनिवार्य शर्त है। गाय समृद्धि प्रदान करनेवाला प्राणी है, और उसकी हत्या करके हम स्वय अपना ही घात करते है। फिर मै आपसे कहूँगा कि आप जूठन भी स्वीकार न करे। इन सबसे ऊपर, आपके बीच ऊँच-नीचका जो भेद-भाव घुस गया है, उसे आप खत्म कीजिए। और ऐसा आप किसी प्रत्याशासे नही, बल्कि इसलिए कीजिए क्योकि ये स्वयमे अच्छी चीजे है। इसलिए मै आपसे कहूँगा कि आप मद्यपान छोड दे, इसका खयाल किये बिना कि बहुतसे अन्य हिन्दू मद्यपान करते है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १-१२-१९३३

१. इसके बादका अंश एक गाँवमें दिये गये भाषणसे लिया गया है।

२ इसके बादका अश हरिजनोको सम्बोधित करके कहा गया था।

२९२. सविनय अवज्ञा और हरिजन-सेवा

एक मित्र लिखते है[१]

मै देखता हूँ कि हरिजन-सेवक संस्थाओमें कुछ ऐसे व्यक्ति है, जो केवल हरिजनोकी सेवा करनेकी भावनासे काम नही कर रहे है, जैसा कि आप चाहते है। वे तो अन्य आकांक्षाओंकी पूर्तिके लिए हरिजन-सेवाकी आड़ ले रहे है। . . . मै जानता हूँ कि सत्याग्रहको आप हरिजन-सेवक संस्थाओसे अलग ही रखना चाहते है। यदि इस पत्रका कोई आम उपयोग करनेका आपका विचार हो, तो इस अन्तिम बातपर आप कुछ अधिक जोर दे और अबतक आपने उसे जितना स्पष्ट किया है, उससे भी अधिक खुलासा कर दे।

मुझे अपने अनुभवकी बात बतानेके लिए मै इन मित्रका आभारी हूँ। हरिजन-सेवक सघ जैसे विशाल सगठनको, जिसकी शाखाएँ सारे भारतवर्षमे फैली हुई है, स्वार्थियो और समय-सेवी पुरुषोसे बिलकुल मुक्त रखना बडा कठिन कार्य है। मैंने इस विषय पर सेठ घनश्यामदास तथा ठक्कर बापासे अच्छी तरह परामर्श किया है। मुझे मालूम है कि ये दोनो सज्जन सघको यथासम्भव अधिकसे-अधिक शुद्ध रखना चाहते है। व्यक्तिश इससे अधिक मै और कुछ नही कर सकता। अपनी बिलकुल लाचारी देखकर ही -तो मैंने २१ दिनका अनशन किया था। हरिजन-सेवकोकी कमजोरियोका पता पाकर मैंने महसूस किया कि उनके बारेमे केवल लिखनेसे ही काम नही चलेगा। मै इस कठिनाईमे से निकलनेका मार्ग ढूँढ रहा था। पाठक विश्वास करे कि उपवास तो उस समय मेरे विचारोसे कोसो दूर था, मगर जैसा मै इन पृष्ठोमे बता चुका हूँ, वह अकस्मात् मेरे मनमे आया और उससे मुझे बडी शान्ति मिली। मै जानता हूँ कि उससे बडा लाभ हुआ। परन्तु अकेले एक मनुष्यके उपवासका प्रभाव कितना हो सकता था? अतएव ऐसे प्रायश्चित्तरूप उपवासकी शृखलाका विचार मेरे मनमे उठा। यह विचार हरगिज छोड नही दिया गया है। वह तो बार-बार मेरे मनमे आता है। पर उसका यन्त्रकी तरह सचालन नही किया जा सकता। कई साथी इस उपवासकी शृखलाका श्रीगणेश करनेको अथवा प्रारम्भ होनेके पश्चात् उसमे भाग लेनेको तैयार है, पर उसे ठीक तौरसे आरम्भ करनेका मार्ग मुझे अभी सूझ नही पडा है। शृखला शुरू करनेके पहले यह अत्यन्त आवश्यक है कि उसका ठीक मार्ग मुझे और मेरे साथी कार्यकर्त्ताओको दिखाई दे। तबतक मै अपने इस अटल विश्वासको केवल प्रकट कर सकता हूँ कि अस्पृश्यताका मूलोच्छेद ऐसे नर-नारियोकी सेवा द्वारा ही हो सकता है जो केवल सेवाकी ही दृष्टिसे और शुद्ध धार्मिक मनोवृत्तिसे

१. यहाँ केवल कुछ अंश ही दिये गये हैं।

प्रेरित होकर इस कार्यको उठायेगे। जबतक भारतवर्षके कोने-कोनेमे इस प्रकारके सेवक काफी सख्यामे मौजूद न हो, हम लोग करोडो मनुष्योका हृदय-परिवर्तन करनेमे भी कभी सफल नही हो सकते। सवर्ण हिन्दू एक छोरपर है, और हरिजन दूसरेपर है, और कई युगोसे प्रचलित प्रथा, जिसने धार्मिक सिद्धान्तकी-सी गरिमा अख्तियार कर रखी है, बिना प्रायश्चित्त और शुद्धीकरणके कभी भी जडमूलसे नही मिटाई जा सकती। एक ओर यह देखकर हृदयको बडी प्रसन्नता होती है कि गाँवो और कस्बोमे जो सभाएँ हो रही है उनमे लोगबाग हजारोकी सख्यामे इकट्ठे होते है और बडे हर्षसे अपनी कमाईके पैसे इस आन्दोलनके प्रति अपनी सहानुभूतिके चिह्नस्वरूप भेट करते है, पर दूसरी ओर मुझे यह जानकर दु ख होता है कि यदि इन हजारो नर-नारियोके सामने अचानक यह प्रश्न आ जाये कि जिस बातको ये लोग सभाओमे अपनी उपस्थितिके द्वारा स्वीकृति देते मालूम होते है, उसे स्वय अपनी जीवन-व्यवस्थामे व्यवहारमे लाये तो सर्वथा कोरा ही जवाब मिलेगा। यह इसलिए नही कि वे ऐसा चाहते नही है, बल्कि सिर्फ इसलिए कि ऐसा करनेकी उनमे शक्ति नही है। मैंने अनेक बार यही बात अपने अनेक अत्यन्त घनिष्ठ साथियोमे पाई है, जो बात वे उचित समझते है और यह भी जानते है कि उसे तुरन्त करनेकी जरूरत है, उसे एकदम आचरणमे लानेके विषयमे उन्होने नि सकोच होकर अपनी अयोग्यता स्वीकार की है। उन्हे अपने कुसस्कार-पोषित और रूढि-जन्य आन्तरिक घृणाके विरुद्ध साहसके साथ युद्ध करना पडा। इस भयकर राक्षसीका सहार करनेके लिए इस बातको केवल बौद्धिक स्तर पर स्वीकार करना काफी नही है कि अस्पृश्यता एक घृणित वस्तु है, जो हिन्दू-धर्मका सत्यानाश कर रही है और उसमे विश्वास रखना परमात्मा, उसकी दयालुता तथा उसके पितृत्वके प्रति अपनी अश्रद्धा प्रकट करनेके समान है। सवर्णो और हरिजनोका हृदय-परिवर्तन करनेके लिए जो लोग अपेक्षाकृत पवित्र है उन्हे दूसरोके लिए प्रायश्चित्त करनेकी आवश्यकता है।

जो आन्दोलन इतना ऊँचा और इतना पवित्र, इतना धार्मिक और इतना मानव-हितकारी है, उसका किसीको अपनी निजी स्वार्थ-सिद्धिके अर्थ अनुचित लाभ नही उठाना चाहिए। राजनीतिक लाभोको प्राप्त करनेके लिए तो ऐसा कदापि नही करना चाहिए। यह आन्दोलन ज्यो-ज्यो प्रगति करेगा, त्यो-त्यो यह देखा जा सकेगा कि आन्दोलनमे राजनीतिक दृष्टिकोणका प्रवेश करानेका एकमात्र परिणाम यह होगा कि फूट और कलह और तीव्र होगे। ऐसा करनेसे आजकल जो उलझन पड रही है, वह और भी विकट रूप धारण करेगी और आज जितने दलोमे झगडा चल रहा है, उसमे और भी कई दल शामिल हो जायेगे। भगवान हमे और हमारे इस सेवा-आन्दोलनको ऐसी विपत्तिसे बचाये!

सत्याग्रहका हरिजन-आन्दोलनसे कहाँतक सम्बन्ध है, इस विषयमे मै हमेशाकी भाँति जोर देकर कहता हूँ कि वे काग्रेसवादी, जो सत्याग्रहमे सक्रिय भाग लेना चाहे, इन हरिजन-सस्थाओमे न तो कोई पद ग्रहण करे और न इन सस्थाओको सत्याग्रह चलानेके कार्यमे साधन ही बनाये। सत्याग्रह एक अद्वितीय शस्त्र है। उसमे

किसी किस्मकी मिलावट की गुजाइश नही। यह तो निर्भय शूरवीरोका शस्त्र है, इसलिए इसे किसीकी ओट लेनेकी आवश्यकता नही। इसका प्रयोग तो खुले तौरपर दिन दहाडे ही होना चाहिए। इसलिए यद्यपि उन काग्रेसवादियोका, जो सत्याग्रहमे प्रमुख भाग लेते हो, यह कर्त्तव्य है कि हरिजन-सेवा-कार्यमे जो-कुछ सहायता वे दे सकते हो दे, तथापि उनका सम्बन्ध हरिजन-सेवक सघ अथवा उसकी किसी शाखासे नही होना चाहिए। इन सस्थाओमे पद-ग्रहण करनेसे उनके द्वारा सत्याग्रह तथा हरिजन-सेवा-कार्य दोनोको ही हानि पहुँचेगी। यह ठीक इसी प्रकार होगा, जैसे कोई व्यक्ति मन्दिरमे जाये तो पूजा-प्रार्थनाके लिए और अपनी देव-आराधनाको सत्याग्रहका साधन बना ले। मगर न तो ईश्वरको ही और न मनुष्यको ही इस तरह धोखा दिया जा सकता है। जैसा कि मैने अकसर इन पृष्ठोमे कहा है, यदि केवल काग्रेसवादियोपर ही निर्भर किया गया तो हिन्दू-धर्मका महान सुधार कभी नहीं हो सकता। मै जानता हूँ कि स्थिति वास्तवमे ऐसी नही है। यह भी बात नही कि प्रत्येक हिन्दू ही काग्रेसवादी हो, जैसे कि प्रत्येक हरिजन भी काग्रेसवादी नही है। इसलिए इस हरिजन-सगठनके लिए लाजिमी है कि वह राजनीति तथा दलबन्दियोसे बिलकुल स्वतन्त्र हो और उसमे काग्रेसवादियो और गैर-काग्रेसी लोगोका भी समावेश हो। उसके पदाधिकारी सिर्फ वही लोग हो जो सत्याग्रहमे सक्रिय भाग न ले रहे हो, और जो गुप्त अथवा प्रकट रूपसे सत्याग्रहको आगे बढानेके लिए अपने पदका अनुचित लाभ न उठा रहे हो।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २४-११-१९३३

२९३. हरिजन-कार्यकर्त्ताओंका कर्त्तव्य

एक सज्जनने मेरे पास उत्तरके लिए नीचे लिखे प्रश्न भेजे है

(१) अस्पृश्यताके विरुद्ध प्रचार करनेमे क्या कार्यकर्त्ताओको यह सिद्ध करनेके लिए कि आज हमारे बीच जिस प्रकारकी अस्पृश्यता प्रचलित है, उसका हिन्दू-धर्म कहीं समर्थन नही करता, शास्त्रो और धार्मिक ग्रन्थोका उपयोग करना चाहिए?

(२) क्या एक हरिजन-सेवकको खानगी तौरपर सहभोजोमें भाग लेना चाहिए?

(३) क्या एक हरिजनको, जो किसी कुटुम्बमें नौकरके रूपमे काम करता है, उस कुटुम्बके अन्य प्राणियोके साथ बैठकर भोजन करना चाहिए?

पत्र-लेखकका कहना है कि इन तीनो प्रश्नोपर एक समाचार-पत्रमे गम्भीरता-पूर्वक चर्चा की गई है और पाठकोको यह सलाह दी गई है कि हरिजन-कार्यकर्त्ताओको

अस्पृश्यता-निवारणके प्रचारमे न तो शास्त्रीय तथा धार्मिक प्रमाणोका उपयोग करना चाहिए और न सहभोज आदिके सम्बन्धमे अपने व्यक्तिगत विचारोको, हरिजन-आन्दोलनके व्यापक हितमे, अपने खानगी मामलोमे ही लागू करना चाहिए। मेरे लिए अस्पृश्यता-निवारणका कार्य सिद्धान्तत एक धार्मिक कार्य है। यदि मै विश्वास कर लूँ कि लोक-प्रचलित अस्पृश्यता हिन्दू-धर्मका एक अभिन्न अग है, तो मैं हिन्दू-धर्ममे नही रहूँगा। इसमे कोई सन्देह नही कि अस्पृश्यता हमारे पास प्राचीन प्रथाओके ही रूपमे आई है, लेकिन ऐसी तो बहुत-सी बुरी प्रथाएँ चली आ रही है, जिनमे अस्पृश्यता सबसे निकृष्ट है। इसलिए यह दिखलाना आवश्यक हो जाता है कि हिन्दू-धर्ममे इसका कोई स्थान नही है।

यद्यपि हरिजन-सेवक सघने बडी बुद्धिमानीके साथ अपने कार्य-क्षेत्रको सीमित कर दिया है, तब भी सहभोज आदिके सम्बन्धमे उसने व्यक्तिगत विचारो या कार्योको नियन्त्रित करने या रोकनेकी बात नही की है। अस्पृश्यता-निवारणके लिए हरिजनोके साथ भोजन करनेकी कोई आवश्यकता नही है। सहभोज कोई सार्वदेशिक बन्धन नही है। हरिजन-कार्यकर्त्ताको यह पूर्ण स्वतन्त्रता रहनी चाहिए कि वह चाहे जिसके साथ भोजन करे और इस कारण, किसी हरिजनके साथ भोजन करनेसे, वह कोई कम प्रभावशाली कार्यकर्त्ता न समझा जाये। मै इस सम्बन्धमे क्या करता हूँ, यह सबको अच्छी तरहसे मालूम है, और "सुधारके व्यापकतर हितमे" यदि मैं उसे छिपा रखूँ तो मै अपनेको एक पाखण्डी समझूँगा। यदि मेरे लिए वह सिर्फ सुविधा या मनोविनोदकी ही चीज हो तो मै अवश्य ही सहभोजसे अपनेको अलग रखूँगा। इन दोनो बातोसे कही बढकर मै उसे एक वाछनीय तथा अवश्यम्भावी सामाजिक सुधार मानता हूँ। लेकिन इस सवालको अस्पृश्यता-निवारण आन्दोलनसे नही मिलाना चाहिए। अस्पृश्यता-निवारण आन्दोलनमे मुख्य बात तो उन लोगोके प्रति होनेवाले सामाजिक तथा धार्मिक अन्यायोको खत्म करना है, जो आज अस्पृश्य कहलानेके कारण जिस धर्मके वे अनुयायी है उसी धर्मकी तमाम सार्वजनिक सुविधाओ और आध्यात्मिक शान्ति-सात्वनाके साधनोकेसे वचित कर दिये गये है। अगर मेरे हाथका बनाया हुआ या स्पर्श किया हुआ भोजन दुनियामे कोई ग्रहण न करे, तो मै ऐसा नही समझूँगा कि मै किसी चीजसे वचित किया गया हूँ। किन्तु अगर मै अपने लडकेको किसी सार्वजनिक स्कूलमे न पढा सकूँ, या किसी ऐसे स्थानमे किराये पर मुझे मकान न मिल सके जहाँ दूसरे लोगोको मिल जाता हो, अथवा मै किसी ऐसे मन्दिरमे जाकर आध्यात्मिक आनन्दका लाभ न ले सकूँ जो मेरे ही धर्मके माननेवालोके लिए बनाया गया हो तो मै बहुत बडी चीजसे अपने-आपको वचित मानूँगा।

रही हरिजन नौकरकी बात तो यदि उस परिवारके प्राणी हरिजन और गैर-हरिजन नौकरोमे भेद रखते है, तो वे अवश्य ही छुआछूत माननेके अपराधी होगे। पर मुझे भय है कि हमारे लिए अभी वह सुन्दर और कल्याणकारी दिन बहुत दूर है, जब सभी मालिक होगे, कोई नौकर न होगा, या सभी सेवक होगे, कोई स्वामी

न होगा — सब मनुष्य कुटुम्बके सदस्यो जैसे होगे, और जब सभी लोग एक-दूसरेके साथ सगे भाई और बहनोके जैसा व्यवहार करेगे।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २४-११-१९३३

२९४. पत्र : मार्गरेट स्पीगलको

स्थायी पता वर्धा
२४ नवम्बर, १९३३

चि० अमला,

मुझे खुशी है कि तुम्हारी तबीयत ठीक है। क्या मैने यह कहा था कि मै सप्ताहमे दो बार लिखूँगा? मेरे खयालमे मैने यह कहा था कि तुम सप्ताहमे दो बार लिख सकती हो।

बेशक, तुम हिन्दीको जितना ज्यादा समय देना चाहो उतना समय दे सकती हो। हाँ, जब तुम बिलकुल ठीक हो जाओगी तब मै तुम्हे जिस स्थानपर भी रखूँगा वहाँ तुम अपनी जगह बना लोगी।

सप्रेम,

बापू

श्रीमती अमलाबहन
सत्याग्रह आश्रम
वर्धा (म० प्रा०)

[अग्रेजीसे]

स्पीगल पेपर्स, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

२९५. पत्र : सी० एफ० एन्ड्रयूजको

२४ नवम्बर, १९३३

प्रिय चार्ली,

मुझे अभी-अभी सर प्र० पट्टणीसे यह सूचना मिली है कि वह दिसम्बरसे गुरुदेवको १००० रुपये प्रति माह देना शुरू करेगे जबतक कि ५००० रुपये पूरे नही हो जाते।[1] अब सब ठीक हो जायेगा।

लोगोका उत्साह और [सभाओमे] उपस्थिति आश्चर्यजनक है, और मेरी अपेक्षाएँ हालाँकि काफी ऊँची थी लेकिन वह तो इनसे भी ज्यादा है। तुम इनका 'हरिजन' मे सही-सही विवरण देखोगे। तुमने यह ध्यान दिया होगा कि अब

१. देखिए "पत्र प्रभाशकर पट्टणीको", ४-११-१९३३।

'हरिजन' मद्रास चला गया है। लोग खूब पैसा दे रहे हैं। यदि लोगोकी ये भीडे इस बातका द्योतक नही है कि अस्पृश्यता तेजीसे जा रही है तो फिर मै नही जानता कि दूसरी कौन-सी चीज इसे सिद्ध कर सकती है। इस जबर्दस्त सुधारका प्रभाव महसूस किया जाये, इसमे समय लगेगा।

बादमें।

इससे पहलेका हिस्सा विघ्न-बाधाके बीच लिखा गया था। तुमने समुद्र-यात्रा के दौरान या बम्बईमे जो पत्र लिखा था वह अभी-अभी मिला है। गुरुदेवकी बम्बई-यात्राके बारेमे मैंने बहुत कम लिखा है। मै तो यह भी नही जानता कि क्या व्यापार चल रहा है। इस व्यस्तताके बीच मै अखबार भी नही पढ पाता। लेकिन बेशक जहाँ तक स्वागतका सवाल है, उनका स्वागत तो होगा। लेकिन उन्हे पैसा बहुत मिलनेकी सम्भावना नही है। उडीसाके बारेमे मेरी अपील पर बहुत थोडा धन आया है।

अवश्य ही एल्विनको अपने रास्ते जाना चाहिए और उसे ईश्वरके हाथोमे छोड दिया जाना चाहिए। लेकिन गुणावगुणके आधारपर कार्योंके औचित्यपर शका हो तब मित्रोको चेतावनी देनी चाहिए। यह कहना मुश्किल है कि कब यह ईश्वरकी आवाज है और कब नही है। अजनबी लोगोको प्रत्येक कार्य उसके गुणावगुणके अनुसार ही परखना होगा। यह बात बेशक अपने उपवासोके बारेमे किये गये मेरे दावोपर भी लागू होती है। ई० माथेरानसे जिस प्रकार गये उसमे मुझे कुछ जल्दबाजी प्रतीत हुई और वह वर्धाको भी बचा कर निकले। इसके बारेमे मैंने उन्हे एक लम्बा पत्र लिखा है। कराजियाके पास वापस लौट जानेके बादसे उनका कोई पत्र मुझे नही मिला है।

आशा करता हूँ कि तुम्हे वापस लौटनेके लिए कहनेको मुझे तार नही करना पडेगा। मजिस्ट्रेटोने मुझे अभी तक तग नही किया है। लेकिन यदि आगे कभी किया तो उस समय तुमसे परामर्श करनेका अवसर नही होगा। जिस प्रकार एफी कर रही है उसी प्रकार तुम भी मुझे ईश्वरके सहारे मानो, जैसा कि तुम ई० को ईश्वरके सहारे मान रहे हो। मै जानता हूँ कि प्रभु मेरा मार्गदर्शन कर रहे हैं।

सप्रेम,

मोहन

[पुनश्च]

अपने पत्र वर्धाके पतेपर भेजना।

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९८३) से।

२९६. पत्र : अगाथा हैरिसनको

२४ नवम्बर, १९३३

प्रिय अगाथा,

इस हफ्ते कोई लम्बा पत्र नही। साथमे एक पत्र सी० एफ० ए० के लिए है।[१] कतरनोसे तुम्हे मेरे दौरेकी प्रगतिका कुछ अनुमान हो जायेगा। तुम्हे जैसा आवश्यक लगे उस हिसाबसे तुम उसे मित्रोको भी दिखा देना।

राजनीतिक वातावरणके बारेमे मै नही सोचता। यह उतना ही खराब है जितना पहले था। इससे मुझे खास चिन्ता नही होती, और यदि सरकारी अधिकारियोमे दुर्बल-रक्षाकी भावना और भद्रता होती तब तो मै बिलकुल ही चिन्ता नही करूँगा। उनके अन्दर हरएक व्यक्ति और हर सगठनको अपमानित करनेकी कभी न शान्त होनेवाली भयकर लालसा है। लेकिन यह शिकवा-शिकायत काफी हुआ।

सप्रेम,

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४७५) से।

२९७. पत्र : वसुमती पण्डितको

२४ नवम्बर, १९३३

चि० वसुमती,

मैने तुझे कई पत्र लिखे थे। आशा है वे मिले होगे। तेरा एक पत्र मुझे मिला है। तूने अध्ययन ठीक किया जान पडता है। लगता है तूने अग्रेजीका अभ्यास छोड दिया है। ताराने एक दाँत निकलवा दिया है। निकालते समय उसे बहुत दर्द हुआ, उसे एक घटेतक क्लोरोफॉर्ममे रखना पडा। अब तो वह ठीक है। मै लम्बे दौरेपर हूँ। [सप्ताहमे] दो दिन छोडकर मुझे हर रोज घूमना होता है। साथमे मीराबहन है, ओम है, चन्द्रशकर और ठक्कर बापा तो है ही। दूसरे लोगोको तू नही जानती। अभी तक तो मेरा स्वास्थ्य ठीक चल रहा है। बा और मणिबहन अहमदाबाद गई है। तोतारामजी हरिप्रसादको लेकर हरिजन आश्रममे रहेगे। सत्याग्रह आश्रम हरिजन आश्रम बन गया है। मेरा वजन १०८ पौड है। दूध, नारगी और कोई एक हरी सब्जी मेरी सामान्य खुराक है।

१. देखिए पिछला शीर्षक।

यह पत्र मैंने खाना खाते समय ओमसे लिखवाया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९३३८) से। सी० डब्ल्यू० ५८४ से भी, सौजन्य वसुमती पण्डित

२९८. भाषण : रायपुरकी सार्वजनिक सभामें

२४ नवम्बर, १९३३

जबसे मैं आपके प्रान्तमें आया हूँ तबसे आपने मुझे अपने प्रेमसे नहला दिया है और अभीतक मैं इस प्रेमसे तरबतर हूँ। यहाँ पर भी आपने यह थैली देकर मुझे अधिक आनन्द प्रदान किया है। यदि आप ऐसा मानते हैं कि इस व्यक्तिको सन्तुष्ट करनेके लिए पैसे देने चाहिए तो यह बात सच है। लेकिन इसके साथ एक शर्त है, यदि आप उसका पालन करें तो। शर्त यह है कि जिस व्यक्तिने पैसे दिये हों उसके मनमें यह भाव होना चाहिए कि उसने शुद्धि यज्ञमें अपना योगदान दिया है। यह पैसा तो उसके योगदानका प्रतीकमात्र है। लेकिन यदि वे यह मानें कि पैसा देकर उन्होंने अपना फर्ज पूरा कर दिया तो यह बहुत खराब ढंगका बनियापन होगा। यह तो मानो उसने पैसा देकर स्वच्छन्द अथवा स्वेच्छाचारको खरीद लिया है। ऐसा दान हरिजनोंकी सेवा नहीं कर सकता। हरिजनोंकी सेवाके लिए पैसेकी बहुत जरूरत है, इस बातसे मैं इनकार नहीं करता लेकिन सेवाके लिए ज्यादा जरूरी तो यह है कि आप हृदयसे हरिजन बहन-भाइयोंको अपनायें। आप मनसे अस्पृश्यताको नेस्तनाबूद कर दें, भेदभावको दूर कर दें, मेरी यात्राका यही उद्देश्य है। इसे सफल बनानेमें यदि आप मदद न देकर फकत पैसा ही दें तो इस पैसेका उपयोग करना भी मुश्किल हो जाये। यदि आप न जानते हों तो यह जान लें कि [इस उद्देश्यके लिए] इस स्थान पर जो पैसा इकट्ठा किया जायेगा उसमें से कमसे-कम ७५ प्रतिशत तो इसीस्थानके हरिजनोंकी सेवाके कार्यमें लगाया जायेगा। साथमें दो शर्तें हैं, वे भी कार्यकी सिद्धिके लिए ही हैं। एक तो आपकी ओरसे इस पैसेका उपयोग किये जानेके सम्बन्धमें एक अच्छी योजना प्रस्तावित की जानी चाहिए तथा आपको यह भी बताना चाहिए कि उस योजनापर कौन व्यक्ति अमल करनेवाला है। योजना कागजपर तो अच्छी दिखाई दे सकती है लेकिन यदि उसे कार्यरूप देनेवाला कोई न हो तो वह योजना व्यर्थ जायेगी, निष्फल रहेगी। इसीलिए मैंने कहा है कि यदि आप मनसे दान नहीं करेंगे तो आपका दिया हुआ पैसा लगभग व्यर्थ है। और ऐसा होनेपर यह पैसा किसी दूसरे स्थानपर, जहाँ अच्छे कार्यकर्त्ता और अच्छी योजना मिलेगी, वहाँ चला जायेगा। पर यह आपको अच्छा नहीं लगेगा। हम जो [धन सग्रह के लिए] यहाँ आये हुए हैं ऐसा नहीं करना चाहते। हमारा इरादा तो यह है कि जिस स्थान पर पैसा इकट्ठा हो उसी स्थानपर उसमें से कमसे-कम ७५ प्रतिशत पैसा खर्च

कर दिया जाये। लेकिन यदि आप इस काममे अपना पूरा सहयोग नही देगे तो अकेले पैसेसे कुछ भी काम बननेवाला नही है।

हर स्थानपर इतना विशाल जनसमुदाय इकट्ठा होता है, यह बात हिन्दुस्तानके लिए, हिन्दू-धर्मके लिए आनन्दकी बात है। मै इस विश्वाससे काम करता हूँ कि यह जनसमुदाय अस्पृश्यता-निवारणके कार्यमे अपना सहयोग देनेके लिए आता है। पर मैंने भूतकालमे हिन्दुस्तानकी सेवा की है, इस बातको ध्यानमे रखकर और मेरी इस सेवाके प्रशसा स्वरूप यदि ये लोग आते है तो यह बहुत बडी धोखाधडी है। इस समय मेरी ऑखोके आगे कोई अन्य कार्य नही है। केवल हरिजन सेवाके लिए ही मै यह दौरा कर रहा हूँ, स्तुतिवचन सुननेके लिए कदापि नही। इसलिए जो लोग इस कार्यमे मदद करना चाहते हो वे लोग और आलोचक ही इन सभाओमे आये। विरोध करनेवाले विनयपूर्वक, सभ्यताके साथ अपना विरोध भाव व्यक्त करे। जिस व्यक्तिने धार्मिक कार्यमे सभ्यताका त्याग किया, समझ लीजिए कि उसने धर्म ही छोड दिया है। धर्मके साथ असभ्यताका, अविवेकका मेल नही हो सकता। धर्मके साथ विनय, विवेक, सभ्यता और दया होनी चाहिए। मै अपना समय व्यर्थ ही बरबाद नही करना चाहता।

मुझे यदि यह मालूम हो जाये कि हिन्दू जनता मेरे साथ नही है तो इससे मुझे अवश्य दु ख होगा, लेकिन यदि लोग मुझे और अपने-आपको धोखा देनेके लिए सभाओमे आये तो ज्यादा दु ख होगा। यदि सभी लोग मेरा त्याग कर दे तो भी मुझे तो अपने धर्मका पालन करना ही होगा। शास्त्रोमे कहा गया है कि धर्मके पालनके लिए किसीके साथकी जरूरत नही, केवल ईश्वरके साथकी जरूरत है। धर्मका पालन करना व्यक्तिगत चीज है। मनुष्यको तो भरसक अपने कर्त्तव्यका पालन कर लेना चाहिए, बाकी सब ईश्वर देख लेगा। अस्पृश्यता-निवारणरूपी धर्म एक रत्न है। वह मै आपको दे रहा हूँ। यह रत्न ऐसा साधारण-सा नही है कि केवल एक ही व्यक्ति इसका उपयोग कर सकता है अथवा इसका इस्तेमाल करनेसे इसमे कमी आ जायेगी। धर्मरूपी रत्नका करोडो लोग उपयोग कर सकते है, जितने ज्यादा लोग इसका उपयोग करेगे उसकी दमक उतनी ही बढेगी।

यदि हम अस्पृश्यताके कलकको हिन्दू-धर्ममे से जड समेत उखाड नही फेंकेगे तो हिन्दू-धर्मका और हिन्दू-जनताका नाश हो जायेगा, इसमे कोई सन्देह नही। आज ससारमे लोगोकी और धर्मोंकी तुलना की जा रही है। हम ऐसे युगमे रहते है कि जब रेलसे थोडे दिनोमे दूर-दूर तक आवागमन हो सकेगा और अब तो हवाई जहाजोका आविष्कार भी हो गया है। ऐसे युगमे समस्त ससारकी दृष्टि प्रत्येक धर्मपर पड रही है। यदि इस परीक्षामे हम अयोग्य सिद्ध हुए तो हमे समझ लेना चाहिए कि हमारे लिए कही भी आसरा नही। जगतको ऐसी तुलना करनेका अधिकार है। जिस चीजको ससारके आगे नही रखा जा सकता हो, जो बुद्धि और हृदयको स्पर्श न करती हो वह सनातन-धर्म नही है। सनातन-धर्म अर्थात् सनातन सत्य।

जब मुझे यह बताया गया कि यहाँ भारतदासजी अपने मन्दिरको हरिजनोके लिए खोलना चाहते है, तब मुझे बडी खुशी हुई। इस मन्दिरकी जगह रमणीय है।

ईश्वरको साक्षी मानकर मैने इस मन्दिरको खोलनेकी क्रिया की है। हरिजन बडी सख्यामे और खुशीसे आये। जो हरिजन अथवा इतर जन मन्दिरमे जाये उनके लिए शास्त्रोमे दो-तीन बातोका विधान है। हृदयसे और शरीरसे शुद्ध होकर मन्दिरमे जाना चाहिए। स्वच्छताके नियमका पालन करना दूसरे हिन्दुओके लिए तथा उसी तरह हरिजनोके लिए भी आवश्यक है। इसलिए हरिजन शौचके नियमोका पालन करे। दूसरी शर्त यह है कि वे गोमास और मरे पशुओके मासका त्याग करे। मरे पशुओका मास सब धर्मोमे त्याज्य माना गया है। ससारमे कही भी सभ्य और धर्मको माननेवाले लोग कभी मुर्दा-मास खाते हो, ऐसा मैने कभी देखा और सुना नही। मुर्देका मास खानेके बारेमे समस्त मनुष्य जातिको घृणा है। सवर्ण हिन्दू उन्हे अपनाये अथवा न अपनाये, तो भी हरिजनोको इन दोनो वस्तुओका त्याग कर देना चाहिए। वे यदि अपनेको हिन्दू मानते है तो उन्हे गोमासका भी परित्याग कर देना चाहिए। अब एक चौथी वस्तु रह गई है। इसे हिन्दू-धर्मका अनिवार्य अग माना जाता है — ऐसा तो मै नही कह सकता, हालाँकि मेरी दृष्टिमे यह अनिवार्य अग है। वह वस्तु है मद्यपानका त्याग। दूसरे हिन्दू इसे छोडे अथवा न छोडे, लेकिन आप लोग तो उसको अवश्य छोड दे। यह बहुत बुरी आदत है। बुरी आदतकी हमे नकल नही करनी चाहिए, फिर आपको तो अपनी उन्नति करनी है इसलिए आप लोगोको तो मद्यपान छोड ही देना चाहिए। आपका अनुकरण दूसरे हिन्दू करेगे। शराबको छोडनेसे हिन्दुस्तानके करोडो रुपये बचते है और मनुष्य हैवानसे फिर इन्सान बनता है। जिसका सेवन करनेसे मनुष्य माँ-बहनका भेद भी भूल जाता है उसका आप सेवन न करे। जो लोग जूठन इकट्ठा करते है और खाते है उन्हे इस गन्दी आदतको हमेशाके लिए छोड देना चाहिए। जूठन खाना मनुष्य-जातिका काम नही है। आपकी इस आदतके लिए[1] सवर्ण हिन्दू दोषी है। सवर्ण स्त्रियाँ अज्ञानवश हरिजनोको जूठन देती है। उसके बदले उन्हे चाहिए कि वे अपनी बनाई रसोईमे से हरिजनका भाग हमेशा अलग से निकालकर उन्हे दे। मेरी माँ हमेशा अतिथिका, गरीबका और गायका भाग निकाल कर बादमे हमे खिलाती तथा खुद खाती थी। अच्छे घरकी यह सभ्यता है कि वह उनका भाग अलग निकाल ले। उस तरह आप लोग भी भगी तथा हरिजनके लिए पहलेसे भाग निकाल कर रखे और उन्हे प्रेमसे दे। दूरसे कपडे अथवा बर्तनमे अनाज फेकना सभ्यता नही, तिरस्कार है। इसमे विनय नही, अविनय है। सवर्ण बहने हरिजनोको जूठन देना छोड दे और हरिजन उसे लेना छोड दे। हरिजन भाई-बहन जिस मन्दिरमे जाये वहाँ सब वर्णोको समान रूपसे लागू होनेवाले नियमोका वे पालन करे।

धमतरीमे सतनामी हरिजनोने मुझे एक दु खपूर्ण बात सुनाई कि हज्जाम और धोबी उनका काम नही करते, क्योकि वे अस्पृश्य माने जाते है। जिन्होने यह बात कही वे हमारे जैसे ही साफ-सुथरे थे। मै उनके मोहल्लोमे गया तो उनके घरोको अन्य हिन्दुओके घरोसे अधिक अस्वच्छ नही पाया। हिन्दुस्तानमे घूमते हुए मेरे दिलपर ऐसी छाप पडी है कि भगियोके मकान अन्य हिन्दुओकी अपेक्षा स्वच्छ होते है। ऐसे

लोगोको धोबी और हज्जाम न मिले, यह तो अत्याचार हुआ। आत्म-शुद्धिकी जब ऐसी प्रचण्ड प्रवृत्ति चल रही है तब उन्हे धोबी और नाई न मिले, यह दु खकी बात है और हमारे लिए शर्मकी बात है। इसमे मै धोबी और हज्जामको जिम्मेदार नही मानता। यह काम तो उनको भडकानेवाले तथाकथित उच्च वर्णके हिन्दुओका है। उन्होने इन लोगोको बहकाया है कि यदि वे हरिजनोका काम करेगे तो उन्हे पाप लगेगा। उनपर इस बातका असर हुआ है, इसीसे वे हरिजनोका काम करनेसे हिचकिचाते है। पर ऐसा नही होना चाहिए। समझदार लोगोको हज्जाम और धोबीको समझाना चाहिए। शिक्षित सवर्ण युवकोको हजामत बनाना और कपडे धोना सीखना चाहिए, और हरिजनोके पास जाकर उनसे कहना चाहिए कि हम तुम्हारी हजामत करने और तुम्हारे कपडे धोनेके लिए तैयार है। यदि शिक्षित लोग हरिजनोके पास जायेगे तो हज्जाम और धोबी भी, जो स्वभावसे सरल है, अवश्य जायेगे। वे जब यह देखेगे कि जिन लोगोको पैसेकी जरूरत नही है वे लोग हरिजनोके पास जाते है तो वे भी जायेगे। इसमे धर्मभ्रष्ट होनेकी कोई बात नही है। किसी भी सनातनीने मुझे यह नही कहा है कि हज्जाम, धोबी, डॉक्टर आदि हरिजनोकी सेवा नही कर सकते। ऐसी सेवा न करना धर्ममे कैसे शुमार हुआ, सो मै नही जानता। ऐसा जगलीपन जल्द ही दूर होना चाहिए।

[गुजरातीसे]
हरिजनबन्धु, १७-१२-१९३३

२९९. भाषण : बालोदा बाजारमें[1]

२५ नवम्बर, १९३३

गांधीजीने एक निजी मन्दिरको हरिजनोके लिए खोलनेकी घोषणा करते हुए कहा कि यह मन्दिर आज हरिजनोके प्रवेशके साथ ही ईश्वरका सच्चा आवास बन गया है। उन्होने हरिजनोसे कहा कि मन्दिरोमे जानेवाले सभी हिन्दुओपर जो तीन शर्ते लागू होती है उनका आप भी पालन करे। गाधीजीने कहा :

मै आपसे अनुरोध करता हूँ कि आत्म-शुद्धिके इस आन्दोलनमे आप अपना पूरा योगदान करे, पैसे देकर नही बल्कि अपने हृदय और शरीरको पूरी तरह स्वच्छ और निर्मल बनाकर तथा आपके बीच जो बुरी आदते घुस गई है उनको दूर करके। हालाँकि मै शर्मके साथ स्वीकार करता हूँ कि इनमे से बहुत-सी बुरी आदतोके लिए सवर्ण हिन्दू जिम्मेदार है, फिर भी आपको अपने हिस्सेका काम करना है यानी मुर्दा पशु और गायका मास खाना छोड देना है और सफाई तथा स्वच्छताके सामान्य नियमोका पालन करना है। ये नियम उन सभी हिन्दुओ पर लागू होते है जो हिन्दू मन्दिरोमे पूजा करनेका अधिकार चाहते है। यह तथ्य है कि कुछ सवर्ण हिन्दू मद्यपान करते

१ यह भाषण **हरिजन** मे "मन्दिर-प्रवेशकी शर्ते" शीर्षकसे प्रकाशित हुआ था।

है, किन्तु मै चाहूँगा कि इसके बावजूद आप मद्यपान भी छोड दे। आपको उनके दुर्गुणोकी नकल नही करनी है। मद्यपान एक अत्यन्त पतनकारी वस्तु है जो मनुष्यको पशु बना देती है। यह शरीर और आत्मा दोनोको दूषित कर देती है। यह नैतिक और घरेलू जीवन, दोनोको नष्ट कर देती है। इसलिए मै हरिजनोमे पूरे दिलसे अनुरोध करूँगा कि वे इस बुराईको छोड दे और सवर्ण हिन्दुओके सामने ही नही बल्कि सारी दुनियाके सामने एक उदात्त आदर्श प्रस्तुत करे।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, ८-१२-१९३३

३००. भाषण : विलासपुरमे[1]

२५ नवम्बर, १९३३

अगर आप जानते न हो तो अब जान ले कि जबसे मै दक्षिण आफ्रिका गया तभीसे मेरा मजदूरोसे गहरा सम्बन्ध रहा है। दक्षिण आफ्रिकामे, भारतमे या ससारके किसी भी भागमे, उन्होने मुझे अपना एक मजदूर-भाई माना है और अपना ही समझकर मेरा स्वागत किया है। आपको शायद यह जानकर अचम्भा होगा कि लकाशायरमे भी मजदूरोने महज ही मुझे अपनेमे से एक मान लिया और सैकडो-हजारोकी सख्यामे मुझे घेर लिया था। हमारे बीच एकमात्र अन्तर यह है कि मै अपनी पसन्दसे मजदूर बन गया हूँ जब कि आप परिस्थितिवश मजदूर बने है और अगर सम्भव हो तो शायद मालिक बनना चाहेगे। मैने मालिक बननेकी महत्वाकाक्षा शुरूमे ही छोड दी थी, क्योकि उस हालतमे मै एक छोटेसे वर्गका आदमी होता और कगालो, अनाथो, अधभूखो, नगो तथा सबसे छोटोके साथ तादात्म्य स्थापित नही कर सकता था, जैसा कि आज मै अपनी योग्यताके अनुसार करता हूँ। मै चाहता हूँ कि मजदूर अपनी स्थितिपर दु ख न माने, उससे घृणा तो हरगिज न करे और श्रमका गौरव समझे। यह सर्वथा उचित है कि आप हरिजनोके प्रति अपनी सहानुभूतिके चिह्नस्वरूप अपनी थैली भेट कर रहे है। उनके बराबर किसने कष्ट भोगे है? उनका स्तर हमारे समाजमे सबसे नीचा है। जिन भयकर मुसीबतो और अभावोमे होकर उन्हे गुजरना पडता है, उनकी कल्पना ऐसे लोगोको कभी नही हो सकती, जो उनके शिकार नही बने है। दूसरे मजदूर दौलत जमा करके किसी दिन मालिक बननेकी और इस प्रकार अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बढानेकी आकाक्षा रख सकते है। परन्तु हरिजन ऐसी महत्वाकाक्षा कभी नही रख सकते। उनपर तो अछूतपनका कलक माँके पेटसे ही लग जाता है। वे जन्मसे ही बहिष्कृत होते है और मृत्यु-पर्यन्त बहिष्कृत रहते है। उन्हे समाजसे बिलकुल अलग बस्तियोमे रहना पडता है और जीवनकी जो सुख-सुविधाएँ औरोको

१ यह भाषण विलासपुरमें बी० एन० रेलवे मजदूर-संघके सामने दिया गया था। **हरिजन** में यह दो भागोमें "महान समता-स्थापक" और "मानवताके नाम पर", इन पृथक् शीर्षकोसे प्रकाशित हुआ था।

प्राप्त होती है उनसे वे वचित रखे जाते है। ईश्वरकी मुफ्त देन पानी तक उन्हे नही मिलता। मै मजदूर-सघसे कहता हूँ कि वह हरिजनो और आपके बीचके तमाम भेदभाव मिटा दे। मै यह अपील विचारपूर्वक कर रहा हूँ, क्योकि अहमदाबादके मिल-मजदूरोके सीधे सम्पर्कमे आनेके कारण मै जानता हूँ कि मजदूर हरिजनो और गैर-हरिजनोके बीच भेदभाव जरूर रखते है। मै और सबकी अपेक्षा मजदूरोसे ये भेदभाव मिटा देनेकी अधिक आशा रखता हूँ। मेरी यह गहरी श्रद्धा रहती है कि हम किसी दिन मजदूरोके द्वारा साम्प्रदायिक एकता जरूर प्राप्त करेगे। मै श्रमको एकता पैदा करनेका जबरदस्त साधन मानता हूँ। वह महान समता-स्थापक है। मजदूरोमे साम्प्रदायिक आधारपर विभाजन होना शर्मकी बात है, क्योकि वे सब अपने पसीनेकी कमाई खाते है और इसलिए वे सब एक विशाल भ्रातृ-समाजके अग है। इसलिए वे अस्पृश्यताको सम्पूर्णत मिटाकर इसका आरम्भ करे। यह साम्प्रदायिक एकताकी दिशामे एक बडा कदम होगा। एक बार हरिजनोका अस्पृश्यताका कलक मिट गया कि हिन्दुओ, मुसलमानो और देशकी अन्य जातियोके बीच व्यापक एकताका रास्ता खुल जायेगा।

गांधीजीसे एक मुसलमान मित्रने पूछा कि आप एक राष्ट्र-नेता है, फिर आपने फिलहाल राष्ट्रके केवल एक वर्गके बीच ही काम करनेका फैसला क्यो किया है? इसपर गांधीजीने निम्नलिखित उत्तर दिया:

मै आज इस कामके जरिये सभी जातियोकी सेवा करनेका प्रयत्न कर रहा हूँ। ये सभी एक ही विशाल परिवारकी शाखाएँ है। मैने हिन्दू शाखामे एक ऐसा रोग देखा है जिसे यदि समय रहते दूर न किया गया तो वह सारे कुटुम्बमे फैल जायेगा और उसे नष्ट कर देगा। अस्पृश्यताकी बुराई अपनी निर्धारित मर्यादासे कही आगे तक बढ गयी है। अस्पृश्यताका हिन्दू समाजमे से समूल नाश करनेकी कोशिश करते हुए मै सभी जातियोकी सेवा करनेका प्रयत्न कर रहा हूँ। सम्मेलनोके जरिये साम्प्रदायिक एकता स्थापित करनेका तरीका हालाँकि विफल हो गया है, लेकिन अन्तत लोगोके बीच दिली एकता स्थापित होगी, इसकी ओरसे मै निराश नही हुआ हूँ। ईश्वरने यह काम मेरे पास भेजा है और मै इस विश्वासके साथ इसे कर रहा हूँ कि इसके जरिये साम्प्रदायिक एकताका रास्ता तैयार होगा। इसलिए मेरे विचारसे यह कार्य सारे राष्ट्रकी सेवा है। १९२०-२१ मे मैने हिन्दू-मुस्लिम एकताके लिए जो प्रयत्न किया था वह इतिहासमे लिखा जायेगा और जब कभी भी साम्प्रदायिक एकताका भवन खडा होगा तब वह उसकी नीव बनेगा। वह प्रयत्न मैने किया, इसका मुझे कभी कोई दु ख नही हुआ है। मेरे लिए वह कोई कार्यसाधक वस्तु नही थी। केवल काम सिद्ध करनेके खयालसे मैने कोई काम किया हो, इसका मुझको ज्ञान नही है। मैने हमेशा ऐसा माना है कि उच्चतम नैतिकता ही सबसे समयोचित साधन भी है। कुछ यूरोपीय मित्र मुझे विश्वास दिलाते है कि मै अस्पृश्यताके विरुद्ध यह लडाई समूचे समाजकी ओरसे लड रहा हूँ। एक बार यह नासूर हिन्दू-धर्ममे से निकल जाये, फिर तो हिन्दू, मुसलमान, और अन्य सभी लोग अपने विरोधोको भूलकर सगे

भाइयोकी तरह एक-दूसरेका आलिगन करेगे, और सभी जातियोके लोग अनुभव करेगे कि वे एक वृक्षकी शाखाएँ है।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, ८-१२-१९३३

३०१. पत्र : मार्गरेट स्पीगलको

रायपुर
२६ नवम्बर, १९३३

प्रिय अमला,

तुमने अपनी उँगलीको क्या कर लिया? द्वारकानाथजी कहते है कि तुमने खुदको चोट पहुँचा ली हैं। मै आशा करता हूँ कि तुम सामर्थ्यसे अधिक श्रम नही कर रही हो। मै चाहता हूँ कि तुम हर चीज आनन्दपूर्वक और बहुत धीरजके साथ करो।

ऐसा लगता है कि पहलेसे तय किये हुए अनुसार हम लोग १५ दिसम्बरको वर्धासे होते हुए गुजरेगे। इस कार्यक्रममे बादमे जो परिवर्तन किया गया था उसके अनुसार हम वर्धा छोड देनेवाले थे और कलकत्ता होते हुए जानेवाले थे। लेकिन अब पहलेवाला कार्यक्रम ही रखा गया है। पिछली बार तुमने स्टेशन न आकर जो आत्मसयम दिखाया था, उसकी तो मै कद्र करता हूँ, लेकिन इस बार यदि तुम्हे द्वारकानाथजीकी अनुमति मिल जाये तो मै चाहूँगा कि १५ तारीखको तुम आओ।

मै देखता हूँ कि तुम पहले जैसा कातती थी उसकी अपेक्षा अब बहुत अच्छा कातती हो और तुमने लच्छियाँ भी ज्यादा अच्छी और सफाईसे बनाई है। मुझे विश्वास है कि सही लगनसे करनेपर तुम ज्यादा बारीक, ज्यादा मजबूत और ज्यादा एकसार सूत निकाल सकोगी। आशा है, अब रुईकी बर्बादी भी कम होगी और चरखा बिगड जानेपर अब तुम उसे ठीक भी करना जानती होगी। मुझे आशा है कि तुम भी अपने जापानी मित्र जितनी ही खुश हो। तुम्हे जानकर आश्चर्य होगा कि वर्षो पहले, दक्षिण आफ्रिकामे जब मैने अपने हाथो अपने बाल काटे तो ऐसा लगने लगा कि जैसे उन्हे चूहोने कुतरा हो। मेरे वकील मित्रोने मेरा खूब मजाक बनाया। लेकिन मै उनके मजाकको बर्दाश्त कर गया, और अगली बार ज्यादा अच्छी कटाई कर सका। यही हाल तब हुआ जब मैने कमीजो और कालरोपर लोहा किया। मै यह घटना तुम्हे इसलिए नही बता रहा हूँ कि तुम अपना प्रयोग दोहराओ। तुम्हे अपने बाल किसी ऐसे नाईसे कटवाने चाहिए जिसे नियत वेतन मिलता हो, भले ही वह कितने ही सर मूँडता हो।

सप्रेम,

बापू

[अग्रेजीसे]

स्पीगल पेपर्स, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

३०२. पत्र : एम० बापी नीड़ुको

२६ नवम्बर, १९३३

प्रिय बापी नीड़ु,

कृपया सब कार्यकर्त्ताओसे कहे कि मै आन्ध्रदेशसे बडी-बडी चीजोकी आशा रखता हूँ, मोटी-मोटी रकमोकी ही नही बल्कि बहुत सारे शुद्ध हृदय और आत्म-त्यागी हरिजन-सेवकोकी भी।

हृदयसे आपका,
बापू

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ६-१२-१९३३

३०३. पत्र : जमनालाल बजाजको

रायपुर
२६ नवम्बर, १९३३

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। लक्ष्मीदासने जो लिखा है वह आनन्दीके कहनेपर लिखा जान पडता है। तुम्हे स्मरण है न कि आनन्दीको नाम भी मालूम हो गया था। लेकिन हमे उसकी चिन्ता नही। लक्ष्मीदास किसी बातका अनर्थ करेगा, सो बात नही है। मै तो जानता हूँ कि तुमने नाम प्रकट नही किया।

शहदके बारेमे द्वारकानाथको लिखा है। किसीके हाथ जहाँ भी आसानीसे शहद भिजवाया जा सके वहाँ शहदकी बोतल भेजनेको मैने लिखा है।

जबलपुरमे ५ तारीखको कार्यसमितिकी बैठक होगी, ऐसा जवाहरलालने लिखा है। लगता है कि उसे तुम्हारे बैठकमे भाग लेनेकी उम्मीद है। क्या तुम्हारा आनेका मन है? यदि न आनेका मन हो तो काम चला लूँगा। इच्छा हो तो अवश्य आना। इसका अर्थ यह हुआ कि तुम्हे ७ तारीखके बदले वहाँसे ३ या ४ तारीखको रवाना होना पडेगा। वहाँके तुम्हारे इतने दिन खराब जाये, यह बात मुझे निःसन्देह पसन्द नही है।

मथुरादास कल यहाँ आ रहा है। वह क्यो आ रहा है, सो मालूम नही।

मै देखता हूँ कि ओमकी बुद्धि बहुत तेज है। सादी तो वह है ही, शरीर भी अच्छा है। उसे सब-कुछ अच्छा लगता है। मै उसे थोडा-थोडा लिखनेका काम

भी देता हूँ। वह मेरे बगलमें ही सोती है। उसकी सोनेकी शक्ति भी बहुत है। वह सबकी प्यारी बन गई है।

जानकी मैया कुछ शान्त हुई है या नहीं? क्या कमलाका कामकाज ठीक चल रहा है? घूमती-फिरती है? मदालसा[1] और वत्सला[2] अपना समय कैसे व्यतीत करती हैं? इसके साथ मैं मणिलालका महत्त्वपूर्ण पत्र भेज रहा हूँ। इसे फाइलमें लगा लेना। इसमें गोसेवा संघके बारेमें लिखा गया है और आभूषणोंकी सूची दी हुई है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९२७) से।

३०४. पत्र : रमाबहन जोशीको

२६ नवम्बर, १९३३

चि० रमा,

मुझे पत्र लिखा जा सकता है। अब [तुम] वहाँ कैसे रहती हो — मानसिक और शारीरिक रूपसे? क्या हाथ तकलीफ देता है? विमु[3] कैसी है? क्या धीरूके पत्र आते हैं? नानाभाईका पत्र मिला होगा। चिन्ताका कोई कारण नहीं।

निर्मला जोशी[4] का पता क्या है?

छगनलालका पत्र मिला क्या? उसे मेरा लम्बा पत्र मिला अथवा नहीं, सो जाननेके लिए उत्सुक हूँ। विमुसे लिखनेके लिए कहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५३५८) से।

१. जमनालाल बजाजकी लडकी, श्रीमन्नारायणकी पत्नी।

२. वत्सला दास्ताने।

३. रमाबहन जोशीकी पुत्री, विमला।

४. केवलराम भीमजी जोशीकी पत्नी।

३०५. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

२६ नवम्बर, १९३३

चि० प्रेमा,

तेरे बारेमे सुशीला समाचार देती रहती है। दूसरोसे भी मालूम होता रहता है। मेरा पत्र तुझे मिल गया है, यह बहुत अच्छा हुआ। तूने क्या-कुछ खोया अथवा पाया, इसका सही अन्दाज तो तू बाहर निकलनेपर ही कर पायेगी। पर इसमे कोई सन्देह नही कि अनुभव अमूल्य है।

तेरे कार्यक्रमको मै समझ सका हूँ। तू अपनी तन्दुरुस्तीको बनाये रख सकी है, यह बहुत अच्छी बात है। इसकी चाबी तेरे हाथ थी और मै देखता हूँ कि इसका तूने उचित उपयोग किया है।

हरिजन सेवाके बारेमे क्या लिखूं? चल रही है। मै लोगोके असीम प्रेमका अनुभव कर रहा हूँ। मेरा शरीर भी खासा योगदान दे रहा है। मेरा वजन ११० पौड तक गया है। यह कोई ऐसी-वैसी बात नही है। चन्द्रशकर महादेवकी स्थानपूर्ति करनेका महान् प्रयत्न कर रहा है। मीराबहन तो यहाँ है ही। और रामनाथ है, जिसे तू नही जानती। इनके अलावा जानकीबहनकी ओम है। वह बहादुर लडकी है और उसकी बुद्धि भी सुन्दर है। ईश्वरने उसे सेहत भी अच्छी दे रखी है।

अब ज्यादा लिखनेका समय नही है। अन्य अनेक पत्र लिखने है। मै अधिकाश पत्र-व्यवहार मौनमे ही कर सकता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३५२) से। सी० डब्ल्यू० ६७९१ से भी, सौजन्य प्रेमाबहन कटक

३०६. पत्र : द० बा० कालेलकरको

२६ नवम्बर, १९३३

चि० काका,

तुम्हे जी-भर कर लिखा जा सके, ऐसी फुरसत मुझे मिल ही नही सकती।

[1]का पत्र देखकर मै हक्का-बक्का रह गया। क्या वह सचमुच पागल है? वह महिला बलात्कारके वश हो गई, ऐसा मानते हुए ही मुझे सकोच होता है, हालाँकि यह सम्भव है कि इसमे उसकी इच्छा न हो। और यद्यपि सच ही यह बलात्कार ही हो तो भी गर्भपात तो नही कराया जा सकता। उस महिलाको प्रेमपूर्वक बच्चेका पोषण करना चाहिए। हाँ, वह पतिसे अवश्य दूर रहे।

[2]

तुम्हारे दाँतका क्या हुआ?
क्या तुम्हे अभी भी कमरमे दर्द होता है?
खगोलकी तीन पुस्तके पहुँच गई है।
बाकी तो तुम्हे चन्द्रशकर लिखते ही होगे।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९४७५) से, सौजन्य द० बा० कालेलकर

३०७. पत्र : विद्या आर० पटेलको

२६ नवम्बर, १९३३

चि० विद्या,

अब तू कैसी है? मासिक-धर्म ठीक होता है? दस्त साफ होता है? स्राव होता है? रावजीभाईके पत्र आते है क्या? क्या खाती है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९६३५) से, सौजन्य रवीन्द्र आर० पटेल

१ नाम नहीं दिया गया है।
२ यहाँ एक अनुच्छेद दिया नही गया है।

३०८. पत्र : विद्या आनन्द हिंगोरानीको

२६ नवम्बर, १९३३

चि० विद्या,

तुमारा खत मिला। आनदको बहुत कम जेल मिली। उसको मेरे आशीर्वाद भेजो। श्वसुरका कुछ खत आया? सकोच छोड देगी तो कोई नोकरकी जरूरत नहि रहेगी। तुमको तो ईश्वरने पैसेकी कुछ छुट दी है लेकिन जिसके पास कुछ नहि है ऐसी माताका क्या? आस्ते आस्ते स्वावलबी बननेकी चेष्टा करो। महादेव भी उम्मरमे बढता जाता है। थोडे अरसेमे उसे बहुत मदद नहि चाहियेगी। अब तो कुछ प्रबन्ध हो पाया है ऐसा द्वारकानाथजी लिखते है। मखन तो बनानी है ना? कुछ न कुछ सेवाका कार्य किया करो और सबको सगे समझ कर रहो। चिता करना ही नहि, तकलीफ पडे तो मुझे शीघ्र लिखो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी माइक्रोफिल्म से, राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिगोरानी

३०९. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

२६ नवम्बर, १९३३

चि० ब्रजकृष्ण,

तुमारा खत मिला। मिलते ही मैने दा० अनसारीको तार दिया। वे मिले होगे। गीता पाठ सुनानेवाला कोई घरमे नहि कोई बहारसे मिलता नहि यह कैसी दयाजनक स्थिति। ऐसी हालतको पहोचनेके लिये तुलसीदासजीने रामनाम रूपी गीता हमको दी है। रामनाम कण्ठ करनेकी आवश्यकता नहि रहती, एक वखत लेनेसे कण्ठ हो जाता है। उसे तो हमारे हृदयगत करना है। रामनाम ही तुमारे लिये सच्चा औषध समजो। शरीर रहे तो कुटुबके छोटे छोटे बालक-बालिकाओको गीतापाठ सीखाना।

और क्या लिखुं? तुमारा स्मरण प्रतिक्षण चलता है। सुपुत्र होनेका अधिकार तुमने तो ले लिया है मै सुपिता कैसे बनूं?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४०२) से।

३१०. भाषण : राजकुमार कालेज, रायपुरमे[1]

२७ नवम्बर, १९३३

जब मुझे आपका निमन्त्रण मिला, तभी मेरे मनमे यह विचार उत्पन्न हुआ कि यदि स्वागत-समिति मेरे लिए थोडा-सा समय निकाल सके, तो मै यहाँके उन छात्रोको कुछ उपदेश करूँ, जिन्हे शिक्षा समाप्त कर चुकनेपर बहुत बडी जिम्मेदारी और भार अपने ऊपर लेना पडेगा। मुझे इसकी खुशी है कि स्वागत-समितिने इस समारोहके लिए घटेभरका समय निकाला। महोदय आपने मुझे यहाँ निमन्त्रित किया और इस प्रकार उन युवकोसे कुछ कहनेका अवसर दिया जो आपके कृपापूर्ण सरक्षणमे है, इसलिए मै आपको धन्यवाद देता हूँ। मेरे मेजबान शुक्लजी[2] को आपने पहले ही यह सन्देश भेजकर बहुत अच्छा किया कि मै चाहूँ तो हिन्दुस्तानीमे भाषण कर सकता हूँ, पर अग्रेजीमे भाषण करना अच्छा होगा। फिर मैने जब आपको चिट्ठी लिखी, तब आपने जवाब दिया कि यहाँके बहुतसे छात्र हिन्दुस्तानी नही समझते। तब फौरन मैने यह निश्चय किया कि अपने सामान्य नियमके विरुद्ध भी मै अग्रेजीमे ही भाषण करूँगा। आपके प्रिसिपलने मुझे अपने भाषणके लिए अनजाने ही मसाला भी दे दिया। राजकुमारो, आप लोगोको याद रखना चाहिए कि उत्तरोत्तर ज्ञान-वृद्धि और सचार-साधनोके विकासके इस युगमे आप स्वयको अपने अपेक्षाकृत बहुत ही छोटे राज्योकी सीमामे आबद्ध नही रख सकते। आपको अपना क्षेत्र व्यापक बनाना पडेगा और मुझे कोई सन्देह नही है कि परिस्थिति आपको ऐसा करनेको बाध्य करेगी। तो फिर सिर्फ अपने प्रान्तकी भाषा जाननेसे ही आपका काम न चलेगा, आपको यह भाषा भी सीखनी पडेगी, जिसका व्यवहार इस देशमे सबसे ज्यादा व्यापक रूपसे होता है। शायद आप लोगोको यह मालूम न हो, मुझे पूरा विश्वास है कि आपमे से सबको यह मालूम नही है कि इस देशके २२ करोड स्त्री पुरुष इतनी हिन्दी या हिन्दुस्तानी भाषाका ज्ञान रखते है कि उस भाषामे उन्हे जो-कुछ कहा जाये उसे वे समझ सके और अपना भाव भी उस भाषामे व्यक्त कर सके, चाहे उनकी हिन्दी टूटी-फूटी ही क्यो न हो। जैसी जिम्मेदारी आप लोगोपर आनेवाली है, वैसी जिम्मेदारीवाले किसी भी व्यक्तिका काम हिन्दी-जैसी व्यापक भाषा जाने बिना चलना सम्भव नही। हिन्दी भाषाके प्रति मेरे पागल प्रेमके पीछे भी ठोस कारण है। मै अग्रेजी भाषाका प्रेमी हूँ। किसी विदेशीके लिए जैसा सम्भव है वैसी अग्रेजी मै भी बोलना चाहूँगा और मै अग्रेजोके साथ होड करना चाहूँगा। वर्षो अग्रेजो और अग्रेजी बोलनेवालोके साथ रहनेसे ही मै थोडी-बहुत अग्रेजी सीख सका हूँ। सैकडो अग्रेज स्त्री-पुरुष मेरे

१ यह भाषण **हरिजन** में "देशी नरेश और अस्पृश्यता" शीर्षकसे छपा था।

२. रविशकर शुक्ल।

घनिष्ठ मित्र हैं। अतएव जब मैं आपसे यह अनुरोध करता हूँ कि हिन्दी सीखना आपका कर्त्तव्य है, तब आपको यह भ्रम नही होना चाहिए कि मुझे अग्रेजीसे कोई द्वेष है। मैं प्रिंसिपल महोदय और अन्य अध्यापकोसे भी अनुरोध करता हूँ कि वे इसपर विचार करे कि देशी नरेशोके लिए हिन्दी जानना कितना जरूरी है, क्योकि हिन्दी भाषाके द्वारा ही वे जन-साधारणके भारतको जान सकते हैं।

इसके साथ ही मैं अपने सन्देशके मुख्य मुद्देपर आता हूँ। जीवनके विविध क्षेत्रोमे हमे अग्रेजोका साथ होता है। अग्रेज शासकोकी नीति की आलोचना करनेके कटु कर्त्तव्यका पालन मुझे बार-बार करना पडा है। मैंने कभी अपने भाव छिपाये नही है। हृदयके सच्चे उद्‌गार मैंने प्रकट किये है। पर मैं पहले ही कह चुका हूँ कि सैकडो अग्रेज मेरे घनिष्ठ मित्र हैं। अग्रेजोके जो-कुछ अत्यन्त अमूल्य गुण है उन्हे मैं कभी भूल नही सकता। उनमे से एक गुण विशेष रूपसे मै आपको बताता हूँ। इग्लैंडमे बडे-बडे लोगोके यहाँ जो घरेलू नौकर रहते है, उनसे उनका परिवारवालोके समान ही सम्बन्ध होता है। जब मैं उनके घर गया तो मुझे यह देखकर बडा हर्ष हुआ कि उनमे और उनके नौकरोमे स्नेह-बन्धन है। वहाँ अस्पृश्यता नही है। जो मैं कह रहा हूँ, वह इग्लैंडके सैकडो बडे आदमियोके बारेमे बिलकुल सच है। जहाँ-जहाँ मैं गया, वहाँ-वहाँ मुझसे नौकरका परिचय कुछ हीन प्राणियोकी तरह नही बल्कि परिवारवालोकी ही तरह कराया गया। मैं चाहता हूँ कि आप भी अपने जीवनमे अग्रेजोके इस गुणको ग्रहण करे। दुर्भाग्यवश हम लोगोकी यह धारणा है कि राजा राजा है और वह कभी साधारण लोगोके साथ हिलमिल नही सकता। इसीका यह दुखद परिणाम है, भले ही आज यह कितना ही आवश्यक क्यो न हो, कि आप राज-कुमारोके लिए अलग स्कूल और कालेज बनाने पडते हैं। आप साधारण स्कूल-कालेजमे पढने जानेका साहस नही कर सकते। आपको शायद मालूम न हो कि सम्राट् एडवर्ड और वर्तमान सम्राट् — मैं गलत होऊँ तो कृपया सुधार दे — दोनोने जल-सेनामे मामूली नाविकका काम किया था और उस पदपर रहकर पिता-पुत्र दोनोने एक नाविकके जैसी कठिनाइयाँ झेली थी। क्या आप भी वैसा करेगे? आपको तो बहुत सहेज-सँभाल कर आराममे रखा जाता है और यह शिक्षा दी जाती है कि आपको ईश्वरने दैवी गुणोसे विभूषित किया है। आप विश्वास कीजिए कि आपमे और साधारण लोगोमे कोई अन्तर नही। अन्तर केवल इतना ही है कि आपको जो मौका मिलता है वह उन्हे नही दिया जाता। पर आपको जो अवसर मिले हैं, उनका यदि आप सदुपयोग न करे, तो ईश्वरके यहाँ आप दोषी ठहरेगे। आपको ध्यान रखना चाहिए कि शिक्षाका मुख्य अभिप्राय यही है कि आपमे जो गुण है उनका विकास हो। आप और मैं इस बातसे निश्चित ही सन्तोष प्राप्त कर सकते हैं कि हम सबमे अच्छा या बुरा बननेकी क्षमता समान रूपसे मौजूद है। इसलिए मुझे लगता है कि अगर आप भारतके गरीबोकी पीडा समझना न सीखेगे तो आपकी शिक्षा व्यर्थ है।

इसके साथ स्वभावत इस अस्पृश्यताके सवालपर आ जाते हैं। अस्पृश्यता जैसी बुराईको धर्मशास्त्र-सम्मत कहनेका जैसा दावा भारतके हिन्दू समाज द्वारा किया जाता

है वैसा दुनियामे अन्यत्र कही नही किया जाता। पर यदि आप अभी तक मुझसे सहमत है तो मै आशा करता हूँ कि आप हरिजनोको भी साधारण मानवसमाजका ही अभिन्न अग समझेगे। आपको हरिजनोके साथ भी अपनी एकताका अनुभव करना है। सम्भव है कि आपके माता-पिता इस बातको अस्वीकार करे कि अस्पृश्यता कोई बुरी चीज है। ऐसी स्थितिमे आपको प्रह्लाद जैसा सत्याग्रही बनना पडेगा। हिन्दू-धर्ममे जब प्राणि-मात्रको एक माननेकी शिक्षा दी गई है, तब मनुष्योको जन्मसे ऊँचा या नीचा मानना उसके अनुकूल हो ही नही सकता। ससारके सभी धर्मोको आज कसौटीपर कसा जा रहा है, विश्लेषणात्मक दृष्टिसे भी और साश्लेषिक दृष्टिसे भी। यदि हिन्दू-समाज अछूतपनको पकडे रहेगा, तो इसमे सन्देह नही कि हिन्दू-धर्म और हिन्दुओका लोप हो जायेगा। मै हिन्दू-धर्मको इसलिए मानता हूँ कि उससे मुझे पूरी शान्ति मिलती है और मैने पाया है कि आज जैसी अस्पृश्यता प्रचलित है, उसके लिए उसमे कोई स्थान नही है।

मैने यदि आपको अग्रेजोके गुण ग्रहण करनेको कहा है, तो अग्रेज मित्रोके प्रति आदर रखते हुए मै उनके दोषोसे बचनेको भी कहता हूँ। अमर सन्त-कवि तुलसीदासने अपने एक दोहेमे[1] बहुत गहरा सत्य कहा है। वह कहते है कि हमे हसोकी तरह बनना चाहिए, जो कि अच्छी बातोको बुरी चीजोसे अलग करके ग्रहण कर लेता है और बुराइयोको छोड देता है। इसलिए मै आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप अग्रेजोके दो दुर्गुणोमे कभी न फँसे। एक है शराब पीना और दूसरा है घुडदौडके रूपमे जुआ खेलना। बहुतेरे अग्रेज इन दोनो चीजोसे घृणा करते है। मैने देखा है कि इन दुर्व्यसनोकी बदौलत कितने ही अग्रेज परिवार बर्बाद हो गये है। बहुतेरे देशी नरेशोका भी इन दुर्गुणोके कारण सर्वनाश हुआ है। मै आशा करता हूँ कि आप लोग इन दोनो दुर्गुणोसे बचना सीखेगे।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, ८-१२-१९३३

१ जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि-बिकार॥
दोहेके पाठके लिए देखिए खण्ड ३४, पृष्ठ ५९४।

३११. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

२७ नवम्बर, १९३३

प्रिय जवाहरलाल,

यह रहा गासावीका पत्र। मै उन्हे लिख रहा हूँ कि मुझे पार्टीके मामलेमे कोई ऐतराज नही है बशर्ते कि उसे काग्रेस पार्टी नही माना जाता और यह कि उन्हे हर हालतमे तुम्हारी सलाह लेनी चाहिए।

मै देखता हूँ कि ५ दिसम्बरको हमे जबलपुरमे मिलना है। यदि तनिक भी सम्भव हुआ तो मै अधिक समय देनेकी कोशिश करूँगा।

क्या मैने तुम्हे मध्य-प्रान्तका कार्यक्रम नही भेजा है? अबतक उससे ज्यादा तैयार भी नही था।

तो तुम धीरे-धीरे शेयरो तथा ऐसी ही अन्य चीजोके भारसे मुक्त हो रहे हो। मुझे इसका दुःख नही है। मेरी दृष्टिसे तो आदर्श बात यह होगी कि तुम्हारे पास जितनी सम्पत्ति है उसे तुम स्वेच्छया या तो किसी सस्थाको दे दो या फिर परिवारके उन सदस्योको दे दो जो लडाईमे नही पडना चाहते। यह लडाई लम्बी चलनी है और शायद बराबर तेजतर ही होती जायेगी। आखिरी लडाईमे केवल वे ही खडे रह सकेगे जिनके पास कोई सम्पत्ति नही होगी और सर टेकनेका कोई ठौर नही होगा। लेकिन भविष्यके बारेमे चिन्ता करनेकी कोई जरूरत नही है। कुछ भी हो, तुम तो सबसे आगे ही रहोगे।

मुझे खुशी है कि माँकी हालत बराबर सुधर रही है। पता नही जो-कुछ हो रहा है उससे वह अवगत भी है या नही।

हाँ, हिन्दू सभाकी जो तुमने आलोचना की थी, वह मैने पढी तो थी। यह जरा कम तीखी हो सकती थी। उसका साराश पढनेपर तो ऐसा लगता था जैसे तुम्हारा रुख पक्षपातपूर्ण था।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च]

तारीखे तुम्हे साथमे लगे कार्यक्रममे मिल जायेगी।

[अंग्रेजीसे]

गाधी-नेहरू पेपर्स, १९३३, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

३१२. पत्र : दुनीचन्दको

२७ नवम्बर, १९३३

प्रिय लाला दुनीचन्द,

उत्तर देनेमे विलम्बके लिए क्षमा कीजिएगा। जब मै आपके जिलेमे यात्रा करूँगा उस समय मै ऐसा कोई और घर नही जानता जहाँ मुझे आश्रय मिलेगा। और फिर, आप अपनी कमेटी तो स्वय ही होगे इसलिए आपके जिलेमे मेरा भाग्य क्या होगा, इसका निर्णय तो आप ही करेगे।

यह एक ही पत्र आप और श्रीमती दुनीचन्द दोनोके लिए मानकर मै कुछ पैसे बचा रहा हूँ। उनको मेरे सग यात्रा करनेकी खुली छूट होगी। उन्हे बता दीजिए कि हमारा दल पहलेसे ही खूब बडा है और जिस घरमे हम जाते है वहाँ टिड्डियोकी तरह टूट पडते है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

लाला दुनीचन्द
कृपा निवास
अम्बाला सिटी
(पजाब)

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एम० ५५८४) से।

३१३. पत्र : दूधीबहन वी० देसाईको

२८ नवम्बर, १९३३

चि० दूधीबहन,

तुम्हारा पत्र मिला — मै इसकी बाट जोह ही रहा था। तुम्हारी तबीयत कैसी रहती है? मै देखता हूँ कि अन्य आश्रमकी लडकियाँ भी वही है। वे कौन-कौन है? उन सबकी देखभाल करना।

क्या तुम कुछ लिखती-पढती हो?

वर्धाका पता पीछेकी ओर देखो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ३१८८) से, सौजन्य वालजी गो० देसाई

३१४. पत्र : महेन्द्र देसाई और सुदर्शन देसाईको

२९ नवम्बर, १९३३

चि० मनु और मावो,

तुम दोनोके पत्र मिले। मैं तुम लोगोकी लिखावटसे अभी सन्तुष्ट नही हूँ। अक्षर सुधारो तो अच्छा होगा। मुझे पत्र लिखा करना। दौरेमे कई बार ऐसा महसूस होता है कि यदि तुम लोगोके साथ घूमता होता तो कितना अच्छा होता। छोटे बच्चोको लेकर चलनेमे मुझे निश्चय ही आनन्द होता है, और वह भी दाण्डी यात्राकी तरह पाँव-प्यादे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ३१६२) से, सौजन्य वालजी गो० देसाई

३१५. प्रत्येक सवर्ण हिन्दू याद रखे[१]

प्रत्येक सवर्ण हिन्दू याद रखे कि २५ सितम्बर, १९३२ को बम्बईमे पडित मदनमोहन मालवीयकी अध्यक्षतामे इसके प्रतिनिधियोकी जो सभा हुई थी उसने निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मतिसे पास किया था

> **यह सम्मेलन निश्चय करता है कि अब आगेसे हिन्दुओमे किसी व्यक्तिको उसके जन्मके कारण अस्पृश्य नही माना जायेगा, और जिन लोगोको अभीतक अस्पृश्य माना जाता रहा हैं उन लोगोको सार्वजनिक कुओ, सार्वजनिक स्कूलों, सड़को तथा अन्य सार्वजनिक संस्थाओका उपयोग करनेके मामलेमे वे ही अधिकार प्राप्त रहेगें जो अन्य हिन्दुओको प्राप्त है। इस अधिकारको पहला अवसर मिलते ही कानूनी मान्यता प्रदान की जायेगी, और स्वराज्य मिलनेसे पहले ही यदि इसे कानूनी मान्यता नही प्राप्त हो चुकी होगी तो स्वराज्य संसद सबसे पहले कानूनोमे से एक कानून इस सम्बन्धमे बनायेगी।**
>
> **यह भी स्वीकार किया जाता है कि इस समय तथाकथित अस्पृश्य जातियोपर जो परम्परागत सामाजिक निर्योग्यताएँ लदी हुई हैं, जिनमें कि**

१ इस लेखको **हरिजन** के ८, २२ और २९ दिसम्बरके अंकोंमें भी प्रकाशित किया गया था। देखिए खण्ड ५१, पृष्ठ १४८-९ भी।

मन्दिर-प्रवेश सम्बन्धी निषेध भी शामिल है, उन्हे प्रत्येक वैध और शान्तिपूर्ण तरीकेसे शीघ्र ही हटवाना सभी हिन्दू नेताओका कर्त्तव्य होगा।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १-१२-१९३३

३१६. टिप्पणियाँ

स्यालकोटके स्व० लाला गंगाराम

एक मित्रके पत्रसे मुझे स्यालकोटके लाला गगारामके स्वर्गवासकी खबर मिली है। वे ६० वर्षकी अवस्थामे इसी ४ नवम्बरको एकाएक दिलकी धडकन बन्द हो जानेसे परलोक सिधार गये। १९१९ मे लाहोरमे स्वर्गीय रामभजदत्त चौधरीके मकानपर उनमे मिलनेका मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मुझसे उनका परिचय एक हरिजन-कार्यकर्त्ताके रूपमे कराया गया था। हरिजन-सेवाके अर्थ उन्होने अपना जीवन अर्पण कर दिया था। उन्होने हरिजनोकी नई बस्तियाँ बसवाई थी। हरिजन-कार्यको निश्चय ही उनके निधनसे हानि पहुँची है। स्वर्गीय लाला गगारामके कुटुम्ब तथा उनके प्यारे हरिजनोके प्रति मै सवेदना प्रकट करता हूँ।

बर्बादी न की जाये

जो कोई चाहे उसे फूलोकी माला और गुलदस्ते भेट करनेका अवसर देकर स्वागत समितियाँ इस आदतको प्रोत्साहित करती रही है। मेरा जो दौरा दलितसे-दलित लोगोकी सेवाके लिए शुरू किया गया है, उसमे इस तरहकी भेटोसे समय और धन दोनोका ही अपव्यय-सा हो रहा है। अगर मालाएँ भेट करनी ही है तो वे सूतकी समूची लच्छियोके रूपमे हो, जिससे वे बुननेके काममे तो आ सके। बहुत-से हरिजन जुलाहे हाथके कते सूतके अभावमे बेकार बैठे है। वे मिलके कते सूतको नही बुनते। सबसे अच्छा तो यह होगा कि हार पहनाये ही न जाये और जहाँ बिना हारोके स्वागत-सत्कार अधूरा समझा जाये, वहाँ उन हारोके साथ पैसे भी रहे। वण गाँवसे हारोके साथ-साथ रुपये-पैसे देनेकी प्रथा चल पडी है, और अबतक दानकी जो रकम प्राप्त हुई है उसमे इस प्रकारकी भेटके कई सौ रुपये शामिल है। इस देशमे भूखे तथा तिरस्कृत लोगोके हाथमे एक पैसेका क्या अर्थ होता है, जनताको इसका विचार करना चाहिए। उडीसाके बेचारे बाढ-पीडित भूखे लोगोके लिए दानमे प्राप्त धनसे प्रत्येक व्यक्तिको कुछ भोजन मिलता है। जिन्हे सन्देह हो, वे हरिजनोके रहनेकी झोपडियाँ देख ले। वे हिंगनघाटमे जाकर नीचाईमे बसी हुई हरिजन-बस्ती देखे, जहाँ बरसातके दिनोमे गुजारा करना लगभग असम्भव है। तब वे यह बात समझ सकेगे कि हरिजनको दिये हुए एक-एक पैसेका कितना बडा मूल्य है। मै तो यही चाहता हूँ कि जनता अपना एक-एक पैसा बचाये और हरिजनोके

निमित्त मुझे दे दे। सवर्ण हिन्दुओंपर हरिजनोंका बड़ा भारी ऋण चढ़ा हुआ है। यह दान उस भारी कर्जेकी आंशिक अदायगी-स्वरूप होगा।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १-१२-१९३३

३१७. स्कूलकी पुस्तकें

इसमें तो मुझे कोई सन्देह ही दिखाई नहीं देता कि सार्वजनिक स्कूलोंमें जो पुस्तकें, खास तौरपर बच्चोंकी पुस्तकें, पढ़ाई जाती हैं वे चाहे हानिकर न होती हों, लेकिन ज्यादातर बेकार होती हैं। इस बातसे इनकार नहीं किया जा सकता कि उनमें से बहुत-सी किताबें चतुराईसे लिखी होती हैं। यह भी हो सकता है कि जिन लोगोंके लिए और जिस वातावरणको ध्यानमें रखकर वे लिखी गई हों उस दृष्टिसे वे उत्तम हों। लेकिन वे भारतीय बालक-बालिकाओंके लिए नहीं लिखी गई हैं और न ही भारतीय वातावरणको ध्यानमें रखकर लिखी गई हैं। इस प्रकारसे लिखी गई पुस्तकें सामान्यतः बिना सोचे-समझे की गई नकल मात्र होती हैं, जिनसे विद्यार्थियोंकी आवश्यकताएँ पूरी नहीं होतीं। इस देशमें, प्रान्तों और वर्गोंके अनुसार बच्चोंकी आवश्यकताएँ भिन्न-भिन्न हैं। उदाहरणके तौरपर, हरिजन बच्चोंकी आवश्य-कताएँ, कमसे-कम प्रारम्भिक अवस्थाओंमें, दूसरे बच्चोंसे अलग होती हैं।

इस कारण मैं तो इस नतीजेपर पहुँचा हूँ कि विद्यार्थियोंकी बनिस्बत शिक्षकोंके लिए पुस्तकें ज्यादा जरूरी हैं। और प्रत्येक शिक्षकको, यदि वह अपने विद्यार्थियोंके साथ पूरा न्याय करना चाहता है तो, उपलब्ध सामग्रीमें से दैनिक पाठ तैयार करना होगा। इसे भी उसे अपनी कक्षाकी विशेष आवश्यकताओंके अनुकूल बनाना होगा।

सच्ची शिक्षाका काम पढ़ने-लिखनेवाले लड़कों और लड़कियोंके उत्तम गुणोंको विकसित करना है। यह काम विद्यार्थियोंके मस्तिष्कमें अनापशनाप और अनचाही जानकारी ठूँस देनेसे नहीं हो सकता। इस तरहकी जानकारी एक बोझ बन जाती है जो बच्चोंकी सारी मौलिकता नष्ट कर देती है, और उन्हें यन्त्रवत बना देती है। अगर हम स्वयं इस प्रणालीके शिकार नहीं होते तो हम बहुत पहले ही यह अनुभव कर लेते कि सामूहिक शिक्षा देनेके मौजूदा तरीकेने कितना अनिष्ट किया है, विशेषकर भारतके मामलेमें।

बेशक बहुत-सी संस्थाओंने कम-ज्यादा सफलताके साथ अपनी पाठ्य-पुस्तकें खुद तैयार करनेके प्रयत्न किये हैं। लेकिन मेरी रायमें तो इन पुस्तकों द्वारा इस देशकी अत्यावश्यक जरूरतोंकी पूर्ति नहीं होती।

मैंने जिन विचारोंका यहाँ प्रतिपादन किया है उनके मौलिक होनेका मैं कोई दावा नहीं करता। उन्हें यहाँ हरिजन स्कूलोंके व्यवस्थापकों और शिक्षकोंके लाभके लिए दोहराया गया है, जिनके सामने एक जबरदस्त काम करनेको पड़ा है। वे महज इस प्रकारके यान्त्रिक कार्यसे सन्तुष्ट नहीं हो सकते जिसमें कि उनकी देखरेखमें

पढनेवाले बच्चे चाहे जैसी चुनी हुई पुस्तके बेमनसे और तोतेकी तरह सीखे। उन्होने बडी जिम्मेदारीका काम हाथमे लिया है जिसे उन्हे साहस, बुद्धि और ईमानदारीके साथ पूरा करना है।

काम काफी मुश्किल है लेकिन इतना मुश्किल नही जितना लगता है, बशर्ते कि शिक्षक या व्यवस्थापक इस काममे अपना पूरा दिल लगा दे। यदि वह अपने विद्यार्थियोके लिए पितावत बन जाये तो वह सहज ही जान लेगा कि उनकी आवश्यकताएँ क्या है, और वह उन्हे पूरी करनेमे लग जायेगा। अगर उसमे वह देनेकी योग्यता नही है जो बच्चोके लिए आवश्यक है, तो वह वैसी योग्यता प्राप्त करनेकी कोशिश करेगा। और यह देखते हुए कि हमने शुरुआत इस खयालसे की है कि लडके-लडकियोको उनकी आवश्यकतानुसार शिक्षा दी जानी है, हरिजन बालको अथवा अन्य बच्चोके शिक्षकमे किसी असाधारण चतुराई अथवा बाह्य ज्ञानका होना जरूरी नही है।

और अगर इस बातको ध्यान रखा जायेगा कि सारी शिक्षाका मूल उद्देश्य विद्यार्थियोके चरित्रका निर्माण करना है अथवा होना चाहिए, तब जिस शिक्षकके पास चरित्र है उसे तो हिम्मत हारनेकी जरूरत ही नही है।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १-१२-१९३३

३१८. नरक नहीं, महानरक

उडीसाके एक हरिजन-सेवकने बालासोर जिलेमे भद्रकके समीपकी कुछ हरिजन बस्तियोको देखनेके बाद उनका बडा सजीव वर्णन मेरे पास भेजा है[1]

यदि मलेरिया, प्लेग और हैजा हमेशा हमारे यहाँ डेरा डाले रहते है तो भला क्या इसमे कोई अचरजकी बात है? जबतक हम समाजके इस उपयोगी वर्गकी उपेक्षा करते रहेगे, गन्दीसे गन्दी जगहोमे उन्हे रखेगे और जबतक इस अस्पृश्यता-रूपी राक्षसीके कारण उन्हे उनके काम-धन्धोको उचित और अच्छे तरीकेसे करने की शिक्षा नही देगे, तबतक इन बीमारियोसे बचना असम्भव है। देशके तमाम कार्यकर्त्ताओको मेरी सलाह है कि जहाँ कही वे ऐसा 'नारकीय स्थल' देखे, उसे नेस्तनाबूद करनेकी वे जी-तोड कोशिश करे। यह देखकर, कि यह तो एक भगीरथ कार्य है, हमे हिम्मत नही हारनी चाहिए। यदि प्रत्येक व्यक्ति सामने आये कामको लगनके साथ करे तो स्थिति अपने-आप सुधर जायेगी। इसलिए मै भद्रकके हरिजन-सेवकोको सलाह दूंगा कि वे

१ यह पत्र यहाँ नही दिया गया है। पत्र-लेखकने हरिजनोंकी बस्तीकी दुर्दशा, वहाँकी गन्दगी, दुर्गन्धपूर्ण वातावरण और बरसातके पानीसे भरी गलियों और चारो ओर फैली कीचडका सविस्तार चित्रण करते हुए गांधीजीके २३-९-१९३३ वाले "एक और नरक" शीर्षक लेखका जिक्र किया था और लिखा था कि यदि आप यह बस्ती देख लें तो आप इसे 'महानरक' बतायेंगे।

बस्तीके सुधार की एक सादी-सी योजना और बजट तैयार करके यहाँके व्यापारियोके पास ले जाये और समतल जमीनको ठीक करके वे पन्द्रह घरोको नये सिरेसे बना डाले। इसमे कुछ बहुत खर्च नही होगा। मुझे इसमे सन्देह नही कि अगर उचित प्रयत्न किया जायेगा, तो योजनाको कार्यरूप देने लायक पैसा वे जमा कर सकेगे। दानियोको मालूम होगा कि वे अपने दानके पैसेको एक स्वास्थ्य-वृद्धिकारी काममे लगा रहे है। यह तो उनके लिए अपने घरके आँगनको व्यवस्थित करनेके समान होगा।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १-१२-१९३३

३१९. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

इटारसी
१ दिसम्बर, १९३३

भाईश्री वल्लभभाई,

इटारसीकी धर्मशालामे सवेरे सवा तीन बजे मै यह पत्र लिख रहा हूँ। मीराबहन मुँह धोने गई है। बादमे प्रार्थना होगी। उसके तुरन्त बाद करेलीके लिए ट्रेन पकडनी है और वहाँसे हमे अनन्तपुर जाना है। अनन्तपुरमे जेठालाल[1] काम करते है। कल हम बैतूलमे थे और वहाँसे ट्रेन द्वारा इटारसी आकर सभा की और धर्मशालामे सोये।

तुम्हारा पत्र मिला है। 'टाइम्स ऑफ इडिया' मे जो-कुछ लिखा जा रहा है उसका हम कहाँ तक प्रतिरोध करे? तथापि मुझे जो सूझता है वह तो मै करता ही रहता हूँ। आजकल तो समाचारपत्र पढनेको कम ही मिलते है। हरिजनोके हमारे इस कार्यको हरि (भगवान) देखते रहते है, मुझे तो ऐसा ही प्रतीत होता है। जो शक्ति हर जगह से लाखो मनुष्योको खीचकर ले आती है वही शक्ति झूठका भी पर्दाफाश करेगी। हम यदि कोई गफलत न करे तो समझो कि गगा नहाये।

मुझे मालूम है कि तुम्हारी आत्मा हर समय मेरे साथ लगी रहती है। कौन जाने वही मेरी रक्षा नही करती हो? तुम्हारे हृदयमे माँ का प्रेम है, इस बातका अनुभव क्या मैने यरवडामे प्रतिक्षण नही किया? तुम्हारे पत्रोमे भी तुम्हारा यह गुण जहाँ-तहाँ लक्षित होता है, और यह गुण सर्वव्यापी है, यह भी मैने देखा है। और इसीलिए तुम वहाँ बैठे-बैठे सावधानीपूर्वक हम सभीकी देखभाल करते ही रहते हो।

मेरी चिन्ता न करना। जो हो रहा है, उसकी चिन्ता भी न करना। यह भगवानका कार्य है। "बिगरी कौन सुधारे नाथ (बिन) बिगरी कौन सुधारे।"

१ जेठालाल गोविन्दजी सम्पत। देखिए "अनन्तपुरमें मैंने क्या देखा?" १५-१२-१९३३।

अब हम ट्रेनमे है। मै समझता हूँ कि नाककी तकलीफके लिए जो उपचार करना जरूरी होगा सो तुम अवश्य ही करोगे।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृष्ठ ४९-५०

३२०. टिप्पणी : इटारसीकी धर्मशालाके सम्बन्धमे

१ दिसम्बर, १९३३

इस धर्मशालेमे हम लोगोको आश्रय दिया गया इसके लिये हम सब सचालकोका आभार मानते है। यह जानकर कि स्वच्छतासे रहनेवाले हरिजनोको भी स्थान मिलता है बहुत हर्ष हुआ।

मो० क० गाधी

मध्यप्रदेश और गांधीजी, पृष्ठ ११७ पर प्रकाशित अनुप्रति से।

३२१. पत्र : मार्गरेट स्पीगलको

२ दिसम्बर, १९३३

चि० अमला,

तुम्हारा पत्र मिला। इसमे सत्यवादिता है, इसलिए मै इसे अच्छा कहता हूँ। मै जानता था कि तुम अपने-आपको और मुझे धोखा दे रही थी। क्या अब तुम मुझे बताओगी कि तुम्हारी प्रकृतिकी क्या माँग है? यदि उसकी यही माँग हो कि तुम मेरे पास रहो, तो इसे सन्तुष्ट नही किया जा सकता। यदि उसकी महज यह माँग हो कि तुम अध्यापन-कार्य करो और ऐसा जीवन व्यतीत करो जो अधिकाश यूरोपीयोके लिए स्वाभाविक है, तो मै सफलताकी आशा रखते हुए तुम्हारी मदद करनेकी कोशिश करूँगा। जब जमनालालजी वापस लौटे तब तुम्हे उनके साथ सलाह करनी चाहिए। इस बीच तुम द्वारकानाथजीसे सलाह लो। तुम्हे स्थिरचित्त और बहादुर बनना चाहिए। मृत्युकी इच्छा करना कायरता है। तुम्हारे आसपास ऐसा कोई व्यक्ति नही है जो तुम्हे दबाकर रखना चाहता हो। तुमने अपने सामने कठिनाइयोका एक पहाड ही खडा कर लिया है। तुम्हे निश्चयपूर्वक अपना चुनाव करके उसपर अमल करना चाहिए।

अब सुबहके साढे तीन बज रहे है। मै हमेशाकी तरह सुबह ३ बजे उठता हूँ। हाथ-मुँह धोनेके बाद ही मैने तुम्हारा पत्र पढा और यह पत्र लिखने लगा। तुम्हे बुद्धिमान और आश्वस्त बनना चाहिए।

सप्रेम,

बापू

[अग्रेजीसे]

स्पीगल पेपर्स, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

३२२. पत्र : विद्या आनन्द हिंगोरानीको

२ दिसम्बर, १९३३

चि० विद्या,

तमारी मानसिक स्थिति अच्छी होगी। घूमनेके लिये जाती है? क्या खाती है? परीक्षाका लोभ छोडो लेकिन पढनेका लोभ मत छोडो। जो समय मिले उसमे हिंदी अच्छा बना लो। और हिंदी पक्का होनेसे इग्रेजीपर जोर देना आज भी करो सही लेकिन प्रथम स्थान हिंदी को दो। दा० चोइतरामको मेरा खत मिल गया था? कुछ पता है?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे, सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिगोरानी

३२३. भाषण : सागरमे

२ दिसम्बर, १९३३

यह मेरे तथा मेरे अनुष्ठान और हरिजन-सेवाकार्यके लिए एक शुभ लक्षण है कि मेरे लिए लोग इतनी बडी तादादमे आये है। मुझे विश्वास है कि वे वाकई हिन्दू समाजसे अस्पृश्यताके अभिशापको निकाल देना चाहते है। परमात्माकी आँखोमे सब बराबर है और सबोको सार्वजनिक कुओ, पाठशालाओ और मन्दिरोके उपयोगका समान अधिकार है। वर्तमान आन्दोलनका उद्देश्य आत्मशुद्धि है और किसीको अपनेको ऊँचा या नीचा नही समझना चाहिए।

भारतमे अस्पृश्यता जिस रूपमे प्रचलित है वैसी किसी दूसरे देशमे नही मिलती तथा 'मनुस्मृति' मे भी इसका समर्थन नही किया गया है। मै नास्तिक नही हूँ। मुझे ५० सालका अनुभव है, और ऐसा भेदभाव मैने कभी नही माना है।

सनातनियोके एक लम्बे पत्रका उत्तर देते हुए उन्होने कहा कि मैने अधर्मका पालन नही किया है। अगर मै ऐसा करता तो मै ईश्वर, मनुष्य, दोनोकी ही ऑखोमे दोषी ठहरता।

अगर मै अकेला भी रह गया तो भी मै इसी बातका उपदेश दूँगा।

आगे बोलते हुए उन्होने श्रोताओको यह सलाह दी कि आप सनातनियोका अपमान न करे या उन्हे ठेस न पहुँचाये, बल्कि उन्हे वैसा ही प्यार करे जैसे माँ अपने बच्चेको प्यार करती है। मेरा यह दृढ विश्वास है कि एक दिन ऐसा आयेगा जब सनातनी भी मेरे साथ हो जायेंगे।

हरिजनोको सम्बोधित करते हुए उन्होने कहा कि आप लोग सफाईकी आदत डाले तथा मुर्दार मांस खाना छोड़ दे और मद्य-पानका त्याग करे। उन्होने ईश्वर-प्रार्थनाकी प्रभावकारितापर जोर दिया और हरिजनोको रोज सवेरे हिन्दीमे प्रार्थना करनेकी सलाह दी, क्योकि प्रार्थनाके लिए सस्कृतका ज्ञान कोई जरूरी नही है। गाधीजीने अपने ५० सालके अनुभवका उदाहरण सामने रखते हुए बताया कि किस प्रकार सकटके क्षणोमे ईश्वरने मेरी मदद की है। उन्होने कहा कि मन्दिरोमे जानेके लिए आपको पहले स्नान करना चाहिए और साफ-सुथरे कपड़े पहनने चाहिए।

[अग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, ८-१२-१९३३

३२४. भाषण: जबलपुरकी सार्वजनिक सभामे

३ दिसम्बर, १९३३

यदि ऊँच-नीचके भेदको समूल नष्ट कर देनेका यह प्रयत्न सफल हो जाता है तो जीवनके सभी क्षेत्रोमे इसकी स्वस्थ प्रतिक्रिया होगी और पूँजी और श्रमके बीच लडाई खत्म हो जायेगी और उसके स्थानपर दोनोमे सहयोग और एकता स्थापित हो जायेगी।[1] यदि हमने अस्पृश्यताके विरुद्ध इस लडाईके सारे फलितार्थोको समझ लिया है तो हमे यह जाननेमे कोई कठिनाई नही होगी कि जन्मपर आधारित अस्पृश्यता तो उस अभिशापके असख्य रूपोमे से मात्र एक रूप है। वैसी स्थितिमे स्वतन्त्रता और साम्प्रदायिक एकताका जो लक्ष्य मुझे अत्यन्त प्रिय है उसको हम ज्यादा अच्छी तरह पूरा कर सकेगे। इस आन्दोलनमे मेरा विश्वास दिन-ब-दिन बढता जा रहा है। मुझे दृढ विश्वास है कि यदि हम हिन्दू-धर्मसे अस्पृश्यता समाप्त करनेमे सफल हो जाते तो आज भारतमे जो हम वर्गों और सम्प्रदायोके बीच लडाई देख रहे है वह खत्म हो जायेगी। हिन्दू और मुसलमानोके बीच तथा पूँजी और श्रमके बीचका मतभेद समाप्त हो जायेगा। एक बार हृदय शुद्ध हो गये तो हार्दिक एकताकी स्थापनाके

१ स्थानीय श्रमिकसघ द्वारा भेंट किये गये अभिनन्दनपत्रमें यह पूछा गया था कि गाधीजी मजदूरोकी दशा सुधारनेके लिए और उनको पूँजीपतियोके शोषणसे बचानेके लिए काम क्यो नही करते।

मार्गमे जितनी कठिनाइयाँ है उनपर पार पाना सरल हो जायेगा। इस समय हम समस्याके जिस पहलूका सामना कर रहे है उससे लडाईकी सारी सम्भावनाएँ समाप्त नही हो जाती। आज हिन्दू-धर्ममे अस्पृश्यता जिस रूपमे प्रचलित है वह सारे पहलुओमे सबसे खराब है। धर्मके छद्म नामसे चलनेवाली अस्पृश्यताने मनुष्यके हाथो मनुष्यके पतनमे सबसे ज्यादा योग दिया है। मै कह चुका हूँ कि अस्पृश्यता एक असख्य सिरोवाला दानव है जो विभिन्न आकृतियो और रूपोमे दृष्टिगोचर होता है, और इनमे कुछ तो इतने सूक्ष्म है कि उन्हे आसानीसे पहचाना भी नही जा सकता। अस्पृश्यताकी कई श्रेणियाँ है। अपने जीवनके सध्याकालमे जब मैने इस सघर्षको हाथमे लिया और इस काममे अपनी पूरी ताकत लगा देनेका निश्चय किया, उस समय मै इन सब फलितार्थोसे परिचित था।

सभी सच्चे स्काउटोको मेरा आशीर्वाद है,[1] ससारके बहुतसे भागोकी यात्राओके दौरान मै हजारो ब्वॉय स्काउटोके सम्पर्कमे आया हूँ। सच्चे स्काउट बहादुर, दूसरेका ध्यान रखनेवाले, शिष्ट और होशियार होते है। उन्हे अपने कर्त्तव्यके प्रति पूरी तरह जागरूक होना चाहिए। देशके असख्य मेलोमे जहाँ लाखो लोग इकट्ठे होते है, वे व्यवस्था बनाये रखनेका काम करते रहे है। मै यह भी चाहूँगा कि वे अपना कुछ समय हरिजनोकी सेवामे भी लगाये। जो भी व्यक्ति हरिजनोके घरोको मेरी आँखोसे देखेगा उसे विश्वास हो जायेगा कि जो लोग सेवा करनेके इच्छुक है और जिनमे इसकी क्षमता है उन लोगोके लिए वहाँ काम करनेकी काफी गुजाइश है। इस काममे कोई असाधारण बुद्धिमानी की आवश्यकता नही है। सिर्फ जिस एक चीजकी आवश्यकता है वह है हरिजनोके साथ तादात्म्य स्थापित करने की।

इस मार्गमे अडचनोका कोई अन्त नही है, लेकिन एक भी अडचन ऐसी नही है जिसकी कोई दवा न हो। किसी धार्मिक आन्दोलनकी तो खूबसूरती ही इस बातमे है कि इसकी प्रगतिमे बाधा डालनेवाली सारी कठिनाइयाँ अपने-आप दूर हो जाती है। ईश्वर स्वय रास्ता साफ कर देता है। रास्ता तो वही दिखाता है, हम तो उसके हाथ की कठपुतलीमात्र है। यदि हम ईश्वर और मनुष्यके प्रति चले आ रहे इस युगो-पुराने पापके विरुद्ध लडनेके लिए कमर कस ले तथा शास्त्रोने जो नियम निर्धारित किये है और पुराने ऋषियोने जिनका अनुसरण किया है, उन नियमोका पूरी तरह पालन करे, तथा अपने इस काममे नम्रतापूर्वक ईश्वरसे सहायताकी प्रार्थना करे तो निश्चय ही ईश्वर हमपर कृपालु होगा। इन नियमोकी माँग है कि सत्य और अहिसाका पूरी तरह पालन किया जाये तथा अधिकमे-अधिक त्याग और कष्ट-सहन किया जाये। यदि हममे ये सब चीजे है, और इससे भी ऊपर, अपने विरोधियोके लिए दयाकी भावना और सद्भावना है, तो कठिनाइयाँ चाहे कितनी भी ज्यादा क्यो न हो, निश्चित ही दूर हो जायेगी।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १५-१२-१९३३

१ नेशनल ब्वॉय स्काउट्सने गाधीजीको एक अभिनन्दनपत्र भेंट किया था।

३२५. तार : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

जबलपुर
४ दिसम्बर, १९३३

ब्रजकृष्ण चाँदीवाला
कटरा खुशालराय
चाँदनी चौक, दिल्ली

तुम्हारा तार और पत्र मिले। मै अन्मारीसे सलाह-मशविरा कर रहा हूँ। ईश्वर तुम्हे सुखी रखे। बादमे तार दूँगा। सप्रेम।

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २४०३) से।

३२६. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

जबलपुर
८ दिसम्बर, १९३३

भाई वल्लभभाई,

कल रात हम जबलपुर पहुँचे। अब ६ ३० वजे है। तुम्हारा पत्र कल कटनीमे मिला। मै अनन्तपुरका काम देख आया हूँ। सब कुछ ठोस है, इसलिए उसकी गति धीमी है। जेठालाल जबरदस्त कार्यकर्त्ता है।

गोरधनभाई मेरे व्यवहारसे बहुत अप्रसन्न है। मै उन्हे सन्तुष्ट करनेका प्रयत्न तो कर रहा हूँ। उनका विचार विदेशमे पैसा खर्च करनेका है। मैने वैसा करनेमे इनकार कर दिया है। वसीयतनामेके बारेमे अभी उन्होने मुझसे पूछा नही है। यदि वे पूछेगे तो तुमने जो लिखा है उसे मै सहज ही याद रखूँगा। यह सब-कुछ विचित्र तो लगता ही है। लेकिन जो हमने सुना है यदि वैसा ही हुआ हो तो मुझे आश्चर्य नही होगा। जो सच होगा वह सामने आ जायेगा। आज बडे लोगोके आनेकी सम्भावना है। मै देखता हूँ कि कल सब मिलेगे।[1] हमारे रहनेका प्रबन्ध अलग-अलग स्थानपर होगा। 'बुवाजी' भी आ रही है। कदाचित् अन्सारी भी आये।

ब्रजकृष्ण मृत्युशय्या पर है। उपवासके समय उन्होने मेरी अनन्य भावसे सेवा की थी, यह बात तो तुम जानते ही हो। उनकी खबर लेता रहता हूँ। सेवा-शुश्रूषा हो रही है। डा० अन्सारीका तार मिला है कि कदाचित् वह बच जायेगे।

१- जबलपुरमें कांग्रेस कार्यकारिणी समितिकी एक अनौपचारिक बैठक होनेवाली थी।

महादेवको साथी[1] मिलनेका समाचार तो मुझे तुमसे ही मालूम हुआ। (छगनलाल) जोशी सानन्द है। बा की खबर कल यहाँ आनेके बाद ही मिली, ठीक हुआ।

हरिजन-सेवाका कार्य अच्छी तरहसे चल रहा है। अभीतक तो सब-कुछ ठीक ही चल रहा है, ऐसा कहा जा सकता है।

तुम दोनोको,

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृष्ठ ५०-१

३२७. पत्र : गोदावरीको

४ दिसम्बर, १९३३

चि० गोदावरी[2],

आया हू तबसे तुमको मिलनेके लिये तरस रहा हू। प्रात काल मे मुझे राजेद्रसिहने[3] पूछा और मैने ८ बजे आनेका कहला भेजा। लेकिन दिल चाहे तब आनेका तुमको पूरा अधिकार है।

बापुके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ९६७० से।

३२८. पत्र : मार्गरेट स्पीगलको

५ दिसम्बर, १९३३

चि० अमला,

यह पत्र सुबहकी प्रार्थनाके समयसे पूर्व लिखा जा रहा हे। मुझे तुम्हारा अगला पत्र भी मिल गया है। मुझे खुश करनेके लिए तुम्हे मुझसे बाते छिपानी नही चाहिए या अस्वाभाविक काम नही करने चाहिए। खुश करनेका यह तरीका गलत होगा। बिलकुल स्वाभाविक रहकर तुम मुझे ज्यादा खुश रख सकोगी। तुम्हारा अपना कमरा काफी अस्तव्यस्त है। तुम अपनी उँगलीपर ध्यान नही दे रही हो। अब जरूरी है

१ गिरधारी, जे० बी० कृपालानीके भाईके पुत्र।
२ सेठ गोविन्ददासकी पत्नी, जिन्हें १९३२ में गाधीजीने बेटीके रूपमें स्वीकार कर लिया था।
३ जबलपुरमें गाधीजी इनके अतिथि थे।

कि तुम चगी हो जाओ। यदि तुम वहाँ अच्छी नही हो सकती हो तो तुम्हे पहाडपर चले जाना चाहिए।

सप्रेम,

बापू

[अंग्रेजीसे]

स्पीगल पेपर्स, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

३२९. भाषण : माण्डलाकी सार्वजनिक सभामे[1]

६ दिसम्बर, १९३३

मै कह चुका हूँ कि जो लोग इन सभाओमे केवल इसलिए आते है क्योकि वे मेरी राजनैतिक सेवाओके प्रशसक है, इसलिए नही कि वे अस्पृश्यता-निवारणमे विश्वास करते है, वे लोग स्वय अपने-आपको और मुझे धोखा देते है। मै ऐसी सभाओमे केवल उन्ही लोगोको जानेका निमन्त्रण देता हूँ जो या तो इसके समर्थक है या विरोधी, और विरोधियोको उसी हालतमे जबकि वे विरोध प्रकट करना चाहते हो। मै चाहता हूँ कि आप अपने प्रति सच्चे रहे और यदि इस मामलेमे आप मुझसे सहमत न हो तो मुझे ठुकरा दे।

पडितोके दो दल है जिनकी शास्त्रोकी व्याख्या एक दूसरेसे भिन्न है। वैसी हालतमे साधारण मनुष्यको ईश्वर-प्रदत्त अपने ज्ञानका उपयोग करके दोनोमे से एकको चुनना पडता है।[2] मैने देखा है कि अस्पृश्यता न तो बुद्धिको और न हृदयको ही ठीक लगती है। हृदयकी मूल प्रेरणा तो पापीके प्रति दया और सहानुभूति प्रकट करनेकी ही होती है। मन्दिर पापियोके लिए बने हुए है जहाँ जाकर वे अपने पाप धो सकते है। एक मुक्त और निष्पाप प्राणीके लिए जो सर्वत्र ईश्वरके दर्शन करता है, मन्दिरोका क्या उपयोग है? यदि आप ऐसा समझते है कि हरिजनोकी आज जो दुर्दशा है वह उनके पिछले पापोका फल है तो आपको यह मान लेना चाहिए कि उन्हे मन्दिरोमे सबसे पहले पूजा करनेका अधिकार है। ससारके सभी धर्म-ग्रथोमे ईश्वरको पापियोका रक्षक और उद्धारक कहा है।

शास्त्रोमे अस्पृश्यताका उल्लेख एक विशेष अर्थमे है। मनमे उठनेवाले काम और क्रोध आदि बुरे विचार ही वास्तविक अस्पृश्य है। शास्त्रोकी व्याख्या इस रूपमे

१ इससे पहले सभामें गाधीजीकी आज्ञासे एक सनातनी स्वामीका भाषण हो चुका था। उन्होने अपने भाषणमें इस बातपर जोर दिया था कि गाधीजीको श्रद्धाजलि देनेके लिए जो असख्य लोग आते है वे उन्हें एक राजनीतिक नेता मानकर आते है, न कि इसलिए कि वे अस्पृश्यता-सम्बन्धी उनके विचारोसे सहमत है।

२ जो मानपत्र भेंट किया गया था उसमें सुधारवादी शकर तथा कर्मकाण्डी मण्डनमिश्रके बीच हुए वाद-विवादका उल्लेख था जो प्राचीन विद्या-केन्द्र, महिष्मतीमें, जो अब माण्डलामें है, सम्पन्न हुआ था।

करना जिसमे कि आज हम जो भेदभाव बरतते है, वे शास्त्रसम्मत प्रतीत हो, शास्त्रोका दुरुपयोग करना है। एक सच्चा धर्मनिष्ठ व्यक्ति अपनेको पापी और इसीलिए अस्पृश्य मानेगा। हमने अपने अहकारवश अबतक शास्त्रोकी गलत व्याख्या की है, और जो चीज पाप है उसे धार्मिक सिद्धान्त का दर्जा दे दिया है। मै अपनेको सच्चा सनातनी मानता हूँ, क्योकि मै सत्यको जिस रूपमे देखता हूँ उस रूपमे उसका पालन करनेके लिए यथाशक्ति जितना प्रयत्न कर सकता हूँ उतना करता हूँ। ससारमे विविधता तो निश्चित रूपसे है, लेकिन इसका अर्थ न तो असमानता है और न अस्पृश्यता ही। हाथी और चीटी एक जैसे नही है। किन्तु ईश्वरका कहना है कि उसकी आँखोमे वे दोनो बराबर है। समस्त जीवोमे भीतरी एकता व्याप्त रहती है। रूप अनेक है, लेकिन उनके अन्दर मौजूद आत्मा एक है। जहाँ ऊपरसे दिखनेवाली विविधतामे ऐसी सर्वग्राही मौलिक एकता अन्तर्निहित हो वहाँ ऊँच और नीचके भेद की गुँजाइश कैसे हो सकती है? यह एक ऐसा तथ्य है जिससे आपका दैनिक जीवनमे पग-पग पर सामना होता हे। सब धर्मोका चरम लक्ष्य इस मूल एकताकी स्थापना है।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १५-१२-१९३३

३३०. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

७ दिसम्बर, १९३३

कस्तूरबा गाधीको
मो० क० गाधीकी ओरसे
यरवडा जेलके जेल-अधीक्षककी कृपापूर्ण अनुमति मिलने पर।

बा,

रणछोडभाईकी मार्फत भेजा पत्र तुझे मिल गया होगा। अपने स्वास्थ्यको बनाये रखना। तनिक भी चिन्ता न करना। कोई भी सोच-विचार करनेकी जरूरत नही। मेरे जीवनको ईश्वरके हाथ सौप देना। ईश्वरके अलावा देखभाल करनेवाला दूसरा कौन हो सकता है? मेरी खुराक वही चलती है। सब जगह पेडे तैयार होते है। ज्यादातर तो मै उन्हे ले लेता हूँ। कभी-कभी इनकार भी कर देता हूँ। मीराबहन और ओम मेरी सेवा करती है। मीराबहन तो रात-दिन एक ही धुनमे रहती है। कही भी सभामे नही आती। मेरे लिए सब-कुछ तैयार रखनेमे ही अपना समय बिताती है। उसकी तबीयत ठीक रहती है। मुझे जुकाम अवश्य हो गया था, लेकिन अब ठीक हूँ। आज जबलपुरमे हूँ। यहाँ गोपीके माँ-बाप रहते है। मै उनसे मिला, उसकी छोटी बहनसे भी मिला। गोविन्ददासका[1] घर भी यही है। व्रजकृष्ण अभी

[1] सेठ गोविन्ददास।

खासा बीमार है। उसे पत्र लिखवाना। प्रभावतीके पत्र आते हैं। अपनी खुराक ठीक रखना। कुछ मँगवाना हुआ तो रणछोडभाई अथवा चिमनलालकी मार्फत मँगवाना। तेरा मुँह और पैर कैसे है? तेरे साथ कौन रहता है? मुझे वर्धाके पतेपर पत्र लिखना। सब बहनें आनन्दपूर्वक होगी। अमतुस्सलामसे कहना कि मैंने उसे पत्र लिखा है। मणिको कहना कि मुझे लिखे। उम्मीद है, वह ठीक होगी।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना बाने पत्रो, पृष्ठ १-२

३३१. पत्र : नारणदास गांधीको

७ दिसम्बर, १९३३

चि० नारणदास,

चि० पुरुषोत्तमकी सगाईके बारेमें मेरी हरखचन्द और जीवनलालके साथ बातचीत हुई है। वे दूसरे सम्बन्धके लिए उत्सुक हैं और उनका आग्रह है कि फिलहाल मैं और कहीं रिश्ता करनेकी तजवीज न करूँ। इसलिए मैं और कोई तजवीज नहीं करता। मुझे लगता है कि हमें हरखचन्द की लडकीका हाथ अवश्य मिलेगा। तुम्हें इसकी जानकारी तो होगी ही। तुम्हारी याद बराबर मनमें रहती है। आशा है तुम सब कुशलपूर्वक होगे। मेरी गाडी तो ईश्वर चलाता ही रहता है। तुम सबको,

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/१)से। सी० डब्ल्यू० ८३९३ से भी; सौजन्य नारणदास गाधी

३३२. पत्र : भाईलाल मोतीराम पटेलको

७ दिसम्बर, १९३३

भाई भाईलाल,

आपका पत्र मिला है। आप निष्ठापूर्वक हरिजनोंकी सेवा कर रहे हैं, यह देखकर खुशी होती है। भगवान करे कि अन्त तक आपकी यही निष्ठा बनी रहे और आपकी सेवा फलीभूत हो।

मोहनदासके वन्देमातरम्

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३३००) से।

३३३. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

जबलपुर
७ दिसम्बर, १९३३

भाईश्री वल्लभभाई,

गोरधनभाईका मुझे एक बहुत ही लम्बा पत्र आया था उसे मै सॅभाल कर तो क्या रखता? उसमे मेरे दोषोका ही निरूपण किया गया था और विट्ठलभाईके गुणोका बखान। मैने उन्हे अत्यन्त स्नेहपूर्ण उत्तर दिया था। मुझे उसकी पहुँच नही मिली। मेरे पास जो रुपया[1] पडा हुआ है उसके सम्बन्धमे तो उन्होने मुँह-जबानी कहलवाया था। उसके बारेमे मैने मथुरादाससे कहा था कि उस धनका उपयोग विदेशोमे तो किया ही नही जा सकता। तुमने देखा होगा कि अब उन्होने मुझसे सार्वजनिक अपील की है। जो होना होगा सो स्वयमेव सामने आ जायेगा। मुझे उम्मीद है कि मै स्थितिको सँभाल लूँगा। तुम निश्चिन्त रहना।

मै बा को पत्र लिखता रहूँगा। इस बार उसे जेल जाना अच्छा नही लगा। लेकिन ईश्वर निभा लेगा। ठक्करबापाने मुझे तुम्हारा पत्र दिखाया था। इसमे उनका तनिक भी दोष नही है। मुझे परेशानी से बचानेका वे भरसक प्रयत्न करते है। वे ऐसे लोगोको मेरे पास आने ही नही देते जो मुझे परेशान करे। बहुत टालते है, लेकिन कुछ तो टाले भी नही टलता। हम अनुभवसे सुधार भी करते रहते है। इस बारेमे भी चिन्ता न करना। 'हरि करे सो होय।"

किशोरलाल बीमार पड गया है। अभी कुछ ठीक है। वह बम्बईमे है, उसे लिखना।

जीवराजकी[2] सेहतपर काफी असर हुआ है। वे माथेरानमे रगबी होटलमे है।

मथुरादास सभामे आया था।[3] अभी मेरे साथ है। दिल्ली तक साथ रहेगा। उसकी भी सेहतपर काफी असर हुआ है। उसकी पीठमे दर्द होता है। ज्यादा घूम-फिर नही सकता। आराम ले तो शक्ति आ जाये। ऐसा कहा जा सकता है कि सभामे लोगोने बाते की और चलते बने। मौलाना साहब और डाक्टर मुझसे अनुरोध-पूर्वक कह रहे थे कि अब मुझे आग्रह छोड देना चाहिए। मैने उन्हे धर्मसकट बताया, इसपर वे शान्त हो गये। बातचीत बहुत विस्तारपूर्वक हुई। नरीमन को कुछ भान है, ऐसा मुझे नही लगा। मैने कहा कि एक लिखता है "विदर इडिया", दूसरा लिखता है "विदर काग्रेस", तब यदि मै "विदर नरीमन" लिखूँ तो यह अन्यथा

१ केन्द्रीय विधान सभाके अध्यक्ष होनेके नाते विट्ठलभाईको जो वेतन मिलता था उसमें से हर महीने लगभग आधा वेतन वे गाधीजीके पास जमा करा देते थे। यहाँ गाधीजीका सकेत उसी रुपयेकी ओर है।

२ डॉ० जीवराज मेहता।

३ काग्रेस कार्यकारी समितिकी बैठकमें।

तो नही होगा न? जवाहर तो जवाहर ही है। जमनालालजीके बारेमे तो मुझे लिखना ही क्या है? उन्होने अपना वजन बढा लिया है। स्वास्थ्य अच्छा है। चिखलदामे उनके स्वास्थ्यमे अच्छा सुधार हुआ है। लेकिन उनके कानकी हालत तुम्हारी नाक जैसी है। एक नकटा और दूसरा कानकटा। दुखडा किसके आगे रोया जाये? लेकिन अब यदि इन्जेक्शनसे फायदा हो तो मुझे वताना। तुम नेति करना चाहते हो, यह बात तो मुझे पसन्द आई है। लेकिन सिखायेगा कौन? मै अपनेको उसका विशेषज्ञ मानता हूँ। क्या मुझे विशेषज्ञके रूपमे वहाँ नही बुलाया जा सकता? यदि नेति करना ठीकसे न आता हो तो करते समय थोडा खून निकलता है। शुरू-शुरूमे सलाईका प्रयोग किया जाता है। तुम यह न करना। तुम्हारे लिए महीन कपडा ही काफी होगा। धीरे-धीरे करनेसे कोई परेशानी नही होती। कृष्णदास[1], महादेव और देवदासको मैने ही सिखाया है। देवदासको खून निकलता था। इसका कारण जुदा था। इसलिए उसे छोडना पडा।

जानकीबहन जमनालालके साथ आई थी। रात दोनो लौट गये।

महादेवके पास गिरधारी गया है, यह बात तो मुझे तुमसे ही मालूम हुई थी। सुरेन्द्र और दरबारी[2] वर्धामे है। अब दोनो ठीक है। माधवजी[3] अभी-अभी रिहा हुए है। मुझसे मिलने आये है। आज कराडी जायेगे। वे चगे है। चन्द्रशकर अपना काम बडे अच्छे ढगसे कर रहे है। काका और स्वामी चार-पाँच दिनोके लिए माथेरान गये है।

मै १० तारीखको दिल्ली पहुँचनेवाला हूँ।

दोनोको —

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृष्ठ ५१-३

३३४. पत्र : विद्या आनन्द हिंगोरानीको

७ दिसम्बर, १९३३

चि० विद्या,

तुमारा खत मिला। सकोच नहि रखनेका अर्थ यह है कि दूसरी बहनोके अथवा भाइयोके पास आवश्यक सेवा ले लेना।[4] यह काम हृदयकी नम्रतासे बन सकता है, लेकिन यह न बन सके वहा तक तो नोकरानी रखो। आस्ते आस्ते नौकरानीका महाविरा छोड दिया जाय और सब काम हाथसे किया जाय लेकिन यह शरीर

१ एक समय गाधीजीके सचिव।

२ सूरत जिलेके मद्य-निषेधक पारसी कार्यकर्त्ता।

३ माधवजी वि० ठक्कर।

४ देखिए "पत्र विद्या आनन्द हिंगोरानीको", २६-११-१९३३।

सपत्ति बढनेपर ही हो सकता है। ऐसा न समजो कि यह सब एकाएक करनेका मै कहता हू। शक्ति अनुसार ही करनेकी बात है।

अब तो समजमें आया ना?

मुझे सब हाल लिखा करो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी माइक्रोफिल्म से, सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिगोरानी

३३५. भाषण: लियोनॉर्ड थियोलॉजिकल कॉलेजमें

जबलपुर
७ दिसम्बर, १९३३

मै ससारके महान धर्मोकी समानतामे विश्वास करता हूँ और मैंने शुरूसे ही दूसरे धर्मोको अपना धर्म समझना सीखा है, इसीलिए इस आन्दोलनमे शामिल होनेके लिए दूसरे धर्मोके अनुयायियोको आमन्त्रित करने और उनका सहयोग लेनेमे कोई कठिनाई नही है। यह तो मेरे स्वभावका एक अग है। यह आन्दोलन तो मुख्य रूपसे तथाकथित उच्च वर्गोके लोगोके लिए प्रायश्चित्त करनेका आन्दोलन है। अपने ही समाजके जिस एक अगके साथ उन्होने जो अन्याय किये है, उसकी पीठपर जो सवारी की है, उस अन्यायके लिए अब उन्हे कीमत चुकानी है। यह आन्दोलन हिन्दू धर्मके नामपर से इस शर्मनाक धब्बेको दूर करनेके लिए हिन्दू सुधारको द्वारा किया जानेवाला एक प्रयत्न है। मै यह कहनेमे नही हिचका हूँ कि अगर अस्पृश्यता जिन्दा रही तो हिन्दू-धर्मका नाश हो जायेगा। इसका विकल्प यही है कि अस्पृश्यता समाप्त हो जाये और हिन्दू-धर्म शुद्ध रूपमे विकसित हो। अन्धविश्वासके अन्धकार और सुधारके प्रकाशके बीच होनेवाला यह सघर्ष जीवन-मरणका सघर्ष है। यदि हिन्दू-धर्ममे यह सुधार हो जाता है तब मुझे इस बातमे तनिक भी शका नही है कि यह केवल भारतकी सभी जातियोकी ही नही, बल्कि समस्त मानवजातिकी सेवा होगी। मै इस सुधारको लानेके लिए किसी प्रकारकी जोर-जबर्दस्ती, जिसमे कानूनी कार्रवाई भी शामिल है, करनेका विचार नही कर रहा हूँ। ऐसा कहा जाता है कि इस समय विधान-सभाके सामने पेश किये गये दो विधेयकोके लिए समर्थन प्राप्त करनेके प्रयत्नमे मै वास्तवमे कानूनी बाध्यकारिताकी नीतिका समर्थन कर रहा हूँ। इस प्रकारके विचारोके विरोधमे मैने जो तमाम तर्क दिये है, उन्हे मै यहाँ दोहराना नही चाहता, लेकिन मै आपको इस बातसे आश्वस्त कर देना चाहता हूँ कि विधेयकोमे किसी प्रकारकी कोई बाध्यकारिता नही है। जो लोग उन्हे पढनेकी कोशिश करेंगे वे मेरी रायसे सहमत होगे। यह सुधार तो अन्दरसे ही होना है। यह राजनीतिक आन्दोलन नही है। मै इस बातसे इनकार नही करना चाहता कि इसके महान राजनीतिक परिणाम निकलेगे,

लेकिन मैने कभी एक क्षणके लिए भी इस आन्दोलनके माध्यमसे तथाकथित उच्च वर्गोके हिन्दुओके राजनीतिक उत्थानकी बात नही सोची है। मेरे विचारसे तो यह पूर्णतया शुद्धिका आन्दोलन है।

ये प्रारम्भिक बाते बता चुकनेके बाद मेरे लिए आपसे यह कहना आसान हो गया है कि इस आन्दोलनमे आप किन शर्तोपर मदद कर सकते है। आप लोगोको अस्पृश्यताके निवारण और उन्मूलनके लिए बनाई गई सोसाइटी अर्थात् सर्वेन्ट्स ऑफ अनटचेबल्स सोसाइटी (हरिजन सेवक सघ)के साथ मिलकर और यदि मै कह सकूँ तो, उसके अधीन रहकर काम करना चाहिए। इसका अर्थ यह हुआ कि आपको अपने टैलेंट्स (प्रतिभाओ)को सोसाइटीको सौप देना चाहिए। मेरा मतलब धात्वीय टैलेंट्स (यूनानके सिक्केका नाम)से नही है। ये तो वे लोग देगे जिन्हे प्रायश्चित्त करना है और प्रतिपूर्ति करनी है। कुछ दिनोकी अपनी यात्रामे मैने देखा है कि लाखो लोग सुधारके लिए तैयार है। वे तो अपने सहयोगका ठोस प्रदर्शन केवल अपनी टेटसे पैसे देकर ही कर सकते है। लेकिन बुद्धिमान् पुरुषो और स्त्रियोसे अपेक्षित है कि वे हरिजनोके लिए विभिन्न प्रकारसे काम करे। हरिजनोकी रचनात्मक ढगसे सेवा करनेके लिए तथाकथित सवर्ण हिन्दुओको चाहिए कि वे हरिजनोकी पीठपरसे उतर जाये, उनके सामने घुटनोके बल जाये, हरिजन बच्चोको अपने बच्चे समझे और हरिजन भाई-बहनोको अपने सगे भाई-बहन। यह लगभग अतिमानवीय कार्य है और दैवी सहायताके बिना सम्पन्न नही हो सकता। लेकिन दैवी सहायता मुख्यत मनुष्यके माध्यमसे ही प्राप्त होती हे। मै मानता हूँ कि हमारे कार्यकर्त्ताओमे शिक्षक और अन्यान्य व्यवसाय करनेवाले पुरुष और स्त्रियाँ बहुत ही कम है। हम उत्तरोत्तर बढती हुई मॉगको पूरा करना चाहते है। मै इस कार्यमे आपके जैसी सस्थाओकी मदद चाहता हूँ। अब आप समझ गये होगे कि अधीनतासे मेरा क्या अभिप्राय है। यही सही ढग है।

लेकिन एक गलत ढग भी है। आप अलग रहकर काम करना पसन्द कर सकते है। आप हरिजनोका धर्म-परिवर्तन करके उन्हे ईसाई बना सकते है। आपको इस आन्दोलनमे अपने धर्म-प्रचारकी सम्भावना दिखाई पड सकती है। यदि आप इस उद्देश्यको लेकर हरिजनोके बीच काम करते है तो आप देखेंगे कि हम अपना जो लक्ष्य लेकर चल रहे है उसमे ही हम असफल हो जायेगे। यदि आप समझते है कि हिन्दू-धर्म भगवानकी ओरसे नही बल्कि शैतानकी ओरसे दी हुई भेट है तो यह बात बिलकुल साफ है कि आप मेरी शर्तोको स्वीकार नही कर सकते। यदि हम एक दूसरेके सामने अपने उद्देश्यको स्पष्ट नही करेंगे तो यह बेईमानी होगी।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १५-१२-१९३३

३३६. एक पत्र

[८ दिसम्बर, १९३३ से पूर्व][1]

किसी सार्वजनिक कार्यकर्त्ताकी कोई व्यक्तिगत इच्छाएँ नही होती जिनका कि ध्यान रखा जाये। उसे तो एक अतितुच्छ व्यक्ति होना चाहिए। सेवासे जो प्राप्त हो जाये सो अलग बात है वरना उसे न अभिमान मिल सकता है, न अधिकार ओर न ख्याति। उसे तो "तुल्यनिदात्मसस्तुति मानापमानयोस्तुल्य[2]" होना चाहिए। इसलिए तुम मेरी वजहसे या कामकी वजहसे परेशान मत होना। फल मेरे या तुम्हारे हाथोमे नही है। यह तो ईश्वरके सर्वशक्तिमान् हाथोमे है। तुम और मै तो उसके साधन है। तुम्हे तो अपनी अवमाननामे भी खुश रहना चाहिए और अपनेको सबल अनुभव करना चाहिए।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १५-१२-१९३३

३३७. पत्र : एफ० मेरी बारको

८ दिसम्बर, १९३३

चि० मेरी,

हम १५ तारीखको बैतूलसे गुजरेगे। मुझे पूरा यकीन है कि यदि मैने पफ पाउडर बेचनेके लिए प्रचार किया तो तुम मुझे अकेला और गरीब पाओगी।

तलवार चलानेके अभ्यासके सम्बन्धमे तुम्हारी बात ठीक है।

सप्रेम,

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०१६) से। सी० डब्ल्यू० ३३४२ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार

१. यह एक रिपोर्टका अश था जो दिनाक "हर्दा, ८-१२-१९३३" के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था।

२ जिसके लिए निन्दा और स्तुति, मान और अपमान सब बराबर है। देखिए **भगवद्गीता**, १४, २४-५। तथा खण्ड ३२, पृष्ठ ३१२ भी।

३३८. पत्र : मार्गरेट स्पीगलको

७/९ दिसम्बर, १९३३[1]

चि० अमला,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरा रक्तचाप १५५ और १६८ के बीचमे घट-बढ रहा है। क्या इस सूचनासे तुम्हारी समझमे कुछ आया? जिन बातोको तुम समझ नही सकती उनके बारेमे चिन्ता क्यो करती हो! मुझसे पूछो कि मै कैसा हूँ, उत्तर तुम्हे मिल जायेगा। तकनीकी बाते डाक्टरोपर छोड दो। मै तुमसे कह चुका हूँ कि मै तुम्हे आश्रमसे निकाल नही रहा हूँ। यदि तुम्हे वहाँका जीवन पसन्द हो, और तुम अनुशासनका पालन कर सकती हो तो बडे शौकसे वहाँ रहो।

यदि सबके लिए बननेवाली चीजमे मिर्च-मसाले हो तो तुम्हे अपने लिए सादी सब्जी स्वय बना लेनी चाहिए या तुम द्वारकानाथजीसे अपने लिए सिर्फ उबली हुई सब्जी बनवानेको कह सकती हो।

बा बिलकुल ठीक है।

आशा है कि तुम फल खा रही हो।

अच्छा, तो तुम सुमित्राको अग्रेजी पढा रही हो!

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च]

१५ तारीखको तुम्हे स्टेशन पर आ जाना चाहिए। अगुली बिलकुल ठीक होगी।

बापू

[अग्रेजीसे]

स्पीगल पेपर्स, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

१ यह पत्र ७ दिसम्बरको लिखा गया था, और पुनश्चवाला अश ९ दिसम्बरको।

३३९. पत्र : किशनबहन घुमतकरको

९ दिसम्बर, १९३३

प्रिय किशन,

आज ट्रेनमें तुम्हारा पत्र मिला। अगर तुम पहले ही रवाना न हो चुकी हो, तो मेरा सुझाव है कि तुम इसी १५ तारीखको वर्धासे मद्रास मेल पकड लो। मैं १४ तारीखको दिल्लीसे ग्रैंड ट्रंक मेल पकड रहा हूँ। मुझे खुशी है कि तुम तन और मन दोनो से स्वस्थ हो।

सप्रेम,

बापू

श्रीमती किशनबहन
गणेश टेरेस
गिरगाँव बैंक रोड
बम्बई

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ९६८९) से।

३४०. पत्र : रुक्मिणी बजाजको

९ दिसम्बर, १९३३

चि० रुक्मिणी,

तेरा पोस्टकार्ड मिला है। दौरोमें पत्र लिखनेकी फुरसत भला कहाँसे मिल सकती है? आज भी कुछेक मिनट है उनमें इतना लिख रहा हूँ। देवेन्द्र अच्छा हो रहा है, यह ईश्वरकी कृपा है। राधाके पत्र आते है। मैंने आज ही सुना कि सन्तोककी माँका देहान्त हो गया।

तुझे 'हरिजन' मिलता है न?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१५५) से।

३४१. पत्र : नानाभाई इ० मशरूवालाको

९ दिसम्बर, १९३३

भाई नानाभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। ब्रजलालजी को तार दिया है। शान्ति ठीक हो रहा होगा। बच्चे पढनेके बारेमे जितनी सावधानीसे काम लेते हैं उतनी सावधानी यदि शरीरके लिए भी बरते तो कितना अच्छा हो। किशोरलालके बारेमे गोमतीका पत्र था। वह बिलकुल स्वस्थ तो कदाचित् ही हो। मणिलाल और सुशीलाका पत्र मुझे भी आया था। मैंने इन दोनोको एक लम्बा पत्र लिखा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६६९०) से। सी० डब्ल्यू० ४३३५ से भी, सौजन्य कनुभाई मशरूवाला

३४२. पत्र : मनु गांधीको

९ दिसम्बर, १९३३

चि० मनु,

तू तो मुझे भूल ही गई न? मेरे पत्रका जवाबतक नही देती। कुसुमकी तबीयतके समाचार तो देने चाहिए न? वह अब कैसी है? बा का पत्र जेलसे आया था। वह कुसुमकी और तेरी चिन्ता करती है। उसे पत्र भेजना। तेरा कैसा हाल है? बली मौसी कैसी है? मै यह पत्र चलती गाडीमे लिख रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

वर्धाके पतेपर पत्र भेजना।

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० २६६३) से, सौजन्य मनुबहन एस० मशरूवाला

३४३. भाषण : जामिया मिलिया, दिल्लीमे

१० दिसम्बर, १९३३

जेलमे मैंने काफी उर्दू सीखी है और यदि मैं फिर जेल गया तो हाफिज बनकर निकलूँगा।

इस्लाम हमे दूसरोके धर्मको सहन करनेके लिए बताता है। किसीका धर्म झूठा है ऐसा नही कहता। जो भलाई करता है वही सच्चा मनुष्य है। कुरानका भी यही सिद्धान्त है और दूसरे धर्म भी इसी प्रकारकी शिक्षा देते हैं। मुझे आशा है कि जामिया के छात्र एकता और आजादीके सन्देशको देशमे फैलायेगे।

मैं हिन्दू मुसलमान एकता सम्मेलनमे जाना नही चाहता। मैं चाहता हूँ कि दोनो जातियोके दिल एक हो ताकि भारत मा आजाद हो सके।

गाधीजीकी दिल्ली डायरी, भाग १, पृष्ठ ३५७

३४४. भाषण : श्रमिकोंकी सभामें[1]

दिल्ली
१० दिसम्बर, १९३३

गांधीजीने कहा कि हरिजनोके घरोका दौरा करके कार्यक्रमका शुभारम्भ किया गया और उसके पश्चात् श्रमिकोकी सभाका आयोजन किया गया, इसके लिए आयोजक लोग बधाईके पात्र है।

उन्हे थैलीके लिए धन्यवाद देते हुए महात्माजीने कहा कि मै जानता हूँ कि थैलीकी आधी रकम मालिक (श्री घनश्यामदास बिड़ला)ने और आधी श्रमिकोने श्रमिक-कल्याण-कोषमे से दी है। इतनी बड़ी रकम भेंट करना रईसोका काम है, श्रमिकोंका नही, और इसके अलावा आपमे से बहुतसे लोग हरिजन है और अस्पृश्यताके अभिशापको दूर करनेके लिए आपसे पैसे लेना मुझे शोभा नहीं देता। श्री बिड़ला

१. बिड़ला मिल्समें हुई इस सभामें लगभग ५,००० श्रमिक और दूसरे लोग उपस्थित थे। गाधीजीको २,००० रु० की एक थैली तथा केलेके पत्तेपर लिखा अभिनन्दनपत्र भेंट किया गया था। उन्होंने कहा "केलेके पत्तेपर अभिनन्दनपत्र भेंट करनेका विचार बहुत अच्छा है, लेकिन मुझे खानेके लिए कुछ फल देने चाहिए थे।" इसके तुरन्त बाद ही फलोंकी एक टोकरी मँगाई गई।

जैसे सवर्ण हिन्दुओका यह कर्त्तव्य है कि वे अस्पृश्यताको मिटानेके लिए पैसा दे; मै हरिजनोसे पैसे लेनेमे हिचकिचाता हूँ लेकिन तो भी चूँकि आपने पैसे स्वेच्छासे दिये है इसलिए मै ले लेता हूँ। महात्माजीने आगे कहा कि मै तो इस बातको ज्यादा पसन्द करता कि हरिजन लोग शराब पीना और धूम्रपान करना छोड़ देते और उससे जो पैसा बचता उसे हरिजन-कार्यके लिए दे देते। इस प्रकारसे दिया गया पैसा उस महान् उद्देश्यमे ज्यादा लाभकारी सिद्ध होता। इस सम्बन्धमे उन्होने बताया कि कल भोपालके विद्यार्थियोने पाई-पाई जमा करके एक कोष जमा किया था और इस प्रकार एकत्र राशि मुझे दी थी।

आगे बोलते हुए महात्माजीने कहा कि हरिजन-आन्दोलनके सरक्षक बनकर हिन्दू लोग वास्तवमे अपने युगो पुराने पापोका प्रायश्चित्त कर रहे है। यदि वे ऐसा न कर सके तो भगवान ही जानता है कि उनका भविष्य क्या होगा?

बिडला मिल्समे हरिजन-सुधार-सम्बन्धी किये गये कार्यका जिक्र करते हुए महात्माजीने कहा:

मुझे पहले ही पता था कि आपने बिडला मिल्समे अस्पृश्यताको खत्म कर दिया है। घनश्यामदासजीने तो उच्चवर्गीय हिन्दू होनेके नाते हरिजनोके प्रति तथा मिल-मालिक होनेके नाते श्रमिकोके प्रति केवल अपना ऋण चुकाया है।

प्रत्येक हिन्दूका, चाहे वह मिल-मालिक हो या गरीब इसान, यह धार्मिक कर्त्तव्य है कि वह इस भूमिपर से अस्पृश्यताको उखाड फेके। ऐसा करते हुए वे महज अपना कर्त्तव्य पूरा कर रहे होगे, जिसके लिए वे धन्यवादके अधिकारी नही माने जा सकते।

आगे महात्माजीने चेतावनी-स्वरूप निम्नलिखित शब्द कहे:

अस्पृश्यता खत्म कर दीजिए वरना हिन्दू-धर्म ससारसे खत्म हो जायेगा।

कुछ सनातनियोका, जो इस सुधार-आन्दोलनमे महात्माजीसे सहमत नहीं थे, जिक्र करते हुए महात्माजीने कहा:

मै सनातनियोको अपने मतसे सहमत करानेकी भरसक कोशिश कर चुका हूँ और मैंने उनके तर्कोंकी ओर ज्यादासे-ज्यादा ध्यान दिया है, लेकिन वे मुझें कायल करनेके लिए शास्त्रोमे एक भी ऐसा प्रमाण नही दिखा सके है जिससे अस्पृश्यताका समर्थन होता हो।

महात्माजीने श्रमिकोसे अपील की कि आप शराब और बीड़ी-सिगरेट तथा दूसरी बुरी आदते छोड़ दे और मन तथा तन दोनोसे शुद्ध जीवन व्यतीत करे। उन्होने ईश्वर-पूजापर जोर दिया और कहा कि ईश्वरमे श्रद्धा रखनेसे ही आपके दुखोका नाश हो सकता है। अन्तमे श्रमिकोके कल्याणार्थ प्रार्थना करते हुए उन्होने कहा कि मै भी अपनी मर्जीसे अपनेको श्रमिक मानता हूँ। मालिक होनेसे श्रमिक होना अच्छा है। (हर्षध्वनि)

महात्माजीने मजाक करते हुए कहा :

फलको खानेकी मेरी बहुत लालसा हो रही है लेकिन इसे हरिजन-बालकोको दे दीजिए, इस प्रकार वे मुझतक पहुँच जायेगे।

[अग्रेजीसे]

हिन्दुस्तान टाइम्स, ११-१२-१९३३

३४५. बातचीत : हरिजनोंके साथ

दिल्ली
१० दिसम्बर, १९३३

प्रश्न : क्या आपका विश्वास है कि मन्दिर-प्रवेश से ही हमारा उद्धार होगा?

उत्तर मेरा अवश्य ऐसा विश्वास है कि जबतक सवर्ण हिन्दू अपने तमाम मन्दिरोके द्वार हरिजनोके लिए नही खोल देगे, तबतक यह नही कहा जायेगा कि उन्होने अपने कर्त्तव्यका पूरा-पूरा पालन कर लिया। सवर्ण हिन्दुओको अपने मन्दिरोमे हरिजनोको ले जाना ही चाहिए — यह दूसरी बात है कि हरिजन उन मन्दिरोमे जाये या न जाये। पर मन्दिरमे उनके जानेका हक तो उन्हे मान ही लेना चाहिए। मन्दिरोको खोल देना सवर्णोके लिए एक प्रायश्चित्तकी बात है। मुझे यह अन्याय असह्य सा लगता है कि जिस मन्दिरमे मै प्रार्थना कर सकता हूँ वहाँ हरिजन न आ सके। जबतक हरिजनोका यह मन्दिर-प्रवेश-विषयक प्रतिबन्ध पूरी तरहसे दूर न होगा तबतक मै यह माननेको तैयार नही कि अस्पृश्यता दूर हो गई।

प्रश्न : आप हमे आर्थिक संकटसे न उबारेगे? हमारी राय मे तो आर्थिक उन्नति ही मुख्य चीज है।

उत्तर आर्थिक उन्नतिकी बात तो है ही। वह भुलाई नही गई। पर मुझे इससे सन्तोष नही होता कि तुम्हे रुपया तो काफी भरपूर दे दिया जाये, पर बने रहो तुम अस्पृश्य ही या गाँवके बाहर अलग आलीशान महल बना लो। मुझे तो तभी सन्तोष होगा, जब तुम अस्पृश्य न समझे जाओगे, और सवर्णोके समान ही हिन्दू-समाजमे तुम्हे समानताका पद मिल जायेगा। तुम्हारी आर्थिक उन्नति तो हमारे कार्यक्रममे विविध अगोमे एक अग है ही।

प्रश्न : देशमे आप जो पैसा इकट्ठा कर रहे हैं, उसका उपयोग हमारे हितके लिए ही होगा इसमे हमे सन्देह है। हम अपना वह सन्देह आपसे छिपाना नही चाहते। आपको इस कामके लिए सच्चे ईमानदार आदमी मिले, तभी पैसे का सदुपयोग हो सकता है; पर ऐसे सच्चे आदमी तो अभीतक बहुत ही कम देखनेमे आये है। तो फिर आप यह पैसा हमारे सिपुर्द क्यो नही कर देते? हम अपनी मरजी मुताबिक इसका उपयोग अपनी भलाईके लिए करे, तो क्या हर्ज है? आपसे हमे यह साफ-

साफ कह देना चाहिए कि आज जो लोग हरिजन-सेवाका काम कर रहे है, उनपर हमारा विश्वास नही है।

उत्तर यह बात तो है नही कि इस पैसेके खर्चनेमे कोई हरिजन भाई शामिल न हो। पर यह सुधार-कार्य तो सवर्ण हिन्दुओके लिए प्रायश्चित्त-स्वरूप है न? इससे यह उन्हीपर छोड देना चाहिए कि इस पैसेका अच्छेसे अच्छा उपयोग किस तरह किया जाये। वे लोग हरिजनोकी सलाह जरूर ले, हरिजनोको अपने साथ भी ले, पर पैसेका हिसाब-किताब तो उन्हीके हाथमे रहने दिया जाये। तुम्हे मै इतना विश्वास दिलाता हूँ कि प्रचार इत्यादिके काममे यह कमसे-कम खर्च किया जायेगा। अधिकाश मे तो यह पैसा सीधा हरिजनोकी जेबमे ही जायेगा। हरिजनोकी सलाह और मदद लेकर जहाँ जैसी जरूरत दिखाई पडेगी, उसके अनुसार वहाँ पैसा दिया जायेगा। यह मै कैसे मान लूँ कि आज जो लोग हरिजन-सेवा कर रहे है, वे सब स्वार्थके लिए ही यह काम कर रहे है। सम्भव है, उनमे कुछ थोडे-से स्वार्थी हो, जो तुम्हारी और मेरी कसौटीपर ठीक-ठीक न उतर सके, मगर ज्यादातर आदमी तो यह काम केवल प्रेमभाव और प्रायश्चित्तके रूपमे ही करते है। उनमे कुछ तो शुद्ध कुन्दनके समान प्रामाणिक है और वे किसी भी आन्दोलनके लिए शोभा-स्वरूप है। पर इस बातको एक तरफ रखकर मै तो चाहता हूँ कि तुम लाखो हरिजनोकी स्थितिका विचार करो। उन लाखोकी पतनावस्थाका तो तुम्हे भी अनुभव न होगा। वे तो अपनी पीरको प्रकट भी नही कर सकते। वे अपनेको पतित मानते है। छ साल पहले की बात है कि उडीसामे एक बूढा मनुष्य मुँहमे तिनका दबाकर मेरे पास आया था।[1] उसने सुना होगा कि गरीबोकी खबर लेनेवाला कोई पैदा हुआ है, इसलिए वह ५० मील दूरसे आया था। वह अपनेको नीच मानता था। मुँहमे तिनका दबाकर आया था। मैने वह तिनका निकाल लिया और उस भाईको समझानेका प्रयत्न किया कि 'जो मै हूँ सो तू है, तेरा पालनहार मै होता कौन हूँ?' कोचीनमे भी एक हरिजन मेरे सामने आकर थर-थर काँपने लगा। वह बेचारा समझता था कि कही उसे सवर्णोके ससारमे न ले जाये, क्योकि उस प्रान्तमे कुछ हरिजन अदर्शनीय समझे जाते है और सवर्णोको उनके दर्शनमात्रसे छूत लग जाती है। यह सेवा-कार्य हरिजनोको रिझानेके लिए नही, किन्तु शुद्ध कर्त्तव्य समझकर ही मैने हाथमे लिया है। हम सवर्णोको तो किसी तरह यह कलक धो डालना है और ऐसा करते हुए आवश्यकता पडे, तो जान भी दे देनी है। यथाशक्ति तुम्हारी निस्स्वार्थ सेवा करनेका हम प्रयत्न कर रहे है। पर यदि हरिजन हमारी इस सेवाको अगीकार न करे, इस सेवासे उन्हे सन्तोष न हो, तो मै समझूंगा कि हमने बडी देरसे सेवा-कार्यका आरम्भ किया। पर यह डेढ मासका अनुभव मुझे बताता है कि हजारो हरिजन हमारी इस सेवाको प्रसन्नतासे अगीकार कर रहे है। तुम्हारे जीवनके प्रत्येक पहलूका हम स्पर्श करना चाहते है। हमे तुम्हारी सेवा सेवक होकर करनी है, स्वामी बनकर नही। हम सेवक है और तुम स्वामी हो।

१. दिसम्बर, १९२७ में; देखिए खण्ड ३५, पृष्ठ ४२२-४।

प्रश्न : अबतक सवर्णोने हमारे नाम अनेक रखे थे — आपने उनमे एक नया नाम 'हरिजन' और जोड़ दिया है। यह नाम भी दूसरोसे हमारी पृथकता ही सूचित करता है। हमारी पृथकता शब्दमे और कार्यमे दूर होनी चाहिए; तभी हमे सन्तोष होगा और हमारा कल्याण भी तभी होगा।

उत्तर 'हरिजन' नाम एक अन्त्यज भाईने ही तजवीज किया था। गुजरातके एक सन्त कविने इस नामका उपयोग किया है, ऐसा उस भाईने मुझे बताया। मैने यह नाम मान लिया, और फिर यह चल गया। हजारो हरिजनोने इस नामपर प्रसन्नता ही प्रकट की है। इसका उद्देश्य तुम्हारी पृथकता दिखाने या उसे कायम रखनेका नही है। जबतक दुर्भाग्यसे हिन्दू-समाजके दो भाग रहेगे, तबतक दोनो भागोके लिए पृथक-पृथक नामोकी आवश्यकता तो रहेगी ही, पर 'अस्पृश्य' 'अवर्ण' आदि दिल दुखानेवाले नाम तो निकाल ही देने चाहिए। इन घृणित नामोके स्थानपर 'हरिजन' नाम बडा अच्छा है। यह मै नही जानता कि जब अस्पृश्यता दूर हो जायेगी तब सारा हिन्दू समाज अपनेको 'हरिजन' कहा जाना पसन्द करेगा या 'हिन्दू'। पर उस दिनके आने तक तो पृथक नामोकी जरूरत रहेगी ही। तुम्हारी दलील मै समझता हूँ। मै स्वेच्छासे 'हरिजन' बन गया हूँ, और मेरा विश्वास है कि यदि मैने निस्स्वार्थ भावसे तुम्हारी सेवा की होगी, तो उसे अन्तमे तुम अवश्य स्वीकार करोगे। धीरज रखो और देखो कि कैसा काम चल रहा है। हरिजन-सेवक-सघका उद्देश्य केवल तुम्हारा कल्याण है, उसका कोई दूसरा उद्देश्य नही है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २२-१२-१९३३

३४६. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको

दिल्ली
११ दिसम्बर, १९३३

चि० मणिलाल और सुशीला,

तुम दोनोके पत्र मिले। मेरे क्या लिखनेसे तुम्हे इतना ज्यादा आघात पहुँचा? मैने किशोरलालसे क्या कहा, सो तो याद नही लेकिन मैने तुझे कमजोर और डरपोक तो कभी नही माना। तेरी बहादुरीके बारेमे मैने हमेशा गर्वका अनुभव किया है। लेकिन तुझे मैने अपग अवश्य माना है। तुझमे स्वतन्त्र रूपसे विचार करनेकी शक्ति कम है, ऐसा भी मैने अवश्य माना है। इसमे तेरा दोष नही। कुछ मेरा ही होगा। इसमे तुझे शर्मिन्दा होनेकी कोई बात नही। मैने पिछली डाकमे तुझे लम्बा पत्र लिखा है उससे तू मेरे विचारोको स्पष्ट रूपसे जान सकेगा। तू मेरी राय यहीसे मॉगता है इसमे भी तेरी अपगता ही है।

तू भूल करेगा तो उसके लिए मेरा मन भी तेरी भर्त्सना नही करेगा। तू विश्वासघात करेगा तो अवश्य तेरी भर्त्सना करूँगा। तूने मित्रोको अथवा लोगोको जो वचन दिये है उनका तू पालन करे, ऐसा अवश्य चाहूँगा। तेरी वर्तमान क्रिया-विधिसे मुझे कोई भय नही है। ज्यादासे-ज्यादा यही हो सकता है कि तू आर्थिक रूपसे बर्बाद हो जाये ? सो भले ही हो, लेकिन तू मूर्ख न बनना। भूल हुई, यदि तुझे ऐसा जान पडे तो उसे स्वीकार कर उससे बच निकलना। तू अपनी राय व्यक्त करना जितना सहल समझता है, मेरे लिए उतना सहल नही है। यदि ऐसा हो तो मै भला राय तुरन्त ही क्यो न दे डालूँ ?

अब तुम्हारे खर्चेके बारेमे। मेरे कथनमे न तो निन्दा ही है और न दु खका भाव ही। मेरे कहनेका अभिप्राय केवल इतना ही था कि वहाँ अमुक ढगसे रहनेके बाद अब तुझसे यहाँ एकाएक जीवन बदलकर नही रहा जा सकता। मै यह नही चाहता कि यहाँके जीवनका प्रयोग करते करते तुम तीनो शरीर से टूट जाओ। १५० रु० की तो तू स्वय ही आवश्यकता बताता है जबकि मैने २०० रुपयेकी मानी है। लेकिन आज तो १५० रुपये भी मेहरबानीके रूपमे ही मिलेगे, ऐसा समय आ गया है। तू किसीकी कृपापर निर्भर करे इससे तो मै यह पसन्द करूँगा कि तू सूखी रोटी खाकर अपना जीवन-यापन करे। सक्षेपमे तुम्हारे जीवनके प्रति मुझे असन्तोष नही है। इस सम्बन्धमे सुशीला तेरी अपेक्षा अधिक सावधान है, यह मै जानता हूँ। तुम्हारा पत्र पानेपर मेरा मन तो तुम्हे तार द्वारा आश्वासन देनेका हुआ। लेकिन किसके खर्चपर तार दूँ ? भिखारी पिता तारसे आश्वासन कैसे दे ? इससे पत्रसे ही आश्वासन देता हूँ। मेरी ओरसे तुम दोनो निर्भय रहना। तुम दोनोको जैसा उचित लगे वैसा रहना। यदि तुमसे वहाँ न रहा जा सके और तुम यहाँ आ जाओ तो भी तुम्हारी आजीविका ईश्वर देगा ही। जो भी करो, स्वतन्त्र रूपसे विचार कर करना।

नीमुको फिर गर्भ रह गया है। रामदास बहुत दुखी हुआ है। मैने आश्वासन दिया है। यह काम ऐसा नही है जिसमे स्त्री-पुरुष आसानीसे सफलता पा सकते हो। लेकिन रामदास दुर्बल है और सोच-विचार बहुत ज्यादा करता रहता है, फलत उसकी अपनी कमजोरी भी उसे सालती रहती है।

लक्ष्मी भी गर्भवती है, यह बात कदाचित् तुमको मालूम होगी। मुझे तो इन दोनोके बारेमे अभी-अभी मालूम हुआ है। ऐसे समाचार मुझे देरसे ही मिलते है। बा जेलमे आनन्दसे है। मणिबहन उसके साथ है। मै ठीक हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८१२) से।

३४७. पत्र : रमाबहन जोशीको

दिल्ली
११ दिसम्बर, १९३३

चि० रमा,

मै जोशीको लम्बा पत्र लिख रहा हूँ। धीरू कमजोर रहता जान पडता है। उसे यदि तुम नियमित रूपसे पत्र लिखोगी तो वह ठीक हो जायेगा, मै ऐसा मानता हूँ। लगता हे, उसका मन वहाँ लग गया है, यह सन्तोषजनक है।

तुम्हे वह जगह अनुकूल आ गई है, यह बात मेरे मनको बहुत शान्ति देती है। खूब सेवा करना। जो-कुछ सीखा जा सके, सीखना। विमुसे भी पत्र लिखवाना।

बा के पत्र आने लगे है। बा के जेल जानेमे बहने खूब प्रसन्न हो गई दीखती है। अभी तो मणि उसके साथ है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५३६०) से।

३४८. पत्र : विद्या आर० पटेलको

दिल्ली
११ दिसम्बर, १९३३

चि० विद्या,

तेरा पत्र मिला। तू रमाबहनकी विशेष देखभालमे है, यह अच्छी बात है। वह जैसा कहे वैसा करना। मैंने द्वारकानाथजीको अभी यह सलाह दी है कि तुझे फिलहाल दूध, फल और सब्जीपर रहना चाहिए। ऐसा करनेसे ही खून साफ होगा। तुझे भाप लेनी चाहिए और कटि-स्नान भी करना चाहिए। आँखको दिनमें चार-पॉच बार गरम पानीकी छीटे मारने चाहिए। पानी बिलकुल साफ होना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९६३९) से, सौजन्य रवीन्द्र आर पटेल

३४९. पत्र : विद्या आनन्द हिंगोरानीको

विडला हाउस, नई दिल्ली
[११ दिसम्बर, १९३३][1]

तू क्या चाहती है? पाच दस रोजकी बात है। लेकिन तुमको नाराज या दु:खी करके नहि रखना चाहता हू। पीछे तो वर्धा ही जाना। लेकिन तुम्हारा दिल मुलतान जानेका है तो मै नहि रोकना चाहता। कहीसे मै तुमको सुखी और बहादुर बनाना' चाहता हू। अगर मै वर्धा वापिस भेजुगा तो पक्का बदोवस्त करके ही भेजुगा। नहि तो देखुगा क्या किया जाय? भावनगर नहि भेजुगा। दूधीबहनका अनिश्चित है। मै यहा हू वहा तक तो इतनी जल्दी नहि है। मौन खतम होनेसे कल प्रात-कालमे बाते करेगे।

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे, सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिगोरानी

३५०. तार : भूलाभाई देसाईको

नई दिल्ली
१२ दिसम्बर, १९३३

भूलाभाई देसाई
वार्डन रोड, वम्बई ११

अभी-अभी आपके आनेका समाचार मिला। उम्मीद हे आपने पूर्णतया स्वास्थ्य-लाभ कर लिया होगा।

गाधी

[अग्रेजीसे]
भूलाभाई पेपर्स, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

१. साधन-सूत्रमें तिथि "दिसम्बर, १९३४" दी हुई है, जो भूल्से लिखी जान पड़ती है। दिसम्बर, १९३३ में गाधीजी १० से १४ तारीखतक दिल्लीमें थे और मौनवार ११ दिसम्बरका था। देखिए "पत्र : विद्या आनन्द हिगोरानीको", २५-१२-१९३३ भी।

३५१. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

दिल्ली
१२ दिसम्बर, १९३३

बा,

यह तुझे जेलमे दूसरा पत्र है। अब तुझे 'जामेजमशेद'[1] और 'हरिजनबन्धु' मिलते होगे। और कुछ चाहिए तो लिखना। मथुरादास अभी मेरे साथ है। मै १० तारीखको दिल्ली आया था। १४ को आन्ध्रदेशकी ओर रवाना हो जाऊँगा और मथुरादास बम्बई जायेगा। मेरी तनिक भी चिन्ता न करना। मै जैसा होऊँगा वैसा तुझे लिखता रहूँगा। मै दूध और मावा वगैरा बराबर लेता हूँ। जुकाम हो गया था, अब खत्म हो गया है। डॉ० अन्सारी यही है। मै इस बार घनश्यामदासके यहाँ ठहरा हूँ। आज जमनालालके आनेकी भी सम्भावना है। प्रभुदास और उसकी पत्नी भी यही है। प्रभुदास इस बीच कही-न-कही स्थिर हो जायेगा। मणिलालकी चिन्ता न करना। उसे मैने लम्बा खत लिखा है।[2] मै उसे दबाना नही चाहता। सन्तोककी माँका देहान्त हो गया है। मैने आज उसे पत्र लिखा है। ब्रजकृष्ण काफी बीमार है। खाटपर है। डॉ० अन्सारीकी दवा चल रही है। आशा है कि ठीक हो जायेगा। राधा फिर बीमार हो गई लगती है। तुझे अथवा किसी बहनको कुछ चाहिए तो मुझे लिखना।

तेरे जबडे ठीक चल रहे होगे। मणिके घुटने कैसे है? क्या पढनेका सामान साथ है?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना बाने पत्रो, पृष्ठ २

१. बम्बईसे प्रकाशित एक गुजराती समाचार-पत्र।
२ देखिए "पत्र मणिलाल और सुशीला गाधीको", ११-१२-१९३३।

३५२. पत्र : प्रभावतीको

दिल्ली
१२ दिसम्बर, १९३३

चि० प्रभावती,

तेरा पत्र मिला। जयप्रकाशका भी। यदि तुम दोनो इसी निश्चयपर पहुँचे हो कि तुम्हे सेवाधर्मका पालन करना है तो मुझे कुछ नही कहना है। मैने तो दोनोको यह समझाया था कि निजी कुटुम्बधर्मका पालन करनेमे कोई पाप नही है और सेवाधर्मका पालन करना हो तो निजी धर्मका त्याग करना ही चाहिए।[1]

दोनोको एक साथ पालन करनेके प्रयत्नमे दोनोके बिगडनेका भय है। राजेश्वर[2] के लिए प्रतिमास ५० रुपये प्राप्त करनेमे कोई दिक्कत नही होगी। लेकिन मुझे इतनेसे ही सन्तोष नही होता। तुमने अपने खर्चके लिए क्या बन्दोबस्त किया? कर्जके बारेमे क्या किया? यह प्रबन्ध जैसे-तैसे हो जाये इससे कोई मूल प्रश्न हल नही हो जाता। लेकिन अब मै बातको और ज्यादा लम्बा नही करूँगा। जयप्रकाशके उत्साहको मै भग नही करना चाहता। उसका हेतु शुद्ध है इसलिए सब-कुछ ठीक ही होगा, ऐसा हमे मानना चाहिए।

तू अभीतक माताके पास तो पहुंची ही नही है। अब तुझे पहुँचना चाहिए। तूने मेरे पास आनेकी बातको खूब लटकाया, इसलिए अब मै तो बहुत दूर होऊँगा। यदि वहाँसे तू जेल न चली जाये तो तू मुझे आन्ध्रके प्रवासके दौरान मिल सकती है और वर्धासे जहाँ तुझे ठीक लगे वहाँ जा सकती है। मै समझता हूँ, बेहतर तो यह होगा तू बिहारसे [जेल जाये]। और यदि तू ऐसा करे तो मेरे पास आनेकी भी कोई जरूरत नही। लेकिन यदि मेरे पास आये बिना न रहा जाये तो अवश्य ही आ जाना। मै सब-कुछ तेरी इच्छापर छोडता हूँ। २०, २१, और २२ तारीखको मै मद्रासमे होऊँगा। यहाँसे १४ तारीखको रवाना होऊँगा। १६ से १९ के बीच बेजवाडाके आसपास होऊँगा। २३ से ३१ तारीखके बीच फिर से आन्ध्रमे होऊँगा, इसलिए मेरा सदरमुकाम तो बेजवाडा होगा। अब जैसी तेरी इच्छा हो वैसा करना।

विद्या उकताकर यहाँ चली आई है। साथ कान्ताको लाई है। अभी मैने निश्चय नही किया है कि विद्याको मुल्तान जाने दूँ अथवा वापस वर्धा भेज दूँ।

ओम मेरे साथ ही है। मेरी जो खुराक थी अब भी वही है। दूध कभी तीन पौड और कभी एक पौड लेता हूँ। सर्दी हो गई थी सो अब दूर हो गई है। वजन १०८ पौड जबलपुरमे हो गया था। बादमे तो दिखाया ही नही। मेरे बारेमे चिन्ता

१ देखिए "पत्र प्रभावतीको", २३-११-१९३३।

२ जयप्रकाश नारायणके छोटे भाई।

करनेकी जरूरत नही। जैसी ईश्वरकी इच्छा होगी वैसा वह चलायेगा। उसे जो काम लेना होगा सो लेगा।

क्या तू राजेन्द्र बाबूको मिल पाई? पिताजीसे मिली? वे क्या करते हैं।

बा के पत्र आते हैं। मणि अभी तो उसके साथ है।

प्यारेलालकी बहन सुशीला यही है। उनकी माँ भी यही हैं। मै उनसे अभी मिला नही हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकलसे (जी० एन० ३४३६)।

३५३. पत्र : कान्ति गांधीको

दिल्ली
१३ दिसम्बर, १९३३

चि० कान्ति[1],

तेरे दाँत खराब हो गये है, ऐसी खबर मैंने सुनी है। बाकी तो तेरे समाचार सुनकर मुझे सन्तोष होता है। ऐसा माने लेता हूँ कि तुझे यह पत्र मिलेगा। तुझे बहुत बार याद करता हूँ। तूने और तेरे साथियोंने अच्छा अभ्यास किया है, ऐसा सोमनजी लिखते थे। मेरा दौरा कठिन है, लेकिन अच्छा चल रहा है। लोग खूब आते हैं।

रामीबहनकी कुसुम बीमार है, यह तो तू जानता ही होगा। राधा फिर बीमार पड गई है। अभीतक तो मै यह दौरा सहन कर सका हूँ।

सबको,

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७२८४) से, सौजन्य कान्ति गांधी

१ हरिलाल गांधीके पुत्र।

बातचीत : सनातनियोंके साथ

दिल्ली
१३ दिसम्बर, १९३३

मै सनातनी होनेका दावा करता हूँ[1], क्योकि मै समझता हूँ कि मेरा आचरण शास्त्रोकी भावनाके अनुरूप है। यदि आप चाहे तो मेरा दावा अस्वीकार कर सकते है। मैने अपनी क्षमता-भर शास्त्रोका अध्ययन किया है और मै इस निष्कर्षपर पहुँचा हूँ कि अस्पृश्यता हिन्दू-धर्मकी भावनाके प्रतिकूल है।

इसपर भी सनातनियोने आग्रह किया कि जो व्यक्ति अस्पृश्यता, श्राद्ध, मूर्ति-पूजा तथा अन्य कर्म-काण्डोमे विश्वास नही करता उसे सनातनी नही कहा जा सकता। गाधीजीने प्रत्युत्तरमें कहा कि सनातन धर्मकी सच्ची कसौटी तो एकमात्र सत्यकी कसौटी है। उन्होने आगे कहा कि यदि व्यक्ति धूर्ततापूर्ण जीवन बिताता है तो विधि-विधानोका ऊपरी पालन करनेसे कुछ नही होता। जो व्यक्ति शराबी, दुश्चरित्र और जुआरी हो उसको बाहरी दिखावेसे क्या लाभ?

जब गाधीजीको यह बताया गया कि हरिजनोके लिए मन्दिर खोलनेके प्रयत्नमे खून-खराबा जरूर होगा तो उन्होने कहा कि यह व्यवहारतः असम्भव है, क्योकि किसीके मनमे किसी प्रकारकी जोर-जबर्दस्ती करनेका इरादा नहीं है। ऐसा कोई भी मन्दिर तबतक नहीं खोला जायेगा जबतक कि उस मन्दिरमे जानेवाले दर्शनार्थियोमें से अधिकाश लोग मन्दिरको खोलनेके पक्षमे नही होगे।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, २२-१२-१९३३

३५५. भाषण : अलीपुरकी सार्वजनिक सभामें

१३ दिसम्बर, १९३३

मै आपसे इस बातका विश्वास करनेका अनुरोध करता हूँ कि मेरे हरिजन-कार्यके पीछे कोई राजनीतिक उद्देश्य नही है। अस्पृश्यता-निवारणके राजनीतिक परिणामोका मेरे लिए कोई आकर्षण नही है। वस्तुत मै यह मानता हूँ कि यदि हम इस प्रश्नको राजनीतिक उद्देश्यकी दृष्टिसे लेते है तो हम हरिजनोकी सेवा करनेमे असफल हो जायेगे तथा हिन्दू-धर्मको नुकसान पहुँचायेगे। यह बात तो बिलकुल सच है कि अस्पृश्यताके वास्तविक उन्मूलनके राजनीतिक परिणाम निकलेगे। धार्मिक भावनासे

१. सनातनियोका दावा था कि गाधीजीको सनातनी कहलानेका कोई अधिकार नही है।

किसी कर्त्तव्यका पालन करनेके अन्य अनेक महत्त्वपूर्ण परिणाम होते है। "पहले ईश्वरका साम्राज्य प्राप्त करो, उसके बाद अन्य सभी चीजे तुम्हे मिल जायेगी", यह कथन मेरे विचारमे एक वैज्ञानिक सत्य है।

पिछले साल आपके नाममे की गई प्रतिज्ञा मुझे आपको याद दिला देनी चाहिए। आपको याद होगा कि पिछले साल सितम्बरमे हिन्दू-धर्मके प्रतिनिधियोकी एक बैठक बम्बईमे हुई थी, जिसकी अध्यक्षता पडित मालवीयजीने की थी। दूसरी बातोके साथ उन्होने इस बातकी प्रतिज्ञा की थी कि अस्पृश्यता चूँकि हिन्दू-धर्मके नामपर कलक है इसलिए उसको दूर करना है, और यह भी कि हरिजन लोग उन सभी सार्वजनिक सुविधाओके उसी प्रकार हकदार है जिस प्रकार कि सवर्ण हिन्दू। उस प्रस्तावमे हिन्दू मन्दिरोका विशेष रूपसे उल्लेख किया गया था और यह कहा गया था कि यदि लक्ष्यकी प्राप्तिके लिए कानून बनवानेकी जरूरत होगी तो वह भी बनवाया जायेगा। इसलिए प्रत्येक सवर्ण हिन्दूका यह परम कर्त्तव्य हो जाता है कि वह हरिजनोके लिए मन्दिरो, कुओ तथा दूसरी सस्थाओको हूबहू उन्ही शर्तोपर खोलकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करे जिन शर्तोपर वे सवर्ण हिन्दुओके लिए खुली रहती है।

[अग्रेजीसे]
हिन्दुस्तान टाइम्स, १४-१२-१९३३

३५६. बातचीत : हरिजन संघकी बैठकमें[1]

दिल्ली
१३ दिसम्बर, १९३३

यात्राके दौरान प्राप्त किये गये चन्देके उपयोगके सम्बन्धमे महात्मा गांधीने कहा कि इस चन्देमे से ७५ प्रतिशत जहाँतक सम्भव हो सकेगा सम्बन्धित इलाकेपर खर्च किया जायेगा बशर्ते कि इसके लिए कोई उपयुक्त योजना तैयार की जाये और केन्द्रीय बोर्ड उसे मजूर कर ले। फिर भी, प्रान्तीय बोर्ड मेरे द्वारा इकट्ठे किये गये चन्देमें से धन पानेकी आशामें पड़कर अपने साधारण चन्दे इकट्ठा करनेमे लापरवाही न बरतें। उन्होने जोर देकर कहा :

आप लोग प्रचार अथवा कार्यालय-प्रबन्धके लिए इस धनका कुछ भी अश खर्च नही करेगे। इसकी एक-एक पाईका उपयोग केवल रचनात्मक-कार्यके लिए ही किया जा सकता है। मै भारतका दौरा आपके कार्यालयका प्रबन्ध-व्यय उठानेके लिए अथवा आपके प्रचारमे सहयोग देनेके लिए नही कर रहा हूँ, बल्कि केवल रचनात्मक-कार्यके लिए पर्याप्त रुपया इकट्ठा करनेके लिए कर रहा हूँ। अपने कार्यालयका प्रबन्ध-कार्य चलानेके लिए आप अलगसे पैसा इकट्ठा कर ले। जो चन्दा मै इकट्ठा करता हूँ

१ गाधीजी सघके केन्द्रीय बोर्डके सदस्योके सामने बोले थे।

यदि निर्धारित ढगसे आप उस रुपयेसे अपना रचनात्मक काम करते है तो जनता द्वारा दिया गया पैसा सौगुना होकर जनताके पास लौटेगा। इसलिए इसकी बडी सावधानीके साथ हिफाजत करनी चाहिए और बहुत सँभाल कर खर्च करना चाहिए।

यह पूछे जानेपर कि अबतक जो काम किया गया है उसके सम्बन्धमे आपकी क्या राय है, महात्मा गाधीने कहा :

अगर आप प्रशसा चाहते है तो वह आपको नही मिलेगी। लेकिन इतना मै कह सकता हूँ कि आप इससे अच्छा काम कर सकते थे, तथा आगेके लिए मै सिर्फ इतना ही कह सकता हूँ कि आपको पहलेसे ज्यादा अच्छा काम करना चाहिए।

सघके सविधानको लोकतान्त्रिक बनानेके प्रश्नके सम्बन्धमे महात्मा गाधीने कहा कि बजाय इसके कि एक ऐसा सविधान बनाया जाये जिसका स्वरूप तो लोकतान्त्रिक हो लेकिन जिसकी भावना निरकुशतावादी हो, बेहतर यही होगा कि वर्त्तमान संविधानको ही लोकतान्त्रिक ढगसे चलाया जाये।

असमके परम पूजनीय गड्मूड़िया गोसाईं और श्री डी० एन० शर्माने विस्तारसे बताया कि चायके बागानोमे काम करनेवाले भूतपूर्व कुली लोग भारतके विभिन्न प्रान्तोके रहनेवाले है तथा ज्यादातर हरिजन है। असममे उनकी आबादी साढ़े दस लाख है जिनमेसे केवल ५,००० लोग ही साक्षर हैं। वे आमतौर पर शराब अथवा ऐसे ही अन्य दुर्व्यसनोके आदी है। काबुली तथा मारवाड़ी लोगोने उनका आर्थिक रूपसे खूब शोषण किया है।

महात्मा गांधीने कहा कि मै इस शोचनीय स्थितिके बारेमे जानता हूँ।

यह एक सामाजिक समस्या है, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि फसल तो तैयार खडी है लेकिन मजदूर बहुत कम है। इस प्रश्नके समाधानके लिए हमे कार्यकर्त्ताओकी जरूरत है। इसे कानून द्वारा हल नही किया जा सकता। इसके लिए जरूरत है इन लोगोके बीच बिना किसी तुरन्त परिणामकी आशाके रोज काम करनेकी। यह ठीक रहेगा कि इन लोगोके प्रान्त-वार ऑकडे इकट्ठे किये जाये ताकि उन प्रान्तोके कार्यकर्त्ताओको बुलाकर उनसे इनके बीच काम करनेको कहा जा सके। हमे जिस प्रकार के कार्यकर्त्ताओकी जरूरत है वे पैसेके जोरपर हासिल नही किये जा सकते। यदि मै असम पहुँचनेमे सफल हो गया तो मै परिस्थितियोका अध्ययन करूँगा और कुछ स्थानीय कार्यकर्त्ता तैयार करनेकी कोशिश करूँगा। यदि मै स्थानीय कार्यकर्त्ता तैयार करनेमे विफल हुआ तो मुझे इस बातमे कोई सन्देह नही रह जायेगा कि असम सभी प्रान्तोमे सबसे ज्यादा पिछडा हुआ प्रान्त है। खैर, सवाल सिर्फ अस्पृश्यताका नही है बल्कि दूसरी किस्मका है। लेकिन यदि असममे ठीक ढगके कार्यकर्त्ता मिल जाते है तो फिर उस कामको चलानेके लिए पर्याप्त धन इकट्ठा करनेमे कोई कठिनाई नही होगी।

[अग्रेजीसे]

हिन्दुस्तान टाइम्स, १६-१२-१९३३

३५७. भाषण : दिल्लीकी छात्र-सभामें[1]

१३ दिसम्बर, १९३३

यह कहनेमे कोई अतिशयोक्ति नही होगी कि हमारे सम्बन्ध दो सगे भाइयो जैसे ही घनिष्ठ थे।[2] उनका उत्कट देशप्रेम, उनका महान् त्याग और अपने बच्चोके प्रति उनका असीम प्रेम आपके सामने वैसे ही प्रत्यक्ष रहने चाहिए जैसे कि मेरे सामने थे। और अपने बच्चोको भी उन्होने देशके सेवार्थ समर्पित कर दिया। मेरा उनसे पहले-पहल परिचय होनेके बादसे उनकी मृत्युके समय तक मुझे उनके निकट सम्पर्कमे रहनेका सौभाग्य मिला था। और मै देखता था कि जीवनभर हर क्षण उनके मनमे अपने देशका ही विचार रहता था जिसकी उन्होने इतनी एकनिष्ठासे सेवा की। उनकी दृष्टिमे स्वराज्य कोई दूरका सपना नही था, वह तो उनके लिए उनकी प्राण-वायुके समान था। उनकी स्वतन्त्रताकी लालसा दिन-ब-दिन बढती गई। इसलिए यह उपयुक्त ही है कि आप अपनी ऑखोके सामने एक ऐसे देशप्रेमीका चित्र रखे ताकि आपको उनके सद्गुणोका सदैव स्मरण होता रहे और आप उन गुणोको अपने जीवनमे उतारनेकी कोशिश करे। जिस देशभक्तकी आप सराहना करते है उसको महान् बनानेवाले उसके गुणोका यदि आप अनुकरण नही करते तो केवल उस व्यक्तिके प्रति मौखिक श्रद्धा प्रकट करने मात्रसे आपको कोई लाभ नही होगा। आप उनके चित्रको अपने सामने रखते है तो इसका यह अर्थ होना चाहिए कि आप उनके पद-चिह्नोपर चलनेके लिए कृत-सकल्प है। आप यह भी याद रखें कि ऊँच-नीचकी भावनासे वह परे थे। अपने दीर्घ और विविधतापूर्ण जीवनमे उन्होने अस्पृश्यताको कभी कोई स्थान नही दिया। उनके सीनेमे एक राजाका हृदय था। वह पैसा कमाना भी जानते थे और पैसा लुटाना भी जानते थे।

इसके बाद गांधीजीने विद्यार्थियोसे कहा कि आप यदि हरिजनोसे प्रेम करते है तो पैसा देना काफी नही है। आप गन्दे तबेलोंको, अर्थात् दिल्लीकी हरिजन-बस्तियोंको साफ करके अपने उस प्रेमका एक ठोस सबूत दीजिए। मैंने नई दिल्लीके महलों, जिनके ऊपर पानीकी तरह पैसा बहाया गया है, और उन नारकीय बस्तियोका विरोधाभास देखा है जहाँ हरिजनोको मजबूरीमे रहना पड़ता है। यह कहते समय गाधीजीकी वाणीमे ऐसी गहरी व्यथा छिपी हुई थी जिसे शब्दोमे व्यक्त नहीं किया जा सकता।

१ सभा हिन्दू कॉलेजमें हुई थी।

२. गांधीजीने मोतीलाल नेहरूके चित्रका अनावरण किया था।

मैने चारमे से तीन बस्तियाँ देखी है, इनमे से एककी दशा तो सबसे बुरी थी। आँखोसे देखे बिना कोई कल्पना ही नही कर सकता कि मनुष्यके रहनेके लिए कोई ऐसा भी स्थान हो सकता है। मैने वहाँ जैसी गन्दगी और घिनावनापन देखा उसका वर्णन करनेके लिए मेरे पास कोई शब्द नही है। उससे किसीको भी मतली हो सकती है। आप अपनी कमर कस ले और इन नरक-स्थलोको साफ करे। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आपमे कुछ ऐसे विद्यार्थी है जो हरिजनोकी शारीरिक श्रम करके भी सेवा करना चाहते है। जब आप बस्तियोसे कूडा-कर्कट हटा देगे तो अधिक उपयोगी सेवा करनेके दूसरे बहुतसे तरीकोका आपको पता लग जायेगा।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २२-१२-१९३३

३५८. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

दिल्ली

बुधवार, १३ दिसम्बर, १९३३

साम्प्रदायिक भावनाके आधारपर अपने-अपने साम्प्रदायिक सगठन खडे करनेकी, चाहे ये सगठन हिन्दुओके हो या मुसलमानोके, श्री जवाहरलाल नेहरूने जो आलोचना[1] की है उसका सर मुहम्मद इकबाल द्वारा दिया गया जवाब[2] मैने अभी-अभी पढा है। इस विवादमे मै पडना तो नही चाहता, लेकिन सर मुहम्मद इकबालने मेरे बारेमे जो बात कही है, उसे मै निर्विरोध नही जाने दे सकता।

लन्दनमे मेरी स्थिति[3] स्पष्ट थी। बिना डॉ० अन्सारीके साम्प्रदायिक मामलोमे कोई प्रभावकारी कदम उठानेकी दृष्टिसे मै लाचार था। मै काग्रेसके आदेशसे बँधा हुआ था, और कोई सशोधन सुझानेसे पहले मेरे लिए डॉ० अन्सारीकी सलाह लेना जरूरी था। चूँकि फिलहाल मै मौलाना शौकत अलीका विश्वास खो बैठा हूँ, इसलिए मैने मुसलमान मित्रोसे कहा कि जहाँ तक मुसलमानोसे सम्बन्धित मामलोकी बात है, मेरा अन्त करण डॉ० अन्सारीकी जेबमे है, और इसलिए सम्मेलनमे उनकी मौजूदगीके लिए कोशिश करनेमे आप लोग मेरी मदद कीजिए। इसके लिए मुसलमान मित्र राजी नही हुए। उनका कहना था कि ऐसा वे तभी करेगे जब पहले मै उनकी माँगोको स्वीकार कर लूं। जब मेरा प्रयत्न विफल हो गया तब मैने वास्तविक एकता स्थापित करनेके लिए मेरे पास जो अन्य साधन मौजूद थे उनका सहारा लिया, लेकिन इनमे मै बुरी तरह विफल हुआ।

काग्रेसके समर्थकोके रूपमे काम करनेका प्रस्ताव उस समय मखौल जैसा प्रतीत होता था। और उसके बाद वह एक मखौल सिद्ध भी हुआ है। वार्त्ताके पीछे

१ जवाहरलाल नेहरूके वक्तव्यके अंशोके लिए देखिए परिशिष्ट ३।

२. देखिए परिशिष्ट २।

३. १९३१ में गोलमेज सम्मेलनमें, देखिए खण्ड ४८।

अवास्तविकताकी एक दमघोटू अनुभूति बनी हुई थी। जिस चीजको सर मुहम्मद इकबाल मुसलमानोकी मॉगको व्यक्तिगत रूपसे स्वीकार करनेकी मेरी दो शर्ते बताते है, वे शर्ते नही बल्कि मेरी स्वीकृतिका आवश्यक परिणाम थी। राजनीतिक एकता एक राजनीतिक उद्देश्यकी सिद्धिके लिए वाछित थी, और यह उद्देश्य मेरे तई और मै ही नही किसी भी भारतीयके तई, चाहे वह हिन्दू हो, मुसलमान हो, ईसाई हो या और कुछ हो, सच्चे अर्थोमे पूर्ण राष्ट्रीय स्वतन्त्रता ही हो सकता है। मुसलमानोकी मॉगे समान कार्रवाईके लिए प्रस्तुत की गई थी। लन्दनमे मुसलमान मित्र अन्य अल्प-सख्यकोको अत्यन्त महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय हितोके विरुद्ध उकसा रहे थे। यदि उन्हे मुझे अपने सहायकके रूपमे स्वीकार करना था — और मैने पूरी ईमानदारीसे अपनी सहायता उनको प्रदान करनेका प्रस्ताव भी किया था — तो मेरी सहायता ऐसी प्रत्येक शक्तिके विरुद्ध सघर्ष करनेके लिए ही हो सकती थी जो भारतकी स्वतन्त्रताके विरुद्ध हो। अत पृथकताकी भावनाके विरुद्ध सघर्ष करना आवश्यक था, भले ही इस भावनाको कोई भी फैला रहा हो।

किसी भी मुसलमानने पृथक मतदानको खुदमे एक अच्छी चीज नही बताया है। स्वय अपने मामलेमे भी मुसलमान मित्रोने स्वीकार किया है कि यह एक आवश्यक बुराई है जिसे अस्थायी अवधिके लिए सहन करना होगा। इसलिए इस सिद्धान्तका अनिश्चित रूपसे प्रसार नही किया जा सकता। तथाकथित अस्पृश्योकी ओरसे रखी गई मॉग स्पष्ट रूपसे राष्ट्रविरोधी है। यदि इस मॉगकी राष्ट्रीय हितके साथ सगति बैठती अथवा हरिजन हितोकी रक्षाके लिए यह आवश्यक होती तब तो, जैसा कि सर मुहम्मद इकबालने कहा है, मेरा विरोध करना अमानुषिक कार्य होता। लेकिन वैसी हालतमे मुसलमान मित्रोको यह प्रस्ताव भी नही रखना चाहिए था कि यदि मै उनकी मॉगे स्वीकार कर लूँ तो वे तटस्थ रहेगे। लेकिन मै मानता हूँ कि मेरा विरोध न केवल 'अमानुषिक' नही था, बल्कि यह विरोध हरिजनोके हितमे ही किया गया था।

मै अपने आपको स्वेच्छया हरिजन मानता हूँ। हरिजनोके हितकी रक्षा करनेकी मेरी इच्छा किसी बडेसे-बडे हरिजन नेतासे कम नही है। स्पष्ट ही सर मुहम्मद इकबालको यह देखने और समझनेका अवसर नही मिला है कि मैने हरिजनोके लिए क्या किया है और क्या कर रहा हूँ। अगर उन्होने सरसरी तौरपर भी मेरे कार्य-कलापोको देखा-समझा होता तो वह यह नही कहते, जैसा कि उन्होने कहा है, कि "श्री गाधीने अस्पृश्योको अन्य जातियोके साथ घुलने-मिलनेसे रोकनेको, और अस्पृश्यो तथा सवर्ण हिन्दुओ तक मे कोई वास्तविक सम्मेलन हुए बिना अस्पृश्योको हिन्दू-धर्मके अन्दर बनाये रखनेको अपने जीवनका मिशन बना लिया है।" उन्हे जानना चाहिए कि अस्पृश्यताका उन्मूलन मेरे जीवनका उद्देश्य है जिसे मै पिछले पचास वर्षोसे अबाध रूपसे करता रहा हूँ, और धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक मामलोमे सवर्ण हिन्दुओको जो अधिकार प्राप्त है वे ही अधिकार हरिजनोको भी देनेकी मॉग मैने की है और उनके लिए लडता रहा हूँ।

हरिजनोसे सम्बन्धित मेरा काम शुद्ध रूपसे धार्मिक काम है। इसके पीछे कोई राजनीतिक हेतु नही है। यह बुनियादी तौरपर अत्यन्त ऊँचे ढगका लोकोपकारी कार्य है। यह हिन्दू-धर्ममे आन्तरिक सुधारका आन्दोलन है। हिन्दू-समाजके अछूतोपर जो अमानुषिकताएँ थोपी गई है, यह आन्दोलन सवर्ण हिन्दुओ द्वारा उनके लिए पश्चाताप और क्षतिपूर्ति करनेका आन्दोलन है। मेरी राष्ट्रीयताकी भाँति ही मेरा हिन्दुत्व भी सम्पूर्ण मानवतासे अलग या मानवताके किसी अगके हितोके प्रतिकूल नही है। मै ऐसी स्वतन्त्रताको स्वतन्त्रता माननेसे इनकार कर दूँगा जिसमे मुसलमानोके या अन्य किसी वर्गके ऐसे हितोका बलिदान होता हो जो भारतकी स्वतन्त्रताके विरुद्ध नही है। मैने लन्दनमे सभी सवालो पर इसी भावनासे विचार किया था।

साम्प्रदायिक एकताकी आवश्यकता है, इस बातमे मेरा जितना दृढ विश्वास पहले था उतना ही अब भी है। पूछा जा सकता है कि अब मै क्या करूँगा। मेरी स्थिति वही है जो पहले थी। मै ऐसे किसी भी समाधानको स्वीकार कर लूँगा जो सभी मुसलमानोको स्वीकार हो और जो अन्य राष्ट्रीय हितोके विपरीत न हो। स्वभावत मै श्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा दिये गये सुझावका अनुमोदन करता हूँ। इससे ज्यादा न्यायोचित कुछ नही हो सकता। एक राष्ट्रवादीकी हैसियतसे मै छोटी-बडी सभी जातियोका प्रतिनिधि होनेका दावा करता हूँ।

[अग्रेजीसे]

हिन्दुस्तान टाइम्स, १४-१२-१९३३

३५९. भाषण : हरिजनोंकी सभा, दिल्लीमें[1]

१४ दिसम्बर, १९३३

आपके लिए जो स्कूल और कुएँ बनवाये जा रहे है सो आपको अस्पृश्य रखनेके विचारसे नही बनवाये जा रहे। लेकिन आपको पीनेके लिए पानी ही न मिले, यह मुझसे सहन नही होता। जिस पोखरसे कुत्ते और ढोर पानी पीते है उसमे से हरिजनोको पानी मिले, इस बातको कैसे सहन किया जा सकता है? आप तो शहरमे रहते है इसलिए कदाचित् आपको नलका पानी मिलता होगा, लेकिन गाँवोमे तो सवर्ण लोग उद्धततावश हरिजनोको कुँओके नजदीक भी नही आने देते। पानी देते है तो वह भी दूरसे गालीके साथ। यह बात आपको और मुझे सहन नही करनी चाहिए। हरिजनोके लिए कुएँ खुदवाये जाते है, सो उन्हे अस्पृश्य रखनेके लिए नही अपितु इसलिए है कि आपको कमसे-कम स्वच्छ पानी तो मिले। और ये कुएँ कोई अकेले हरिजनोके लिए ही है, ऐसी बात नही है। दूसरे लोग भी वहाँ पानी भरनेके

१ श्रद्धानन्द नगरीके हरिजनोने गाधीजीको अभिनन्दनपत्र भेंट करते हुए कहा था कि हरिजनोके लिए अलगसे स्कूल, कुएँ और मन्दिर नहीं खोले जाने चाहिए, क्योंकि इसका अर्थ उनका हिन्दू-समाजसे अलग होना होगा।

लिए आ सकते हैं, लेकिन हरिजनोंको तो वहाँ जानेका अधिकार है ही। उन्हें ढोरोंके पीनेके पोखरसे पानी लेना पड़ता है, यह बन्द होना चाहिए। सच पूछा जाये तो इनके लिए जितने कुएँ खुदवाये जाने चाहिए उतने हम नहीं खुदवा सके हैं और आप यह भी देख रहे हैं कि कितने ही सवर्ण हिन्दू स्वेच्छासे अपने कुएँ हरिजनोंके उपयोगके लिए खोलते जा रहे हैं। यही बात स्कूलोंके बारेमें भी लागू होती है। सार्वजनिक स्कूलोंमें हरिजनोंको प्रवेश दिये जानेके प्रयत्न तो चल ही रहे हैं, लेकिन जबतक हम हरिजनोंको सार्वजनिक स्कूलोंमें प्रवेश नहीं दिला सकते तबतक हमारे सामने यह सवाल है कि या तो हम हरिजनोंके लिए स्कूल खोलें या बच्चोंको पढ़ाईसे वंचित रहने दें। इसलिए हम स्कूल खोल रहे हैं। इनमें दूसरे बच्चे भी आ सकते हैं। लेकिन हरिजनोंको तो इनमें आनेका पूर्ण अधिकार है।

आपको 'हरिजन' नाम दिया गया है, यह तो कड़वे नामके बदले मधुर नाम दिया गया है। इस नामको अनेकों हरिजनोंने स्वीकार किया है। 'अस्पृश्य' जैसे खराब नामके बदले यह नाम अच्छा है। यह नाम एक हरिजनने ही सुझाया था। बुरे नामसे पुकारनेमें जो अविनय है वह इससे दूर हो जाता है। जब अस्पृश्यता मिट जायेगी तब या तो हिन्दूमात्र अपने आपको 'हरिजन' नामसे पुकारेंगे अथवा हरिजन सम्पूर्णतया हिन्दू-समाजमें मिल जायेंगे। तीसरा मार्ग यह है कि हिन्दू जाति ही नामशेष हो जायेगी। लेकिन इस विपत्तिको टालनेके लिए आज बहुत प्रयत्न किया जा रहा है। हरिजन सेवा संघ द्वारा यही काम हो रहा है जिससे अस्पृश्यता नष्ट हो जाये।

श्रद्धानन्द बस्तीमें आनेसे मुझे आनन्द हुआ है। हिन्दू-समाजमें ऐसा कौन होगा जो स्वर्गीय श्रद्धानन्दजीके नामसे परिचित न हो? श्रद्धानन्दजीके हृदयमें हरिजनोंके लिए जितनी दया और प्रेमभाव था उतना और किसीके हृदयमें नहीं हो सकता। हिन्दू जातिने अभिमानवश अस्पृश्य वर्गकी उत्पत्ति की है। इसका श्रद्धानन्दजीको बहुत मलाल था। इस पापके लिए या तो हिन्दू जातिको नष्ट होना पड़ेगा अथवा अपने पापका परिमार्जन करना होगा। परिमार्जनके इस कार्यमें आप मदद करें। दूसरे हरिजनोंके पास आप यह सन्देश ले जायें। जो शुद्धियज्ञ हो रहा है उसमें आप अपना योगदान दें। बाह्य और आन्तरिक सफाई रखें, मरे ढोरोंका मांस खाना छोड़ दें, गोमांस-भक्षणका त्याग करें। यह तीन काम तो आप अवश्य ही करें। चौथी बात यह है कि आप शराब पीना छोड़ दें। अन्य हिन्दू यदि शराब पियें तो भी आप उसे छोड़ दें। आपका तो पतन किया गया है और अब आपको अपने ही बलपर चढ़ना है, इसलिए मैं आपसे शराब छोड़नेकी विनती करता हूँ। आप इतना करें और अन्य हरिजनोंसे भी इसे करनेके लिए कहें। आपने मुझे थैली भेंट की है। लेकिन हरिजनोंसे तो मैं कौड़ी भी नहीं माँगता। आपको तो हमें देना है। हमपर तो आपका ऋण है। तथापि हरिजन देते हैं तो मैं ले रहा हूँ। इसका अनेक गुणा आपको वापस दिया जायेगा। लेकिन आपको देनेकी जरूरत नहीं।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, २४-१२-१९३३

३६०. भाषण : महिला-सभा, दिल्लीमे

१४ दिसम्बर, १९३३

परमात्मा, जो सबका स्रष्टा है, की आँखोमे उसके सब प्राणी बराबर है। अगर उसने मनुष्य-मनुष्यके बीच उच्च और नीचका कोई भेदभाव रखा होता तो वह दिखाई देता जैसे कि, मिसालके तौरपर, हाथी और चीटीमे भेद नजर आता है। लेकिन उसने तो सभी मनुष्योको बिना किसी भेदभावके समान आकार-प्रकार और समान स्वाभाविक आवश्यकताएँ प्रदान की है। यदि आप हरिजनोको मल-मूत्र आदि साफ करनेके कारण उन्हे अस्पृश्य मानती है तो क्या एक माँ अपने बच्चोके लिए रोज यही काम नही करती? तब क्या इस कारण ही वह अस्पृश्य बन जाती है? जिस प्रकार माँ नहा-धोकर शुद्ध बन सकती है, उसी प्रकार यही बात भंगियोके ऊपर भी लागू हो सकती है।[१] हरिजनोको, जो समाजके सबसे ज्यादा उपयोगी सेवक है, अस्पृश्य और अछूत समझना अन्यायकी चरम सीमा है। मै यह दौरा हिन्दू बहनोको इस पापके प्रति सचेत करनेके लिए ही कर रहा हूँ। किसी व्यक्तिको अपनेसे हीन समझना कभी भी तारीफकी बात नही हो सकती। हम सब एक ही परमात्माके उपासक है, जिसकी उपासना हम विभिन्न नामोसे करते है। इसलिए हम सबको अपनी आधारभूत एकताको पहचान लेना चाहिए तथा छुआछूतकी और मनुष्योमे अमुक छोटा और अमुक बडा है इस भावनाका त्याग कर देना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २२-१२-१९३३

३६१. अनन्तपुरमें मैंने क्या देखा?

मध्यप्रान्त (हिन्दी-भाषी)के सागर जिलेमे अनन्तपुर एक छोटा-सा गाँव है। इस गाँवमे कुल १७७ घर है, और जन-सख्या लगभग ८८५ है। सबसे करीबका रेलस्टेशन यहाँसे ३५ मील दूर है। यहाँ डाकघर और तारघर नही है। अनन्तपुरसे १२ मील दूर रहली गाँवसे सप्ताहमे एक बार डाक आती है। यहाँके लिए यही निकटसे निकट डाकघर है। दरिद्र भारतका, नमूनेके बतौर, यह एक अत्यन्त गरीब गाँव है। सालमे चार महीनेसे ज्यादाका काम गाँववालोके पास नही रहता। चार साल पहले तक यहाँके तमाम लोगोके लिए मुश्किलसे शायद ही कोई सहायक धन्धा था। उसके बाद एक घटना घटी।

१ ये दो वाक्य **हिन्दुस्तान टाइम्स**, १५-१२-१९३३ से लिये गये है।

१९२९ के सालमे अपनी गजबकी धुनके एक उत्साही नवयुवकने अपने प्रयोगके लिए यह अनन्तपुर गाँव चुना। ऐसे गाँवकी तलाशमे, वह एक सालसे बराबर भटक रहा था। खद्दरके पीछे तो वह पागल है। खद्दरके सन्देशमे उसका शायद मेरे बराबर ही विश्वास है। मुझे शक है कि कही वह मेरे 'शायद' के स्थानपर 'अगर अधिक नही तो' न कर दे। अगर उसने यह सशोधन कर दिया, तो मुझे कोई आपत्ति न होगी। उस तरुणका आत्मविश्वास ऐसा है जो हममे से बडेसे-बडे आदमीको लज्जित कर सकता है। उसका विश्वास है कि भारतकी कृषक-जनताकी मजबूरीकी बेकारी, और फलस्वरूप उसकी चिर-निर्धनताको दूर करनेका कोई एकमात्र स्थायी उपाय है तो यही है कि चरखेको व्यापक रूपसे अपनाया जाये। उस युवकका नाम है जेठालाल गोविन्दजी। भाई जेठालाल अग्रेजी नही जानते। गुजरातीके भी वह विद्वान नही है। यद्यपि पालन-पोषण उनका नगरमे हुआ, तो भी बडी तितिक्षासे उन्होने अपने आपको ग्राम-जीवनकी मुसीबते सहन करने योग्य बना लिया है और गाँववालोके बीचमे रहकर वह वैसा ही जीवन व्यतीत कर रहे है। उनके साथ तीन कार्यकर्त्ता है। एक समयमे एक ही काम किया जाये, इसमे उनका दृढ विश्वास है, और इसीलिए वह और कोई सामाजिक सेवा, चाहे वह कितनी ही लुभानेवाली हो, नही करते। उनका खयाल है कि अगर घर-घरमे चरखेका अच्छी तरह प्रचार हो गया, तो बाकी समस्याएँ, जो गाँववालोको हैरान किये रहती है और उन्हे नीचे गिरा रही है, अपने-आप ही हल हो जायेगी। उनका कहना है कि "किसी गाँववालेसे शराब न पीने और किफायतशारीसे रहनेको मै नही कहूँगा, क्योकि कोई भी शराबी, जबतक वह शराबकी लत नही छोडेगा, चरखेको छुएगा भी नही, और कगालके सामने किफायत-शारीके गीत गाना तो एक तरहका मखौल ही होगा। उसकी जेबमे ताँबेके कुछ गोल-गोल टुकडे डालनेके बाद ही उसे किफायतशारीका उपदेश देना समयानुकूल होगा। चूँकि मै मानता हूँ कि चरखेका हरएक चक्कर उसके दैनिक जीवनमे क्रान्ति करने-वाला होगा, इसीलिए उसकी बहुत-सी बुराइयो और कमजोरियोको मै धीरजके साथ सहन कर लूँगा। और मेरा विश्वास है कि यदि मै स्वय पवित्र हूँ, तो मेरी पवित्रता गाँववाले भाइयोके बाह्य और आन्तरिक, दोनो शरीरोका स्पर्श किये बिना नही रह सकती।" भाग्यमे परिवर्तन होते रहनेपर भी, अटल आस्थाके साथ, वह और उनके तीनो साथी पिछले चार सालोसे अपने उद्यममे बडी लगनसे लगे हुए है। उनका मूल मन्त्र 'स्वावलम्बन' है। खादी स्वावलम्बी होनी ही चाहिए। स्वावलम्बी बननेका उपाय यह है कि गाँववाले खुद काते और सम्भव हो तो अपने लिए कपडा भी बुने। अपने पैदा किये हुए अनाजका जो अश बचता है केवल वही वे बेचते है। उसी प्रकार बचा हुआ फाजिल कपडा ही वे बेचे। जैसे अपने ही खेतमे पैदा हुए और अपने ही घरमे पीसे तथा पकाये हुए अनाजकी रोटीसे ज्यादा सस्ती और कोई रोटी नही हो सकती, वैसे ही अपने ही घरमे कते और बुने हुए कपडेसे और कोई कपडा सस्ता नही हो सकता। इन सेवकोका काम गाँववालोको कातना-बुनना सिखाना व उसमे मदद देना है। वे हर झोपड़ेमे जाते है और उन सबसे ओटना, कातना, धुनना,

बुनना और रॅगना सीखनेको कहते है, वे उनके चरखोको सुधारते है और गॉवमे चरखे बनाने लायक जो कुछ सामान मिलता है, उसीसे वे बेचनेके लिए नये-नये चरखे बनवाते है। गॉवके बढई और लुहारको इस तरह कुछ अधिक काम मिल जाता है। प्रत्येक कामके विषयमे खूब विचार कर लिया गया है। उन्होने प्रत्येक गॉववालेकी आवश्कयताओ और अभावोका, उनकी आदतो और रीति-रिवाजोका काफी अच्छा अध्ययन किया है और अपनी रिपोर्ट हिन्दीमे प्रकाशित की हे। मधुमक्खियोके छत्तेकी तरह उनके कारखानेमे खूब चहलपहल मची रहती है। खूब सुघडता और व्यवस्थित तरीकेसे वहॉ काम होता है। तमाम कार्यकर्त्ताओकी एक किताब रहती है, जिसमे हरएक के रोजाना काम का सक्षेपमे विवरण रहता है। खादी-कार्यकी नीव डालने-वाले चार ही सेवकोकी यहॉ मैने चर्चा की है। यो तो अनन्तपुरके चारो ओर पॉच मीलके घेरेमे १७ गॉवोकी सेवाके लिए उन्होने कार्यकर्त्ता पैदा कर दिये है।

जो झोपडे अनन्तपुरमे मैने देखे, उनके बारेमे भी यहॉ दो शब्द कहूँगा। मै छ से अधिक झोपडोमे गया। उनमे से एक झोपडा हरिजनका भी था। यहॉ यह कहना ही पडता है कि इस खादी सन्देशके अनुसार काम करनेमे हरिजन भाई सबसे अधिक तत्पर पाये गये।

झोपडे नीची छतोके थे। उनकी कच्ची दीवारे मिट्टीकी बनी हुई थी। हवा और रोशनी आनेके लिए झरोखे तो नामको भी नही थे। झोपडोमे सन्दूक और धातुके बर्तन-भॉडेतक न थे। जिन्होने अपने लिए खादी बुन ली थी, उन्हे छोडकर बाकी लोग कटे-फटे चिथडे पहने हुए थे। मैने उनके पास जो-कुछ देखा, वह साल-भरका नाज रखनेके लिए मिट्टीका खाली कोठा ही था। एक ही कोठा रसोई बनाने, रहने और सोनेके काममे लाया जाता है। उनके बिस्तरे भूसे या पयालके थे, और वे कुछ चिथडोसे ढॅके हुए थे। यह बात उन घरोमे नही थी, जहॉ उन्होने अपने लिए कुछ खादी बुन ली थी। अब उनका भोजन सुनिए — ज्वारकी रोटियॉ और तेल या बिना तेलकी छौक लगी दाल। दूध-घी तो शायद ही उन्हे कभी नसीब होता हो। जिस चमार भाईका झोपडा मैने देखा, वह एक अपवाद था। उसके यहॉ दो गाये थी। उसे और उसके बच्चोको कभी दूधकी एक बूंद मिल जाती है या नही, यह तो एक दूसरी बात रही। गॉववालोको अपर्याप्त भोजन मिलता है और पहननेको कपडे तो और भी कम। कुछ बच्चे तो बारहो महीने बिलकुल नग-धडग ही रहते है। दिनमे धूपसे और रातमे फूसकी आगसे वे अपने ठिठुरते हुए तनको गरम कर लेते है। मुझे बताया गया कि अनन्तपुरमे कुछ ऐसे परिवार है, जिन्होने खद्दरके धन्धेको एक पैसेकी रुई खरीदकर शुरू किया था। एक पैसेकी रुई खरीदकर जो सूत काता गया, उसे बेचकर दूसरे दिन दुगुनेसे काम शुरू किया गया। इस तरह धीरे-धीरे पूंजी बढाकर अब वे अपने कपडे आप तैयार करने लगे है।

मेरे दौरेके अवसरपर जो विवरण-पुस्तिका तैयार की गई थी, उसमे से यहॉ कुछ अश मै नीचे उद्धृत करता हूँ —

सारे सामानकी यह लागत है

	रु० आ० पाई
ओटनेकी चरखी	०—७—०
धुननेकी कमान, ताँत और हत्था	०—९—६
चरखा और तकुआ	०—६—६
अटेरन या नटाई	०—१—०
३२ इच चौडा करघा और उसका सब सामान	३—०—०
कुल	४—८—०

अनन्तपुरके चारो ओर पाँच मीलके चक्करमे १७ गाँवोमे हम खादीका काम करते है। इन गाँवोमे कुल ११०० घर है और आबादी ५५०० के लगभग है। हमारे श्रमके फलस्वरूप ८० प्रतिशत लोगोने कताई सीख ली है और ६० प्रतिशत लोगोने धुनना सीख लिया है।

सौ से अधिक आदमी बुनना सीख गये है।

सूतकी साधारण मजबूती ५६ तक पहुँच गई है और औसतन १० नम्बर तक का सूत कात लिया जाता है।

गाँववालोके काम करनेका औसत सालभरमे १२० दिनका है —शेष समयमे वे बिलकुल बेकार बैठे रहते है। आजकल हरएक आदमी बेकारीके दिनोमे से सालभर मे औसतन ५०० घटे खादीके काममे लगाता है। हमारा आदर्श तो यह है कि यह औसत सालभरमे हम १६०० घटे तक पहुँचा दे।

अधिक कार्यकर्त्ता पैदा कर सकनेपर ही अब हमारे कार्यकी उन्नति निर्भर करती है। आजकल हमारे पास तीन मुख्य कार्यकर्त्ता, तीन सहकारी, पाँच उप-सहकारी, पाँच मददगार और चार उम्मीदवार है।

हमारे मासिक खर्चका औसत ३२५ रुपये है। अखिल भारतीय चरखा मघकी ओरसे हमे यह पैसा मिलता है।

इस महान् प्रयोगकी ओर जनताका ध्यान मै केवल यह दिखानेके लिए ही आकर्षित नही कर रहा हूँ कि हरिजनोको इमसे कहाँ तक लाभ है, बल्कि इसलिए भी कि तमाम गाँववालोपर खादीके इम सफल प्रयोगका कैसा प्रभाव पडता है। इस प्रयोगका उद्देश्य सिर्फ हरिजन-सेवा ही नही है, इसका उद्देश्य तो चरखेके द्वारा उन सब गरीब ग्रामवासियोकी सेवा करना है जिन्हे पर्याप्त भोजन और वस्त्र नही मिलते। खादीके द्वारा ग्राम-सुधार करनेका इससे अधिक सरल, सस्ता और प्रभावकर प्रयोग मै नही जानता। फिलहाल उन्नति तो निस्सन्देह धीमी मालूम होती है, मगर मुझे उम्मीद है कि अन्तमे इस प्रयोगके द्वारा ही उन्नतिकी गति तेजसे-तेज देखनेमे आयेगी।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १५-१२-१९३३

३६२. स्मरण रखने योग्य बातें

मेरे गत एक मासके इस प्रवासमे समय तो अधिक नष्ट हुआ ही, कार्यकर्त्ताओको भी चिन्ता काफी रही——और जैसा मेरा साधारण-सा स्वास्थ्य है, उसे देखते हुए मुझे अधिक और अनावश्यक परिश्रम उठाना पडा, और मेरी मोटर गुजरते समय उसकी ओर अव्यवस्थित भारी भीड उमडनेके कारण ही यह सब हुआ। याद नही कि कितने ही अवसरोपर लोगोने मेरे पैरकी उँगलियाँ कुचल दी और मेरे पेर खरोच डाले। अबतक ईश्वरने ही मुझे किसी गहरी चोटसे बचाया है। पर मेरी इस रक्षाका श्रेय वे अव्यवस्थित जनसमूह नही ले सकते। लोग तो प्रेममे पागल हो जाते है। और यह स्पष्ट है कि पागलपनसे किसीका कोई भला नही होता। अगर स्वयसेवक लोग खुद अच्छे ढगसे काम करे, और जैसा कि अक्सर देखनेमे आया है, उमडी हुई भीडके साथ वे खुद पागल न हो जाये, तो सुव्यवस्था बडी आसानीसे हो सकती है। एकाएक तो लोगोको किसी बातकी हिदायत दी नही जा सकती। इसलिए यह अच्छा हो कि पहलेसे ही पर्चे छपाकर लोगोमे बॉट दिये जाये और स्वयसेवक सभा-स्थलमे आनेवाली जनताको सारी हिदायते पढ-पढकर भली-भॉति समझा दिया करे। इस तरहकी सबसे अच्छी व्यवस्था तो हर्दामे की गई थी। वहॉके सुसज्जित बाजारमे यद्यपि काफी रेलपेल थी, तो भी हम लोगोको उस भीडमे से गुजरनेमे दस मिनटसे ज्यादा नही लगे। दूसरी जगहोपर उतना ही फासला तय करनेमे अक्सर आध घटेसे भी अधिक समय लगा है। हर्दामे जो सफलता मिली, वह सिर्फ पहलेसे की गई तैयारियोके कारण ही नही मिली, बल्कि उसका बहुत सारा श्रेय तो स्वयसेवकोपर था, जो ठीक-ठीक फासलेपर एक लम्बी रस्सी पकडे कतारोमे खडे हुए थे। उनकी लाइनोको लॉघकर कोई जा ही नही सकता था। खैर, अब मे सर्वसाधारणके सूचनार्थ चन्द हिदायतोकी एक सूची नीचे देता हूँ। मुझे आशा है कि इन हिदायतोपर सामान्य रीतिसे मेरे प्रवासमे सर्वत्र अमल किया जायेगा।

(१) हिदायतोके पर्चे ऐसी सरल भाषामे छपाकर गॉववालोमे बॉट दिये जाया करे, जिसे वे आसानीसे समझ ले। गॉवोसे ज्यो ही लोग सभा-स्थल पर आने लगे, उन्हे ये पर्चे पढ-पढकर भली-भॉति समझा दिये जाये।

(२) स्टेशनोपर जो लोग मुझे लेने आये, उन्हे कतारे बॉध-बॉध कर खडे हो जाना चाहिए, ताकि मुसाफिरोको किसी तरहकी असुविधा न हो। जब गाडी प्लेटफार्म पर आ जाये, तब भी उन्हे अपनी जगहोसे नही उठना चाहिए।

(३) प्लेटफार्मपर गाडी पहुँचनेसे कुछ मिनट पहले भीडके आगे स्वयसेवकोको कमर तक ऊँची एक लम्बी रस्सी पकडाकर खडे कर देना चाहिए, इससे पीछे खडे हुए आदमी अनजानमे मेरी ओर तथा रेलकी तरफ न आ सकेगे।

(४) स्वयसेवक लोग किसी भी हालतमे मेरे सामने साष्टाग दडवत न करे।

(५) स्वयसेवकोको 'जयकारो' या दूसरे नारोमे भाग नही लेना चाहिए। इससे उनके उचित कर्त्तव्य-पालनमे तो बाधा पडती ही है, साथ ही उनके उन जयकारोमे भाग लेनेसे नारोकी स्वत स्फूर्तिता समाप्त हो जाती है।

(६) अपनी हिदायते स्वयसेवक जोरसे चिल्ला-चिल्ला कर जनताको न सुनाये, वल्कि धीरज और नरमीसे समझाया करे। सिर्फ एक ही स्वयसेवक, जो इस कामके लिए नियत किया गया हो, उन आदेशोको सुनाया करे।

(७) लोगोसे प्रार्थना की जाये कि वे मोटरगाडियोको चारो ओरसे घेर न लिया करे।

(८) जबतक स्वागत समितिका कोई उत्तरदायी सदस्य न कहे, किसी हालतमे स्वयसेवकोको मेरी या किसी दूसरी मोटरगाडी पर नही चढना चाहिए।

(९) मेरी रेल-यात्रामे रातके ८ बजेसे लेकर सवेरे ६ बजे तकके दरम्यान जनता किसी स्टेशनपर जमा न हो, और रातको लोग जयकारके या दूसरे नारे तो हर्गिज न लगाये। रातमे इन नारोके बुलन्द करनेसे मुसाफिरो तथा मेरे साथियोके आराम और शान्तिमे खलल पडता हे।

(१०) दिन या रातको जो लोग स्टेशनोपर जमा हो जाते है, यह अच्छा होगा कि वे एक बातका सदा स्मरण रखे। वह यह कि मै मानपत्र बटोरनेके लिए यह दौरा नही कर रहा हूँ। इसका उद्देश्य तो लोगोसे आत्मशुद्धि करनेके लिए कहना है, तथाकथित उच्च वर्गीय हिन्दुओको हरिजनोके प्रति किये गये उनके अन्यायका प्रायश्चित्त करनेको आमन्त्रित करना है, और हरिजन-कार्यके लिए धन-सग्रह करना है। इसलिए स्टेशनोपर आनेवाले भाइयोसे स्वाभाविक रीतिसे मै यही आशा करूँगा कि निजी अथवा सामूहिक रूपसे वे कुछ-न-कुछ पैसा लेकर ही आया करेगे।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, १५-१२-१९३३

३६३. पत्र : अगाथा हैरिसनको

१५ दिसम्बर, १९३३

असंशोधित

प्रिय अगाथा,

मै यह पत्र बहुत सवेरे चलती हुई ट्रेनमे लिख रहा हूँ। मीराने अब नियमित पत्र लिखने बन्द कर दिये है। वह सेवा-शुश्रूषा, खाना बनाना, बोतल धोना, 'हरिजन' के प्रूफ पढना, तथा यूरोप और अमेरिकाके लोगोसे पत्र-व्यवहार करनेका काम एक साथ करे, और फिर भी उसका शरीर न टूट जाये, ऐसा नही हो सकता।

तुम्हारे पत्र मूल्यवान होते है।

भूलाभाई देसाईके कामके बारेमे तुम्हारा जो कहना है उसमे कोई आश्चर्यकी बात नही है। इससे कमकी मुझे आशा भी नही थी।

रोममे काल्पनिक भेट करनेके सम्बन्धमे बेशक, मुझे रोमके पत्र-प्रतिनिधि[1] द्वारा पुन स्पष्टीकरण कभी देखनेको नही मिला। मै तो जेलमे था। लेकिन यदि मै पहले-वाला वक्तव्य और दुबारासे की गई पुष्टिको देखूँ तो मै इसपर प्रकाश डाल सकूँगा। यह बात सर्वथा सत्य है कि अविश्वासी लोगोकी ईश्वर कोई मदद नही करेगा। लेकिन इससे कोई फर्क नही पडता। मुझे तो सच्चे मनसे शका करनेवाले लोगोका समाधान करना ही चाहिए। तुम्हारे लिए सबसे शीघ्र फलदायी रास्ता यह है कि तुम या अन्य कोई मित्र 'टाइम्स'की फाइल प्राप्त करके दोनो वक्तव्योकी नकल तैयार कर लो और अगली ३ अगस्त[2] से पहले-पहले मुझे भेज दो। तुम्हारे लिए यह काफी लम्बा नोटिस है।

यदि तुम्हारे प्रयत्न बोसको इग्लैड जानेकी अनुमति दिलानेमे सफल हो जाते है तो यह अच्छी बात होगी। मै नही समझ पाया कि उन्हे लन्दनसे दूर क्यो रखा जा रहा है।

पहलेकी तरह अखबारोकी कतरने साथ सलग्न है। सभाओमे अभूतपूर्व लोगोकी उपस्थिति देखकर कट्टरपथी विरोधी कुछ समयके लिए विस्मयाभिभूत हो गये थे। लेकिन अब वे उससे उबरने लगे है। हालाँकि विरोधी लोगोकी तादाद काफी कम है लेकिन जहाँतक मै समझा सका हूँ, उनके पास पैसा है, जिसके बलपर वे टिके हुए है। इसलिए सभाओमे वे गडबडी पैदा करानेकी कोशिश कर रहे है। लेकिन मुझे आशा है कि मै इस विरोधका सामना कर सकूँगा।

राजनीतिक स्थिति लगभग पहले जैसी ही है। सरकारके रुखकी झलक बर्दवानके कमिश्नर द्वारा दिये गये भाषणमे मिलती है।

सप्रेम,

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४७६) से।

१. सिगनोर गायडा, देखिए खण्ड ४८, पृष्ठ ४७१ तथा ४७३ और खण्ड ५७, "पत्र सर सैम्युअल होरको", ६-३-१९३४ भी।

२. इस तारीख को गाधीजी जेलसे रिहा होनेवाले थे, देखिए खण्ड ५५, पृष्ठ ४४५।

३६४. पत्र : होरेस जी. अलेक्जेंडरको

१५ दिसम्बर, १९३३

प्रिय होरेस,

रोममे काल्पनिक भेटके सम्बन्धमे तुमने अगाथा को जो पत्र लिखा था वह उसने मुझे भेज दिया है। पत्रकारिताका कितना पतन हो गया है, यह देखकर आश्चर्य होता है। भगवानका शुक्र है कि व्यापक रूपसे पढे जानेवाले समाचारपत्र भी मानव-समाजके बहुत बडे हिस्सेको प्रभावित नही कर सके है। लेकिन ऐसा सोचनेके बाद भी मुझे उस विशिष्ट आरोपका उत्तर देनेकी आवश्यकतासे किसी भी प्रकार छुटकारा नही मिलनेका है। यदि अगाथा रोमके पत्र द्वारा दिये गये दोनो वक्तव्योको ढूंढ सके तो मै इस मामलेको तुरन्त निपटा सकता हूँ।

आशा है तुम और ऑलिव[1] अच्छी तरह होगे।

तुम सबको प्यार,

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४२२) से।

३६५. पत्र : मार्गरेट स्पीगलको

१५ दिसम्बर, १९३३

चि० अमला,

तुम्हे न देखकर मुझे निराशा हुई।[2] तुम्हे जो भय था, उसके जवाबमे मैंने लिखा था कि मै तुम्हे भगा नही[3] दूंगा। तुम्हे अपनेको शान्त रखना चाहिए तथा स्वाभाविक ढगसे रहना, सोचना, और बोलना चाहिए। यदि तुम्हे मुझसे प्यार है तो मुझसे भय नही होना चाहिए।

मुझे रक्तचाप बिलकुल नही है। पत्र अवश्य लिखो।

सप्रेम,

बापू

[अग्रेजीसे]

स्पीगल पेपर्स, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

१ होरेस अलेक्जेंडरकी पत्नी।

२ देखिए "पत्र मार्गरेट स्पीगलको", ७/९-१२-१९३३।

३. साधन-सूत्रमें यह शब्द रेखांकित है।

३६६. पत्र : एस्थर मेननको

१५ दिसम्बर, १९३३

प्रिय बिटिया,

मुझे तुम्हारा मार्मिक पत्र मिला। खैर, तुम्हे मानसिक और शारीरिक दोनो प्रकारके दु:खोमे खुश रहना चाहिए। तुम अब वही करो जिससे तुम्हारी अपनी अन्तरात्मा सन्तुष्ट होती हो। अन्त भला होगा। बेशक, मारिया[1] तो टूट जायेगी। लेकिन हम सब तो ईश्वरके हाथमे है, उसकी आज्ञाके बिना एक पत्ता तक नही हिलता। यदि हम सब-कुछ अपनी इच्छानुसार कर सकते होते, तो ससारका तो विनाश ही हो जाता। शायद यह एक तरहसे अच्छा ही है कि हमारी इच्छाऐं अक्सर ही अपूर्ण रह जाती है। ईश्वरके प्रति हमारी वफादारीकी इससे यह परीक्षा हो जाती है कि जब वह हमारी इच्छाओकी पूर्ति नही करता, हम तब भी उसमे श्रद्धा रखते है। इसलिए मै चाहता हूँ कि जब तुम्हे सारी बाते बिगडती प्रतीत हो, उस समय भी तुम पूर्ण शान्तिका अनुभव करो।

मेरी दुआ, मेरा मन और मेरा प्यार तुम्हारे साथ है। बाकी बातोके लिए साप्ताहिक 'हरिजन' तुम्हारे लिए मेरा साप्ताहिक पत्र है, जैसा कि वह बहुतसे मित्रो और साथियोके लिए है।

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (न० १२३) से, सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार, **माई डियर चाइल्ड**, पृष्ठ १०२ भी

३६७. पत्र : जे० एस० हॉयलैंडको

१५ दिसम्बर, १९३३

प्रिय हॉयलैड,

कुछ समय पहले तुमने मुझसे पूछा था कि क्या तुम उन भजनोको प्रकाशित कर सकते हो। बेशक तुम प्रकाशित कर सकते हो, लेकिन शर्त यह है कि इसके लिखनेका तुम मुझे कोई श्रेय नही दोगे। तुम भूमिकामे इतना लिख सकते हो कि मैने अग्रेज मित्रोके उपयोगके लिए खास तौरपर मीराके लिए एक कामचलाऊ अनुवाद तैयार किया था, और तुमने उस अनुवादको सुधार दिया है।[2]

१ ऐन मारी पीटरसन।

२ देखिए खण्ड ४४, पृष्ठ ३९४ की पाद-टिप्पणी।

बहुतसे मित्रो द्वारा प्रेमपूर्वक हस्ताक्षर किये हुए तुम्हारे पोस्टकार्ड मुझे मिले। मुझे पता है कि तुम्हारी मौन प्रार्थना-सभाओमे मेरे कार्यकी सफलताके लिए भी प्रार्थना होती है।

तुम सबको प्यार,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४५१०) से, सौजन्य वुडब्रुक कालेज, बर्मिघम तथा जैसी हॉयलैंड

३६८. पत्र : महालक्ष्मी एम० ठक्करको

वर्धा
१५ दिसम्बर, १९३३

चि० महालक्ष्मी,

बच्चोके बारेमे चिन्ता न करना। माधवजीकी भी न करना।

बच्चोके बारेमे मैंने बातचीत कर ली है। यदि माधवजी अपने धर्मका पालन करना चाहे तो उन्हे मत रोकना। मुझे मिलना जरूरी हो तो मै जहाँ होऊँ वहाँ आकर मिल जाना।

सब बहनोको,

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६८२४) से।

३६९. बातचीत : एक सनातनीसे[1]

[१६ दिसम्बर, १९३३ से पूर्व]

आपको यह समझना चाहिए कि ऐसे कितने ही शास्त्री मौजूद है, जो सनातनी होनेका दावा करते है और साथ ही सुधारकोके पक्षका समर्थन करते है। यह मै कैसे मान लूँ कि शास्त्रोका प्रमाण देकर वे शास्त्री जो कहते है, वह असत्य है? वे लोग मेरे इस विचारको और भी दृढ करते है कि अस्पृश्यताके लिए शास्त्रका आधार नही है। मै वेद, उपनिषद, स्मृतियो और पुराणोको मानता हूँ। पर मै 'गीता'-को शास्त्र-ज्ञानकी कुंजी मानता हूँ। 'गीता' मे यह बात बताई गई है कि हमारा आचरण किन सिद्धान्तोपर आधारित होना चाहिए। 'गीता' मे समस्त शास्त्रोका निचोड

१. यह सनातनी हिन्दू गांधीजीसे विजयवाड़ा जाते समय मिला था, जहाँ गांधीजी १६ दिसम्बरको पहुँचे थे।

आ जाता है। इसलिए साधारण मनुष्योको 'गीता' के बाद किसी अन्य ग्रन्थको पढनेकी आवश्यकता नही रह जाती। पर मैं तो इससे भी एक कदम आगे जाता हूं। वेदोके नामसे जो चार ग्रन्थ प्रसिद्ध है, वे ही 'वेद' नही है। इन ग्रन्थोमे तो मूल वेदोके कुछ अशमात्र ही है। जो सत्य सनातन है, उसे इन छपे हुए ग्रन्थोमे ही गाडा या सीमित नही किया जा सकता है। इसलिए मेरा विश्वास है कि वेद अनिर्वचनीय है और अलिखित है। वेदोका वास तो मनुष्यके हृदयमे है। और हमारे शास्त्रोंने बताया है कि हृदय मे इस सत्यका स्फुरण होनेके लिए किस प्रकारकी साधना और अभ्यास करना चाहिए। अत मनुष्यका निजी अनुभव ही इसके लिए प्रमाणस्वरूप समझना चाहिए। ग्रन्थोकी सहायता मनुष्यको मिलती है सही, पर इन ग्रन्थोका भी अर्थ तो करना ही होता है, और जब एक ही वचनके भिन्न-भिन्न अर्थ किये जाते हो, तब सत्यशोधक स्वय ही अन्तिम निर्णयकर्त्ता है। इस तरह मुझे भी अपने लिए निर्णय करना पडा है। वर्षो पहले मैने यह निर्णय कर लिया था, और मै इस परिणामपर पहुँच गया था कि आज जिस अस्पृश्यताका पालन हम करते है, शास्त्र उसका समर्थन नही करते।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २२-१२-१९३३

३७०. भाषण : हरिजन सेवकोंकी सभामे

विजयवाडा

१६ दिसम्बर, १९३३

गाधीजीने कहा कि आप सब लोगोसे मिलकर तथा आपकी साहित्यिक प्रतिभाका प्रमाण पाकर मुझे बहुत खुशी हुई। उन्होने कहा, यह तो मुझे हमेशासे पता था कि आन्ध्रप्रदेशके लोग कविताएँ लिखनेमे और उन्हे प्रेमपूर्वक पढनेमे अच्छे है और इसीलिए मै यह अनुभव किये बिना नही रह सका कि आज शाम जो कविता-पाठ मैने देखा वह कुछ हद तक बेकार था। काव्य और कलाको तो सत्यके प्रचारका साधन होना चाहिए, उनका उपयोग कभी भी चापलूसीके लिए नहीं करना चाहिए। क्योकि कविताके ऐसे प्रयोगसे न केवल कलाका ही ह्रास होगा बल्कि सत्यका भी खंडन होगा। चूंकि इस समय आप सब लोग हिन्दू-धर्मकी शुद्धिके आन्दोलनमे लगे हुए है इसलिए मै हरएकसे यह आशा करता हूँ कि वह सत्यके मार्गका अनुसरण करे। मुझे आन्ध्रप्रदेशसे बड़ी आशाएँ है और मै जानता हूँ कि वह उन आशाओको फलीभूत करेगा।[1]

आप चाहे सवर्ण हिन्दू हो या हरिजन, हरिजनोके हित के लिए आप जो भी योगदान कर रहे हो उसमे बिल्कुल भी खोट नही होना चाहिए। इस प्रकारके

१ इसके बादका अश **बॉम्बे क्रॉनिकल** से लिया गया है।

आन्दोलनमे स्वार्थ, छल-कपट, असत्यता और हिंसाके लिए कोई स्थान नही होना चाहिए। धार्मिक आन्दोलन होनेके नाते इसमे हरिजनो और सवर्णो, दोनोके हृदयोको छूनेकी क्षमता होनी चाहिए। हजारो सालसे ऊँच और नीचके भेदने हमारे दिलोमे गहरी जड पकड ली है। केवल धर्मास्त्रो द्वारा ही अस्पृश्यताका नाश हो सकता है।

बहुतसे हिन्दू सन्तो और ऋषियोने हमे यह शिक्षा दी है कि धर्मकी रक्षा और शुद्धिका एकमात्र साधन प्रायश्चित्त ही है। कहनेकी आवश्यकता नही कि प्रायश्चित्तमे स्वार्थ और अहके लिए कोई स्थान नही हो सकता। मै आशा करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि जो लोग हरिजन सेवामे लगे हुए है वे सदैव सात्विक विचारोसे प्रेरित होगे।[1]

उन्होने उन सब सवर्णो और अवर्णोसे जो इस काममे लगे हुए है, यह अपील की कि आत्मशुद्धिके सर्वोपरि महत्त्वको पहचाने और इस कामको शुद्धि-यज्ञ समझे।[2]

श्री शम्भु शास्त्रीने पूछा कि क्या आप वेदोके प्रमाणको मानते है?

निश्चित रूपसे।

क्या आप उनका आदर और उनका पालन करते है?

अवश्य।

अगला प्रश्न था कि क्या आप यह स्थिति स्वीकार करेगे कि यदि हरिजनोको मन्दिरमे प्रवेश करने दिया जाता तो शास्त्रोंके जिन नियमो द्वारा मन्दिरोंका संचालन होता है उन नियमोका हरिजनोंको पालन करना चाहिए।

सवर्णोपर लागू होनेवाले शास्त्रके सारे नियमोका हरिजनो द्वारा पालन करनेसे उन्हे मन्दिरोमे प्रवेश मिल जाना चाहिए।[3]

धर्मकी मेरी जैसी समझ है, मेरे पिछले और आजके सब कार्य उस धर्मके अनुरूप ही है। मुझे इसमे कोई सन्देह नही है कि अस्पृश्यता-निवारणके लिए आजकल जो कोशिश की जा रही है उसे वेदोकी मान्यता प्राप्त है। फिर भी मुझे स्वीकार कर लेना चाहिए कि इस प्रश्नके सम्बन्धमे दो प्रकारकी विचारधाराओवाले लोग है। दोनो ही अपने-आपको सनातनी मानते है और हिन्दू धर्म-ग्रन्थोके आधारपर अपना मत देते है।

मै तो यह मानता हूँ कि जो लोग इस आन्दोलनको अस्पृश्यताके विरुद्ध एक धार्मिक आन्दोलनके रूपमे चला रहे है उन्हे अपने विरोधियोके साथ सहिष्णुताका बर्ताव करना चाहिए, उनकी बात हमेशा शान्ति और धैर्यके साथ सुननी चाहिए और किसी भी हालतमे वचन या कर्ममे क्रोध नही प्रकट करना चाहिए। हमारा प्रयास उनका हृदय परिवर्तन करना है। हमे उनकी भी सहायता और सहयोग लेना चाहिए। मेरा दृढ विश्वास है कि यदि हमने धार्मिक भावना और ईमानदारीके साथ कार्य

१ इसके बादका अश **हिन्दू** से लिया गया है।

२ इसके बाद गाधीजीने एकत्रित लोगोसे प्रश्न पूछनेको कहा।

३. इसके बादका अश **बॉम्बे क्रॉनिकल** से लिया गया है।

किया तो एक दिन वे हमारे साथ हो जायेगे। उनके लिए हमारे हृदयोमे असीम प्रेम होना चाहिए और यदि हम सच्चे है तो हम उनके हृदय जीत लेगे।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, १७-१२-१९३३ तथा **बॉम्बे क्रॉनिकल**, २०-१२-१९३३

३७१. भाषण : विजयवाड़ाकी सार्वजनिक सभामें

१६ दिसम्बर, १९३३

सब लोगो तक अपनी आवाज पहुँचा पानेमे अपनी असमर्थताके लिए क्षमा मॉगनेके बाद गाधीजीने सभामे दिये गये अभिनन्दनपत्रो और थैलियोंके लिए धन्यवाद प्रकट किया।

क्या यह अच्छा नही रहता कि अलग-अलग थैलियोकी जगह एक ही थैली जमा की जाती? इस प्रकार हम अपना बहुत-सा बहुमूल्य समय बचा सकते थे। लेकिन यह हमारा दुर्भाग्य है कि ऐसा किया नही गया। लोग अभिनन्दनपत्र और थैलियाँ अपने नामसे या अपने गाँवके नामसे भेट करना चाहते है, हालाँकि हम सब एक ही देशके रहनेवाले है और हमारी दशा एक जैसी ही है।

आगे बोलते हुए गांधीजीने बताया कि विजयवाडाने अबतक रु० ३,९८२–८–० नकद दिये है और कहा कि मुझे यकीन है कि मै जबतक आपके पाससे जाऊँगा तबतक यह राशि पूरी ५,००० रुपये हो जायेगी। मुझे पता है कि इस नगरके लिए यह कोई बहुत बड़ी बात नही है। इस सम्बन्धमे मुझे श्री ए० कालेश्वरराव और पट्टाभि सीतारमैयाकी अनुपस्थिति अखर रही है। लेकिन आपको अपने कर्त्तव्यके मार्गपर चलते रहना चाहिए और हरिजन-कार्यको, जो अब दूर-दूर तक फैल चुका है और जो एक महत्त्वपूर्ण कार्य है, छोडना नहीं चाहिए। अगर आप अस्पृश्यताकी बुराईको दूर नहीं करेगे तो मुझे डर है कि हिन्दू-धर्म मिट जायेगा। किसी सह-मानवको “अस्पृश्य” समझना धर्म नही है। सवर्ण जिन अधिकारोका उपयोग करते है वे सब अधिकार हरिजनोको भी मिलने चाहिए। इतने समय तक हरिजनोको उनके अधिकारोसे वंचित रखकर आपने भारी पाप किया है, इसलिए सवर्णोको प्रायश्चित्त करके इस पापको धोना चाहिए। इस यात्राके दौरान मै जहाँ कहीं भी गया हूँ इस प्रकारकी सभाओंमें मुझे लोगोकी भारी भीड देखनेको मिली है और मै इसे इस बातकी निशानी मानता हूँ कि मै जो कार्य कर रहा हूँ वह जनताको पसन्द है। मुझे इसकी भी खुशी हुई है कि जनताने पैसा दिया है। हरिजनोसे मेरी अपील है कि वे रुपये-पैसेके रूपमे ही सहायता न करें, बल्कि बाह्य और आन्तरिक शुद्धिका पालन करे और इस प्रकार इस शुद्धियज्ञमे अपना सहयोग दें। आन्तरिक शुद्धि ईश्वरका स्मरण करके और ‘रामनाम’ द्वारा प्राप्त की जा सकती है, जबकि बाह्य शुद्धि

स्नान द्वारा और स्वच्छ रहनेके अन्य साधनो द्वारा। उन हरिजनोसे जो शराब पीनेके तथा मुर्दार मांस और गो-मांस खानेके आदी है मै यह अपील करूँगा कि वे इन्हे छोड़ दे। कोई भी व्यक्ति जो इन सब चीजोका शिकार है, हिन्दू नहीं कहा जा सकता और न ही उसे मन्दिरोमे घुसने दिया जा सकता है। मद्यपान एक जघन्य पाप है तथा इसके नशेमे व्यक्ति माँ और पत्नीमें भी भेद नही कर सकता।

भाषण समाप्त करनेसे पहले गांधीजीने आन्ध्र हिन्दी प्रचारक सघकी ओरसे दिये गये अभिनन्दनपत्रका उल्लेख किया और कहा कि दक्षिण भारतमे हिन्दीके प्रचारके लिए जो कार्य चल रहा है उसे देखकर मुझे बेहद खुशी हुई। मुझे यह जानकर भी खुशी हुई कि इस मामलेमे आन्ध्र सारे दक्षिण भारतमे सबसे आगे है। मेरा आपसे अनुरोध है कि हिन्दीके प्रचारमे आप सब मदद करे, क्योकि अपने देश और अपने राष्ट्रकी सेवा करनेका यह प्रभावकारी साधन है।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, १७-१२-१९३३

३७२. भाषण : मुदुनुरुमे

१७ दिसम्बर, १९३३

एकत्रित जन-समुदायको सम्बोधित करते हुए गाधीजीने कहा कि समयाभावके कारण तथा प्रत्येक स्थानपर कारसे उतरने-चढनेकी परेशानीके कारण आप लोगोके बीच कुछ मिनटोसे ज्यादा खड़े होनेमे तथा मन्दिरोमे जानेमें मै असमर्थ हूँ, और मुझे इसका खेद है। उन्होने कहा कि चूँकि मुझे अभी बहुतसे गाँवोमें जाना है, इसलिए मैं जितना सम्भव हो उतना ज्यादा समय बचाना चाहता हूँ। इसलिए यदि मैं मन्दिरोमें नहीं जाता हूँ तो आपको यह नही समझ लेना चाहिए कि मै भगवानके मन्दिरोमें जाना नहीं चाहता। मुझे विश्वास है कि मै जो काम कर रहा हूँ वह ईश्वरका ही काम है। मैं इस देशमे हरिजनोके लिए जितना ज्यादा सम्भव हो उतने मन्दिर खोलना चाहता हूँ। आशा है कि हरिजन अपने दूसरे हिन्दू भाइयोके साथ मन्दिरोमें रोज पूजा करेगे तथा सवर्णोपर जो नियम लागू होते है उन सबका तथा स्वच्छताके सब नियमोका पालन करेगे। ऐसा करके तथा जहाँ लोग मद्यपान, मुर्दार-मास अथवा गो-मांसका प्रयोग करनेके आदि है वहाँ इनका त्याग करके हरिजन लोग हिन्दू-धर्मकी शुद्धिमें वास्तविक योगदान देंगे।[1]

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, १८-१२-१९३३

१ इसके बाद गाधीजीके हाथों हरिजनोंके लिए दो मन्दिर खुले घोषित किये गये।

३७३. भेंट : 'हिन्दू' के प्रतिनिधिको[1]

सिद्धान्तम्
१७ दिसम्बर, १९३३

जो-कुछ मुद्दे आपके ध्यानमे लानेके काबिल लगते है, क्या मै उनके सम्बन्धमें आपसे कुछ प्रश्न पूछ सकता हूँ?

[गाधीजी] अवश्य पूछिए, मै तैयार हूँ। पूछिए।

हालमें मद्रासमे दिये गये अपने भाषणमे श्री एम० के० आचार्यने कहा है कि ९५ प्रतिशत हरिजन 'गांधीवाद' नही चाहते। इस बारेमें आपकी क्या राय है?

मुझे नही पता कि 'गाधीवाद' क्या चीज है। जब मै खुद ही इसे नही जानता तो फिर हरिजन तथा स्वय श्री आचार्य इसे किस प्रकार जानते है? मै अपने बारेमे किसी विशेषताका दावा नही करता। जहाँ तक मै जानता हूँ, 'गाधीवाद' नामकी कोई चीज नही है। मै तो बस यही जानता हूँ कि मै हरिजनोको स्वच्छ पानी देनेमे लगा हुआ हूँ। मै उन्हे शिक्षाकी सुविधाएँ उपलब्ध करानेमे लगा हुआ हूँ। जहाँ उन्हे रहनेके लिए जगह नही मिलती वहाँ मै सार्वजनिक सरायोमे उनके रहनेका प्रबन्ध करनेमे लगा हुआ हूँ। मै उनको शराब और मुर्दार माससे दूर रखनेका काम कर रहा हूँ। क्या उन्हे ये सब बाते पसन्द नही है? मै उन्हे सफाईके प्रारम्भिक नियम बतानेका काम कर रहा हूँ। क्या वे यह नही चाहते? मै उन्हे हिन्दू-धर्मकी मूलभूत बाते बता रहा हूँ, उनके लिए सार्वजनिक मन्दिर खुलवा रहा हूँ। जरा फर्कपर गौर फरमाइएगा। हो सकता है वे मन्दिरोमे जाना ही न चाहते हो और यदि कोई यह कहे कि उनकी मन्दिरोमे जानेकी इच्छा ही नही है, तो मै इस बातको निश्चित रूपसे गलत साबित नही कर सकता, हालाँकि जो प्रत्यक्ष प्रमाण मेरे पास है वे सब मेरे ही पक्षमें है। जहाँ कही भी उन्होने पाया है कि उनके लिए मन्दिर खोल दिये गये है, वे हर्षोन्मत्त हो उठे है। आज ही मैने दो मन्दिर खोले है[2] और हरिजनोके साथ उनमे प्रवेश करते समय मैने देखा कि वे किस प्रकार हर्षोन्मत्त हो उठे। मुझे इसकी परवाह नही है कि वे मन्दिरोमे जाना चाहते है या नही। मै तो बस इतना जानता हूँ कि सवर्णोंको अपने कर्त्तव्यका पालन करना चाहिए। इसमे कोई 'गाधीपन' नही है। जो हिन्दू यह मानता है कि अस्पृश्यताका निवारण होना चाहिए, उसे इस कामको समझना ही चाहिए।

१. हिन्दू के विशेष प्रतिनिधिने गाधीजीसे तीसरे पहर भेंट की थी।
२. देखिए पिछला शीर्षक।

एक अन्य व्यक्तिका यह कहना है कि चूँकि आप वर्णाश्रममे विश्वास करते है जो कि अस्पृश्यताकी ही एक श्रेणीबद्ध प्रणाली है, इसलिए आप इस समस्याको हल करनेके लिए उपयुक्त व्यक्ति नहीं है। इस बारेमे आपका क्या कहना है?

मै वर्णाश्रमको अस्पृश्यताकी ही एक श्रेणीबद्ध प्रणाली नही मानता। वर्णधर्मसे मेरा क्या अभिप्राय है, यह मै बता ही चुका हूँ। वर्णधर्मके अर्थ मै श्रेणियाँ समझता ही नही। वर्णधर्ममे समाजका विभाजन ऊपर-नीचेके हिसाबसे नही, समतल अर्थात् बराबरीके आधारपर होता है। इसलिए अस्पृश्यताका तो कोई प्रश्न ही नही उठ सकता। वर्णधर्म एक ऐसा महान् आर्थिक नियम है कि जिसे हम यदि स्वीकार कर ले तो वह हमे उस महाविपत्तिसे बचा लेगा जो ससारके ऊपर आनेवाली है। इस कथनके समर्थनमे मेरे पास शास्त्रोके पर्याप्त प्रमाण है कि ईश्वरकी नजरमे ब्राह्मण और भगी बिलकुल बराबर है।

कुछ लोगोका ऐसा कहना है कि हरिजन-आन्दोलन सविनय प्रतिरोधके प्रचारका ही एक रूप है और इस यात्राके जरिये आप सविनय प्रतिरोधका ही प्रचार कर रहे है। इसके सम्बन्धमे आपकी क्या राय है?

तब तो मै दो प्रकारके सकटोके बीच फँसा हुआ हूँ। काग्रेसी मुझपर यह अभियोग लगाते है कि मैने अस्पृश्यता-निवारणार्थ इस तूफानी अभियानको शुरू करके सविनय-अवज्ञा आन्दोलनका अहित किया है। जो लोग मुझपर कोई गुप्त मशा रखनेका सन्देह करते है वे मुझपर सविनय-अवज्ञा-आन्दोलनको मजबूत बनानेका आरोप लगाते है। इन आरोपो और गूढार्थोसे मुझे कोई फर्क नही पडता। मै तो बस यही बात दोहरा कर कह सकता हूँ कि मेरा बिलकुल भी कोई गुप्त उद्देश्य नही है। यह तो अत्यावश्यक धार्मिक पुकार है जिसका कि मै अनुसरण कर रहा हूँ। हजारो लोग जो सभाओमे आते है वे मेरे होठोसे 'सविनय प्रतिरोध' शब्द नही सुन पाते है। यह तो शुद्ध रूपसे धार्मिक पुनर्जागरण है। इसका मतलब यह नही है कि सविनय प्रतिरोधके सम्बन्धमे मैने अपने विचार बदल दिये है। सविनय प्रतिरोधमे पूरी ईमानदारीकी जरूरत पडती है। यदि मै सविनय प्रतिरोधका प्रचार करनेके हेतु इस आन्दोलनको चलाऊँ तो मै बेईमानी करनेका दोषी होऊँगा। सविनय अवज्ञाको ऐसे सदिग्ध उपयोगितावाले साधनोकी जरूरत नही है।

आपने अबतक जिन प्रान्तोकी यात्रा की है उनमें हरिजन-उत्थान कार्यकी प्रगतिके सम्बन्धमें आपके क्या विचार है?

सब मिलाकर मेरे अनुभव सुखद है और यदि ऐसा ही दूसरे प्रान्तोके बारेमे भी होता रहा तो फिर मुझे यह कहनेमे कोई झिझक महसूस नही होगी कि अस्पृश्यता बहुत तेजीसे समाप्त हो रही है। मेरी सभाओमे जो हजारो लोग इकट्ठा होते है वे अच्छी तरह जानते है कि इन पैसोका उपयोग किस कार्यके लिए किया जायेगा, अन्यथा वे मुझे पैसे क्यो देते?

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, १८-१२-१९३३

३७४. भाषण : मसूलीपट्टममे

१७ दिसम्बर, १९३३

अभिनन्दनपत्रोका उत्तर देते हुए तथा थैलियो और दूसरी भेंटोको स्वीकार करते हुए गाधीजीने कहा कि मसूलीपट्टम आनेपर मुझे सबसे पहले डॉ० पट्टाभि सीतारमैयाका खयाल आया। मुझे विश्वास है कि हालाँकि डॉ० साहब हमारे बीच शारीरिक रूपसे मौजूद नही है फिर भी इस सभामें उनकी आत्मा व्याप्त है। जिला तथा ताल्लुका बोर्ड और इस जिलेकी जनता हरिजनोके लिए जो काम कर रही है उसके लिए मै आपको धन्यवाद देता हूँ। लेकिन मेरा यह खयाल है कि जबतक एक भी मन्दिर ऐसा है जो सवर्णोके लिए तो खुला है लेकिन हरिजनोके लिए बन्द है, जिससे सवर्णोको तो लाभ होता है लेकिन हरिजनोको उतना लाभ नही होता, तबतक मै चैनसे नही बैठूँगा और न ही तबतक उनको चैन मिलेगा। यदि हिन्दुओमें ऊँच और नीच, स्पृश्य और अस्पृश्यका भेद चलता रहा तो मेरा निश्चित मत है कि हिन्दू-धर्म धीरे-धीरे खत्म हो जायेगा।[1]

हम अपनी कब्र खुद खोदेगे। यदि आज हमने अपने अहमे ईश्वरके दिये हुए अवसरको खो दिया तो हमे इसके बदलेमे फूट-फूट कर रोना पडेगा। जबतक इस अस्पृश्यता रूपी दानवका अन्त नही हो जाता और जिनको हमने अबतक अपनी एडी तले रखा है उनको हम हर तरह से अपनी बराबरीका दर्जा नही दे देते तवतक हमे चैनसे नही बैठना चाहिए। इससे पहले कि बहुत देर हो जाये हमे इस पाप-वृत्तिके प्रति सचेत हो जाना चाहिए तथा अपनेको और अपने धर्मको विनाशसे बचा लेना चाहिए।

[अग्रेजीसे]

हिन्दू, १८-१२-१९३३ तथा **हरिजन**, २९-१२-१९३३

१. इसके बादका अंश २९-१२-१९३३ के **हरिजन**से लिया गया है।

३७५. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

स्थायी पता वर्धा
१९ दिसम्बर, १९३३

चि० नरहरि,

मैं मसूलीपट्टममे सवेरेके छ बजे यह पत्र शुरू कर रहा हूँ। रोज ३ बजे उठता हूँ और जितने पत्रोका जवाब दिया जा सके उतने पत्र लिखनेका प्रयत्न करता हूँ। छ बजे तो [दैनिक] कार्यमे व्यवधान पडता है और सात बजे यात्रा शुरू हो जाती है। सोम और मगलवारको दौरा बन्द रहता है। आज मगल है इसलिए लिखनेका कार्य जारी रखा जा सकता है। (इतना लिखनेपर मलकानी और बापी नीड़ु आये और उन्होने मेरा आधा घटा लिया।)

तुम्हारे लम्बे पत्रको मैंने सँभाल कर रखा था। तुम्हारा काम अच्छी तरह चल रहा जान पडता है। अच्छा है, इसी तरह चलता रहे। महादेवके काममे ज्वारभाटा आता रहता है। "सब दिन होत न एक समान" वह बडे जोर-शोरसे गाता है (फिर विघ्न आ पडा है तथा २० मिनट और वेकटपय्याको दिये)। अब इस बातको वह स्वय अनुभवे ले रहा है। हमारा व्यक्तित्व इसी प्रकार बनता चलता है।

आनन्दी वगैरहका काम ठीक चल रहा है। अभ्यासकी व्यवस्था हो गई है। रामनाम भी शकरभाई और एक सगीतशास्त्री सिखाते हैं। वनमाला और मोहनके पत्र आते हैं। मणि भी साथ हो गई है। बाबलो तो है ही और कुरेशीके बच्चे भी हैं। नी० भाग गई है। उसका लडका शारदा मन्दिरमे है। बा को यरवदा ले गये हैं।

चरखेके सम्बन्धमे तुमने जो प्रश्न उठाये हैं वे सब उचित हैं। लेकिन फिलहाल उनका हल निकलना सम्भव नही जान पडता। इस विषयपर अभी तो कुछ लिखा ही नही जा सकता। मेरे मनमे इन सबका हल तो है ही। पर वह उचित हैं अथवा नही, सो तो आजमानेपर ही मालूम हो सकता है। जिन्दा रहा तो किसी दिन बताऊँगा और ईश्वरकी इच्छा हुई तो हम प्रयोग भी करेगे।

काकाकी तबीयत ठीक रहती है। वह तो अहमदाबादकी ओर गये होगे। वे थोडे दिन स्वामीके साथ रहे। यह उन्हे अच्छा लगा। इन दिनो मुझे उनका कोई पत्र नही मिला है।

किशोरलाल खूब बीमार हैं और खाट पकडे हुए हैं।

दौरेके अनुभव तो क्या लिखूँ? पहलेसे भी ज्यादा लोग आते हैं और मुक्त हस्तसे चन्दा देते हैं।

सुरेन्द्र और दरबारी वर्धामे है। अब कदाचित् कराडी जाये। दोनो ठीक है। वर्धामे बहुत लडकियाँ आई है और अभी भी बहुत आनेकी माँग करती है। विनोबा तो खेडेमे ही रहते है। बालकृष्ण स्वस्थ नही कहा जा सकता। छोटेलालका स्वास्थ्य भी ऐसा ही रहता है।

सबको,

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एम० एन० ९०६१) से।

३७६. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

१९ दिसम्बर, १९३३

बा,

तेरा पत्र आज ही मिला है। साबरमती [जेल] लिखा मेरा पत्र तुझे मिल गया होगा। मै तो नियमपूर्वक लिखता रहूँगा। हर सोमवार अथवा मगलवार लिखूँगा। क्योकि इन दो दिनोमे ही मुझे थोडी फुरसत मिल पाती है। अपने शरीरका ध्यान रखना। पूनियाँ भेजूँगा। मेरे पास नही हुई तो चाहे कहीमे भी तजवीज करूँगा। मुझे ब्लड-प्रेशर रहता है। डॉ० अन्सारीने दिल्लीमे देखा था। मेरी जरा भी चिन्ता न करना। मणिलाल और सुशीलाको जरूर हर पन्द्रह दिनके बाद पत्र लिखा करूँगा। मै उन्हे लम्बे पत्र लिखता हूँ। तेरा आशीर्वाद सबको भेजूँगा। किसीकी चिन्ता न करना। मनुको भी कुसुमके बारेमे लिखा है। कुसुमकी तबीयत खराब तो रहती ही है। बच जाये तो गनीमत होगी। किशोरलालको बुखार आया करता है। बिस्तरे पर पडा हुआ है। ब्रजकृष्ण भी खाटपर तो है ही। देवदास ठीक है। राजाजी भी ठीक है। वहाँ सब बहनोको मेरा आशीर्वाद कहना। उम्मीद है सब मेहनत करती होगी और सबका स्वास्थ्य अच्छा होगा। रामनाम रामबाण औषध है। मैने रामदासके लिए एक छोटी गीता बनाई थी। वह प्रकाशित की जा रही है। प्रकाशित होनेपर उसकी प्रतियाँ वहाँ भेजूँगा। अन्य कुछ चाहिए तो मँगा लेना। पत्र वर्धा ही भेजना। अखबार तो मिलते होगे। तू मुझसे प्रवचन माँगती है। आज तो नही भेजूँगा। अगले हफ्ते इसपर विचार करूँगा। तू 'गीता' पढती है, यह अच्छा तो है ही। कौन सिखाता है? वहाँ खानेको क्या मिलता है? जो चाहिए वह तू प्रेमलीला[1] बहन अथवा त्रिवेदी[2] से मँगवा सकती है, यह तो याद है न? अब तो वहाँ कम लोग आते होगे। इसलिए उचित यही होगा कि हर हफ्ते एक पत्र तू लिखे और मेरे पत्र भी प्राप्त करती रहे। लेकिन जो तुझे ठीक लगे सो करना। ओम मजेमे है। प्रेमाबहनकी सहेली

१. लेडी ठाकरसी।

२. पूनाके कृषि कालेजके प्रोफेसर जयशकर पीताम्बरदास त्रिवेदी।

किसन अभी-अभी मेरे साथ आ गई है। तुझे इसकी याद है न? खूब मेहनती है, पढी-लिखी है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना बाने पत्रो, पृष्ठ २-३

३७७. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

मसूलीपट्टम
१९ दिसम्बर, १९३३

भाई ठक्कर बापा,

साथके कागजात तुम्हारी जानकारीके लिए है। भगवानजीका तर्क तो उचित है। मै उन्हे समुचित उत्तर लिख रहा हूँ। ऐसे कार्य निश्चय ही किये जा सकते है।

तुम्हारे प्रस्तावकी नकल अभी मुझे नही मिली है। नियमानुसार उसे तुम्हे मुझे भेजना तो चाहिए न? उसकी भाषा परसे मुझे अपने कर्त्तव्यकी जानकारी होगी।

यहाँका काम तेजीसे हो रहा है। मलकानी हिसाबनवीस बनते जा रहे है, अखबारके सम्वाददाता भी बन गये हैं। यदि शरीर स्वस्थ रहा तो वे पूरा काम देगे।

लोगोकी तादाद और चन्दा मध्यप्रदेश जितना ही है।

अभी मै चार घटेके नियमका पालन नही कर पाया हूँ। इसमे किसीका दोष नही। ऐसी चीज तो आदर्श रूप ही होती है। बाकी तो जो ईश्वरको करना होगा, सो करेगा।

काचेरे तातणे मने हरिजीए बाधी,
जेम ताणे तेम तेमनी।

मीराके इस भजनका अनुसरण तो मै अपनी युवावस्थासे ही करना सीख गया हूँ। इसलिए अडचन नही होती। जो बिठाता है, चलाता है, वह सुला भी देगा।

दिल्लीके हरिजन निवासके लिए यदि तुम अथवा घनश्यामदास दिल्ली नगरपालिका सदस्योसे मिलो तो अच्छा होगा। ये अच्छे होने ही चाहिए।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११३४)से।

३७८. पत्र : प्रभावतीको

१९ दिसम्बर, १९३३

चि० प्रभावती,

पटनासे लिखा तेरा पत्र मिला। और अब चूंकि तूने इन्जेक्शन लेना शुरू किया है तो उसका कोर्स पूरा करना बेहतर होगा। कदाचित् उससे लाभ भी हो। मुझे तो इसका कम ही विश्वास है। लेकिन जिस कार्यको आरम्भ कर दिया हो उसे पूरा करना चाहिए।

राजेश्वरको प्रतिमास ५० रुपये भेजनेमें दिक्कत नहीं होगी। मैंने बात कर ली है।

तू मुझसे आकर मिल जाये, इस सम्बन्धमें मैं अपने पिछले पत्र[1] में तुम्हें लिख ही चुका हूँ। यदि तेरा स्वास्थ्य खराब हो गया है तो अभी तुझे अपना सारा समय दवा करनेमें लगाना होगा न?

राजेन्द्र बाबूको मिलनेमें क्या कोई दिक्कत पेश आती है?

मैंने अपना वजन अभी तो नहीं लिया है, लेकिन तबीयत अच्छी ही है। ब्लड-प्रेशर सामान्य हो गया है, १५८-१०९।

ओम आनन्दपूर्वक है। किसन मेरे साथ आ गई है। तू किसनको जानती है न? बम्बईमें जो रो पड़ी थी वह प्रेमाकी खास सहेली है। वह मीराबहनके साथ जेलमें भी थी। वह मराठी है। बहुत पढ़ी-लिखी है। उसके मनमें सेवा करनेकी बहुत उमंग है। वह वर्धासे मेरे साथ आ गई है। सुमनके बदले रामनारायण[2] है। मुझे बराबर लिखती रहना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

२०-२२, मद्रास।

२३-३ जनवरी, आन्ध्रदेश, सदरमुकाम बेजवाडा।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३४३७)से।

१ देखिए "पत्र प्रभावतीको," १२-१२-१९३३।

२ रामनारायण चौधरी।

३७९. पत्र : वनमाला एन० परीखको

१९ दिसम्बर, १९३३

चि० वनमाला,

वाह! अब तो तू अंग्रेजीमें हस्ताक्षर करने लग गई? थोड़े समयमें मेरी गलतियाँ भी निकालने लगेगी न? शरीरको कस रही होगी। तू क्या पढ़ती है? मोहनसे लिखनेके लिए कहना। सुलताना[1], बाबलो, हमीद[2], वहीद[3] भी लिखें। अपना पत्र तूने पूरा नहीं किया, यह याद है न?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५७८३)से। सी० डब्ल्यू० ३००६ से भी, सौजन्य वनमाला देसाई

३८०. पत्र : भगवानजी पु० पण्ड्याको

१९ दिसम्बर, १९३३

चि० भगवानजी,

तुम्हारे पत्रका जवाब देरसे दे रहा हूँ। यद्यपि मैंने विचार तो बहुत पहले कर लिया था। तुम जो लिखते हो वह ठीक है। पर उसका उपयोग ताकतसे नहीं हिकमतसे करना होगा। हरिजनोंके अलावा दूसरे लोग तो थोड़े ही आयेंगे। उनके लिए तो यह नियम आवश्यक होगा। हरिजनोंके लिए तो यह शिक्षाका प्रश्न है पर उनपर तुम सख्ती नहीं कर सकते। वे लोग धीरे-धीरे पाखानोंका उपयोग करने लगेंगे। जिस हल्केमें रामजी रहते हैं वहाँ यदि इनका उपयोग किया जा सके तो पाखाने बनवा दिये जायें। परीक्षितलाल जूठाभाई आदि मिलकर जैसा उचित समझें कर लें।

वाडजकी पाठशालापर ध्यान देते रहना। बालकोंकी संख्या बढ़े तो अच्छा। बड़ोंको भी छोड़ना मत। इस कार्यमें धीरजकी आवश्यकता होगी। फलकी इच्छा छोड़ देना। मुझे लिखते रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ३६४)से, सौजन्य भगवानजी पुरुषोत्तम पण्ड्या

१, २ और ३ गुलाम रसूल कुरेशीके बच्चे।

३८१. पत्र : शारदा सी० शाहको

१९ दिसम्बर, १९३३

चि० शारदा उर्फ शारदा गौरी उर्फ शारदा कुमारी,

आनन्दीको जो पत्र लिखता हूँ उसे सबके लिए लिखा गया क्यो नही माना जाता? यदि उसीमे सबके नाम लिख दूँ तो? तुम सबने जब एक बार उसे अपनी बडी मान लिया तो फिर उसकी शिकायत क्यो? तेरे किस प्रश्नका मैने उत्तर नही दिया?

यह सुनकर खुशी हुई कि तू अच्छी तरह पढ रही है। लेकिन यह जो तू बीमार पडती रहती है उसका क्या होगा? इसका मतलब यही हुआ न कि तू पढनेके साथ-साथ भूलती जाती है?

तू क्या खाती है?

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९९८६५) से, सौजन्य · शारदाबहन जी० चोखावाला

३८२. पत्र : विमलचन्द्र वी० देसाईको

१९ दिसम्बर, १९३३

चि० नानु,

तेरा पत्र मिला है, लेकिन तेरी लिखावटमे अभी बहुत सुधारकी गुजाइश है। अक्षर लिखना अर्थात् चित्र बनाना, यदि तू इतना समझ लेगा तो सुन्दर अक्षर लिखेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५७५७)से, सौजन्य वालजी गो० देसाई

३८३. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

१९ दिसम्बर, १९३३

चि० हेमप्रभा,

तुमारे पत्र अब कम आते हैं। मैं कारण समझा हू इसलिये निश्चित हू। मेरे बगला प्रवासके बारेमे तुम तो व्यथित नहि हूइ होगी ऐसी आशा रखता हू। अरुण कैसे है? अब तुमारा शरीर कैसे रहता है?

मेरी मुसाफरी अब तक तो बहूत अच्छी चली है ऐसा कहा जाये। दौड धूप करनेकी शक्ति भी ईश्वर दे रहा है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १७०५) से।

३८४. पत्र : ब्रजकृष्ण और रामकृष्ण चाँदीवालाको

१९ दिसम्बर, १९३३

चि० ब्रजकृष्ण,

ये कैसी बात कि अबतक कोई खत या तार मुझे नहि मिला है। मेरी आशा है कि अच्छा मकान कही मिल गया होगा और शरीर अच्छा होता होगा। सब हाल मुझे भजवाओ। नित्य एक पोस्टकार्ड मिले तो काफी है और आवश्यकता पर तार।

बापुके आशीर्वाद

भाई रामकृष्ण अथवा श्रीकृष्ण,

ब्रजकृष्णके सामने बाते नही बननी चाहिये। दा० अनसारी व सेन पर ही कायम रहना।

बापु

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४०४)से।

३८५. पत्र : तोताराम सनाढ्यको

दिल्ली
१९ दिसम्बर, १९३३

भाई तोतारामजी,

तुमारा पत्र मिला है। मुझे योजना पसद है। उसका अमल यथासभव अवश्य किया जाय।

उत्कलके बालक सतोष देते होगे।

हरिप्रसाद तो सेवामे तन्मय रहता होगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २५३७) से।

३८६. पत्र : कल्याणजी वी० मेहताको

२० दिसम्बर, १९३३

भाई कल्याणजी,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं यह उत्तर चलती ट्रेनसे लिख रहा हूँ। तुम्हारा समाचार तो मुझे मिलता रहता था। आशा है तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा रहता होगा। मुझसे मिलने न आनेके मामलेमे भी तुम काफी सयमसे काम ले रहे हो। हमारे पास फिजूल खर्चके लिए पैसा कभी हो ही नही सकता। कुँवरजी कैसे है? नेपोलियनने अब लिखना बन्द कर दिया हे। मीठुबहनके स्वास्थ्यमे अब कुछ वृद्धि हुई कि नही? पैर कैसा है? मुझे पत्र लिखा करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २७१०)से।

३८७. भाषण: मद्रास नगरनिगमके मानपत्रके उत्तरमें

२० दिसम्बर, १९३३

महापौर महोदय, नगरपार्षद तथा मित्रो,

आज सुबह मुझे दुबारा अभिनन्दनपत्र[1] भेंट करके आपने जो मेरा सम्मान किया है उसकी मैं दिलसे कद्र करता हूँ। दक्षिणकी यात्रा करनेपर मुझे हमेशा ही बडी खुशी होती है। क्योकि, जैसा कि आप जानते ही है, दक्षिणसे मेरे बहुत पुराने सम्बन्ध रहे है। गिरमिटिया भारतीय लोगोसे मेरा निकट सम्पर्क पहले-पहल नेटालमे १८९३ मे हुआ था तथा शायद आपमेसे कुछ लोगोको याद हो कि नेटालमे मेरा प्रथम सम्पर्क केवल दक्षिण भारतीयोसे नही बल्कि तमिल भारतीयोमे स्थापित हुआ था तथा मुझे पहले-पहल जिस पीडित व्यक्तिका मामला अपने हाथमे लेनेका सौभाग्य मिला था वह एक तमिल[2] व्यक्ति था। तबसे ही दक्षिणने मुझे ऐसे कठोर स्नेह बन्धनमे बॉध रखा है जिसका मुकाबला भारतका कोई भी अन्य भाग नही कर सकता।

महोदय, शायद आप न जानते हो, लेकिन कुछेक नगर-पार्षदो और थोडे-बहुत दूसरे नागरिकोको शायद इस बातका ध्यान होगा जब पहले मुझे इस महान् नगर-निगमके हाथो एक अभिनन्दनपत्र पानेका सौभाग्य मिला था, उस समय मैंने अपने बहुत-से नाम बताये थे उनमेसे एक नाम था कुशल भगी। उस समय मैंने आपकी सार्वजनिक सडकोकी हालतका जिक्र किया था और कहा था कि इन सडकोका उपयोग टट्टी-पेशाब करनेके लिए किया जाता है, और ऐसा वे लोग भी करते है जो समझदार है। मै आशा करता हूँ कि उस दिशामे काफी प्रगति हुई है। लेकिन आज सफाईका जो मेरा मिशन है वह एक विशेष प्रकारका है, ज्यादा गहरे ढगका है और, जैसा कि मैंने उसे देखा है, वह विशुद्ध धार्मिक है — दुर्भाग्यवश आज धर्मके जो सकुचित अर्थ लगाये जाते है उसके नही, बल्कि धर्मके व्यापक अर्थमे धार्मिक है।

जिस सुधारको आज मैंने अपना उद्देश्य बना रखा है उसका सम्बन्ध हिन्दू समाजके भगी वर्गसे है और धर्म शब्दको उसके व्यापकतम अर्थमे लिया जाये तो इससे इस सुधारका स्वरूप कुछ कम धार्मिक नही हो जाता। मुझे लगता है कि यह एक अत्यन्त लोकोपकारी मिशन है जिसके लिए मै गैर-हिन्दुओको भी सहयोगके लिए निमन्त्रित करनेमे नही हिचका हूँ — बेशक उन जरूरी मर्यादाओके भीतर जिनकी

१ मद्रास नगर-निगमने गांधीजीको ७ मार्च, १९२५ को भी एक अभिनन्दनपत्र भेंट किया था; देखिए खण्ड २६, पृष्ठ २३७।

२, बालसुन्दरम्; देखिए खण्ड ३९, पृष्ठ १२१।

चर्चा करनेका सौभाग्य मुझे मिशनरियोके सामने, मेरे ख्यालमे जबलपुरमे[1], प्राप्त हुआ था। जैसे-जैसे दिन बीतते जायेगे आप इस सफाई मिशनका उद्देश्य समझने लगेगे। अस्पृश्यताका अर्थ निश्चय ही ऊँच और नीचका भेद है, और ऊँच और नीचके भेदको मिटाना ही इस सफाई-आन्दोलनका उद्देश्य है। लेकिन तमिल देशमे घुसनेपर आप मुझसे यह आशा न करे कि मेरी दृष्टिमे समाजके उपयोगी सेवकोके प्रति हिन्दू लोगोका जो कर्त्तव्य है, उसकी मै विशद व्याख्या करूँगा। इसे मै किसी अन्य अवसर पर करूँगा।

महापौर महोदय और नगरपार्षदो, आज तो मै बस आपको एक बार फिरसे उस अभिनन्दनपत्रके लिए धन्यवाद देता हूँ जिसे आपने कृपापूर्वक मुझे प्रदान किया है। आशा है कि मैने जो अनुष्ठान हाथमे लिया है उसकी सफलताके लिए मुझे अपनी पूरी यात्राके दौरान आपकी शुभ कामनाएँ प्राप्त रहेगी।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, २०-१२-१९३३

३८८. भाषण : अखिल भारतीय स्वदेशी प्रदर्शनी, मद्रासमें[2]

२० दिसम्बर, १९३३

अध्यक्ष महोदय और मित्रो,

मद्रासमे मेरे दौरेका आरम्भ सुखद और शुभ मुहूर्तमे हुआ है। मुझे नगर-निगमसे मानपत्र पानेका सौभाग्य मिला था और अब मुझे मेरे मित्र श्री जमाल साहब[3] के हाथो सदर्न इंडिया चैम्बर ऑफ कामर्सकी ओरसे एक और मानपत्र प्राप्त करनेका सौभाग्य मिल रहा है। अभी ज्यादा नही कोई १८ महीने हुए उनके साथ मेरी लन्दनमे जो लम्बी बातचीत हुई थी उसकी मुझे अत्यन्त सुखद स्मृति है। उस समय हमने ऐसे प्रश्नोपर चर्चा की थी जिनका सारे भारतसे सम्बन्ध था, और अब मै फिरसे अपनेको उनके साथ पाता हूँ। मित्रो, आप लोगोके आशीर्वादसे मै आशा करता हूँ कि जिस उद्देश्यको लेकर मै निकला हूँ उसको मद्रासमे और बादमे सारे तमिलनाडुमे ही सफलता मिलेगी।

महोदय, आपने मुझसे स्वदेशी प्रदर्शनीका उद्घाटन करनेको कहा है। शायद आपमेसे सब लोग यह बात न जानते हो कि मै सोच-विचारपूर्वक चीजोको पसन्द करता हूँ। मै स्वदेशीके मामलेमे अपने-आपको कुछ हद तक विशेषज्ञ मानता हूँ। भारतमे इस प्रकारकी एकाधिक प्रदर्शनियोका आयोजन करानेमे मेरा हाथ रहा है। भारतमे पैदा होनेवाली या बनाई जानेवाली प्रत्येक वस्तुको आप प्रदर्शित नही कर

१. देखिए "भाषण लियोनॉर्ड थियोलॉजिकल कालेजमें", ७-१२-१९३३।

२ गांधीजीने सुबह मद्रास महाजन सभा द्वारा आयोजित प्रदर्शनीका उद्घाटन किया था।

३. जमाल मुहम्मद।

सकते। स्वभावत जनताके लिए इस प्रकारकी प्रदर्शनीको शिक्षाप्रद बनानेके लिए आपको चीजोका चुनाव करना होता है। उदाहरणके लिए भारतमे पैदा होनेवाली घास के बीजोको तो आप प्रदर्शित नही करेगे। आपको वे बीज और अनाज चुनने होगे जिन्हे आप चाहते है कि जनता उन्हे अपनाये। मित्रो, मेरे दिमागमे बहुत से उदाहरण भरे हुए है, लेकिन उनमेसे मैने यह केवल एक उदाहरण दिया है। मैने यह बात इसलिए कही क्योकि मै आपसे अब एक बहुत नाजुक विषयमे कुछ कहना चाहता हूँ।

मै हर स्वदेशी प्रदर्शनीका उद्घाटन करनेका निमन्त्रण स्वीकार नही करता। मै पूछ लेता हूँ कि भारतमे बनाई जानेवाली नफीस शराबे भी प्रदर्शित की जा रही है। अगर की जा रही होती है तो मद्यनिषेधका कट्टर समर्थक होनेके नाते मै आपसे कहूँगा 'धन्यवाद, किन्तु मै इस प्रदर्शनीका उद्घाटन नही कर सकता जहाँ कि चमकदार शराबोका जो कि देशके नैतिक और आर्थिक कल्याणके लिए हानिकारक है, प्रदर्शन किया जा रहा है। ठीक इन्ही कारणोसे तो नही, लेकिन बहुत कुछ इन्ही कारणोसे मै ऐसी प्रदर्शनियोका उद्घाटन करनेमे भी आपत्ति करता हूँ जहाँ मिलोका कपडा रखा गया हो, भले ही वह सौ प्रतिशत स्वदेशी ही क्यो न हो। मै यह नही कहता कि मिलोका कपडा उसी अर्थमे हानिकर है जिस अर्थमे कि शराबे हानिकर है, लेकिन यदि मुझसे भारतके कुटीरोमे तैयार वस्तुओकी नही बल्कि मिलमे तैयार कपडेकी प्रदर्शनीका उद्घाटन करनेकी अपेक्षा की जाती है तो आप लोगोकी यह प्रदर्शनी बडी कमजोर साबित होगी। मै मिलके कपडेका विरोध नही करना चाहता। मै जो कहना चाहता हूँ वह यह है कि यदि आप भारतमे मिल-उद्योगके इतिहासका अध्ययन करे तो आप देखेगे कि उसे अपने मालके वितरणके लिए किसी स्वदेशी प्रदर्शनीकी आवश्यकता नही है। मिले स्वय अपनी स्वदेशी प्रदर्शनियाँ है। उनके पास अपनी सभी सहूलियते मौजूद है। लेकिन खादीकी क्या स्थिति है?

मै यह नही कहना चाहता कि मैने एक ऐसी स्वदेशी प्रदर्शनीका उद्घाटन किया जिसमे सभी तरहकी चीजे प्रदर्शित की गई है। आपकी प्रदर्शनीका उद्देश्य आत्मोन्नति ही नही होना चाहिए बल्कि यह भी होना चाहिए कि जनता इससे लाभ उठा सके और उसे कुछ जानकारी मिले। मैने अन्य स्थानोपर प्रदर्शनियोका उद्घाटन किया है और एक इतने ही बडे नगरमे मुझसे एक स्वदेशी प्रदर्शनीका उद्घाटन करनेको कहा गया है। इसलिए मुझे चेतावनीके ये शब्द बीचमे कहने पडे। आप लोग हरिजनोकी विभिन्न आवश्यकताओका विचार करते है या नही?" जैसा कि आप जानते है, हरिजनोके लिए प्रचार-कार्य करनेको मेरे पास सात या आठ महीनेका जो समय बचा है उस दौरान मेरा एक व्रत है। मै मुख्यत हरिजन-कार्य ही करता हूँ, अन्य कोई काम नही। मै बहुत सारे लोगोसे विविध विषयोपर बात कर सकता हूँ, और ऐसे विविध विषयोकी कोई सीमा नही है जिनमे मेरी दिलचस्पी है या हो सकती है। इस समय मेरा विचार उन चन्द चीजोके बारेमे ही बोलनेका है जो हरिजन-कार्यके लिए आवश्यक है।

आप पूछ सकते है कि कोई स्वदेशी प्रदर्शनी हरिजनोके लिए क्या कर सकती है। मेरा ख्याल है कि खादीका इससे बहुत गहरा सम्बन्ध है। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि हाथकताई और हाथ-बुनाईके चलते हजारो हरिजनोके अँधेरे घरोमे सान्त्वना और आशाकी जगमगाहट फैल गई है। अपनी इस सक्षिप्त यात्राके दौरान भी मुझे बहुत-से हरिजनोके घरोमे जानेका सौभाग्य मिला, और मैंने वहाँ हरिजनोके लिए खादीकी सम्भावनाएँ देखी। आपको यह जानकर भी आश्चर्य होगा कि बहुतसी ऐसी चीजे है — मै आशा करता हूँ कि वे चीजे यहाँ प्रदर्शित की गई है — जिनको बनानेमें हरिजनोका पूरा-पूरा नही तो आशिक योगदान रहा है। चमडा-उद्योगको ही ले। चमडा तैयार करनेकी आरम्भिक प्रक्रियाएँ हरिजन लोगोके द्वारा ही सम्पन्न होती है। यदि वे लोग यह काम न करते होते तो भारतमे चमडा-उद्योगका कही पता भी न होता। इस उद्योगका इतिहास बतानेकी आशा आप मुझसे न करे। मेरे मित्र जमाल साहब आपको इसके बारेमे विस्तृत जानकारी दे सकते है। लेकिन इसके आर्थिक पहलूके बारेमे मै आपको बता सकता हूँ। कमसे-कम नौ करोड रुपयेकी कीमतकी कच्ची खाले [प्रतिवर्ष] भारतसे बाहर भेजी जाती है। यदि हम हरिजनोके साथ ईमानदारीका बर्ताव करे तो इन खालोकी खपत भारतके अन्दर ही हो जायेगी, या कमसे-कम इतना तो होगा ही कि आज जिस तरह कच्ची खाल बाहर भेजी जाती है उसकी जगह तैयार खालका निर्यात होगा। मै ऐसे बहुतसे उदाहरण दे सकता हूँ। लेकिन मै आपको या खुदको ज्यादा देर रोके नही रखना चाहता।

मुझे इस प्रदर्शनीको खोलते हुए बहुत खुशी हो रही है। मै आशा करता हूँ कि आप इस प्रदर्शनीसे लाभ उठायेगे, इसको शिक्षाप्रद बनायेगे, यहाँकी दूकानोमे जो चीजे लाकर रखी गई है उनमे रुचि लेगे, और उनके उत्पादनका इतिहास जाननेकी कोशिश करेगे। और तब आपको यह देखकर आश्चर्य होगा कि ससारके इस सबसे गरीब देशके पास कितने साधन है और यदि हम उनका बुद्धिमानीसे, तथा देशके करोडो दलित लोगोके सहयोगसे उपयोग करे तो कितना लाभ हो सकता है। यदि आप लोग हरिजनो, महारो तथा अन्य पीडित और दलित जातियोका शोषण बन्द करके उनके साथ अपने ही साथियो जैसा व्यवहार करेगे और उन्हे वे ही अधिकार और वही आदर प्रदान करेगे जिनका हम अपने लिए दावा करते है तो हमे अपने इस देशमे जिन जबर्दस्त बाधाओके बीच काम करना पडता है उन बाधाओके बावजूद यह देश सम्पन्न और समृद्धिवान देश बन जायेगा, आज जैसी कगालीकी स्थिति देशमे नही रह जायेगी।

इस प्रदर्शनीका उद्घाटन करनेके लिए आपने मुझे निमन्त्रित किया इसके लिए मै आपको धन्यवाद देता हूँ और मै आशा करता हूँ कि जनता उदारतापूर्वक इसमे सहयोग करेगी।

[अग्रेजीसे]

हिन्दू, २०-१२-१९३३

३८९. भाषण : मद्रासकी महिला-सभामे

२० दिसम्बर, १९३३

बहनो,

आपसे अपना परिचय फिरसे ताजा करनेका अवसर पाकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। मद्रासमे स्त्रियोकी सभामे भापण देनेका यह मेरे लिए कोई पहला मौका नही है। मेरे सामने एक बहुत ही व्यस्त कार्यक्रम पडा है, जिसे मुझे चालीस मिनटमे पूरा करना है। इसलिए बहुत सक्षेपमे भाषण देनेके लिए आप मुझे क्षमा करेगी।

मै यहॉ आपसे एक काम करनेके लिए कहने आया हूँ। आप यह बात बिलकुल भूल जाइए कि कुछ लोग ऊँचे है और कुछ नीच। कतई भूल जाइए कि कुछ स्पृश्य है और कुछ अस्पृश्य। मै जानता हूँ कि जैसे मै ईश्वरमे विश्वास करता हूँ वैसे ही आप सब भी करती है और ईश्वर इतना निर्दयी और अन्यायी नही है कि वह पुरुष-पुरुष और स्त्री-स्त्रीमे ऊँच-नीचका भेदभाव करे। यह अस्पृश्यता हिन्दू-धर्मके नामपर सबसे बडा कलक है। और मै यह कहनेमे भी नही हिचका हूँ कि यदि अस्पृश्यता जारी रहती है तो हिन्दू-धर्म नष्ट हो जायेगा। मनुष्यकी भाषामे कहे तो कहेगे कि ईश्वरने हमारे साथ बहुत धीरज बरता है लेकिन मै यह कहनेमे नही झिझकता कि ईश्वरके धैर्यका भी अन्त हो सकता है तथा हिन्दू भारतमे एक मनुष्य दूसरे मनुष्यके प्रति जो अत्याचार कर रहा है उसके प्रति अब वह और धैर्य नही बरतेगा।

इस स्थानपर गांधीजी भाषण देते-देते रुक गये और कहा :

आपने मुझे थैली नही दी।

डा० मुत्तुलक्ष्मी रेड्डीने तत्काल यह कहते हुए कि इस थैलीमे ४३० रु० की नकद राशि है, गांधीजीको थैली दे दी।

आपने मुझे एक हल्की थैली दी है। लेकिन हल्की हो या भारी, थैली तो हरिजनोकी सेवा करनेके लिए है।

डा० मुत्तुलक्ष्मी रेड्डीने बताया कि हममेंसे बहुतोंने दिल खोलकर उस थैलीमें दान दिया है जो आपको तिलक घाटपर होनेवाली सार्वजनिक सभामें मिलनेवाली है।

अच्छा तो आप यह बहाना बनाना चाहती है, अच्छी बात है, मै देखता हूँ कि आप सब पुरुषोसे समानता चाहती है।

मै इस थैलीको दाताओकी इस इच्छाका द्योतक मानता हूँ कि धर्मके नामपर हमने जिन लोगोको हानि पहुँचायी है उसके लिए वे थोडा-बहुत प्रायश्चित्त करना चाहती है।

खैर, कुछ भी हो, स्त्रियोने स्वेच्छापूर्वक अपने गहने दिये है, कुछने अपनी अँगूठियाँ दी है, कुछने अपनी चूडियाँ और हार, और कुछने दूसरी चीजे दी है, और मै चाहता हूँ कि आप भी वैसा ही करे, लेकिन इस शर्तपर कि आप जो गहने देगी उनके बदले आप नये गहने नही बनवायेगी और आप हरिजन-आन्दोलनके लिए यह दान देना अपने लिए सौभाग्यकी बात मानेगी। मै भाषणका अन्त सर्वशक्तिमान ईश्वरसे इस प्रार्थनाके साथ करता हूँ कि वह आपके इस प्रयत्नमे आपकी मदद करे तथा वह आपके हृदय इस तरह बदल दे कि आप स्पृश्यो और अस्पृश्योके बीच भेद करना भूल जाये।

एक बहन चाहती है कि मै हिन्दीके समर्थनमे कुछ शब्द कहूँ, और यह मै खुशीसे करता हूँ। मुझे उम्मीद है कि आपमेसे कुछ बहने भारतके दूसरे भागोमे, उत्तरी भागोमे, काम करना चाहेगी। यदि आप हिन्दी नही जानती है तो आप उत्तरके लोगोके साथ घुल-मिल नही सकती। ध्यान रहे कि भारतके २२ करोड लोग हिन्दी जानते और समझते है। दक्षिणकी शिक्षित बहने २२ करोड लोगोकी भाषाकी अवहेलना नही कर सकती।

अच्छा, भाषण मैने खत्म कर दिया है, तथा जो बहने अपने गहने देना चाहे वे दे सकती है।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २०-१२-१९३३

३९०. भाषण : मद्रासकी छात्र-सभामें

२० दिसम्बर, १९३३

विद्यार्थियो और मित्रो,

न तो आप मेरे लिए नये है और न मै आपके लिए। मै आप लोगोको अच्छी तरह जानता हूँ। १८९६ मे, जब बेशक आपमेसे बहुतसे लोग पैदा भी नही हुए थे, और जब उन लोगोको छोडकर जिन्हे 'कुली' कहा जाता है अर्थात् तमिलनाडुके लोगोको छोडकर आपके और दूसरोके लिए मै एक अनजान व्यक्ति था, उस समय मैने मद्रासके छात्रोके साथ परिचय स्थापित किया था। उस समय भी वे लोग मुझे किसी कदर जानते थे, लेकिन उस समय आप लोगोने मेरा जैसा जोरदार स्वागत किया था वह मुझे याद है। आपने मुझे जो थैली भेटकी है और जो अभिन्दनपत्र पेश किया है उसको लिए मै आपको धन्यवाद देता हूँ। इस बातके लिए मुझे आपसे बहस करनेकी और आपको विश्वास दिलानेकी जरूरत नही है कि अस्पृश्यता हिन्दू-धर्मपर सबसे बडा कलक है। मुझे आपको यह विश्वास दिलानेकी आवश्यकता नही है कि आपने जो-कुछ शिक्षा प्राप्त की है, यदि उसके बाद भी आप मनुष्य-मनुष्यके बीचके भेद को मानते हैं, तो आपकी सारी शिक्षा बेकार है, लेकिन मै आपसे इतना जरूर चाहूँगा कि यदि आप पूरी तरह मानते है, जैसा कि आपने अपने

अभिनन्दनपत्रमे बताया है कि आप मानते है, तो आप यह समझ ले कि अस्पृश्यता एक बुराई है जिससे हमे छुटकारा पाना है। मै चाहता हूँ कि आप इस कार्यमे मदद करे, मै चाहता हूँ कि आप हरिजनोकी सेवा करे। मैने तो यह आशा की थी कि आप अपने अभिनन्दनपत्रमे मुझे यह बतायेगे कि आपने उन लोगोकी किस तरह सेवा की है। दिल्लीके विद्यार्थियोकी ओरसे जब मुझे अभिनन्दनपत्र मिला था, तो उसमे उन्होने मुझे यह बताया था कि वे दिल्लीके हरिजनोकी, और यहाँतक कि दिल्लीके आसपासके गाँवोके हरिजनोकी भी, किस प्रकार सेवा कर रहे है। उम्मीद है कि आप उनका अनुकरण करेगे। उन्होने इस बातका दम नही भरा कि उन्होने कोई चमत्कार करके दिखा दिया है। उन्होने तो कुछ समय पहले मामूली-सी शुरुआत की थी। पता नही कि आपने भी इस दिशामे कोई मामूली शुरूआत की है या नही। मै नही जानता कि आपको यह पता है या नही कि आप हरिजनोकी दशा सुधारनेके लिए कितना काम कर सकते है, और मौन-सेवाके जरिये आप इस कलकसे हमे, हमारे समाजको छुटकारा दिलानेके लिए कितना बडा काम कर सकते है। समाजको यह यकीन दिलानेके लिए कि अस्पृश्यता धर्मका अग नही बन सकती और यह एक भयकर दोष है, आपको चरित्रका निर्माण करना होगा। आप अपने जीवनसे, अपने आचरणसे यह दिखा दीजिए कि कुछ लोगोको स्पृश्य और कुछको अस्पृश्य समझना धर्म तो है ही नही, बल्कि स्पष्ट रूपसे धर्मके विरुद्ध भी है। और यदि आपके पास चरित्र-गुण ही नही है तो फिर स्वाभाविक है कि लोग आपपर किसी प्रकारका यकीन नही करेगे। आपको जनसाधारणके हृदयको स्पदित करना होगा, जन-साधारणके हृदयको बदलना होगा। शास्त्रोके अध्ययनका दावा करनेवाले दकियानूसी लोग क्या कहेगे, इसकी परवाह मत कीजिए, वे जनताका प्रतिनिधित्व नही करते और न मेरी रायमे शास्त्रोकी उनकी व्याख्या सही व्याख्या है। हो सकता है कि मै गलतीपर होऊँ, लेकिन हर हालतमे ऐसे लोग थोडे ही होते है जो जनताको प्रभावित कर सकते है, जैसा कि आप लोग भी कर सकते है। मै आपसे वादा करता हूँ कि जो लोग जनताके बीच काम कर रहे है अन्तमे केवल उनकी बात ही अन्तिम मानी जायेगी। जनता बहस नही करेगी। वह तो बस यह जानना चाहेगी कि जो लोग उसके पास जाते है और उससे यह कहते है कि जिस अस्पृश्यताको उन्होने इतने लम्बे समयतक माना है वह एक बुराई है, वे लोग है कौन। और यदि उसने देखा कि जो लोग उसके पास आये थे और जिन्होने उससे यह कहा था कि अस्पृश्यता एक बुराई है, वे प्रामाणिक चरित्रवाले आदमी है तो जनता उनकी बात सुन लेगी, और यदि उनके पास प्रामाणिक चरित्र-गुण नही हुआ तो वह उनकी बात नही सुनेगी। मै आपके सामने यह जो प्रस्ताव रखता रहा हूँ वह आश्चर्यजनक रूपसे सीधा-सरल प्रस्ताव है जिसे आपमेसे प्रत्येक व्यक्ति चाहे तो स्वय परख सकता है।

ये लोग जो आपके बीच रह रहे है, आप उनकी किस तरह सेवा कर सकते है? बहुत-सी छात्र-सभाओमे भाषण करते हुए मैने इसका तरीका बताया है। अपने हाथोमे झाडू और बाल्टी पकडिए, किसी तमाशे या स्वागके तौरपर नही, बल्कि

सच्चे दिलसे, तथा झाडू और बाल्टीसे काम करिये और मद्रासके उन तमाम गन्दे स्थानोको साफ कर डालिए, उन लोगोके बीच जाइए तथा उनकी शराबकी लत छुडवाइए, उन्हे स्वास्थ्य-विज्ञान तथा स्वच्छताके प्रारम्भिक नियम सिखाइए, जिनका उनमेसे अधिकाश लोगोको कोई ज्ञान ही नही है और यह हमारे लिए शर्मकी बात है। हमने ऐसा मानकर कि ये लोग हमारे ध्यान देने योग्य भी नही है, ये धरतीके सबसे निम्न कोटिके मनुष्य है, अस्पृश्य है, अदर्शनीय है, और अनुपगम्य है इत्यादि, हम इस निर्णयपर पहुँचे कि हमे न तो उनकी देखभाल करनेकी जरूरत है और न वे जो-कुछ कर रहे है उसकी तरफ ध्यान देनेकी। उन्होने हमपर विश्वास कर लिया और ऐसा मानकर कि वे मनुष्य नही है और पशु भी नही है, स्वय अपनी ओर कोई ध्यान नही दिया। उन्होने किसी तरह कठिनाईसे अपनेको जीवित रखा हे। आपको ऐसे लोगोके बीच जाना है और उनमे आशाका सचार करना है। उम्मीद है कि आप इन स्थानोपर जायेगे तथा कमर कसकर उनके बीच कार्य करेगे और उन्हे यह विश्वास दिलायेगे कि आप वहाँ किसी प्रकारका पूर्वग्रह रखकर और किसी खराब इरादेसे नही आये है बल्कि आपका उद्देश्य साफ है और वह उद्देश्य है उनके बीच शान्ति और प्रेमका सन्देश पहुँचाकर उनकी सेवा करना। यदि आप इतना करेगे तो आपको तुरन्त अहसास हो जायेगा कि उनके जीवन भी आप जैसे बन गये है। मै आपसे यह नही कहता कि जिन घटोमे आपको पढनेकी जरूरत हो सकती है आप उनमेसे एक भी क्षण इस काममे गँवाये बल्कि मेरा तो यह कहना है कि आप अपने खाली समयका उपयोग करे और मुझे इसमे कोई सन्देह नही है कि यदि आपमेसे प्रत्येक व्यक्ति आत्म-निरीक्षण करे तो आप देखेगे कि हररोज आपके पास बहुत-सा समय खाली रहता है। मै यह नही कहता कि आप अपना सारा खाली समय इसी काममे लगा दीजिए, बल्कि यदि आप सब इकट्ठे हो जाये और मद्रासके हरिजनोकी सेवामे लग जाये तो आप देखेगे कि उनके जीवनमे भी और आपके जीवनमे भी क्रान्तिकारी परिवर्तन हो गया है। यह सब समझनेमे ईश्वर आपकी मदद करे! ईश्वर आपको इस सन्देशका अनुकरण करनेकी शक्ति दे।

एक बात और है जो मुझे आपसे कहनी है। मद्रासके विद्यार्थियोकी मैने एक शिकायत की है, वह यह कि हालॉकि वे अपनेको खास मद्रासका ही नही बल्कि भारतका एक अग मानते है, तो फिर वे, और मै बहनोसे खास तौरपर कह रहा हूँ, कि वे उस भाषाकी, जिसे २२ करोडसे भी ज्यादा भारतीय समझते है, अर्थात् हिन्दीकी, अवहेलना कैसे कर सकते है। आपके यहाँ मद्रासमे हिन्दी-प्रचार-सभा है जो आपको हिन्दी सीखनेके लिए सारी सुविधाएँ देती है। मुझे मालूम है कि बहुत-से विद्यार्थियोने इन सुविधाओसे लाभ उठाया है लेकिन मुझे अफसोस के साथ यह कहना पडता है कि यह काफी नही है। मैने तो यह आशा की थी कि इस बार आप मुझे हिन्दीमे लिखा हुआ अभिनन्दनपत्र भेट करेगे, और मै तो यह उम्मीद भी लगाये बैठा था कि आप मुझे हिन्दीमे बोलनेको कहेगे। लेकिन मुझे यह उम्मीद फौरन छोड देनी पडी। इस समय तो मै एक काममे, सिर्फ एक काममे, लगा हुआ

हूँ इसलिए हिन्दीकी चर्चापर आपका और अपना बहुत-सा समय न लेते हुए मै अपने उद्देश्यपर जोर देता हूँ। मै इस चेतावनीके साथ अपना भाषण समाप्त करता हूँ कि जब आप अपने कन्धोपर देशका भार सँभालेगे उस समय यदि आपको हिन्दी या हिन्दुस्तानी न आती हुई तो आपको बहुत बडी कठिनाईका सामना करना पडेगा। मै आपको फिरसे धन्यवाद देता हूँ।

अन्तमे महात्माजीने कहा कि मुझे उम्मीद है कि विद्यार्थी मुझे इस अभिनन्दन-पत्रके भारसे मुक्त कर देगे। मै इसकी नीलामी करूँगा। चूँकि कोई भी बोली बोलने-वाला आगे नही आ रहा था इसलिए महात्माजीने कहा कि स्त्रियाँ भी अपने गहने देकर बोली बोल सकती है। मै चूडियोके जोड़े अथवा अँगूठीके बदलेमें यह अभि-नन्दनपत्र देनेको तैयार हूँ। इसके बाद सभामें बैठी दो स्त्रियोमेसे प्रत्येकने एक-एक चूड़ी भेजी। कुमारी स्वामिनाथनने दो चूड़ियाँ दी, और उन्होने अभिनन्दनपत्र ले लिया।

[अग्रेजीसे]
हिन्दू, २१-१२-१९३३

३९१. भाषण: मद्रासकी महिला-सभामें[1]

२० दिसम्बर, १९३३

प्रिय बहनो,

हरिजन सेवक सघकी स्वागत समितिने मेरे लिए बहुत कम मिनट छोडे है, इसलिए हालाँकि मै आपसे परिचय स्थापित करनेको बहुत उत्सुक हूँ, इन चन्द मिनटो मे जितना परिचय स्थापित करना सम्भव है उसमे कही ज्यादा परिचय स्थापित करनेको उत्सुक हूँ, लेकिन मुझे जब्तसे काम लेना होगा, और कुछ शब्द कहनेके बाद ही मुझे आपके पाससे चला जाना होगा। यह जानकर मुझे बेहद खुशी हुई कि आपमेसे बहुत-सी बहने हरिजन है। यदि किसी प्रमाणकी जरूरत थी तो यह सभा उसका प्रत्यक्ष प्रमाण है, अगर मुझे यह पता न होता कि आपमेसे कुछ बहने हरिजन है तो कमसे-कम मै नही जान सकता कि कौन बहने हरिजन है और कौन नही है। इससे जाहिर होता है कि अस्पृश्यताकी प्रथा ईश्वरकी बनाई हुई प्रथा नही है। यह प्रथा तो मनुष्यके अन्दरके असुरकी बनाई हुई है। और यह काम सवर्ण हिन्दू पुरुषो और स्त्रियोका है कि वे इस प्रथाके विरुद्ध बगावत करके खडे हो जाये और इसे खत्म कर दे। इसीलिए मदर्स एसोसिएशनकी ओरसे हरिजन कार्यके लिए दी गई इस छोटी-सी थैलीको स्वीकार करते हुए मुझे खुशी हो रही है।

१. गाधीजीको मदर्स एसोसिएशन और हरिजन स्त्रियोकी ओरसे अभिनन्दनपत्र भेंट किये गये थे।

लेकिन अब मै एक शब्द हरिजन बहनोसे कहना चाहता हूँ। मै चाहता हूँ कि वे, और हरिजन-पुरुष, आत्म-शुद्धिके इस आन्दोलनमे अपनी भूमिका शानदार ढँगसे अदा करे। तीन या चार चीजे ऐसी है जिनपर निःसन्देह ध्यान देनेकी जरूरत है। पहली चीज तो है सफाईके प्रारम्भिक नियमोका पालन, अर्थात् शरीरकी शुद्धि। आपको इन नियमोके अनुसार चलना चाहिए। फिर सवाल है मुर्दार-मास और गो-माँस खानेका और मै जानता हूँ कि कुछ हरिजन इन बुरी आदतोके शिकार है। ये दोनो चीजे छोड देनी चाहिए। चौथी चीज केवल हरिजनोका दुर्गुण नही है, क्योकि तथा-कथित ऊँचे वर्गके हिन्दू भी उस बुरी आदतसे चिपटे हुए है जिसे मै बतानेवाला हूँ। और वह चीज है मद्यपानकी बुराई। इसकी परवाह मत करिए कि तथाकथित ऊँचे वर्गके हिन्दू क्या करते है या क्या नही करते, कमसे-कम आप तो अपने पुरुषोको मना कीजिए, और यदि आप भी उस आदतकी शिकार है तो आप भी उसे बिलकुल छोड दीजिए। मै पिछले ५० सालसे गरीबो और उन लोगोके बीच काम करता रहा हूँ जो शराबके आदी है, और इसलिए मै जानता हूँ कि मै क्या कह रहा हूँ। दक्षिण आफ्रिकामे नेटालमे मैंने अपनी ही बहनोको शराबमे धुत और गन्दी नालियोमे लौटते देखा है। जिस समय वे शराबमे धुत होती थी, उस समय वे अच्छे या बुरेमे भेद नही कर पाती थी। इसलिए यदि आप इस आदतकी शिकार है तो अपनेको इससे बचा ले। ईश्वर हम सबको, चाहे हम हरिजन हो या नही, उस सन्देशको समझनेकी शक्ति दे जिसे मै भारतके कोने-कोनेमे देनेका प्रयत्न कर रहा हूँ।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २१-१२-१९३३

३९२. भाषण : मद्रासकी सार्वजनिक सभामे[1]

२० दिसम्बर, १९३३

आपने अपने स्नेहका यह जो प्रदर्शन किया है वह अद्‌भुत है। मै आशा करता हूँ कि मै जो काम भगवानके नामपर, उसके लिए तथा उसके भूले-बिसरे बच्चोके लिए जिन्हे हम 'हरिजन' समझते है, करनेकी कोशिश कर रहा हूँ, आप उस कामकी गम्भीरताको तथा महत्ताको समझते है। ईश्वरकी दृष्टिमे जैसे पशु और पशुके बीच कोई भेद नही हो सकता उसी तरह मनुष्य-मनुष्यके बीच कोई भेद नही हो सकता। यदि ईश्वरने मानव-जातिके एक समुदायको दूसरेसे हीन बनाया होता तो उसने हमारे शरीरके कुछ अगोपर भेद-सूचक चिह्न लगा दिये होते ताकि ये भेद स्पष्ट रूपसे देखे जा सकते, अनुभव किये जा सकते और दिखाये जा सकते।

भारतके एक छोरसे दूसरे छोर तक आप जहाँ चाहे वहाँ चले जाइए, मेरी ही तरह आपको भी अपनेको उच्च वर्गीय हिन्दू माननेवालोमे और जिन्हे उच्च वर्गीय

१. ट्रिप्लीकेन बीच र आयोजित इस सभामें १ लाखसे भी ज्यादा लोग उपस्थित थे।

हिन्दू 'अस्पृश्य', 'अदर्शनीय' और जाने क्या-क्या कहते है, उन लोगोके बीच कोई भेदसूचक विशेषता नही दिखाई पडेगी।

इसलिए मै आपसे गम्भीरतापूर्वक इस अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्नपर विचार करनेके लिए कहता हूँ। मै बता चुका हूँ और जो बात मै हजारो मचोसे कह चुका हूँ वही बात मै इस विशाल श्रोता-समुदायके सामने फिर दोहराता हूँ कि यदि हम अपने दिलोमेसे अस्पृश्यताको बिलकुल निकाल नही देते तो एक जातिके रूपमे हमारा विनाश सुनिश्चित है और जिस प्रकार बहुतसे 'वाद' मिट गये है वैसे ही हिन्दूवादका भी नाश हो जायेगा और दोष हमारा होगा।

इस शोरगुलके बीच मुझे आपके सामने इस महान् आन्दोलनके फलितार्थोकी चर्चा नही करनी चाहिए। इतना ही कहना काफी है कि जब हमारे दिलोमेसे अस्पृश्यता निकल जायेगी तब हरिजनोको स्वतन्त्रताकी प्रभाका अनुभव होगा और तब हम उनके साथ वैसा ही बर्ताव करेगे जैसा कि अपने साथ करते है और हमे यह भी पता चल जायेगा कि उनके भी स्पष्टत और निर्विवाद रूपसे वे ही अधिकार है जो हमारे है तथा हरिजन भी उसी अनुशासनके अधीन होगे जिसके कि सवर्ण हिन्दू है। यदि ईश्वरकी कृपासे यह सन्देश आपके हृदयो तक पहुँच जाता है तो हम ऊँच-नीचके सारे भेद भूल जायेगे।

अब मै चाहूँगा कि आप कृपा करके शान्तिपूर्वक तितर-बितर हो जाइए ताकि मै भी आसानीसे अपनी कार तक पहुँच सकूँ। आप लोग कृपया अपने घरोको लौट जाये। सभाकी कार्रवाई समाप्त हो चुकी है।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २१-१२-१९३३

३९३. भाषण : बच्चोके सम्मुख[1]

मद्रास
२१ दिसम्बर, १९३३

नन्हे-मुन्नो, लडके और लडकियो, मै तुमसे केवल एक शब्द ही कहूँगा। याद रखो कि शुद्धीकरणके इस आन्दोलनमे बच्चोको भी अपना योगदान देना होगा। और मै तुम लोगोसे जो कहना चाहता हूँ वह केवल यही बच्चो, हमेशा अच्छे बने रहो और सब मुसीबतोमे सदा भगवानको याद करो।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २१-१२-१९३३

१. गांधीजी वेल्लाल टीनमपेटमें भारत सभाको देखने गये थे जो हरिजनोंके लिए एक रात्रि-पाठशाला और धार्मिक कक्षाएँ चलाती थी।

३९४. भाषण : रॉबिन्सन पार्क, मद्रासमें

२१ दिसम्बर, १९३३

आपने मुझे जो मानपत्र भेट किए है, उनके लिए मै आपको सच्चे दिलसे धन्यवाद देता हूँ। और आपने मुझे जो थैली और उपहार दिए है उनके लिए भी मै आपको धन्यवाद देता हूँ। इस सारे धनका उपयोग हरिजनोके उत्थानके लिए किया जायेगा। मै चाहता हूँ कि आत्मशुद्धिके इस महान् आन्दोलनमे स्त्रियाँ और पुरुष अपना पूरा योगदान दे। हमे अपनी सभी बुराइयो और बुरी आदतोको तिलाजलि दे देनी चाहिए। हमे भगवानसे प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमे शुद्ध हृदय प्रदान करे। यदि आपमेसे किसीको मुर्दार जानवरोका मास खानेकी आदत हो तो उसे इस बुरी आदतको छोड देना चाहिए। आपको स्वास्थ्य और सफाईके नियमोका पालन करना चाहिए। आप अपने बच्चोको शिक्षा दे और यदि आपको शराब पीनेकी आदत हो तो उसका त्याग कर दे। यह मानवजातिके सबसे बडे शत्रुओमेसे एक है। अनेक सवर्ण हिन्दू मद्यपान करते है। इसका अर्थ यह नही कि हरिजन भी मद्यपान करे। यह एक ऐसा पेय है जो पुरुषोको उन्मत्त बना देता है और वह पत्नी, माँ और बहनमे भेद कर सकनेकी शक्ति खो बैठता है। भगवान आपको शुद्धिकी इस प्रक्रियासे गुजरनेके लिए पर्याप्त शक्ति दे। और अब आप मुझे क्षमा करेगे कि मै आपको ज्यादा समय नही दे पाऊँगा। मुझे अभी और बहुतसे कार्यक्रमोमे जाना है। अन्तमे, मै आपसे अनुरोध करूँगा कि आप मुझे बिना कोई शोर किए जानेके लिए रास्ता दे दे। आपने मेरे प्रति अपने स्नेहका जो भव्य प्रदर्शन किया है और इस शुद्धि आन्दोलनमे जो दिलचस्पी दिखाई है, उसके लिए मै आपका धन्यवाद करता हूँ। ईश्वर आपका कल्याण करे।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, २२-१२-१९३३

३९५. भाषण : पेराम्बूरकी मजदूर-सभामें[१]

२१ दिसम्बर, १९३३

साथी मजदूरो,

आपने मुझे जो मानपत्र भेंट किया है उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। यदि आप सारे भारतके मजदूरोंके दु:ख-सुखको बाँटना चाहते हैं, उनके साथ तादात्मय स्थापित करना चाहते हैं तो आपको हिन्दुस्तानी सीख लेनी चाहिए। जबतक आप ऐसा नहीं करते तबतक उत्तर और दक्षिणमें कोई मेल नहीं हो सकता। लेकिन आज मैं जिस उद्देश्यको लेकर आपके पास आया हूँ वह यह नहीं है। आज मैं मजदूरोंसे यह कहना चाहता हूँ कि कमसे-कम मजदूरोंमें परस्पर ऊँच-नीचका भेद नहीं होना चाहिए।

पिछले चालीस सालसे मजदूरोंके बीच रहनेके बाद मैं यह जानता हूँ और मुझे इस बातका दु:ख भी है कि मजदूरोंमें भी भेदभाव है। उनमें हरिजन मजदूर होते हैं और गैर-हरिजन मजदूर भी होते हैं। यहाँ तक कि गैर-हरिजन मजदूरोंमें भी भेदभाव दिखाई देता है। आपको इस भेदभावको भुला देना होगा। हरिजन मजदूर और गैर-हरिजन मजदूर, दोनों एक हैं। मैं आपमेंसे उन लोगोंसे जो हिन्दू होनेका दावा करते हैं, कहता हूँ कि हमारे बीच आज अस्पृश्यता जिस रूपमें विद्यमान है उसका धर्ममें कोई विधान नहीं किया गया है।

यह असम्भव है कि ईश्वर, जो न्यायका देवता है, उन सब भेदपरक बातोंको प्रश्रय देता होगा जिन बातोंको आज धर्मके नामपर मनुष्य प्रश्रय देता है। और अन्तमें जो लोग मुर्दार-मांस अथवा गो-माँस खाते हैं उन्हें उसका त्याग करना चाहिए और यदि मजदूर लोग अपने पैरोंपर खड़े होना चाहते हैं तो उन्हें मद्यपान और जुआ जैसी बुरी आदतोंको छोड़ना होगा। मैं जानता हूँ कि इन दो बुराइयोंकी वजहसे मजदूरोंका अधोपतन हुआ है और इससे कितने ही मजदूरोंके घर उजड़ गये हैं। इसलिए मैं आशा करता हूँ कि आप शराब पीने और जुआ खेलनेकी आदतोंको छोड़ देंगे। भगवान आपको पर्याप्त बल दे जिससे कि आप छुआछूत मानने, मद्यपान करने और जुआ खेलनेकी बुरी आदतोंका त्याग कर सकें।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, २२-१२-१९३३

१. यह भाषण मद्रास एण्ड सदर्न मराठा रेलवे कर्मचारी संघ द्वारा भेंट किये गये मानपत्रके उत्तरमें दिया गया था।

३९६. टिप्पणियाँ

पुष्पमालाएँ

बडा ही अच्छा हो, यदि मेरे प्रवास-क्रमके प्रबन्धक मुझे फूलमालाएँ भेट करनेकी लोगोकी आदत छुडाते जाये। मालाओका भेट करना अगर आवश्यक ही समझा जाये, तो सूतकी मालाएँ दी जाये और उनमे जो सूत लगाया जाये वह एकसार, मजबूत और चरखेका कता बारीक सूत हो, ताकि वह सहज ही कपडे बुननेके काममे आ जाये। ये फूलमालाएँ बिना पैसे या बिना मेहनतके तो बन नही जाती। जितना भी धन और जितना भी श्रम हमे प्राप्त हो सके, उस सबकी हरिजन-सेवाके लिए आवश्यकता है। किसी भी हालतमे उस श्रम या धनको मै अपने विलास, अपनी झूठी शान या अपनी प्रतिष्ठापर खर्च नही होने देना चाहता। फिर फूलोका बरसाना तो एक बडा हानिकारक रिवाज है। गेदेके फूल जब दूरसे फेके जाते है, तो उनकी सख्त डठले मेरे ऐनकके शीशोको तोड सकती है और आँखोको भी उनसे क्षति पहुँच सकती है। कई बार तो मेरी आँखे इन फूलोकी डठलोकी चोटसे बाल-बाल बची है।

इस तरह [फूलो और मालाओपर होनेवाली फिजूलखर्चीसे] जो पैसा बचे, वह हरिजन-सेवाके निमित्त थैलियोमे डाल दिया जाये। सचमुच मै देखता हूँ कि प्रवास-की बहुत-सी व्यवस्थाओमे किफायतकी गुजाइश है। मोटरगाडियो पर काफी पैसा बर्बाद किया जाता है। जिनका रहना जरूरी है, वे ही स्थानीय सज्जन मेरे साथ स्थान-स्थान पर चला करे। कार्यकर्त्ता तो हरिजन-सेवाके न्यासी है — और बहैसियत न्यासीके उनसे यह आशा की जाती है कि वे अपने पैसेकी अपेक्षा हरिजनोके पैसेकी रक्षा अधिक सावधानी और मुस्तैदीके साथ करेगे।

नीलाम और जेवर

एक अखबारमे इस बातकी कडी टीका की गई है कि मै जहाँ-तहाँ स्त्रियोसे जेवर इत्यादि भेट करनेकी अपील करता हूँ और इस प्रकार दानमे मिली चीजोका नीलाम कर देता हूँ। वास्तवमे मै तो यह पसन्द करूँगा कि सभाओमे उपस्थित होनेवाली हजारो बहने, अगर सारा नही तो अपना ज्यादासे ज्यादा जेवर उतारकर मुझे दे दे। इस देशमे, जहाँ करोडो आदमी अधभूखे रहते है, और जहाँ लगभग ८० प्रतिशत लोगोको यथेष्ट पुष्टिकर भोजन नसीब नही होता, वहाँ आभूषणोका पहनना आँखोको एक अपराधकी तरह खटकता है। भारतमे स्त्रीके पास ऐसी नकद सम्पत्ति बहुत ही कम होती है, जिसे वह अपनी कह सके। जो आभूषण वह पहनती है, वह उसके कहे तो जाते है, पर उन्हे भी वह अपने स्वामीकी अनुमतिके बिना दे नही सकती, उसे देनेका साहस ही नही कर सकती। एक उत्तम कार्यके निमित्त

अपनी निजी चीजका दान उसे ऊँचा उठा देता है। इसके अलावा अधिकतर यह आभूषण कलाविहीन ही होते है, कुछ तो निश्चय ही भद्दे और मैल भरनेवाले होते है — जैसे कडे, गलेकी भारी-भारी हँसलियाँ, सिरके आभूषण और पहुँचीसे लेकर कुहनीतक चूडियो-पर-चूडियाँ, ऐसे ही गहने है। सिरके आभूषण बालोको सँवारनेके लिए नही, बल्कि उलझे-पुलझे, बिना धुले और बहुधा बदबू मारते हुए बालोके शृगार-के लिए ही पहने जाते है। मेरी रायमे कीमती गहने पहननेसे देशको स्पष्ट ही नुक-सान पहुँचता है। इन गहनोसे मुल्ककी भारी पूँजी रुक जाती है या इससे भी खराब बात यह होती है कि यह पूँजी दिन-दिन कम होती चली जाती है। मेरा मत है कि आत्मशुद्धिके इस आन्दोलनमे स्त्री या पुरुषके आभूषणदानसे देशका स्पष्ट ही हित होता है। जो बहने गहने देती है, वे राजी खुशीसे ही देती है। मेरी यह शर्त अवश्य रहती है कि जो आभूषण वे दान कर दे, उसे वे फिरसे न बनवाये। वास्तवमे, बहनोने मुझे इस बातके लिए आशीर्वाद दिया है कि मैने उन्हे उन व्यर्थकी चीजोसे छुटकारा दिला दिया जिन्होने उन्हे गुलाम बना रखा था। और बहुत-से पुरुषोने भी मुझे धन्यवाद दिया है कि उनके घरोमे सादगी लानेका मै एक साधन रहा हूँ।

अब नीलामके बारेमे दो शब्द कहना चाहता हूँ। मुझे इसमे कोई बुराई नही दिखाई देती। नीलाम अच्छी प्रतिस्पर्धा पैदा करता है, और किसी उत्तम कार्यके लिए स्त्री अथवा पुरुषमे उदारताकी भावना जाग्रत करनेका नीलाम एक निर्दोष साधन है। मै वर्षोसे इस साधनको काममे ला रहा हूँ, और इन नीलामोका तिलमात्र भी बुरा प्रभाव पडा हो, ऐसा मुझे कभी दिखाई नही दिया। ससारके सुविख्यात ग्रन्थ-कारोकी फटी-पुरानी हस्तलिपियोके लिए बडी-बडी कीमते देना बुरा नही समझा जाता। तो फिर यदि कोई व्यक्ति किसी वस्तुको, भले वह वस्तु यादगारकी चीज ही क्यो न हो, बहुमूल्य समझता है और उस वस्तुके लिए लागत दामसे अधिक पैसे देता है, तो इसमे क्या हर्ज है। निश्चय ही, किसी वस्तुका मूल्य उतना ही होता है, जितना कि खरीददार स्वेच्छासे दे। स्मरण रहे कि मेरे नीलाममे जो लोग बोली बोलते है, वे मुझे रिझानेके लिए बडी-बडी रकमोकी बोलियो नही लगाते। मुझे ऐसे अवसर याद है जबकि मै लोगोको बोली लगानेके लिए राजी नही कर पाया हूँ, हालाँकि इन मौकोपर भी वहाँ उपस्थित लोगोमे अन्य स्थानोके समान ही उत्साह था।

उपवासका दुरुपयोग

उपवासके दुरुपयोगके इधर हाल मे कई समाचार मेरे देखनेमे आये है। एक सज्जनने मुझे पत्र लिखकर यह धमकी दी थी कि अगर आपने अपना हस्ताक्षर न भेजा, तो मै उपवास करूँगा। तीन सज्जनोका कहना था कि यदि आप हमारे यहाँ न आये, तो हम अनशन करेगे। एक भाई तबतक उपवास करनेपर तुले बैठे थे जबतक उनके गाँवके लोग खादी, हरिजन-सेवा और ऐसे ही अन्य रचनात्मक कार्योंके लिए ५००० रुपये इकट्ठा करके न देगे। इसमे सन्देह नही कि ये तीनो उदाहरण उपवासके दुरुपयोगके है। कोई व्यक्ति उपवास करनेकी धमकी दे, तो मै क्यो उसे

अपना हस्ताक्षर दूं और उसके गॉवमे किस लिए जाऊँ? किसीके उपवासके डरसे लोग क्यो पैसा इकट्ठा करे? जिस मनुष्यके विरुद्ध उपवास किया जाता है, उस व्यक्तिके ऊपर एक नैतिक दायित्व जैसा होना चाहिए। उपवास तभी उचित समझा जाना चाहिए जब वह किसी लोकहितके अर्थं किया जाये अथवा जिसके लिए उपवास किया गया हो, उसमे उसकी सेवा करनेका हेतु अन्तर्निहित हो। मै यह खूब जानता हूँ कि उपवासके सदुपयोग और दुरुपयोगके बीचमे प्राय बाल बराबर अन्तर रहता है, जो सहज ही देखनेमे नही आ सकता। इसलिए सबसे अच्छी कसौटी तो यह है कि उपवास करनेवालेने वह साधना सिद्ध कर ली है या नही जो दूसरोके आचरण पर प्रभाव डालनेके हेतुसे उपवास करनेके लिए आवश्यक है? मैने देखा है कि ऊपरके इन दृष्टान्तोमे उपवास करनेकी योग्यताका या उसके लिए पहलेसे तैयारीका पूरा अभाव था। फिर योग्य उपवास तो वह है, जिनको हजारो आदमी भी करे, तो भी उनका हेतु सफल हो सके, उनका असर काफी अच्छा पड सके। यह मानी हुई बात है कि इस तरह अगर हजार आदमी मेरा हस्ताक्षर माँगे अथवा एक हजार कार्यकर्त्ता एक हजार गॉवोमे मुझे ले जानेका आग्रह करे, या एक कार्यकर्त्ता गरीब गाँववालोसे चन्दा इकट्ठा करना चाहे और इन सब बातोके लिए वे हजारो आदमी उपवास करनेपर तुल जाये, तो उन सबकी मनोवाछा पूरी करना तो सर्वथा असम्भव ही होगा।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २२-१२-१९३३

३९७. भाषण: जार्ज टाउनकी सभा, मद्रासमें

२२ दिसम्बर, १९३३

मित्रो,

इस समय तक हमने कोई कामकी बात नही की है। हुआ क्या है कि जो दो-चार बहुमूल्य क्षण मेरे पास है वे भी अभिनन्दनपत्रोके पढे जानेमे चले गये है। इसलिए इससे पहले कि मुझे आपसे बोलनेका अधिकार मिले, मै थोडी कामकी बात कर लूं। (हँसी।) अब मैं आपसे कहता हूँ कि मुझे जो छोटे-मोटे गहने दिये गये है आप उन्हे मुझसे ले ले और उसके बदलेमे मुझे शुद्ध सोना दे दे। (दुबारा हँसी।) तब फिर मै इस हीरेकी अँगूठीको चुरानेका दोषी नही ठहराया जा सकता, और इसलिए मुझे यह आपको देनी ही पडेगी।

अब मै सभाके कामकाजवाले भागपर आता हूँ।[1]

इसके बाद गांधीजीने हिन्दीमें कुछ शब्द कहे जिसमें उन्होंने दान देनेवालो तथा सफलतापूर्वक बोली बोलनेवालोको हरिजनोके काममें उन्होने जो मदद की थी

१. इसके बाद गांधीजीने भेंट की गई वस्तुओंकी नीलामी की। बहुत-सी स्त्रियोंने उन्हें गहने दिये।

उसके लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि यह एक महान् पुण्य-कर्म है और इस प्रकारके सेवा-कार्योमे आपको गर्वका अनुभव करना चाहिए। उन्होंने कहा कि आपके हृदयोमें जो जन्मके आधारपर ऊँच-नीच माननेकी धारणा घर कर गई है उसे निकाल दीजिए। उन्होने जोर देकर कहा कि अस्पृश्यता महापाप है; और जिसने अपने कुछ बन्धुओको अस्पृश्य समझनेकी गन्दगीको अपने दिलसे निकालनेका निश्चय कर लिया है, वास्तवमे वही श्रेष्ठ मनुष्य है। इसके बाद गाधीजीने थोड़ेसे शब्दोमें यह समझाया कि वे अस्पृश्योको हरिजन क्यो कहते हैं। उन्होने कहा, मैंने तमिलमें एक महान् उक्ति पढ़ी है: "दिक्कत्रवरुक्कुदीवमे तुनई"[1] और वस्तुतः इस अभागे वर्गके लिए 'हरिजन' शब्दका यही औचित्य है। यह नाम मैंने नही गढ़ा है; एक अस्पृश्यके कहनेपर मैंने ही इस नामका प्रयोग स्वीकार किया था। अन्तमे गाधीजीने लोगोसे यह अपील की कि अस्पृश्यताके इस कलंकको मिटाकर आप अपने धर्मको विशुद्ध बनाइए। उन्होने कहा:

यह एक महायज्ञ है और ईश्वरसे मेरी यह कामना है कि वह आपको इसमे अपनी उचित भूमिका निभानेकी बुद्धि दे।

[अग्रेजीसे]

हिन्दू, २२-१२-१९३३

३९८. भाषण: मद्रासके जैन मन्दिरमें[2]

२२ दिसम्बर, १९३३

अब मै कामकी बातपर आता हूँ। आप लोग जनताका शोषण करते हुए और धन सचय करते हुए दूर-दूरके देशो तक जाते हैं। अब मै आपका शोषण करने जा रहा हूँ।

श्रोताओने इस बातका ठहाको और हर्षध्वनिके साथ स्वागत किया। हाथी-दाँतकी एक मंजूषाको नीलामीको लिए पेश करते हुए गांधीजीने कहा:

इसके लिए आप क्या देंगे?

मंजूषा, जो अनुमानतः १५ रुपयेकी होगी, उसके लिए पहली बोली श्री रामनाथ गोयनकाने १०१ रु० लगाई।

आगे बढिए, यहाँपर आये हुए आप गुजरातियोके लिए तो १०१ रुपये कुछ भी नही हैं।

दूसरी बोली २०१ रु० की लगाई गई।

१. "ईश्वर असहायोंका सहायक होता है"।

२. गुजरातियों, मारवाड़ियों तथा सिन्धियोंने गांधीजीका सुबह साढ़े ९ बजे स्वागत किया था।

तो क्या मै इसे जाने दूँ . एक, . . दो, . . मै अब भी 'तीन' नही कहूँगा . . अब भी समय है . आप लोगोके लिए कुछ सौ रुपये कुछ भी नही है।

आप तो जानते ही है कि मै सुधार-अनुष्ठानके सम्बन्धमे आया हूँ। जहाँतक मै जानता हूँ, यह सत्यकी सेवा है, और मै आपसे अनुरोध करूँगा कि आप इसमे मदद करे। आप जितना कुछ दे सकते है उसके मुकाबलेमे जो थैली आपने दी है वह तो बहुत कम है।

आगे बोलते हुए गांधीजीने कहा कि हरिजनोके उद्धारके जिस कार्यमें मै लगा हुआ हूँ वह एक पवित्र कार्य है। जहाँ तक मै वेदोका अर्थ समझ पाया हूँ, मैंने ऐसी कोई चीज नहीं देखी जिससे बड़े और छोटेका, स्पृश्य और अस्पृश्यका भेद उचित ठहरता हो। सच्चे अद्वैतके अनुसार तो ईश्वरकी आँखोमें सब मनुष्य बराबर है। यह तो सिर्फ मायाके कारण मनुष्य-मनुष्यके बीच ऐसा भेदभाव दिखाई पडता है। आप लोगोको अब अपने बन्धु-मानवोको अस्पृश्य अथवा अदर्शनीय नहीं समझना चाहिए। क्या कोई व्यक्ति यह कह सकता है कि उसका मस्तिष्क, आँख या कान, उसके हाथ, पैर या शरीरके किसी दूसरे अगसे श्रेष्ठ है? महत्वकी दृष्टिसे सब अग बराबर है। उसी प्रकार समाजका कोई भी एक वर्ग उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि कोई अन्य वर्ग, और आपको सब मनुष्योको बराबर समझना चाहिए। मुझे [अस्पृश्यताके] इस सिद्धान्तमे कोई सार नजर नही आता जो कि धर्मके आदेशोके विपरीत है। मुझे पूरा विश्वास है कि जो काम मै कर रहा हूँ वह ईश्वरका कार्य है और यही सत्य-मार्ग है। मेरी ईश्वरसे प्रार्थना है कि वह आप लोगोको सम्पन्न और समृद्ध बनाये और आपसे मेरा अनुरोध है कि आप अपना धन सत्कर्ममें और अपने बन्धु-मानवोकी सेवामें लगायें।

[अग्रेजीसे]

हिन्दू, २२-१२-१९३३

३९९. भाषण : वैश्य एसोसिएशनमे[1]

मद्रास

२२ दिसम्बर, १९३३

प्राचीन कालसे हमे सिखाया गया है कि ईश्वरके सम्मुख हाथी और चीटी, ब्राह्मण और शूद्र एक समान है। समदर्शी व्यक्तिके सम्मुख भी वे सब बराबर है। एक साधु अथवा पण्डित जो कार्य करता है, वही एक प्राकृत अथवा ससारी मनुष्य को करना चाहिए। धार्मिक आदेश दोनोके लिए एक जैसे है। आप पण्डितको सत्य और प्राकृत मनुष्यको असत्यकी शिक्षा नही दे सकते। वैश्य लोग समझते है कि व्यापारमे झूठ बोला जा सकता है। लेकिन धर्मशास्त्र हमे यह नही सिखाते। विश्वधर्ममे न कोई ऊँचा है और न कोई नीचा है। ऊँच और नीचका भेद ही हमारे सब दु खोकी जड है। अस्पृश्यता-निवारण हिन्दुओके लिए शुद्धि यज्ञ है। आज आपने जो दान दिया है वह शुद्धि यज्ञमे आपका अशदान है और आपकी प्रतिज्ञा[2] का बयाना है।

आपने मुझसे पूछा है कि क्या यह शुद्धीकरण आन्तरिक शक्तियोकी सहायतासे आ सकता है अथवा बाह्य शक्तियोकी मददसे। आपने ठीक सवाल किया है। बाह्य साधनो द्वारा किया गया शुद्धीकरण बेकार है। यदि मै आज आपको अपने सामने झुकनेके लिए विवश करूँ तो यह धर्मके विरुद्ध होगा। धार्मिक उद्देश्योकी प्राप्ति तो केवल आन्तरिक प्रयत्नके द्वारा ही की जा सकती है।

मै आपसे अनुरोध करता हूँ कि कल जो कार्य आपको विवश होकर करना पडेगा वह कार्य आज आप खुशी-खुशी करे।

[अग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, २७-१२-१९३३

१ दक्षिण भारत वैश्य एसोसिएशनने गांधीजीको एक मानपत्र भेंट किया था। गांधीजीने अपना भाषण हिन्दीमें दिया और श्री के० नागेश्वरराव पन्तुलुने उसका तेलुगुमें अनुवाद किया।

२. देखिए खण्ड ५१, पृष्ठ १४८-४९।

४००. भाषण : आन्ध्र महासभाकी बैठक, मद्रासमें

२२ दिसम्बर, १९३३

चित्रका अनावरण करते हुए गांधीजीने कहा कि चित्रमें दिखाये गये नागेश्वरराव पन्तुलुसे जीवित सप्राण नागेश्वर राव पन्तुलु भिन्न हैं। चित्रके नागेश्वर राव पन्तुलुका व्यक्तित्व निस्पन्द हो गया है। मैंने जबसे श्री पन्तुलुको जाना, तबसे ही मुझे उनमें एक विशेषता दिखाई दी है और वह यह कि श्री पन्तुलु हमेशा उन लोगोंकी मदद करनेमें विश्वास रखते हैं जिनको उनकी या उनकी मददकी अपेक्षा होती है। श्री नागेश्वरराव पन्तुलुने मुझे बताया कि "अमृताजन"[1] से होनेवाले लाभका अधिकांश भाग दुखियोंकी सहायता, जरूरतमन्द लोगोंकी मदद करनेमें जाता है। श्री नागेश्वरराव पन्तुलुके जीवनका और कोई उद्देश्य नहीं है। महात्माजीने प्रार्थना की कि श्री नागेश्वरराव पन्तुलुकी सदा उन्नति होती रहे, यहाँ तक कि अन्तमें प्रत्येक व्यक्ति उनके पास जा सके और उनसे सहायता और सान्त्वना का लाभ पा सके। उन्होंने आगे कहा कि हम लोगोंको चाहिए कि वे श्री नागेश्वरराव पन्तुलुमें पाये जानेवाले उदात्त गुणोंको अथवा जिन उदात्त गुणोंका उनपर आरोप किया जाता है उन गुणोंको अपने जीवनमें उतारें।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २२-१२-१९३३

४०१. भाषण : हिन्दी प्रचार सभाके दीक्षान्त समारोहमें[2]

मद्रास
२२ दिसम्बर, १९३३

गांधीजीने स्नातकों और प्रचारकोंसे इस बातकी क्षमा माँगते हुए कि समयकी कमीके कारण उन लोगोंको उनके प्रमाणपत्र व्यक्तिशः प्रदान नहीं कर सकेंगे, कहा कि मैं आपको अपनी बधाई और आशीर्वाद देता हूँ। उन्होंने कहा कि मुझे आपको अब सलाहके तौरपर कुछ नहीं कहना है क्योंकि जो कुछ कहनेको था वह श्री त्रिपाठी[3]

१. एक मरहमका नाम।

२. दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभाका तृतीय वार्षिक दीक्षांत समारोह गोखले हालमें हुआ था जिसकी अध्यक्षता गांधीजी कर रहे थे।

३. श्री रामनरेश त्रिपाठी, जिन्होंने दीक्षांत भाषण दिया था।

पहले ही कह चुके हैं। लेकिन इस सलाहको माननेकी आवश्यकतापर मै जोर देना चाहूँगा। दक्षिण भारतमें, और जैसा कि मैंने देखा है, विशेष रूपसे आन्ध्रप्रदेशमें हिन्दी प्रचारकी सुस्थिर रूपसे प्रगति हुई है। लेकिन मुझे तबतक सन्तोष नहीं होगा जबतक कि प्रत्येक व्यक्ति हिन्दी इतनी काफी न समझने लगे कि फिर कोई व्यक्ति मुझसे अंग्रेजीमें बोलनेको न कहे। मेरी आपसे यही अपील है कि आप साहस और संकल्पके साथ अपने कामको आगे बढ़ाते जायें। आपने अच्छी शुरुआत की है और मुझे आशा है कि आप ऐसा ही काम करते जायेंगे। ऐसा कहा जाता है कि देशके इस भागमें हिन्दी कुछ विशिष्ट कठिनाइयाँ पैदा करती है। शायद कुछ हद तक यह बात सही है। लेकिन मुझे लगता है कि किसी भारतीयके लिए किसी भारतीय भाषाको सीखना बहुत कठिन नही है। सभी भारतीय भाषाओंमें संस्कृतका समान रूपसे कुछ पुट होनेके कारण, जहाँतक मै देख सकता हूँ, किसी भी भारतीय भाषाका कामचलाऊ ज्ञान प्राप्त कर सकना आपके लिए आसान होना चाहिए। अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा या तमिल जैसी कठिन भाषापर अधिकार करनेमें हमें कठिनाई नहीं होती। इसलिए हिन्दीके मामलेमें हमें बहुत कठिनाई क्यो होनी चाहिए तो फिर हिन्दी ३५ करोड़में से २२ करोड़ भारतवासियोकी भाषा है, और इसका भारतकी सर्वसामान्य भाषा होना निश्चित है।

गांधीजीने कहा, कुछ लोग कहते हैं कि मुसलमान हिन्दी नहीं समझ सकते, वे केवल उर्दू समझते हैं। लेकिन जन-साधारण जैसी हिन्दी या उर्दू बोलते हैं उसमें मुझे कोई भेद नही प्रतीत होता। यह सही है कि इस्लाम धर्मकी पुस्तकोमें और मुसलमानोके एक वर्गमें प्रयुक्त होनेवाली उर्दूमें फारसी और अरबी शब्दोकी बहुलता होती है जिसके कारण हिन्दू उसे नहीं समझ सकते। इसी प्रकार कुछ हिन्दू भी अपनी पुस्तकों और अपनी बातचीतमें संस्कृतनिष्ठ भाषाका प्रयोग करते हैं जिसके कारण मुसलमानोको उसे समझना कठिन होता है। जब मै कहता हूँ कि हिन्दी और उर्दू एक जैसी भाषाएँ है तो मेरा तात्पर्य इस प्रकारकी हिन्दी या उर्दूसे नहीं होता। मेरा मतलब तो उस भाषासे होता है जो उत्तर भारतके जनसाधारणकी भाषा है जिसमें सस्कृत, फारसी और अरबी शब्दोकी अच्छी मिलावट होती है और फिर भी जिसे प्रत्येक व्यक्ति, हिन्दू या मुसलमान, समझ सकता है। यह वह भाषा है जिसे मै चाहता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति समझना और बोलना सीखे। जबतक आप ऐसा नहीं करेंगे तबतक मुझे भय है कि दक्षिणके लोग न तो उत्तर भारतके जन-साधारणका हृदय स्पर्श कर सकेंगे और न उत्तर भारतवाले दक्षिण भारतकी जनताका हृदय छू सकेंगे।

गांधीजीने कहा, हिन्दी प्रचार सभा दक्षिण भारतमें पन्द्रहसे ज्यादा वर्षोंसे कार्य कर रही है फिर भी आप लोगोने इसकी सेवाओंका लाभ उठानेके लिए, और हिन्दी भाषा सीखकर भारतकी राष्ट्रीय एकताको बढ़ानेके लिए क्या किया है? क्या आप

लोग घुड़दौड़, सिनेमा और सस्ते मनोरंजनपर खर्च करनेके लिए समय और धन नहीं निकालते? क्या आप इसमेंसे कुछ समय और धन हिन्दी सीखनेपर खर्च नही कर सकते? मैंने सुना है कि सभाको पर्याप्त जगहकी जरूरत है और वह अपना भवन बनानेकी कोशिश करती रही है, लेकिन धनाभावके कारण नहीं कर सकी है। यदि प्रत्येक व्यक्ति हिन्दी सीखनेके लिए आगे आये और सभाकी सेवाओके बदले एक छोटी-सी रकम भी दे तो आवश्यक धन आसानीसे उपलब्ध हो सकता है और सभाको उत्तर भारतकी सहायतापर निर्भर न करना पड़े। सभाको स्वावलम्बी बनानेका दायित्व दक्षिण भारतका है। इसलिए मैं अपनी यह अपील फिरसे दुहराता हूँ कि सभी दक्षिण भारतीयोको सभाकी सेवाओका लाभ उठाना चाहिए और इस प्रकार राष्ट्रके काममें मदद देनी चाहिए।[1]

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, २३-१२-१९३३

४०२. बातचीत . दलित वर्ग संघके शिष्टमण्डलसे[2]

मद्रास

२२ दिसम्बर, १९३३

आइए, राव बहादुर। क्या मैं आपको कुर्सी दे सकता हूँ? हाँ तो राव बहादुर, मुझे आपका पत्र मिल गया है। क्या हम उसीसे शुरुआत करे? या हम क्या करे? आप ही कार्रवाई तय करे।

श्री श्रीनिवासनने कहा: "क्या आप पत्रको पढकर सुनानेकी इजाजत देंगे?" गांधीजीने कहा:

हाँ, कृपया आप पढ दे।

. . . श्री भाष्यम आयंगारने इस बातकी तरफ इशारा किया कि पत्र ६ टाइपशुदा पृष्ठोंका है।

सब कुछ श्री श्रीनिवासनके ऊपर निर्भर करता है जो यहाँ [इस समय] अध्यक्ष है। लेकिन जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं उसे ऊपरसे नीचे तक पढ चुका हूँ।

१ इसके बाद गाधीजीने उस दुशालेको नीलाम किया जो उन्हें दीक्षात समारोहके आरम्भमें भेंट किया गया था।

२. माथकालमें मद्रास दलित वर्ग सघकी कार्यकारिणीके सदस्य एक शिष्टमडल बनाकर गाधीजीसे मिलने गये। शिष्टमडलके सदस्य थे श्री आर० श्रीनिवासन, वी० धर्मलिंगम् पिल्ले, स्वामी सहजानन्द, पी० वी० राजगोपाल पिल्ले और पुष्पराज। अन्य उपस्थित व्यक्तियोमें थे वी० भाष्यम आयगार, अध्यक्ष, प्रान्तीय हरिजन सेवक सघ, के० नागेश्वरराव पन्तुलु, वी० वेंकट सुब्बैया, के० भाष्यम और **हरिजन**के सम्पादक आर० वी० शास्त्री।

श्री श्रीनिवासनने सुझाव दिया कि उनके साथियोंके लाभके लिए पत्रको पढ़नेकी अनुमति दी जा सकती है क्योंकि उसे सब लोगोंके पढ़नेके लिए घुमानेका समय नहीं है। गांधीजीने श्री पुष्पराजसे पत्र पढ़नेको कहा।

यदि मैं उसकी ओर ध्यान न दूँ तो आप मुझे क्षमा करेंगे। कारण, वह मुझे लगभग हृदयगम हो गया है। इस बीच मैं अपने कागज ठीक-ठाक कर लूँगा।[१]

सबसे अच्छा यह होगा कि एक-एक मुद्देको लेकर उसका जवाब देता जाऊँ। आपने पूना-समझौतेके बारेमे जो कहा है वह हमारे बीचका सामान्य आधार है, और मै इस विचारका पूरी तरह समर्थन करता हूँ कि समझौतेका जिस रूपमे पालन किया जाना चाहिए यदि सवर्ण हिन्दू उसका उसी भावनाके साथ पालन नही करते तो वह निरर्थक हो जा सकता है और उसका कोई लाभ नही होगा।[२] इस बातको मैं पूरी तरह स्वीकार करता हूँ।

केन्द्रीय बोर्ड या प्रान्तीय बोर्ड चुनावोको प्रत्यक्ष रूपसे किस हदतक प्रभावित कर सकेंगे, यह मैं नही जानता। मेरे विचारसे यह एक बहुत कठिन और नाजुक विषय है। इसलिए मैंने यह निर्देश दिया है कि सामान्यत हमें इन चुनावोमे हस्तक्षेप नही करना चाहिए। लेकिन जहाँ किसी हरिजन उम्मीदवारके साथ अन्याय किया जाता है वहाँ हम जरूर हस्तक्षेप करते है। जब ऐसी कोई बात होती है, जैसी कि बम्बईमे हुई, तो हम उसे सुधारनेका प्रयत्न करते है।

बम्बईवाली घटनाकी कुछ विस्तारके साथ चर्चा करते हुए गांधीजीने बताया कि विधान परिषद्के लिए चुनावमें एक उम्मीदवारको बिठलानेके लिए उन्होंने क्या-क्या प्रयत्न किये थे। यह व्यक्ति एक ऐसे उम्मीदवारके विरुद्ध खड़ा हो गया था जो हरिजन सेवकसंघका सदस्य था और जिसके बारेमें सभी लोग जानते थे कि हरिजनोंका हित उसे अत्यन्त प्रिय है।

दिल्लीमे हरिजन उम्मीदवारके नगरपालिकाके लिए न चुने जानेका डर था। हमने हस्तक्षेप किया और हरिजन उम्मीदवारके लिए विशेष रूपसे गुंजाइश निकाली गई। कानपुरमे एक हरिजन उम्मीदवार था और सवर्ण हिन्दुओ द्वारा उसका विरोध किया जाना गलत था। मुझे इसके बारेमे चुनावके बाद खबर मिली। हारे हुए सज्जनने मुझे पत्र लिखा, और मैंने उत्तरमे लिखा कि सवर्ण उम्मीदवारके लिए हरिजन उम्मीदवारके विरुद्ध खडा होना गलत चीज थी। हम लोगोने अपनी भरसक कोशिश की कि यह सज्जन अपनी सीटसे इस्तीफा दे दे। लेकिन उस समय इसमे सफलता नही मिली। उसके बाद क्या हुआ, मुझे पता नही। और भी ऐसे ही कई उदाहरण है।

१ पत्र पढ़ा जा चुकनेके बाद गांधीजीने अपना उत्तर दिया।

२. शिष्टमंडलके सदस्योंने यह आशंका व्यक्त की थी कि पूना-समझौता कारगर नहीं होगा और सवर्ण हिन्दुओंकी चालोंके कारण वे लोग अपनी पसन्दके उम्मीदवार नहीं चुन सकेंगे।

मै ये दृष्टान्त यह दिखानेके लिए दे रहा हूँ कि जहाँ कही कोई ऐसा हरिजन उम्मीदवार खडा होता है जिसकी प्रामाणिकतामे किसी प्रकारकी शका नही होती वहाँ केन्द्रीय बोर्डने सवर्ण हिन्दू उम्मीदवारोको प्रभावित करके चुनावमे बिठालनेकी कोशिश की है। लेकिन जहाँ हरिजन उम्मीदवार एक दूसरेका विरोध कर रहे हो और सवर्ण हिन्दू चुनावोका सचालन कर रहे हो, वहाँ बोर्ड हस्तक्षेप नही करता। आप लोग वास्तवमे चाहते है कि बोर्ड ऐसे मामलोमे भी हस्तक्षेप करे। आप चाहते है कि बोर्ड चुनावोका इस प्रकार नियमन करे या चुनावोको इस प्रकार प्रभावित करे कि सही प्रकारके व्यक्ति चुने जाये। लेकिन मेरा खयाल है कि तब बोर्ड अपना प्रभाव खो बैठेगा। आज जो बोर्डका प्रभाव दिन-दिन बढ रहा है उसका कारण यही है कि जहाँ किसी हरिजनको नुकसान पहुँचानेका भय है, ऐसे मामलेको छोडकर उसका रुख बिल्कुल निष्पक्षताका रहता है। यही मर्यादा-रेखा हमने रखी है। अगर आप स्थितिकी जाँच करे तो मुझे तनिक भी सन्देह नही है कि आप मुझसे सहमत होगे।

यदि आप इस बोर्डको सेवाका एक कारगर साधन बनाना चाहते है तो उसे राजनीतिसे बिल्कुल अलग रहना होगा। और जब हमारे चरित्रका स्तर ऊपर जायेगा और अस्पृश्यताके मूलको निकाल फेका जायेगा उस समय सभी चीजोमे ऊपरसे नीचे तक समता स्थापित हो जायेगी। ऐसी मेरी आशा है। लेकिन महज इन नैतिक प्रकार की गलतियोमे बोर्डको हस्तक्षेप नही करना चाहिए। एक बार हमने वैसा करना शुरू किया तो आप देखेगे कि साराका-सारा सगठन भरभरा कर बिखर जायेगा।

बोर्ड राजनीतिसे सर्वथा अप्रभावित है, और जैसा कि मैने इतनी बार कहा है, हरिजन आन्दोलन विशुद्ध रूपसे धार्मिक है। यदि इसको ऐसा ही बनानेमे मुझे सफलता मिली और यदि बोर्ड इस नीतिको ईमानदारीसे स्वीकार करता है और लगनसे उसका पालन करता है तो आपको इस उद्देश्यके लिए इससे अच्छी कोई चीज नही मिलेगी। राजनीतिसे अलग रहने और उसमे प्रत्यक्षत हस्तक्षेप न करनेसे आन्दोलन अधिकाधिक शुद्ध बनेगा और बोर्डके लिए भी इसीमे ज्यादा बुद्धिमानी होगी तथा वह अपना उद्देश्य ज्यादा जल्दी प्राप्त कर सकेगा।

श्री श्रीनिवासनने अपने पत्रमें अगला मुद्दा यह उठाया था कि सरकार द्वारा दलित वर्गोंके आर्थिक उन्नयन और सामान्य रूपसे अस्पृश्यता-निवारणके लिए जो-कुछ किया जा रहा है उसके बारेमें बोर्डको हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। महात्मा गाधीने कहा कि मै आप लोगोसे बिलकुल सहमत हूँ कि बोर्डको कोई भी काम ऐसा नहीं करना चाहिए जो सरकार द्वारा इस दिशामें दिये गये प्रोत्साहनके मार्गमें बाधा बने; और मै आपको विश्वास दिलाता हूँ कि सरकारके बारेमें मेरी निजी धारणा कुछ भी हो, लेकिन बोर्ड सरकारी प्रयासोंमें हस्तक्षेप नहीं करेगा।

इसमे सन्देह नही कि मै वर्तमान शासन-प्रणालीके बहुत खिलाफ हूँ। भारतके हितोको कुल मिलाकर देखते हुए यह एक अनिष्टकर प्रणाली है। लेकिन मै इस सिद्धान्तको हरिजनोके मामलेमे लागू नही कर सकता, यानी तबतक जब तक कि

मैं इस सघर्षमे कूद ही न पड़ूँ और इस मामलेमे भी सरकारका विरोध करूँ। मैं ऐसा नही कर सकता।

मै ईमानदारीसे कहता हूँ कि सरकार जिस प्रकार आप [श्री श्रीनिवासन] अपने हितोकी रक्षा करनेमे सक्षम है और जिस प्रकार श्री पुष्पराज है, उस प्रकार यदि हरिजन भी सक्षम होते तो मै सरकारका विरोध करनेसे अपने-आपको नही रोक पाता। सक्षमतासे मेरा मतलब है कि जहाँ तक व्यक्तिश आप लोगोका सवाल है। लेकिन सामूहिक रूपसे देखा जाये तो हरिजन लोग बिल्कुल असहाय है। जब वे अपनी मदद आप कर सकेगे, सवर्ण हिन्दुओके बराबर खडे होगे और उनके साथ समानताके आधारपर मिलजुल सकेगे, तब मेरा मन शान्त होगा और मै कहूँगा "नही, मै आपके हितोका ध्यान नही रख सकता। यह बात मैं शायद नही कर सकता।

हरिजनोको सरकारसे जो-कुछ लाभ मिलता है, लेने दीजिए, और सवर्ण हिन्दुओसे जो-कुछ लाभ मिलता है, वह सब लेने दीजिए। ये दोनो मिलकर हरिजनोके प्रति होनेवाले अन्यायको काफी कुछ दूर कर सकेगे। लेकिन मै ऐसा नही मानता कि इसके बाद भी वे सारे अन्यायोको दूर कर सकेगे, क्योकि सवर्ण हिन्दू कैसा भी प्रायश्चित्त क्यो न करे, लेकिन सदियोसे जिस भारके नीचे हरिजनोको जिस प्रकार दला जा रहा है, उसको चन्द वर्षोमे पूराका पूरा हटाया नही जा सकता। हरिजन लोग अपने सच्चे स्वरूपको फिरसे प्राप्त करे, और जैसे अच्छे और योग्य वे हो, वैसा ही अनुभव करने लगे, इसमे बहुत लम्बा समय लगेगा।

मै आपको इस बातका पूरा विश्वास दिलाता हूँ कि जहाँ तक हरिजनोका सवाल है, मै सरकारकी नीतिमे कोई दखल नही दूँगा। यहाँ भी मै यह कहूँगा कि मै अपनी यह यात्रा इस ढँगसे कर रहा हूँ ताकि किसीको किसी प्रकारकी शका न रहे, मै सविनय अवज्ञा आन्दोलनके उद्देश्योकी प्राप्तिके लिए भी हरिजन आन्दोलनका कोई लाभ नही उठाऊँगा। वैसा करनेपर वह अवज्ञा आन्दोलन सविनय न रहकर अपराधपूर्ण अवज्ञा हो जायेगी। लेकिन मै यह जरूर कहता हूँ कि जीवनभर मैंने कोई अपराधपूर्ण नीयत नही रखी है। अवज्ञा आन्दोलनके सविनय स्वरूपका औचित्य सिद्ध करनेके लिए मै हरिजनोके कामको उससे अलग रख रहा हूँ। इसके विपरीत, यदि मै राजनीतिक उद्देश्यके लिए हरिजन आन्दोलनका उपयोग करना चाहता तो मै खुले रूपसे यह घोषित करनेमे सकोच नही करता कि 'बेशक, मै सविनय प्रतिरोध आन्दोलनको चलानेके लिए हरिजनोका उपयोग करने जा रहा हूँ।' नही, निश्चय ही नही। इसके विपरीत, वे हरिजन जो मेरे साथ रह रहे है और जो खुद यह कहते है कि उन्हे जो-कुछ भी प्राप्त है वह मेरे साथ उनके सम्बन्धोके कारण ही उन्हे प्राप्त है, उन्होने मुझसे अनुरोध किया कि जब मै आश्रमको समाप्त ही कर रहा हूँ तो उन्हे आन्दोलनमे शरीक होनेकी अनुमति दे दूँ। उन्होने मुझसे कहा "आप हमें अलग क्यो रख रहे है? क्या हमारी राष्ट्रभक्ति किसीसे कम है और क्या हममे औरोकी अपेक्षा सत्याग्रह करनेकी क्षमता कम है?" मैने उन्हे चेतावनी दी कि "तुम ऐसा करनेका साहस मत करना क्योकि हरिजनोके प्रतिनिधियोकी हैसियतसे ऐसा करके तुम गलती करोगे।"

हरिजन सेवक सघ आज ऐसे लोगोके नियन्त्रणाधीन है जो सविनय अवज्ञा करनेकी स्थितिमे नही है। सर्वश्री अमृतलाल ठक्कर और श्री घनश्यामदास बिडला, वहाँकी प्रेरक शक्ति है। यही नही, ऐसे सभी काग्रेसजनोको जिनके मनमे सविनय अवज्ञा करनेकी इच्छा है और जो सविनय अवज्ञा करना चाहते थे, उनको भी सघके केन्द्रीय बोर्ड, प्रान्तीय बोर्ड अथवा उसकी किसी शाखामे कोई पद-ग्रहण करनेकी मनाही है।

सघकी गतिविधियो और सरकारके साथ उसके सम्बन्धोके बारेमे सवाल अभी भी बच रहता है। यहाँ भी मै कहूँगा, "बोर्डके ऊपर यह भार मत रखिए।" यदि आप ऐसा करेगे तो बोर्डका सार्वत्रिक प्रभाव खत्म हो जायेगा। मै चाहता हूँ कि बोर्डका सार्वत्रिक प्रभाव हो और यह प्रभाव कारगारी ढँगसे सभी जगह अनुभव किया जाये। जिन विषयोकी आपने चर्चा की है, उन विपयोके बारेमे बोर्ड सरकारके काममे कभी दखल नही देगा। सरकार ऐसे तरीके भी अपना सकती है जो नुकसानदेह हो। तब उनका विरोध करना आपका काम होगा। हम यह विरोध नही करेगे। यहाँ भी मै उस बातका समर्थन करता हूँ जो आपने [श्री श्रीनिवासनने] अपने पत्रमे कही है।

राजनीतिके मामलेमे भी आप कहते है कि आपको अपने ढँगसे चलने और विकसित होने दिया जाये। मै इसकी स्वीकृति देता हूँ। बोर्ड इस मामलेमे कोई दखल नही देगा। अत जब हरिजनोके हितकी दृष्टिसे सरकारकी नीति आपत्ति-जनक हो, या लगे तो यह निश्चय भी आपको और केवल आपको ही करना होगा कि सवैधानिक और वैध तरीकोसे ही सही, उसका विरोध आप करे या न करे। लेकिन जहाँ तक बोर्डका सवाल है, मै कहूँगा, "हमने मर्यादा-रेखा खीच दी है, और हमारी वही स्थिति रहेगी।" यदि हम उस स्थितिपर कायम रहे तो मै जानता हूँ कि बोर्डको सरकार भी आदरकी दृष्टिसे देखेगी। इस प्रकार शुरूसे आखिर तक बोर्ड ईमानदारीकी नीति ही अपनायेगा—इसमे कोई छल नही होगा।

अब शिक्षाको ले।[1] इस विषयमे केन्द्रीय बोर्ड आपके सामने अपने कार्योका बहुत ही अच्छा रिकार्ड प्रस्तुत कर सकता है। हर जगह उदारतापूर्वक छात्रवृत्तियाँ दी जा रही है। कितने ही सौ हरिजन आज छात्रवृत्तियाँ पा रहे है जो कि वे सर-कारसे या अन्य किसी सस्थासे नही पा सकते। हम एक भी व्यक्तिसे कभी यह नही कहते. "सरकारके पास मत जाओ।" यह नीति बोर्डके ऊपर लागू नही की जा सकती। हम उन्हे सरकारी विभागोसे सहायता प्राप्त करनेके लिए प्रोत्साहित करते है। जिन मामलोमे यह सहायता पर्याप्त नही होती, उनमे बोर्ड भी कुछ सहायता कर देता है। ऐसा हमने बहुत सारे मामलोमे किया है। शिक्षाके मामलेमे यह है हमारी नीति।

१. शिष्टमंडलके सदस्योंने शिकायत की थी कि जहाँ सवर्ण हिन्दुओंकी प्रधानता है, ऐसे स्कूलोंमें हरिजन बच्चोंको भर्ती करनेकी नीति सफलतापूर्वक नहीं चल रही थी और दलित वर्गोंकी शैक्षणिक प्रगतिके वह अनुकूल नहीं थी। उन्होंने गांधीजीसे छात्रवृत्तियाँ, और छात्रवासोंकी स्थापनाके लिए धन एकत्र करनेमें सहायता देनेका अनुरोध किया था।

फिर, आह! आप कहते है कि देश-प्रत्यावर्तन दक्षिण आफ्रिकामे मेरे कार्योका परिणाम है।[1] यह तो बडा निर्मम आक्षेप है। (हँसी)। मै कहता हूँ कि इतिहास इससे भिन्न निर्णय देगा।

१८९३ मे जब मैने दक्षिण आफ्रिकाकी धरती पर पैर रखा था उस समय देश-प्रत्यावर्तनकी सूरत पैदा हो ही रही थी। क्या आप जानते है कि नेटाल विधानसभामे एक विधेयक वास्तवमे पास किया गया था जिसके अनुसार प्रत्येक ऐसे भारतीयसे जो गिरमिट खतम होनेके बाद नेटालमे बसना चाहता हो, अपेक्षा की जाती थी — क्या करनेकी अपेक्षा की जाती थी?

श्री आर० श्रीनिवासन: कि वह व्यक्ति-कर अदा करे।

गाधीजी कितना?

श्री श्रीनिवासन: प्रति व्यक्ति १ पौंड।

नही, नही, नही। उन्होने २५ पौडका प्रस्ताव किया था। मैने इसका विरोध किया। मूलत विचार यह था कि गिरमिट खत्म होनेके बाद वे [भारतीय गिरमिटिया] वापस देश चले जाये। इसके मतलब यह कि उनकी गिरमिटकी अवधि भारतमे खत्म हो। मैने नेटाल ससदमे पेटीशन भिजवाये। यह मैने वहाँके व्यापारी समाजके जरिये कराया क्योकि उस समय व्यक्तिश प्रत्येक भारतीयसे अलग-अलग ऐसा करवा सकना सम्भव नही था। परिणामस्वरूप कानूनकी व्यवस्थाएँ बदल दी गई, और यह बात लिखित रूपमे मौजूद है। अत आप देखेंगे कि जब मै दक्षिण आफ्रिका गया उस समय देश-प्रत्यावर्तन हो रहा था, और मेरे वहाँ जानेके बाद प्रत्यावर्तन असम्भव हो गया। इसके बाद आप अपना यह भय प्रकट करते है कि जिस प्रकार दक्षिण आफ्रिकामे हमारा आन्दोलन समाप्त हो गया था उसी प्रकार यह हरिजन आन्दोलन भी समाप्त हो जा सकता है। मै चाहता हूँ कि इसका वैसा ही अन्त हो। (जोरसे हँसी) देश-प्रत्यावर्तन अब स्वैच्छिक है और जिन लोगोको देश वापस भेजा जाता है उन्हे आर्थिक मुआवजा दिया जाता है। १८९३ मे देश-प्रत्यावर्तन अस्वैच्छिक और बाध्यकारी था और इसके लिए कोई मुआवजा नही दिया जाता था। यदि मैने यह अपराध किया है — (फिरसे हँसी) — तो मै अपराध स्वीकार करता हूँ।

चर्चाके इस विषयका समापन करते हुए गाधीजीने कहा कि देश-प्रत्यावर्तनकी योजना विफल सिद्ध हुई है। यह विफल हुई है, इसकी जानकारी मुझे यो है कि मेरा उन लोगोके साथ पत्र-व्यवहार होता रहता है जो दक्षिण आफ्रिकाके बारेमें प्रत्यक्ष जानकारीके आधारपर कुछ कह सकते है। वहाँके भारतीयोंका मार्गदर्शन मै जिस हद तक कर सकता हूँ, कर रहा हूँ। मै उन्हे बराबर चेतावनी देता रहता हूँ कि वे वापस भारत न लौटें क्योंकि यहाँ उनकी स्थिति अछूतोके भी बीच अछूतों

१. शिष्टमडलके सदस्योंने कहा था कि दक्षिण आफ्रिकामें गांधीजीके कार्योंके फलस्वरूप जो भारतीय दक्षिण आफ्रिकासे भारत आये थे उन्हें रोजगारके अभावमें बड़ी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ रहा है।

जैसी होगी। ऐसी परिस्थितियोमें जहाँ तक दक्षिण आफ्रिकाकी बात है, मुझे किसी बातके लिए पछतानेकी जरूरत नहीं है।

अब मै मन्दिर-प्रवेशके सवाल पर आता हूँ। मै बेहिचक कहूँगा कि मुझे आपकी बात स्वीकार है।[1] यदि आप कहते है कि आप इसे बिल्कुल चाहते ही नही, तो इससे मै सहमत हूँ। लेकिन यह तो सवर्ण हिन्दुओका कर्त्तव्य है कि कहे, "हमारे मन्दिरोमे आइए, वे हमारी ही तरह आपके लिए भी खुले हुए है। यह बिलकुल आपकी मर्जीकी बात है कि आप प्रवेश करे या न करे। मन्दिर-प्रवेशके इस आन्दोलन-मे भाग लेनेके लिए मैं हरिजनोको निमन्त्रित नही करता। लेकिन अगर आप चाहे तो यह बता सकते है कि यह [अर्थात् मन्दिर-प्रवेश] भी आपका अधिकार है, भले ही आप उस अधिकारका उपयोग न करे। या आप इससे भिन्न रवैया अपना सकते है। यह बात सर्वथा आपके विचार करनेकी है। लेकिन जहाँतक मेरा सम्बन्ध है, यह तो केवल एक तरफा चीज है। यह सवर्ण हिन्दुओके लिए पश्चात्ताप करने और हृदय परिवर्तन करनेकी बात है। जिन स्थानोको आप अपना शरण-स्थान मानते है उनमे आनेका आपको हक है। आपको उतना ही हक है जितना किसी सवर्ण हिन्दूको है। इस अधिकारको मान्यता मिल जानेके बाद उसका उपयोग करना या न करना आपके हाथमे है।

मद्यपानकी बुराईके विषयमें गांधीजीने कहा कि दलित वर्गोंको सलाह देनेमें मैं सदा सतर्क और सावधान रहता हूँ।[2] मैं जानता हूँ कि यह बुराई अन्य जातियोंमें भी व्याप्त है। बात इतनी ही है कि हरिजनोको ऊपर उठनेके लिए संघर्ष करनेकी जरूरत है, और वे मद्यपान जैसी चीज नहीं कर सकते। उन्हें तो सीजरकी पत्नीकी भाँति दूसरोकी दृष्टिमें सन्देहसे परे होना है।

सवर्ण हिन्दू भले ही लाल शराबके तालाबोमे लोट-पोट लगाये। लेकिन आपको उससे दूर भागना चाहिए। तथापि मै आपकी भावनाओको चोट नही पहुँचाना चाहता। भद्र जन होनेके नाते आप इसका बुरा मान सकते है, लेकिन साधारण हरिजन जनता इसका बुरा नही मानती। आखिरकार आप जानते है कि मै हरिजनोको इस बुराईसे छुडानेके लिए सालहा-सालसे उनके बीच काम करता रहा हूँ। इसलिए मेरे विचारसे आपको मेरी आजादीपर प्रतिबन्ध लगानेकी कोशिश नही करनी चाहिए। आप मुझे सावधान कर सकते है, और मै उसे स्वीकार करता हूँ — मै ऐसी भाषाका प्रयोग करूँगा जिससे किसी व्यक्तिको ठेस न पहुँचे, और मै आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मै किसीको चोट पहुँचानेके खयालसे एक भी शब्द नही कहूँगा।

१. शिष्टमडलके सदस्योंने कहा था कि वे मन्दिर-प्रवेशके विरुद्ध नही हैं, किन्तु उनके लिए इस आन्दोलनमें सक्रिय भाग लेना वाछनीय नहीं है।

२. शिष्टमडलके सदस्योंने शिकायत की थी कि अनेक जातियोमें लोग शराब पीते है और अन्य बुराईयोंसे ग्रस्त हैं; लेकिन केवल दलित वर्गों पर ही इन आदतोंके लाछन लगाना अनुचित और अन्याय-पूर्ण है।

अन्तमे मै हरिजन नामको लेता हूँ। आप कहते है कि इसको चुननेमे दलित वर्गोकी राय नही ली गई। मुद्दा तो यह है कि उन्होने मुझसे राय ली थी। (हँसी।) मै भारतके सब स्थानोमे गया हूँ। मुझसे पूछा जाता है, "हमे हरिजन क्यो कहा जाता है?" वे कहते है कि उनका कोई और अच्छा नाम क्यो नही होना चाहिए। सामान्य रूपसे यही भावना होती है। वे कहते थे, "ईश्वरके लिए हमे कुली मत कहिए।" किसी समय इस शब्दका एक विशेष महत्व था। एक पूरी-की-पूरी जाति इसी नामसे पुकारी जाती थी। यदि इस शब्दका प्रयोग अब नही किया जाता तो इसका यह अर्थ नही कि कोई हृदय-परिवर्तन हो गया है। कानोको खटकनेवाला शब्द हटा दिया गया है। नये नाम ने भी यही किया है। जैसा कि मैंने कहा, यह मेरा गढा हुआ शब्द नही है। एक अस्पृश्यने मुझसे कहा कि वह नही चाहता कि किसी ऐसे नामसे उसे जाना जाये जो चिर-निन्दाका द्योतक हो। उसने बिलकुल ठीक ही कहा कि 'दलित' शब्द उसे गुलामीकी याद दिलाता है। मैंने कहा, मेरे पास कोई नाम सुझानेको नही है। क्या तुम सुझाओगे?" तब उस व्यक्तिने 'हरिजन' शब्द सुझाया। अपने समर्थनमे उसने गुजराती कवि नरसी मेहताको उद्धृत किया जिन्होने कि अपनी कविताओमे इस शब्दका प्रयोग किया है। मै इस सुझावपर उछल पडा। मुझे तमिलकी कहावत 'दिक्कात्रवरुक्कु दीवमे तुने' भी मालूम थी। क्या 'हरिजन' शब्द उसका भावानुवाद नही है? जो लोग अछूत है वे हरिके प्यारे होते है। दलित वर्गोके मामलेमे 'हरिजन' इसी भावका द्योतक है।

अपने पत्रके अन्तिम अनुच्छेदमे आपने मुझे जो प्रमाणपत्र दिया है वह जरा जल्दी दिया गया है।[१] उठाये गये मुद्दोके बारेमे मुझे जो कुछ कहना था उसे आप सबने सुना। हम सब उसी उद्देश्यकी प्राप्तिके लिए मिलजुलकर काम करेगे। मुझे विश्वास है कि ईश्वर हमारे साथ है, और इसलिए सफलता सुनिश्चित है। इसमे मुझे कोई शका नही है। मै जानता हूँ कि अस्पृश्यता मृतप्राय है। मेरी दृष्टिमे यह अस्पृश्यता-राक्षसी अभी भी साँस ले रही है, लेकिन यह उसकी अन्तिम साँसे है। (जोरसे करतल-ध्वनि।)

श्री श्रीनिवासन: मै ऐसी ही आशा करता हूँ।

हाँ, हम ईमानदारीसे ऐसी आशा कर सकते है।

[अग्रेजीसे]

हिन्दू, २३-१२-१९३३

१. शिष्टमडलके सदस्योंने गाधीजीको दलित वर्गोंके उद्धारके लिए यह अपूर्व आन्दोलन आरम्भ करनेके लिए धन्यवाद दिया था और कहा था कि इस आन्दोलनने सवर्ण हिन्दुओंको अस्पृश्यता-उन्मूलनके लिए जबर्दस्त प्रोत्साहन दिया है। उन्होंने यह कामना व्यक्त की थी कि गाधीजीका अनुष्ठान सफलतापूर्वक सम्पन्न होगा।

४०३. भेट : 'मद्रास मेल' के प्रतिनिधिको

मद्रास
२२ दिसम्बर, १९३३

गांधीजीने इस आशयका एक वक्तव्य[1] दिया था कि मैंने पडित जवाहरलालको इस बातका मुख्तारनामा दे दिया है कि वह मेरी तरफसे काग्रेस पार्टीके नेताके रूपमे काम करे। इस वक्तव्यके बारेमे प्रश्न किये जानेपर गाधीजीने कहा कि मैंने पडित जवाहरलालका जवाब देखा है और उसमे निहित इस अर्थको भी समझा है कि यह वक्तव्य देते समय मै मजाक कर रहा था।

यह बात पूरी तरह सही नही है। मेरे वक्तव्यकी एक गम्भीर पृष्ठभूमि है। फिलहाल राजनीतिका त्याग कर देनेके बाद और अपनी शक्तिको हिन्दू-धर्मसे अस्पृश्यताका निवारण करनेमे लगानेका निश्चय करनेके बाद मै काग्रेस पार्टीका सचालन नही कर सकता। यदि कोई व्यक्तिश किसी समस्याके बारेमे निजी तौरपर मुझसे अपनी राय देनेको कहे, तो मै अपनी निजी राय दे सकता हूँ, लेकिन मै नीतियोकी व्याख्या करने या उनपर चर्चा करनेकी स्थितिमे नही हूँ। यह पडित जवाहरलालका काम है। और उनके पूर्ण विवेकाधिकारमे दखल देनेकी मेरी कोई इच्छा नही है। इसलिए मैंने मुख्तारनामेकी बात कही है।

यह बात सभी जानते हैं कि पंडित जवाहरलालका साम्यवादकी ओर झुकाव है। क्या इसका अर्थ यह नही है कि उनके नेतृत्वमे कांग्रेसकी नीतिको साम्यवादी रंग दिया जायेगा?

नही, मै ऐसा नही मानता। जवाहरलाल बहुत ईमानदार व्यक्ति है और वह ऐसा नही कर सकते। मै नही मानता कि वह अपने सहयोगियोको पर्याप्त पूर्वसूचना दिये काग्रेसकी बुनियादी नीतिसे हटेगे। मै नही समझता कि जवाहरलालके अपने विचार इतने स्पष्ट बन चुके है कि उनके द्वारा काग्रेसकी नीतिमे कोई बुनियादी परिवर्तन किये जानेकी सम्भावना हो। समाजवादमे उनकी दृढ आस्था है, लेकिन समाजवादी सिद्धान्तको भारतीय दशाओमे किस प्रकार लागू किया जा सकता है, इसके बारेमे उनके विचार अभी भी अनिश्चयकी अवस्थामे है। इसलिए उनके साम्यवादी विचारोसे किसीको भयभीत होनेकी जरूरत नही है।

१. **हिन्दुस्तॉन टाइम्स,** १५-१२-१९३३ में प्रकाशित रिपोर्टके अनुसार दिल्लीमें १४ दिसम्बरको कार्यकर्ताओंके साथ अपनी चर्चाका समापन करते हुए गाधीजीने उपस्थित जनोंसे कहा कि मैने पडित जवाहरलाल नेहरूको मुख्तारी सौंप दी है और काग्रेस तथा अन्य बातोंके विषयमें प्रत्येक मसले पर आप लोग पडित जवाहरलालसे विचार-विमर्श किया करें।

जब गाधीजीका ध्यान इस ओर दिलाया गया कि साधारण जनसमूहसे यह आशा नहीं की जा सकती कि वह आदर्शोंकी चर्चा और अमुक मार्ग अपनानेके लिए स्पष्ट प्रोत्साहनके बीचका सूक्ष्म अन्तर समझ सके, तब उन्होंने स्वीकार किया कि इस बातका खतरा बराबर है कि जनताकी भीड़ किसी वक्ताके उद्देश्यको समझनेमे गलती कर बैठे, लेकिन उन्होंने कहा कि जवाहरलालका इरादा जनताको उकसाने या भड़कानेका नहीं है।

इसके बाद बात चली कि साम्यवादी लोग बड़ी-बड़ी सम्पदाओंका जो विरोध करते है, उससे जवाहरलाल भी स्पष्टतः सहमत है।

मेरी रायमे भूमिको टुकडे-टुकडे करके उसका बँटवारा नही किया जाना चाहिए। यदि बडे-बडे पुश्तैनी जमीदारोका प्रभाव पूरी तरह नष्ट कर दिया जायेगा तो यह बहुत हानिकारक सिद्ध होगा। लेकिन यह मै जरूर मानता हूँ कि वास्तविक काश्तकारका जमीनपर हक होना चाहिए और पैदावारमे अपेक्षाकृत अधिक हिस्सा उसे मिलना चाहिए। इस समय बहुत-सी जगह उसे बहुत कम हिस्सा मिलता है। उसे न्यायोचित हिस्सा मिलना चाहिए, सिर्फ गुजारे लायक हिस्सा नही।

देशके विभिन्न भागोमें भूमि-आन्दोलनोकी चर्चा करते हुए गांधीजीने कहा :

सरकार कुछ भी करे, लेकिन यह जबर्दस्त जागृति अब समाप्त होनेवाली नही है। यह स्थायी है। मै जिस चीजसे सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ हूँ वह यह है कि इस आन्दोलनके सिलसिलेमे इतनी कम हिंसा हुई है, और इसमे अनजानेमे अहिसाकी प्रभावकारिता ही व्यक्त हुई है।

यह पूछे जानेपर कि क्या आपने इस बातका विचार किया है कि हालके भूमि-सम्बन्धी कानूनके फलस्वरूप जमींदारों और काश्तकारोके बीच साहूकार और दलाल लोगोके रूपमें बिचौलियोके पैदा हो जानेका खतरा है, श्री गांधीने कहा :

यदि जमीन बिचौलियाके हाथ चली गई तो यह बडे दु खकी बात होगी। हमे वास्तविक काश्तकारके हितोकी रक्षा करनी चाहिए, काश्तकारसे मेरा मतलब उससे है जो खुद जमीन जोतता है। वह भले ही अपनी मददके लिए बहुत से मजदूरोको नौकर रखता हो, लेकिन यदि वह स्वय भी अपनी जमीनपर काम करता है तो वह काश्तकारकी मेरी परिभाषापर पूरा उतरता है।

बातचीत अब हरिजन आन्दोलनकी ओर मुड़ गई है। श्री गाधीजीने अपना पहलेका यह कथन दोहराया कि यह आन्दोलन राजनीतिक आन्दोलन नहीं है।

मेरा हरिजन-कार्य बिलकुल धार्मिक कार्य है। इसके पीछे कोई राजनीतिक उद्देश्य नही है और यह मूलत एक लोकोपकारी कार्य है। यह किसी भी अर्थमे राजनीतिक कार्य नही है।

लेकिन अब इस बातसे इनकार नहीं कर सकते कि हरिजन-आन्दोलनके राजनीतिक परिणाम भी अवश्य होंगे।

यह सच है। मै यह अवश्य कहता हूँ कि हालाँकि ऐसे राजनीतिक परिणाम इस आन्दोलनके उप-फल होगे, लेकिन वे परिणाम इस आन्दोलनके उद्देश्य नही हैं। किसी भी धार्मिक आन्दोलनका जीवनके अन्य क्षेत्रोपर प्रभाव अवश्य पडेगा, क्योकि व्यापक अर्थमे धर्म जीवनके सभी विभागोका सचालन करता है।

श्री गाधीने स्वीकार किया कि इस आन्दोलनका राजनीतिक लाभ उठाया जा सकता है। उन्होने कहा कि सर एन० एन० सरकार द्वारा हाल में किये गये इस दावेकी मुझे जानकारी है कि इस आन्दोलनका उद्देश्य अन्य अल्पसख्यक जातियोके मुकाबले हिन्दू-समाजको संगठित करना है, लेकिन मै जोरदार शब्दोमें इस बातसे इनकार करता हूँ कि मेरा ऐसा कोई उद्देश्य है। वस्तुतः मै इस मामलेमें हिन्दू महासभासे असहमत हूँ।

हिन्दू महासभाकी गतिविधियाँ मूलत साम्प्रदायिकतापूर्ण है और उनका उद्देश्य अन्य जातियोके मुकाबले हिन्दुओके हितोको आगे बढाना है। हरिजन आन्दोलनमे साम्प्रदायिकताकी कोई भावना नही है। इसका उद्देश्य हिन्दू-धर्ममे आन्तरिक सुधार करना है और ऊँच-नीचके कृत्रिम भेदोको दूर करना है। सवर्ण हिन्दुओको धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक मामलोमे जो अधिकार प्राप्त है वे ही अधिकार हरिजनो को दिलानेके लिए मै लड रहा हूँ। मेरा उद्देश्य कोई हिन्दू मतदाताओकी सख्या बढानेका नही है। एक आदमीके लिए जिस हद तक सम्भव है, उस हद तक मै इस आन्दोलनको राजनीतिसे मुक्त रखनेकी कोशिश कर रहा हूँ।

संवाददाताने इस बातकी चर्चा की कि मुसलमान, ईसाई आदि अल्पसख्यक जातियोके बहुतसे सदस्य ऐसा मानते है कि श्री गांधीका उद्देश्य भले ही कुछ और हो, लेकिन इस आन्दोलनका राजनीतिक प्रभाव, तथा अन्य लोगोंका इसके पीछे राज-नीतिक उद्देश्य सभी अल्पसंख्यक जातियोके ऊपर संख्याबलके आधारपर एक संगठित हिन्दू बहुमतकी प्रधानता स्थापित करना है। इसपर गांधीजीने इस आन्दोलनको राजनीतिसे सर्वथा मुक्त रखनेके अपने निश्चयको दोहराया और कहा :

मै ईसाइयो, मुसलमानो तथा अन्य जातियोको एक अविभाज्य राष्ट्रके रूपमे सगठित करना चाहता हूँ जिनके हित समान हो। तब अल्पसख्यक जातियाँ अपनेको अल्पसख्यक अनुभव नही करेगी। अस्पृश्यता समाप्त हो जानेपर वह बाधा दूर हो जायेगी जिसके कारण हिन्दू तथा अल्पसख्यक जातियोमें निकट सम्बन्ध नही स्थापित हो पाते, और इस बाधाके हटते ही उद्देश्य और हितोकी एक नई एकता उत्पन्न होगी। हरिजन आन्दोलन किसी भी दृष्टिसे अकेले हरिजनोसे सम्बन्धित आन्दोलन ही नही है। इसका उद्देश्य प्रत्येक प्रकारकी अस्पृश्यताको समाप्त करना है।

श्री गाधीका ध्यान जब डॉ० मुंजेके हालके इस कथनकी ओर दिलाया गया कि हिन्दू धर्ममें मुसलमान, ईसाई, पारसी आदि सभी लोग आ जाते है, तो उन्होंने कहा :

डॉ० मुजेका उद्देश्य मेरे उद्देश्य से बहुत भिन्न है। वह और उनके समर्थक विधान-सभामे सीटोकी सख्याके ऊपर तकरार कर रहे हैं। उनका आन्दोलन केवल राजनीतिक है, मेरा गैर-राजनीतिक है।

यह पूछे जानेपर कि आपके कुछ प्रमुख अनुयायी मन्दिर-प्रवेशके मामलेमें जो धमकाने-डरानेकी नीति अपना रहे हैं, क्या आप उसका समर्थन करते है, श्री गांधीने जोर देकर कहा :

यदि कोई व्यक्ति हरिजन आन्दोलनमे बल-प्रयोग करता है तो वह मेरी इच्छाके विरुद्ध कार्य करता है। मै आन्दोलनको नीचे स्तरपर गिरनेसे रोकनेकी कोशिश करता हूँ, लेकिन किसी भी आन्दोलनमे कुछ कठिन लोग होते है। जहाँतक मेरा सवाल है, जबतक सन्तुष्ट न हो जाऊँ कि अमुक मन्दिरको हरिजनोके लिए खोलनेके लिए सामान्य तौरपर लोग राजी है तबतक मै उसे नही खोलता। अभी हाल ही मे मैंने एक मन्दिरको खोलनेसे इनकार कर दिया क्योकि न्यासियोमे इस सवालपर तीव्र मतभेद जान पडता था। मै केवल उन्ही मन्दिरोको खोलनेपर सहमति दूंगा जिसमे वास्तवमे पूजाके लिए जानेवाले दर्शनार्थियो और उस मन्दिरके न्यासियोका बहुत बडा बहुमत हरिजनोके मन्दिर-प्रवेशके पक्षमे हो।

विधान-सभाके सामने इस समय जो विधेयक पेश है, उनके बारेमे गांधीजीकी राय पूछे जानेपर उन्होने कहा कि इन विधेयकोका उद्देश्य मन्दिरोंके न्यासियो और मन्दिरमे जानेवाली जनताको इस बातकी स्वतन्त्रता प्रदान करना है कि वे यदि चाहे तो मन्दिरोको हरिजनोके लिए खोल सके। अभी तो अदालती निर्णयोके कारण उनके हाथ बँधे हुए हैं।

हिन्दू-धर्मको अगर हमने इन बन्धनोसे मुक्त नही किया तो उसमे सडाध आ जायेगी और वह नष्ट हो जायेगा।

अगर हम हिन्दू-धर्मसे अस्पृश्यताका समूल नाश नही कर सके तो हिन्दू-धर्म खत्म हो जायेगा, वह इसी योग्य होगा कि नष्ट हो जाये, और उसके खत्म होनेका मुझको कोई दुख नही होगा। अस्पृश्यताको खत्म होना ही चाहिए। यूरोपीयोसे मुझे यह बात कहनी है "शासक वर्गके सदस्योकी हैसियतसे नही बल्कि स्वतन्त्र नागरिकोके रूपमे आइए और हमारे साथ काम कीजिए।"

श्री गांधीने कहा कि मद्रासने मेरा जिस उत्साहसे स्वागत किया है, बुधवारकी शामको ट्रिप्लीकेन बीच पर जितनी बड़ी संख्यामें लोग इकट्ठे हुए थे, उसे देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया।

मुझे मच तक पहुँचनेमे ३० मिनट लगे और मचसे वापस कारतक लौटनेमे ४५ मिनट लगे। वहाँ लगभग एक लाख लोग थे और यह देखकर खुशी होती थी कि हरिजन और सवर्ण लोग किस प्रकार वहाँ आपसमे मिल गये थे। यह चीज कुछ साल पहले नही हो सकती थी। अस्पृश्यता जा रही है।[1]

[अग्रेजीसे]

मद्रास मेल, २२-१२-१९३३

१. इस रिपोर्टकी एक कतरन जवाहरलाल नेहरूको भेजे गये २६-१२-१९३३ के पत्रके साथ सलग्न की गई थी।

४०४. भेंट : "हिन्दू" के प्रतिनिधिसे[1]

मद्रास
२२ दिसम्बर, १९३३

हमेशाकी तरह मै जहाँ भी गया हूँ मुझे लोगोसे प्रगाढ प्रेमके सिवा कुछ नही मिला है। लेकिन मै स्वीकार करता हूँ कि ट्रिप्लीकेन बीच पर जनताने उत्साहका जो प्रदर्शन किया और अनेक श्रमिक क्षेत्रोमे जानेपर वहाँ जैसा उत्साह मैने देखा उसके लिए मै तैयार नही था। इन अवसरोपर जितनी बडी सख्यामे लोग इकट्ठे हुए उतनी बडी तादादमे इससे पहले कभी नही हुए थे।

यह सही है कि इन जोरदार प्रदर्शनोके लिए काफी हद तक लोगोका मेरे प्रति प्रेम और उनका मुझसे लगाव ही जिम्मेवार था, लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि मुझसे लिपटा हुआ दिखनेवाला विशाल जन-समूह पूरी तरह समझता था कि मै किस चीजके लिए खडा हूँ और किस लिए आया हूँ, और उसकी कद्र करता था। यदि अस्पृश्यता-विरोधी आन्दोलनके प्रति उनकी धार्मिक भावनाने विद्रोह किया होता, तो उनका प्रेम मैने पूरी तरह खोया भले न होता, तो भी उनका उत्साह-प्रदर्शन उतना उन्मुक्त और निर्बाध न होता और उनका रुख मेरी तरफ बिलकुल ठडा न भी होता तो भी उन्होने प्रेम-प्रदर्शनमे सयम तो जरूर बरता होता। भीडकी सामान्य चेष्टाओ और आँखोके भावको एक ही निगाहमे देखकर उसके मनको पढ सकनेका मै अभ्यस्त हूँ। अस्पृश्यताके सिलसिलेमे मै जो-कुछ कर रहा हूँ उसकी अस्वीकृतिका लवलेशमात्र भी मै इन लोगोके मुखपर नही देख पाया। जब मैने लोगोसे चन्दे देनेको कहा तो जिस प्रकार वे आगे आये वह भी महत्वपूर्ण था और मैने अपनी जो धारणा आपको बताई है, वह उससे पुष्ट ही हुई। इसलिए मेरे मनमे भविष्यके प्रति आशा भरी हुई है।

मुझे लगता है कि दक्षिणमे भी अस्पृश्यताकी जडे हिल गई है। मै अपने सनातनी मित्रोसे कहना चाहूँगा कि उनकी भावनाओको चोट पहुँचानेकी मेरी तनिक भी इच्छा नही है। मै चाहता हूँ कि मै उनके साथ अमुक मुद्दोपर सहमत हो सकूँ और मै जानता हूँ कि ऐसे बहुत सारे मुद्दे है। जिन बातोपर हमारे मतभेद है, वे बहुत थोडी-सी है। यदि उनके प्रति मेरे रुखसे तात्कालिक समझौता न भी हो सके तो भी मै जानता हूँ कि यदि मै धीरज रखूँ तो समय यह समझौता करा देगा, और मै मानता हूँ कि धीरज मुझमे है।

एक शब्द मै पुलिसके व्यवहारके बारेमे कहना चाहूँगा। आजका दिन उनके लिए सचमुच बहुत ही कठिन दिन था क्योकि मुझे जॉर्ज टाउनके व्यापारिक इलाकोसे

१. यह भेंट गांधीजीने मद्रासले रवाना होनेकी पूर्व-सध्याको दी थी।

गुजरना था। मुझे यह कह सकनेकी खुशी है कि पुलिस का व्यवहार मैत्रीपूर्ण और सहायतापूर्ण था। पुलिसवाले एक तरहसे जनताका ही एक हिस्सा बन गये थे और बडे ही अच्छे ढगसे उसे सम्भाल रहे थे। इस मित्रता-प्रदर्शनके लिए मै उनका आभारी हूँ।

[अग्रेजीसे]

हिन्दू, २३-१२-१९३३

४०५. सन्देश : तमिल-प्रेमी सम्मेलनमे

२२ दिसम्बर, १९३३

मै आशा करता हूँ तमिल भाषा प्रेमियोका प्रेम चिरस्थायी होगा और प्रतिकूलसे प्रतिकूल स्थितियोमे भी वह बना रहेगा। तमिल भाषाकी मुझे जो सतही जानकारी है, उसपरसे मै यह जान सका हूँ कि वह कितनी सुन्दर और समृद्ध भाषा है। इसकी उपेक्षा करना मेरे विचारसे अपराध होगा।

मो० क० गांधी[1]

[अग्रेजीसे]

हिन्दू, २३-१२-१९३३, सी० डब्ल्यू० ९६९९ से भी। सौजन्य मद्रासलायब्रेरी एसोसिएशन

४०६. भाषण : गुंटूरमे[2]

२३ दिसम्बर, १९३३

भाइयो और बहनो,

गुटूर मेरे लिए कोई नई जगह नही है। आपने जो मानपत्र और थैली मुझे दी है उसके लिए मै आपको धन्यवाद देता हूँ। गुटूरके वकीलोने १४५ रुपयेका चन्दा दिया है। मै स्वय एक समय वकील था। मै कहता हूँ कि मै वकीलोसे इतनी छोटी रकम स्वीकार नही कर सकता। वे इतने गरीब नही है। इसपरसे मै समझता हूँ कि गुटूरके वकीलोने हरिजन-कार्यमे कोई दिलचस्पी नही ली है। १४५ रुपयेकी यह रकम अकेला एक वकील दे सकता है। मै उनसे पूछता हूँ "आप क्या करने जा रहे है?" मै गुटूरके वकीलोको जानता हूँ। इसीलिए मै उनसे ऐसा कह रहा हूँ। पिछली

१. हस्ताक्षर तमिल लिपिमें हैं।

२ गाधीजीने अपना भाषण हिन्दीमें दिया था, और इसका तेलुगुमें अनुवाद श्री कोंडा वेंकटप्पैयाने किया था।

बार जब मै यहाँ आया था तब उन्होने मुझे थैली भर रुपये दिये थे। सब दिन एक समान नही होते। उस समय रुपयेकी बहुतायत थी, अब उसकी कुछ तगी है।

मैंने अभी-अभी तिलकपेटमे श्री पुन्नारावका गुरुनाथेश्वर मन्दिर देखा है। मन्दिर में प्रतिष्ठित देवताका जो नाम रखा गया है उसके कारण मन्दिर अलोकप्रिय हो गया है क्योकि देवताका नाम श्री पुन्नारावके चाचाके नामपर रखा गया है। सच देखा जाये तो 'गुरुनाथेश्वर' नाममे कुछ गलत नही है, हालाँकि 'गुरुनाथ' नाम गलत हो सकता है। मेरी रायमे किसी मनुष्यकी स्मृतिको चिरस्थायी बनानेके लिए ईश्वरका कोई नाम नही रखना चाहिए। यह उचित नही है कि दानके साथ दान-कर्त्ताका नाम जोडा जाये। यह मेरी निजी राय है। ईश्वरके नामसे वास्तवमे कोई फर्क नही पडना चाहिए। स्वर्गीय श्री गुरुनाथम्के भाईके पुत्र श्री पुन्नारावने मुझे बताया कि उन्हे देवताका नाम बदलनेमे कोई आपत्ति नही है। अब आगेसे देवताको "गौरी विश्वेश्वर" कहा जायेगा। जिस कागजपर नया नाम लिखा गया है उसपर मैंने हस्ताक्षर कर दिये है।

श्री पुन्नाराव मन्दिरको हरिजनोके लिए खोलना चाहते है। लेकिन मैंने उन्हे अभी ऐसा न करनेको कहा है, कारण, इसमे जो अनोखी परिस्थिति है उसमे मन्दिर-प्रवेश और नाम-परिवर्तन, ये दोनो चीजे एक ही समय और एक साथ करना वाछ-नीय नही है। किसी भी मन्दिरको हरिजनोके लिए खोलनेके मै विरुद्ध नही हूँ। लेकिन मै बाध्य किये जानेके विरुद्ध हूँ। जब भक्त और न्यासी लोग राजी हो तभी मन्दिरको हरिजनोके लिए खोलना चाहिए। अब चूँकि मन्दिरके देवताका नाम वदल दिया गया है, इसलिए न्यासी लोग और मै यह देखनेको उत्सुक है कि आपमेसे कितने लोग मन्दिरमे जाते है। आजसे तीन महीने बाद, अर्थात् आगामी २३ मार्चको यह मन्दिर हरिजनोके लिए खोल दिया जायेगा। जबतक लोकमत इसका समर्थन न करे तबतक मन्दिर नही खोला जा सकता। यदि लोकमत इसका समर्थन करेगा तो अगले २३ मार्चको मन्दिर खोल दिया जायेगा, और उस समय तक यह प्रश्न तय हो चुकेगा। मै आशा करता हूँ कि अब आगेसे आप इस मन्दिरमे जाने लगेगे और आगामी २३ मार्चको उसमे हरिजनोका प्रवेश होते देखेगे।

यदि सवर्ण लोग हरिजनोके साथ न्याय नही करते तो हिन्दू धर्म नष्ट हो जायेगा। कोई धर्म किन्ही बाहरी कारणोसे कभी नही नष्ट होता। उसे नष्ट करनेकी शक्ति किसीमे नही है। लेकिन यदि किसी धर्मके माननेवाले अधर्मके पथपर चलेगे तो उनका धर्म नष्ट हो जायेगा।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २४-१२-१९३३

४०७. भाषण : थल्लापलम्की हरिजन-सभामें

२३ दिसम्बर, १९३३

मुझे यहाँ आ सकनेकी बहुत खुशी है। लेकिन मैं यह भी आपसे कहूँगा कि मुझे बहुत परेशानी भी हुई है। यहाँतक की सडकपर मोटर मेरे मन-मुताबिक गतिसे नही चल सकी। इसलिए ज्यादातर रास्ता मुझे पैदल चलना पडा। पैदल चलनेमे कोई परेशानी की बात नही है। लेकिन तथ्य यह है कि मेरे पास समय बिलकुल नही था, लेकिन फिर भी मुझे यहाँ आना पडा है। वादा कर चुकनेके बाद मुझे उस वादेको पूरा करना है।

डोरी काटकर मैंने हरिजन आयुर्वेदिक कुटीरम्का उद्घाटन सम्पन्न किया है। मुझे आशा है कि इस स्थानके इर्द-गिर्द रहनेवाले लोगोकी बीमारियाँ ठीक करनेके लिए यह एक उपयुक्त सस्था बनेगी। हालाँकि इस समारोहके आयोजकोकी कृपासे मानपत्र आपके सामने नही पढा गया, लेकिन मैंने उसे पढ लिया है। मानपत्रमे आपकी वर्तमान गतिविधियोका, और कुछ हद तक आपकी भावी आशाओका विवरण दिया गया है। मेरी हार्दिक कामना है कि आपकी भावी आशाएँ पूर्ण हो, लेकिन एक कार्यकर्त्ताके रूपमे अपने ५० वर्षके अनुभवके आधारपर मैं सावधानीके कुछ शब्द कहना चाहता हूँ।

आपका कार्यक्रम बहुत ऊँचे उद्देश्योको लेकर बनाया गया है और यदि आपके कार्यक्रमके प्रबन्धक या न्यासी सदा सतर्क, उद्यमशील, ईमानदार और सर्वथा निर्दोष चरित्रवाले लोग है तो सम्भव है कि आप इस कार्यक्रमको लागू कर सके। किन्तु यदि सतर्कता, सावधानी, ईमानदारी और योग्यताका अभाव रहा तो मैं विश्वास दिलाता हूँ कि आपके कार्यक्रमका एक मुद्दा भी पूरा नही होगा। जहाँतक मेरा सवाल है, मैं हरिजन-सेवक सघसे अपील करूँगा कि आप जितना कुछ काम करे उसीके बराबरकी सहायता वह भी आपको दे। मैं हरिजन सेवक सघकी ओरसे यह वादा कर सकता हूँ कि यदि आप कोई ऐसी व्यावहारिक योजना तैयार कर सके और ऐसे चरित्रवान् व्यक्ति पैदा कर सके जो हरिजन सेवक सघको सन्तुष्ट कर दे, और यदि आप समय-समय पर हिसाब-किताबका विवरण प्रस्तुत करे जिसकी जाँच हरिजन-सेवक सघ कर सके तो निश्चय ही हरिजन सेवक सघ आपको आर्थिक सहायता देगा। इसलिए यदि आपको हरिजन सेवक सघसे सहायता नही मिलती तो उसका दोष आपपर होगा, हरिजन सेवक सघ पर नही। लेकिन मैंने जो शर्तें सुझाई है, उन्हे यदि आप पूरी करेगे तो आप हरिजन सेवक संघसे सहायता प्राप्त कर सकेगे। हरिजन सेवक सघके पिछले इतिहास पर से मैं जहाँतक जान सका हूँ वह यह है कि हरिजन सेवक सघ अपने वादेसे कभी मुकरा नही है।

हरिजन सेवक सघके पास आपकी जरूरते पूरी करने भरको काफी धन है।

यहाँ उपस्थित लोगोसे अपील करूँगा कि आपके बीच जो भी सस्थाएँ खडी हो, आप उनका हर उचित ढँगसे उपयोग करे। मै सुनना चाहता हूँ कि यहाँ और सब जगह हरिजन सस्थाओकी स्थापना हो रही है। हरिजन सेवक सघका उद्देश्य आपके कार्यका स्थान लेना नही है बल्कि आपके प्रयत्नोमे अपना योग प्रदान करनेका है। यदि हरिजन सेवक सघ हरिजनोकी उचित प्रकारसे सेवा कर सके तो अपना औचित्य सिद्ध कर चुकेगा। इसलिए आप आसानीसे समझ सकते है कि हरिजन सेवक सघकी कीर्ति पूरी तरह आपके हाथोमे है और आपके समर्थनपर निर्भर करती है।

एक चीज मै और कहना चाहूँगा और यह वही बात है जिसे मै हर जगह दोहराता रहा हूँ। वह यह है। शुद्धीकरणके इस आन्दोलनमे हरिजनोको सम्मानजनक और मूल्यवान भूमिका अदा करनी होगी। मै फिर कहता हूँ कि यदि पहले ही से न कर रहे हो तो अब आगेसे आप सब लोग सफाई और स्वच्छताके नियमोका पालन करे। इसका यह अर्थ नही है कि सभी सवर्ण हिन्दू स्वच्छता और सफाईके वातावरणमे रह रहे है। मै स्वेच्छासे अपनेको हरिजन मानता हूँ और इस नाते मै आपसे कहता हूँ कि आप इन चीजोसे ऊपर उठे और अपनेको शुद्ध बनाये। इस बात पर ध्यान न दे कि सवर्ण हिन्दू क्या करते है या वे क्या है। इसी प्रकार यदि कोई हरिजन ऐसे हो जो मुर्दा पशुका मास और गोमास खाते हो तो मै उनसे कहूँगा कि वे इस आदतको छोड दे, और यदि उन्होने इन चीजोको कभी छुआ भी न हो तो मै उनसे कहूँगा कि वे स्वयसेवकोकी भाँति इन आदतोके विरुद्ध प्रचारका काम करे। इसके बाद शराबका अभिशाप आता है। यदि आप लोगोको या आपमेसे कुछ लोगोको शराबकी लत है तो आप इसे छोड दीजिए क्योकि शराब एक जहर है। बहुतसे सवर्ण हिन्दू भी शराब पीते है, इसी कारण आप भी उसे पिये, ऐसा नही होना चाहिए। आप सवर्ण हिन्दुओके साथ ऊपर तैरना चाहते है, उनके साथ डूबना तो नही चाहते, और आपकी भुजाओमे ताकत होगी और आप अच्छी तरह तैर सकते होगे तो सवर्ण हिन्दू भी ऊपर उठेगे, मै यह निश्चयपूर्वक जानता हूँ कि निकट भविष्यमे ही वह समय आ रहा है जब, आज सवर्ण हिन्दू जिस दलदलमे धँसते जा रहे है, उसमेसे उन्हे निकालनेमे हरिजन लोग सहायक हो सकेगे। इसलिए मै चाहता हूँ कि प्रत्येक हरिजन पूर्ण आत्म-विश्वासके साथ काम करे।

सवर्ण हिन्दुओसे मै एक शब्द कहना चाहता हूँ। यदि आप ऊँच-नीचके सारे भेद नही छोडेगे, अपने दिलसे अस्पृश्यताको बिलकुल नही निकाल देगे तो आप और मै और हिन्दू जाति नष्ट हो जायेगी। हजारो आदमी भले ही इससे भिन्न बात कहे, लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप मेरी बातका विश्वास करे। मै जो-कुछ कह रहा हूँ वह गहरे अनुभवपर आधारित है।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, २४-१२-१९३३

४०८. पी० एम० रावको प्रमाणपत्र

२३ दिसम्बर, १९३३

गुन्टूर जिलेके मेरे पूरे दिनके दौरेमे श्री पूवदा मृत्युजय रावने मेरा बहुत ध्यान रखा।[1]

मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९७५५) से। सौजन्य १९६९-७०मे दिल्लीमे हुई गाधी दर्शन प्रदर्शनीका आन्ध्र पैविलियन

४०९. भाषण : पेड्डापुरममें

२४ दिसम्बर, १९३३

दोस्तो,

मुझे सभास्थल पर पहुँचनेके लिए सीधा रास्ता मिले, इसके लिए आपने जो अत्यन्त सहारनीय प्रबन्ध किए, उसके लिए मै आपको बधाई देता हूँ। आप समझ सकते है कि मुझमे इतनी शक्ति नही है कि भीडमेसे अपना रास्ता बना सकूं। इसलिए मेरे लिए यह बहुत स्फूर्तिदायक अनुभव था। मुझे धक्कामुक्की करता हुए भीडसे होकर रास्ता नही बनाना पडा। आपने अभी-अभी मुझे जो अनेक मानपत्र और एक थैली भेट की है, उसके लिए मै आपको धन्यवाद देता हूँ और आपने उन मानपत्रोको पढकर न सुनानेमे जिस आत्मसंयमका परिचय दिया है उसके लिए भी मै आपका शुक्रगुजार हूँ।

आप जानते ही है कि मेरी इस यात्राका क्या उद्देश्य है। मै चाहता हूँ कि आप अस्पृश्यताके इस अभिशापको दूर करनेके मेरे कार्यमे मेरी सहायता करे। मै चाहता हूँ कि आप पूरे दिलसे इस कार्यमे मेरे साथ हो जाये और ऐसो भी इस विश्वासके साथ कि आज हमारे बीच अस्पृश्यता जिस रूपमे प्रचलित है, धर्म उसकी इजाजत नही दे सकता। यह विचार मात्र ही घृण्य है कि एक भी मनुष्य जन्मत अस्पृश्य हो सकता है। आजकी परिस्थितियोके हम इतने निकट है कि देख ही नही सकते कि इस भारी अभिशापके बोझके नीचे हिन्दू धर्म छिन्न-भिन्न हुआ जा रहा है, और जो बात मै हजारो मचोसे बराबर कह चुका हूँ उसे मै यहाँ फिर दोहराता हूँ कि यदि अस्पृश्यताको दूर नही किया गया तो हिन्दू-धर्म नष्ट हो जाएगा। इसलिए

[1] गांधीजीने २३ दिसम्बरको कारसे गुटूर जिलेका एक दिनमें दौरा कर डाला था।

मेरे हृदयको तब बहुत खुशी होती है जब मै देखता हूँ कि इस सभामे इतनी बडी सख्यामे लोग शामिल हुए है और अपने पैसे दे रहे है। लेकिन अस्पृश्यताकी इस समस्या पर ज्यादा बोलकर मुझे आपका और अपना समय व्यर्थ नही खोना चाहिए।

आज मेरे सामने दिनभरके लिए काफी भारी कार्यक्रम है। इसलिए अपने भाषणके अन्तमे मै अत्यन्त सुन्दर प्रबन्धके लिए, मानपत्रो और थैलीके लिए आपको एक बार फिरसे धन्यवाद देता हूँ और ईश्वरसे प्रार्थना करता हूँ कि वह हमे शुद्धीकरणकी इस प्रक्रियासे होकर गुजरनेके लिए पर्याप्त शक्ति दे

और अब जिन फ्रेमोमे मानपत्र लगाकर मुझे दिए गए है उन फ्रेमोकी बिक्रीमे मै कुछ चन्द मिनट देना चाहूँगा और यह चाहूँगा कि उपस्थित बहने अपने जेवर आभूषण आदिका त्याग कर दे। यदि आपमेसे किसी व्यक्तिने थैलीमे अपना अशदान न दिया हो और यदि वह अब देना चाहता हो तो कृपापूर्वक दे दे। लेकिन अब तो ये दोनो फ्रेम क्षतिग्रस्त हो गए है। इनके शीशे टूट गए है। इससे लोगोको यह सबक सीखना चाहिए कि मुझे फ्रेमोमे मढे हुए मानपत्र न दिए जाये। मै जानता हूँ कि आन्ध्र प्रदेश भारतका एक कलात्मक प्रदेश है। इसलिए आपको चाहिए कि आप जो मानपत्र भेट करे वे किसी कलात्मक और सादे ढँगसे मढे हुए हो।

[अग्रेजीसे]

हिन्दू, २५-१२-१९३३

४१०. भाषण : गोल्लापलममे

२४ दिसम्बर, १९३३

मैने सबसे पहले दक्षिण आफ्रिकामे गिरमिटिया मजदूरोसे एक-एक पाईकी भीख माँगना सीखा। ऐसे छोटे-छोटे चन्दोमे हमेशा दाताका आशीर्वाद भी जुडा रहता है। मुझे एक भी ऐसी घटना याद नही आती जब किसी स्त्री अथवा पुरुषको मुझे पैसा देनेका पछतावा हुआ हो। जिन उद्देश्योको लेकर मैने भीख माँगी वे उद्देश्य अच्छे थे। और हरिजन उद्देश्य, जिसके लिए मै अब लोगोसे भीख माँगता हूँ, नि सन्देह आज तकके मेरे उद्देश्योमे सर्वश्रेष्ठ है। अब मै सवर्ण हिन्दुओसे प्रार्थना करता हूँ कि वे शुद्धीकरण और पश्चात्तापके इस आन्दोलनमे भाग ले। कोई भी सवर्ण हिन्दू हरिजनोके लिए जो थोडा-बहुत कार्य करता है उससे वह स्वय ऊपर उठता है और हिन्दू-धर्मको भी ऊँचा उठाता है।

[अग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, २७-१२-१९३३

४११. भाषण : रामचन्द्रपुरम्में

२४ दिसम्बर, १९३३

आपने मुझे जो मानपत्र[1] और थैली भेट की है, उसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। लेकिन आपने मुझे जितना धन दिया है उससे मुझे सन्तोष नही है। मैं और ज्यादाकी अपेक्षा करता हूँ। अब मुझे दिये गये दो मानपत्रोको मैं नीलाम कर रहा हूँ।[2]

आपने इस सभाके लिए जो अत्यन्त उत्तम प्रबन्ध किया है, उसके लिए मैं आपको बधाई देता हूँ। इस स्थानको प्रकृतिने अपनी निधियाँ मुक्त-हस्तसे दी हैं, और चीजोको सुन्दर बनाना प्रकृतिका एक विशेष गुण है। ईश्वरकी कृपासे आपने प्रकृतिके सौन्दर्यको बिगाडा नही है बल्कि अक्षुण्ण बनाये रखा है। आप सब लोग जानते है कि आपके यहाँ एक आश्रम है जिसे वाल्मीकि आश्रम कहते हैं। मैं अभी-अभी उस आश्रममे गया था। वहाँ हरिजन बच्चोको आश्रय प्रदान किया जाता है। मुझे इन बच्चोने भजन और कीर्तन गाकर सुनाया। मैं उन बच्चोसे बहुत प्रभावित हुआ। उन्होने मुझे एक सुन्दर मानपत्र भेट किया है जिसमे उन्होने आपकी सहायता माँगी है। आश्रमको आपकी — आप सबकी — सहायताकी आवश्यकता है, तालुकके लोग जो सहायता उसे देते हैं, उस सब सहायताके वह योग्य है।

प्रकृतिने सब मनुष्योको समान बनाया है। लेकिन मनुष्यने अपने दम्भमे कुछ लोगोको ऊँचा और कुछको नीचा बताकर द्वेषजनक भेदभाव पैदा कर दिये है। ईश्वर इन असमानताओको नही मानता। आप प्रकृतिमे कही भी देखे और किसी भी चीज-को देखे, लेकिन मनुष्यने जैसी असमानता पैदा कर दी है, वैसी असमानता आपको प्रकृतिमे कही नही दिखाई पडेगी। इसलिए जबतक आप अस्पृश्यताकी बुराईको समाप्त नही करते तबतक आप समानता, जो कि प्रकृतिका नियम है, नही स्थापित कर सकते। मैं आपसे कहता हूँ कि मेरे साथ ईश्वरसे प्रार्थना कीजिए कि वह आपको अस्पृश्यताका यह अभिशाप बिलकुल समाप्त कर सकनेकी शक्ति और साहस प्रदान करे। मैं आपको ज्यादा देर रोकना नही चाहता। यदि आप महिलाओके बीचसे कुछ और धन इकट्ठा करनेमे सफल हो, तो कृपया उसे मेरे पास ले आये।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, २६-१२-१९३३

१ ये मानपत्र रामचन्द्रपुरम् ताल्लुका बोर्ड और हिन्दी प्रेमी मण्डली द्वारा भेंट किये गये थे।

२ नीलामीके बाद गांधीजीने अंग्रेजीमें भाषण दिया जिसका तेलुगु श्री बुलुसु साम्बमूर्तिने अनुवाद किया।

४१२. भाषण : राजमुंदरीमे[1]

२४ दिसम्बर, १९३३

मै आपसे अनुरोध करूँगा कि आप कृपा करके कुछ क्षण मेरी बात सुने। इन सब मानपत्रो और बहुत-सी थैलियोके लिए मै आपको धन्यवाद देता हूँ। राजमुँदरी और यहाँके नागरिकोसे अपना परिचय नया कर सकनेका यह अवसर पाकर मुझे बहुत खुशी हुई। आपने मुझे आपसे बडी-बडी चीजोकी अपेक्षा करना सिखाया है, और मै आशा करता हूँ कि इस हरिजन-कार्यमे भी आप उन अपेक्षाओको पूरा करेगे जो आपने मेरे मनमे पैदा कर दी है।

मै यहाँ हिन्दू समाज द्वारा भेट किये गये मानपत्रको देखता हूँ। समाजने मुझे अपना जो कार्यक्रम भेजा था उसे मैने पढ लिया है। यह एक उच्चाकाक्षी कार्यक्रम है। लेकिन कोई भी कार्यक्रम, चाहे वह उच्चाकाक्षी हो या न हो, तबतक पूरा नही हो सकता जबतक कि करोडो सवर्ण हिन्दुओके दिल नही बदलते। अस्पृश्यता धीरे-धीरे असर करनेवाले जहरकी तरह है जो हिन्दू समाजको मारे डाल रही है, और जिस प्रकार आप धीमे-धीमे मर रहे शरीरको बनाये नही रख सकते, उसी प्रकार जबतक आप अस्पृश्यताके कारणको नही दूर करेगे तबतक आप नष्ट हो रहे हिन्दू-धर्मको जिन्दा नही रख सकेगे।[2]

मुझे यह सूचित करते हुए दु ख होता है कि यदि आप बिलकुल शान्त नही बैठेगे तो मेरे लिए अपना भाषण जारी रखना असम्भव होगा। अब जबतक आप बैठेगे उतनी देरमे मै थोडा-सा काम करनेका विचार रखता हूँ, और इसलिए मै नगरपालिका द्वारा भेट किये गये मानपत्रको नीलाम करने जा रहा हूँ।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, २६-१२-१९३३

१. इस भाषणका अंग्रेजीसे तेलुगुमें श्री बी० साम्बमूर्तिने अनुवाद किया।

२. गांधीजी यहाँ तक बोले थे कि सभामें कुछ गड़बड़ी होने लगी।

४१३. हरिजन-शिष्टमण्डलको जवाब[1]

राजमुदरी
२४ दिसम्बर, १९३३

एक महत्वपूर्ण प्रश्न जो आपने उठाया है वह यह है कि हरिजन सेवक सघमे मुख्यत आपके आदमी होने चाहिए और उसका प्रबन्ध आपके हाथोमे होना चाहिए। इससे दिखता है कि आपने 'हरिजन'को पढा नही है। इससे यह भी दिखता है कि आपने, सघके केन्द्रीय बोर्डकी स्थापना कैसे हुई, इसे भी नही समझा है। बोर्डकी स्थापना इसलिए की गई है ताकि सवर्ण हिन्दू प्रायश्चित कर सके और आपकी क्षतिपूर्ति कर सके। इस प्रकार यह बोर्ड कर्जदारोका बोर्ड है, और लेनदार आप लोग है। आपकी कर्जदारोके प्रति कोई देनदारी नही है, और इसलिए जहाँतक इस बोर्डका सम्वन्ध है, पहल कर्जदारोकी तरफसे होनी है। आपको यह प्रमाणित करना है कि कर्जदार लोग अपने दायित्वको पूरा करते है कि नही। आपको जो करना है वह यह है कि आप कर्जदारोको उनका दायित्व पूरा करनेका मौका दे और उनकी मदद करे। आप उनको बता सकते है कि आपकी रायमे क्या किया जाना चाहिए जिससे सामान्य हरिजन जनता सन्तुष्ट होगी। वे आपकी सलाह स्वीकार कर सकते है और नही भी कर सकते। यदि नही करते तो आपको नाखुश करनेको खतरा उठाते है। कोई कर्जदार किसी साहूकारके पास जाकर कह सकता है कि "मै इतना रुपया लाया हूँ क्या आप इसे लेगे?" साहूकार कह सकता है, "चले जाओ, मुझे दो तो पूरा रुपया दो, वरना मत दो।" या साहूकार कह सकता है, "तुम जो रकम लाये हो वह आशिक भुगतान नही है, बल्कि उससे भी खराब है।" आप साहूकार लोग ये सब बाते कर सकते हैं। और इसलिए जब बोर्डकी स्थापना की गई और कुछ हरिजन मित्रोने मुझे पत्र लिखे तब मैंने उनसे कहा कि हरिजनोको अपने सलाहकार बोर्ड या जॉच-बोर्ड बना लेने चाहिए। मै चाहता हूँ कि आप यह अन्तर अच्छी तरह समझ ले। आप कृपया समझ लीजिए कि आपकी सलाह या सहयोग अथवा सहायताको स्वीकार न करनेकी कोई इच्छा नही है। मै आपके सामने केवल सच्ची और तर्कसगत स्थिति प्रस्तुत कर रहा हूँ। यह एक माफीकी अवधि है जो ईश्वरने सवर्ण हिन्दुओको प्रदान की है, और इस माफीकी अवधिमे उन्हे अपनी ईमानदारी सिद्ध करनी है। सवर्ण हिन्दू अपने दायित्वको पूरी तरह पूरा कर सके, इसके लिए मै आकाश-पाताल एक कर रहा हूँ और जगह-जगह का दौरा कर रहा हूँ।

१. पूर्वी गोदावरी जिलेके हरिजनोंका एक शिष्टमण्डल गाधीजीसे राजमुदरीमें मिला था।

इसपर शिष्टमण्डलके एक सदस्यने सुझाव दिया कि बोर्डको अपने चुने हुए हरिजनोकी सलाहकार समितियाँ नियुक्त करनी चाहिए। गांधीजीने कहा:

बोर्डसे हरिजनोकी सलाहकार समितिका चुनाव करनेको मत कहिए बल्कि अपनी समिति खुद चुनिए और बोर्डसे कहिए कि आपने इन सदस्योको चुना है और बोर्डको उनके साथ पत्र-व्यवहार करना चाहिए। आपके सुझावमे एक खतरा और है। आपके बीचमे गुट और दल हो सकते है। अलग-अलग गुटके लोग अलग-अलग समितियाँ नियुक्त कर सकते है। बोर्ड उन सबको मान्यता दे सकता है। लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण होगा। आपके बीच कोई आपसी झगडा नही होना चाहिए। कर्जदारोके सामने एक सयुक्त मोर्चा प्रस्तुत कीजिए। कर्जदार लोग आपको एकदूसरेके खिलाफ लडा भी सकते है, हालाँकि बोर्ड यदि अपने नामके अनुरूप होगा तो वैसा नही करेगा। काग्रेस एक सयुक्त मोर्चा प्रस्तुत कर सकनेमे सफल रही है। आज काग्रेसमे आपके और मेरे जैसे सरल व्यक्ति भरे पडे है। आपका अपना एक कर्मठ व्यक्तियोका सगठन होना चाहिए जो आपके आपसी झगडोको सख्तीसे दबा दे। तब आप बोर्डमे नही होकर भी उसके ऊपर हावी रहेगे। अब आसानीसे सन्तुष्ट मत होइए। आप कर्ज-दारोसे कह दीजिए कि रुपयेमे ५ आनेसे ही आप सन्तुष्ट नही होगे, बल्कि आपको पूरे सोलह आने मिलने चाहिए। यह कोई ऐसा मामला नही है जिसपर सौदेबाजी की जाये।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, ५-१-१९३४

४१४. पत्र : मार्गरेट स्पीगलको

२५ दिसम्बर, १९३३

चि० अमला,

मुझे तुम्हारे पत्र मिले। मैने जो-कुछ भी किया वह तुम्हारे प्रति अपने प्रेमके कारण किया। और यह मेरी बदकिस्मती है कि तुम्हे उसमे कोई प्रेम नही दिखाई दिया। खैर डरो नही, मै फिरसे ऐसा कुछ करनेवाला नही हूँ। तुम्हारा विकास अपने ही ढगसे होगा। तुम जानती ही हो कि तुम्हे किस चीजकी जरूरत है। तुम अपने ही ढँगसे काम करोगी मेरे ढँगसे नही। सिर्फ अपने मन और शरीरको स्वस्थ रखो। हिन्दीका अध्ययन भी तुम अपने ढँगसे करो। अपनी और अपनी चीजोकी हिफाजत करना। अपनेको और अपने कमरेको साफ रखो। तुम्हे अच्छी और सरल हिन्दी पुस्तके चुननी चाहिए।

तुम मुझे विस्तारसे और नि सकोच होकर लिखो। तुम्हारे पत्रोसे मुझे आघात नही पहुँचा है।

मैं बिलकुल ठीक हूँ।

सप्रेम,

बापू

[अंग्रेजीसे]

स्पीगल पेपर्स, सौजन्य नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय

४१५. पत्र : ताराबहन आर० मोदीको

राजमुंद्री
२५ दिसम्बर, १९३३

चि० तारा,

तेरे दाँतका [कष्ट] समाप्त हो गया यह खुशीकी बात है। रमणीकलालसे मिलनेके बाद ही अहमदाबाद जानेका तेरा विचार ठीक है। दाँतकी पीड़ा मिट जानेके बाद शरीर अब अधिक सुधरना चाहिए। रमणीकलालको सारी खबर देना। मैं तो जान-बूझकर ही उसे पत्र नहीं लिखता। यो धर्मकी दृष्टिसे देखा जाये तो मेरा दौरा ठीक ही चल रहा है। शरीर भी खूब काम दे रहा है। मुझे प्रति सप्ताह २–३ पत्र तो मिलने ही चाहिए।

सबको,

बापूके आशीर्वाद

चि० ताराबहन मोदी
मार्फत, डॉ० शान्तिलाल
रेवाशंकर झवेरीका बंगला
शान्ताक्रूज [बम्बई]

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४१७८) से। सी० डब्ल्यू० १६७७ से भी, सौजन्य रमणीकलाल मोदी

४१६. पत्र : कुसुमबहन देसाईको

राजमुद्री
[२५] दिसम्बर, १९३३[1]

चि० कुसुम,

तेरे पत्रका मैं तार द्वारा उत्तर दे चुका हूँ। तू बहुत देरसे जागी है। तूने मुझे पत्र लिखना छोड दिया। मैं तो रोज बाट जोहता था लेकिन तू भला क्यो लिखने लगी? जब मेरे पास तेरा पत्र आया तब मेरे पास पहले ही बहुत भर्ती हो चुकी थी। बहनोमे तीन हैं, मीरा, किसन और ओम। सब मिलाकर हम नौ लोग हैं। तू क्या करती है? समय कैसे बिताती है? प्यारेलाल लिखते है? वह कैसे है? क्या तू 'हरिजनबन्धु' पढती हे। मेरा शरीर ठीक रहता है। मुसाफरी [का श्रम] सहन सकता हे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १८४९) से।

४१७. पत्र : रमाबहन जोशीको

२५ दिसम्बर, १९३३

चि० रमा,

तुम्हारा पत्र मिला। हाथमे थोडा-थोडा काम लेना अच्छा ही है। फिर और काम भी तो बहुतेरे हैं।

धीरूको तुम्हारा विछोह अखरता है तो कोई हरकत नही। यदि उसका स्वास्थ्य ठीक रहे तो भावनगरमें वह स्वावलम्बी बन जायेगा। दूधीबहनका उसे सत्सग है ही, फिर कुसुम भी तो है। अत अच्छा है कि वह वहाँ जम जाये। तुम उसे पत्र नियमित रूपसे लिखती रहो तो बस है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५३६१) से।

१ साधन-सूत्रमें ३६ दिसम्बरकी तारीख दी गई है। तथापि गांधीजी २५ दिसम्बरको राजमुंद्रीमें थे और सवेरे सीतानगरम्के लिए रवाना हो गये थे।

४१८. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

२५ दिसम्बर, १९३३

बा,

मैने पिछले सोमवारको तुझे जो लम्बा पत्र लिखा था वह मिल गया होगा। इस सोमवार हम सीतानगरममे है। सीतानगरम गोदावरीके किनारे पर बसा हुआ एक छोटा-सा गाँव है, उसमे एक आश्रम है। यह आन्ध्र प्रदेशमे है। गाँव होनेके कारण यहाँ खूब शान्ति है। यहाँ हम नावमे बैठकर आए है। नदी बडी है इससे इसमे छोटे स्टीमर आ-जा सकते है। हम मद्रास हो आए, वहाँ तीन दिन रहे। शास्त्री तो वहाँ थे ही। जेठालालसे भी मिला। गगा भाभी मद्रासमे ही रहती है। जेठालालकी बहुसे भी मिला। दोनो शरीरसे अच्छे है। जेठालालको १५० रुपये वेतन मिलता है, इससे सुखी है। उर्मिला देवीके पुत्रसे भी मिला। वहाँ लोग बहुत बडी सख्यामे मिलने आते थे। लक्ष्मी ठीक है। पापा भी मद्रासमे है। लक्ष्मी तीन दिन मेरे साथ ही रही। मीराबहन, किसन और ओम भी मेरे साथ थी, इसलिए उसे अच्छा लगा। अभी एक बार फिर मुलाकात होगी क्योकि उस ओरका दौरा अभी बाकी है। मेरा शरीर अच्छा है। मद्रासमे दो डाक्टरोने फिर जाँच की थी। इसलिए मेरे लिए चिन्ता करने जैसी कोई बात नही। डाहीबहनके दाँतको कुछ आराम आया या नही? तुझे 'जामेजमशेद' मिलता है न? तूने प्रवचन जैसी कोई चीज माँगी थी सो एक तो आज देना चाहिए न?

'गीता'के आजके अध्याय ९, १०, ११, १२ थे। नवे अध्यायमे भगवान कहते है कि जो मुझे भजता है वह मुझे पाता है।[1] बारहवे अध्यायमे[2] यह बताते है कि भक्त किसे कहा जाये। खूबी यह है कि इसमे एक भी ऐसा लक्षण नही कहा गया है जो किसी अज्ञानीसे-अज्ञानी व्यक्तिमे भी न मिल सके। कोई स्त्री या पुरुष जो बिना किसीकी मदद अपने-आप परिश्रम करता है वह भक्त हो सकता है अर्थात् वह भगवानको पा सकता है। लक्षण ये है किसीसे द्वेष न करे, प्राणी-मात्रके साथ मैत्री रखे, सबके प्रति दयाभाव हो, जिसके मनमे यह मेरा है यह तेरा ऐसा भाव न हो, जिसे अहकार न हो, जिसे सुखदु ख एक समान है, जो क्षमावान है है, जो हमेशा सन्तुष्ट रहता है, जो सयमका पालन करता है, जो प्रतिज्ञाका पालन करता है, जिसने अपना मन और बुद्धि ईश्वरको अर्पित कर दिया है, जो किसीको दुख नही देता, जो भय और चिन्तासे मुक्त रहता है, जो किसी चीजकी आशा अथवा इच्छा नही रखता, जो पवित्र है, कार्य कुशल है, जिसने सब कुछ

१. अध्याय श्लोक ९, २९।

२. श्लोक १३-२०।

त्याग दिया है, जिसकी दृष्टिमे शत्रु और मित्र समान है, मान-अपमान एक समान है, जो सर्दी-गर्मी सहन करता है, निन्दा और स्तुति जिसके लिए समान है। जो जहाँ होता है वही घर मानकर रहता है अथवा जिसके लिए घर जैसी कोई चीज नही है। जो अकारण बोलता नही और जिसका मन व्यवस्थित है वह मेरा भक्त कहलाता है। इन सब पर तुम बार-बार विचार करोगी तो तुम्हे मालूम होगा कि जिसके मनमे इच्छा-भार हो तो वह बिना किसीकी मददके भक्त बन सकता है।

सबको बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना बाने पत्रो, पृष्ठ ३-४

४१९. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सीतानगरम
२५ दिसम्बर, १९३३

भाई वल्लभभाई,

तुम मेरे पत्रकी राह देखते रहे और मै तुम्हारे पत्रकी। मुझे यह भ्रम था कि मेरे पत्रका उत्तर आना अभी बाकी है। दौरा इतनी तेजीसे चल रहा है कि मै तारीख और दिन आदिकी याद ही भूल जाता हूँ। किसको क्या लिखना है, यह भी याद नही रहता। मै साठका हो गया हूँ, यह कारण तो हो ही सकता है।

तीन बजे उठनेके बारेमे चन्द्रशकरने तुम्हे भडकाया है। यदि मै उस समय न उठूँ तो परेशान हो जाऊँ। तुम्हारा आग्रह तो मेरे जल्दी सोनेपर होना चाहिए। यह नियम आजकल जरूर टूट गया है। तथापि अभी तक तो स्वास्थ्य अच्छा ही रहा है, ऐसी सब डाक्टरोकी राय है। पत्र भी जितने तुम समझते हो उतने नही लिखता। केवल वही पत्र लिखता हूँ जो बहुत जरूरी हो। बल्कि यदि तुम बगलमे बैठे होते तो कहते कि कमसे-कम इतना तो लिख ही डालो। तुम्हारी यह शिकायत कि मै तुम्हे [जेलमे] अकेले छोडकर चला आया, सच है। लेकिन अन्तमे इसका उपाय भी हो जायेगा। मेरे बारेमे तनिक भी चिन्ता न करना। मै शरीरकी मर्यादासे बाहर नही जाता। तुम देखोगे तो मानोगे कि मै उसकी अच्छी सम्भाल कर रहा हूँ अथवा सच कहे तो यह कहेगे कि ईश्वर उसका जतन बराबर कर रहा है। लेकिन यदि मै ही विरोध करूँ तो ईश्वर बेचारा क्या करेगा? मै उसके प्रेममे पूरी तरह मग्न हो गया होऊँगा, इसीसे तो वह मुझे बडे-बडे सकटोसे बचा ले जाता है। मद्रासमे रोज मेरे कुचले जानेका भय बना रहता था फिर भी मै उससे बच निकला। यह कोई मनुष्यकी कारीगरी न थी, ईश्वरकी इच्छा ही ऐसी थी। पाँच घटेका जो नियम बनाया गया था वह केवल कागजपर ही सुरक्षित है।

बाको हर सप्ताह पत्र जरूर जायेगा। अभीतक मैंने एक भी सप्ताह खाली नही जाने दिया है। बाको ईश्वर निभा लेगा। उसको निभानेवाला और हो भी कौन सकता है? मणिकी चिन्ता करनेकी सचमे कोई जरूरत नही।

मैंने कानजीभाईको[1] तुरन्त ही तार दिया था। उसके उत्तरमे तार और पत्र दोनो मिले। मैंने स्वय भी फिर उत्तर भेजा है और लिखा है कि मेरी खातिर इतनी दूरसे आनेकी कोई जरूरत नही। लेकिन यदि उन्हे जरूरी लगे तो अवश्य आ जाये। तारीखे भी लिख भेजी है। तुम्हे पत्र लिखते समय मै यह सब बताना भूल गया था। उनका पत्र सरस था।

राजाको मिलना मुश्किल समझता हूँ हालाँकि लक्ष्मी मुझे मद्रासमे मिली थी। उसको छठा महीना चल रहा है इसलिए वह ज्यादा चल-फिर नही सकती। तबियत अच्छी रहती है। राजा प्रसव अपनी देखरेखमे करवाना चाहते है। देवदास भी मद्रास पहुँचेगा। लक्ष्मी मजेमे थी। राजा ६ फरवरीको रिहा होगे।

कीं[2] गाडी ऐसे ही चलती है। उसे अपने से ही सन्तोष नही को फिर गर्भ रह गया है, इसका उसे सन्ताप है। वह खुदको वशमे नही रख सकता और बादमे दु खी होता है। मैंने उसे काफी सान्त्वना दी है। लेकिन कुल मिलाकर वह जहाँ है ठीक ही है।

प्रिन्सेस एरिस्टार्शीके पत्र निश्चित रूपसे हर सप्ताह आते है। वह पैसा भी भेजती रहती है। उसके ममत्वका पार नही। अब वह त्रिवेदीके मनुकी मदद कर रही है [4] मैंने प्रिन्सेसको लिखा है वह उसे उसके कर्त्तव्यको बोध कराये। यह सच है कि मणिलाल और सोराबजी[5] परस्पर लडते रहते है। यह लडाई वहाँकी राजनीतिको लेकर है। इसमे मै किसीका मार्गदर्शन नही कर पाया हूँ। लेकिन मैंने मणिलालको लिखा है कि उसे जो सत्य प्रतीत हो सो वह करे, विनम्रता न छोडे। व्यक्तिगत झगडेमे न पडे। मेरा खयाल है कि यह झगडा निपट जायेगा।

गोरधनभाई विट्ठलभाईके दानके बारेमे लिखते रहते है। मैंने वह सब नही पढा। अवसर पाकर उन्हे हिसाब दे दूँगा और शान्तिसे बैठ जाऊँगा। सुभाषका मुझे बहुत मधुर पत्र आया था। उसे मैंने छपनेके लिए अखबारोमे भेजा था। अवश्य छपा होगा।

दौरा अच्छा चल रहा है। कोई भी क्लेश नही है। अभी तक दक्षिणमे ऊधम करनेवाले लोग देखनेमे नही आये। भविष्यकी बात ईश्वर जाने। लोगोकी भीडकी सीमा नही। आज हम सीतानगरममे है। परम शान्ति है। यह एक छोटा-सा गाँव है। आज तो मेरा मौन है। मै कल भी यही हूँ। यदि ये दो दिन स्थिरताके नही होते तो मेरे लिए दौरा जारी रखना मुश्किल हो जाता है।

१. सूरतके कन्हैयालाल देसाई।
२ ३. साधन-सूत्रमें यहाँ नाम नहीं दिये गये है।
४. साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ छूट गया है।
५. पारसी रुस्तमजीके पुत्र।

मद्रासमे दो घडीके लिए शास्त्रीसे[1] मिला था। यह मुलाकात दोस्ताना थी। मुन्शी[2] और लीलावती[3] मुझे मद्रास आकर मिल गये। मुन्शीकी तबियत अच्छी जान पडी। भूलाभाईका तार आया था। उन्हे पूरा आराम नही आया है।

काका और सुरेन्द्र मशरूवाला गुजरातमे है।

किशोरलाल अभी स्वस्थ नही हुआ है। स्वामी सोनाली और बम्बईके बीच किसी स्थानपर है। उसका समाचार तो तुम्हे मिलता रहता होगा।

मेरे साथ किसन है, यह तो मै तुम्हे बता चुका हूँ न? बहुत अच्छी युवती है। प्रेमाकी मित्र ठहरी, और फिर पूछना ही क्या? सबको,

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २: सरदार वल्लभभाईने पृष्ठ ५३-७

४२०. पत्र: छगनलाल जोशीको

२५ दिसम्बर, १९३३

चि० छगनलाल,

तुम्हे लम्बा पत्र लिखना आरम्भ किया था, ऐसा एक पृष्ठ बोलकर लिखवाया था, यह सब जबलपुरमे हुआ। उसके बाद मै आगे बढ ही नही सका। अब आज यह पत्र लिख रहा हूँ। मै सीतानगरममे हूँ और इस समय मौनवारकी रात है। अभी मौन जारी है। ९ बजकर ३५ मिनट पर खुलेगा, अभी साढे आठ बजे है। केवल सोमवार और मगलवारको ही लिखना हो पाता है, ऐसा कहा जा सकता है। सवेरे तीन बजे उठता तो जरूर हूँ। तबसे लेकर प्रार्थनाके समय यदि कुछ लिखा जा सके तो भले लिखा जा सके और उसमे भी विघ्न पड सकता है। और जब ट्रेनमे होता हूँ तो कभी-कभी सवेरे तीन बजे उठ भी नही पाता।

मै यह जो दौरा कर रहा हूँ वह अद्भुत है। लोगोकी भीड पहलेसे भी अधिक है। हमे करोडो लोगोमे काम करना है इसलिए हम इनसे सहज ही छले भी जा सकते है। और फिर जितने लोग आते हो वे सबके सब तुरन्त ही अपने जीवनमे परिवर्तन कर डालते हो, ऐसी बात नही। मुझे केवल इतना ही सन्तोष है कि इन लाखो लोगोको मेरा यह प्रचार अरुचिकर नही लगता जानपडता। इसलिए हम ऐसा मान सकते है कि किसीन-किसी दिन अस्पृश्यता जडसे चली जायेगी।

तुम अपने 'गीता' के अभ्यासको अच्छी तरह पक्का कर देना। व्याकरण और शब्दार्थ ठीक-ठीक आना चाहिए। उच्चारण तो अब अच्छा ही होगा। दूसरी पुस्तके भी भले ही कम पढो लेकिन जितना अध्ययन करो, गहन अध्ययन करो। हजारो

१. श्रीनिवास शास्त्री।
२. व ३ क्रमश: क० मा० मुन्शी और उनकी पत्नी।

पुस्तकोको पचाये बिना पढनेवाले मनुष्यकी अपेक्षा वह मनुष्य अधिक जानता है जो एक ही पुस्तक पढता है और अच्छी तरह समझ लेता है। तुम्हारे पास चरखा है क्या? विमुको और रमाको वर्धा हर तरहसे रास आया है। लगता है रमाका हाथ बिलकुल ठीक हो जायेगा। धीरुको भावनगर पसन्द तो आया है लेकिन अभी उसके बारेमे हम निश्चिन्त नही हो सकते। वह कमजोर तो जरूर है लेकिन उसका स्वास्थ्य पहलेसे बहुत अच्छा है। दूधीबहन उसकी बराबर देखभाल करती है। कुसुम भी वही है। स्वय नानाभाई भी उसकी देखभाल करते हैं। बल्भद्रको वहाँ बहुत अच्छा लगता है।

अप्पा पटवर्धन मुझसे मिलने आए हुए हैं। अब जायेंगे। किसन वर्धासे मेरे साथ आ जुडी है। वह प्रेमाकी सहेली है और बहुत भली महिला है। हाँ, शरीरसे जरूर थोडी कमजोर हो गई है।

दो पत्रोका भार चन्द्रशकर अच्छी तरह सम्भाल रहा है। इस बार ठक्कर बापाकी जगह मलकानी है। काम ठीक चलता है। रामनारायण भी साथ है। किशोरलाल खूब बीमारी भोग रहा है। बुखार उसका पीछा ही नही छोडता। ब्रजकिसन खासा बीमार थे लेकिन अब स्वास्थ्य-लाभ कर रहे हैं। उनके प्राण खतरेमे थे। लेकिन हममेसे किसके प्राण खतरेमे नही है? तथापि जो लोग शय्यावश नही वे अपने-आपको खतरेमे नही मानते।

बा यरवडामे आनन्दपूर्वक है। डाहीबहनके[1] दाँत दुखते हैं। शान्ता और ललिता मजेमे है। द्वारकानाथ वर्धाका कारोबार अच्छी तरह से चला रहा जान पडता है। लक्ष्मीबहन तो ओत-प्रोत है ही।

काका और सुरेन्द्र मशरूवाला गुजरातमे है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५३१४) से।

४२१. पत्र : दूधीबहन वी० देसाईको

२५ दिसम्बर, १९३३

चि० दूधीबहन,

इन दिनो तुम्हारा पत्र नही है। मुझे बराबर लिखती रहना। मै तो कदाचित मुसाफिरीकी भागदौडमे न लिख सकूँ।

सब बच्चोकी देखरेख रखना। कुसुमके बारेमे जमना भले ही कुछ भी कहे पर उसको लेकर तुम्हे अपना कर्त्तव्य नही छोडना चाहिए। कुसुमको शृगार प्रिय हो सकता है पर मुझसे तो वह यह नही सीख सकती। यह मेरी कमजोरी है।

१. रावजीभाई नाथभाई पटेलकी पत्नी।

तुम्हारे लिए तो शृंगारकी बात मेरे मनमें भी नहीं आ सकती। बच्चोंसे लिखनेको कहना। आज अलहदा पत्र उन्हें नहीं लिखूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ३१९०) से, सौजन्य वा० गो० देसाई

४२२. पत्र : विद्या आर० पटेलको

२५ दिसम्बर, १९३३

चि० विद्या,

तेरा पत्र मिला। भले ही तू दवा लेकर ही अच्छी हुई हो पर यह ठीक ही हुआ। हमें तो अच्छा होनेसे ही मतलब है। मनुको पत्र लिखती रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९६३६) से, सौजन्य रवीन्द्र आर० पटेल

४२३. पत्र : विद्या आनन्द हिंगोरानीको

२५ दिसम्बर, १९३३

चि० विद्या,

तुमारा खत मिला। पिताके घर गई सो अच्छा ही हुआ। जब बहार निकलने लायक बन जायगी तब बहार भेज दूगा। मुझे प्रिय तो वर्धा ही है लेकिन भावनगर मुसाफरी करनी है तो करवा दुगा। अब तो शरीर अच्छा बनाओ, कुछ शारीरिक श्रम करो, चिंता छोडो, रोना छोडो। इंग्रेजी और हिंदी सीखो।

मुझे लिखा करो।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी माइक्रोफिल्म से, सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द टो० हिंगोरानी

४२४. पत्र : गोविन्दभाई आर० पटेलको[1]

२५ दिसम्बर, १९३३

भाई गोविन्दभाई,

आपका पत्र मिलनेके बाद मैंने पूछताछ की और मुझे पता चला कि पाण्डिचेरी से निमन्त्रण आया था और मैं कदाचित वहाँ जाऊँगा। यदि मैं वहाँ आऊँगा तो श्री अरविन्दसे अवश्य मिलना चाहूँगा। उनसे मिलन न हुआ तो मुझे बहुत निराशा होगी। इसलिए यदि शोरगुल किये बिना उनसे मिलनेकी व्यवस्था की जा सके तो करना। तय होनेके बाद मैं स्वय उनसे लिखकर समय मॉगनेवाला हूँ।

बापूके आशीर्वाद

श्री गोविन्दभाई
श्री अरविन्द आश्रम
पाण्डिचेरी

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १०७३९) से, सौजन्य गोविन्दभाई रामभाई पटेल

४२५. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

२६ दिसम्बर, १९३३

प्रिय जवाहरलाल,

यह रही 'मद्रास मेल' की एक कतरन।[2] हालॉकि सारी बातचीतमे करीव-करीब तुम्हारा और तुम्हारे विचारोका ही उल्लेख किया गया है, लेकिन स्वभावत भेंटकर्त्ता तुमसे हुई भेटका विवरण पूराका पूरा नही दे सकता था। मुझे प्रूफ दिखाया गया

१. गोविन्दभाई पटेलने श्री माँ की माफत श्री अरविन्दको गाधीजीके इस पत्रके बारेमें बता दिया था और श्री अरविन्दने एक कागजपर पैसिलसे यह लिखा था कि आपको उन्हें लिखना होगा कि मैं उनसे भेंट नही कर सकता क्योंकि एक लम्बे अर्सेसे मैंने किसीसे भेंट न करनेका पक्का नियम बना लिया है — यह कि मैं अपने शिष्योंसे भी बात नही करता और उन्हें केवल सालमें तीन बार मौन आशीर्वाद देता हूँ। अन्य लोगोंने जब भी मुलाकातके लिए समय माँगा, मुझे उसे अस्वीकार करना पड़ा है। अपने ऊपर मैंने यह नियम अपनी साधनाके कारण लगाया है और इसमें सुविधा अथवा किसी बातका प्रश्न ही नही उठता। और अभी मेरे इस नियमसे विचलित होनेका समय नही आया है।

२. देखिए "भेंट : मद्रास मेलके प्रतिनिधिको", २२-१२-१९३३।

था। मैंने जो कहा था उसका काफी ठीक सार प्रस्तुत किया गया है। कृपया इसे सावधानीपूर्वक पढ जाना और जहाँ तुम्हे लगे कि मैंने तुम्हारे बारेमे कुछ गलत कहा है वहाँ मुझे भूल बताना। हमारी मण्डलीमे भी तुम्हे लेकर बहुत गलतफहमी है। लेकिन इसकी मुझे कोई चिन्ता नही।

मेरा जैसा कार्यक्रम अभी बना है, वह भी तुम्हे साथ भेज रहा हूँ।[1]

आशा है, माताजीका स्वास्थ्य सुधर रहा है।

सप्रेम,

बापू

[अग्रेजीसे]

गाधी-नेहरू पेपर्स १९३३, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

४२६. पत्र : रेहाना तैयबजीको

२६ दिसम्बर, १९३३

प्यारी बिटिया रेहाना,

मुझे तो खयाल ही नही था कि तू बीमार पड गई है। मै तो समझा 'रेहाना अब बापूको भूल गई है।' जहाँ तक मेरा सवाल है, मेरे पास तो लिखनेका वक्त ही नही था। भगवानका शुक्र है कि तू अब बिलकुल अच्छी हो गई है।[2]

हमीदाका एक लम्बा पत्र था। उसे मैंने जवाब दिया है। कमला देवीके साथ बहुत बाते हुई। मुसाफिरीमे तेरी बहुत बार याद आती रहेगी। 'उठ जाग मुसाफिर' तेरे मुँहसे सुननेकी इच्छा होती ही है पर "ऐसा दिन कहाँ कि मियोके पैर मे जूतियाँ हो।" तुम्हारी भजन मडलीमे बैठनेकी भी इच्छा होती है। मेरे साथ किसन और जमनालालजीकी ओम है। अब्बाजान कहाँ गये है? उन्हे और अम्माजानको बहुत सलाम, वन्देमातरम्, प्यार आदि आदि। सरोज[3] और तुझे आशीर्वाद। कमाल मियाँ-को चुम्मी।

बापू

[पुनश्च]

'हरिजन' पढती ही होगी।

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९६५५) से।

१ देखिए परिशिष्ट ४।

२, यह अंश उर्दूमें है।

३. सरोज नानावटी।

४२७. पत्र : कल्याणजी वी० मेहताको

२६ दिसम्बर, १९३३

भाई कल्याणजी,

मौत किसको छोडती है? यदि मृत्यु रूपी हमारा मित्र न हो तो कौन जाने हमारा क्या हाल हो? आप सबको और विशेप रूपसे नेपोलियनको इस बातकी तसल्ली होनी चाहिए कि गगाबा मुक्त हो गई हे। पर मैंने ज्ञानकी जो बात की उसे इस अवसर पर भला कौन सुनेगा? तथापि मृत्युके सम्बन्धमे मेरा यह ज्ञान शास्त्रोपर आधारित नही है। इसी कारण प्रसग उपस्थित होने पर मै ऐसी बात कह देता हूँ। हमारे जैसे सिपाहियोको तो उसके स्वरूपको जान लेना चाहिए। गगाबा की आत्माको तो अवश्य शान्ति होगी क्योकि जिसने इस देहसे अच्छा बननेका तनिक भी प्रयत्न किया है उमका अकल्याण तो कभी हो ही नही सकता। महालक्ष्मीका मलेरिया उचित उपचारसे दूर हो जायेगा।

वापूके आशीर्वाद

कल्याणजी मेहता
मार्फत डॉ० नाथूभाई दयाल्जी पटेल
बैंक व्यू
चर्नी रोड स्टेशन गार्डनके सामने
बम्बई

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२२) से।

४२८. पत्र : स्वरूपरानी नेहरूको

२६ दिसम्बर, १९३३

प्रिय भगिनी,

आपका खत मिला था। मिलनेसे आनद हुआ। बहूत शक्ति आनेकी आशा तो अब रख नहि सकते हैं। अब आपको चिंताका भी कोई कारण नहि रहा है। कृष्णा खुश रहती है। सरुपसे कहो मुझे लिखा करे। कृष्णा भी लिखे। थोडे महिने वही रहेगी क्या?

ईश्वर तुम्हे शाति देवे।

मेरी मुसाफरी अच्छी तरह चल रही है। परिश्रम ठीक पडता है। ईश्वर कृपासे अब तक तो शरीरने सहन किया है। बाके खत आते है। खुश है।

आपका,
मोहनदास

इन्दिरा गाधी-गाधी पेपर्स, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय। जी० एन० ११४०७ से भी।

४२९. भाषण: एल्लोरकी सार्वजनिक सभामें

२७ दिसम्बर, १९३३

इस जबर्दस्त स्वागतके लिए, जो आपके जबर्दस्त प्रेमका परिचायक है, मै आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ। मुझे जो अनेक थैलियाँ और मानपत्र, जिनमे नगरपालिकाकी ओरसे और जिला बोर्डकी ओरसे दिये गये मानपत्र भी शामिल है, भेंट किये गये है, उनके लिए मै आपको धन्यवाद देता हूँ। मेरे पास समय बहुत थोडा है, और आशा है आप विभिन्न मानपत्रोमे कही गई बातोका विस्तृत उल्लेख करनेकी अपेक्षा मुझसे नही करेगे।

मेरा सबसे प्रथम और पावन कर्त्तव्य "पजाब केसरी" स्वर्गीय लाला लाजपतरायके चित्रका अनावरण करना है। उनके अनेक बहुमूल्य गुणो और सेवाओकी चर्चा मै आपसे करूँ, आप मुझसे इसकी अपेक्षा नही करेगे। मुझे उनके अन्तकाल तक उनका विश्वासपात्र रहनेका सौभाग्य मिला था। १९२० मे काग्रेसका जो ऐतिहासिक अधिवेशन हुआ था उसके वह अध्यक्ष थे। आज मेरे और आपके लिए उनका सबसे विशिष्ट गुण यह है कि अस्पृश्य लोगोसे उनको अत्यन्त निर्मल प्रेम था। उन्होने भारतके हिन्दू समाजको तथाकथित अस्पृश्य लोगोके प्रति, हरिजनो के प्रति अपने कर्त्तव्यका ध्यान रखनेकी शिक्षा दी है। लाजपत राय हमेशा कहते थे कि अस्पृश्यता हिन्दूधर्मपर सबसे बडा कलक है। यदि उन्होने और कुछ न किया होता तो अस्पृश्यताके विरुद्ध उन्होने जो लडाई छेडी थी, केवल उसीके कारण हम हिन्दुओको उनकी पवित्र स्मृतिकी पूजा करनी चाहिए। उनकी देश-सेवा, उनकी बहादुरी और उनकी निर्भीकतासे कौन इनकार कर सकता है? उनको 'पजाब केसरी'के नामसे यो ही नही पुकारा जाता था।

अब मुझे और चीजोको लेना चाहिए। आपको जानकर खुशी होगी कि मूलपुरी चुक्कम्माको वेल्लोर जेलमे भी हरिजनोकी सुध रही और उसके पास जो थोडी बहुत चीजे है उनमेसे यह अँगूठी उसने मुझे भेजी है। उसका पत्र, जिसपर सेट्रल जेलके सुपरिंटेंडेटके हस्ताक्षर है, यहाँ मेरे पास है। ऐसे कार्योंसे कौन है जो प्रेरणा नही ग्रहण करेगा?[1]

१. इसके बादका अंश २९-१२-१९३३ के हिन्दूमें प्रकाशित रिपोर्टसे लिया गया है।

जहाँ भी मैं जाता हूँ वहाँ मै लोगोमे उत्साह देखता हूँ, तथाकथित अस्पृश्य यानी हरिजनोको अपने हृदयमे स्थान देनेकी इच्छा देखता हूँ। जहाँ भी मैं जाता हूँ, मै लोगोमे अपनी सम्पत्ति, अपने पैसे, रुपये और सोनेकी वस्तुएँ देनेकी तत्परता देखता हूँ, और त्याग करनेमे स्त्रियाँ पुरुषोसे पीछे नही है। मैं निश्चयपूर्वक जानता हूँ कि उन्हे पता है कि वे जानती है कि किस उद्देश्यके लिए उन्होने अपनी चूडियाँ, अपनी अँगूठियाँ या अपनी कोई अन्य प्रिय वस्तु दान की है। वे जानती हैं कि ये सारा धन और ये सब गहने इसलिए दिये जा रहे है ताकि हरिजनोकी सेवा की जा सके। मैं जितना ही सोचता हूँ उतना ही मुझको लगता है कि यह कार्य सारी मानवताके लिए किया जानेवाला कार्य है, हमेशा किया जानेवाला काम है। यदि हिन्दू अस्पृश्यता-राक्षसीका नाश करनेमे सफल हुए, यदि वे अपने दिलोको बदलनेमे सफल हुए, यदि वे अपनेको इस कलकसे मुक्त करनेमे सफल हुए तो मुझे तनिक भी सन्देह नही है कि विभिन्न धर्मोको माननेवाली सभी जातियोके हम लोग सुख, सन्तोष, शान्ति और हार्दिक मैत्रीके साथ रहेगे। मुझे तनिक भी सन्देह नही है कि यदि इस अनुष्ठानमे, अस्पृश्यताके विरुद्ध इस लडाईमे हमे पूर्ण सफलता मिली तो जैसा कि मैंने कहा है, हम हृदयकी एकता स्थापित कर सकेगे। पारस्परिक विश्वास, आपसी प्रेम और आपसी आदरभावकी धूप मे सन्देहका कोहरा छँटकर तिरोहित हो जायेगा। इसलिए आइए, हम लोग, आप और मैं और सभी लोग, सर्वशक्तिमान ईश्वरसे प्रार्थना करे कि वह हमे इस गलतीको, चाहे वह कोई भी गलती हो, देख सकनेकी और सुधार सकनेकी शक्ति और बुद्धि प्रदान करे। हमे याद रखना चाहिए कि इतनी सदियो तक हमने अपने ही बीचके एक वर्गको दबाये रखा है और ऐसा करते हुए हमने अपने-आपको पतित किया है, अपने-आपको दबाया है। आज तक ससारमे कोई भी शक्ति स्वयको पतित और दलित किये बिना मानवताके किसी अशको दबानेमे सफल नही हुई है। मैं जितना ही देखता जाता हूँ उतना ही मुझे लगता है कि अगर हमने अस्पृश्यताको खत्म न किया तो हिन्दूधर्म स्वय नष्ट हो जायेगा, और यदि ऐसा हुआ तो यह हमारी ही क्षति नही बल्कि सारे ससारकी क्षति होगी। ऐसा धर्म जिसकी प्रेरणाके स्रोत वेद है, उपनिषद है, पुराण है, जिसकी प्रेरणाका स्रोत 'रामायण' है, वह धर्म क्यो नष्ट हो जायेगा — किसलिए, किस कारण नष्ट हो जायेगा। इसका एकमात्र कारण यही होगा, कि हमने उपनिषदोकी शिक्षाका पालन नही किया, हमने वेदोमे, उपनिषदोमे बतायी गई इस महान् शिक्षाका, उनमे प्रतिपादित इस महान् सिद्धान्तका पालन नही किया कि केवल ईश्वर ही सत्य है, और ईश्वरके अतिरिक्त अन्य कोई व्यक्ति, कोई चीज नही है। क्या आप समझते है कि एक ईश्वरकी, न्यायप्रिय ईश्वरकी शिक्षा देनेवाले शिक्षकोने यह उपदेश दिया होगा कि हमारे बीच ऊँचे और नीचे का भेदभाव हो सकता है? यह एक असम्भव बात हैं। इन बातोके बारेमे हम जितना ही सोचते हैं उतना ही इस बातपर आश्चर्य होता है कि हिन्दुओ जैसी सुसस्कृत समझी जानेवाली जातिने अस्पृश्यताको अपने धर्मके एक अगके रूपमे अपना लिया है। और अन्तमे यह बात याद रखिए कि आज

ससारके सभी धर्म आन्तरिक उथल-पुथलमे पड़े हुए है। उन सभी को आलोचनात्मक दृष्टिसे जाँचा-परखा जा रहा है और कसौटी की जा रही है, और यदि हम इस बुराईको तेजीके साथ अपने बीचमेंसे निकाल बाहर नही करेगे तो लोकमत आपको और मुझे माफ नही करेगा। अब अस्पृश्यताके ऊपर मैं आपका और अधिक समय नही लूँगा।[1]

इसके बाद श्री गाधीने कहा कि चूंकि मै एल्लोरमे बोल रहा हूँ, जो कि आन्ध्र प्रान्तीय हरिजन सेवक संघका मुख्यालय है, इसलिए मै आपका ध्यान इस तथ्यकी ओर दिलाना चाहता हूँ कि मुझे संघके कुछ पदाधिकारियोंके विरुद्ध कुछ शिकायतें मिली है। मंने और केन्द्रीय बोर्डके सदा-सतर्क मन्त्री श्री ठक्करने जाँचके बाद पाया है कि लगाये गये आरोप सर्वथा निराधार है। किसी भी सही शिकायतके लिए मैं अपनी आँखो और कानोको खुला रखता हूँ, लेकिन मेरा आग्रह है कि शिकायत करनेवालेको दो शर्तोंपर कोई शिकायत करनी चाहिए। पहली शर्त तो यह है कि उसे गुमनाम पत्र भेजनेके बजाय अपना नाम सार्वजनिक रूपसे घोषित करना चाहिए और दूसरी यह कि वह जो भी आरोप लगाये, उन आरोपोंको अकाट्य सबूत देकर सिद्ध करना चाहिए।

श्री गांधीनें अपना भाषण अंग्रेजीमें किया, और भाषण समाप्त करनेंसे पहले उन्होने कहा कि आन्ध्रदेशमे भी, जहाँ हिन्दीने इतनी ज्यादा प्रगति कर ली है, मै अंग्रेजीमें बोला, इसका मुझे दुख है। भाषणका अनुवाद करनेमें आसानी हो, इस खयालसे मुझे अंग्रेजीमें बोलना पड़ा। आन्ध्रवासियोके लिए हिन्दी सीखना तनिक भी कठिन नही होगा क्योकि उसमे बहुतसे शब्द संस्कृतपर आधारित है, और संस्कृतसे ही तेलुगु भाषा निकली है।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २८-१२-१९३३ और २९-१२-१९३३

४३०. भाषण : विशाखापट्टमकी महिला-सभामें

२८ दिसम्बर, १९३३

हरिजन-कार्य आगकी तरह है। आगमे आप जितना ही घी डाले, उतने ही और घीकी उसे जरूरत होती है। इसी प्रकार हरिजन-कार्यके लिए आप जितना ही देते है उतनी ही उसे और आवश्यकता होती है। जो लोग इस कार्यके लिए देते है, वे कभी खोते नही, उन्हे लाभ ही होता है। देकर आप पुण्य अर्जित करते है। न देनेसे आप पुण्य-प्राप्तिका अवसर खोते है। कारण, सवर्ण हिन्दू जातिके स्त्री-पुरुष सदियोसे हरिजनोको पीडित करते आये है। आज अगर हम बुरे समयसे गुजर

१. इससे आगेका अंश *हिन्दू*, २८-१२-१९३३ से लिया गया है।

रहे है, तो मुझे पूरा विश्वास है कि इसका एक काफी बडा कारण हरिजनोके साथ हमारा बुरा व्यवहार है। इसलिए मै भारतकी स्त्रियोसे कहता रहा हूँ कि वे अपने मनसे अस्पृश्यताके भूतको निकाल बाहर करे। कुछ मनुष्योको अपनेसे नीचा समझना गलत है, पापपूर्ण है। ईश्वरकी इस धरतीपर कोई नीचा या ऊँचा नही है। हम सब उसीके बन्दे हैं, और जिस प्रकार माता-पिताकी दृष्टिमे उनके सभी बच्चे एक समान है उसी प्रकार ईश्वरकी दृष्टिमे भी उसके सभी बच्चे बराबर है। मै चाहता हूँ कि आप मेरी इस बातका विश्वास करे कि धर्ममे अस्पृश्यताके लिए कोई आधार नही है। इसलिए मै आपसे कहता हूँ कि आप अपने चारो ओर जो हरिजन है उन्हे अपने हृदयमे स्थान दे। हरिजन बच्चोका अपने घरोमे स्वागत करे। हरिजनोके घरोमे आप जाये और उनके बच्चो और उनके घरोकी फिक्र करे, उन्हे सँवारे, हरिजन स्त्रियोको अपनी बहने मानकर उनसे बोले, बात करे।

हरिजनोका यह कार्य मुख्यत स्त्रियोको करना है, और मै आशा करता हूँ कि इस स्थानकी आप हिन्दू स्त्रियाँ अपना कर्त्तव्य करेगी। मुझे आशा है कि आपमेसे जो बहने अपने सारे गहने या कुछ गहने देनेकी इच्छा और क्षमता रखती है, वे उन्हे देगी। भेट देनेकी एक शर्त है। यदि आप कोई भेट देती है, तो फिर वैसी दूसरी चीज आप न ले। मै चाहता हूँ कि आप अनुभव करे कि आपने इस कार्यके लिए कोई चीज दी है; और रुपये या नोट देकर आप ऐसा अनुभव नही कर सकती। रुपये या नोट तो आपके माता-पिता या पतिसे आपको मिले होगे। लेकिन गहने आपकी निजी सम्पत्ति है। जब आप अपने गहने देती है और आपका यह इरादा नही होता कि आप वैसा ही गहना अपने माता-पिता या पतियोसे फिर बनवायेगी, तो यह निश्चय ही आपका त्याग है। आपमेसे जिन लोगोने मेरे इस सन्देशकी भावनाको समझ लिया है, मै चाहता हूँ कि वे सभी स्त्रियाँ वह निश्चित त्याग करे।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ५-१-१९३४

४३१. विशाखापट्टमकी सार्वजनिक सभामे

२८ दिसम्बर, १९३३

स्टेशनपर मेरे उतरनेके बाद आपने मुझे मोटर गाडीपर बिठा कर हरिजनोकी एक पक्तिके बीचसे गुजारा जिन्हे उस समय किसी नागरिककी उदारताके फलस्वरूप भोजन कराया जा रहा था। वह नागरिक अपनी उदारताके लिए धन्यवादका पात्र हो सकता है, लेकिन मुझे स्वीकार करना पडता है, कि यह कोई आत्माको प्रसन्न करनेवाला दृश्य नही था। जिस सडकके दोनो ओर हरिजन स्त्री और पुरुष बैठे भोजन कर रहे थे उसपरसे मोटर गाडी गुजरते समय मैने शर्मसे अपनी गर्दन झुका ली। जरा सोचिए जिस समय हम लोग सडकपर भोजन कर रहे हो उस समय यदि कोई उद्दण्ड व्यक्ति अपनी मोटर उधरसे ले जाये तो आपको ओर मुझे कैसा लगेगा? मै वह प्रथा जानता हूँ जिसके अन्तर्गत बिरादरी-भोज दिये जाते है। जिस सडकपर भोज दिये जाते है उस सडकपर सब प्रकारका यातायात बिलकुल रोक दिया जाता है ताकि भोजन करनेवाले अपना भोजन पूरी शान्तिके साथ कर सके और खाना परसा जा सके। जैसा कि मै बार-बार कह चुका हूँ, शुद्धीकरणका आन्दोलन हमारे हृदयकी गहराइयो तकमे प्रवेश करता है। मैने सवर्ण हिन्दुओसे यह नही कहा है कि वे हरिजनोके सामने उनके सरक्षकोकी भाँति आये और अपनी थालीकी जूठन उनके सामने फेके। मैने उनसे कहा है कि वे अपने हृदय हरिजनोके लिए खोले और उनमे उनके लिए जगह बनाये। आज जो कुछ मैने देखा वह तो एक सरक्षकका अपने आश्रितोके प्रति किया जानेवाला काम था। और क्या आप जानते है, न केवल मेरी मोटर भोजन करते हुए लोगोकी पक्तियोके बीचसे निकाली गई बल्कि अन्य मोटरे भी पीछे-पीछे गुजरी, और उनके पीछे-पीछे आनेवाली भीड भी वहीसे गुजरी। और मैने देखा कि उन गरीब लोगोके लिए उड रही धूलसे अपने भोजनको बचा पाना कठिन हो रहा था। कममे-कम कहा जाये तो यह दृश्य शोभनीय नही था। इसे देखनेकी विवशतासे मुझे जो दुख हुआ उसे अब आप समझ सकते है।

मै जानता हूँ कि इस कार्यके पीछे कोई बुरी नीयत नही थी। मै यह भी जानता हूँ कि एक भी व्यक्तिको इन हरिजनोका जिन्हे कि मुफ्त भोजन दिया गया था, अपमान करनेकी इच्छा नही थी। मै यह भी समझता हूँ कि जो लोग मुझे उस सडकसे ले गये, उन्होने सोचा था कि भोजन करते हुए हरिजनोके बीचसे गुजरनेमे मुझे खुशी होगी। मै जानता हूँ कि इसमे अविचार मात्र था, और कुछ नही। जैसा कि हमे शास्त्रोमे बताया गया है, धार्मिक जीवन व्यतीत करना तलवारकी धारपर चलनेके समान ह और करोडो मनुष्योमे शुद्धीकरणके इस विश्वव्यापी आन्दोलनमे एक भी अविचारपूर्ण कार्य पापका स्वरूप धारण कर लेता है। इसलिए इस हरिजन

आन्दोलनके सम्बन्धमे किया गया हमारा प्रत्येक कार्य सूक्ष्म नियम-निष्ठता, अत्यन्त सावधानी और आत्मनिरीक्षणके साथ किया जाना चाहिए। इस दृश्यको देखनेके बाद मैने सोचा कि इसका सार्वजनिक रूपसे उल्लेख न करना मेरे लिए गलत होगा। आपका ध्यान इस ओर दिला कर मैने आत्म-शुद्धीकरणके इस आन्दोलनमे भाग लेनेवालोको चेतावनी दी है कि आज सुबहके इस दृश्यकी पुनरावृत्ति न होने पाये।

इसके साथ ही अब मै आता हूँ इस विषय पर कि भारत-भरमे हम लोग आज क्या कर रहे है। मुझे तनिक भी सन्देह नही है कि अस्पृश्यता हिन्दू-धर्म पर एक बहुत बडा कलक है। यदि शास्त्र ईश्वरकी इच्छाका प्रतिनिधित्व करते है तो उनमे अस्पृश्यताके लिए कोई स्थान नही हो सकता, ऐसी अस्पृश्यता जिसका कि भारतके अतिरिक्त ससारमे कही जवाब नही मिलता। स्वार्थवृत्तिसे यदि हम अपनेको ऊँचा और दूसरोको नीचा समझे तो यह स्वयमे काफी खराब बात है। लेकिन जब हम अस्पृश्यता जैसी बुराईमे धर्मका पुछल्ला जोड दे तो यह बात दूनी खराब हो जाती है। इसलिए जब विद्वान पडित आगे आकर अस्पृश्यता जैसी स्पष्ट बुराईके समर्थनमे शास्त्रोकी दुहाई देते है तब मुझे दुख होता है। मै पहले भी कह चुका हूँ, और आज फिर कहता हूँ कि हम हिन्दू लोग परीक्षाकी अवधिसे गुजर रहे है। हम चाहे या न चाहे, अस्पृश्यता जा रही है। यदि परीक्षाकी इस अवधिमे हम अपने पापोके लिए प्रायश्चित करे, यदि हम अपने आपको शुद्ध बनाये और अपनेमे सुधार कर ले, तो इतिहासमे यह एक कार्य हिन्दुओ द्वारा शुद्धीकरणका एक अत्यन्त महान् कार्य माना जायेगा। किन्तु यदि समयकी गतिके प्रभावसे हमे अपनी इच्छाके विरुद्ध कार्य करने पर विवश होना पडा और हरिजन लोग अपने सच्चे स्वरूपको प्राप्त कर लेते है तो यह हिन्दुओ या हिन्दु-धर्मके लिए कोई यशकी बात नही होगी। लेकिन मै इससे एक कदम आगे जाकर कहता हूँ कि यदि हम इस परीक्षामे विफल हुए तो हिन्दू-धर्म और हिन्दू-जाति नष्ट हो जायेगी।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ५-१-१९३४

४३२. टिप्पणियाँ

बार-बार वही प्रश्न

यह आश्चर्यकी बात है कि जहाँ-जहाँ मै जाता हूँ, मुझसे बार-बार यही एक ही प्रकारके प्रश्न पूछे जाते है और ऐसे प्रश्न वे लोग भी पूछते है, जो या तो 'हरिजन' अथवा 'हरिजन-सेवक' पढनेवाले समझे जाते है, या मेरे उन सामान्य उत्तरोसे परिचित है, जो मै अक्सर देता रहता हूँ। किन्तु जबतक ये प्रश्न मेरे सामने आते रहेगे, मै अवश्य ही उनपर अपने विचार प्रकट करता रहूँगा। मुझे आशा है, कि मेरे विचारोको जो पाठक जानते है, वे इन पृष्ठोमे मेरी इन पुनरुक्तियो पर ध्यान न देगे। उन प्रश्नोके दोहरानेकी मुझे कोई जरूरत मालूम नही पडती। उन प्रश्नोकी रूपरेखा नीचेके उत्तरोसे ही स्पष्ट हो जायेगी।

(१) मन्दिर-प्रवेशके सम्बन्धमे किसी भी प्रकारकी बाध्यता तो हो ही नही सकती।

(२) सम्बन्धित मन्दिरके न्यासियोके, अथवा मूर्तिपूजामे विश्वास रखनेवालो और उस मन्दिरमे पूजा करनेका हक जिन्हे हासिल है, उन लोगोके विशुद्ध बहुमतकी स्वीकृतिके बिना कोई भी मन्दिर हरिजनोके लिए न खोला जायेगा।

(३) मन्दिर-प्रवेश-विधेयक या अस्पृश्यता-निवारक-विधेयकमे किसी भी तरहकी कोई बाध्यकारिता नही है। मन्दिरमे जानेके जो नियम दूसरे हिन्दुओके लिए निर्धारित है, हरिजनोके लिए भी वे ही नियम लागू होगे।

(४) अगर कोई व्यक्ति मुझे यह सन्तोष करा दे, कि जैसी अस्पृश्यता आज बरती जाती है वह 'शास्त्रविहित' है, तो मै फौरन इस आन्दोलनको छोड दूंगा।

(५) लेकिन मेरा निश्चित विश्वास तो यह है कि वर्तमान अस्पृश्यता एक अमानुषी प्रथा है। इसकी जडमे स्वार्थपरता और जिनका दमन सरलतासे किया जा सके, उन लोगोका शोषण करनेकी इच्छा है।

(६) जैसा कि इन पृष्ठोमें खूब अच्छी तरह सिद्ध किया जा चुका है, मर्दुमशुमारी करनेवाले अधिकारी, अछूतोकी सृष्टि करते है।

खिलौने भेंट मत कीजिए

खिलौने आदि भेंट करनेमे आन्ध्र देश सब प्रान्तोसे आगे है। कुछ लोग छोटे-छोटे चाँदीके प्याले देते है, कोई थाली देता है, और कुछ लोग सजावटकी कोई ऐसी चीजे भेट करते है जिन्हे आसानीसे एक जगहसे दूसरी जगह लेकर नही जाया जा सकता। बहुत-सी चीजे ऐसी होती है जिन्हे मै मौके पर लोगोको खरीदनेके लिए राजी नही कर पाता, और हमारे उद्देश्यके खयालसे वे कितनी ही लुभावनी क्यो न हो, लेकिन उन्हे साथ लादकर ले चलना और उनकी गिनती रखना एक तवालत

बन जाता है। इसलिए मै आयोजन-कर्ताओसे अनुरोध करूँगा कि ऐसी भेटे देनेका यदि वे निषेध नही भी करे तो कमसे-कम उसको प्रोत्साहन भी न दे। कई जगहो पर बडे-बडे फ्रेम और चित्र भेट किये गये है। ये बिलकुल बोझ बन जाते है और इन्हे बाजारमे बेचा भी नही जा सकता। फ्रेम तो किसी भी हालतमे भेट नही किये जाने चाहिए। मै चाहूँगा कि मेरा यह दौरा जिस गम्भीर उद्देश्यसे किया जा रहा है उसकी गम्भीरता कायम रहे, कामकी ही बाते हो, और किसी भी मामलेमे कोई बर्बादी न की जाये। मै यहाँ कह दूँ कि थेलियाँ भेट करते समय जहाँ तक सम्भव हो सिक्कोकी जगह नोट ही दिये जाये। तेजीसे यात्रा करते समय, जिसमे एक दिनमे दससे पन्द्रह जगहोका दौरा हो जाता है, रोज के-रोज रेजगारी गिनना और सही हिसाब रखना कठिन होता है। हालाँकि हिसाब-किताब रखनेवाले व्यक्ति अपने कामके प्रति समर्पित व्यक्ति है लेकिन उनके ऊपर बहुत ज्यादा काम रहता है और अक्सर रोजका हिसाब दुरुस्त रखनेके लिए उन्हे रातमे देर तक काम करना पडता है। छोटीसे-छोटी तफसीलका खयाल रखे बिना, और कार्यकर्त्ताओ और स्वयसेवकोके सूझ-बुझपूर्ण सहयोगके बिना अखिल भारतीय हरिजन सेवक सघ जैसे बडे सगठनको अच्छे ढँगसे और कम खर्चमे नही चलाया जा सकता।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २९-१२-१९३३

४३३. मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी

यह सोसायटी कलकत्तेमे, सन् १९२३ मे, स्थापित हुई थी। श्रीयुत हरखचन्द द्वारा भेजी हुई उडीसाके बाढ-सकट-निवारणकी जो रिपोर्ट 'हरिजन-सेवक'मे प्रकाशित हुई है, उसमे इस सोसायटीकी बहुमूल्य सेवाओका उल्लेख आया है। दिल्लीसे बैजवाडा जाते हुए रास्तेमे उस दिन पलवल स्टेशन पर मुझसे उक्त सोसायटीके कुछ कार्यकर्त्ता मिले थे। ये लोग गुडगाँव जिलेमे बाढ-पीडितोकी सेवा-सहायता कर रहे है। स्टेशन पर उन्होने मुझे अपने कार्यकी ब्यौरेवार विवरण-पत्रिका दी और मुझसे कहा कि इसे आप पढेगे, तो मालूम होगा कि हम लोगोने स्पृश्यो और अस्पृश्योमे कोई भेद नही रखा है, बेचारे असहाय हरिजनो पर तो हमने खास तौर पर ध्यान दिया है। इस विवरण-पत्रिकामे १९ नवम्बर, १९३३ से १३ दिसम्बर, १९३३ तकके सेवा-कार्यका उल्लेख है। १४४ गाँवोमे सोसायटीके सेवकोने काम किया है। ४०९८ बाढ-पीडितोको इन भाइयोने २८०९ सोढ, १८४६ कुर्ते, १२५६ घाघरे, और ८७२ मन ५ सेर अनाज बाँटा है। खुजली, फसलीबुखार, खाँसी आदिके ३०५२ रोगियोको दवा-दारू दी है। जहाँ जरूरत मालूम हुई, वहाँ मरीजोको दूध, जौ, साबूदाना वगैरा भी दिया गया है। बाढसे ढहे हुए मकान फिरसे बनवाये जा रहे है। सोसायटी वहाँ इन सात केन्द्रोमे काम कर रही है—पलवल, दिघौट, बन्नीखेडा, बनचारी, होडल, हसनपुर और गुलाबाद। सोसायटीको तथा उसके उक्त सातो

केन्द्रोमे काम करनेवाले नवयुवक सेवकोको मै धन्यवाद देता हूँ। सोसायटीने जिन हरिजनो और गैर-हिन्दुओको सहायता दी है, उनके ऑकडे भी विवरण-पत्रिकामे अलग दिये हुए है। सामान्य सकट-निवारणके समय भी, मनुष्योके बीचमे जबतक भेदभावकी यह वाहियात मनोवृत्ति कायम रहेगी, तबतक दुर्भाग्यसे इस अभागे देशमे हिन्दुओ, हरिजनो और गैर-हिन्दुओका अलग-अलग उल्लेख आवश्यक है और रहेगा।

हरिजन सेवक, २९-१२-१९३३

४३४. पत्र : मनु गांधीको

२९ दिसम्बर, १९३३

चि० मनुडी,

तेरा लम्बा पत्र पढकर प्रसन्नता हुई। तेरी याद रोज ही आती है। कुसुमसे कहना, मै कहाँ अब तेरे कामका रह गया हूँ। मेरी सम्हाल करके तू क्या करेगी? रामनाम लेती जा जिससे शान्ति रहेगी। तू उसे राम नाम सिखाना। उसके पास राम-धुनका गान किया कर। तू तो बहुतेरे भजन गाती है। बली मौसीको मै क्या आश्वासन दूँ? मुझे यदि फुरसत हो तो मै उसके पास खडा रहूँ और घर भी चलाऊँ तथा उसे चिन्ता-मुक्त कर दूँ। पर ऐसे सम्बन्ध जम पाना अब इस जीवनमे तो सम्भव ही नही है। मृत्युके सम्बन्धमे तू जो लिखती है वह बिलकुल सच है। हम सभीको उससे भेट तो करनी ही है।

बापूके आशीर्वाद

चि० बलीबहन
मा० हरिदास वोराका मकान
हाईस्कूलके पीछे
राजकोट, सी० एस० काठियावाड

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० २६६४) से, सौजन्य मनुबहन मशरूवाला

४३५. पत्र : मार्गरेट स्पीगलको

३० दिसम्बर, १९३३

चि० अमला,

हमे सहज बनना चाहिए। तुम्हे भी तभी पत्र लिखना चाहिए जब तुम्हारा मन हो और मै भी जब फुर्सत हो तब पत्र लिखूँ। एक भी दिन ऐसा नही जाता जब मै तुम्हे याद नही करता। मुझे खुशी है कि तुम निरन्तर प्रगति कर रही हो। मै चाहूँगा कि तुम अपने-आपको पूर्णत सुरक्षित महसूस करो और घबराओ नही। तुम्हे मुझे अपने विद्यार्थियोके बारेमे सब कुछ बताना चाहिए। क्या रामदास और उसकी पत्नीसे तुम्हारी भेट अक्सर होती रहती हे?

सस्नेह,

बापू

[पुनश्च]

मेरा स्वास्थ्य बहुत अच्छा चल रहा है, खुराक पहले जैसी ही है।

[अंग्रेजीसे]

स्पीगल पेपर्स, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

४३६. पत्र : रुक्मिणीदेवी बजाजको

३१ दिसम्बर, १९३३

चि० रुक्मिणी,

तेरा कार्ड मिल गया है। मैंने तुझे एक पोस्टकार्ड यात्रामे लिखा है सो तुझे नही मिला जान पडता है। सन्तोकका पत्र इन दिनो नही है। जमनालालजीसे मिली यह ठीक हुआ। तुझे मारवाडीमे बातचीत करना आ गया? हिन्दी तो बहुत ठीक हो गई होगी। मेरे साथ ओमके अलावा किसनबहन है। इसके बारेमे मै तुझे लिख चुका हूँ कि यह प्रेमाबहनकी सखी है। मुझे सरदी बनी रहती है।

तुम दोनो को,

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१५६)से।

४३७. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

कडप्पा स्टेशन
१ जनवरी, १९३४

बा,

मैंने पिछली बार तुझे जो प्रवचन लिखा था[1] उसकी एक प्रति मुझे भेजना। तेरा पत्र आज ही मिला। मै यह पत्र मौनवारके दिन लिख रहा हूँ। मणिलालकी चिन्ता न कर। उसे तेरे पत्र भेजता हूँ। प्रागजीके कहनेसे घबरा उठनेकी कोई बात नही। दोनो प्रौढ है। यदि कोई भूल हुई होगी तो वे स्वय ही सुधार लेगे। 'जामेजमशेद'की व्यवस्था तो मैंने की है। मथुरादासने लिखा है कि व्यवस्था हो गई है इससे मैंने इस दिशामे और कुछ नही किया। उम्मीद है अब तो तुझे वह मिलता ही होगा। फिर भी जाँच कर रहा हूँ। 'रामायण' और 'भागवत'के बारेमे तजवीज कर रहा हूँ। प्रेमलीलाबहनसे मँगवानेमे तनिक भी सकोच न करना। और फिर तुझे मॅगवाना भी क्या है? जो थोडा-बहुत तुझे चाहिए वह वे लोग बडे आग्रहके साथ भेजेगे लेकिन जिस चीजकी तुरन्त ही जरूरत न हो वह मुझसे मॅगवा लेना ठीक होगा। मै बन्दोबस्त कर लूँगा। दाँतोसे खा सकती है क्या? पोटेशियम परमगनेटके पानीसे कुल्ला करती है? ठक्कर बापा इस बार मेरे साथ नही है। १५ तारीखको मिलेगे। फिलहाल मेरे साथ मलकानी है। यह भी खूब काम कर रहा है। अन्य सब लोग तो करते ही है। चन्द्रशकर ठीक रहता है। ओम, किसन अपने शरीरका बराबर ध्यान रखती है। ओमसे जितना बन पडता है मेहनत करती है। बहुत भोली और सरल है। किसन भी वैसी ही है। सुरेन्द्रके शरीरमे ताकत आ गई है। आन्ध्र प्रदेशकी मुसाफिरी ३ तारीखको पूरी होगी, बादमे मैसूर जाना होगा। मै जहाँ रहता हूँ वहाँ व्यस्तता तो रहती ही है, कुछ दिक्कते भी होती है। मेरी देखभाल तो सब लोग कर लेते है इसलिए मुझे दिक्कत कम ही होती है। मेरी छोटीसे-छोटी आवश्यकताका भी मीराबहन ध्यान रखती है इसलिए मुझे मुसाफिरीकी असुविधाएँ नही होती। यदि तू लोगोसे मुलाकात करना बन्द करेगी तभी मुझसे हर हफ्ते पत्र पा सकेगी। मै तो प्रवचन हर सप्ताह भेजा ही करूँगा। दूसरी बहनोसे जो लोग मुलाकात करने आये उनसे ही सन्तोष प्राप्त करना। लेकिन जैसी तेरी इच्छा हो वैसा करना। यदि तू मुलाकात करना ही चाहे तब तो तुझसे मिलने आनेके लिए बहुत लोग तैयार होगे और वह मिलना चाहेगे भी। हमने जानबूझकर मुलाकात कम रखनेका रिवाज रखा है। लेकिन तेरी जो इच्छा हो सो मुझे निस्सकोच लिखना। जानकी बहन ठीक है। उसके लडके रामकृष्णके टासिल कटवानेकी बात मै बहुत करके तुझे लिखा है।

१ २५ दिसम्बर, १९३३ को।

कमला अब खुराकपर आ गई है। किशोरलालका बुखार अभी पीछा नही छोडता। लेकिन चिन्ताका कोई कारण नही। मेरा मौन आजकल रविवारकी रातसे शुरू होता है। इसलिए सोमवारकी रात तक नही बोलना पडता। आज रातको ९ बजकर १० मिनट पर मौन छूटेगा। इसलिए किसीसे बात करनेका कदाचित ही समय मिलेगा क्योकि बादमे तो सोनेका समय हो जायेगा। सबेरे तीन बजे तो उठना होता है। ब्रजकृष्णका बुखार अब उतर गया है, ताकत अभी नही आई है। हेमीबहनकी मृत्यु हो गई है। अब प्रवचन।

पिछली बार मैने भक्तके लक्षण लिखे थे। और यह भी बताया था कि सेवा बिना भक्ति नही होती। इस बार सेवा कैसे की जाये, मै इस पर लिखूँगा क्योकि लोग बहुत बार यह प्रश्न करते है। कोई कहते है कि सेवा अमुक परिस्थितिमे ही हो सकती है। किसीका कहना है कि यदि हम अमुक अभ्यास करे तभी सेवा कर सकते है। ये सब तो कोरी भ्रान्तियाँ है, यह तो मैने पिछले सप्ताह बताया था। मनुष्य चाहे किसी भी स्थितिमे हो, वह सेवा कर सकता है। हमारे पास जितनी सारी शक्ति है वह सब हम ईश्वरार्पण कर दे तो हमे पूरे अक मिले। जिसकी सामर्थ्य करोड देनेकी हो यदि वह केवल आधा करोड ही देता है तो उसे ५० अक से ज्यादा नही मिल सकते, लेकिन जिसके पास एक दमडी मात्र है और वह दमडी भी देता है तो उसे शत प्रतिशत अक मिलेगे। इसलिए यदि तुम और तुम्हारे साथ जो अन्य बहने है अपने सम्पर्कमे आनेवाली बहनो अथवा अधिकारियोसे अच्छा व्यवहार करती हो तो तुम सेवाधर्मका पालन करती हो। अधिकारियोके प्रति सेवाभाव रखना अर्थात् उनका कभी बुरा न चाहना, उनके साथ विनयपूर्ण आचरण करना, उन्हे धोखा नही देना। तुम्हे नियमोका पालन करना चाहिए, और उसी तरह अपने सम्पर्कमे आनेवाली अपराधी बहनोके प्रति सगी बहनो-सा बर्ताव करना चाहिए। उनपर तुम्हारे प्रेमकी छाप पडे। वे तुम्हारी पवित्रताको पहचाने, यह भी सेवा धर्मका पालन करना कहा जायेगा। दोनोमे उद्देश्य शुद्ध होना चाहिए। स्वार्थ बुद्धि अथवा भयके कारण अच्छा व्यवहार रखना सेवामे नही गिना जाता। एक मनुष्य अमुक कार्य स्वार्थ साधनेके लिए करता है और दूसरा परमार्थकी दृष्टिसे करता है, ऐसा हम अनेक बार देखते है जहाँ सब कुछ ईश्वरको समर्पित है वहाँ स्वार्थको कोई स्थान नही है। इस तरह सेवा करनेवाला नित्य अपनी शक्तिमे वर्धन करता है। वह जो अभ्यास करता है, उद्यम करता है, वह भी सेवाभावसे ही करता है। इस तरह जो सेवा परायण रहता है, उसके हँसने-खेलने और खाने-पीनेमे भी सेवा भाव रहता है। तात्पर्य यह कि उसके सब कार्य निर्दोष होगे। ऐसे भक्तोको ईश्वर समस्त आवश्यक शक्ति प्रदान करता है। इस आशयके तीन श्लोक स्त्रियोकी प्रार्थनामे है, वे याद होगे। वे श्लोक ये रहे।

अनन्याश्चिंतयंतो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥[1]

1. भगवद्गीता, अध्याय ९, २२।

मच्चिता-मद्‌गतप्राणा बोधयंतः परस्परम्।
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यति च रमन्ति च।।[1]
तेषां सतत युक्तानां भजता प्रीतिपूर्वकम्।
ददामि बुद्धियोगं त येन मामुपयाति ते।।[2]

इसका अर्थ अनासक्तियोगमे से देख लेना। ये श्लोक तुम्हे नवे और दसवे अध्यायमे मिल जायेगे। 'गीता'का अध्ययन हम इसलिए करते है ताकि हम उसके अनुरूप आचरण करे। यह याद रखना चाहिए। मैने उपर जो लिखा है वह 'गीता' के आधारपर ही लिखा है, ऐसा समझना। सबको

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना बाने पत्रो, पृष्ठ ४-६

४३८. पत्र : प्रभावतीको

१ जनवरी, १९३४

चि० प्रभावती,

तेरे पत्रका उत्तर मै जल्दी न दे पाया। समय तो मुझे सवेरे तीन बजे मिलता है वह अथवा जो ट्रेनमे मिल पाता है सो। यह पत्र मै ट्रेनमे लिख रहा हूँ। जबतक तेरा स्वास्थ्य सुधर नही जाता तबतक तो और कोई सवाल ही नही उठता। पिताजीके पास यदि पैसेकी सुविधा हो तो उनसे मदद माँगनेमे सकोच नही करना चाहिए। उनकी स्थिति फिलहाल कैसी है सो मै नही जानता। तुझे उनसे स्पष्ट बात कर लेनी चाहिए। पिताजीकी आर्थिक स्थितिको जाननेमे सकोचकी कोई बात नही। यदि वह कुछ मदद देनेकी स्थितिमे न हो तो मुझे लिखना, मै तुरन्त कोई-न-कोई बन्दोबस्त करूँगा।

उपर्युक्त अश ट्रेनमे लिखा गया था, अब अधूरे पत्रको पूरा करता हूँ।

उम्मीद है, जयप्रकाशको उपचारसे लाभ हो रहा होगा। तुम दोनोके खर्चका क्या बन्दोबस्त हुआ, यह तो तुमने लिखा ही नही। कर्जके सम्बन्धमे क्या किया, सो भी नही बताया।

मेरी तबीयत अच्छी रहती है। खुराक पहले जैसी है। वजन तो नही लिया लेकिन मै समझता हूँ इसमे अवश्य कुछ वृद्धि हुई होगी। मीराबहन ठीक है। वह तो मेरी सेवाके अलावा और कुछ नही करती, सभाओमे भी नही जाती। ओम और किसन उसकी मदद करते है। कभी-कभी वे दोनो सभाओमे आती है। किसन

१ और २. **भगवद्‌गीता**, अध्याय १०, ९ और १०। देखिए खण्ड ३२, पृष्ठ २८४।

ठीक होती जा रही है। रामनारायणकी तबीयत अच्छी जान पडती। जबतक हो सकेगा तबतक वह गाडी खीचेगा।

बा के पत्र आते है। रणछोडभाई[1] की पुत्री रमाका विवाह हो गया है। वह और उसका पति मुझे एल्लोरमे मिल गये थे और आशीर्वाद ले गये। मणिबहनकी कोई खबर नही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३४३८) से।

४३९. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको

१ जनवरी, १९३४

चि० मणिलाल और सुशीला,

तुम्हारा पत्र आना चाहिए था सो नही आया। मैने लम्बे पत्र लिखे है वे मिले होगे। बा जेलमे बैठी-बैठी तुम्हारी बडी चिता किया करती है। प्रागजीने कुछ बाते की जिससे वह घबरा गई है। बा मानती है कि तू, मणिलाल, सभीके साथ झगडा कर बैठा है। पर मै ऐसा कुछ नही मानता। यह तो सिर्फ बा लिखती रहती है इसलिए लिखता हूँ। बा की इच्छा है कि मै उसीके शब्द लिखूं। वह जेलमे पडी है और एक पत्र लिख सकती है इसलिए उसके पागलपन भरे विचार हो तो भी उनका अमल कर लेनेकी मेरी इच्छा रहती है, इसीलिए मै लिख रहा हूँ।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा रहता है। सारा ब्यौरा 'हरिजन'मे तो आता ही है।

नानाभाई बीमार बने ही रहते है। किशोरलालको बुखारने धर दबाया है सो छोडता ही नही है। मै समाचार प्राप्त करता रहता हूँ। कुछ ही दिनोमे ठीक हो जायेगा ऐसा मानता हूँ।

सन्तोककी माँ गुजर गई है। काशीकी बहन हेमी भी गुजर गई है। देवदास ठीक है और छूटनेके बाद लक्ष्मीकी जचकीके लिए मद्रास जायेगा।

वहाँके झगडेके सम्बन्धमे अब मुझे कुछ भी लिखना शेष नही है।

बा के पत्रकी नकल ओमने की है। इसलिए असल प्रति तुझे ही भेज देता हूँ वरना उसे रामदासको भेजनेका विचार किया था।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८१३) से।

१. रणछोडलाल सेठ, अहमदाबादके मिल-मालिक।

४४०. पत्र : पेस्टनजीको

१ जनवरी, १९३४

भाई पेस्टनजी,

आपके बारेमे काका साहबने मुझे एक खास पत्र लिखा था। आप जो मेरे पास आ जाये तो मुझे जरूर अच्छा लगेगा। यदि भ्रमण आपको रुचता हो तो सारी मुसाफिरी मेरे साथ घूमे। हमारी रहनी तो सादगी पूर्ण ही होगी। तीसरे दर्जेमे यात्रा करते हैं। काम तो रात-दिन बना ही रहता है। मजदूरी भी करनी ही पडती है। भोजन और निवासके लिए जैसा कुछ मिल पाता है उसीसे चलाना होता है। यदि आपका शरीर अच्छा कसा हो और रहनी सादी हो तो आपको रुचेगा। आपकी हिम्मत हो तो आप आ जाये और अनुभव ले जाये। आपके जैसे कुशल और निखालिस प्रकृतिके नवयुवकको अपने पास खीचना मै अवश्य चाहूँगा। यदि आये तो तार कर दे। हम लोग सात-एक दिन मैसूर स्टेटमे दौरा करनेवाले हैं। अत यदि आप आये तो बगलौरका टिकट ले। बगलौरमे आपको समाचार मिलते जायेगे कि मै दौरेपर कहाँ हूँ। मुझे बगलौर ही तार दे। मै जहाँ भी होऊँगा, तार मिल जायेगा। और मै बन्दोबस्त कर ही लूँगा। और आपको बगलौर स्टेशनपर कोई मिल जायेगा। कदाचित् तार न भी मिले पर तो भी आपको कोई अडचन नही होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकलसे (जी० एन० ८०४६)।

४४१. पत्र : सुरेन्द्र मशरूवालाको

१ जनवरी, १९३४

चि० सुरेन्द्र,

तू रो पडा था और मारके डरसे पीछे बम्बई गया, यह मुझे मालूम हुआ। इसमे घबराने या शरमानेका कोई कारण नही है। सत्रह-अट्ठारह वर्षकी उम्र तक मै कितना डरपोक था यह तो तूने पढा ही है। पर मेरी इतनी सलाह जरूर है कि तू शरमके मारे जेल मत जाना। इस बार तो कुछ ही लोगोको बार-बार जेल जाना है। तुझे यदि अपने मनको परखना हो तो अच्छी तरह परखकर, वापस घर जाना चाहता हो तो जा। वही सेवा कर और फिर जब तुझे ईश्वर प्रेरणा दे और पूरी हिम्मत भी, तब जाना। इतना निश्चित समझ कि जो सब-कुछ ईश्वरको समर्पित

कर देता है उसे भार सहन करनेकी शक्ति भी ईश्वर देता ही है। पर ऐसी हिम्मत बुद्धिके जरिये नही मिल पाती। यह तो ईश्वरकी प्रसादी है और वह उसके भक्तोको मिला ही करती है। तुझे जैसा सहज-सुगम लगे वैसा करना, मुझे पत्र देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५२७) से, सौजन्य मनुबहन मशरूवाला

४४२. पत्र : विद्या आनन्द हिंगोरानीको

१ जनवरी, १९३४

चि० विद्या,

तुमारा खत मिला। मैंने तुमको खत लिखा है उसका उत्तर नहि है। शायद बादमे मिली होगी।

मुझे तो विश्वास था ही कि काकाजी तुमको उत्तर देगे और अच्छा देगे।

यदि कराची जाना है तो दिनकी मुसाफरी अवश्य अकेली करो। डर किसीका मत रखो। विश्वास रखो कि ईश्वर रक्षा करनेवालाहै। मै तो तुमको निर्भय, उद्योगी, सबसे मिलनेवाली और शरीरमे मजबूत देखना चाहता हू। और यह सब तू बन सकती है उसमे मुझे सदेह नहि है।

महादेव कैसे है? दूध कितना पीता है? अब तकलीफ देता है? उसे घूमनेके लिए ले जाती है?

आनदके क्या खबर है? अभ्यास क्या करती है। हिंदी पुस्तक नित्य पढो। इग्रेजी भी जितना हो सके किया करो।

बापुके आशीर्वाद

मुल्तान तुमारे नजदीक है। देवदासको मिलोगी तो अच्छा होगा। लेकिन तुमारा दिल चाहे तब ही मिलो। न्यु सेट्रल जेलमे है। ओम, किसन मजेमे है।

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे, सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार तथा आनन्द टी० हिंगोरानी

४४३. पत्र : लक्ष्मी गांधीको

१ जनवरी, १९३४

चि० लक्ष्मी,

यद्यपी मैं बहूत बात तो न कर सका तो भी तुमारे मेरे साथ तीन दिन रहनेसे मुझे सतोष हूआ। तुमारी गमगीनी दूर होनी चाहिये। बा का खत आया है उसकी नकल भेजता हू। पढ सकती है तो पढकर देवदासको भेजो।

पापा[1] से कहो मुझे लिखे। अण्णा[2] के लिये खत[3] साथमे है।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २००३) से।

४४४. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

१ जनवरी, १९३४

चि० ब्रजकृष्ण,

यह क्या बात? एक तार मिला पीछे खत नहि। तार सतोषजनक था इसलिये मैंने तो मान लिया है कि अब तो बुखार बिलकुल नहि होगा, लेकिन मुझे सब हकीकतके साथ पत्र चाहिये। अगर इसके पहले कुछ नहि लिखा है तो एक तार भी भेजो। बैंगलोर भेजनेसे ठीक होगा। बैंगलोर सिटी करो। हम सब अच्छे है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४०५) से।

१ लक्ष्मी गाधीकी बहन।

२. लक्ष्मी गाधीके पिता च० राजगोपालाचारी। उनका लिखा पत्र उपलब्ध नहीं है।

३ पत्र उपलब्ध नही है।

४४५. वल्लभभाई पटेलको

कडप्पा (आन्ध्र)
२ जनवरी, १९३४

भाई वल्लभभाई,

आज इस समय ३ बजकर २० मिनट हुए हैं। दातुन करनेके बाद तुम्हारा स्मरण कर रहा हूँ। इस तरह उठनेसे लिखनेमें बहुत शान्ति मिलती है। दिनमें तो सोता ही हूँ। आजके दिन भी दौरेसे छुट्टी है। तुम चिन्ता न करना। मेरा स्वास्थ्य अच्छा ही रहता है।

और चूँकि तुम अपने बारेमें कुछ नहीं लिखते इससे ऐसा लगता है कि कहीं तुम मुझसे कुछ छिपाते हो। ऐसा न करना।

बा को मेरी ओरसे हर सप्ताह नियमपूर्वक पत्र जाता है और जाता रहेगा। उसकी माँगके मुताबिक ('गीता' पर) प्रवचन भेजता हूँ, ठीक उसी तरह जिस तरह यरवडा मन्दिरसे भेजा करता था।

महादेव अब एक ही पत्र लिख सकता है और एक ही प्राप्त कर सकता है और एक पत्रमें अनेक पत्रोंको खपानेकी कोशिश करता है। उसे जीवणजीकी मार्फत पत्र मिलेंगे। उसकी अच्छी परीक्षा हो रही है। इसमें भी एम० ए० की डिग्री हासिल करेगा। वह 'गीता' के अनुवादमें जुटा हुआ है।

किशोरलालके बारेमें तो तुम जानते ही हो। वह अभी भी बुखारका पीछा नहीं छोड़ता। अब उसने ही नाथ[1], स्वामी और गोमतीकी समिति नियुक्त की है। ये तीनों लोग जैसा कहेंगे वह वैसा ही करेगा।

बा का पत्र कल आया। उसकी नकल ओमने की है। एक तुम्हें भेज रहा हूँ। ओम अत्यन्त चंचल लड़की है। उसमें झटपट चीजें सीख लेनेकी हौंस भी है। शुद्ध हृदय की है इसलिए तरक्की कर रही है। किसन का स्वास्थ्य गड़बड़ा गया है। नहीं तो वह भी खूब काम करनेवाली है। सादी तो दोनों ही हैं। दोनों खूब घुल मिल गई हैं। कल राधाकान्त मालवीय आये थे। वह बर्फमें दूध सरक्षित करनेकी योजना लाये हैं और उसमें मेरा सहयोग चाहते हैं। ऐसे उपक्रममें मेरे सहयोगकी अपेक्षा रखना रेतसे मक्खन निकालना है। ये विलायत जाकर अनुभव प्राप्त कर लौटे हैं, यह बात तो तुम्हें मालूम ही होगी।

मलकानी खूब मेहनत कर रहा है। ठक्कर बापाकी स्थान-पूर्ति कर रहे हैं। सारा स्टाफ पूर्ण सन्तोष देनेवाला है। अभीतक तो काम अच्छी तरहसे चल रहा है।

१. केदारनाथ कुलकर्णी, किशोरलाल मशरूवालाके गुरु।

[1] अपने दॉत दिखाने लगा है [2] पर ठीक कब्जा प्राप्त कर लिया है। अब बहनोको हिस्सा नही देना चाहता [3] तीनोको दिया हुआ मुख्त्यारनामा रद करवाकर नया अपने नाम ही करवा लिया है। इसपर मैने उलाहना दिया। उसने मुझे उडता-सा उत्तर दिया है। अब मैने नानालालको लिखा है। इसका कुछ परिणाम निकलेगा, ऐसा नही लगता।

आनन्दी, बाबलो, बबु, मोहन, वनमाला, बचु और अमीनाके बच्चे अच्छी तरक्की कर रहे है। रामनारायण पाठक[4] हर हफ्ते तीन घंटे देते है। जमनादास (गाधी) दुबला-पतला रहता है। वह परेशान भी लगता है। सन्तोककी माँके देहावसानकी बात तो मै तुम्हे लिख ही चुका हूँ न? प्रभुदास अपने श्वसुरके गाँवके आसपास कही खादी कार्यमे लग जायेगा। अल्मोडामे रहते हुए बहुत ज्यादा खर्च बढ जानेकी सम्भावना है।

इस तरह आज जो-कुछ याद आता रहा सो पारिवारिक बजटका ब्यौरा देनेके बाद मै इस पत्रको समाप्त करता हूँ। मै मणिको पत्र तो लिखता हूँ लेकिन उसका हाल कही महादेव जैसा तो नही होगा? तुम्हे इसके बारेमे कुछ मालूम हो तो मुझे लिखना।

तुम दोनोको अथवा सबको,

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृष्ठ ५७-९

४४६. पत्र : मणिबहन पटेलको

कडप्पा[5]
सवेरे ४ बजेकी प्रार्थनासे पहले
२ जनवरी, १९३४

चि० मणि,

मुझे तेरी ओरसे पत्र सीधे ही मिला करेगे अथवा नही यह प्रश्न ही है। सरदारके जरिये तेरी खबर मिलती रहती है लेकिन मुझे उतनेसे सन्तोष नही होता। इससे डाह्याभाईको लिखता हूँ। तू लिख सके तो लिखना। शरीर और मनको स्वस्थ रखना। मै ठीक चल रहा हूँ। बा को हर हफ्ते नियमपूर्वक और लम्बा पत्र लिखा करता हूँ। आज तो सिर्फ इतना ही।

१, २ और ३ साधन-सूत्रमें नाम नहीं दिये गये हैं।
४. एक गुजराती लेखक, उस समय गुजरात विद्यापीठके प्रोफेसर।
५. साधन-सूत्रमें “कडका” लिखा हुआ है।

पत्र वर्धाके पतेपर लिखना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल, कैदी
हिंडलगा सेन्ट्रल प्रिजन
बेलगाम

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ४ : मणिबहेन पटेलने, पृष्ठ १६

४४७. पत्र : अमतुस्सलामको

२ जनवरी, १९३४

प्यारी बेटी,

मुझे अंग्रेजीमे लिखना होगा, क्योकि जो कुछ क्षण मै निकाल सकता हूँ उसीमे लिखना होगा। मै लिखूँ और तुम्हे खत न मिले, तो मुझे दोष नही देना चाहिए। पर कोई खत तुम्हे अगर न मिला, तो उसमे तुमने कुछ गँवाया नही है। मेरा सफर इतनी तेजीसे चलता है कि किसीका भी कसूर न होते हुए भी मेरे कुछ पत्र लापता हो जाये तो कोई आश्चर्य नही। लेकिन अगर मै लिखता नही हूँ, तो इसका मतलब यह नही कि मै तुम सबको बराबर याद नही करता हूँ। जरूर करता हूँ। परन्तु समयकी कमीके कारण मै बहुत थोडा लिखता हूँ और इसलिए भी कि दूसरोको लिखनेका मौका मिल सके। मैने किसी एकको खत लिखा तो वह सबको लिखा हुआ गिना जाना चाहिए।

जबतक तुम लोग रिहा होगी, मै भारतके धुर दक्षिणी भागमे सफर कर रहा होऊँगा। सिर्फ मुझसे मिलनेके लिए इतनी दूर तक तुम्हे आना ठीक लगता हो तो जरूर आओ। मेरी तुम्हे जोरदार सलाह तो यह होगी कि तुम-सयमसे काम लो और जो भी बात करनी हो वह पत्रोके जरिये करो।

अलबत्ता, तुम्हे अपनी अम्मासे और नारणदाससे भी मिलना चाहिए। दोनो नजदीक ही है। लेकिन अन्तिम निर्णय तो तुम्हे करना है। मै तुमको जो सलाह दे रहा हूँ वही सबके लिए है।

तुमने इतना अच्छा स्वास्थ्य रखा है, इसकी मुझे खुशी है।

वेलनबहन और दुर्गाबहन तथा लीलावतीकी भी खबर मिली है। रिहाई होनेपर वे सब मुझे लिखे। उम्मीद करता हूँ कि तुम सबने अपने समयका सदुपयोग किया होगा।

मेरा स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। आखिरी वजन १०८ पौड था। मेरी खुराक है दूध, संतरे और बिना नमककी सादी उबाली हुई एक सब्जी। जब आसानीसे

मिल जाये तो दूसरा फल भी लेता हूँ। वह या तो ताजे अगूर या अनार। सामान्य तौरपर आजकल मै खजूर नही लेता। मुझे उनकी जरूरत भी महसूस नही होती। मेरा काम भोर मे ३ बजे शुरू होता है और अक्सर रातको ९ बजे पूरा होता है। हॉ, दोपहरमे थोडी-सी नीद लेनेका प्रयत्न रहता है।

तुम्हारी हिन्दी और गुजरातीका लेखन खराब नही है। उम्मीद करता हूँ कि रमजानके रोजेसे तुम कमजोर नही हुई होगी। क्या अमीना भी कर रही है? उससे कहना कि उसके बच्चोके बारेमे समाचार मुझे अक्सर मिलते रहते हैं। और वे मजेमे है। अभी-अभी उनके उर्दूके उस्तादकी रिपोर्ट मुझे मिली है।

तुम सबको प्यार।

बापू

[पुनश्च]

ओम और किसन मेरे साथ है, और मजेमे है।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २८९) से।

४४८. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

२ जनवरी, १९३४

प्रिय सतीश बाबू,

आपके ३० दिसम्बरके पत्रसे मुझे बहुत राहत मिली है। आपको जो धन मिला है उसका उद्देश्य आपकी तगीको कुछ दूर करनेका था। आपको अधिकसे-अधिक इतना ही दिया जा सकता था। मै आशा करता हूँ कि आपके कार्यकर्त्ता अपने कार्यमे सफल होगे। यह बहुत ज्यादा थकाने और खिझानेवाला काम है। कार्यकर्त्ता लोग जितने हर्षपूर्वक चेक और रुपये स्वीकार करते है उतने ही हर्षपूर्वक उन्हे गालियाँ स्वीकार करनेके लिए भी तैयार रहना चाहिए।

यह विचार मुझे पसन्द आया कि डा० राय मेरे दौरेका कार्यक्रम खुद तय करे। आजके अखबारोसे मालूम हुआ कि उनके साथ कोई गम्भीर दुर्घटना हो गई है। उम्मीद है दुर्घटना उतनी गम्भीर नही है जितनी कि बताई गई है। मैने तार तो दिया है लेकिन आप मुझे पूरा ब्यौरा भेजियेगा।

मुझे खुशी है कि आपका जो वजन घट गया था वह अब फिर पूरा हो गया है। लेकिन आपकी काठीको देखते हुए १२८ पौड काफी नही है। कोई कारण नही कि आपका शरीर पहले जैसा सुन्दर और सुगठित न हो। शरीरको ईश्वरका साधन मानकर स्पष्ट और आवश्यक सीमाओके भीतर जहाँ तक हो सके वहाँ तक उसे स्वस्थ बनाये रखना आपका कर्तव्य है।

आशा है कि अरुण[1] ठीक चल रहा है। बगालकी यात्राके दौरान उसे मेरे साथ रहना होगा। लेकिन यदि उसका स्वास्थ्य खराब हुआ तो उसे ऐसा नही करने दिया जायेगा।

सस्नेह

बापू

[पुनश्च]

'हरिजन' के बगला सस्करणका क्या हुआ ?[2]

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १६२६) से।

४४९. पत्र : दूधाभाई मालजी डाफडाको

२ जनवरी, १९३४

भाई दूधाभाई,

तुम्हा पत्र मिल गया है। ईश्वरकी कृपासे सब कुछ ठीक हो जायेगा। लक्ष्मी[3] को बच्चा होनेवाला है यह तो मैने कल ही जाना। मैने सलाह दी है कि यदि कु० मजुकेशा बहन जवाबदारी लेती हो तो लक्ष्मीको प्रसूतिके लिए बारडोली जाना चाहिए। अन्यथा अहमदाबादके वाडीलाल अस्पतालमे करना चाहिए। वहाँ सारी सुविधाएँ है। और आश्रमकी बहने भी है जो ध्यान रख सकेगी। इस सम्बन्धमे तुमको कुछ कहना या सुझाव देना हो तो मुझे सूचित करना। मारुति[4] और लक्ष्मीका पत्र आनेपर मै भी निश्चय कर पाऊँगा। मैने व्यवस्था की है कि तुम्हे 'हरिजन-बन्धु' मिलता रहे। यदि न मिले तो तुम मुझे लिखना। सुन्दरजीभाई क्या मदद किया करते थे ? उनका पता देना। मै सब भूल गया हूँ। साबरमती हरिजन-आश्रममे कन्याश्रम चलता है। उसमे लडकियाँ भेजोगे ? यदि तुम तैयार हो तो मै पता चलाऊँ। कदाचित् भरती करेगे। सारे बच्चोको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

श्री दूधाभाई मालजी
हरिजन शिक्षक
साथरा, भावनगर स्टेट
काठियावाड

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२५१) से।

१. सतीशचन्द्रका पुत्र।

२. चूँकि बगला **हरिजन** अपने पैरों पर खड़ा नही हो सकता था, इसलिए गांधीजीने सतीशचन्द्रको सुझाव दिया था कि वह उसका प्रकाशन रोक दें।

३. दूधाभाईकी पुत्री जिसको गांधीजीने हरिजन-आश्रममें पाला था।

४. लक्ष्मीके पति।

४५०. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्ताको

२ जनवरी, १९३४

चिरंजी हेमप्रभा,

तुमारा खत मिला। खादी भी रामके अधीन है। खादीमे राम होगा तो चलेगी और हममे राम होगा तब ही खादी मे बसेगा। इसलिये हम खादीके लिये सब प्रयत्न करे लेकिन चिता न करे। चिता राम करेगा। चिता करनेका अधिकार उनका है सेवा करनेका धर्म हमारा है। जितनी चिता कम करेगी इतनी सफलता ज्यादा मिलेगी। लेकिन निष्फलतामे भी मैं तुमारे चेहरेपर प्रसन्नता ही देखना चाहता हू।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १७०६) से।

४५१. भेंट : हरिजन कार्यकर्त्ताओंसे[1]

कडप्पा
२ जनवरी, १९३४

गाधीजी हरिजन आन्दोलन बुराईकी जड तकको छूता है। यदि अस्पृश्यता दूर हो जाती है तो हमे आज जो जातियाँ दिखाई देती है वे भी खत्म हो जायेगी।[2]

हरिजन कार्यकर्त्ता: निश्चय ही नही।

मैं तो अस्पृश्यताके उग्र रूपकी बात कर रहा हूँ। लेकिन यह बुराई इतनी फैली हुई है कि यह किसी-न-किसी रूपमे सारे हिन्दू समाजमे व्याप्त है और उसे दूषित बना रही है। ऊँच-नीचका भेद ही अस्पृश्यताका मूल कारण है। यदि अस्पृश्यताका उग्र रूप नष्ट हो जाता है तो बची-खुची अस्पृश्यता भी अवश्य तिरोहित हो जायेगी। यदि ऐसा नही होता तो हमारा आन्दोलन केवल छलना-मात्र सिद्ध होगा। जबतक लोगोके दिलोसे ऊँच-नीचका विचार दूर नही हो जाता तबतक अस्पृश्यताको दूर हुआ नही कहा जा सकता।

हरिजन कार्यकर्त्ता: तब उस वर्णका क्या होगा जिसकी आप बहुत वकालत करते है?

गाधीजी मै उसकी वकालत तो अवश्य करता हूँ लेकिन तब आपको यह जानना चाहिए कि मेरी उसकी परिभापा क्या है। वर्ण-धर्मकी मेरी परिभाषा वर्तमान

१ इसे चद्रशकर शुक्लके "साप्ताहिक पत्र" में से लिया गया है।

२ एक हरिजन कार्यकर्त्ताने गाधीजीसे पूछा था कि क्या वे जाति-प्रथाको कायम रखनेके पक्षमें है।

जातिप्रथासे उतनी ही भिन्न है जितनी कि खडिया मिट्टीसे पनीर भिन्न है। वर्णधर्म, जैसा कि मै उसे समझता हूँ, एक आर्थिक नियम है, जो बराबर चालू है, भले ही हम इसे जानते हो या न जानते हो। इसके अनुसार चलनेसे मानव समाजका कल्याण होगा। इसकी अवहेलनाके कारण ही आज सारे ससारमे समाज-व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो रही है। वर्णधर्मका सिद्धान्त "जिसकी लाठी उसकी भैंस"के सिद्धान्तसे ठीक उल्टा है। यह ऊँच-नीचके सब भेदोका निराकरण करता है।

हरिजन कार्यकर्त्ता: लेकिन वर्णका जो अर्थ आप लगाते है वह अर्थ तो और कोई नही लगाता?

गाधीजी ऐसा हो सकता है। मनुष्यके विचारोका विकास ही वास्तवमे शब्दोके अर्थका विकास है। जिस मूल मन्त्रसे वर्णधर्मके सिद्धान्तकी व्युत्पत्ति हुई है उनमे और 'गीता' के जिन श्लोकोमे उसका उल्लेख हुआ है उनमे भी यही अर्थ देखनेमे मुझे कोई कठिनाई नही होती। अन्तर्जातीय भोज और विवाह-सम्बन्धी नियमोका वर्णसे कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नही है। वर्णधर्मका मुख्य लक्षण धन्धा है।

हरिजन कार्यकर्त्ता: तब तो आप चाहेगे कि हर व्यक्तिको केवल अपने बाप-दादोका धधा करना चाहिए।

गाधीजी न तो मै और न कोई अन्य व्यक्ति ही किसी पर कोई प्रतिबध लगा सकता है। वर्ण धर्म कोई मनुष्यका बनाया हुआ अपना कानून नही है जिसे वह जब चाहे लागू करे और जब चाहे उसे ढीला कर दे। मनुष्यकी उन्नत अवस्थामे यह सहज हो जाता है। वह चाहे तो उसकी अवहेलना कर सकता है लेकिन इससे उसको ही नुकसान होगा। हर कोई इसका पालन करने अथवा अवहेलना करनेके लिए स्वतत्र है। इसकी खोज भारतमे की गई थी और लोग ज्ञानपूर्वक तथा कमोबेश ईमानदारीके साथ शताब्दियोसे इसका पालन करते आये है। अभी भी अधिकाश लोग अज्ञानपूर्वक और लाचारीवश इसका पालन कर रहे है। वर्णधर्मके अनुसार ब्राह्मण और भगी दोनो एक समान है। एक भगीको भी, यदि वह अपना काम स्वेच्छासे और ईमानदारीके साथ करता है, ईश्वर प्यार करता है, और एक ब्राह्मण भी चाहे वह कितना भी विद्वान क्यो न हो, यदि वह अपना धधा नही करता तो ईश्वर उससे नाराज हो जाता है। कानून अधिकार प्रदान नही करता, बल्कि वह कर्त्तव्योकी व्याख्या करता है, कानूनका ठीक ढगसे पालन करने और उसे यथोचित रूपसे मान्यता प्रदान करने पर ही सच्चे लोकतत्रका विकास हो सकता है। इसलिए मेरे विचारसे, वर्णधर्ममे कोई बुराई नही है। हाँ, एक वर्णको दूसरे वर्णसे उच्च माननेमे बुराई है।

हरिजन कार्यकर्त्ता: निश्चय ही आप जिस वर्णधर्मकी बात करते है वह आपकी कोरी कल्पना मात्र है। जबकि ठोस सत्य तो यह है कि हम अपने चारो ओर सैकड़ो जातियाँ देखते है और हर जाति किसी दूसरी जातिसे उच्च होनेका दावा करती है।

गाधीजी दुर्भाग्यसे आप जो कहते है, वह ठीक है। लेकिन मैंने तो केवल आपके प्रश्नका उत्तर दिया है और जाति तथा वर्णधर्ममे जो महत्त्वपूर्ण अतर है सो बताया है। जातियाँ तो मनुष्यकी बनाई हुई है और ये दिन-ब-दिन कमजोर पडती जा रही है और नष्ट होकर रहेगी। और मैंने जिस वर्णधर्मकी व्याख्या की है वह भले ही मेरी कल्पनाकी उपज हो लेकिन व्याख्या इसकी काल्पनिक नही है। जिस मत्रके आधार पर इसकी कल्पना की गई है, वह व्याख्या उसमे निहित है और 'गीता' मे भी बहुत स्पष्ट शब्दोमे इसका उल्लेख किया गया है।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, १२-१-१९३४

४५२. भाषण: कड़प्पाकी सार्वजनिक सभामें

२ जनवरी, १९३४

कड़प्पामे गांधीजीको जो मानपत्र,[1] थैली और उपहार भेंट किये गये उनको स्वीकार करते हुए गांधीजीने कहा कि कड़प्पा नगरपालिकाने अपने यहाँ काम करने-वाले हरिजनोंके लिए सुन्दर घर बनाये हैं। हरिजन लोग इन घरोंको साफ और सुथरा रखते हैं। उन्होंने कहा कि मुझे यह देखकर खुशी हुई है कि उनकी बस्तीमें एक सहकारी समिति, एक मंदिर और जलकी पर्याप्त सुविधाएँ हैं।[2]

यह स्थान देखने योग्य है। मै नगरपालिकाको नगरके अत्यत उपयोगी सेवकोकी खातिर इस तरहके मकानोकी व्यवस्था करनेके लिए बधाई देता हूँ, अपनी इस यात्राके दौरान मैंने ऐसे मकान अन्यत्र नही देखें है। मेरी इच्छा है कि अन्य नगरपालिकाएँ भी आपका अनुकरण करे।

गांधीजीने तब सभामें उपस्थित लोगोंसे अनुरोध किया कि हरिजनोकी स्थितिको बेहतर बनानेके लिए आप लोग मेरे साथ पूरे मनसे सहयोग करें।

[अग्रेजीसे]
हिन्दू, ४-१-१९३४ और **हरिजन**, १२-१-१९३४

१ ये मानपत्र नगरपालिका, दलित वर्ग सघ और जिला बोर्डकी ओरसे दिये गये थे।
२. निम्नलिखित अनुच्छेद **हरिजन** से लिया गया है।

४५३. पत्र : जमनालाल बजाजको

[३ जनवरी, १९३४][1]

चि० जमनालाल,

कलकत्तेसे लिखा तुम्हारा पत्र मिल गया। लेकिन उससे यह नही समझ सका कि तुम सतीशबाबूसे मिले या नही। मिले तो होगे। यह भी नही लिखा कि तुम्हारी तबीयत कैसी रहती है। अब लिखना। शिवप्रसाद बच गये, यही बडी बात समझनी चाहिए। यात्रा ठीक तरह चल रही है। मेरा शरीर सोचा था, उससे ज्यादा काम दे रहा है। इसलिए चिन्ता करनेका जरा भी कारण नही है। ओमकी गाडी ठीक चल रही है। वह ऐसी नही है जो किसीको अपने लिए चिन्ता करने दे। मन्त्री-पदके लिए धीरे-धीरे तैयार हो रही है। इतनी जागरूकता अभी नही आई कि मुझे पूरा सन्तोष हो, परन्तु शरीरको खतरेमे डालकर उसके पीछे पडना नही चाहता। आसानीसे जितना काम कर सकती है, उतना ही लेता हूँ। किसन मेरे साथ है, यह तो तुम जानते ही होगे। बहुत भली लडकी है। ओमके साथ खूब घुल-मिल गई है। इसका शरीर जेलमे छीज गया, नही तो अच्छी मजबूत थी और मन चचल था। यात्रासे उसको फायदा हुआ मालूम होता है। इस बार मेरे साथ मलकानी है। इनके विषयमे तो पूछना ही क्या। मेहनत कर रहे है। दामोदर ठीक काम दे रहा है। वह मँजा हुआ है। अन्त्यज खातेसे रुपये दिल्ली भेजने थे, सो भेज दिये क्या? गोशीबहनको प्रतिमास कुछ भेजते रहना होगा। वह भी किसी खातेसे निकाल कर देना। मथुरादास जितने कहे, उतने देना। बम्बईसे पूरी रकम उनको मिलनी चाहिए थी, परन्तु उन लोगोने नही दी। अब मै पत्र-व्यवहार करूँगा, परन्तु इस बीच उसे रुपया अवश्य मिलना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

बुधवार, सुबह प्रार्थनाके पूर्व

जानकीबहन तुम्हारे क्रोधके बारेमे लिखती है सो क्या बात है? उसमे तथ्य हो तो उसे निकाल देना। ओमसे पूछा तो वह भी कहती जरूर है कि मदनमोहनको भी तुम कभी-कभी रुलाते हो।

तारा तो अच्छा काम देनेवाली है ही। उसका शरीर अच्छा रहेगा, तो वह मँज जायेगी। डॉ० शर्मा (दिल्ली)का तार है। उसने अपनी सम्पत्ति १० हजारमे बेची है और ऋणमुक्त हो गया है। अब वह आश्रममे आना चाहता है। अपनी पत्नीके

१. पुनश्च वाला अंश बुधवारको लिखा गया था। उस दिन तारीख ३ जनवरी, १९३४ थी।

साथ आयेगा। उसको मैंने सुझाया है कि वह तुमको लिखे। उसे अपनानेकी आवश्यकता प्रतीत होती है। यदि योग्य साबित हो तो अच्छा, नहीं जम पाये तो चला जायेगा।

मुझे विश्वास है तुम अपना स्वास्थ्य सम्हाल कर ही काम करते होगे। जानकी बाई सोमण[1] भी वहाँ रहना चाहती है। जहाँ विद्या आदि अन्य बहनें थी वहाँ उनकी व्यवस्था हो सकती है?

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९२८)से।

४५४. भाषण : पेड्डावाडगुरुमें

३ जनवरी, १९३४

महात्माजीने लोगोंको मानपत्र और थैलीके लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि मुझे इस रकम[2]को केशव विद्यानिलयमके लिए रखनेमें कोई आपत्ति नहीं होगी बशर्ते कि एक ठोस योजना और कार्यकर्त्ता मिल सके। यह स्कूल स्वर्गीय पी० केशव पिल्लेकी स्मृतिमें खोला गया था और इसमें छात्रावासकी व्यवस्था भी थी। गांधीजीने कहा कि जो भी पैसा इकट्ठा किया जाता है उसे निःसन्देह हरिजनोंको शिक्षा देने और उनके उत्थानके लिए अन्य सुविधाएँ प्रदान करनेपर खर्च किया जायेगा। शुद्धीकरणकी इस प्रक्रियाको सम्पूर्ण बनानेके लिए, हम सवर्णोको हरिजनोके प्रति किये गये अपने दुर्व्यवहार और पापोंके पश्चात्तापस्वरूप इस प्रक्रियासे गुजरना होगा। केवल अनुदान देना अथवा शारीरिक रूपसे छुआछूतको दूर करना भर पर्याप्त नहीं होगा। सबसे जरूरी तो यह है कि ऊँच-नीचका भेद स्पृश्य और अस्पृश्यका विचार भी लोगोके दिलोंसे दूर हो जाना चाहिए। यदि लोग अपने मनको वशमें रख सकें तो ऐसा करना आसान है। लेकिन सामान्यतः बात इससे ठीक उल्टी है और इसी कारण यह सारी मुसीबत है। यदि अस्पृश्यता बनी रही तो हिन्दू-धर्मका नाश हो जायेगा। मैं भगवानसे प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको हरिजन सेवा करनेके लिए और इस बुराईको दूर करनेके लिए पर्याप्त मनोबल और इच्छा शक्ति प्रदान करे।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ४-१-१९३४

१. डॉ० रामचन्द्र जे० सोमणकी माँ।
२. यह राशि रु० १,११६ थी।

४५५. महिलाओंके सम्मुख दिये गये भाषणोंके कुछ अंश[1]

[४ जनवरी, १९३४ से पूर्व][2]

महिलाओका सच्चा आभूषण उनका चरित्र है, शुचिता है। धातु और पत्थर कभी भी सच्चे आभूषण नही हो सकते। सीता और दमयन्ती जैसी महिलाओके नाम यदि वे कोई आभूषण पहनती थी तो उन आभूषणोके कारण नही, बल्कि उनके निर्मल गुणोके कारण हमारे लिए पवित्र हो गये है। मै आपसे अपने आभूषण देनेके लिए जो कहता हूँ सो उसका व्यापक महत्व है। कुछ बहनोने मुझे बताया है कि अपने हीरे-जवाहरातोसे छुटकारा पानेपर वे और भी अच्छा महसूस करती है।[3]

मैंने इसे कई दृष्टियोसे एक पुण्य-कार्य माना है। कोई भी स्त्री अथवा पुरुष तबतक सम्पत्तिका अधिकारी नही हो सकता जबतक वह उस सम्पत्तिका एक उचित हिस्सा गरीबो और असहायोको नही देता। यह एक सामाजिक और धार्मिक कर्त्तव्य है और 'भगवद्‌गीता' मे इसे यज्ञकी सज्ञा दी गई है। जो व्यक्ति ऐसा यज्ञ नही करता वह चोर कहलाता है।[4] 'गीता' मे बहुत प्रकारके यज्ञ गिनाये गये है, लेकिन गरीबो और जरूरतमन्द लोगोकी सेवा करनेसे बडा यज्ञ और क्या हो सकता है? आज हमारे लिए इससे बडा त्याग और क्या हो सकता हे कि हम ऊँच-नीचके भेदको भुला दे और सब मनुष्योको समान माने। मै भारतकी महिलाओको यह समझाना चाहता हूँ कि सच्वा अलकरण शरीरपर धातु और पत्थर लादना नही बल्कि हृदयको शुद्ध करना और आत्माके सौन्दर्यको निखारना हे।

एक अन्य अवसरपर गांधीजीने महिलाओको स्वर्गीय श्रीमती अन्नपूर्णा देवी के त्यागकी कथा सुनाई।[5] श्रीमती अन्नपूर्णा देवी आन्ध्र में पहली महिला थीं जिन्होंने अपनी बहनोके आगे त्याग और सेवाका अनुपम उदाहरण रखा था। गाधीजीने बताया:

पहले ही दिन जब वह मुझसे मिली तब उन्होने एक-दो नही वरन् अपने सारे जेवर उतार कर मुझे दे दिये। उस अवसर पर जितनी भी महिलाएँ उपस्थित थी वे सबकी-सब आश्चर्यचकित रह गई और फिर वहाँ एकाएक जेवरोकी बरसात होने लगी। क्या आप समझती है कि गहने उतार देनेपर वे कम सुन्दर लग रही थी?

१. चन्द्रशकर शुक्लके "साप्ताहिक पत्र" से उद्धृत।

२. आन्ध्रमें जो सभाएँ हुई थी, साधन-सूत्रमें उनकी तारीखों अथवा स्थानोंके बारेमें कुछ नही बताया गया है। गांधीजीने ४ जनवरीको आन्ध्र छोड़ा।

३ नीचे जो दिया गया है वह किसी अन्य सभामें कहा गया था।

४. गीता, अध्याय ३, १२।

५. देखिए खण्ड ३५, पृष्ठ २०२-३।

दरअसल मुझे तो वे और भी सुन्दर दीख पड़ी। अंग्रेजीमे एक कहावत है. “सुन्दर वही है जो सुन्दर कार्य करता है।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, १२-१-१९३४

४५६. पत्र : एफ० मेरी बारको

तुमकुर
४ जनवरी, १९३४

चि० मेरी,

बहुत समयसे तुम्हारा कोई पत्र नही आया। डकन ठीक रहा। वह सारे रास्ते हमारे साथ था, और अड्यारमे भी मैं उससे एक क्षणके लिए मिला था क्योंकि मैं श्रीमती वुडके कहनेपर अड्यार गया था। मुझे अवश्य बताना कि तुम्हारी कैसी चल रही है। आशा है चन्द्रा खूब फूलफल रही है और तुम्हे परेशान नही करती। मैं यह पत्र तुम्हारे गाँवके पतेपर भेज रहा हूँ हालाँकि तुम्हे अब वर्धामे होना चाहिए। उम्मीद है तुम्हारी आँखे पहलेसे बेहतर हैं।

सस्नेह,

बापू

श्रीमती मेरी बार
मार्फत सेठ दीपचन्दजी
बैतूल
मध्यप्रान्त

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०१७) से।

४५७. भाषण : डोड्डाबल्लापुरमे

४ जनवरी, १९३४

गांधीजीने नागरिकोंको थैलीके लिए धन्यवाद दिया और कहा कि मुझे आशा है कि यदि आपने अस्पृश्यताके विचारको पहले ही अपने हृदयसे निकाल नहीं दिया है तो अब निकाल देंगे। मैंने आपके अभिनन्दनपत्रमें पढ़ा है कि डोड्डाबल्लापुरमें ८०० हरिजन है और हरिजन बच्चोमें से पचास प्रतिशत स्कूलोमें पढ़ रहे है। इसके लिए आप बधाईके पात्र है। लेकिन यह दिखाकर कि उतने सारे हरिजन बच्चे हरिजन स्कूलोमे पढ़ते है, आप सम्भवतः अपनेको सन्तोष नहीं दे सकते। आप लोगोके लिए हरिजन बालक-बालिकाओंको पढ़ाना जरूरी है और इसके लिए यह आवश्यक है कि

आप अपने हृदयोमे से अस्पृश्यताके विचारको बिलकुल निकाल दे। किसी भी व्यक्तिको अस्पृश्य मानना गलत है। आप सब लोगोको यह भूल जाना चाहिए कि कोई व्यक्ति आपसे नीचा है। अन्तमे गाधीजीने कहा, मुझे आशा है कि अस्पृश्यताके अभिशापको मिटानेके लिए ईश्वर आप सबको बल प्रदान करेगा।

[अग्रेजीसे]

हिन्दू, ४-१-१९३४

४५८. बातचीत: कार्यकर्त्ताओंके साथ[1]

तुमकुर
४ जनवरी, १९३४

हरिजनों द्वारा मन्दिर प्रवेशके सम्बन्धमें गाधीजीसे प्रश्न किये गये। गांधीजीने कहा कि मन्दिर प्रवेशको लेकर लोगोंमें विरोधकी भावना कम होती जा रही है और इस कार्यके सम्बन्धमें अपनी यात्राके दौरान मुझे लगभग कोई विरोध नहीं दिखाई पडा है।

गांधीजीसे यह पूछे जानेपर कि यदि बहुमत मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें हो और सरकार तटस्थ रहे तो उन्हे क्या करना चाहिए, गांधीजीने कहा:

बहुमत पक्ष और अल्पमत पक्ष द्वारा इस बातका आपसमे ही निपटारा कर लिया जाना चाहिए। सरकार इसमे हस्तक्षेप नही करेगी। जब अल्पमत पक्ष और बहुमत पक्षमे सघर्ष होगा तभी सरकार हस्तक्षेप करेगी और वह भी शान्ति और व्यवस्था कायम रखनेके लिए। अल्पमत पक्ष बहुमत पक्षकी राहमे बाधा उपस्थित नही कर सकता।

एक अन्य प्रश्नके उत्तरमें महात्मा गांधीने कहा कि पूर्ण बहुमत नामकी कोई चीज नहीं होती।

[अग्रेजीसे]

हिन्दू, ५-१-१९३४

१. इनमें के० रंगा अय्यगार, टी० सुब्रामण्यम, नारायण सेट्टी और अन्य कार्यकर्ता शामिल थे।

४५९. भाषण : तुमकुरकी सार्वजनिक सभामे[1]

तुमकुर
४ जनवरी, १९३४

आपसे मिलकर परिचय ताजा करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। मै आपके लिए नया नही हूँ और आप मेरे लिये नये नही है। लेकिन कुछ वर्ष पहले मै जिस उद्देश्यको लेकर यहाँ आया था[1] आज उससे भिन्न उद्देश्यको लेकर आपके पास आया हूँ। आपके मानपत्रमे ही यह बात साफ तौरपर बताई गई है कि मै आपसे क्या अपेक्षा रखता हूँ। आज आपने मुझे हरिजनोकी ओरसे जो थैली भेट की है उसके लिए मै आपका शुक्रिया अदा करता हूँ। अपने मानपत्रमे आपने मेरे अनेक गुण गिनाये है जिनसे मै सम्भवत सर्वथा अपरिचित हूँ। आपने मेरी जो ढेरो प्रशसा की है, हो सकता है, मै उसके सर्वथा अयोग्य होऊँ। आपने यह स्वीकार करनेकी शालीनता दिखलाई है कि आपको दिन-ब-दिन इस बातका विश्वास होता जा रहा है कि हमारे समाजसे अस्पृश्यताके निराकरणसे न केवल हिन्दू धर्म शुद्ध हो जायेगा वरन् इससे हमारी राष्ट्रीय कमजोरी राष्ट्रीय शक्तिमे परिवर्तित हो जायेगी और इससे विभिन्न धर्मोको माननेवाले हम लोगोमे परस्पर और भी एकता बढेगी। आपकी इस स्वीकारोक्तिके बाद मैने सोचा था कि आप हरिजनोके लिए किये गये अपने अनेक कार्योके बारेमे मुझे बतायेगे। आपने इस बातपर खेद व्यक्त किया है कि इक्के-दुक्के लोगोके प्रयत्नोको छोडकर आपने अस्पृश्यता-निवारणके लिए अबतक बहुत कम काम किया है। यदि हम सचमुच यह मानते है कि ईश्वरकी इस धरतीपर न कोई ऊँच है और न कोई नीच है तो हमारा यह उद्देश्य सफल हो जायेगा जिस उद्देश्यसे प्रेरित होकर मै आज यहाँ आया हूँ। ऊँच-नीचके हमारे इस विश्वासने हिन्दू धर्मकी जडे खोखली कर डाली है और मैने हजारो सभाओमे जो बात बार-बार कही है वह सिर्फ यह सीधा-सादा सत्य है कि यदि हम इस नासूरसे छुटकारा नही पा लेते तो स्वय हिन्दूधर्म ही नष्ट हो जायेगा। इसलिए मै आशा करता हूँ और भगवानसे प्रार्थना करता हूँ कि इस सभामे जितने भी लोग उपस्थित है उनमे से हर कोई मैने जो कहा है उसकी सत्यताको पहचानेगा और अस्पृश्यताके अभिशापसे छुटकारा पानेका हर सम्भव प्रयत्न करेगा।

इसके बाद महात्माजीने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि वे शहरके अन्य सभी भागोंमे नही जा सकते जैसीकि उनकी इच्छा थी। शारीरिक कमजोरीके कारण

१ गांधीजी देशबधु स्मारक कोषके सिलसिलेमें अप्रैल १९, १९२७ में मैसूर गये थे और स्वास्थ्य लाभ करनेके लिए वहाँ अगस्तके अंत तक रहे थे, देखिए खण्ड ३३ और ३४।

वे उन सार्वजनिक संस्थाओंमें नहीं जा सकते जो उपयोगी काम कर रही है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि तुमकुरके लोग अपनी इच्छाको कार्यरूपमें परिणत करेंगे।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, ५-१-१९३४

४६०. भाषण: बंगलौरकी महिला सभामें[1]

४ जनवरी, १९३४

बहनो,

कई वर्षोंके बाद आपसे फिर मिलनेपर मुझे बडी खुशी हो रही है। आपने अपने मानपत्रके शुरूमे मेरे स्वास्थ्यपर लगातार यात्रा करनेके कारण पडनेवाले प्रभावके बारेमे चिन्ता व्यक्त की है। और यदि आप, भारतकी माताएँ, अपने बच्चोको लेकर परेशान नही होगी तो और कौन होगा? और मै आपके लाखो बच्चोमे से एक हूँ। लेकिन आपको यह मालूम होना चाहिए कि मै आज आपको जो सन्देश देनेके लिए आया हूँ उसके अनुरूप आचरण करके आप मेरी चिन्ताको दूर कर सकती है। मै जिस उद्देश्यको लेकर यह यात्रा कर रहा हूँ उसके लिए मुक्त हृदयसे दान देकर आप मेरी चिन्ता हर सकती है। आपकी तरह भारतके अन्य भागोकी बहनें भी मेरे स्वास्थ्यको लेकर दुःखी व चिन्तित हुई और उन्होने मुझपर अपने आभूषणोंकी — चूडियो, अँगूठियो और गलेके हारोकी वर्षा कर दी। आप मुझे चाँदी अथवा ताँबेके जो भी सिक्के देगी, सच पूछा जाये तो वे हमारे रिवाजके मुताबिक आपकी अपनी सम्पत्ति नही है। वह तो आपके माता-पिता अथवा आपके पतिकी सम्पत्ति है। लेकिन मैं आपसे ऐसी चीज चाहता हूँ जिसे आप निश्चित रूपसे अपनी कह सके और वह केवल आपके आभूषण हो सकते है। लेकिन मैं आपसे जिन चीजोकी अपेक्षा करता हूँ उनमें से आभूषणोका त्याग करनेकी बात तो सबसे नगण्य है। आभूषण-त्याग तो मेरे सन्देशको पूरी तरहसे क्रियान्वित करनेके आपके दृढ निश्चयका सूचक भर हो सकता है। और वह सन्देश यह है कि आपको हरिजनोको सगे भाई-बहनो अथवा अपने बच्चो जैसा समझना चाहिए। किसी भी व्यक्तिको अस्पृश्य मानना गलत है और पापपूर्ण है। ईश्वरने सब पुरुषो और स्त्रियोको समान बनाया है। हालाँकि हमारे स्वरूप और स्वभाव भिन्न-भिन्न हो सकते है लेकिन फिर भी मूलतः हम सब एक है, ठीक उसी तरह जिस तरह एक वृक्षकी पत्तियाँ, चाहे वे आकारमे बडी हो अथवा छोटी, वस्तुतः एक ही होती है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप अस्पृश्यो और स्पृश्योमे कोई भेद न करें। इसीको मै हृदयकी शुद्धि कहता हूँ।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, ५-१-१९३४

१. यह सभा आर० बी० ए० एन० एम० हाई स्कूलके अहातेमें हुई थी जिसमें ५,००० महिलाएँ उपस्थित थीं।

४६१. भाषण : बंगलौरकी सार्वजनिक सभामें

४ जनवरी, १९३४

मित्रो, आपके स्वागतने मेरा हृदय छू लिया है। आपके इतने सब उत्साहका और मेरे प्रति आपने अपने प्रेमका जो प्रदर्शन किया है, उसका मै सदुपयोग करना चाहता हूँ, उसे व्यर्थ नही जाने देना चाहता। इसलिए यदि आप धीरजके साथ कुछ मिनट मुझे बोलनेको दे, तो आप देखेगे कि आपके इस अपूर्व उत्साह और प्रेमका मै सदुपयोग करूँगा। जो बात मै करने जा रहा हूँ, उससे आपके उत्साह और आपके प्रेमकी सच्चाईकी परीक्षा भी हो जायेगी।

मै आज आपको जो सन्देश सुनाना चाहता हूँ उसे तो आप जानते ही है। मै चाहता हूँ कि हम सब लोग, हममेसे प्रत्येक व्यक्ति, अस्पृश्यताका काला दाग धोकर अपने दिलको शुद्ध कर ले। मैसूर राज्यकी सीमामे प्रवेश करनेके बाद आज मुझे जो बहुत-से मानपत्र प्राप्त करनेका सौभाग्य और सुख प्राप्त हुआ है उनमे से एक मानपत्रमे यह ठीक ही कहा गया है कि अस्पृश्यताका अभिशाप हिन्दू-समाजमे इस हद तक व्याप्त हो गया है कि वह लगभग हमारे जीवनको संचालित करता है। उस मानपत्रमे यह भी कहा गया है कि अस्पृश्यता-निवारणका जो सन्देश मै भारतके हिन्दुओको देनेका प्रयत्न कर रहा हूँ उसका असर पड रहा है। मानपत्रमें यह भी स्वीकार किया गया है कि अस्पृश्यताके विषसे अगर हमारा पिंड छूट गया, तो यह निश्चय है कि भारतकी दूसरी जातियोके भी पारस्परिक मतभेद दूर हो जायेगे। अब आप देख सकते है कि मै आपमे से प्रत्येक व्यक्तिसे क्या करनेको कह रहा हूँ। मेरा आपसे अनुरोध है कि अस्पृश्यताके जहरसे आप सब लोग अपना पिंड छुडाइए, जिससे कि हम सभी 'हरिजन' बन सके, ईश्वरकी सच्ची सन्तान बन सके, और केवल एक विशेष वर्गको ही हरिजन न मानते रहे।

आज अगर हम अपना अशुद्ध हृदय लेकर अपने सिरजनहारके सामने जाये, तो वह हमे अपनानेसे इनकार कर देगा क्योकि हमने तो अपनी करतूतोसे खुद ही अपने परमपितासे नाता तोड लिया है। आप लोगोने मुझे जो यह छोटी-सी थैली दी है उसे मै आपके इस सकल्पका प्रतीक मान रहा हूँ कि आजसे आप अपनी यह मान्यता छोड रहे है कि ससारमे कोई प्राणी आपसे नीच है। अगर दुनियाके किसी माता-पिताकी दृष्टिमे उसके बच्चोमे कोई ऊँच-नीचकी श्रेणियाँ नही है, तो क्या आपका यह खयाल है कि वह न्यायकारी समदर्शी जगत्पिता अपने बच्चोमे ऊँच-नीचकी विषम श्रेणियाँ रचेगा? यदि आप लोगोने मेरे सन्देशके सारतत्वको भली-भाँति समझ लिया है, तो यह बात भी आपकी समझमे आ जायेगी कि जो

हरिजन-सेवाके निमित्त धन देते है, उन्हे उसका लाभ मिलता है। मै और आगे जाकर कहता हूँ कि आप इस कार्यके लिए जितना कुछ भी दे, वह कम ही है।

[अग्रेजीसे]

हिन्दू, ५-१-१९३४

४६२. उदार दृष्टि रखिए[1]

अपने अनेक प्रवासोमे मैने देखा है कि मेहमानोकी भोजन-सम्बन्धी सुविधाएँ पूरी करनेमे स्वागत-समितियाँ पैसेका जरा भी ध्यान नही रखती। मिठाइयाँ, दूसरे स्वादिष्ट खाद्य और तरह-तरहके पकवान बनवानेका वे आग्रह करती है। यो तो मैने हमेशा ही इन बातोको नापसन्द किया है, पर इस समय तो, जबकि मै हरिजन-सेवाके सम्बन्धमे धन इकट्ठा कर रहा हूँ और जिसे मै प्रायश्चित्त और धर्म-शुद्धिका कार्य समझता हूँ, मेहमानीमे इस तरहकी फिजूलखर्ची देखकर मुझे दुख होता है। दो स्थानोमे मैने देखा कि गुजराती रसोई तैयार करानेके लिए गुजराती रसोइये बुलाये गये थे। इसे मै बिलकुल अनावश्यक समझता हूँ। मेरा विश्वास है कि अपने प्रान्तसे इतर प्रान्तोमे जैसा खाना खाया जाता है, उसे खानेकी ही हमे आदत डाल लेनी चाहिए। मै जानता हूँ कि यह बात जितनी आसान लगती है, उतनी है नही। मै ऐसे दक्षिणवासियोको जानता हूँ जिन्होने गुजराती खाना खानेकी आदत डालनेका काफी प्रयत्न किया, पर वे असफल ही रहे। गुजराती लोगोको दक्षिणी रसोई अच्छी नही लगती। जो स्वादिष्ट चीजे बगालमे बनती है, वे दूसरे प्रान्तवालोको सहज ही नही रुचेगी। यदि प्रान्तीयके स्थानपर हमे राष्ट्रीय बनना है, तो हमे भोजन-सम्बन्धी अपनी आदतोमे अदल-बदल करनी ही पडेगी, अपने स्वादोमें सादगी लानी ही पडेगी, और ऐसे स्वास्थ्यकर व्यजन तैयार करने होगे, जिन्हे हम सभी लोग रुचिपूर्वक खा सके। इसका अर्थ यह हुआ कि भिन्न-भिन्न प्रान्तो, जातियो और सम्प्रदायोके आहारोका ध्यानपूर्वक अध्ययन किया जाये। दुर्भाग्य या सौभाग्यसे भिन्न-भिन्न प्रान्तोके भिन्न-भिन्न प्रकारके आहार है। इतना ही नही, बल्कि एक ही प्रान्तमे भिन्न-भिन्न जातियोमे भी अलग-अलग किस्मके भोजन है। इसलिए राष्ट्र-सेवकोके लिए यह जरूरी है कि वे भिन्न-भिन्न प्रान्तोके आहारो और उनके बनानेके तरीकोका अध्ययन करे और ऐसी सादी और सस्ती आम खुराकको ढूँढ निकाले, जिसे सब लोग बिना पेटको बिगाडे खा सके। कुछ भी हो, सेवकोके लिए विविध प्रान्तो और सम्प्रदायोके शिष्टाचार और रीति-रिवाजोका न जानना एक शर्मकी बात है। समृद्ध घरानोके रसोइयोको भिन्न-भिन्न प्रान्तोमे खाये जानेवाले आहारोको बनाना जानना चाहिए। तमिल, आन्ध्र या बगालके व्यक्तिका साधारणतया जो भोजन है, उसे एक गुजराती क्यो न बना

१ यह मूल लेख अंग्रेजीमें है। इसका गुजराती अनुवाद ३१-१२-१९३३ के **हरिजनबन्धु** में पहले छप गया था।

सके ? मै जानता हूँ कि बडे आदमियोके यहाँ भोजनमे ऐसी सामान्यताका होना सम्भव नही, और न ऐसा आवश्यक या वाछनीय ही है। समृद्ध घरानोके आदमी भिन्न-भिन्न प्रान्तोके व्यजन तो बनवाते ही है, वे अपने परिवारके लिए भी विशेष व्यजन बनवाते रहते है, पर इनका सर्वत्र प्रचार नही हो सकता। उद्देश्य तो यह हो सकता है और होना भी चाहिए कि सर्व-साधारणके लिए ऐसा खाना बनवाया जाये, जिसे सभी खा सके। मै जानता हूँ कि अगर हम चाहे तो यह आसानीसे हो सकता है। पर इसे सम्भव बनानेके लिए स्वयसेवकोको रसोई बनाना सीखना पडेगा और इस कामके लिए उन्हे विभिन्न प्रान्तोके आहारोके गुण-दोषकी जॉच करके सभी प्रान्तोमे प्रचलित ऐसे सामान्य व्यजनोको खोज निकालना होगा, जो आसानीसे और सस्तेमे तैयार हो सके।

अपने मुख्य विषयसे मै कुछ हट गया हूँ और वह मुख्य विषय यह है कि प्रान्तोमे मेरे प्रवासके प्रबन्धकोको हमारा ज्यादा लाड-प्यार नही करना चाहिए, बल्कि हमे जिमानेमे उन्हे काफी सादगी और किफायतशारी से काम लेना चाहिए। याद रहे कि हम यह आत्मशुद्धिका कार्य कर रहे है या इसका दावा कर रहे है और हम सवर्णोके प्रतिनिधियोने हिन्दू-समाजके दलितोकी सेवाका भार अपने ऊपर ले रखा है। ऐसी दशामे हमे अपनी अत्यावश्यक जरूरतो और मामूली सुविधाओकी पूर्तिके सिवा अन्य किसी प्रकारकी आवश्यकताको पूरी करनेका अधिकार नही है। तली हुई चीजो और मिठाइयोसे तो खास परहेज करना चाहिए। घी का उपयोग बहुत ही कम किया जाये। एक से ज्यादा हरी सब्जी अनावश्यक है, और वह भी उबली हुई होनी चाहिए। महँगे फल भी कभी न मँगाये जाये। मै जानता हूँ कि फलोके सम्बन्धमे मै ही गुनहगार हूँ। मेरे मित्र मेरा लाड-प्यार करेगे और कुछ भी कष्ट उठाकर महँगेसे-महँगा फल मँगाकर मुझे देगे। मै उन्हे इतना ही आश्वासन दे सकता हूँ कि सतरोके सिवा और कोई फल मेरे लिए आवश्यक नही है और यह बात अनुभवसे साबित हो चुकी है कि सन्तरे मेरे लिए आवश्यक है। अपने मिताहारकी शेखी बघारने पर भी मै जानता हूँ कि अपने दलमे मेरी ही खुराक पर सबसे अधिक खर्च पडता है। मुझे इसका दुख है, मगर बकरी माताका दूध, जिससे मै अपनी शारीरिक शक्ति कायम रखता हूँ, और सन्तरे, जिनकी बदोलत मै सदा ताजा और प्रसन्न रहता हूँ, ये दोनो ही चीजे सस्तेपनमे चावल और गेहूँका मुकाबला नही कर सकती। मेरी मेहमानी उठानेवाले अपने अनेक मेजबानोसे मेरी विनती है कि वे मन लुभानेवाली व्यर्थकी चीजे बाहरसे मँगा-मँगाकर मेरे सिर पर और ऋण न चढाये। यदि हरिजनोके प्रति कर्त्तव्य-पालन करनेमे वे मुझे सहायता देना चाहते है, तो कृपाकर वे मेरी कमजोरियोको न भडकाये।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, ५-१-१९३४

४६३. पत्र : महालक्ष्मी एम० ठक्करको

५ जनवरी, १९३४

चि० महालक्ष्मी,

मैने तुम्हे जेलमे पत्र लिखा था, वह मिल गया था? माधवजीका आखिरकार क्या हुआ, यह मुझे अभी तक मालूम नही हो पाया। बच्चोकी चिन्ता जरा भी नही करनी है। माधवजीने विचारपूर्वक और मुझसे सलाह करके जो कुछ किया है उसे ठीक समझना। फिर भी जैसा तुम्हे जँचे वैसा करना। बहनोके बारेमे मेरी इच्छा है कि उन्हे विचारकी, आचारकी पूर्ण स्वतन्त्रता होनी चाहिए। मुझे सब-कुछ लिखती रहना। जेलमे क्या किया? क्या पढा? यह सब लिखना। 'हरिजन बन्धु' के अक पढती रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६८२५)से।

४६४. पत्र : प्रभावतीको

५ जनवरी, १९३४

चि० प्रभावती,

एकके बाद एक तेरे दो पत्र मिले।

राजेश्वरके लिए मैने घनश्यामदासके साथ बन्दोबस्त किया है। मुझे उसका पता भेजना। उसे कबसे पैसे नही मिले है?

तेरे और जयप्रकाशके सम्बन्धमे मैने किस प्रश्नका उत्तर नही दिया है? मुझे ऐसा खयाल है कि तुम्हारे पत्रसे सम्बन्धित सभी प्रश्नोका उत्तर मैने दे दिया है। सम्भव है कि मेरा यह पत्र तुम्हारे हाथ ही न पडा हो। यदि उत्तर न मिला हो तो मुझे दुबारा फिर पूछना।

चूंकि तूने उपचार शुरू किया है इसलिए उसे अवश्य आजमाना। विश्वास तो मुझे भी कम ही है। तू और जयप्रकाश ठीक हो जाओ तो अच्छा होगा। तुझे तो मैने बीमार माना ही नही है। लेकिन यदि डॉक्टर ऐसा कहे तो क्या करे?

मैने अपना वजन अभी नही लिया है लेकिन स्वास्थ्य अच्छा ही है। खुराक भी उचित प्रमाणमे लेता हूँ।

ब्रजकृष्ण बिल्कुल ठीक हो गया है। अब थोडा घूमता फिरता है। देवदास एकाएक जेलसे रिहा हो गया है।[1] मुझे और कुछ मालूम नही।

बा के पत्र आते रहते है। किसन फिलहाल तो मेरे साथ ही दौरे पर रहेगी। वह ठीक रहती है। थोडी-थोडी मदद भी करती है। विद्याकी तबीयत अच्छी न थी और उसके पास जो लडकी थी वह चोर निकली, इसलिए विद्या अपने पिताके यहाँ गई है।

राजेन्द्रबाबूके बारेमे तूने जो लिखा है सो मै समझा। उनसे कहना कि मैंने पत्र लिखा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३४३९) से।

४६५. पत्र : वी० एल० फड़केको[2]

५ जनवरी, १९३४

भाई मामा,

तुम्हारा पत्र मिला। सस्थाओका स्वामित्व हरिजन सेवक सघको नही सौपना है। पर मेरा सुझाव है कि उसका खर्च हरिजन सेवक सघ दे। अत अब भविष्यमे सघको समाधान देनेकी बात ही रही। जो अपना खर्च चलायेगा उसे हिसाब और कारोबार चलानेका सन्तोष प्रदान करना तो जरूरी ही है न?

सरदारके पत्रमे जो बात है उसका अर्थ परलोक नही है उसका अर्थ तो जेल या जेलके बाहर है। वह भी तो परलोक ही हुआ न? उसे ऐहिक परलोक कहे तो चलेगा। पर इस अर्थसे तुम्हे चौकने या चिन्तामे पडनेकी जरूरत नही है। तुम्हे तो अपने . [3]मे ही मशगूल रहना है। ऐहिक परलोकमे जानेकी बारी जिसके लिए जरूरी होगी, उसके लिए आ जायेगी। यह तो आजकलकी ही बात है। मेरे सम्बन्धमे तो 'हरिजन बन्धु'मे देखते ही होगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३८२७) से।

१. २ जनवरी, १९३४ को।
२. गोधरा हरिजन आश्रमके प्रबन्धक।
३. साधन-सूत्रमें यहाँ स्पष्ट नहीं पढ़ा जाता।

४६६. पत्र : जीवनजी डाह्याभाई देसाईको[1]

मैसूर
५ जनवरी, १९३४

भाई जीवनजी,

गोरक्षाके सम्बन्धमे मेरे साथ हुए सवादको मै देख गया हूँ। यह ठीक-ठीक दिया गया है इसलिए इसका उपयोग करना हो तो कर सकते हो।

विद्यापीठकी लाइब्रेरीका कब्जा म्युनिसिपैलिटीने ले लिया या हाल हमको ही पुस्तके जमानी पडी है। लाइब्रेरीका मकान बनना शुरू हुआ? यदि न हुआ हो तो कब होगा? बालूभाईसे पूछकर लिखना।

प्रेसमे अब कोई मशीने बची है या सारी गई? प्रकाशनकी पुस्तकोके सम्बन्धमे कुछ हुआ?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

सम्वादकी प्रति[2] इसके साथ है।

काकाको पत्र लिखा था सो मिला होगा। उसमे मैंने तुम्हे महादेवके लिए कुछ लिखा है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९९३३) से। सी० डब्ल्यू० ६९०८ से भी, सौजन्य जीवनजी डाह्याभाई देसाई

४६७. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

मैसूर
५ जनवरी, १९३४

चि० ब्रजकिसन,

मैंने दो पत्र लिखे है। एककी भी पहुँच तुम्हारे पत्रमे नही हे। श्रीनगर नामका कोई गाँव आध्र देशमे नही है, इसलिए तुम्हारा पत्र शायद काश्मीर गया होगा। मैंने जो अेड्रेस भेजा था वह तो सीतानगरम् था। ईश्वरका बडा अनुग्रह हुआ कि तुमको मृत्युशैयासे उसनें उठाया है। अब बडी सावधानीसे शरीर जो था उससे भी

१. नवजीवन संस्थाके प्रधान व्यवस्थापक।

२. यह उपलब्ध नहीं है।

अच्छा बनाओ। डॉ० अन्सारी कहे उसका अक्षरश पालन करो। रामबाबूने क्यो छोड दिया? नया घर कितने महिनोके लिए रखा है? क्या किराया पड़ता है। मेरी मुसाफरी अच्छी तरह चल रही है।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४०६) से।

४६८. भाषण: हरिजनोंकी सभामे

मैसूर
५ जनवरी, १९३४

आपको आन्तरिक तथा बाह्य दोनो प्रकारके स्वास्थ्य और सफाईके नियमोका पालन करना चाहिए। आन्तरिक शुद्धिके लिए आपको भगवानका नाम लेना चाहिए — सवेरे सोकर उठनेके बाद सबसे पहले यही काम करना चाहिए। यह आत्माके लिए नाश्ता है।

जब उन्हे बताया गया कि बस्तीके हरिजनोंने गो-मांस खाना छोड़ दिया है तब उन्होंने कहा:

आपने गो-मास खाना छोड दिया है, मेरे लिए यह अत्यन्त खुशीकी बात है और इसके लिए मै आपको बधाई देता हूँ। मै चाहूँगा कि मद्यपानके विषयमे भी आप ऐसा ही कह सके। ऐसे रगीन पानीपर पैसा खर्च करनेमे क्या फायदा जो हमे इतना उन्मत्त कर दे कि हम माँ, बहन और पत्नीके भेदको भूल जाये? मैंने हरिजनोसे सुना है कि उनके लिए विवाह तथा मृत्युके अवसरपर शराब पीनेका विधान है। मै आपसे कह सकता हूँ और इसका कोई प्रतिवाद नही कर सकता कि यह शैतानकी सुझाई हुई बात है। शास्त्रोमे ऐसा कही नही लिखा गया है। मै आप भाइयो और बहनोसे अनुरोध करूँगा कि आप शैतानके निकट न जाये। मै आशा करता हूँ कि आप मेरी सलाह को मानेगे और तब मुझे बहुत खुशी होगी जब आप यह कह सकेगे कि आपने शराब भी छोड दी है।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, १२-१-१९३४

४६९. भाषण : मैसूरकी सार्वजनिक सभामे

५ जनवरी, १९३४

छ वर्षोंके लम्बे अर्सेके बाद आप लोगोसे दुबारा मिलनेपर मुझे बहुत खुशी हुई है। जैसा कि आप जानते ही है, मैसूर राज्यमे मै अपना खोया हुआ स्वास्थ्य फिरसे बनानेके लिए आया था जिसे मैने उस समय मै जो यात्रा कर रहा था उसके दौरान खो दिया था। और स्वाभाविक है कि मैसूर-निवाससे सम्बन्धित बहुत-सी सुखद स्मृतियाँ मेरे मनमे है। महाराजा साहब, उनके दीवान तथा दूसरे अधिकारियोसे लेकर महाराजा साहबकी प्रजा तकसे मुझे सिर्फ हार्दिक स्नेह ही स्नेह मिला। इसीलिए आप पहलेसे ज्यादा अच्छी तरह यह जान सकते है कि फिरसे आप लोगोके बीचमे आकर मुझे कितनी खुशी हुई होगी। आपने मैसूर राज्यके पितामह स्वर्गीय श्री वेकटकृष्णय्याके चित्रका अनावरण मुझसे सम्पन्न करनेको कहकर इस खुशीमे और वृद्धि कर दी है। मै कलाकारको उसकी इस कृतिके लिए बधाई देता हूँ क्योकि उनके जिस रूपसे मै काफी परिचित था इसमे उसका हूबहू चित्रण है। शायद आपमेसे सब लोग यह न जानते हो कि अपनी पिछली यात्राके दौरान मुझे मैसूरके पितामह से साक्षात मिलनेका सुख और सौभाग्य मिला था। उस समय मुझे उनके बहुतसे गुणोका परिचय मिला था। तब मुझे पता चल गया था कि आपके दिलमे उनके लिए एक अनोखी जगह है। मुझे पूरा विश्वास है कि आप मुझसे इस चीजकी आशा या इच्छा नही करेगे कि मै उनके असख्य गुणोको दोहराऊँ। अपनी सक्षिप्त यात्राके दौरान मेरे लिए उनको जितना जान सकना सम्भव था उसकी बनिस्बत आप लोग, जो यहाँके रहनेवाले है, उन्हे ज्यादा अच्छी तरह जानते थे। मै केवल यही आशा करता हूँ कि उनके जिन गुणोके कारण आप और मै उन्हे याद करते है उन गुणोको हम अपने जीवनमे चरितार्थ करेगे। हम यह सोचकर अपने आपको धोखा नही दे सकते कि इस चित्रके अनावरणके लिए मुझे बुलावाकर और यह समारोह देखकर तथा मुझसे अनावरण करवाकर हमने उनकी स्मृतिके प्रति अपना कर्त्तव्य पूरा कर लिया।

अब मै अपने उस उद्देश्यपर आता हूँ जिसकी वजहसे मै यहॉपर आया हूँ। नगरपालिकाके अभिनन्दनपत्रने मुझे इस बातकी याद दिलाई है कि मै उन चीजोको देखूँ जो देखने योग्य है ताकि हरिजनोके लिए जो काम यहाँ किया गया है और किया जा रहा है मै उसकी सुखद स्मृतियाँ अपने साथ ले जाऊँ। स्वागत-समितिने पहले ही बहुत सूझ-बूझ का परिचय देते हुए इस सभामे लानेसे पहले मुझे बहुतसे मुहल्लोमे ले जानेका प्रबन्ध कर लिया था और इन पिछले छ: सालोके दौरान जो प्रगति हुई है उसे दिखा दिया था। आपका यह सोचना बिलकुल ठीक है कि इन स्थानोको देखनेके बाद यहाँ हरिजनोके लिए जो काम हो चुका है मै केवल उसकी

सुखद स्मृतियाँ ही ले जाऊँगा। आज तीसरे पहर मैंने जिन सब स्थानोका दौरा किया है वहाँ मुझे जो शुद्धता और स्वच्छता देखनेको मिली है उसके लिए मुझे मैसूर राज्यको और मैसूरकी नगरपालिकाको बधाई देनी चाहिए। और मुझे इस आश्वासनसे खुशी हुई कि इस शहरके हरिजनोकी घरेलू सुविधाओकी व्यवस्था करनेमे नगरपालिका विलम्ब नही करेगी। मेरी रायमे प्रत्येक शहरके भगी उस शहरके सबसे उत्कृष्ट सेवक होते हैं। भगियो और मेहतरोको गन्देसे-गन्दे स्थानो तक ही सीमित रखना और उनकी बिलकुल उपेक्षा करना तो शर्मकी बात होनी चाहिए। मेरी दृष्टिमे तो हर एक शहरके स्वास्थ्यकी कुजी भगियोकी जेबमे ही होती है। जो भी शहर अपने मेहतरो और भगियोकी अवहेलना करनेका दुस्साहस करता है वह अपने नागरिकोके स्वास्थ्यकी उपेक्षा करनेका अपराधी होता है।

लेकिन मेरे अनुष्ठानका उद्देश्य केवल हरिजनोके आर्थिक कल्याणसे कही ज्यादा व्यापक है। इसमे सन्देह नही कि उनके आर्थिक और शैक्षिक कल्याणकी खूब सावधानीसे देखभाल करना हमारा कर्त्तव्य है। लेकिन पिछले कई युगोसे हरिजनोको हमारे कारण जिन कठिनाइयो और दुखोका शिकार बनना पडा है यदि हमे हरिजनोको उसका बदला चुकाना है तो इतना ही करना काफी नही है। वे भी ठीक उन्ही सब अधिकारो और सुविधाओके अधिकारी है जिनके अधिकारी अन्य नागरिक है। और हिन्दू होनेके नाते वे भी वैसी ही सामाजिक सुख-सुविधाओ और धार्मिक अधिकारोके अधिकारी है जिनका अधिकारी कोई दूसरा हिन्दू है। इसलिए मेरा उद्देश्य तो सवर्ण हिन्दुओको अपने अस्पृश्यताके पापको धोनेके लिए तैयार करना है। और सवर्ण हिन्दुओके पास जो थोडी-सी मोहलत बची हुई है यदि इसमे वे अपना कर्त्तव्य पूरा करनेमे चूक गये तो मुझे तनिक भी सन्देह नही है कि हिन्दू धर्मका नाश हो जायेगा। अब आप समझ सकते है कि यह काम न तो कोई नगरपालिका कर सकती है और न स्वय महाराजा साहब ही। यदि आप और मै ही अपने हृदयोमे परिवर्तन नही करेगे, तो फिर राजा-महाराजा लोग भी क्या कर सकते है। इसलिए यह मेरा कर्त्तव्य भी है और मेरा सौभाग्य भी है कि मै आपको अपने दिलोसे अस्पृश्यता तथा ऊँच-नीचका भेदभाव निकालनेके लिए कहूँ। यदि आप इस सन्देशकी भावनाको समझ ले तो आप देखेगे कि हृदय-परिवर्तन करना आश्चर्यजनक रूपसे सरल काम है। और यदि सवर्ण हिन्दुओके हृदयोमे यह परिवर्तन हो गया तो आप देख सकेगे कि किस प्रकार पलक झपकते हरिजनोकी आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक प्रगति अपने आप होने लगेगी। तब ये सारी चीजे उस हृदय-परिवर्तनका प्रतीक और प्रमाण मानी जायेगी। आपने कृपापूर्वक ये जो सब थैलियाँ मुझे दी है उन्हे मै हृदय-परिवर्तन करनेके आपके निश्चयकी पेशगीके तौरपर मानता हूँ। ईश्वर आपको हृदय-परिवर्तन करनेकी शक्ति दे और हिन्दू-धर्मको आसन्न विनाशसे बचाये।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १२-१-१९३४

४७०. भाषणोंके अंश[1]

[६ जनवरी, १९३४ से पूर्व]

आप लोगोको जान लेना चाहिए कि हरिजनोको अच्छे मकान देकर या उन्हे अलग-अलग कुएँ, स्कूल आदि मुहय्या करके ही हमारा काम खत्म नही हो जाता। यदि हम उन्हे ये सब चीजे दे देते है लेकिन उन्हे और फिर भी अस्पृश्य ही मानते है तो इसका मतलब उन्हे लोहेकी जजीरके बजाय सोनेकी जजीरमे बाँधना होगा। जिन सुविधाओका हम उपभोग करते है हरिजनोको भी वे सब सुविधाएँ मिलनी चाहिए। लेकिन मै इससे आगे बढकर यह कहता हूँ कि आप लोगोको उन्हे अपना लेना चाहिए, आज आपके और उनके बीच जो खाई है आपको उसे पाट देना चाहिए। हम जिस सुधारके लिए प्रयत्न कर रहे है वह तबतक पूरा नही हो सकता जबतक कि हम इस भेदभावको दूर करके अपने दिल साफ नही कर लेते। इससे कममे तो आप और मै सन्तुष्ट ही नही हो सकते।[2]

आप माताओको चाहिए कि आप अपने बच्चोको रोज नहलाया करे और आप स्वय भी नहाया करे। सवेरे आपको अपने मनकी सफाई करनी चाहिए, अर्थात् उठते ही जो आपको पहला काम करना चाहिए वह रामनाम लेनेका है और इसके बाद ईश्वरसे प्रार्थना करनी चाहिए कि आप पवित्रताके साथ दिन व्यतीत कर सके, ताकि आपके होठोसे कोई भी अपशब्द न निकले और आपसे कोई भी बुरा काम न हो। इसके बाद आप अपनी शारीरिक सफाई करे।

अनन्तपुरमें[3] हरिजनोंके लिए एक नलका उद्घाटन करते हुए उन्होंने कहा :

ईश्वर करे यह जल आपके लिए अमृत साबित हो। जल शुद्धताका प्रतीक है। जिस प्रकार जलसे स्नान करके हम अपने शरीर स्वच्छ बनाते है उसी प्रकार हम प्रात स्नान द्वारा अर्थात् ईश्वरका नाम लेकर अपने हृदयको शुद्ध कर सकते है।

मै अपने जीवनका प्रत्येक क्षण अहिंसा और प्रेमके सहारे बितानेकी कोशिश कर रहा हूँ। प्रधानत मै शान्ति-प्रेमी हूँ। मै मतभेद पैदा करना नही चाहता। और जो लोग मेरा विरोध करते है उन्हे मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मै ऐसा एक भी काम नही करूँगा जो मेरे विचारमे सत्य और प्रेमके विपरीत होगा।[4]

१, चन्द्रशंकर शुक्लके 'साप्ताहिक पत्र' से उद्धृत, जिसपर 'बंगलौर', ६-१-१९३४, तारीख पड़ी थी।

२. इसके बादका अंश उस भाषणसे है जिसे गांधीजीने किसी दूसरी सभामें हरिजन स्त्रियोंके सामने दिया था।

३. ३ जनवरीको।

४ ये शब्द ३० दिसम्बरको नेल्लोरमें आयोजित एक सभामें कहे गये थे। इसके आगेका अंश दूसरी सभामें कहा गया था।

लेकिन हमने हरिजनोके हृदयोमे आशाका सचार कर दिया है। उनको अनुभव होने लगा है कि उन्हे इस दासतासे मुक्ति मिलनेवाली है। आशा है कि आप इस कामको पूरा करेगे। ससारके सभी धर्मोमे यह बताया गया है कि यदि गरीबोको धोखा दिया गया, उन्हे जो आशाएँ बँधाई गई है यदि उन्हे पूरा नही किया गया तो उनके दिलसे निराशाकी आह निकलती है, शाप निकलता है। और इसमे मुझे सन्देह नही है कि हमने उनसे जो कहा है और जो वादा किया है उसके बावजूद यदि हम उन्हे धोखा देते है तो इन गरीब लोगोका शाप हमे जरूर लगेगा और हम तबाह हो जायेगे।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १२-१-१९३४

४७१. पत्र : परीक्षितलाल एल० मजमूदारको

६ जनवरी, १९३४

भाई परीक्षितलाल,

भूडी भूछी[1] के कानूनके सम्बन्धमे मै यहाँसे कुछ कर सकूँ ऐसा मुझे फिलहाल तो नही दिखाई देता। तुमने दीवानके नाम पत्र लिखा यह तो ठीक ही किया है। उसका जो-कुछ जवाब आए उससे मुझे भी अवगत कराना। इस सम्बन्धमे कच्छसे यदि कोई सवाददाता अधिकृत अहवाल लिख भेजे तो मै 'हरिजन'मे प्रकाशित कर दूँ। तुम्हे जो समाचार मिले है क्या वे ठीक रूपसे अधिकृत है, जाँच करके लिखना। इससे सम्बन्धित कानूनकी एक नकल भी भेजना। सम्भवत इसे 'नवजीवन' मे दिया था। छगनलाल जोशीसे तुम्हे जो चेक मिला है वह उस ५,७०० रुपएकी एक किस्त है। दवा डालनेके सम्बन्धमे तुम्हारा पत्र आनेसे पहले ही मैने व्यवस्था कर दी थी। इसलिए तुम्हे ये रुपये मिले। ठक्करबापा १६को मिलेगे तब मै विस्तार से बात करूँगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री परीक्षितलाल मजमूदार
हरिजन आश्रम
साबरमती (गुजरात)

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३९९९) से।

१. देखिए खण्ड ३५, पृष्ठ २८७-८।

४७२. भाषण : बंगलौरकी छात्र-सभामे

६ जनवरी, १९३४

हरिजनोके सेवकको सीजरकी पत्नीकी तरह सन्देहसे परे होना चाहिए। उसका चरित्र ऐसा होना चाहिए जिसपर कोई उँगली न उठा सके। उसकी दृष्टि इतनी निर्मल होनी चाहिए जिससे किसीको बुरा न लगे। उसके हाथ भी साफ होने चाहिए और उसके स्पर्शमे कोमलता और पवित्रता होनी चाहिए। उसके हृदयमे एक भी अपवित्र विचार नही उठना चाहिए। उसके कान ऐसे होने चाहिए कि वह ब्रह्माण्डमे व्याप्त सगीतको सुन सके, उसके पॉव उसे पवित्रतम कार्यकी ओर ले जाये, बुराइयोकी ओर कभी नही, और वह सब बाते सुने लेकिन अपनी ओरसे कुछ न कहे।

अन्तमें गांधीजीने छात्रोसे अनुरोध किया कि वे आधुनिक युगके इस अत्यन्त महान् सुधार आन्दोलनमें शामिल हो।

[अग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, ९-१-१९३४

४७३. पत्र : गोविन्दभाई आर० पटेलको

७ जनवरी, १९३४

भाईश्री गोविन्दभाई,

आपका पत्र मिला है। आपका कार्ड भी मिला था। मैने चार दिन पहले श्री अरविन्दको एक लम्बा पत्र लिखा था जिसमे मैंने उनसे मुलाकातके लिए समय माँगा था। अब मै उत्तरकी बाट जोह रहा हूँ। आप मेरे पढने लायक जो सामग्री भेजना चाहे सो भेज दे।

मोहनदासके वन्देमातरम्

श्री गोविन्दभाई
श्री अरविन्द आश्रम
पाण्डिचेरी

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १०७४०) से, सौजन्य . गोविन्दभाई रामभाई पटेल

४७४. भाषण : एपेक्स बैंक हॉल, बंगलौरमें[1]

७ जनवरी, १९३४

सहकारिता आन्दोलनके साथ मेरा सम्बन्ध सरसरी ढगका है। सहकारिता आन्दोलनकी सर डैनियल हैमिल्टनने जो व्याख्या की है मैंने उसी ढँगसे समझनेकी चेष्टा की। मै जानता हूँ कि किसानोके लिए यह आन्दोलन वरदान सिद्ध हो सकता है। बहुत समय पहले बम्बईमे सहकारिता सभामे, मुझे लॉर्ड विलिग्डन द्वारा निमन्त्रित किये जानेका सौभाग्य मिला था। उस समय मैंने जो कहा थी वह मै अब आपको बताना चाहूँगा। सहकारिता समितियोके लिए जरूरी है कि कर्जके रूपमे दिये जानेवाले पैसे-पैसेका पता रखे। उन्हे मालूम करना चाहिए कि कर्ज लेनेवाला व्यक्ति उस पैसेका क्या कर रहा है। मेरे मनमे यह विचार निरन्तर बना रहा है।[2]

गाधीजीने सहकारिता सोसाइटियोके रजिस्ट्रार, स्वर्गीय श्री के० एच० रमय्याका मर्मस्पर्शी शब्दोमें उल्लेख किया। उन्होने कहा कि छः वर्ष पूर्व जब मैं बंगलौरमें आया था तब मै स्वर्गीय श्री रमय्यासे अक्सर मिला करता था और उनसे हँसी-विनोद किया करता था। अभी कल ही मुझे पता चला कि उनका देहान्त हो गया है। मुझे यह सुनकर सचमुच बहुत दुःख हुआ है। राज्यमें सहकारिताके लिए उन्होने जो महान कार्य किया है वह सर्व विदित है और मुझे उसे दोहरानेकी कोई जरूरत नहीं है।

[अग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, ९-१-१९३४ और **हिन्दू**, ८-१-१९३४

४७५. भाषण : बंगलौरकी नागरिक सभामें

७ जनवरी, १९३४

मुझे यह अभिनन्दन-पत्र देनेके लिए मै बगलौर-नगरपालिकाका अत्यन्त आभारी हूँ। आपने अपने अभिनन्दन-पत्रमे मुझे याद दिलाई है कि पिछली बार जब मैं आप लोगोके बीच आया था उस समय भी आपने कृपापूर्वक मुझे ऐसा ही एक अभिनन्दन-पत्र दिया था। मुझे यह देखकर अत्यन्त प्रसन्नता होती है कि अभी भी आपके दिलोमे मेरे लिए जगह बनी हुई है। जिन हरिजनोके कार्यके सिलसिलेमे मेरा यहाँ आना

१. प्रान्तीय सहकारिता एपेक्स बेक हॉलमें गाधीजीको एक मानपत्र भेंट किया गया था।
२ इसके बादका अंश **हिन्दू** से लिया गया है।

हुआ है उनके लिए आपने जो-कुछ काम किया है और कर रहे है उसपर मै आपको बधाई देता हूँ। हरिजन-समस्याको हल करनेके लिए महाराजा साहबकी सरकार जिस उदारताके साथ काम कर रही है उसके लिए मै महाराजा साहबको भी आदरपूर्वक बधाई देता हूँ। आपने अपने अभिनन्दन-पत्रमे स्वीकार किया है कि यद्यपि नगर-पालिकाने हरिजनोके लिए इतना काम किया है तथापि अभी बहुत-कुछ करनेको बच रहता है। आपके अभिनन्दन-पत्रमे व्यक्त की गई इस भावनाको, कि अभी भी बहुत-कुछ करनेको बाकी है, यदि मै भी नही दोहराता तो यह मेरी गलती होगी। आज सुबह अपने पर्यटनके दौरान मैने हरिजनोकी कुछ बस्तियाँ देखी और उन्हे देखकर मुझे बहुत कष्ट हुआ। उनके घरोको झोपडी भी नही कहा जा सकता। इसलिए मुझे उनके घरोको 'दरबे' कहनेमे कोई सकोच नही हुआ। ये दरबे हवा, वर्षा और धूपसे हरिजनोको कोई सुरक्षा नही प्रदान करते। हरिजन लोग मलबे मेसे जो-कुछ सामान इकट्ठा कर सके, उसीकी मददसे उन्होने ये दरबे बना लिये है।

आपको बगलौर नगरकी सुन्दरता पर गर्व करनेका पूरा अधिकार है। मै यह स्वीकार करनेको स्वतन्त्र हूँ कि बम्बई नगरको "सुन्दर बम्बई नगरी" नही कहा जा सकता। बम्बईमे कुछ इतने बीभत्स और कुरूप स्थल है कि उस नगरको 'सुन्दर' कहना मिथ्या नामसे पुकारना होगा। इसलिए उसकी तुलनामे बगलौरको सबसे सुन्दर नगर होनेके लिए पहला पुरस्कार देनेमे मुझे कोई हिचक नही है। लेकिन मै चाहूँगा कि तुलनात्मक दृष्टिसे यह नगर ज्यादा अच्छा है, इस बातसे आपको सन्तुष्ट नही होना चाहिए। मै चाहूँगा कि आप अपने निर्धनतम नागरिकोके लिए भी सुख-सुविधाका एक निम्नतम मानदण्ड अपने सामने निर्धारित करे।

आगे बोलते हुए महात्माजीने कहा कि मेरा भारत-व्यापी दौरा समाप्त होनेके बाद मुझे बंगलौर आने और यहाँ कुछ दिन ठहरनेका जो निमन्त्रण कृपापूर्वक आपने दिया है उसके लिए मै यहाँके नागरिकोको धन्यवाद देता हूँ।

मुझे आपका इतना स्नेह मिला है और आपने मेरा इतना ध्यान रखा है कि कर्त्तव्यकी पुकार यदि मुझे मोहलत देगी तो आपकी मेजबानी और आपकी शुद्ध जलवायुका लाभ उठानेके लिए मै स्वय ही आ जाऊँगा, उसके लिए मुझे प्रलोभनकी जरूरत नही है।

इसके बाद महात्मा गांधीने कहा कि अभिनन्दन-पत्रमें मेरी पत्नीकी अनुपस्थितिका जैसा मर्मस्पर्शी ढंगसे उल्लेख किया गया है उसने मुझे बहुत विह्वल कर दिया है। कर्त्तव्यने हमें जो रास्ते दिखाये है, हम उन रास्तोंपर चल रहे है। मेरी पत्नीका कर्त्तव्य उसे यरवडा ले गया है और मेरा कर्त्तव्य मुझे आप लोगोके बीच ले आया है। मै आपको विश्वास दिलाता हूँ कि हम दोनोंको आपका आतिथ्य-सुख फिरसे उठाकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ८-१-१९३४

४७६. भाषण : बंगलौरमे, मद्यत्याग संघके सम्मुख

७ जनवरी, १९३४

मेरे लिए यह एक खुशीकी बात है कि आपने मुझे यहाँ मिलने और मद्य-त्यागके सम्बन्धमे दो शब्द कहनेके लिए आमन्त्रित किया है। आपमे से कदाचित कुछ लोग यह जानते है कि जब किसीको मेरे बारेमे मालूम भी न था और राजनीतिमे प्रवेश करनेकी मैने कल्पना भी नही की थी उस समय भी मैने जिन विषयोको अपने हाथमे लिया था उनमे मद्यत्याग भी एक विषय था। जब एक नौजवानके रूपमे मै दक्षिण आफ्रिका गया तब मैने वहाँ देखा कि कुली लोग, भारतीय गिरमिटिया लोग, शराब पीनेकी अपनी आदतके कारण तेजीके साथ अध.पतनकी ओर अग्रसर हो रहे है। दक्षिण आफ्रिकी कानूनके अनुसार गिरमिटिया भारतीयोका घरोमे शराब ले जाना एक जुर्म था, वे लोग कैन्टीनमे जितनी चाहे उतनी शराब पी सकते थे। जिसके फलस्वरूप अनेक स्त्रियाँ अक्षरश नालियोमे गिरी पडी रहती थी। यह एक ऐसी चीज थी जिसपर किसी भी भारतीयको गर्व नही हो सकता था। मैने इस सम्बन्धमे सरकारसे अनुनय-विनयकी, लेकिन मेरी आवाज नक्कारखानेमे तूतीकी आवाज थी। इसलिए यह स्थिति जारी रही। लेकिन इसका मेरे मनपर चिरस्थायी प्रभाव पडा और एक लम्बे प्रवासके बाद जब मै भारत लौटा तब मुझे निश्चित रूपसे यह मालूम था कि मुझे क्या करना है।

मै स्वैच्छिक मद्य-त्याग की बात नही करता। मै तो पूर्ण रूपसे मद्यनिषेधके पक्षमे हूँ। दक्षिण आफ्रिकामे मै अपने देशभाइयोसे लडा और मैने कहा "हमे शराब पीनेके समान अधिकारके लिए नही लडना चाहिए।" मै उन्हे लम्बे अर्से तक इसके लिए सहमत नही कर सका, लेकिन मै उनमे से अधिकाश लोगोको इस बातके लिए अवश्य राजी कर सका कि अधिकारोके लिए लडना एक चीज है और दुर्व्यसनोका सेवन करनेका अधिकार प्राप्त करनेके लिए लडना दूसरी चीज। यदि शराब पीनेके अपराधमे राज्य द्वारा गोरोको दण्डित नही किया जाता तो हमे भी वैसी ही छूटकी माँग नही करनी चाहिए। यहाँ, भारतमे, सरकार शराबका व्यापार कर रही है। मै हरिजनोके कटु अनुभवोसे यह जानता हूँ कि वे न चाह कर भी शराब पीते है। इसपर मुझे कलकत्ताके अपने एक आदरणीय सहयोगी सतीशचन्द्र दास गुप्तकी याद हो आती है। उन्होने एक अत्यन्त लाभकारी नौकरी छोड दी। वह डॉ० रायके दाहिने हाथ थे और अभी भी माने जाते है। उन्होने अपने रसायन धन्धेको छोड दिया और आज वे बस्तियोके निकट रहते है। उन्होने हरिजनोसे शराब न पीनेकी प्रतिज्ञा ली। लेकिन हरिजनोने अपनी इस प्रतिज्ञाको बार-बार तोडा। इससे उनको दु ख हुआ और उन्होने १५ दिनोके लिए उपवास किया। इसका हरिजनोपर आश्चर्यजनक असर हुआ।

उन्होने कहा कि अब वे कभी अपनी प्रतिज्ञा नही तोडेगे। सतीश बाबूको उस कष्टसे होकर गुजरना पडा लेकिन उनके लिए यह एक खुशीकी बात थी। जो कार्यकर्त्ता मद्यनिषेधके लिए भी जी-जानसे लडता है उसे यह सब सहन करना पडता है। अनेक हरिजनोने मुझसे कहा है, "इस प्रलोभनको हमारे आगे से हटा दीजिए और हम ठीक हो जायेगे। इसे हमारे रास्तेमे मत रखे।" जब हम बहुत-सी चीजोके बारेमे अपने आप पर काबू नही रख सकते तो हरिजन और मजदूर लोग अपने-आप पर कैसे काबू रख सकते है? मै इन लोगोके बीच रहा हूँ, मैने इनके साथ खाया-पिया है। उनके पास मनोरजनके कोई साधन नही है। वे तो टूटी फूटी झोपडियोमे रहते है। भौतिक सुखोपर खर्च करनेके लिए उनके पास पैसे नही है। इसलिए उन्हे जो थोडा-बहुत पैसा मिलता है वह कैन्टीनोमे चला जाता है। मै आपको जो यह सब बता रहा हूँ वह सिर्फ यह दिखानेके लिए कि शराबकी इस बुराईके प्रति मेरे मनमे कितनी तीव्र और कटु भावनाएँ है। मुझे तनिक भी शका नही है कि जबतक पूर्ण मद्यनिषेध नही हो जाता तबतक हम इस बुराईका सफलताके साथ मुकाबला नही कर सकते। मद्यनिषेधके बारेमे मेरे निश्चित विचार है। मैने आपको अपने अनुभवके परिणामस्वरूप यह बताया है कि मद्यनिषेधके बिना भारतके मजदूर वर्गमे अच्छी आदतोका विकास होना असम्भव है। और मैने यह देखा है कि हरिजनोके अन्दर यह व्यसन सबसे ज्यादा है। भारत एक ऐसा देश है जिसमे पूर्ण मद्यनिषेध सफल हो सकता है। लोगोको स्वभावत शराब पीनेकी आदत नही है। शराब पीना फैशनमे भी शामिल नही है। यहाँके मौसमको देखते हुए भी इसकी कोई जरूरत नही है। लेकिन मद्यनिषेधसे सरकारको होनेवाली आयमे अवश्य फर्क पडता है। इसीसे वह कहती है, "पूर्ण मद्यनिषेधकी माँग करनेसे पहले आप हमारी आयके अन्य साधन ढूँढ दीजिए।" मेरा सरकारसे कहना है कि "यदि आप लोग अपवित्र साधनोसे राजस्व प्राप्त करते है और फिर कहते है कि 'इस राजस्वका विकल्प लाइए,' तो आपकी बात नही सुनी जा सकती। इस सवालपर कोई सौदा नही किया जाना चाहिए।"

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १९-१-१९३४

४७७. भाषण : बंगलौरकी सार्वजनिक सभामे[1]

७ जनवरी, १९३४

श्री वी० पी० माधवराव[2]को यहाँ मौजूद देखकर मुझे बहुत ज्यादा खुशी हुई। छ साल पहले जब मै आप लोगोके बीच आया था तब मुझे उनसे मिलनेका सुख प्राप्त हुआ था। अपनी वृद्धावस्थाके बावजूद वे मुझे आशीर्वाद देनेके लिए यहाँ आये, यह देखकर पत्थरका कलेजा भी द्रवित हो जायेगा। मै मानता हूँ कि उनका यहाँ आना हरिजनोके लिए जो कार्य मै कर रहा हूँ उसके लिए आशीर्वादस्वरूप है। और मेरे लिए यह बेहद खुशीकी और सन्तोषकी बात है कि जीवनका लम्बा अनुभव रखनेवाले मैसूरके विद्वान लोग इतनी भारी तादादमे इस आन्दोलनको शुभाशीष देनेके लिए यहाँ मौजूद है। लेकिन इस सभामे मुझे श्री हमजा हुसैनकी अनुपस्थिति अखर रही है। छ साल पहले जब मै यहाँ आया था, उस समय वह स्वागत समितिके अध्यक्ष थे। उनकी उदारताओके बहुतसे प्रसग मेरी स्मृतिमे ताजे है। कितना अच्छा होता कि एक पुराने मित्रके नाते मेरा स्वागत करनेके लिए वह इस सभामे मौजूद होते। ईश्वर उनकी आत्माको शान्ति दे।

आपने जो मुझे थैली भेट की है उसके लिए मै आपका बहुत आभारी हूँ। मै 'बढिया थैली' कहने ही जा रहा था लेकिन इस विशेषणका प्रयोग करते हुए मै हिचकिचा गया क्योकि मै जानता हूँ कि बगलौरके नागरिक मिलकर एक बडी थैली इकट्ठा करनेमे काफी समर्थ है और मुझे मालूम है कि आपसे बिदा लेनेके समय तक मुझे हरिजन कार्यके लिए उदारतापूर्वक दिये गये कई दान मिल जायेगे। हिन्दुओने इन भाई-बहनोका जो लगातार बाकायदा दमन किया है, उसके बदलेमे आखिरकार यह कमसे-कम प्रतिपूर्ति है जो हम कर सकते है।

मैने आपका अभिनन्दन-पत्र आद्योपान्त पढ लिया है। तथा इस अभिनन्दन-पत्रमे जो आपने बहुत-सी बाते बताई है उसके लिए मै आपको और महाराजा साहबकी सरकारको बधाई देता हूँ। लेकिन जबतक अस्पृश्यताकी भावना हमारे हृदयोमे से बिलकुल निकल नही जाती तबतक न तो मैसूर राज्य, न मैसूरकी जनता और न मै ही किसी प्रकार सन्तुष्ट हो सकते है। हालाँकि हरिजनोके लिए जो सब काम आपने किया है उसका मै आभार मानता हूँ लेकिन मेरा आपसे ऐसा कहना है कि जबतक सारे हरिजनोको वे सब अधिकार न मिल जाये जो जीवनके सभी क्षेत्रोमे सवर्ण हिन्दुओको मिले हुए है तब तक आप चैनसे न बैठे। ईश्वर द्वारा हमे जो मोहलत

१. शामको नैशनल हाई स्कूलमें आयोजित इस सभामें बहुत बड़ी सख्यामें लोग शरीक हुए थे।

२. मैसूर, त्रावणकोर और बड़ौदाके अवकाश-प्राप्त दीवान, और मैसूर राज्य हरिजन सेवक सघके अध्यक्ष।

दी गई थी, उसमेसे थोडी-सी बच रही है, और इसी अवधिमे आइए, हम लोग
अनिवार्य आत्म-शुद्धिका काम पूरा कर ले। निश्चित मानिए कि यदि आपने इस
मोहलतका फायदा नही उठाया तो हिन्दुओको फौरन ईश्वरका कोप-भाजन होना पडेगा।

लेकिन एक शब्द हरिजन भाई-बहनोसे कह दूँ। आप इस आत्मशुद्धिसे छुटकारा
नही पा सकते। आप लोगोको भी सार्वजनिक बलिवेदी पर कुछ बलिदान करने है।
बलिदान यह कि आपको आन्तरिक और बाहरी, दोनो प्रकारकी सफाई-स्वच्छताके
नियमोका कठोरतासे पालन करना होगा। दूसरा बलिदान यह करना होगा कि जहाँ
कही आप लोगोमे मुर्दार मास और गो-मास खानेकी आदत अब भी प्रचलित हो
वहाँ इसे छोड दे। सभ्य ससारके प्रत्येक भागमे मुर्दार मासको घृणित माना जाता
है। इसे मनुष्यके खानेके अनुपयुक्त समझा जाता है। यह नही हो सकता कि कोई
अपनेको हिन्दू भी कहे और गोमास भी खाये। गौकी पवित्रता और गो-पूजा हिन्दू-
धर्मका एक अभिन्न अग है। तीसरे, यहाँपर मौजूद हरएक हरिजन स्त्री-पुरुषसे मै यह
कहूँगा कि वह मद्यपानकी आदतको छोड़ दे। कोई हरिजन यह न कहे कि सवर्ण
हिन्दू भी तो शराब पीते है। यह कोई जवाब नही है। हरिजन होनेके नाते मै आपसे
अनुरोध करूँगा कि आप सवर्ण हिन्दुओके सभी दुर्गुणोसे बचकर रहे। सवर्ण हिन्दू
आपके प्रति जो भी प्रतिपूर्ति करे, उसके बावजूद आखिरकार ईश्वरके समक्ष अन्तत
मुक्ति पाना आपके अपने ही हाथोमे है। परसो[1] जब हरिजनोने मुझे यह आश्वासन
दिया कि वे गो-मास खाना छोड चुके है और मद्यपान भी छोडनेकी कोशिश करेगे
तो इस बातसे मुझे बेहद खुशी हुई। आइए, सब मिलकर ईश्वरसे प्रार्थना करे कि
वह हरिजनोको शक्ति दे ताकि वे शराब छोडनेके अपने सकल्पका पालन कर सके।

[अग्रेजीसे]
हिन्दू, ८-१-१९३४

४७८. बातचीत : हरिजन कार्यकर्त्ताओंसे[2]

बगलौर,
७ जनवरी, १९३४

राज्य सरकार जो काम कर रही है उसमे अपनी ओरसे कुछ और
जोडना आपका काम है। आप ऐसे कार्यकर्त्ता ढूंढ सकते है जो हरिजनोके पास
जाये और जाकर उनके बीच रहे। यह तो केवल एक उदाहरण मात्र है। नियम
तो यह है कि राज्य सरकार जहाँ अपना कार्य खतम करे आप वहाँसे शुरू करे।
राज्य सरकार हर व्यक्तिकी जरूरतोको पूरा नही कर सकती। यह तो गैर सरकारी
लोगोका विशेषाधिकार है। प्रत्येक कार्यकर्त्ताको अपनी क्षमता आँकनी चाहिए।

१. देखिए "भाषण : हरिजनोंकी सभामें", ५-१-१९३४।
२. यह चन्द्रशकर शुक्लके "साप्ताहिक पत्र" से लिया गया है। गांधीजीसे लोगोंने पूछा था : "जब राज्य सरकार इतना कुछ कर रही है तो हमें क्या करना चाहिए?"

चमत्कारी प्रभाव डालनेके उद्देश्यसे हमे कोई काम नही करना चाहिए। हमारा कार्य आडम्बरपूर्ण न होकर, ठोस होना चाहिए। हमे लोगोके — सवर्णों तथा हरिजनोके — निकट सम्पर्कमे आना होगा। राज्य सरकार लोगोके साथ ऐसा सम्पर्क कदापि स्थापित नही कर सकती। यह तो अनिवार्यत समाज सुधारकका काम है। मन्दिर प्रवेशका कार्य ऐसे कार्यकर्त्ताओको करना होगा जिन्हे विशेष रूपसे इस कार्यके लिए तैयार किया गया हो। यदि वे अपने अच्छे चरित्रका परिचय देते है तो वे हरिजन जनताको प्रभावित कर सकेगे। कार्यकर्त्ताओको हरिजनोके बीच अजनबियो अथवा सरक्षकोके रूपमे नही जाना चाहिए बल्कि उनके मित्र और सेवकके रूपमे जाना चाहिए। ऐसा कार्य वर्धामे किया जा रहा है। यदि राज्यमे एक भी सच्चा कार्यकर्त्ता होगा तो अन्य अनेक लोग उसका अनुकरण करने लगेगे।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १९-१-१९३४

४७९. पत्र : एन० आर० मलकानीको

८ जनवरी, १९३४

प्रिय मलकानी,

यह रहा तुम्हारे लिए कुछ ठोस काम। अस्पृश्यता-निवारण सम्बन्धी दोनो विधेयकोके बारेमे वक्तव्य तैयार करो, विवरणमे दोनो विधेयकोका पाठ भी दो, सरकारी परिपत्र हासिल करो और वक्तव्यके साथ सारा उपलब्ध साहित्य प्रस्तुत करो।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९०४) से।

४८०. पत्र : पार्वतीबहन पी० देसाईको

बगलौर

८ जनवरी, १९३४

चि० पार्वती,[1]

तेरा पत्र मिला। प्रागजीके सम्बन्धमे सबसे पहले तेरे जरिये ही जान पाया। धारवाडमे कोई स्नेही है क्या? वहाँसे पत्र आये तब मुझे सूचित करना। धारवाड कब ले गये? तारा और बच्चोके समाचार देती रहना। पता वर्धाका ही करना। पत्र तूने ही लिखा है या किसीसे लिखवाया है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५०३६) से।

१. प्रागजी देसाईकी पत्नी।

४८१. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

बगलौर
८ जनवरी, १९३४

बा,

तेरा पत्र इस बार अभी तक नही मिला। लेकिन भटकता हुआ आ पहुँचेगा, ऐसा मै मानता हूँ। अब तुझे अखबार मिलता होगा। 'भागवत' और 'रामायण' मिली होगी। अन्य जो पुस्तके चाहिए हो सो मँगा लेना। मणिलालका पत्र आया है। सुशीलाका भी। दोनो मजेमे है, मणिलाल शान्त है, चिन्ता न करनेको लिखता है। सीता खूब बढ रही है। खूब खेलती है। देवदास जितना सोचा था उससे जल्दी छूट गया है। अहमदाबाद गया है। उसका तार मुझे आया था। कदाचित् तुझसे मिलकर जायेगा। रामदास और नीमुके पत्र भी आये थे। मनुको मै लिखता रहता हूँ, लेकिन फिर उसका कोई पत्र नही आया है। किशोरलालका बुखार अब कम है इसलिए थोडे दिनोमे उसके व्याधिमुक्त होनेकी आशा की जा सकती है। मणिकी अच्छी ही खबर है। ओम, किसन, चन्द्रशकर आदि सब मजेमे है। आज मै बगलौरमे हूँ। तुझे सब याद करते है। शकरलाल और गुलजारीलाल यही आये है। मजदूरोके वेतनके बारेमे पचायत बैठेगी। कल मगलवार है इसलिए कल पचायत बैठेगी। बादमे मुझे मलाबार जाना है। जहाँ तू घूम आई थी वहाँ जाना होगा। उर्मिलादेवीका लडका अभी आजकल मद्रासमे नौकरीपर है। मेरी तबीयत अच्छी रहती है। चिन्ता करनेका तनिक भी कारण नही। लोग सब झुण्डके-झुण्ड आते है और थैलियाँ, आभूषण आदि भी देते है। कान्ति अब बेहतर है। मै देखता हूँ कि बाल थोडे दिनोमे मुझे मिलेगा। उसकी तबीयत भी अच्छी है। उम्मीद है, तुम सब वहाँ आनन्दपूर्वक होगी। शान्ता, ललिता अभ्यासमे कहाँ तक बढी है? अब प्रवचन।

आज 'गीता'मे यज्ञके सम्बन्धमे जो कहा गया है उसपर थोडी चर्चा करूँगा। यज्ञकी बात तीसरे अध्यायसे शुरू होती है। और उसमे भगवान कहते है कि यज्ञ किये बिना जो मनुष्य भोजन करता है वह चोरीका खाता है। लेकिन यह तो बहुत भारी वचन कहा जायेगा। क्योकि चोरीका अन्न खाना तो कच्चा पारा है। कच्चा पारा किसीसे हजम नही होता और जो खाता है उसके अग-अगमेसे फूट निकलता है। इसीसे अखा भगतने कहा है। 'कच्चो पारोखाचो अन्न तेवु छे चोरीनु धन' अर्थात् जो मनुष्य घडीभर यज्ञ बिना रहता है वह चोर ठहरता है। इस यज्ञको हमे सबको जानना चाहिए। हमारे सौभाग्यसे जिसका हृदय व्यवस्थित है उसके लिए यज्ञ सहल है। इसके लिए धनकी जरूरत नही, बुद्धिकी नही, और शिक्षाकी भी नही। यज्ञ अर्थात् हर कोई परोपकारी कार्य। जिसका समस्त जीवन यज्ञमय हो उसीके विषयमे कहा जा

सकता है कि वह चोरीका अन्न नही खाता। इससे जो व्यक्ति थोडा-सा भी यज्ञ करता है वह अपेक्षाकृत कम चोरी करता है। इस तरह विचार करनेसे हम सब थोडी-बहुत चोरी अवश्य करते है। जब हम स्वार्थ-भावका त्याग करते है तभी पूरा यज्ञ किया कहा जायेगा। स्वार्थका त्याग करना अर्थात् अहम्का, "मै" का त्याग करना। यह मेरा है और वह पराया, यह मेरा लडका है और वह दूसरेका, ऐसा भाव मनमे रहना ही नही चाहिए। ऐसा तो वही कर सकता है जिसने अपना सब कुछ कृष्णार्पण कर दिया है। जो मनुष्य ऐसे करता है सो सब ईश्वरको बीचमे रखकर करता है, उसको सेवकके रूपमे ही करता है और सेवाभावसे करता है। ऐसा मनुष्य नित्य सुखी रहता है, नित्य शान्त रहता है। उसके लिए सुख, दुख समान है। वह अपना शरीर, मन, बुद्धि, धनका जो कुछ भी उसके पास हो सब परमार्थके लिए ही उपयोग करता है। ऐसा पूर्ण यज्ञ हम सब नही कर सकते। समस्त जगतकी सेवा हमसे हो सके तो करे। ऐसी भावना मनमे हो तो ऐसा कौनसा कार्य है जो सारे मनुष्य कर सकते है, जिसमे समस्त जगतकी सेवा निहित हो। इस तरह विचार करनेपर कताई मेरे ध्यानमे आई। परमार्थकी दृष्टिसे यह कार्य असख्य व्यक्ति कर सकते है। कह सकते है कि इतनी मेहनत जगतके अर्थकी। लेकिन यह तो मैने एक उदाहरण दिया है। मुझे तो मुख्यत तुम्हे यज्ञका हेतु और उसका अर्थ समझाना था। इतना यदि मै इससे समझा सका हूँ तो यह पर्याप्त है। सब बहनोको,

बापुके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना बाने पत्रो, पृष्ठ ७-८

४८२. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

बगलौर
८ जनवरी, १९३४

भाई वल्लभभाई,

बाको पत्र लिखनेके बाद तुम्हे लिखने बैठा हूँ। अब शामके चारसे ज्यादा बजे है। मौनवार है। आज हम बगलौरमे है। कल मजदूरोके वेतनमे कटौती करनेकी (अहमदाबादकी) मिलोकी माँगके बारेमे पचायत बैठेगी। उसके लिए शकरलाल (बैंकर), गुलजारीलाल आदि आ गये है। मिल मालिक कल आयेगे। मैने उन्हे पाँच घटे देनेकी बात कही है। कल रात हम मलाबारकी ओर रवाना होनेवाले है।

कामका बोझ तो बराबर रहता ही है। फिर भी स्वास्थ्य अच्छा रहता है। कल सुब्बाराव[1] आकर शरीरकी जाँच कर गये और खुश हुए। रक्तका दबाव १५५-१०० आया। यह बहुत अच्छा माना जायेगा। अभी तक तो इतनी ही धारणा है कि ठक्कर बापा १९ तारीखको कालीकटमे मिलेगे।

१. बंगलौरके एक विख्यात डॉक्टर।

यहाँ मै मैसूर राज्यके भवनमे हूँ। जहाँ पहले था, वही।[1] लोगोमे काफी उत्साह है। दीवान आकर मिल गये है। तुम्हे बहुत याद करते थे। अपना सलाम कहलाया है। प्रेम खूब जताते है।

[2]का पत्र आया था। उसने मोटर बेच देनेकी इच्छा व्यक्त की है। बादमे ठक्कर बापाका तार आया था कि वह बेच देनेको तैयार है। इसलिए मैंने अनुमति दे दी। मुझे बात कुछ समझमे तो नही आई। ऐसे मामलोमे मेरा सारा आधार यदि कोई है तो वह तुम हो। अतएव मै अनेक बार एकलव्यकी भाँति व्यवहार करता हूँ। एकलव्य द्रोणाचार्यका मिट्टीका पुतला बनाकर उससे ज्ञान पाकर अर्जुनके समकक्ष बन गया। मै तुम्हारी मानसिक प्रतिमा बना लेता हूँ और उससे पूछ लेता हूँ। यह सोचकर कि इसमे तुम अपनी सम्मति ही दे रहे हो, मैंने इस स्वीकृतिका तार दिया।

कुँवरजीकी पत्नीकी मृत्युसे नेपोलियन[3]को बहुत आघात पहुँचा है। मैंने आश्वासन का जो पत्र भेजा था उसके उत्तरमे मुझे उसके स्नेहपूर्ण पत्रसे इस बातका आभास मिलता है। मैंने उसे फिर पत्र लिखा है। [4] सन्तुष्ट नही है, यह मै उसके पत्र-परसे देखता हूँ। मैंने पूछा है कि उसे क्या दुख है?

मुन्शी वकालत करने लग गये है। जीवराजके बारेमे तो तुमने पढा होगा।

डॉ० विधानके बारेमे कहा जा सकता है कि वे मौतके मुँहसे वापस आये हैं। मैंने उन्हे तार दिया था, उसके उत्तरमे उन्होने उक्त बात लिखी है। एक हड्डी टूट गई है। पन्द्रह दिन तक तो खाट पर पडे रहना होगा।

मामाका पत्र आया है। उसमे तुम्हारे पत्रका उल्लेख है। वे लिखते है कि हरिजन कार्यके सिलसिलेमे अलगसे हिसाब-किताब रखना, अलग से चन्दा जमा करना अब सम्भव नही होगा, पैसा भी कोई नही देगा। इसलिए नवसारी, गोधरा आदि स्थानोपर इस तरहका जो कोष और हिसाब रखा जाता था उन सबके लिए हमसे जितना बन सके उतना बजट पास कर हरिजन सेवक सघसे पैसा लेनेका निश्चय किया गया है। सम्बन्धित सस्थाओके स्वामित्वको नही बदला जायेगा। मात्र उन्हे उचित अनुदान मिलता रहेगा और वे हरिजन सेवक सघकी देखरेखमे कार्य करेगी। उनके स्वतन्त्र अस्तित्वको तनिक भी आँच नही आयेगी। मामा अभी तो स्वेच्छासे इसी काममे लगे रहेगे। मैंने किसीका भी मार्गदर्शन करनेसे साफ इन्कार कर दिया है। मेरा मन ही इसके लिए हामी नही भरता। इस हरिजन सघके बारेमे यदि तुम्हे कुछ पूछना अथवा जानना हो तो मुझे लिखना। स्वय मुझे समझ नही आता कि मै क्या लिखूँ। लेकिन तुम जरा भी इशारा करोगे तो मैं सारी आवश्यक जानकारी लिखकर भेज दूंगा। मै स्वय ही उत्तर लिखने बैठ जाऊँगा, ऐसी अपेक्षा न करना। मै हाथ, मस्तिष्क और समय बचाकर ही काम करता हूँ।

१. कुमार पार्क।
२. साधन-सूत्रमें नाम नहीं दिया गया है।
३. छोटूभाई मेहता।
४. साधन-सूत्रमें नाम नहीं दिया गया है।

देवदास जल्दी रिहा हो गया है। उसका तार आया था। मुझे मिलकर तो अवश्य जायेगा। तार अहमदाबादसे दिया था। बहुत करके बासे मिलने जायेगा।

मणिलाल और सुशीलाके पत्र आते रहते है। उसका ठीक चल रहा है। केशु भी ठीक काममे लग गया है। रामदास परेशान है। वह शान्ति पा ही नही सकता।

ऐसा लगता है कि किशोरलाल ठीक होता जा रहा है। व्रजकृष्ण जी गया है। अब थोडा चल फिर भी लेता है। जमनालालको सर्दी लग गई है। शकरलालका खयाल है कि उनका स्वास्थ्य अच्छा तो नि सन्देह नही है। वजन तो २०० पौडके आसपास हो गया है।

ओम और किसन सानन्द है। मीराबहन का तो कहना ही क्या। तुम दोनोको,

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृष्ठ ५९-६१

४८३. पत्र : शान्तिकुमार मोरारजीको

८ जनवरी, १९३४

चि० शान्तिकुमार,

तुम्हारे पत्रकी तो अनेक बार आशा किये रहता हूँ। और जब नही मिलता तो मै मान लेता हूँ कि तुम मुझपर दया खाकर ही नही लिखते।

ऑपरेशन ठीक ढगसे हो गया होगा।[1] मुझे स्वय लिखना या लिखवाते रहना। सामान्य रूपसे तो यह आपरेशन मामूलीसा माना जाता है, ऐसा मै सुनता हूँ।

'हरिजन' तो पढनेमे आता ही होगा। मेरा स्वास्थ्य ईश्वर निभाये चलता है।

तुम दोनोको,

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

वर्धाके पतेपर लिखना ही सुरक्षित है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४७२१) से, सौजन्य शान्तिकुमार मोरारजी

१. प्रेषीका हर्नियाका ऑपरेशन हुआ था।

४८४. पत्र : क० मा० मुन्शीको

८ जनवरी, १९३४

भाईश्री मुन्शी,

तुम्हारा पत्र मिला। लीलावतीका अभी तक तो नही मिला।

अस्पृश्यताके सम्बन्धमे आवश्यक साहित्य मैं तुम्हे भेजूंगा। यदि पूरी रोटी न मिल पाये और चौथाई ही मिले तो भी ले लूं, मैं ऐसा हूँ। रोटीके बदले रोटीके नाम जब पत्थर मिले तो मैं लेनेको तैयार नही होता। तुम मुझे कभी रोटीके नामपर पत्थर दोगे इसका भय तो मुझे कदापि नही है। अत तुमसे जो-कुछ दिया जा सके वह दिया करो।

तुम जैसा लिखते हो वैसा एक पक्ष निर्माण हो जाये इसमे कोई हानि है, ऐसा मैं नही मानता। तुम्हारे मसविदेमे मैंने कुछ-एक सुधार किये है, उन्हे देख जाना।[1] सविनय अवज्ञाके सम्बन्धमे जो उल्लेख है वह योग्य नही है। कुछ हदतक उसमे विकृतियाँ अवश्य आ गई थी पर इतना कहना भी इस मसविदेमे एकदम अप्रासगिक है। विरोधी लोग उसका दुरुपयोग किये बिना नही रहेगे और सविनय अवज्ञाका जो अग मैंने छोड दिया है उसका कारण भी कोई विकृति नही थी।

यह पक्ष भी जो तैयार हो रहा है वह कोई दूसरे दलोको आकर्षित करनेकी दृष्टिसे नही है। बल्कि इसके निर्माणका कारण यह है कि वे कांग्रेसवाले जो सविनय अवज्ञा आन्दोलनमे नही पडना चाहते या नही भाग ले सकते वे लोग अपनी हस्ती कायम रखने और थोडी बहुत सेवा करनेकी इच्छासे ऐसा करना चाहते है। और इसीलिए दूसरे पक्षोका उल्लेख मैं अनावश्यक समझता हूँ। यह पक्ष बन जाये फिर भले ही दूसरे दलोसे बातचीत करे? इसके नामकरणके बारेमे सोचना होगा। जैसे तुम मुझसे पूछना उचित समझते हो उसी प्रकार जवाहरलालसे भी इसकी चर्चा करो। ऐसी मेरी सलाह है। यदि अधिक भाग-दौड करके स्वास्थ्य खराब करोगे तो मेरे उलाहने सुनने होगे। तुम दोनोको,

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७५३०) से; सौजन्य क० मा० मुन्शी

१. मुन्शी और रगास्वामी अय्यगारने स्वराज्य दलको कांग्रेसके सवैधानिक अंगके रूपमें पुन प्रतिष्ठित करनेसे सम्बन्धित एक योजनाका मसविदा तैयार करके गांधीजीको दिया था।

४८५. सन्देश : मैसूरके लोगोंको

९ जनवरी, १९३४

मै अपने साथ मैसूर राज्यके अपने सक्षिप्त प्रवासकी अत्यन्त सुखद स्मृतियाँ लिए जा रहा हूँ। मै आशा करता हूँ कि मैसूर की जनता अपनी जिस प्रबुद्धताके लिए विख्यात है उस ख्यातिको वह अस्पृश्यताको जडमूलसे उखाड कर कायम रखेगी।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १०-१-१९३४

४८६. भाषण : पालघाटकी सार्वजनिक सभामे[1]

१० जनवरी, १९३४

अपने उन मित्रोके प्रति जो अपने-आपको सनातनी कहते है पूर्ण आदरभावके साथ मैने आज सवेरे अधर्मभूमि मलाबारमे प्रवेश किया। और जिस समय मै जाने-पहचाने रास्तोसे गुजर रहा था उस समय मेरी आँखोके सामने एक ऐसे असहाय नायडीका चेहरा उभर आया जिससे मै पिछली बार मिला था।[2] सुबहके दस या ग्यारह बज रहे होगे और हम लोग अस्पृश्यता, अदर्शनीयता या अनुपगम्यताके बारेमे चर्चा कर रहे थे। ससारभरमे केवल मलाबार ही एक ऐसा स्थान है जहाँ इनके सारे स्वरूप दिखाई पडते है। चर्चा चल ही रही थी कि अचानक एक तीखी आवाज सुनाई दी। जो लोग मुझसे बातकर रहे थे उन्होने कहा "हम आपको एक जीवित नायडी दिखा सकते है।" सार्वजनिक मार्गका उपयोग उसके लिए वर्जित था। वह नगे पाँव, बिना कोई आहट किये खेतोसे होकर चला जा रहा था। मै मित्रोके साथ बाहर गया और मैने नायडीको देखा। मैने उसे अपने पास आने और बातचीत करनेके लिए कहा। वह स्पष्टत सहमा हुआ था कि कौन जाने कब उसपर कोई प्रहार कर बैठे। उसने काँपते हुए मुझसे बातचीत की। मैने उसे बताया कि मेरे समान ही सार्वजनिक मार्गपर वह भी चल सकता है। उसने कहा, "ऐसा नही हो सकता। मै सार्वजनिक मार्गपर नही चल सकता।" मै इस किस्सेको यही समाप्त करता हूँ और सनातनियोसे अथवा किसी भी व्यक्तिसे कहता हूँ कि वे इस अमानवीय व्यवहारके

१. प्रात सवा आठ बजे हुई इस सभामें लगभग ४००० लोग उपस्थित थे। इसमें नगरपालिका और तालुका बोर्डकी ओरसे गांधीजीको अभिनन्दन-पत्र भेंट किये गये थे।
२. देखिए खण्ड ३५, पृष्ठ १५०।

पक्षमे कोई [शास्त्रीय] प्रमाण दिखाये। आप मुझे अपने साथ मुस्कराते, हँसते और मजाक करते हुए पायेगे लेकिन आप लोग यह भी समझ ले कि इस हँसी-मजाकके पीछे, इन मुस्कराहटो और ठहाकोके पीछे मलाबारकी अपनी इस यात्राके दौरान मुझे उस नायडीका चेहरा और वह दृश्य बराबर याद आता रहेगा, मुझे कचोटता रहेगा।

जिस समय मै यहाँ आ रहा था उस समय कुछ प्रदर्शनकारियोने मुझे काले झण्डे दिखाये। और कुछ लोगोने राष्ट्रीय झण्डोसे मेरा स्वागत किया। मै आपसे कहता हूँ कि राष्ट्रीय झण्डा लिये हुए लोगोकी अपेक्षा मैने काले झण्डे दिखानेवाले प्रदर्शनकारियोको अधिक पसन्द किया, क्योकि — मै काले झण्डेके पीछे छिपे असत्यको उसके नग्न स्वरूपमे देख सका। और जो लोग काले झण्डे लिए हुए थे उन्होने यदि अपने शरीरपर ब्राह्मणोकी तरह चन्दन लगा रखा था तो उससे क्या? हाथमे काला अथवा लाल झण्डा लेनेसे अथवा माथेपर तिलक लगानेसे कोई ब्राह्मण नही बन जाता। ब्राह्मणत्व कोई बाहरी चिह्नोसे नही जाना जाता। जिन शास्त्रोमे मेरी आस्था है और जिनके लिए मै अपने प्राणोकी बाजी भी लगा सकता हूँ वे मुझे बताते है कि ब्राह्मण केवल वही है जो ब्रह्मको जानता है। ब्राह्मणत्व मानवताका, अनात्मशसाका, दयाका सार है। हमारे पूर्वजोने हमे जिन गुणोका आदर करना सिखाया है वे सारे गुण एक ब्राह्मणमे मूर्तिमान् होने चाहिए। ब्राह्मण वही है जो धर्मग्रन्थोका जीवित आगार है, वह व्यक्ति नही जो काले झण्डे लेकर असत्यका प्रदर्शन करता है।

मै मलाबारमे अपनी आत्माकी गहराइयोसे बोलनेके लिए आया हूँ। जैसा कि आप जानते ही है मलाबारमे ऐसी बहुत सारी चीजे है जिन्हे देखकर मै हर्षोन्मत्त हो उठता हूँ। मलाबारमे जो दृश्यावली हे वह ससारमे अद्वितीय है। मनुष्य यदि सही आचरण करे तो मलाबारमे सरलतासे जीवन-यापन कर सकता है। मलाबारमे स्त्रियोको भारतभर मे सबसे ज्यादा स्वतन्त्रता प्राप्त है। मै मलाबारमे जितनी स्त्रियोसे मिला हूँ उन सबमे ऐसी तेजस्विता है जिसका मैने हमेशा सम्मान किया है। जैसा कि आपको मालूम है मुझे त्रावणकोरकी भूतपूर्व महारानीसे मिलनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उनकी सादगी पर मै मुग्ध हो गया और मुझे प्रथम दर्शन पर ही उनसे प्रेम हो गया। लेकिन मलाबारमे अस्पृश्यताकी जो भावना पाई जाती है उस पर गर्व करने जैसी कोई बात नही है। यह ससारकी सबसे बडी बुराई है। मै चाहता हूँ कि आप मलाबारसे अस्पृश्यताके इस कलकको धो डाले, और यदि आप ऐसा कर सकते है तो स्वाभाविक है, सारा हिन्दुस्तान आपका अनुकरण करेगा, और यदि आप चाहे तो ऐसा कर सकते है। मै बहुत आशाएँ लेकर मलाबार आया हूँ। यह अब आपकी इच्छा पर निर्भर करता है कि आप उन्हे पूरा करे अथवा न करे। लेकिन आप मेरी इस भविष्यवाणीको याद कर ले कि आज अस्पृश्यता जिस रूपमे प्रचलित है, वह जारी रहा तो हिन्दू धर्मका नाश हो जायेगा। मै चाहूँगा कि मै जो कह रहा हूँ आप उस पर विश्वास करे और हिन्दू धर्मको आनेवाले विनाश

से बचा ले। आप इन दोनोमे से कुछ भी चुन सकते है। यही समयहै, फिर इसका मौका नही मिलेगा।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १९-१-१९३४

४८७. भाषण : पालघाटकी महिला-सभामे[1]

१० जनवरी, १९३४

क्या आप जानती है कि मै यहाँ क्यो आया हूँ? मै यहाँ आपसे पश्चात्ताप करनेके लिए कहनेको आया हूँ। मै यहाँ आपसे यह बात भुला देनेको कहने आया हूँ कि किसी भी व्यक्तिको "अस्पृश्य" कहा जा सकता है। मलाबारकी स्त्रियाँ अर्थात् आप लोग भारतके किसी अन्य भागकी महिलाओकी अपेक्षा अधिक स्वतन्त्र है। और यदि आप चाहे तो आप हिन्दू-धर्मको सकटसे बचा सकती है। यदि लाखो लोग मेरे पास आये और आकर मुझसे कहे कि अस्पृश्यता एक दैवी प्रथा है तो मै यही कहूँगा कि अस्पृश्यता शैतानकी बनाई हुई प्रथा है। मै अभी-अभी एक छोटी बस्तीका दौरा करके आया हूँ जहाँ मै नायडी भाइयो और कुछ नायडी बहनोसे मिला। यह आपके लिए और मेरे लिए शर्मकी बात है कि उन्हे दूरसे फेके गये थोडेसे चावलो पर गुजारा करना पडता है। मुझे आपसे इससे ज्यादा और कुछ नही कहना है। और यदि आप [अछूतोद्धारके कार्यको] प्रायश्चित्तके साथ शुरू करना चाहती है तो आपको यह शुरुआत अपने जेवर और चाँदीके सिक्के देकर करनी चाहिए जिससे कि इन असहायोकी मददके लिए चन्दा जुटाया जा सके।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, १२-१-१९३४

४८८. भाषण : नायडियोंकी सभा, कुजालमन्नम्मे

१० जनवरी, १९३४

मुझे यह जो मानपत्र मिला है, मेरे ख्यालसे इसे आपने पढा तक नही है। इसलिए मानपत्रमे जो लिखा हुआ है उसका बहुत थोडा मूल्य है और यह मेरे विचार से सत्यका भग है। असलमे यदि यह मानपत्र आपने मुझे मलयालममे पढ कर सुनाया होता तो शायद मै समझता कि इसमे आपने अपनी भावनाओको व्यक्त किया है और इसका कुछ शिक्षात्मक मूल्य होता। इसके अतिरिक्त आपकी हालतसे मै अनजान नही था। और एक उद्देश्यको ध्यानमे रखकर मै भारतके अन्य भागोका दौरा कर रहा हूँ, उसी उद्देश्यको लेकर मै अभी-अभी मलाबार आया हूँ और वह उद्देश्य है नायडी

१. इस सभामें, जो गोडर पिक्चर पैलेसमें हुई थी, लगभग, १,००० स्त्रियोंने भाग लिया था।

और गैर-नायडी लोगोके भेदको दूर करना। अनुपगम्यता अथवा अस्पृश्यतासे बडा पाप और कोई नही है। जब तक हरिजन लोग अस्पृश्यता रूपी पिशाचके पैरो तले कुचले जाते रहेगे तब तक हमे उस पिशाचको कुचलनेके लिए काम करते रहना होगा। मै चाहता हूँ कि अस्पृश्यता हिन्दू धर्मसे पूरी तरह नष्ट हो जाये अन्यथा स्वय हिन्दू धर्म ही नष्ट हो जायेगा। मै चाहूँगा कि आप लोग जहाँ तक आपसे बन सके आत्मशुद्धिके इस आन्दोलनमे भाग ले और शिक्षाके रूपमे आपको जो भी सुविधा उपलब्ध हो उसका आप अपने लिए और अपने बच्चोके लिए लाभ उठाये। यदि आपको शराब पीनेकी आदत हो तो आपको उसका त्याग कर देना चाहिये और यदि आप सफाई, स्वच्छताके सरल नियमोका पालन नही करते तो आपको उनका पालन करना चाहिए। आपको सफाई सम्बन्धी नियमोका पालन भी करना चाहिए तथा शरीर और मनसे स्वच्छ रहना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ११-१-१९३४

४८९. भाषण: गुरुवायूरकी महिला-सभामे

१० जनवरी, १९३४

बहनो,

मुझे जो अभिनन्दन-पत्र और थैली भेट की गई है उसके लिए आपका धन्यवाद। मलाबारमे यह पहला स्थान है जहाँ अभिनन्दन-पत्र स्त्रियोने भेट किया है। इससे यदि आपका यह मतलब हो कि आप इस ताल्लुकेकी स्त्रियोका प्रतिनिधित्व करती है तो इसका अर्थ यह हुआ कि यहाँके पुरुषोको मुझे कोई अभिनन्दन-पत्र नही देना है। हो सकता है कि आपके अन्दर आत्म-शुद्धिकी भावना न आ पाई हो। मै देखता हूँ कि मलाबारकी स्त्रियोने पुरुषो और स्त्रियो दोनो की ही ओर से अभिनन्दन-पत्र भेट करनेका काफी प्रयास नही किया है। अस्पृश्यताके विरुद्ध जेहादका नेतृत्व स्त्रियोको ही करना चाहिए। शिक्षाके मामलेमे, मलाबारकी स्त्रियाँ दूसरे प्रदेशोकी अपनी बहनो की अपेक्षा बहुत आगे है। मै चाहता हूँ कि आप इस शिक्षाका ज्यादासे-ज्यादा लाभजनक ढगसे उपयोग करे। मुझे जो चीजे भेटमे दी गई है जब मै उनकी नीलामी करूँ उस समय मै यह उम्मीद करता हूँ कि उन्हे स्त्रियाँ ज्यादा दामोमे लेकर पुरुषोको शर्मिन्दा कर देगे। मै कह सकता हूँ कि आप एक चूडी, हार आदि देकर यह काम आजसे ही शुरू कर सकती है। लेकिन आप या तो मुस्करा रही है या हँस रही है। मै मामलेको गम्भीरतासे ले रहा हूँ। मद्रास और आन्ध्र जैसे भारतके कम विकसित प्रदेशोमे स्त्रियोने दो या तीन चूडियाँ देकर बोली बोलनेका काम शुरू कर दिया है। मै ज्यो ही दो-चार बाते पूरी कर लूँगा, मै प्रत्यक्ष रूपसे स्त्रियोके साहसकी परीक्षा लूँगा। यहाँ जो बहने इकट्ठी हुई है उन्हे मै यह बता देना चाहता हूँ कि आज सुबह मलाबार आनेके बादसे मै यह सोचता रहा हूँ कि मै कौनसा

विशेष सन्देश दे सकता हूँ क्योकि मलाबारमे तो अस्पृश्यताकी बीमारी बहुत भयकर रूपमे दिख रही है।

मै समझता हूँ कि यदि मलाबारकी स्त्रियाँ दुगनी शक्तिके साथ इस कामको करनेका निश्चय कर ले तो इस अस्पृश्यतारूपी पिशाचका अन्त किया जा सकता है। ससारके दूसरे भागोमे स्त्रियोने त्याग और कष्ट-सहन द्वारा अपने अधिकार हासिल किये है। लेकिन मलाबारकी स्त्रियोके लिए तो इस बातकी दुगनी विशेषता होनी चाहिए और उसका सीधा-सादा कारण यह है कि भारतमे मलाबारकी स्त्रियोका अपना एक अनोखा स्थान है। इसलिए यदि मलाबारकी स्त्रियाँ अस्पृश्यताके इस राक्षसके विरुद्ध लडाईका नेतृत्व सम्भाल ले तो इसका शीघ्र ही नाश किया जा सकता है। मलाबारमे प्रवेश करनेपर मैने देखा कि केवल मलाबारमे ही स्त्रियाँ बिलकुल स्वच्छ सफेद कपडे पहनती है। यह तो पिछले कुछ समयसे ही स्त्रियोमे रगबिरगे कपडे पहननेका फैशन चल पडा है। फिर भी मैने देखा है कि इधरके भागोमे लोग रगोसे उतना प्रेम नही करते जितना कि भारतके अन्य भागोमे करते है। मुझे आपके घरेलू जीवनके रहस्यका नही पता। लेकिन मैने अपनी तरफसे ऐसा मान लिया है कि मलाबारकी स्त्रियोका यह सफेद पहनावा उनकी आन्तरिक शुद्धताका परिचायक है। यदि मलाबारमे अस्पृश्यता बिलकुल खत्म कर दी जाती है तो मुझे उम्मीद है कि मेरा विश्वास सच्चा साबित होगा। मेरा खयाल है कि शिक्षाके मामलेमे मलाबारकी स्त्रियाँ सबसे आगे ठहरेगी। मलाबार की स्त्रियोसे मै जो काम करवाना चाहता हूँ वह यह है कि हिन्दू-धर्मके सिरपर जो खतरा मँडरा रहा है आप उसे उससे बचा ले। मै चाहूँगा कि आप अपना आलस्य और उदासीनता, जो कुछ भी हो, उसे छोड दे। मै यह चाहूँगा कि आप धर्मके मामलेमे सदा सतर्क और जागरूक रहे जैसी कि आप अपने बच्चोकी देखभाल करते समय होती है। बच्चोके साथ तो आप स्नेह-दुलारसे काम लेगी। लेकिन आपके धर्मके साथ ऐसी बात नही है। धर्मके मामलेमे तो आप जितनी ही सतर्क रहेगी, वैज्ञानिक दृष्टिसे आप उतनी ही नियमनिष्ठ बनेगी। मलाबारकी स्त्रियोके सामने एक महान् कार्य है। क्या आप ऊँच और नीचका भेद दूर करनेका प्रयत्न करेगी? आप मेरा विश्वास करे कि जिन्हे हम अपनेसे छोटे मान रहे है वे भगवानकी दृष्टिमे छोटे नही है। अस्पृश्यताका प्रचार उस अविनयके कारण है जो कि धार्मिक पुस्तकोकी गलत व्याख्याको जन्म देता है। मुझे अतिशयोक्ति करनेकी आदत नही रही है, और यदि ऐसा प्रतीत होता हो कि मै कडी भाषाका प्रयोग कर रहा हूँ तो उसका कारण यह है कि मै समझता हूँ कि मेरा यह विश्वास एक बुनियादी विश्वास है। स्त्रियोसे जो-कुछ मैने कहा है वही बात पुरुषोपर भी लागू होती है। आप अविश्वाससे परे नही है। धर्मकी रक्षाके लिए बहुतसे पुरुष और स्त्रियोकी जरूरत होती है। इसे सक्षेपमे कहे तो वर्तमान आन्दोलन आत्म-शुद्धिका आन्दोलन है।

[अग्रेजीसे]

हिन्दू, १२-१-१९३४

४९०. पत्र : यूवोन प्रिवाको

स्थायी पता
वर्धा, मध्यप्रान्त
११ जनवरी, १९३४

प्रिय भक्ति,

सवेरेके ठीक ३ बजकर २० मिनट हुए है और मैंने अभी-अभी तुम्हारा बिना तारीखका पत्र पढकर समाप्त किया है। स्त्रियाँ भला तारीखोकी परवाह क्यो करने लगी। वे तो अनन्त कालको ध्यानमें रखकर काम करती है इसलिए मनुष्यने समयको जो तारीखो और दिनोमें विभाजित कर दिया है उसकी चिन्ता नही करती।

तुमने जो आरोप लगाया हे वह तुम्हारे दृष्टिकोणसे ठीक ही है। हम कुछ इतनी तेजीसे दौरा कर रहे है कि पत्रोका उत्तर देनेका समय ही नही मिल पाता है। तुम्हारा (पिछला) पत्र भी मेरे पास कही पडा है लेकिन मुझे इतना भी समय नही मिला कि मै उसे पढ सकूँ। यह सचमुच बहुत शर्मकी बात है इसलिए आज मै सबसे पहले तुम्हारे पत्रका जवाब दे रहा हूँ जिससे कि वह पत्रोके ढेरमे कही गुम न हो जाए। हालाँकि मीराने और मैंने तुम्हे कुछ अर्सेसे पत्र नही लिखा है फिर भी तुम सदा हमारे मनमें समाई रहती हो। तुम दोनोकी अवियोज्यता, तुम्हारे सदैव मुस्कराते हुए चेहरे और त्याग करनेकी तुम्हारी तत्परता, ये और ऐसी अन्य बाते मुझे तुम्हारे साथ बीते हुए क्षणोकी सदा याद दिलाती रहती है।

मै जानता हूँ कि तुम वहाँ अच्छा काम कर रही हो। हाँ, हिटलरके विरुद्ध पादरियोके विद्रोहकी बात मैंने अवश्य पढी थी।

सेरेसोल[1] की जर्मनी-यात्राके बारेमें मै और अधिक सुननेकी आशा रखता हूँ। कृपया तुम उन्हे मेरा स्नेहाभिवादन कहना।

मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि तुम्हे 'हरिजन' नियमित रूपसे नही मिल रहा है। मै तुरन्त ही सम्पादकको लिख रहा हूँ।

आशा है तुम दोनो सब तरहसे अच्छी तरहसे हो।

क्योकि तुम्हे 'हरिजन'से मेरे बारेमें सब कुछ मालूम हो जायेगा, इसलिए मै अपने बारेमें कुछ नही लिख रहा हूँ।

बापू

१ पियरे सेरेसोल, युद्धका विरोध करनेवाले स्विट्‌जरलैंड-निवासी एक सज्जन और 'अतर्राष्ट्रीय सेवा' के सस्थापक।

[पुनश्च]

देवदास अभी-अभी जेलसे छूटा है। बा, प्यारेलाल और महादेव अभी भी वही है।

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २३३७) से।

४९१. भाषण: गुरुवायूरकी सार्वजनिक सभामे[1]

११ जनवरी, १९३४

मित्रो,

मै चाहूँगा कि आप सब लोग बिलकुल शान्ति रखे।[2]

हमे यहाँ इस सनातन सत्यका एक सशक्त दृष्टान्त मिल गया कि "अपने मन कछु और है, कर्त्ताके कछु और"। मै तो आपके सामने ऐसे विषयो पर बोलना चाहता था जो आपके लिए, मेरे लिए और समस्त हिन्दू ससारके लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो। ऐसा करनेके बजाय मुझे बहुमूल्य चालीस मिनट ऐसे दृश्यको देखनेमे लगाने पडे है जो मैने आज सुबह ही देखा।[3] मैने अपने दो देशभाइयोको यहाँ चबूतरे पर लेटे हुए देखा, उनमे से एकके मुँहसे खून बह रहा था और दोनो ही बेहोश दिखाई देते थे। इसलिए सबसे पहले तो मुझे अपने इन देशभाइयोकी जो देखभाल मुझसे सम्भव थी वह करनी पडी। और इसीलिए मैने उन्हे चिकित्साके लिए प्रो० मलकानीकी देखरेखमे यहाँके दवाखानेमे भेज दिया है। जहाँतक मुझ जैसा एक साधारण शुश्रूषा करनेवाला समझ सकता है, मै नही समझता कि उनका जीवन किसी प्रकारसे खतरेमे है। और आइए, हम सब मिलकर प्रार्थना करे कि वे जल्दी ही बिल्कुल ठीक-ठाक हो जाये।

अखिल भारतीय वर्णाश्रम स्वराज्य सघकी ओरसे यहाँ आये हुए दो अन्य मित्रोसे मुझे पता चला कि वे सभी यहाँ उक्त सघकी ओरसे ही आये हुए है। इस सभामे शामिल होनेका उनको भी उतना ही अधिकार है जितना कि आपमें से किसी व्यक्तिको। यदि उनका इरादा शान्तिपूर्ण ढगसे विरोध-प्रदर्शन करनेका था तो इसका उन्हे पूरा अधिकार था। सनातन धर्मका प्रतिनिधित्व करनेवाले लोग इस प्रकारके प्रदर्शनो का सहारा ले, यह बात मुझे कितनी ही असगत और अरुचिकर क्यो न लगती हो,

१. इस सभामें लगभग २,००० लोग मौजूद थे।

२. यह वाक्य *हिन्दू* में छपी रिपोर्टसे लिया गया है।

३ इस सभाके शुरू होनेसे कुछ देर पहले ही स्वयसेवको और दो सनातनियों, राधेश्वर शास्त्री और कल्पनाथजीके बीच हाथापाई हो गई थी जिसमें इन दोनोंको गम्भीर चोटें आईं। देखिए "पत्र. वल्लभभाई पटेलको", १५-१-१९३४ भी।

लेकिन कल पालघाटमे ऐसे प्रदर्शन करनेके उनके अधिकारको मैने स्वीकार किया था, और वहाँकी सभामे सार्वजनिक रूपसे मुझे उनके विरोध-प्रदर्शनकी चर्चा करनेमे कोई हिचकिचाहट नही हुई, बल्कि जो लोग मेरे प्रति अपने स्नेहका प्रदर्शन और मेरे कार्यके प्रति सहानुभूति प्रकट करने आये थे, उनके प्रदर्शनकी मैने उतने विस्तारसे चर्चा नही की। और मैने वही उसी वक्त यह बता दिया था कि किस कारणसे मैने स्नेह-प्रदर्शनकी अपेक्षा इस काले झण्डेका प्रदर्शन ज्यादा पसन्द किया था। यहाँपर मै उन कारणोको फिरसे नही बताऊँगा, लेकिन यदि मेरा सार्वजनिक भाषण[1] किसी स्थानीय पत्र-पत्रिकामे छपे तो मै चाहूँगा कि आप उसे देख ले। यहाँ तो मै बस इतना कहना चाहता हूँ कि इन दोनो देशभाइयोको चोटे लगी देखकर मुझे बहुत दुःख हुआ, अब चाहे वे किसी कारण लगी हो और चाहे किसीने पहुँचाई हो। यदि इन दोनो मित्रोपर हुए हमलेमे इस सभाका आयोजन करनेसे सम्बन्धित किसी स्वयसेवक या व्यक्तिका हाथ था तो मुझे यह कहनेमे कोई झिझक नही है कि उसने हरिजन-सेवाके अनुष्ठानको लाछित किया है, और जिस हिन्दू धर्मकी वह समझा था कि सेवा कर रहा है उसे उसने चोट पहुँचाई है।

मै यह बार-बार कह चुका हूँ कि हिन्दू-धर्मके इस अनुष्ठानकी सेवा केवल वे ही स्त्री-पुरुष कर सकते है जिनका चरित्र सन्देहसे परे है और जिनको अपने चरित्रके बनने-बिगडनेका भय है। आत्मशुद्धिके इस आन्दोलनमे उतावलेपनमे कुछ कहनेकी, जल्दीमे काम करनेकी, गाली देनेकी कोई गुजाइश नही है। शारीरिक क्षति पहुँचानेकी तो बिलकुल भी नही। अपने इन दोनो देशभाइयोके प्राण हमे उतने ही प्यारे होने चाहिए जितने कि अपने सगे-सम्बन्धियोके है। और यदि इस सभामे ऐसे कोई लोग मौजूद हो जिनका इन दोनोको चोट पहुँचानेमे हाथ रहा हो तो मै उन्हे आमन्त्रित करता हूँ कि वे सार्वजनिक रूपसे अपना अपराध स्वीकार करके और भविष्यमे ऐसा निन्दनीय काम न करनेकी प्रतिज्ञा करके अपने इस अपराधको धो डाले।

हालाँकि अस्पृश्यताकी इस बुराईको मै अत्यन्त तीव्रता और गहराईके साथ अनुभव करता हूँ तथा मेरा यह पक्का विश्वास है कि यदि अस्पृश्यताको हिन्दू-धर्मसे बिलकुल निकाल नही दिया गया तो हिन्दू-धर्मका नाश अवश्यम्भावी है, तो भी मै यह नही चाहूँगा कि अस्पृश्यताका निवारण बलप्रयोग द्वारा अथवा शक्तिका प्रदर्शन करके या फिर किसी प्रकारकी जोर-जबरदस्तीसे किया जाये। अस्पृश्यता-निवारणका मामला कानून अथवा जोर-जबरदस्तीका नही है। यह तो करोडो हिन्दुओके हृदय-परिवर्तनकी तथा उनकी पूर्ण आत्मशुद्धिकी बात है। और यह सब तो केवल तभी सम्भव है जब हजारो कार्यकर्त्ता स्वय अपनेको बलिदान कर दे, अन्य लोगोको चोट पहुँचाकर यह करना सम्भव नही है। और जितने शास्त्र मैने पढे है उनमे प्रत्येकमे ऊँचे स्वरसे यही बात कही गई है कि धर्मकी रक्षा केवल तपश्चर्या द्वारा ही हो सकती है। इसलिए मै आप लोगोमे से प्रत्येक व्यक्तिसे, आप लोग, जो जहाँ कही मै जाता हूँ वहाँ मेरे चारो ओर इकट्ठा हो जाते है, आपसे मै कहता हूँ कि याद

१ देखिए "भाषण पालघाटकी सार्वजनिक सभामें", १०-१-१९३४।

रखें, यह आन्दोलन वैयक्तिक और निजी आत्मशुद्धि और आत्म-विश्वास लानेका आन्दोलन है। और यदि आप इस प्रश्नपर इस दृष्टिसे नही सोच सकते तो मै यह बेहतर समझूँगा कि आपने मेरा साथ छोड दिया होता और मेरी सभी सभाओका आपने बहिष्कार कर दिया होता। यदि कोई पुरुष या स्त्री मेरे पास आकर मेरी बात सुननेको या मुझे एक औस दूध देनेको उत्सुक हो तो उसे ऐसा तभी करना चाहिए जबकि उसका इस उद्देश्यके साथ पूर्ण तादात्म्य हो और आत्मशुद्धिकी पूरी भावना हो।

गुरुवायूरके इस विशाल मन्दिरकी छाया-तले यह सब कहने तथा अपने विश्वास को प्रकट करनेके बाद मै उन लोगोसे जो वर्णाश्रम स्वराज्य सघकी गतिविधियोको चला रहे है और उस जैसी अन्य सहयोगी सस्थाओसे भी मै यह हार्दिक अनुरोध करता हूँ कि वे इस बातको समझ ले कि जिस प्रकारके प्रदर्शन वे कर रहे है उस प्रकारके प्रदर्शनो द्वारा वे उस धर्मकी रक्षा नही कर सकते जिसे वे सनातन धर्म कहते है। मध्य प्रान्तके पूरे दौरेके दौरान उन्होने कुछ ऐसे ही लोग भेज रखे थे जो हर कदमपर मेरी कारके आगे साष्टाग लोट कर मुझे आगे बढनेसे रोकना चाहते थे। मेरी देखभाल करनेवाले स्वयसेवको और इन छ-सात नौजवानोके बीच अक्सर झगडा हुआ करता था। सौभाग्यसे कोई गम्भीर या अप्रिय घटना नही घटी हालाँकि मध्य प्रान्तके दौरेके दौरान दोनो पक्षके लोगोको खरोचे जरूर आई। बहुत जल्द ही मैने इन प्रतिरोधात्मक प्रदर्शन करनेवाले लोगोको मित्र बना लिया और जितनी गम्भीरतापूर्वक मै कह सकता था मैने उनसे यह कहा कि हिन्दू-धर्मकी रक्षा करनेका यह कोई तरीका नही है।[1] उनमेसे कुछ तो नौजवान ही थे जिन्हे यह भी नही मालूम था कि वे कर क्या रहे है। मुझे सन्देह है कि सिर्फ एकको छोडकर उनमेसे किसीको हिन्दू धर्मकी मूल बातोका ज्ञान भी था। और मैने यहाँ भी यही आशा की थी कि यदि यहाँ विरोध-प्रदर्शन करनेके इच्छुक लोग होगे तो मै उन लोगोसे मिलूँगा, उनसे बातचीत करूँगा, उनकी बातको समझूँगा और यह जान लूँगा कि वे लोग है कौन। लेकिन मुझे दुख है कि मलाबार मे कदम रखते ही मुझे वैसा दृश्य देखनेको मिला जैसा यहाँ देखा। यह ज्यादा अच्छा होता कि मै उनसे पहले ही मिलकर यह पता चला सका होता कि वे चाहते क्या है। लेकिन उन्होने दूसरे रास्तेसे आना तय किया। मै उन्हे अब भी निमन्त्रण देता हूँ कि वे मुझसे आकर मिल ले और मुझे यह बताये कि वे मुझसे ठीक-ठीक क्या करवाना चाहते है, मै यह दौरा तो नही रोकूँगा, लेकिन इसके सिवा मै उन्हे इस बातकी पूरी सुविधा और सहूलियत प्रदान करूँगा कि वे अपने विचार व्यक्त कर सके, यहाँ तक कि यदि वे शान्तिपूर्ण प्रदर्शन करना चाहे तो वह भी कर सके। लेकिन मै दोनो पक्षोकी ओरसे किसी प्रकारकी गुडागर्दीको टालनेके लिए अत्यन्त उत्सुक हूँ। मै मानता हूँ कि जिस प्रकार मेरा उद्देश्य ईमानदाराना है उसी प्रकार उन लोगोका भी ईमानदाराना उद्देश्य है जो अपनेको सनातनी कहते है। लेकिन दोनोको ही अपने

१. देखिए "बातचीत स्वामी लालनाथसे", १८-११-१९३३।

विचार व्यक्त करने और लोकमतको ढालनेकी एक जैसी छूट होनी चाहिए। आखिरकार सनातन धर्म किसी एक वर्गके लोगोंका ही विशेषाधिकार नही है। जिस अर्थमे वे सनातन धर्मका प्रतिनिधि होनेका दावा करते है उसी अर्थमें मैं भी अपनेको सनातन धर्मका प्रतिनिधि मानता हूँ। अस्पृश्यताके विरुद्ध मेरे इस प्रबल विरोधका आधार वे शास्त्र ही है जिनकी कि वे दुहाई देते है और यदि करोडो हिन्दुओके बीच मै अकेला भी पड गया तो भी मै शास्त्रोकी अपनी व्याख्यापर अटल रहूँगा क्योकि वे शास्त्र मुझे यह भी तो बताते हैं कि अन्तरात्माकी पुकारका विरोध नही करना चाहिए। भगवानका शुक्र है कि जो व्याख्या मै आपके सामने पेश करता रहा हूँ उसे माननेवाला मै अकेला व्यक्ति नही हूँ। इसके विपरीत मेरे साथ ऐसे विद्वान् शास्त्री है जिनको शास्त्रोकी व्याख्या करनेका बिलकुल उतना ही अधिकार है जितना कि अपनेको सनातन धर्मका प्रतिनिधि समझनेवाले लोगोंको है। और ये विद्वज्जन शास्त्रोकी ठीक वैसी ही व्याख्या करते है जैसी व्याख्या मैने हजारो स्त्री-पुरुषोके सामने प्रस्तुत की है। और लगभग पचास वर्षोके लगातार अनुभवके आधारपर मेरी यह निश्चित धारणा बन गई है कि आज हम जिस प्रकारकी अस्पृश्यताका पालन करते है, हिन्दू शास्त्रोमे उसका कोई औचित्य नही बताया गया है। मेरा दावा है कि हरिजनोको पूजा करनेका, सार्वजनिक सस्थाओके उपयोगका, और जीवनके अन्य सभी क्षेत्रोमे वे ही सब अधिकार प्राप्त है जो ऊँचेसे-ऊँचे वर्गके हिन्दुओ और अन्य हिन्दुओको प्राप्त है। इसलिए मुझे जरा भी सन्देह नही कि गुरुवायूर और ऐसे ही अन्य प्राचीन मन्दिरोमे जानेका जितना अधिकार दूसरे हिन्दुओको है, जबतक उन्ही शर्तोपर उतना ही अधिकार हरिजनोको नही मिला, तबतक यह नही कहा जा सकता कि सवर्ण हिन्दुओने हरिजनोके प्रति अपने बुनियादी कर्त्तव्यका पालन कर लिया है।

लेकिन मेरा धैर्य असीम है। और जैसा कि आप जानते ही है कि केलप्पनको अनशन करते हुए कई दिन हो गये थे तथा अनेक सुधारकोने मन्दिरमे जाकर केलप्पनके साथ सहानुभूति-सूचक अनशन करनेकी धमकी दे दी थी और हालाँकि सुधारक लोग यह समझने भी लगे थे कि विजयश्री लगभग उनके हाथोमे आ गई है तो भी मैने अपनी उपवास-शय्यासे अत्यावश्यक तार[1] द्वारा केलप्पनको यह सन्देश भेजा था कि अनशन स्थगित कर दो और जो लोग गुरुवायूर मन्दिरके अन्दर है उन्हे वहाँसे हटा लो। और ऐसा मैने इसलिए किया था क्योकि मुझे लगा कि अनशन करनेका अभी समय नही आया है और मुझे इस अनशनमे जोर-जबर्दस्तीकी गन्ध-सी लगी। इसका जिक्र मै यह बतानेके लिए कर रहा हूँ कि एक भी मन्दिर जोर-जबरदस्तीसे खुलवानेका मैं अपराधी नही बनूँगा। लेकिन मैं इतना जरूर चाहता हूँ कि जहाँ मन्दिर खुलवानेके पक्षमे लोकमत पूरी तरह और स्पष्ट रूपसे जाग्रत हो गया हो वहाँ मन्दिर खोल दिये जाये। ऐसा करनेमे अगर कोई कानूनी बाधा आडे आती हो तो मैं चाहता हूँ कि उसे भी दूर कर दिया जाये। मन्दिर-प्रवेश विधेयकका यही, केवल यही अभिप्राय है, इसके सिवा और कुछ नही। जिस कानूनी बाधाके कारण

१. देखिए खण्ड ५१, पृष्ठ १६१।

आज बहुत-से न्यासी लोग अपने प्रबन्धाधीन मन्दिरोको हरिजनोके लिए खोलनेमे असमर्थताका अनुभव करते है, मन्दिर-प्रवेश विधेयक केवल उनकी उस विवशताको दूर कर देता है। इसलिए इस मन्दिर-प्रवेश विधेयकमे अथवा उससे मिलते-जुलते अस्पृश्यता-विरोधी विधेयकमे किसी भी तरह की बाध्यकारिता या जोर-जबर्दस्तीका लेशमात्र भी नही है।

मगर आज सवेरे मेरे कानमे यह भनक पडी कि इस मन्दिर-प्रवेश आन्दोलनके पीछे यदि मेरा नही तो मेरे साथियोका यह दुष्ट उद्देश्य जरूर है कि मन्दिरोपर अधिकार करके उनपर अपना स्वामित्व स्थापित कर ले। मै स्पष्ट कहता हूँ कि यह बात नितान्त असत्य है। मेरे मनमे बिल्कुल भी ऐसी कोई इच्छा नही है और मै अपने ऐसे किसी साथीको नही जानता जिसके दिलमे ऐसा इरादा हो।

यदि ऐसी दुष्ट इच्छा किसी साथीकी हो तो उसके लिए इस आन्दोलनमे कोई स्थान नही है। मन्दिरोका अधिकार तो निस्सन्देह उन्हीके हाथोमे रहेगा, जिनके हाथोमे आज उनका कानून-सम्मत अधिकार है।

इससे मिलती-जुलती एक बात मुझसे यह पूछी गई है कि क्या इस आन्दोलन का उद्देश्य ब्राह्मण धर्मको नष्ट करनेका भी है? मै बस आपसे इतना ही कह सकता हूँ कि ऐसा इरादा रखनेका अपराधी तो मै हो ही नही सकता, क्योकि मेरी दृष्टिमे ब्राह्मणत्वकी महत्ता घटानेका अर्थ है हिन्दू-धर्मकी महत्ता कम करना। पर इसका अर्थ यह नही है कि तथाकथित ब्राह्मण आज जो दावे करते हो, मै उनको स्वीकार करता हूँ। समाज किसी भी मनुष्यको, केवल उसके जन्मके कारण ब्राह्मण नही मान सकता। शास्त्रोने तो यह कहा है कि ब्राह्मण कुल मे पैदा हुआ मनुष्य यदि ब्राह्मण-धर्मके अनुसार आचरण नही करता तो वह सामान्य जनो द्वारा ब्राह्मण कहलानेका अधिकार खो देता है। इस आन्दोलनमे ही ऐसे ब्राह्मण मौजूद है जो यह कहते है कि जबतक वे शास्त्रो द्वारा ब्राह्मणोके लिए विहित नियमोका पालन नही करते तबतक उन्हे ब्राह्मण नही कहा जा सकता। मै मानता हूँ कि ब्राह्मण हिन्दू-धर्मका ही नही, धर्ममात्रका आधारस्तम्भ है। लेकिन यहाँ आपको ब्राह्मण शब्दका अर्थ समझ लेना चाहिए। जिसने ब्रह्मको जान लिया, वही ब्राह्मण है। अगर उसे यह ब्रह्मका ज्ञान नही प्राप्त हुआ है तो उसका प्रत्येक कार्य यह दिखाता है कि उसी ज्ञानकी प्राप्तिके लिए वह सतत प्रयत्नशील है, अन्य किसी चीजके लिए नही। ऐसे ब्राह्मणको तो नित्य प्रात काल मेरे दस सहस्र साष्टाग प्रणाम है, लेकिन उस ब्राह्मणको नही जो स्वार्थ-प्रेरित है, जो निरन्तर सन्तानोत्पत्तिमे लगा हुआ है,[1] जो ज्यादातर अपना ही स्वार्थ-चिन्तन करता है, दूसरोके बारेमे शायद ही कभी सोचता हो, और न ही उस ब्राह्मणको जो समस्त शरीरपर भस्म लगाये हो और अत्यौपचारिक तथा शुद्ध रूपसे वेद-पाठ कर सकता हो। भस्मका लगाना तो उसके लिए शायद ही अनिवार्य हो पर वेदोको अपने जीवनमे उतारना तो उसका धर्म ही है। अपने जीवनके प्रत्येक कार्यमे ब्रह्मका दर्शन कराना उसके लिए आवश्यक है। स्वय शुद्ध रहना और अपनी

१. **हिन्दू** में छपे विवरणमें "जिसने अपमानोंकी पुनरुक्ति की है" दिया गया है।

इस शुद्धिकी सुगन्ध आसपास फैलाना उसका धर्म है। दूसरोको जीवित रखनेके लिए हर समय अपने प्राण हथेलीपर रखे रहना उसका धर्मही है। अब आप समझ लीजिए कि सच्चे ब्राह्मण और सच्चे ब्राह्मण-धर्मके प्रति मेरे हृदयमे कितना आदर है।

आज सवेरे जो मुझे एक छपा हुआ पत्र दिया गया था, और जिसके लेखकने उसमे मुझसे अनेक प्रश्न पूछे थे, और जिनका उत्तर उसने आज सवेरे ही माँगा था, मेरा खयाल है कि इतना सुननेके वाद उसे अब मेरे उत्तरोकी आवश्यकता शायद न रही हो। लेकिन मै उससे इतना तो कह सकता हूँ कि उसने इसमे जो प्रश्न उठाये है अगर वह उनमेसे प्रत्येकका विस्तृत उत्तर चाहता है तो उस सबको वह 'हरिजन'की फाइलमे देख सकता है। उसमे वह यह भी देखेगा कि उसने अपने पत्रमे अनेक चीजोकी जो व्याख्या की है, उससे असदिग्ध रूपसे पता चलता है कि उसने 'गीता' और हिन्दूधर्मके सन्देशको गलत समझा हे।

अन्तमे उस पत्र-लेखकने मुझसे मिलनेके लिए समय माँगा है। मुझे दुख है कि वह मुझसे गुरुवायूरमे तो नही मिल सकता लेकिन वह १६ तारीखको सवेरे दस बजे कालीकटमे मुझसे भेट कर सकता है। पालघाटमे कल कुछ विद्वान् पडितोके साथ वाद-विवाद करनेका मुझे निमन्त्रण मिला था। जहाँ तक पालघाटका सवाल था मुझे उन्हे निराश करनेमे दुख हुआ, क्योकि जिस समय मुझे उनका निमन्त्रण मिला उस समय मै पालघाटसे रवाना होनेकी तैयारीमे था। लेकिन मैने उन्हे १६ तारीखको कालीकटमे सवेरे १० बजे मिलनेका समय दे दिया हे। वही यह पत्र-लेखक और वे दूसरे भाई मुझसे सहर्ष मिल सकते है और मैने जिन बातोका यहाँ जिक्र किया है उसपर तथा बातचीतके दौरान उठनेवाले अन्य मुद्दोपर वे मुझसे जो चर्चा करना चाहते हो, वह कर मकते हैं। हालाँकि १६ जनवरी मेरा कार्यक्रमसे मुक्त दिवस है, लेकिन मेरे लिए वह मनोरजनका दिन नही है। इसलिए पडितोको भेजे अपने पत्रमे मुझे भेटका समय आधा घटा ही रखना पडा। लेकिन अब मेरा इरादा उस वातचीतको एक घटेका समय देनेका है जिससे यदि पडित लोग निमन्त्रण स्वीकार कर ले[1] तो वे पूरा आधा घटा अपनी बात कह सके। मुझे किसी भी मनुष्यसे कोई बात छिपानी नही है और न ही अपना अज्ञान छिपानेकी मेरी तनिक भी इच्छा है। मै अपनी ज्ञान-मर्यादा तो बता ही चुका हूँ। मै किसी भी रूपमे विद्वान् होनेका दावा नही करता। मै तो अपनेको एक विनम्र सत्यान्वेषक मानता हूँ और हिन्दू-धर्मके प्रत्येक आदेशको जैसा मैने समझा है उसका अक्षरश पालन करनेके लिए सदा आतुर रहता हूँ। इसीलिए मै मुक्त रूपसे यह स्वीकार करता हूँ कि यदि ये पडित या दूसरे लोग मुझसे वेद-पाठ करनेको कहे अथवा वेदोका भाष्य कराना चाहे तो मुझे बिलकुल पराजित कर देगे। किन्तु शास्त्रोके विषयमे मेरी जो भावना है उससे वे मुझे आसानीसे विचलित नही कर सकेगे। अगर ईश्वरका ज्ञान या हिन्दू-धर्मके

१. पंडितों न यह निमन्त्रण स्वीकार नहीं किया। उलटे उन्होने गांधीजीको यह लिखा कि वे गांधीजीसे तभी मिलेंगे जब गांधीजी उनसे शास्त्रो पर एक घंटा नहीं बल्कि लगातार कई दिन चर्चा करनेको तैयार होंगे और यह चर्चा भी वे केवल संस्कृतमें ही करनेको तैयार होंगे।

मूल सिद्धान्तोका ज्ञान केवल सारे वेदो तथा अनगिनत ग्रन्थोके गहन ज्ञानपर ही निर्भर करता हो, तो शायद ही कोई मनुष्य यह कह सकेगा कि 'मै ईश्वरके बारेमे कुछ जानता हूँ।' लेकिन ये शास्त्र तो कहते है कि इस ससारमे प्रत्येक मनुष्यको ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त हो सकता है, बशर्ते कि वह अपना हृदय शुद्ध कर ले।

आप लोगोने शान्तिसे जो मेरा भाषण सुना, उसके लिए मै आपको हृदयसे धन्यवाद देता हूँ। आइए, हम सब मिलकर उस सर्वशक्तिमान् ईश्वरसे प्रार्थना करे कि वह हमे सुपथपर चलनेकी प्रेरणा दे और हमे यथेष्ट शक्ति दे कि हम अपने दिलोसे अस्पृश्यताका यह भूत भगा सके।

अन्तमे, कृपया ध्यान रहे कि जो लोग यह मानते है कि अस्पृश्यता एक बुराई है और जो यह भी मानते है कि इसे केवल आत्मशुद्धि द्वारा ही दूर किया जा सकता है उन्हे चाहिए कि वे इस आन्दोलनके विरोधियोके एक रोएँको भी कभी हानि न पहुँचाये। इसके विपरीत, हमे उन्हे अपने सही आचरणसे और प्रेमपूर्वक समझा-बुझाकर जीतना है। इसलिए मै चाहता हूँ कि आप उन दो मित्रोके साथ, जो इस समय अस्पतालमे पडे हुए है और जो वर्णाश्रम स्वराज्य सघके प्रतिनिधि है, आदर और स्नेहका व्यवहार करे तथा उन्हे अपना अतिथि माने। वे क्या करेगे, इसकी परवाह न करते हुए आप तो उन्हे अपने आतिथ्य तथा स्नेहकी ऊष्माका ही अनुभव होने दीजिए, उनको अपनी कटु भर्त्सना का अनुभव मत कराइए।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २६-१-१९३४ तथा **हिन्दू**, १२-१-१९३४

४९२. भाषण: पत्तम्बीमें[1]

११ जनवरी, १९३४

मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मलाबारमे, जहॉ हमेशा हरियाली रहती है आपको कागजके कृत्रिम फूलोका उपयोग करना पडा। मै तो समझता था कि मलाबार मे, जहॉ प्रकृति आप लोगोपर इतनी दयालु है, आप लोग कृत्रिमतासे अपने आपको बचा सकते है। लेकिन मेरा खयाल है कि इस प्रदेशके प्राकृतिक सौन्दर्यकी कद्र करनेके लिए आपको ऐसे व्यक्तिकी मददकी जरूरत है जो वृक्षहीन मरुभूमिका रहनेवाला हो जैसाकि मै हूँ। जिस तरह आपने फूलोके मामलेमे कृत्रिमताका सहारा लिया है उसी प्रकार अस्पृश्यताके मामलेमे भी आप कृत्रिमताका सहारा लेते है, और फिर आप समझते है कि कृत्रिम वस्तु स्वय ईश्वरने भेजी है। मै आपको यह चेतावनी देनेके लिए आया हूँ कि अस्पृश्यता, अनुपगम्यता और अदर्शनीयता इन सब बातोको शास्त्र-सम्मत मानना भूल है। मेरे विचारसे ऐसा करके हम हिन्दू लोग मनुष्यके प्रति और ईश्वरके प्रति सबसे बडा पाप करते रहे है। मनुष्यको मनुष्यके दरजेसे गिराना, जैसा कि दुनियाके इस भागमे हम करते रहे है और उसपर यह कहना

१ चन्द्रशकर शुक्लके "साप्ताहिक पत्र" से उद्धृत।

कि वे आज जो हैं सो अपने पिछले कर्मोंके फलस्वरूप हैं, कर्मके सिद्धान्तको भ्रष्ट रूपमें प्रस्तुत करने जैसा है। मैं अपने निजी अनुभवके आधारपर कर्मके सिद्धान्तके बारेमें थोड़ा-बहुत जाननेका दावा करता हूँ क्योंकि पिछले ५० वर्षोंसे मैंने लगातार यह जाननेकी कोशिश की है कि कर्मका सिद्धान्त क्या हो सकता है। और मैं इतना जरूर जानता हूँ कि इसे अपनेको छोड़कर अन्य सब लोगोंपर लागू करना इसे विकृत बनाना है; और यदि मेरे पास इस समय ज्यादा समय होता तो मैं आप सबको इस बातका पूरा यकीन दिलाता कि आप नायडी और अन्य लोगोंपर कर्मके सिद्धान्त को उस तरह कदापि घटित नहीं कर सकते जिस प्रकार कि आप घटित करते हैं। और मैंने जैसा सुझाव दिया है उसके अनुसार यदि हम कर्मके सिद्धान्तको लागू करते अर्थात् स्वयं अपने ऊपर लागू करें, तो हम यहाँ की भूमिको और अन्य स्थानोंकी भूमिका स्वरूप ही बदला हुआ पायेंगे। इसलिए मैं आपमें से हर व्यक्तिसे यह अनुरोध करने आया हूँ कि आप अस्पृश्यताके इस प्रेतको निकाल फेंके। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे, तो यकीन मानिए, यह प्रेत हमें खा जायेगा।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १९-१-१९३४

४९३. टिप्पणी

मैत्रीपूर्ण बातचीतका सदा स्वागत है

मद्रासमें अपने संक्षिप्त प्रवासके दौरान मैंने अखबारोंमें कुछ सज्जनोंके हस्ताक्षरोंसे युक्त एक सार्वजनिक अपील देखी। यह अपील मुझे सम्बोधित की गई थी। इसमें मुझसे अस्पृश्यताके बारेमें एक सार्वजनिक परिचर्चा करनेके लिए कहा गया था। बादमें मुझे उस अपीलकी टाइपशुदा प्रति भी मिली थी जिसके शुरूमें सबसे ऊपर निम्नलिखित वाक्य लिखे हुए थे :

> **चूँकि आप ज्यादा जाननेका दम्भ करते हैं इसलिए कृपया सामने आइए और खुली चर्चा कीजिए। यह मत कहिए कि आपके पास 'समय नहीं है, समय नहीं है'। जब आपकी हैसियतको ही चुनौती दी जा रही है उस समय ऐसा कहना शर्मनाक है। इससे दुनिया आपपर हँसेगी, आपकी खिल्ली उड़ायेगी।**

और इसके बाद यह आश्चर्यजनक अनुच्छेद आता है :

> **अपनी उन सभी राजनीतिक गतिविधियोंको छोड़ देनेके बाद जिनके कारण उन्हें सचमुच भारतीय राजनीतिमें ख्याति मिली और व्यावहारिक दृष्टिसे उस महान् भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसको नष्ट करनेके बाद जिसने उन्हें वस्तुतः अपना तानाशाह बना दिया था और अपनी आँख मूँद कर किस्मतकी बागडोर उनके हाथोंमें सौंप दी थी तथा न केवल कट्टर सनातन धर्मावलम्बियोंको पीड़ा**

पहुँचाकर अपितु इस देशके सभी भारतीय राष्ट्रवादके प्रेमियोंको भी कष्ट पहुँचानेके बाद श्री गांधीने इधर कुछ समयसे अस्पृश्यताके विरुद्ध और मन्दिर प्रवेश कानूनके पक्षमे बहुत जोरोके साथ प्रचार करना शुरू कर दिया है। तबसे वे जनताके सम्मुख अपने ही सिद्धान्त-सूत्र और प्रासगिक विचारोको व्यक्त कर रहे है लेकिन उन्हे वे अपने निजी विचार कह कर अथवा रूसो, टॉल्स्टॉय, लेनिन आदिके विचारोके नामपर नही अपितु सनातन धर्म, समाजशास्त्र और सामान्य न्याय आदिके नामपर व्यक्त कर रहे है।

मै जब नेल्लूर जिलेका दौरा कर रहा था तब भी मुझसे ऐसी ही एक और अपील की गई थी। चर्चाके लिए निमन्त्रित करते हुए मुझे जो तार भेजा गया था उसमे कहा गया था

हमें लगता है कि आप हिन्दू-धर्मको अच्छी तरह समझ नहीं पाये है और आप हिन्दुओको सच्चे नैतिकतापूर्ण और धार्मिक जीवनसे गुमराह कर रहे है।

मै इन निमत्रणोका तत्काल उत्तर नही दे पाया था। बातचीतके लिए मुझे अन्तिम निमन्त्रण रातके दस बजे वेकटगिरिमे मिला था।[1] अगले दिन मुझे तिरुपति पहुँचना था जिसके समीप ही एक स्थान पर मुझे प्रस्तावित परिचर्चामे भाग लेनेको जाना था। लेकिन मुझे तिरुपतिमे अपने मेजबान की मार्फत मौखिक सन्देश भेज कर ही सन्तोष करना पडा। जहाँ तक पहले आमन्त्रणका सवाल है, मैने यह सन्देश भेज दिया था कि मै किसी भी व्यक्तिके साथ मैत्रीपूर्ण बातचीतके लिए तैयार हूँ और यदि मुझे अपनी भूलका अनुभव करा दिया जाये तो मै उसे भी माननेको तैयार हूँ। मुझे यह भी कहना पडा कि मेरे पास बहुत कम समय है और फिलहाल यह परिचर्चा जहाँ मै निश्चित करूँगा वही होगी। मैने इन स्तम्भोमे अनेक बार अपनी मजबूरियोका जिक्र किया है मै कोई सस्कृतका पण्डित नही हूँ लेकिन इतनी सस्कृत मुझे जरूर आती है कि मुझे जो अनुवाद दिये जाये यदि उनमे कोई भूल हो तो मै उसे पकड सकता हूँ। मै मानता हूँ कि मैने शास्त्रोका ठीक अध्ययन किया है और उससे मुझे सन्तोष है और मै इस बातका दावा करता हूँ कि मैने युवावस्थासे ही शास्त्रोके बुनियादी सिद्धान्तोको जीवनमे उतारनेकी कोशिश की है। इसलिए हिन्दूधर्मके कुछ मूलभूत सिद्धान्तोको लेकर मै जिन निष्कर्षो पर पहुँचा हूँ उन निष्कर्षोको पूर्ण विश्वासके साथ जनताके आगे रखते हुए मुझे कोई सकोच नही होता। मै जिन निष्कर्षोपर पहुँचा हूँ उनमे से एक यह है कि भारतमे अस्पृश्यता आज जिस रूपमे प्रचलित है उसका शास्त्रोमे कोई विधान नही किया गया है। और मेरे इस निष्कर्षका कई शास्त्री लोग समर्थन करते है तथा ये लोग उन लोगोसे कोई कम पढे लिखे नही है जो इसके विरोधी है। जो लोग मेरा समर्थन करते है वे लोग भी अपने आपको उतना ही अच्छा सनातनी मानते है जितना कि विरोधी विचार रखने वाले खुदको मानते है। लेकिन मैने हमेशा

१. ३० दिसम्बर, १९३३ को।

विरोधियोंके विचारोंका आदर किया है और इसलिए वे जो कहते है मैंने उसे हमेशा ध्यानसे सुना है। मैंने उनके साथ अनेक बार बातचीत की है और उससे मेरे विचारोंकी पुष्टि ही हुई है। इसलिए यह मानते हुए भी कि ऐसी किसी बातचीतसे मेरी रायमे कोई अन्तर नही आयेगा, मै चर्चा करनेके इच्छुक लोगोंको समय देने और उनसे बातचीत करनेके लिए तैयार हूँ, बशर्ते कि वे मेरे दैनिक कार्यक्रमको ध्यानमे रखते हुए कोई उपयुक्त समय निर्धारित करे। मै उस कार्यक्रममे कोई परिवर्तन नही कर सकता जो मेरे लिए आगामी कुछ महीनोंके लिए पहलेसे ही तय किया जा चुका है। इस दौरेके दौरान मै कुछ एक स्थानो पर सनातनियो से पहले ही इस विषय पर बातचीत कर चुका हूँ। यदि वे लोग जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूपसे अखबारोंके जरिये मुझे लिखते है, सामान्य शिष्टाचारके नियमोंका पालन करते है और यदि वे सामूहिक रूपसे कार्य करनेके लिए कोई आधार ढूँढना चाहते है तो मुझे इस बारेमे तनिक भी सन्देह नही कि ऐसे बहुतसे मुद्दे है जिन पर हम परस्पर सहमत हो सकते है, यहाँ तक कि मन्दिर-प्रवेश और उससे सम्बन्धित प्रस्तावित कानूनको लेकर भी किसी निश्चय पर पहुँचा जा सकता है। पारस्परिक और मैत्रीपूर्ण बातचीत द्वारा बहुत-सी गलतफहमियोंको दूर किया जा सकता है। सामान्य पाठकोंकी जानकारीके लिए मै यह बता दूँ कि कई सनातनी मुझसे नाराज है और मुझे वे हर तरहसे अपमानित करते है। लेकिन कुछ ऐसे सनातनी लोग भी है जिन्होंने मेरे सन्देशके मुख्य मुद्देको समझ लिया है और अब वे मेरे समर्थक बन गये है। लोगोंके दिलो-दिमाग तक अपनी बात पहुँचानेकी कोशिश करनेके अलावा मेरे पास और कोई हथियार नही है। और मै जिस सुधारकी बात करता हूँ वह सुधार केवल करोड़ों हिन्दुओंके हृदय-परिवर्तनसे ही हो सकता है। इसलिए मैं जिस उद्देश्यको लेकर यह दौरा कर रहा हूँ उसके हितमे भी यही है कि मै जब भी सम्भव हो तब अपने विरोधीसे बातचीत करनेके एक भी ऐसे अवसरको अपने हाथसे न जाने दूँ।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १२-१-१९३४

४९४. पत्र : गोविन्दभाई आर० पटेलको

१२ जनवरी, १९३४

भाई गोविन्दभाई,

श्री अरविन्दको मैंने लम्बा पत्र लिखा है, यह बात मैंने आपको लिखी भी है। अभी मुझे उसका कोई उत्तर नही मिला है।

आपके अंग्रेजी पत्रके सम्बन्धमें भी मैं लिख चुका हूँ। जो पूछना हो सो पूछना। अधिक तो मिलनेपर ही।[1]

मोहनदास

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १०७४४) से; सौजन्य: गोविन्दभाई रामभाई पटेल

४९५. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको

१३ जनवरी, १९३४

चि० मणिलाल और सुशीला,

तुम दोनोके पत्र मिल गये है। मेरे पत्र भी नियमित रूपसे मिलते होगे। इस बार तो मैंने एक भी डाक नही छोडी। पिछले पत्रके साथ बा के पत्रकी नकल थी।

शान्तिके सम्बन्धमें सुशीलाने ठीक समाचार दिये है। वह व्यर्थके बखेडोमे न पडे तो बस होगा।

सुशीला पूछती है कि मेरे साथ कौन है। मेरा खयाल है, मैं लिख चुका हूँ। चन्द्रशकर, मीराबहन, ओम, किसनबहन (प्रेमाबहनकी सहेली) प्रो० मलकानी (ठक्कर बापाकी ओरसे) दो हिसाबनवीस विश्वनाथ और दामोदर, एक सामानकी देखरेख करनेवाला – शर्मा, एक टाइपिस्ट – इतना जत्था है।

१. इस पत्रके बारेमें श्री माँको बताते हुए गोविन्दभाई आर० पटेलने उनसे पूछा था कि क्या यह सच है कि गांधीजीने "श्री अरविन्दसे कम-से-कम एक पंक्ति लिख भेजनेकी मांग की थी और श्री अरविन्दने उन्हें पूरा पत्र ही लिख डाला — जो कि वह सामान्यतः नही करते है।' उत्तरमें श्री अरविन्दने कागजके टुकड़ेपर पेंसिलसे लिखा था "हां, मैंने उन्हें एक छोटा-सा पत्र लिखा था। इसमें मैंने उन्हें अपने अवकाश ग्रहण करनेका कारण बताया था और जबतक वह कारण मौजूद है तबतक मैं यह नियम भंग नहीं कर सकता तथा इसके लिए मैंने खेद व्यक्त किया था। यह पत्र मैंने उन्हें बंगलौरके पतेपर लिखा था और मेरा विश्वास है कि अगर यह पत्र सी० आई० डी० के हाथ नही लगा है तो उन्हें मिल गया होगा। मेरा खयाल है कि अगर गांधीजी बंगलौरसे रवाना हो गये होंगे तो भी उस पत्रको आगे भेज दिया होगा। आप उन्हें लिखकर इसके बारेमें बता सकते हैं।"

सीता बहुत बोलती है, तूफान करती है, यह मुझे तो अच्छा लगता है। इन तूफानो और बातूनीपनका सदुपयोग कर लेना माँ-बापका काम है। बहुत-सी शिक्षा तो इसीमे आ जाती है। बच्चोकी तूफानी वृत्ति तथा बातूनीपन तो एक तरहकी वाष्प शक्ति है। वाष्पका सग्रह करके उसका उपयोग किया जाता है और उसके जरिये बडी-बडी रेलगाडियाँ और जहाज चलते है। यही बात बालककी शक्तिकी है। उसकी शक्तिको हम समझे, उसका सग्रह करे तो वह बडे काम आती है। सीता से इस समय अक्षरोको घोटनेकी अपेक्षा अभी न करके तो तुझे उससे रेखागणितकी आकृतियाँ खिचवानी चाहिए। इसके बाद वस्तुओकी और उसके बाद अक्षर। उससे भी पहले अक्षरोकी पहचान करवाई जाये और उसीके साथ उनकी समझ भी दी जाये। बात चीतके जरिये भी तू उसे रोज थोडा ज्ञान दे सकती है। इतिहासका, भूगोलका, विज्ञानका, तथा 'रामायण', 'महाभारत' की कथाये भी सहज ही सिखा सकती है। यह सारा ही खेलखेलमे सीख लिया जा सकता है। इसमे उसे थकावट भी नही महसूस होगी बल्कि उल्टे कुतूहल पैदा होगा। थोडा-थोडा, पर प्रतिदिन, इस प्रकार सीखे तो सीताको श्रेष्ठ शिक्षा प्राप्त हो। अग्रेजी, गुजराती और हिन्दी तो साथ-साथ ही सीख सकती है। मणिलालको अब क्या मदद करती है?

तुम दोनोमे से कोई भी वेस्टसे मिले क्या? उससे मिलकर उसके समाचार दो। वह दुखी न हो इतना ही काफी है। तुम्हे सहयोग देनेकी अपनी पूरी तत्परता बतानी चाहिए।

बा का ठीक चल रहा जान पडता है। इस बार पहली बार-जैसी छूटका उपयोग करती वह नही जान पडती।

प्रागजीका पत्र तेरे नाम आया सो मै समझ नही पाया। किस सम्बन्धमे बात हुई होगी और मैने क्या कहा होगा यह मै नही कह सकता। पर मैने कुछ भी कहा हो, वह तुम दोनोपर लागू नही होता। हर किसी की वस्तुस्थिति एक-सी नही होती। इस बातका विचार किया गया होगा कि देशमे आनेके बाद उसका धर्म क्या था। एक दृष्टिसे इतना तो सच ही है कि यहाँ कार्य पूरा हो जाये तो वहाँका भी ठीक परिणाम झट निकल आये। पर इसका अर्थ यह थोडे ही है कि वहाँका कार्य छोडकर कोई यहाँ दौडा आये। स्वधर्ममे ही श्रेय निहित है,[1] यह बात यहाँ बराबर लागू होती है। इसलिए तुम दोनोके लिए आज जो धर्म है उसीका पालन तुम लोगोको किये जाना है। और इसका पालन करते हुए यदि नीतिके मार्गसे च्युत न हो तो समझ लो सब-कुछ कर लिया।

देवदास छूट गया है। हाल तो दिल्लीमे ही भटकेगा। मुझे मिलकर जायेगा। उसका स्वास्थ्य ठीक रहता है। वह कान्तिसे मिल आया है। कान्तिकी बहादुरीमे कोई कमी नही है। वह तो जेलसे निकलता ही नही है। अब यह कबतक निभ सकता है सो देखना है।

१. भगवद्गीता, ३, ३५।

किशोरलाल अब थोडा ठीक है ऐसा कह सकते है। बुखारने अभी पूरी तरह नही छोडा है। देवदास, लक्ष्मीको पत्र देना। रामदास और नीमूको तो लिखते ही रहना।

'हरिजन' मिलता होगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

यह पत्र तेलिचेरी नामक गाँवमे सवेरे ३ बजेके बाद प्रार्थनासे पहले लिखा गया है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८१४) से।

४९६. पत्र : डाह्याभाई पटेलको

१३ जनवरी, १९३४

चि० डाह्याभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे तीनो पत्र एक साथ मिले, यह टेलीपेथीका अच्छा उदाहरण कहा जायेगा।

महादेवकी कठिन परीक्षा हो रही है। उसका शरीर सम्भवत कुछ गडबडा जायेगा। लेकिन उसे और कोई आँच नही आयेगी। जीवनजीको लिखे पत्रके उत्तरमे मैंने उन्हे लम्बा सन्देश भेजा है। लेकिन अब यदि तुम्हे लिखनेका प्रसग आये तो इस प्रकार लिखना[1]

जबकि यह जरूरी नही है कि महादेवके पत्र मुझे मिलने ही चाहिये उसे कतई यह नही समझना चाहिये कि मेरे पास उन्हे पढनेका समय नही है। 'गीता'-वाला भाग शास्त्रीय था और मैंने सोचा कि उसके सम्बन्धमे मुझे तत्काल अपनी राय प्रकट करनेकी कोई जरूरत नही है। और सच तो यह है कि 'गीता'के श्लोकोका मैं जो शास्त्रीय अर्थ करता हूँ मेरे मनमे उसकी कोई बडी कीमत नही है। कुल मिलाकर जहाँ मेरी व्याख्याके अनुसार अर्थ ठीक नही बैठता वहाँ मुझे स्वभावत उसकी छानबीन करनी पडती है लेकिन साधारण रूपमे तो मुझे कोई एक अर्थ किसी दूसरे अर्थके समान ही स्वीकार्य होगा इसलिए मुझे तो अपनी व्याख्याकी अपेक्षा महादेवकी चिन्तनपूर्ण व्याख्या तुरन्त ही स्वीकार होगी क्योकि मेरी व्याख्या तो किसी एक भाष्यकारकी व्याख्यापर ही आधारित होगी। इसलिए महादेवको मेरी रायकी प्रतीक्षा किये बिना अपना अनुसन्धान और अनुवाद-कार्य जारी रखना चाहिये। जब यह सब पूरा हो जायेगा तब, बेशक, यदि ईश्वरने चाहा तो इसे पढ जानेके लिए मेरे पास बहुत समय होगा।

१. आगेके दो अनुच्छेद अंग्रेजीमें है।

मै मान लेता हूँ कि महादेवने बी० शा० द्वारा 'एडवेन्चर ऑफ द ब्लैक गर्ल इन हर सर्च फॉर गॉड' पढी होगी। आज मै उसे मैक्सवेल द्वारा लिखित 'एडवेन्चन्चर्स ऑफ द व्हाइट गर्ल इन हर सर्च फॉर गॉड' भेज रहा हूँ। यदि यह पुस्तक उसे सही सलामत मिल जाये तो वह अपने अगले पत्रमे इसकी पहुँच लिखे।

मै बेलगाम पहुँचनेपर मणि और महादेवको मिलनेका प्रयत्न करूँगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ४ : मणिबहेन पटेलने, पृष्ठ १५८-९

४९७. भाषण : तेलिचेरीकी सार्वजनिक सभामे[1]

१३ जनवरी, १९३४

भाइयो,

आपने मुझे जो अभिनन्दनपत्र दिये है और थेली भेट की है उसके लिए मै आपका अत्यन्त आभारी हूँ। मै जिस उद्देश्यको लेकर भारतके एक कोनेसे दूसरे कोनेतक की यह यात्रा कर रहा हूँ उसके स्वरूपको आप जानते ही होगे। इस उद्देश्य को ध्यानमे रखते हुए मै आज सवेरे-सवेरे आपके पास यह कहनेके लिए आया हूँ कि आप अरपृश्यताके पिशाचको अपने दिलोसे निकाल बाहर करे। आपने मुझे जो मानपत्र भेट किये है उन सबमे मुझे एक बात दिखाई देती है। आपने आशा व्यक्त की है कि अस्पृश्यताके दानवको उखाड फेका जा सकेगा। हमे ऐसा माननेकी भूल नही करनी चाहिए कि यह काम तो किसी और व्यक्तिको करना है। यह अनिवार्यत एक ऐसा कार्य है जो हर किसी स्त्री अथवा पुरुषको करना होगा क्योकि यह तो अनिवार्यत. सवर्ण हिन्दुओके हृदय-परिवर्तनका मामला है। उन्हे अपने दिमागसे इस खयालको निकाल देना होगा कि वे उच्च-जातिके हिन्दू है अथवा उनमे से कुछ लोग सवर्ण है और कुछ अवर्ण है। ऊँच-नीचके इस भेदने समाजको पूर्णतया नष्ट कर दिया है और हम चूँकि अपने आपको आनेवाले विनाशसे बचाना चाहते है इसलिए हमे इस विचारको अपने दिमागसे निकाल देना होगा कि इस ससारमे कोई भी व्यक्ति हमसे नीचा है। अस्पृश्यताका जहर इतनी दूरतक और इतना ज्यादा फैल चुका है कि जाति-जातिमे भी काफी अनुपातमे अस्पृश्यता पाई जाती है। ऊँच और नीचके इस भेदमे हम और भी आगे बढ गये है तथा इस जहर ने सभी सम्प्रदायोको ग्रसित कर लिया है। अस्पृश्यताकी यह भावना न केवल परस्पर हिन्दुओ मे, सवर्णों और अवर्णोमे, सवर्णों और सवर्णोमे पाई जाती है बल्कि यह हिन्दुओ, मुसलमानो, पारसियो और ईसाइयोमे भी दिखाई देती है। मुझे इस बातका पूरा यकीन है कि अन्तर्जातीय झगडोके पीछे और भी कितने ही कारण भले ही क्यो न हो लेकिन

१. यह सभा जिसमें लगभग ६,००० लोग उपस्थित थे, तेलिचेरी मैदानमें सवेरे ७-३० बजे हुई थी।

मुझे इस बारेमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि इन झगडोमें से अधिकांश झगडोका मुख्य और निर्णयात्मक कारण अस्पृश्यता ही है। यदि हम अस्पृश्यता रूपी दानवके इस मुख्य प्रकट स्वरूपका नाश कर सके तो मुझे यकीन है कि हम आजतक जितनी भूले करते रहे है उन सबमे सुधार कर सकेंगे। आपके एक मानपत्रमें बताया गया है कि अधिकाश मन्दिर हरिजनोके लिए नही खुले है और श्री नारायण गुरुके अनुगामियो द्वारा स्थापित केवल एक मन्दिर ही हरिजनोके लिए खुला है। मै मन्दिरके न्यासियोको उनकी इस उदारताके लिए बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि अन्य मन्दिरोके न्यासी भी इसका अनुकरण करेगे। लेकिन इस परिवर्तनको लानेकी बात मुख्यत मन्दिरोमे जानेवाली जनतापर निर्भर करेगी। यदि मन्दिरोमें जानेवाले लोगोको अपने कियेपर सचमुच पश्चात्ताप है और यदि वे यह महसूस करते है कि हरिजनोको मन्दिरोमे जानेसे रोककर उन्होने अभीतक उनके प्रति गम्भीर अन्याय किया है तो मुझे इसमे तनिक भी सन्देह नही है कि उनकी इच्छाको चुनौती नही दी जा सकती, और मन्दिरोके द्वार शीघ्र ही हरिजनोके लिए खुल जायेगे। इसलिए मुझे उम्मीद है कि आप लोकमत तैयार करेंगे जिससे हरिजनोके लिए जल्दी ही मन्दिर खोले जा सके, ठीक उन्ही शर्तोंपर जिन शर्तोंपर वे अन्य हिन्दुओके लिए खुले है। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि यही कही आपसपास अस्पृश्यो और अस्पृश्योमे, अर्थात पुलाया और छिया जातिके लोगोमे आपसमे अनबन है। मै आशा करता हूँ कि सभी जगह हरिजन लोग अपने घरको ठीक करेगे और अस्पृश्यता-दर-अस्पृश्यताकी भावनाको निकाल बाहर करेंगे। और अब आपने मुझे यह थैली भेट की है जिसे मै इस बुराईको अन्तिम रूपसे दूर करनेके आपके दृढ निश्चयके चिह्न स्वरूप मानता हूँ।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, १५-१-१९३४

४९८. भाषण : माहेकी सार्वजनिक सभामें[1]

१३ जनवरी, १९३४

मित्रो,

आप चूँकि फ्रान्स अधिकृत भारतके एक हिस्सेमें रहते है इसलिए आपसे मिलकर मुझे असाधारण रूपसे खुशी हो रही है। मुझे बगालमें कई बार चन्द्रनगर जानेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है लेकिन देशके इस भागमे – फ्रान्सीसी भारतमे – आनेका मेरा यह पहला मौका है। मेरी दृष्टिमे चाहे वह फ्रान्सीसी भारत हो अथवा ब्रिटिश भारत, दोनो एक ही देश है। आपकी रगोमे भी वही खून बहता है जो मेरी रगोमें है, वही मिट्टी है, वही वातावरण है, और हमारे रीति-रिवाज और तौर-तरीके भी एक जैसे है तथा ऐसी कितनी ही चीजे है जो हम सबमे एक जैसी है। लेकिन आपकी पुलिसकी

१ सभामें गांधीजीको नागरिकों और छात्रोंकी ओरसे मानपत्र भेंट किये गये थे।

भिन्न वर्दी और यहाँ-वहाँ जो फ्रान्सीसी भाषामे लिखी हुई चीजे देखनेको मिलती है उनको छोड दे तो मुझे और कोई अन्तर दिखाई नही देता। इसलिए मेरे लिए यह कोई आश्चर्यकी बात नही है कि मै जब मलाबारसे होकर गुजर रहा था उस समय आपने मुझे अपने यहाँ बुलाया और हरिजन-कार्यके लिए एक थैली भेट की। वस्तुत मुझे इस बातपर आश्चर्य और दुख होता अगर मुझे यह पता चलता कि इस सडकसे गुजरते हुए आपने इस कथित हरिजनोके प्रतिनिधिकी ओर अर्थात मेरी ओर कोई ध्यान नही दिया है। इसलिए आप लोगोके बीच अपनेको पाकर मुझे बडी खुशी हो रही है हालाँकि मै यहाँ बहुत थोडी देरके लिए ठहरूँगा। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि इस स्थानपर एक महत्वपूर्ण मन्दिरको हरिजनोके लिए खोल दिया गया है, ठीक उन्ही शर्तोंपर जिन शर्तोंपर वह हिन्दुओके लिए खुला है। इस अत्यन्त साधारण धार्मिक कर्त्तव्यका पालन करनेके लिए मै न्यासियोको बधाई देता हूँ। और अब मुझे उम्मीद है कि आप यह समझ गये होगे कि इस दौरेके पीछे मेरा क्या उद्देश्य है। मै आपको यह बात समझाना चाहूँगा कि हरिजनोके लिए केवल मन्दिर खुलवाना, उनके लिए केवल स्कूल खुलवाना-भर ही मेरा उद्देश्य नही है। मेरे उद्देश्यका मतलब है, सवर्ण हिन्दुओको अपने हृदयोको शुद्ध करना होगा तथा हरिजनोके प्रति यथोचित क्षतिपूर्ति करनी होगी जिनका आजतक वे दमन करते आये है। इसका मतलब यह है कि हमे ऊँच-नीचके सारे भेदोको मिटा देना चाहिये और समझना चाहिए कि हम सब एक ही देशके बच्चे है तथा एक ही देशके बच्चे होनेके नाते हमारे अन्दर ऊँच-नीचका भेद नही हो सकता। भगवान करे कि हम इस अत्यन्त छोटी-सी, सरल-सी बातको समझ सके। मुझे खुशी है कि मुझे जो मानपत्र भेट किया गया है वह हिन्दीमे है और मै चाहूँगा कि यहाँ उपस्थित सब लोग हिन्दीके इस सन्देशको समझे, उसकी कद्र करे।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, १६-१-१९३४

४९९. भाषण: औषधालयके उद्घाटनके अवसरपर, पक्कनारपुरममे

१३ जनवरी, १९३४

आप अपने सामने यह जो औषधालय देख रहे है इसका उद्घाटन करनेके लिए मुझे बुलाया गया है। यह औषधालय एक ऐसे नौजवान कार्यकर्त्ताके नामपर खोला गया है जिसने देशके लिए अपने प्राणोकी बलि दे दी और जिसकी १९२१ के लगभग मृत्यु हुई थी। उसका नाम बालकृष्ण मेनन है। और इस औषधालयको उसके नामपर पुकारा जायेगा। उन दिनो जब असहयोग आन्दोलन अपने चरमोत्कर्ष पर था उसे भी अन्य लोगोके साथ जेलमे ठूँस दिया गया था और उसकी स्मृतिमे इस इस औषधालयका नाम [बालकृष्ण मेनन] औषधालय रखा जायेगा। इसमे सैकडो हरिजनोको चिकित्सा-सहायता दी जा चुकी है।• पिछले चार-पाँच महीनोमे दो हजार से ज्यादा मरीजोका मुफ्त इलाज किया गया है। हम आशा करते है कि यह दवा-खाना दिन-दिन तरक्की करेगा, अर्थात यह रोग-पीडित मानवताकी दिनोदिन बढनेवाले सेवा-कार्यका एक साधन बनेगा। मुझे बताया गया है कि एक नौजवान डॉक्टरने मरीजोका मुफ्त इलाज करनेके लिए अपनी सेवाएँ अर्पित की है। हमे उम्मीद है कि इस देशमे ऐसे आत्मत्यागी नौजवानोकी सख्या बढेगी। हमे निश्चय ही ऐसे नौजवान डॉक्टरोकी जरूरत है जिनमे आत्मत्यागकी उचित भावना हो और जो गॉवोमे रहनेके लिए तैयार हो। हरिजनोको चिकित्सा-सहायता मिलना बहुत जरूरी है। मै यह जानता हूँ और मुझे इस बातका दु ख है कि भारतमे ऐसे डॉक्टर भी है जो इस भयसे कि छू जानेपर वे अपवित्र हो जायेगे, हरिजनोका स्पर्शतक करनेसे इनकार करते है और इस तरह अपने धन्धेको बदनाम करते है। इसलिए जब मै किसी ऐसे डॉक्टरको देखता हूँ जो इन अन्धविश्वासोसे पूर्णत मुक्त है और साथ ही जिसमे त्यागकी ऐसी भावना मौजूद हो कि वह मरीजोका मुफ्त इलाज करनेके लिए तैयार हो तो मेरा हृदय हर्षसे भर उठता है। डॉक्टरी-सहायता देना, उनके लिए शिक्षाकी व्यवस्था करना तथा मुफ्त जल-वितरणका प्रबन्ध करना हरिजनोके हकमे जरूरी है ही, लेकिन हम सवर्ण हिन्दुओके करनेके लिए इससे भी ज्यादा जरूरी चीज यह है कि हमे उनके सरक्षक होनेका दावा छोड देना चाहिए। हम सदियोसे हरिजनोका दमन करते रहे है। हमे अस्पृश्यताके इस कलकको तुरन्त ही धो डालना होगा और हरिजनोको अपने गलोसे लगाना होगा। हमे उन्हे अपने सगे भाई-बहनोके समान मानना होगा। किसी भी मनुष्यको अपनेसे नीचा मानना पाप है। ईश्वर अपने बच्चोके साथ किसी प्रकारका पक्षपात कर सकता है, ऐसा समझना ईश्वरकी

निन्दा करना है। यदि यह दवाखाना कुछ हदतक ऊँच-नीचके भेदको मिटा सके तो मैं इसे सफल मानूँगा।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १६-१-१९३४

५००. भाषण: कालीकटकी महिला-सभामे

१३ जनवरी, १९३४

प्रिय बहनो,

मैं देखता हूँ कि आप सबके ही मनमे एक ऐसा विचित्र भय समाया हुआ है कि कही ऐसा न हो कि मैं आपको कुछ इस तरह बहका डालूँ जिससे आप अपने गहनोका त्याग किये बिना न रह सके। आपमे से कुछ बहनोने तो पहले ही छोटे-मोटे गहने देने शुरू कर दिये है। मैं आज आपको कौमुदी नामक बालाकी सुन्दर कहानी सुनाऊँगा। मैं उससे पहली बार आज सवेरे बडगरामे मिला और मैंने स्त्रियोसे अपने कुछ गहने और यदि उनकी इच्छा हो तो अपने सारे गहने दे डालनेकी जो अपील की थी उसके उत्तरमे यह छोटी-सी बाला — औरोकी तुलनामे मैं उसे 'छोटी-सी' कहता हूँ — मेरा खयाल है वह २० अथवा २१ वर्षकी रही होगी —[1] आगे आई और उसने मुझे अपनी सोनेकी दो चुडियाँ उतार कर दे दी, उसके हाथमे केवल दो ही चुडियाँ थी।

मैं तो इतनेसे ही सन्तुष्ट हो गया था लेकिन वह सन्तुष्ट नही हुई। उसने अपने गलेका हार भी उतार कर दे दिया जो बहुत खूबसूरत था। मैंने सोचा कि अब वह रुक जायेगी व और गहने नही देगी। लेकिन नही, उसके हाथ अपने आप कानोपर गये और उसे ध्यान आया कि उसने कानोमे भी कुछ पहन रखा है, और उसने खुशी-खुशी अपने कर्णफूल भी उतार कर मुझे दे दिये। मेरा हृदय भर आया लेकिन उस समय मैंने अपनी भावनाओका दबा दिया। मैंने उसी समय पूछ-ताछ की कि क्या वह खुदमुख्तयार है अथवा उसने अपने पितासे अनुमति प्राप्त कर ली है। और मुझे तुरन्त ही मालूम हुआ कि उसने यह काम अपने पिताकी उप-स्थितिमे ही किया है क्योकि उसके पिता मेरे साथ मचपर मानपत्रो और छोटे-मोटे आभूषणोको इकट्ठा करनेके कार्यमे मेरी सहायता कर रहे थे। तब मुझे पता चला कि लडकीके पिता भी इस बातपर सहमत थे कि उसके शरीरपर जितने भी गहने थे उन सबको वह हरिजन-कार्यके लिए दे दे। अपनी दो चूडियोके एवजमे वह केवल मेरे हस्ताक्षर पाना चाहती थी। बेशक मैंने उसे अपने हस्ताक्षरोसे भी ज्यादा दिया। मैंने हिन्दीमे लिखा कि पुरानी और बहुमूल्य वस्तुओकी अपेक्षा उसका महान् बलिदान ही उसका सच्चा आभूषण होगा। खैर, वह बहुत खुशी-खुशी वापस गई।

१ वस्तुत उसकी अवस्था १६ वर्षकी थी, देखिए खण्ड ५७, "कौमुदीका त्याग", १९-१-१९३४।

और मैंने उससे यह वचन ले लिया कि उन गहनोके स्थानपर वह अपने पितासे नये गहने बनवानेको नही कहेगी, उसके पास पहननेके लिए और भी ज्यादा तथा पर्याप्त सख्यामे चीजे और आभूषण थे। बेशक एक मलाबारी बालाका यह कार्य कोई अद्भुत कार्य न था क्योकि जहाँतक मेरी जानकारी है, मलाबारकी लडकियाँ ससारभरमे सबसे ज्यादा सीधी-सादी होती है। पता नही, मेरे मनपर उन्होने यही प्रभाव छोडा है कि उन्हे आभूषणोसे बहुत कम मोह है। हो सकता है कि मै बिलकुल गलत होऊँ। जो भी हो, कमसे-कम मुझपर तो उन्होमे यही छाप छोडी है।

आत्माको झकझोर देनेवाली इस कहानीको खत्म करनेसे पहले मुझे एक और कहानी बतानी है। आजसे कोई दस साल अथवा उससे भी पहले आन्ध्र देशमे एक लडकी थी जो विवाहित थी और जब मैंने सभामे उपस्थित बहनोसे अपील की — बहनो की यह शानदार सभा एक थियेटरमे हुई थी — तब सबमे पहले उस लडकीने अपने गहने उतारकर मुझे दे दिये।[1] हालाँकि श्रीमती अन्नपूर्णम्माके गहने अपेक्षाकृत सादे थे तथापि उसके गलेका नेकलैस अथवा कह सकते है कि जजीर बहुत लम्बी और भारी थी तथा शुद्ध सोनेकी बनी हुई थी। मुझे दूसरे गहनोका वर्णन नही करना चाहिए। अफसोस कि वह अब जीवित नही है। लेकिन मै आपको बता दूँ कि उसने मुझे उन गहनोके बदले और नये गहने न बनवानेका जो वचन दिया था उसका उसने शत-प्रतिशत पालन किया। उसके माँ-बाप बहुत अमीर थे और खुशीके साथ उसके गहनोके बदले उसे अपने सारे गहने दे सकते थे। लेकिन तबसे लेकर अपनी मृत्युतक — उसकी मृत्यु आजमे तीन वर्ष पूर्व हुई थी[2] — उसने कभी कोई गहना नही पहना। मेरा यह दृढ विश्वास है कि अन्नपूर्णम्मा और कौमुदीने अपने गहने देकर पुण्य लाभ किया है। मैंने इन दो पुण्य कथाओमे काफी समय लिया है और अब मै बताना चाहता हूँ कि हरिजन-कार्य-जैसे पवित्र कार्यके लिए अपने आभूषणो को त्याग कर आप कोई आश्चर्यजनक कार्य नही करेगी। [स्त्रियाँ हमेशासे ऐसा करती आई है]। जब-जब उन्होने हरिजन सेवा-कार्यके समान पवित्र किसी भी कार्य को अपने हाथमे लिया है तब-तब उन्होने इसी त्यागभावनाका परिचय दिया है। मुझे आपसे यह कहना है और मै आपसे विनती करता हूँ कि आप अपने दिलोसे अस्पृश्यताके पापका परिष्कार करे, हरिजन लडके-लडकियोके साथ अपने ही बच्चो, भाइयो और बहनो-जैसा व्यवहार करे। हम युगोसे हरिजनोका दमन करते आये है और आज यदि हम उनके लिए अपने सर्वस्वका त्याग करते है तो यह धर्मके नाम पर उनके प्रति किये गये अन्यायोका देरसे किया गया थोडा बहुत प्रतिकार होगा। इसलिए आप चाहे जो भी दे, फिर भले वह कोई छोटा-सा आभूषण हो अथवा भारी गहना हो अथवा चाँदीकी कोई चीज हो, मै चाहूँगा कि आप उसे अस्पृश्यताके इस कलकको दूर करनेके सकल्पके प्रतीक-स्वरूप दे, इस विचारको अपने दिलोसे निकाल

१. अप्रैल १९२१ में, देखिए खण्ड १९, पृष्ठ ५७१।

२. वास्तवमें उसकी मृत्यु १९२७ में हुई थी, देखिए खण्ड ३५, पृष्ठ १९३।

बाहर करनेके चिह्न स्वरूप दे कि आप उच्च है अथवा हरिजन नीच है[!] भगवान आपको बुद्धि दे कि आप इस सरल सत्यको देख सके और उसे अपने जीवनमे ढाल सके। अब आप मुझे जो वस्तु देना चाहे दे सकती है, भले ही वह कोई आभूषण हो अथवा चाँदीका सिक्का या नोट, कुछ भी हो।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, १५-१-१९३४

५०१. भाषण: कालीकटकी सार्वजनिक सभामें[१]

१३ जनवरी, १९३४

आज आपने मुझे ये जो मानपत्र भेट किये है उनके लिए मै आपका बहुत आभारी हूँ और इन मानपत्रोको मुझे पढकर न सुनानेमे आपने जिस आत्मसयमका परिचय दिया है उसके लिए मै आपको धन्यवाद देता हूँ। इससे यह पता चलता है कि आप अनुभव करते है कि मै आज पिछले दो महीनोसे भी ज्यादा अर्सेसे लगातार हररोज एक जगहसे दूसरी जगह जाता रहता हूँ और इसलिए दिनके अन्तमे थक जाता हूँ। और आप चूंकि समझदार है इसलिए आपने इस बातको महसूस किया तथा इन मानपत्रोको सुननेके कष्टसे मुझे बचा लिया। आपके इस आत्म-सयमके बाद स्वभावत यह मेरे ऊपर था कि इन मानपत्रोको मै पढ लूं और तैयार रहूँ। लेकिन मुझे आपसे कहना होगा कि मुझे इस बातका एहसासतक न था कि मुझे सब मानपत्र दिए जानेवाले है और न मुझे इनकी प्रतियाँ ही दी गई थी। यदि मुझे प्रतियाँ दी जाती तो मै उन्हे निश्चय ही पढता। तथापि मुझे पूरा यकीन है कि इन मानपत्रोमे करीब-करीब वे ही बाते कही गई जो मुझे इन पिछले दो महीनो अथवा उससे भी ज्यादा समयसे मिलनेवाले असख्य मानपत्रोमे कही गई है। इन मानपत्रोमे निरपवाद रूपसे मै जिस उद्देश्यको ध्यानमे रखकर यह दौरा कर रहा हूँ उसपर अत्यन्त प्रसन्नता व्यक्त की गई है। इनमे लोगोने इस उद्देश्यके प्रति न केवल सहानुभूति प्रकट की है वरन् इन मानपत्रोमे उन्होने हरिजन-सेवाकार्यकी प्रगतिके लिए अपने-अपने क्षेत्रोमे वे जो-कुछ सेवाकार्य कर सकते है वे सब काम करनेकी अपनी अभिलाषा, अपनी दृढ इच्छा भी व्यक्त की है।

मुझे यह जानकर बहुत खुशी और सन्तोष हुआ है कि हरिजन उद्देश्यको लेकर प्रबुद्ध वर्गमे मतैक्य है। यदि ऐसा न होता तो मुझे उसपर आश्चर्य और दुख होता। यह बात न केवल प्रबुद्ध वर्गके बारेमे सच है बल्कि जहाँ तक केवल सहमतिका सवाल है, मुझे यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई कि आम जनता भी इस आन्दोलनके साथ है। मै अपने बारेमे सहज ही कोई भ्रम नही पालता। मुझे इस बातका सन्देह नही

१. यह सभा टाऊन हॉलमें की गई थी। गाधीजीको मलाबार नगर परिषद्, मलाबार व्यापार सघ, तालुका बोर्ड, हरिजन युबक सघ और अन्य संस्थाओंकी ओरसे मानपत्र भेंट किये गये थे।

है कि मुझे अपने बारेमे थोडा बहुत भ्रम जरूर होगा और होना भी चाहिए क्योकि इसके बिना सम्भवत हममेसे अधिकाश लोगोका जीवन निश्चित रूपसे दूभर हो जाये। लेकिन अपने बारेमे इसकी गुजाइश रखनेके बाद भी मै कह सकता हूँ कि रोज जो ये दृश्य मेरे देखनेमे आते है और ये जो इतनी बडी सख्यामे लोग — जिनमे आम जनता और प्रबुद्ध वर्ग दोनो ही शामिल है — सभाओमे आते है वे मात्र किसी पिछले जन्ममे की गई अथवा मेरी पहलेकी सेवाओके प्रति अपनी प्रसन्नता और सन्तोष व्यक्त करनेके लिए ही नही आते। जीवनका प्रवाह कुछ ऐसा तेज रहा है और विशेष रूपसे मेरा जीवन-क्रम कुछ इतनी तेजीसे चला है कि मेरे लिए घटनाओका ठीक चित्र याद रखना मुमकिन नही है ऐसी स्थिति होनेके कारण मुझे यह जानकर गहरा दुख और निराशा होगी कि आम जनता व प्रबुद्ध वर्गने इन सभाओमे उपस्थित होकर मेरी उन सेवाओके प्रति न केवल अपना सन्तोष प्रकट किया है और सहानुभूति व्यक्त की है बल्कि उन्होने जो कमोबेशी चन्दे दिए और इस सम्बन्धमे कुछ कार्य भी किए वह सब भी मेरी पिछली सेवाओके एवजमे ही किया है। खैर मै यह सब छोडता हूँ। मै यह माने ले रहा हूँ कि आपके सभी मानपत्रोमे यह गम्भीर और पवित्र प्रतिज्ञा व्यक्त की गई है कि हरिजनोके प्रति किए गए अत्याचारोकी क्षतिपूर्तिके लिए आपसे जो बन पडेगा सो आप करेगे। यदि कोई व्यक्ति समस्त भारतका अस्पृश्यताका नक्शा खीचने बैठे तो मेरा ख्याल है कलकका ताज मलाबारके ही सिरपर होगा और जहाँतक अस्पृश्यताका सवाल है मलाबार सबसे काला स्थान होगा। यह एक दुखकी बात है लेकिन हमे इस तथ्यको दरगुजर नही करना चाहिए। मै इस कालिमाको अच्छाईमे बदलना चाहूँगा और मै आपसे अनुरोध करूँगा कि अस्पृश्यताके कलकको दूर करनेके लिए आप कमर कसकर तैयार हो जाये और ऐसा भगीरथ प्रयत्न करे कि सघर्षके अन्तमे मलाबारके लिए यह कहना सभव हो कि अस्पृश्यताके दानवके विरुद्ध लडी गई लडाईमे मलाबार सबसे अग्रणी था। लोग मलाबारके लिए यह कहे कि अस्पृश्यताकी इस बुराईको दूर करनेके लिए मलाबारने बडे-से-बडे त्यागको तुच्छ जाना। और इस सभाके लिए श्री के० माधवन नायरके चित्रसे ज्यादा उपयुक्त और पवित्र स्मारक और क्या हो सकता था।

मै उन्हे बहुत पहलेसे जानता था। जब मै पहली बार कालीकट आया था तब मुझे उनका परिचय पानेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। लेकिन मुझे स्वीकार करना होगा कि तब मै उन्हे उतनी अच्छी तरहसे नही जानता था जितनी अच्छी तरहसे मैने तब जाना जब वे यरवडामे मुझसे मिलने आये थे। तब मै उनके अत्यत निकट सपर्कमे आया और जब राजगोपालाचारी यहाँ थे तथा जब गुरुवायूरमे जनमत-सग्रह चल रहा था तब मै स्वभावत अन्य मित्रोके साथ-साथ उनके साथ भी लगभग प्रतिदिन पत्र-व्यवहार करता था। उस समय श्रीमती उर्मिलादेवी और मेरी पत्नी भी श्री के० माधवन नायरके निकट सपर्कमे आई। मेरी पत्नी एक सरल महिला है। वह कुछ भी नही जानती और उसे अग्रेजी भाषाका कोई ज्ञान नही है, मलयालम भाषा तो वह निश्चय ही नही जानती, लेकिन उसने अपनी अत्यत सरल भाषामे मुझे यह बताया कि वह श्री माधवन नायरके चरित्रकी सादगीसे अत्यत प्रभावित

हुई है। उसकी इस बातसे मेरे मनपर पडी उनकी छाप और भी गहरी हुई और वह अभी भी अमिट है। उनके साथ मेरे जो सम्बन्ध थे उनकी मेरे दिमागमे अत्यत स्पष्ट याद है और उनकी जिस बातने मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित किया वह थी उनकी विशुद्ध विनम्रता। यह उनका सही चित्र है और जिस चित्रकारने कालीकटकी जनताको यह चित्र भेट किया है उसे मै बधाई देता हूँ। मेरा खयाल है, चित्रमे उनके मुखपर जो विनम्रता झलक रही है आप उसे सहज ही देख सकते है। आप यह न समझे कि चित्रकारने उनकी विनयशीलताको चित्रमे बढा-चढाकर दिखाया है। मेरा खयाल है कि चित्रकार ऐसा करनेमे सर्वथा असमर्थ है। यदि आप माधवन नायरसे मिले होते तो आपको उनकी सजीव आँखोमे उस विनम्रताकी ज्यादा सुन्दर झलक दिखाई देती। इस चित्रमे उनका पूरा चरित्र चित्रित है। श्री माधवन नायर आज मेरे समक्ष उसी रूपमे उपस्थित है जिस रूपमे मैने उन्हे यरवडामे देखा था। वे अत्यन्त स्पष्ट रूपसे मेरी आँखोके सामने रहते है और उन्होने मेरे मनपर यह एक विशिष्ट छाप छोडी है।

मैने यह भी देखा कि वे अत्यत मितभाषी थे। आपको ऐसे लोग अधिक नही मिलेगे जो भापाका अथवा शब्दोका प्रयोग करनेमे मितव्ययी हो। श्री माधवनने मेरे साथ अपने इस गुणका वहुत ज्यादा परिचय दिया। उनके पत्र सुसम्बद्ध, सुन्दर, साफ और अत्यन्त सक्षिप्त होते थे। उन्हे जो कहना होता था वह बहुत थोडे शब्दोमे कहकर पत्र समाप्त कर देते थे। ऐसे थे श्री माधवन नायर। यदि आप ऐसे लोगोका स्मरण करे जो शरीरमे तो नष्ट हो गए है लेकिन अन्यथा जीवित हैं तो आप देखेंगे कि वे अपनी बौद्धिक उपलब्धियोके कारण नही वरन् अपने गुणोके कारण जीवित हैं तथा यदि हम चाहे और यदि हम उस दिशामे प्रयत्न करे तो हम और आप भी बल्कि हममे से हरकोई व्यक्ति अपने अदर इन गुणोका विकास कर सकता है। इस-लिए यदि आप यह सोचते है कि इस चित्रका अनावरण करनेके लिए मुझे बुलाकर और इस समारोहमे उपस्थित होकर वे उनकी स्मृतिमे कुछ प्रशसात्मक शब्द सुनकर आपने अपना कर्त्तव्य पूरा कर लिया है तो आप उस व्यक्तिकी स्मृतिके प्रति अन्याय करेगे जिसका मैने, जिस रूपमे मैने उसे जाना, उस रूपमे वर्णन किया है। यदि आप सचमुच ऐसा करेगे तो आप निस्सन्देह उसके प्रति अन्याय करेगे। लेकिन आप ठीक चीज तभी करेगे जब उनके इस चित्रको एक वहुमूल्य निधिके रूपमे अपने पास रखेंगे जो आपको बराबर इस बातका एहसास कराये कि आपको भी यदि पूरी तरहसे नही तो कम-से-कम कुछ अशोतक माधवन नायर बनना है और अन्तमे इस प्रकरणको पूरा करनेके लिए मै आपसे कह दूँ कि जहाँतक हरिजन-कार्यका सवाल है, श्री माधवन नायर अपने कर्तव्यका पालन करते हुए मृत्युको प्राप्त हुए। वे उस हरिजन कार्यके एक सच्चे कार्यकर्त्ता थे जो कि [सवर्णोंके लिए] आत्मशुद्धि, पश्चात्ताप और क्षतिपूर्तिका कार्य है। वे जो-कुछ भी करते थे उसमे कही कोई लघुताका भाव नही होता था। ईश्वर करे कि मेरे और आपके दिलोमे उनकी याद बराबर बनी रहे।

आपने मुझे जो मानपत्र भेंट किए है उनके लिए मै आपको एक बार फिर धन्यवाद देता हूँ। और चूँकि मै समझता हूँ कि इन मानपत्रोकी नीलामी करनेके

लिए यह उचित अवसर नही है इसलिए मै आशा करता हूँ आप सब लोग कल इन मानपत्रोके बदलेमे कुछ पैसा जुटानेके कार्यमे मेरी सहायता करेगे क्योकि मै जानता हूँ कि कालीकटसे मै निराश होकर नही लौटूँगा।[1]

[अग्रेजीसे]

हिन्दू, १५-१-१९३४

५०२. भाषण : मलाबार क्रिश्चियन कॉलेज, कालीकटमें

१३ जनवरी, १९३४

जब आपने मुझे हरिजन-कार्यके लिए एक थैली प्राप्त करने और आपसे कुछ शब्द कहनेके लिए आमन्त्रित किया तब मुझे बडी प्रसन्नता हुई। आपने स्वभावत इस उद्देश्यके प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त की है। लेकिन आपके प्रिसिपलने कॉलेजको और इस तरह प्रकारान्तरसे आपको भी जो प्रमाणपत्र[2] दिया है उतने भरसे आप नौजवानोको सन्तुष्ट नही हो जाना चाहिए। जरूरत इस बातकी है कि आप इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण कार्य करे, और वह यह कि अस्पृश्यताकी इस प्रथाको आप ईश्वरीय देन न माने बल्कि इसे आप हमे अपने चगुलमे फँसानेके लिए शैतानकी करतूत समझे। हम सब चाहे किसी भी धर्मको माननेवाले क्यो न हो, लेकिन हम सब उसी एक स्रष्टाकी सन्तान है। सृष्टिकर्ता तो केवल एक ही है। हम ऐसा अपने मुँहसे तो अवश्य कहते है लेकिन हम इस मान्यताको जीवनके प्रत्येक क्षेत्रमे और अपने क्रियाकलापोमे स्थान देनेको तैयार नही है। यह असत्य है और हमे अपने जीवनसे इस असत्यको निकाल बाहर करना चाहिए। और विद्यार्थियोसे ज्यादा अच्छी तरह इसे और कौन कर सकता है? इसलिए आपको निर्भय होकर यह घोषणा करनी होगी कि यदि हम सब उसी ईश्वरकी सन्तान है तो हम सब समान है। आप अपने मनमे जिरह न करे और यह न कहे कि "हम सब समान कैसे हो सकते है?" आपमेसे कुछ लडके बहुत होशियार है और उन्होने पुरस्कार प्राप्त किये है तथा अपनी-अपनी कक्षामे उनका स्थान प्रथम श्रेणीमे है। तो फिर जो लडके कक्षामे

१ इसके बाद गांधीजीने श्री के० माधवन नायरके चित्रका अनावरण किया। बादमें उसी दिन किसी समय वे एक मलयालम दैनिक **मातृभूमि** के कार्यालयमें गये और उसके कर्मचारियोंके समक्ष भाषण देते हुए उन्होंने कहा कि माधवन नायर इस न्यासकी आत्मा थे और यह उनके अथक प्रयत्नोंका परिणाम है कि आज इस समाचार पत्रका अपना एक विशिष्ट स्थान है। यह कहना बहुत ज्यादा न होगा कि मलाबारमें इस पत्रका एक विशिष्ट स्थान है। उन्होंने कर्मचारियोंसे अपील की कि वे स्वर्गीय श्री नायरके पदचिह्नों पर चलें जो बिना किसी दुविधाके और तहेदिलसे इस आंदोलनके साथ थे। सीधे-सादे शब्दोंमें यह आंदोलन एक धार्मिक आंदोलन है।

२. कॉलेजके प्रिंसिपलने कहा था कि कॉलेजमें जो हरिजन लड़के हैं उनके साथ समताका व्यवहार किया जाता है।

सबसे ऊपर है वे उन लडकोके समकक्ष कैसे हो सकते है जो कक्षामे सबसे नीचे है। यह आपके लिए और मेरे लिए एक अच्छी खासी पहेली है और आपको इसे बुद्धिमानीके साथ सुलझाना होगा, अबुद्धिमत्तापूर्वक नही। अक्सर ही ऐसा होता है कि जिस तरह हम अकगणित और ज्यामितिकी समस्याओको सुलझाते है उसी तरह ऐसी समस्याओको भी सुलझा डालते है। यदि आप इन्हे समझदारीके साथ सुलझा सके तो मै आपको सासारिक माता-पिताओके उदाहरण दूँगा। आपमे से जिन लडकोके भाई है वे यह अनुभव करेगे कि उनमे परस्पर एक जैसे गुण अथवा बुद्धि नही है, और उम्र तो निश्चय ही एक जैसी नही हे, शरीरका गठन भी एक जैसा नही हे। और तब भी क्या आप अपने माता-पिताको आपमे और अपेक्षाकृत अधिक होशियार और मेहनती बच्चोमे कोई भेदभाव बरतते हुए देखते है? इसके विपरीत, कदाचित् आपके माता-पिता उन बच्चोको ज्यादा प्यार करते होगे जो असहाय है और जिन्हे मददकी जरूरत है बनिस्बत उन बच्चोके जो होशियार है और अपनी सहायता आप कर सकते है। तो क्या आप यह समझते है कि वह दिव्य पिता, जो पिताओका भी पिता है और ऐसा पिता है जैसा ससारने कभी नही देखा है, क्या वह कुछ लोगोके साथ उनके जन्मसे ही अस्पृश्योका-सा व्यवहार करेगा और इस तरह उन्हे सबसे नीच मानेगा तथा अन्य लोगोको सबसे ऊपर जानेगा? आप लोगोमे आज जो अस्पृश्यता प्रचलित है वह मेरे विचारसे एक स्वयसिद्ध सिद्धान्त है। यदि आप यह थैली मुझे अपना हृदय परिवर्तन करनेकी दृढ इच्छाके चिह्न स्वरूप देगे और आप इस पृथ्वीपर किसी व्यक्तिको अस्पृश्य न मानेगे तो इसका सदुपयोग होगा। धर्म हमे अपने आपको निम्नतम और अन्य हर किसीको उच्चतम मानना सिखाता है। क्या आप सब लोग इसी तरहका आचरण करते है? अस्पृश्यताको नि सन्देह खत्म होना है। अस्पृश्यताका यह रोग हमारे शरीरको घुनकी तरह खा रहा है और हमारी आत्माको रौदे डाल रहा है। यदि आपने मेरे वचनोको समझ लिया है तो आप अपने दिलोको इस तरह बदल डालेगे कि आप अस्पृश्यताकी भावनाको किसी भी रूपमे अपने दिलोमे घर नही करने देगे। आप अन्य धर्मोको माननेवाले लडकोके प्रति अस्पृश्यताके बर्तावको बरदाश्त नही करेगे। आप हरिजनोकी बस्तियोमे जायेगे और अपना समय व्यर्थ गँवानेके बजाय, आप वहाँ जाकर हरिजन लडकोकी सेवा करेगे और उनकी जरूरतोके बारेमे पता लगायेगे। यदि आपके माता-पिता आपको पाँच पाई अथवा जो-कुछ भी देते है तो आप कमसे-कम उसका थोडा-सा अश हरिजन लडकोके लिए बचा कर रखेगे जिनको उन पैसोकी आपसे ज्यादा जरूरत है। आप फुर्सतके समय हरिजन लडके और लडकियोकी सेवा करे। आप उनके घरोमे जाकर झाड़ू लगाये। आपको उन्हे स्वच्छ जीवन बिताना सिखाना होगा। आपके लिए इतना ही पर्याप्त नही है कि आप अपने शरीरोको साफ रखे, बल्कि आपको अपने हृदय और अपनी आत्मा भी शुद्ध रखनी चाहिए। जब आप प्रात.काल सो कर उठे तब सबसे पहले आप भगवानसे प्रार्थना करे कि वह आपको हृदय और शरीर स्वच्छ रखनेकी शक्ति प्रदान करे। यदि आप यह सब करेगे तो आपने मुझे यह जो

थैली भेंट की है वह अस्पृश्यताकी बुराईको दूर करनेकी आपकी दृढ इच्छाका प्रतीक होगी।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १५-१-१९३४

५०३. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

१४ जनवरी, १९३४

भाई घनश्यामदास,

मलकानीने तुमारा पत्र पढाया है। बिहारीलालको मैंने स्पष्ट लिखा है। मेरे पत्रकी प्रतिलिपि भेजता हु। हमारे उसके साथ स्पष्टतासे और दृढतासे काम करना होगा।

पेदलवाला करनेका कार्य इस दौरेमें होना अशक्यसा प्रतीत होता है। लेकिन जो हो रहा है वह अच्छा ही प्रतीत होता है। लोगोके विचारका परिवर्तन खूब हुआ है। आचारमें बहुत परिवर्तन नहि हुआ है। देखे क्या होता है। मुझे तो ईश्वरका हाथ इस कार्यमें देखा जाता है। यह एक रूढ वचन है। यह कार्य कोई एक मनुष्यकी शक्तिसे हो हि नही सकता है, न हजारोसे। लेकिन इस बारेमें अधिक लिखा या कहा जा नहि सकता है। इसका तात्पर्य इतना ही है कि ईश्वर पर मेरा विश्वास बडता जाता है। अपनी शक्तिकी अल्पताका प्रत्यक्ष अनुभव हो रहा है।

तुमारा शरीर अच्छा रहता होगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकल (सी० डब्ल्यू० ७९४३) से, सौजन्य घनश्यामदास बिडला

५०४. भाषण : कलपेट्टाकी सार्वजनिक सभामें[1]

१४ जनवरी, १९३४

दोस्तो,

मुझे मोटरमें देशके इस अत्यन्त सुन्दर क्षेत्रसे होकर गुजरनेका यह जो सयोग मिला उसमें मुझे श्रम-जैसा कुछ महसूस नहीं हुआ बल्कि इससे मुझे सचमुच बहुत खुशी हुई है। आपके सामने अभी जो मानपत्र पढकर सुनाये गये हैं उनमें कही गई बातोके पीछे जो-कुछ है उसके बारेमें मुझे बहुत-कुछ पता चला है। ऐसा प्रतीत होता है कि मृतक सुब्बिया गोन्डनके पास जो भी जमीन-जायदाद[2] थी वह सबकी

१. 'सहोदर सघ' के तत्त्वावधानमें मुत्तल तिरुनेल्ली हरिजन बस्तीके उद्घाटन समारोहकी सभामें।
२ विस्तारमें १६५ एकड़ जमीन।

सब उसने हरिजन-कार्यके लिए वसीयत कर दी है। यह एक दुर्लभ और वस्तुत एक बहुमूल्य भेट है। इस न्यासके सम्बन्धमे न्यासियो और वसीयतके प्रबन्धकोके ऊपर एक बहुत बडी जिम्मेदारी हे। इस वसीयतनामेकी शर्तोके अनुरुप चलनेवाली योजनाको जबतक प्रबन्धक और न्यासी लोग अपने दिलोजानसे कार्यान्वित करनेका प्रयत्न नही करेगे तबतक यह बस्ती वैसी सुन्दर बस्ती नही बन सकेगी जैसीकि स्वर्गीय सुब्बियाकी इच्छा थी। मै आशा करता हूँ कि न्यासी अथवा वसीयतके प्रबन्धक लोग उनपर जो भरोसा प्रकट किया गया है उसके योग्य है और यह कि वे अपने दायित्वको इस प्रकार निभायेगे जिससे कि जनताको पूरा सन्तोष होगा। मैने जान-बूझकर 'जनता' शब्दका प्रयोग किया है क्योकि जब कोई न्यास सार्वजनिक कार्यके लिए समर्पित कर दिया जाता है तब वह जनताकी सम्पत्ति बन जाता है। मै इस आशा और आश्वासनके साथ प्रसन्नतापूर्वक बस्तीके खोले जानेकी घोषणा करता हूँ और इसकी सफलताकी कामना करता हूँ। हमे प्रयोगके लिए अथवा योजनाके कार्यान्वित करनेके लिए जिन साधनोकी जरूरत है वे हमारे सामने मौजूद है। हमारे सामने एक दो नही बल्कि बहुत सारे हरिजन भाई खडे है। उन्होने नृत्य व सगीतका जो कार्यक्रम प्रस्तुत किया है वह हम सबने देखा है। हमारे लिए यह कोई आनन्दकी अथवा मनबहलावकी चीज नही होनी चाहिए बल्कि इससे हमे गहरा सबक सीखना चाहिए। मेरा खयाल है मेरी तरह आप सबने भी यह बात महसूस की होगी कि उनके वाद्योमे सगीतकी मधुरता न थी और नृत्य भी मनोहारी न था। लेकिन यही एक चीज है जो ये लोग अपना खाली वक्त काटनेके लिए कर सकते है। उनके वाद्य मे और नृत्यमे जो मधुरताका अभाव है उसकी जिम्मेदारी उनपर नही बल्कि आपके और मेरे कन्धोपर है। उनके जगली स्वभावको समझनेके लिए हमे उनके नाच व सगीतकी बारीकियोमे जानेकी जरूरत नही है। उनकी शकल-सूरत, बिखरे हुए बाल, और उनकी हर चीज हमे यह बतानेके लिए काफी है कि हम अपने इन बन्धुओके प्रति कितने लापरवाह रहे है। और ऐसा करके हमने कितना अपराध किया हे। वे साल-दर-साल तबतक वही लगोटी अथवा कपडा पहने रहते है जब तक कि वह चिथडे-चिथडे नही हो जाता। वे बहुत कम स्नान करते है और जब करते भी है तब, यकीन मानिए, खास साफ पानीसे नही करते। इन शर्मनाक हालात के लिए आप और मै जिम्मेदार है। और यदि इस बस्तीका प्रबन्ध मेरे हाथमे हो तो मै आपसे कहता हूँ कि मै फौरन इन लोगोको बस्तीमे रहनेके लिए बुलाऊँगा, इन्हे अच्छा वेतन दूंगा, इनसे नियमपूर्वक स्नान करनेका अनुरोध करूँगा और इन्हे सलीकेदार मनुष्य बना दूंगा। मेरा खयाल है, अगर हमे पता चले कि हमारा अपना सगा भाई उन्ही जगली हालातमे रह रहा है जिनमे कि हमारे ये भाई रहते है, तो हममे से प्रत्येक व्यक्ति ऐसा ही करेगा। और यदि बिना समय गँवाये ऐसी सुखद स्थिति लाई जा सके तो हम मान सकते है कि आपने और मैने यहाँपर व्यतीत हुए अपने समयका सदुपयोग किया है। इस मानपत्रके अन्तमे ये शब्द कहे गये है "भगवान करे कि आप अपने प्रयत्नोमे सफल हो।" खैर, मै तो सिर्फ इतना ही कह सकता हूँ कि मैं अपने प्रयत्नोमे तबतक सफल नही हो सकता जबतक आप

भी अपने प्रयत्नोमे सफल न हो। क्योकि मेरे प्रयत्न तो केवल सवर्ण हिन्दुओसे हृदय-परिवर्तन करनेका आग्रह करने और उनसे हरिजनोकी जितनी सेवा बन पडे उतनी सेवा करनेको कहनेतक ही सीमित है। अन्तमे मै इन हरिजन भाइयोसे अनुरोध करूँगा कि वे आत्मशुद्धिकी दिशामे सच्चे दिलसे प्रयत्न करे।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, १६-१-१९३४

५०५. भाषण: कालीकटकी सार्वजनिक सभामे[1]

१४ जनवरी, १९३४

मित्रो,

अभी-अभी मुझे कालीकटके नागरिकोकी ओरसे बहुत-सी थैलियाँ दी गई है जिनका जोड रु० ४,३८८-५-९ है। दानकी बछियाके गुण-दोष नही देखे जाते, इसलिए शिष्टाचारका तकाजा है कि हरिजन-कार्यके लिए जो बहुत-से उपहार आपने मुझे दिये है उसके लिए मै आपको धन्यवाद दूँ। लेकिन स्वेच्छया अथवा आत्म-नियुक्त हरिजन-सेवक होनेके नाते मुझे मलाबारकी राजधानीसे मिलनेवाली हल्की-फुल्की थैलियोके प्रति अपना आदरयुक्त विरोध प्रकट कर देना चाहिए। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि बगलौरने, मैसूरकी राजधानी नही बल्कि मैसूर-राज्यके दूसरे नम्बरके नगरने, जो मलाबार-जितना बडा भी नही है, मुझे जितना आज शाम आपने मुझे दिया है, उससे कही अधिक दिया था। और कालीकट हरिजन-कामके लिए कितना दे सकता है, यह मै अच्छी तरह जानता हूँ। लेकिन अब भी कुछ नही गया है। आपके यहाँ बहुत-सी मनोहर वस्तुएँ है और दो-चार शब्द जो मै कहना चाहता हूँ, वे कह चुकनेके बाद आप चाहे तो उस कमीको पूरा कर दे और आज जो निसन्देह एक हल्की थैली है उसे आप भारी थैलीमे बदल दे। ऐसा कर सकना आपके लिए सर्वथा सम्भव है।[2]

मलाबारमे आनेके बाद यह बात मै बहुत-से मचोसे कह चुका हूँ कि यदि सम्पूर्ण भारतका एक अस्पृश्यता-सूचक मानचित्र तैयार किया जाये तो मलाबारको पूरे देशमे सबसे काले धब्बेके रूपमे दिखाया जायेगा। और इस समय जो स्थिति है, उसको देखते हुए मै समझता हूँ कि आपको अपना अपराध स्वीकार करना होगा। तब यदि आप मलाबारके पापके बारेमे कायल है, जैसाकि आपने मुझे यह थैली देकर स्वीकार किया है कि आप कायल है, तो आप स्वीकार करेगे कि इस पापसे मुक्त होनेके लिए मलाबारको सबसे ज्यादा प्रायश्चित्त करना होगा। इससे तो कुछ भी फर्क नही पडता, और पडना भी नही चाहिए, कि आपमे से जो कुछ धनवान लोग है वे मूलत मलाबारके निवासी नही है। मलाबारमे रहकर जो लोग मात्र

१. यह सभा शाम छ बजे समुद्रके किनारे हुई थी और इसमें १५,००० लोग उपस्थित थे।

२. यह अनुच्छेद **हिन्दू**से लिया गया है।

अपनी जीविका अर्जित कर रहे है या खूब धन कमा रहे है, उनको यह समझ लेना चाहिए कि उन्हे प्राप्त होनेवाला एक-एक पैसा इस पापसे दूषित है। इसलिए क्षतिपूर्ति और प्रायश्चित्तके लिए वे भी उतने ही जिम्मेदार है जितने कि यहाँके मूल मल्याली निवासी है।

आज सुबह मुझे मलाबारके एक अत्यन्त सुन्दर स्थानपर ले जाया गया, मुझे पहाडीपर ले जाया गया जहाँकी दृश्यावलि बहुत रोमानी थी। वहाँ मुझे कलपेट्टा नामक एक गाँवमे ले जाया गया, जहाँ मुझे एक भजन याद आ गया — मेरे खयालमे इसे बिशप हेबरने लिखा था। खैर, चाहे उन्होने लिखा हो या किसी और बिशपने, आपकी ज्ञानवृद्धिके लिए मै उस भजनमे से यह एक पक्ति आपको सुनाता हूँ। कहा जाता है कि वह जब भारतके पश्चिमी तटपर पहुँचनेवाले थे तब उनके होठोपर या उनकी कलमपर अपने-आप यह पक्ति उतर आई "प्रत्येक दृश्य सुखदायी है, केवल मनुष्य ही घिनौना है"[1] ('एवरी प्रॉस्पेक्ट प्लीजेज, मैन एलोन इज वाइल') इसमे मुझे कोई सन्देह नही कि जब उन्होने यह पक्ति लिखी थी तब उनके दिमागमे अस्पृश्यताका यह काला धब्बा नही था। इस पक्तिकी मैने जो व्याख्या की है उसमे इसकी शास्त्रीय व्याख्या बिलकुल भिन्न है। लेकिन कवियोको उनके स्व-निर्मित दायरोमे भी कभी सीमित नही रखा जा सकता। कवि तो चिरकालके लिए लिखते है। उनके शब्दोमे एक ऐसा अर्थ गर्भित होता है जिसकी कल्पना उन्हे जब वे बोलते है या लिखते है तब नही होती। मलाबारमे मनुष्यके लिए प्रकृतिने जो उपवन बनाये है वहाँसे सुरभित हवाएँ आती है। लेकिन मनुष्यने अस्पृश्यता द्वारा उसे दूषित कर दिया है और इस तरह वह घिनौना बन गया है। हमने ईश्वरकी महानतम रचना अर्थात् मनुष्यको विरूपित करनेका प्रयत्न किया है। मनुष्यकी आत्माका सौन्दर्य ऐसा होता है कि पेड-पौधोका चित्ताकर्षी सौन्दर्य भी उसे कभी मात नही कर सकता। लेकिन तथाकथित सवर्ण हिन्दू अथवा तथाकथित उच्च वर्गीय हिन्दुओने हिन्दू-समाजके एक अशको दबानेकी अनधिकार सत्ता ग्रहण कर ली। लेकिन जैसाकि हम शायद कुछ वर्षोमे देखेगे, उनका यह प्रयत्न असफल रहा है। मनुष्यने, स्वय ईश्वरके नामपर, हजारो लोगोको समाजके दायरेसे बाहर रखकर मनुष्यकी आत्माका दमन करनेमे कोई कसर नही उठा रखी है।

आज कलपेट्टामे पेड-पौधोके चित्ताकर्षी सौन्दर्यके बीच मैने जो-कुछ देखा है वह मैं आपको बताऊँगा। मुझे मानव-जातिके जगली नमूने देखनेको मिले जिनसे तीव्र दुर्गन्ध आ रही थी। आप मेहरबानी करके जल्दीमे यह मत कह बैठिए कि यही तो वजह है कि वे अस्पृश्य है। आप जिस हदतक शायद मेरे साथ सहमत होनेको

१. ये पक्तियाँ इस प्रकार हैं.
"व्हाट दो द स्पाइसी ब्रिजेज
ब्लो सॉफ्ट ओवर सीलोन्स आइल
दो एवरी प्रॉस्पेक्ट प्लीजेज
ऐण्ड ओनली मैन इज वाइल"

तैयार है, मै चाहता हूँ कि आप जरा उससे गहरे उतरकर मेरे साथ विचार कीजिए और समझनेकी कोशिश कीजिए कि इस अवर्णनीय रूपसे पीडाजनक दृश्यके लिए आप और मै जिम्मेदार है। यदि आप चाहे तो एक घटेके अन्दर-ही-अन्दर इन लोगोको स्वच्छ तथा ऊपरसे देखनेमे उतने ही सम्माननीय व्यक्तियोके रूपमे बदला जा सकता है जितने कि आप और मै है। बस थोडे-से गरम पानी, या साबुन, और थोडी-सी खादीकी जरूरत है, और आप तत्काल देखेगे कि वे भी बिलकुल उतने ही सभ्य दिखने लगेगे जितने कि आप और मै। उनके और हमारे बीच के आन्तरिक भेदका तो केवल ईश्वर ही निर्णय कर सकता है। यह बिलकुल सम्भव है, बल्कि वस्तुत मेरी रायमे तो यह बिलकुल निश्चित बात है कि हम लोग उनकी अपेक्षा कही ज्यादा पापी और अधम प्राणी है। हमारे जीवनकी पाटीपर हमारे कार्योका जो ब्योरा लिखा हुआ है वह बहुत अच्छा नही है। उनकी जीवन-पाटी तो अभी भी साफ-सुथरी पडी है। आपको क्या यह जानकर अब आश्चर्य होगा कि जब अपने इन देशवासियोको मैंने देखा तो मन ही-मन मैं सहसा उपरोक्त कविसे कह बैठा, 'तुमने यह बात ठीक ही कही है कि "प्रत्येक दृश्य सुखदायी है, केवल मनुष्य ही घिनौना है"।' अब आप अपने दिलोपर हाथ रखकर मुझे यह बताइए कि यदि आप लोग अपनी सारी धन-दौलत दे दे और बहनोके पास जो-कुछ जेवर है वे सब उसे त्याग दे तो भी क्या आपके कारण हमारे इन देशवासियोको जो नुक्सान पहुँचा है उसकी पर्याप्त क्षतिपूर्ति हो सकेगी? मै आपको यह समझाना चाहता हूँ कि जब आप अपने पासका सब-कुछ त्यागकर हरिजनोके साथ हुए अन्यायकी क्षतिपूर्ति करनेका काम आरम्भ कर देगे तब ही आप हरिजनोके उपयुक्त सेवक समझे जायेगे। लेकिन मै जानता हूँ कि यह एक आदर्श स्थिति है और मै यह भी जानता हूँ कि यदि मै आपको आसानीसे उस आदर्श मार्गपर ले चल सका तो भारत वास्तवमे फिरसे तीस करोड देवताओका देश बन जायेगा।

लेकिन मै ऐसे किसी प्रकारके भ्रमके वशीभूत नही हूँ। मै अपने-आपको एक व्यावहारिक आदर्शवादी मानता हूँ। मानव प्रकृतिसे मुझे जो-कुछ प्राप्त होता है वह मै ग्रहण कर लेता हूँ और अपनी राह लगता हूँ। मेरा काम आपके सामने स्थितिकी वास्तविकताओको पेश करना है, आपकी बुद्धि और आपकी कल्पना-शक्तिको जगाना है, आपके हृदयको स्पर्श करना है, और इसके बाद यह बात आपके ऊपर छोड देनी है कि आप हरिजन-कार्य जैसे महान् और पवित्र उद्देश्यके लिए यथासम्भव जितना कुछ कर सकते है, करे।

अन्तमे मै चाहूँगा कि आप इस बातको समझ ले कि यदि हम, तथाकथित सवर्ण हिन्दू, परीक्षाकी इस छोटी-सी अवधिमे हरिजनोके प्रति अपने इस प्राथमिक कर्त्तव्यके पालनमे असफल हो गये तो हिन्दू-धर्म इतिहासकी चीज बनकर रह जायेगा। इतिहास हमे यह सिखाता है कि बहुत-सी सभ्यताएँ, बहुत-सी सस्कृतियाँ उन पिछली सभ्यताओके प्रतिनिधियोकी अन्तर्निष्ठ कमजोरीके कारण सदा-सदाके लिए नष्ट हो गई है।

इसलिए आप इस धोखेमे न रहिये कि हम यदि प्राचीन ऋषियो द्वारा छोडी गई अमूल्य निधिके अयोग्य प्रतिनिधि सिद्ध हुए तो वैसी स्थितिमे भी हिन्दू-धर्म अपवाद सिद्ध होगा और आसन्न विनाशसे बच जायेगा।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २-२-१९३४ तथा **हिन्दू**, १६-१-१९३४

५०६. पत्र : नान और तंगई मेननको

१५ जनवरी, १९३४

प्रिय नान[1] और तगई[2],

दोनोको खूब-खूब प्यार और चुम्बन। आशा है, वहाँका मौसम[3] तुम्हे अनुकूल आ रहा है और तुम दोनो प्रसन्न हो। क्या तुम लोग मलयाली भाषा सीख रही हो? तुम लोग मुझे जल्दी-जल्दी पत्र लिखा करो।

सप्रेम,

बापू

[अंग्रेजीसे]
माई डियर चाइल्ड, पृष्ठ १२०

५०७. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

१५ जनवरी, १९३४

भाई वल्लभभाई,

इस समय शामके चार बजे है। आज मौनवार है। मै कालीकटमे नागजी पुरुषोत्तमके बँगलेमे बैठा हुआ हूँ। देवदास और लक्ष्मी आज आये है। कल ठक्कर बापा और शकरलाल आयेगे। कल दोपहरको ढाई बजे जामोरिन[4] से मिलूँगा। पाँच बजे त्रिचूरके लिए रवाना हो जाऊँगा।

लक्ष्मी प्रसवके लिए दिल्ली जाये अथवा मद्रासमे रहे, यह प्रश्न हमारे सामने है। वह और देवदास दो दिनोमे राजासे मिलेगे। उसके बाद अन्तिम निर्णय करेगे। देवदासको दिल्ली जानेकी अनुमति मिल गई है। तथापि वह अनुभव प्राप्त करनेके लिए छ महीने मद्रासमे रहेगा। दोनो सोच-विचार कर रहे है। देवदासकी अनुपस्थितिमे प्रसव हो, ऐसा लक्ष्मी नही चाहती, और राजा अपनी अनुपस्थितिमे नही चाहते। इस प्रकार

१ और २. एस्थर मेननकी पुत्रियाँ।
३. दक्षिण भारतमें पलनी हिल्समें कोडाईकनालका।
४. कालीकटके, अब काजीकोड।

उलझनोमे उलझने फँसी है। लेकिन जीवनकी सफलता ऐसी जटिल दीख पडनेवाली समस्याओको सीधी तरह सुलझानेमे ही तो है न?

शकरलालको मैने खादीके बारेमे थोडी बातचीत कर जानेके लिए खास तौरसे बुलाया है। मै देखता हूँ कि हमारे खातेमे कदाचित् अनावश्यक खर्च होता है। मैने जो देखा है उसे मै उनके आगे रखना चाहता हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि एक प्रान्तकी खादी दूसरे प्रान्तमे भेजनेका दायित्व अब बिलकुल त्याग देना चाहिए। और अन्तमे मेरा रुख अनन्तपुरकी पद्धतिकी ओर झुकता है। सावलीमे जो पद्धति है वह भी ठीक जान पडती है। कृष्णदास [गाधी] और जाजूजी दोनो ही उस्ताद है और एक-दूसरेकी खूब पूर्ति करते है। कृष्णदास खूब नाम कमा रहा है। केशु शान्त है। रामदासका दिल उचाट है। वह भी किसी दिन ठिकाने आ जायेगा।

देवदास बा से मिल आया है। बा की बहादुरीका वह बहुत बखान करता है। बा परेशान तो जरूर है, लेकिन परेशानी न हो तो जीवनमे क्या मजा है?

मै गुरुवायूर हो आया। वहाँ कुछ भी नही है। लेकिन यह बात जरूर है कि वर्णाश्रम सघने उत्तर भारतके कुछ पहलवानोको काले झण्डे दिखाने और थोडी मार खानेके लिए भेजा था। दो व्यक्तियोने सभा मचपर कब्जा कर लिया था। उन्होने एक भाईके पाँव पकड लिये। इसपर युवकोने उन्हे मचसे उतर जानेके लिए कहा। हाथापाई हुई, इन पहलवानोको थोडी मार पडी। यह है तो ठीक, लेकिन उन्होने अभिनय ऐसा किया है मानो खूब मार पडी हो। इन दोनोको मैने अस्पताल भेजा[1] और सभा शुरू की तथा पूरी की। लोग बडी सख्यामे आते रहते है। छोटी और बडी भेट मिलती रहती है। अन्नपूर्णा जैसी एक कौमुदीबहन प्रकाशमे आई है। उसने अपने गहने दे दिये।[2] "जिसे राम राखे ते कौन चाखे जी" अत वह जैसा रखेगा वैसे रहेगे, जो कहेगा सो करेगे, जैसा नाच नचायेगा वैसा नाचेगे।

बगलौरमे हगरीकी दो महिलाएँ माँ और बेटी, मिली थी। दोनो चित्रकलामे बहुत प्रवीण है। सादगीसे रहती है। अभी तो उन्होने अपना सर्वस्व हिन्दुस्तानको अर्पित कर दिया है। ये माँ-बेटी भजनोके स्वरपर सहज ही नाच उठती है।

नी० अमेरिका जायेगी, ऐसा लगता है। कदाचित् स० भी जाये। उसने जो कारनामे किये है उसके बारेमे मैने तुम्हे ज्यादा नही लिखा है और लिखूँगा भी कैसे? उस सबके लिए समय चाहिए न?

अमलाका काम ठीक चल रहा है।

मणिका पत्र इसके साथ है। पूनी और पुस्तकोके बारेमे मैने स्वामीको लिखा है। पुस्तके एक ही आकारकी न होनेके कारण वह उनकी जिल्द बँधवाकर भेजेगा अथवा नही, सो मै नही कह सकता। स्वामी उस्ताद है और यदि सम्भव हुआ तो वह अवश्य कर देगा।

मणिने तुम्हे जो पत्र लिखा है वह डाह्याभाईने भेजा था।

१ देखिए "भाषण · गुरुवायूरकी सार्वजनिक सभामें", ११-१-१९३४।

२. देखिए "भाषण . कालीकटकी महिला-सभामें", १३-१-१९३४ तथा खण्ड ५७, "कौमुदीका त्याग", १९-१-१९३४।

यदि मै बेलगाम गया तो मै दोनोसे मिलनेकी तजवीज करूँगा। वैसे मेरा वहाँ जाना निश्चित नही है।

मणिको लिखना कि बडोकी सेवा उनके समीप रहकर की जा सकती है अन्यथा नही, सो बात नही है। जो बडोका काम करता है वह भी बडोकी सेवा ही करता है। उनके सान्निध्यमे रहनेका लोभ भले हो। यह स्वाभाविक भी है। सेवाका और सान्निध्यका अनिवार्य सम्बन्ध नही है। वह बिचारी समझती है कि उपर्युक्त पत्र तुम्हे सीधे पहुँच गया होगा। तुमने देखा होगा कि यह तो साबरमतीमे डुबकी लगाकर आया है।[1] इसीलिए चार पॉच जगहसे भीग गया है। यह कोई हमारे लिए नया अनुभव नही है। लेकिन हमारा काम तो येन-केन अपने चित्तको सन्तुष्ट रखना है न?

गोरधनभाईको मै शान्त तो नही कर सका। लेकिन वे अब मुझे कुछ नही लिखते। मुझे जो उचित लगा उस धर्मका पालन मैंने उनके प्रति भी किया है। विट्ठलभाईकी ओरसे जो पैसे मिले है उसका ऑकडा मैंने मँगवाया है और उनके बीच जो पत्र-व्यवहार हुआ है, उसे भेजनेके लिए भी कहा है। यदि मुझे ये मिल गये तो मै उन्हे प्रकाशित करना जरूरी समझता हूँ।

जब वे मुझे पत्र लिखे तब भले वर्धाके पतेपर लिखे। लेकिन यदि वे सब-कुछ तुम्हे ही लिखते रहे और वे पत्र मुझे भी मिलते रहे तो भी मुझे पूर्ण सन्तोष होगा। तुम ही इस बारेमे उनका मार्गदर्शन करना। बा के बारेमे तो तुम लिखोगे ही। लक्ष्मीके बारेमे तो मै तुम्हे लिख ही चुका हूँ। मृदुलाको और नन्दु[2] बहनको पत्र लिख रहा हूँ। ब्रजकृष्णको देवदास देख आया है। वह अच्छा है। बच गया है। आरामकी जरूरत है, सो ले रहा है।

राजा फरवरीकी ६ तारीखको रिहा होगे।

तुम्हे किसी भी बातको लेकर चिन्ता न करनेकी आदतका विकास करना चाहिए। उसके लिए या तो 'गीता' कठस्थ करनी चाहिए, सस्कृत सीखनी चाहिए अथवा उल्टे-सीधे रामधुन रटनी चाहिए।

मुझे तो चिन्ता करनेकी फुर्सत ही नही मिलती, इसलिए तुम्हे मुझे चिन्ता न करनेकी सलाह देनेकी कोई जरूरत नही।

दोनोको,

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृष्ठ ६२-५

१. चूँकि बेलगाम जेलके कर्मचारियोंमें किसीको गुजराती नहीं आती थी इसलिए गुजराती कैदियों द्वारा लिखे गये पत्रोंको सेन्सरके लिए पहले साबरमती जेल भेजा जाता था।

२. डॉ० कानूगाकी पत्नी विजयागौरी।

५०८. पत्र : गंगाबहन वैद्यको

१५ जनवरी, १९३४

चि० गगाबहन,

तुम्हारे बारेमे समाचार तो मिलते ही रहते थे। पर मै तुम्हे जानबूझकर नही लिखता था। पत्र तो एक ही मिल सकता था तुम्हे, अत दूसरे आवश्यक पत्र तुम्हे मिलते रहे इस विचारसे मैने तुम्हे पत्र नही लिखा। बाकी सभी बहनोका स्मरण तो बना ही रहता है।

सब बहनोके लिए तो इतना ही सन्देश भेजता हूँ रासकी कूच[1] के आयोजनके समय भले ही जो-कुछ विचार किये गये हो और प्रतिज्ञाएँ ली गई हो पर अब सारी बहनोको नये सिरेसे स्वतन्त्र रूपसे विचार करके जो निर्णय करना हो, करे। मुझे वह मान्य होगा। मै अपने मूल विचार पर कायम हूँ। कोई किसीपर जोर न डाले। सब कोई अपना-अपना विचार कर ले, यही धर्म है। सब लोग अपनी शक्ति और इच्छाके अनुसार चले। मै तो अनायास ही जेलके बाहर हूँ। लाल बॅगलेपर कोई न ठहरे। लाचारीमे कोई अन्यत्र न ठहरे। हो सकता है कि ऐसा समय आये जब हमे कोई रहने या खानेको कुछ न दे। हम तो ऐसी स्थितिको भी बिना रोष, बिना दु ख माने भोगे, हमने यही धर्म सीखा है। 'गीता' मे यही है, और कुछ नही। दूसरे लोग यदि हमे नही स्वीकार करते तो यही समझना चाहिए कि यह उनकी शक्तिके बाहर है। इसमे दु ख किसलिए? पर हम अभी इस चरम स्थितिको नही पहुँच पाये है। यदि पहुँच जाये तो एक दृष्टिसे अच्छा ही माना जायेगा।

सारी बहने अभी मुझसे अलहदा पत्रकी आशा न करे। मै अवश्य सभीके पत्रोकी आशा रखूँगा।

तुम तो सभी मिलकर लिखोगी और अपने उद्गारोसे भरा-पूरा पत्र लिखोगी। लिखनेमे यदि मदद लेना जरूरी हो तो लेना। सभीने क्या-क्या किया इसकी जानकारी मुझे देना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

सारे पत्र वर्धाके पतेपर भेजे जाये।

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – ६ : गं० स्व० गंगाबहेनने, पृष्ठ ८१-२। सी० डब्ल्यू० ८८१४ से भी, सौजन्य गगाबहन वैद्य

१ १ अगस्त, १९३३ को, देखिए खण्ड ५५, पृष्ठ ३४३-४५।

५०९. पत्र : सुलोचना अ० शाहको

१५ जनवरी, १९३४

चि० सुलोचना,

तुझे आनन्द तो आया? मुझे छ महीनेका हिसाब देना और अब आगे क्या करना है यह सूचित करना। जरा भी सकोच करनेकी आवश्यकता नही।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १७५०) से।

५१०. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

१५ जनवरी, १९३४

चि० प्रेमा,

मै यह पत्र तुझे सिर्फ यह बतानेके लिए लिख रहा हूँ कि तूने जो मुझे लम्बा पत्र लिखनेका वादा किया था मुझे उसका इन्तजार है।

किसन मजेमे है। मै उसपर जितना ध्यान देना चाहता हूँ उतना नही दे पाता।

'हरिजन' के सब अक पढ जाना, गुजराती और अग्रेजी दोनो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३५३) से। सी० डब्ल्यू० ६७९२ से भी, सौजन्य प्रेमाबहन कटक

५११. पत्र : अमीना जी० कुरेशीको

१५ जनवरी, १९३४

चि० अमीना,

मुझे ब्योरेवार पत्र लिखना। बच्चोंसे मिलनेके पश्चात् अपना अनुभव मुझे बताना। भविष्यमें जो तुम ठीक समझो वही करना। जेलमें तुमने क्या किया, क्या पढ़ा तथा अन्य सब बातोंके बारेमें मुझे बताना।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १०६२२) से, सौजन्य अमीना जी० कुरेशी

५१२. पत्र : अमतुस्सलामको

१५ जनवरी, १९३४

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम[1],

उर्दूमें ज्यादा लिखनेकी कोशिश नहीं करूँगा। सचमुच मैं इतना थक गया हूँ कि ज्यादा लिख नहीं सकता। हाथमें दर्द होता है और मौनवार के रातके ८-३० बज चुके हैं। पर कुछ खत तो मुझे लिखने ही होंगे। उम्मीद है कि मेरा खत[2] तुमने जेलमें पाया होगा। मैंने तुमसे कहा है कि मेरे पास नहीं आना। मैं तुमसे बहुत दूर हूँ। परन्तु आनेकी इच्छाको अगर तुम रोक न सकती हो तो जरूर आओ। किसी भी सूरतमें तुम्हें अपनी अम्मा और नारणदासभाईसे तो मिलना ही चाहिए। मुझे तफसीलसे लिखो। आशा करता हूँ, तुम शरीर और मनसे अच्छी होगी।

प्यार।

बापू[3]

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९०) से।

१ यह पंक्ति उर्दू लिपिमें है।

२ देखिए "पत्र अमतुस्सलामको", २-१-१९३४।

३. हस्ताक्षर उर्दू लिपिमें है।

परिशिष्ट

परिशिष्ट—१

(अ) यात्रा-कार्यक्रम[1]

७ नवम्बर, १९३३ से १५ नवम्बर, १९३३ तक

७ नवम्बर

सेलू मन्दिरका उद्घाटन और सार्वजनिक सभा, आदि (प्रात ९ बजे)

८ नवम्बर

प्रात ६ ०० बजे वर्धासे प्रस्थान
" ७ ०० बजे बोरीमे पडाव
" ७ ४० बजे नागपुरमे आगमन
" ७ ४०-८ ०० बजे धनतोलीमे स्वागत
" ८ ००-८ ३० बजे. भगियोकी बस्तीका दौरा, नगरपालिका द्वारा हाल ही मे बनाये गये कुएँका उद्घाटन
प्रात ८ ३०-८ ४५ बजे खलासी लाइन अस्पृश्य बालिका विद्यालय
" ८ ४५-९ ०० बजे. सदर बाजार डी० सी० ए० गर्ल्स स्कूल
" ९ ००-९ १५ बजे चोखामेला होस्टल
" ९ १५-९ ३० बजे पचपौली डी० सी० एम० स्कूल और मॉग बोर्डिंग
" ९ ३०-१० ०० बजे महार स्टुडेन्ट्स बोर्डिंग, ऊँटखाना
" १० ००-१ ०० बजे विश्राम
" १.००-५ ०० बजे कटोल सार्वजनिक सभा, आदि
शाम ५ ००-६ ०० बजे विश्राम
" ६ ००-७ ०० बजे सार्वजनिक सभा

९ नवम्बर

प्रात ६ ००-६ ३० बजे अनाथ विद्यार्थी गृहमे
" ६ ३०-१० ०० बजे रामटेक
" १० ००-२ ०० बजे विश्राम

१. देखिए "पत्र: जवाहरलाल नेहरूको", ११-११-१९३३।

,, २ ०० बजे सेवनरके लिए प्रस्थान
३ ००-४.०० बजे सार्वजनिक सभा आदि
४ ००-५ ०० बजे नागपुर वापस
शाम ५ ००-६ ०० बजे विश्राम
,, ६ ००-७ ०० बजे कार्यकर्त्ताओके साथ बातचीत
रात ७ ००-८ ०० बजे विद्यार्थियोकी सभा

१० नवम्बर

प्रात ६ ०० बजे तुमसरके लिए प्रस्थान
,, ८ ०० बजे तुमसरमे सार्वजनिक सभा इत्यादि
,, ९ ०० बजे भडाराके लिए प्रस्थान
,, १० ००-११ ०० बजे मन्दिरका उद्घाटन, अभिनन्दनपत्रोकी भेट
,, ११ ००-२ ०० बजे विश्राम
,, २ ०० बजे गोदियाके लिए प्रस्थान
शाम ५ ००-६ ०० बजे. विश्राम
,, ६ ००-८ ०० बजे सार्वजनिक सभा, आदि

११ नवम्बर

प्रात १ २० बजे ट्रेन द्वारा प्रस्थान, ५ ०० बजे नागपुरमे गाडी बदली
प्रात ८ ००-९ ०० बजे : देवली (जिला वर्धा)मे

१२ से १३ नवम्बर

वर्धामे विश्राम

१३ नवम्बर

शाम ४ ०० बजे हिगनघाट
रात ८ ३० बजे चॉदा

१४ नवम्बर

प्रात ६ ००-३ ०० बजे सेवलीमे पडाव
शाम ६ ०० बजे चॉदामे सार्वजनिक सभा

१५ नवम्बर

प्रात. ५.२० बजे : चाँदासे प्रस्थान
,, ६ ३० बजे वरोरा मे आगमन, वणीके लिए प्रस्थान

(यदि महात्माजीका स्वास्थ्य यात्राकी थकानको सहन नही कर सका तो डॉ० खरे द्वारा उपर्युक्त कार्यक्रममे परिवर्तन किया जा सकता है।)

(आ) यात्रा-कार्यक्रममे परिवर्तनके सम्बन्धमे परिपत्र

कैम्प वर्धा
७ नवम्बर, १९३३

प्रिय मित्र,

विषय गांधीजीके यात्रा-कार्यक्रममे परिवर्तन

नवम्बर १९३३ से जुलाई १९३४ तक ९ महीनेके महात्माजीके प्रस्तावित दौरे के कार्यक्रममे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन करना आवश्यक, बल्कि अपरिहार्य हो गया है। मध्यप्रान्तकी यात्रा जो आजसे शुरू हुई है, करनेके पश्चात् तथा १०-१४ दिसम्बर तक दिल्लीमे होनेवाली केन्द्रीय बोर्डकी बैठकमे शामिल होनेके बाद गाधीजी पजाब, सिन्ध आदि जानेके बजाय सीधे आन्ध्र तथा मद्रास प्रेसीडेसीके शेष भागमे जायेगे और फिर उसके बाद बगाल, असम और फिर पश्चिमकी ओर चले जायेगे। इसलिए नया क्रम निम्नलिखित होगा

जुलाई १९३४ के अन्तमे मध्यप्रान्त, दिल्ली, आन्ध्र, मद्रास शहर, मैसूर राज्य और मलाबार डिस्ट्रिक्ट, कोचीन और त्रावणकोर, तमिलनाडु, उडीसा, कलकत्ता, बगाल, असम, बिहार, सयुक्त प्रान्त, पजाब, सिन्ध और राजपूताना, गुजरात तथा काठियावाड, बम्बई शहर, महाराष्ट्र और हैदराबाद (दक्षिण) तथा कर्नाटक।

विभिन्न प्रान्तोमे यात्राकी तिथियाँ तथा अन्य विवरण सलग्न सूचीमे दिये गये है। प्रत्येक प्रान्तकी यात्राके ब्योरेका निर्धारण तथा लिखत-पढत प्रान्तीय सचिव पूर्व-प्रेषित विस्तृत निर्देशोके अनुसार अपने-अपने प्रान्तके अधीक्षकासे सलाह-मशविरा करनेके बाद करेगे। लेकिन जिन चार प्रारम्भिक नियमोका पालन करना है, वे निम्नलिखित है

(१) दिनमे बीचमे भोजन और पत्र-व्यवहारके लिए पूरे चार घटे (१० ०० से २ ०० बजेतक हो तो बेहतर है) सार्वजनिक कार्य बिलकुल बन्द रखा जाना चाहिए।

(२) रोजका कार्य सुबह ६ ३० बजेसे पहले शुरू नही होना चाहिए और रातमे हदसे-हद ८ ०० बजेतक बन्द हो जाना चाहिए।

(३) रेलकी यात्रा मोटरकी यात्राके मुकाबले ज्यादा ठीक रहेगी, लेकिन जहाँ मोटरसे यात्रा करना अनिवार्य हो जाये तो वह दिन-भरमे ७५ मीलसे ज्यादा नही होनी चाहिए।

(४) प्रत्येक सप्ताहमे सोमवार और मगलवार विश्रामके दिन है और इन दिनोमे कोई यात्रा तथा सार्वजनिक कार्यक्रम नही होना चाहिए। इतवार रातको ८ बजेसे मगलवार रात ८ बजेतकका समय सरक्षित समय है — २४ घटे मौनके लिए तथा २४ घटे पत्र-व्यवहार और दूसरे कार्यके लिए।

अ० वि० ठक्कर
महासचिव
हरिजन-सेवक सघ

(इ) प्रान्तानुसार यात्रा-कार्यक्रम

गाधीजीकी हरिजन-यात्राका कार्यक्रम

गाधीजीको पत्र-व्यवहार तथा 'हरिजन'मे लिखनेके लिए समय देनेके लिए सप्ताहमे दो दिन, मुख्यत सोमवार और मगलवारको, यात्रा तथा मुलाकाते नही होगी। इस प्रकार जहाँतक यात्रा-कार्यक्रमका सम्बन्ध है, सप्ताहमे पाँच कार्य-दिवस होगे।

प्रान्त	कुल दिन	तिथि (इसमे दोनो तिथियाँ सम्मिलित है)	कार्य-दिवस
मध्यप्रान्त	३१	८ नवम्बर – ८ दिसम्बर	२३
९ दिसम्बरको ट्रेनमे तथा झाँसीमे			
दिल्ली	५	१० दिसम्बर – १४ दिसम्बर	३
१५ दिसम्बरको ट्रेनमे — दिल्लीसे बैजवाडाके लिए			
आन्ध्र	१४	१६ दिसम्बर – २९ दिसम्बर	१०
मद्रास शहर	५	३० दिसम्बर – ३ जनवरी, १९३४	३
मैसूर-मलाबार	१०	४ जनवरी – १३ जनवरी	८
कोचीन-त्रावणकोर	७	१४ जनवरी – २० जनवरी	५
तमिलनाडु	२०	२१ जनवरी – ९ फरवरी	१०
(इनमे पूरी तरह विश्राम करनेके लिए ६ दिन शामिल है)			
१० फरवरीको ट्रेनमे – मद्राससे उडीसा जानेके लिए			
उडीसा	७	११ फरवरी – १७ फरवरी	५
बगाल	२८	१८ फरवरी – १७ मार्च	२०
असम	७	१८ मार्च – २४ मार्च	५
बिहार	१४	२५ मार्च – ७ अप्रैल	१०
सयुक्त प्रान्त	३५	८ अप्रैल – १२ मई	२०
(इनमे पूरी तरह विश्राम करनेके लिए ७ दिन शामिल है)			
पजाब	१४	१३ मई – २६ मई	१०
सिन्ध	७	२७ मई – २ जून	५
राजपूताना	७	३ जून – ९ जून	५
अहमदाबादमे विश्राम	७	१० जून – १६ जून	०
गुजरात–काठियावाड	१४	१७ जून – ३० जून	१०
बम्बई शहर	७	१ जुलाई – ७ जुलाई	५
महाराष्ट्र–हैदराबाद (दक्षिण)	१७	८ जुलाई – २४ जुलाई	११
कर्नाटक	७	२५ जुलाई – ३१ जुलाई	५

इस कार्यक्रमको अस्थायी समझा जाये। इस कार्यक्रममे परिवर्तन भी किया जा सकता है, लेकिन केवल तभी जब कामके हितमे आवश्यक हो।

अ० वि० ठक्कर

[अग्रेजीसे]

गाधी-नेहरू पेपर्स, १९३३, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय

परिशिष्ट–२

मुहम्मद इक़बालका वक्तव्य[1]

लाहौर
६ दिसम्बर, १९३३

सम्प्रदायवादी मुस्लिम नेताओके विरुद्ध प० जवाहरलाल द्वारा लगाये गये आरोपोका उल्लेख करते हुए आज जो वक्तव्य जारी किया गया है, उसमे सर मुहम्मद इकबालने कहा है, "१९३१ मे लन्दनमे आगा खाँने श्री गाधीके सम्मुख जो प्रस्ताव रखा था वह अब भी कायम है। अगर पण्डित जवाहरलालके नेतृत्वमे हिन्दू और काग्रेस उन रक्षात्मक उपायोका, जिन्हे मुसलमान सम्पूर्ण भारतमे अल्पसख्यक समुदाय होनेके नाते अपने हितके लिए आवश्यक समझते है, समर्थन करते है तो मुसलमान सम्प्रदाय भारतके इस राजनैतिक सग्राममे बहुसख्यक समुदायका साथ देनेके लिए अब भी तैयार रहेगा"।

सर मुहम्मद इकबालका कहना है कि १९३२ मे श्री गाधीके सामने आगा खाँने ऐसा ही प्रस्ताव रखा था, किन्तु श्री गाधी इस बातकी गारटी नही दे सके कि काग्रेस उनके दृष्टिकोणको स्वीकार कर लेगी और फिर हिन्दू तथा सिख प्रतिनिधि श्री गाधीके दृष्टिकोणसे सहमत नही हुए। दूसरे श्री गाधी यह चाहते थे कि मुसलमान लोग अस्पृश्योकी माँगोका समर्थन न करे। राष्ट्रीयता और प्रजातन्त्रके सम्बन्धमे मुसलमानोके क्या विचार है, यह समझानेके बाद सर मुहम्मद इकबालने पण्डित जवाहरलालसे स्पष्ट प्रश्न पूछा "यदि बहुसख्यक समुदायने किसी तीसरे पक्षके निर्णयको स्वीकार नही किया तो फिर भारतकी समस्या कैसे हल होगी? ऐसी स्थितिमे केवल दो ही विकल्प है। या तो बहुसख्यक जाति पूर्वमे ब्रिटिश साम्राज्यवादके एजेटके स्थायी पदको स्वीकार कर ले, और या फिर धार्मिक, ऐतिहासिक तथा सास्कृतिक सभ्यताके आधारपर भारतका विभाजन किया जाना चाहिए जिससे कि मताधिकारके प्रश्नको और आज जिस रूपमे साम्प्रदायिक समस्या विद्यमान है, उसके प्रश्नको खत्म किया जा सके।"

[अग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, ७-१२-१९३३

१. देखिए "वक्तव्य: समाचारपत्रोंको", १३-१२-१९३३।

परिशिष्ट – ३

जवाहरलाल नेहरूके वक्तव्यके अंश[1]

. मैं नही समझता कि मुस्लिम साम्प्रदायिक सस्थाएँ, जिनमे मुस्लिम सर्व-दलीय सम्मेलन और मुस्लिम लीग प्रमुख है, भारतमे मुसलमानोके किसी बहुत बडे समुदायका प्रतिनिधित्व करती है, सिवाय इसके कि आज जो साम्प्रदायिक भावना फैली हुई है उससे वे अनुचित लाभ उठा रही है। लेकिन तथ्य यही है कि वे सस्थाएँ मुसलमानोके पक्षका समर्थन करनेका दावा करती है और अब तक कोई ऐसी दूसरी सस्था पैदा नही हुई है जो उस दावेका सफलतापूर्वक विरोध कर सके। उनका यह आक्रामक साम्प्रदायिक स्वरूप उन असख्य राष्ट्रवादी मुसलमानो पर, जो काग्रेसमे शामिल है, प्रभाव डालनेमे मदद करता है। इन सस्थाओके नेता स्पष्टत और पूर्ण-रूपेण साम्प्रदायिक है। यह तो वस्तुस्थितिको देखते हुए कोई समझ ही सकता है।

लेकिन यह भी इतना ही स्पष्ट है कि उनमे से बहुत-से लोग निश्चित रूपसे राष्ट्र-विरोधी और सबमे निम्न कोटिके राजनैतिक प्रतिक्रियावादी है। ऊपरसे तो वे किसी सर्वसामान्य राष्ट्रको भारतमे विकसित होते हुए देखना भी नही चाहते।

पिछले साल ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमन्समे एक बैठकमे आगा खॉ, सर मुहम्मद इकबाल और डॉ० शफात अहमद खॉके बारेमे बताया जाता है कि उन्होने (३१ दिसम्बर, १९३२ के 'स्टेट्समैन' के अनुसार) "हिन्दू और मुसलमानोके राजनीतिक या वस्तुत सामाजिक हितोका विलयन करनेकी अन्तर्निहित असम्भाव्यता पर" जोर दिया था। उन लोगोने आगे "ब्रिटिश एजेंसीके अतिरिक्त किसी अन्य माध्यम द्वारा भारत पर शासन करनेकी अव्यावहारिकताका भी" उल्लेख किया था। ऐसे वक्तव्य अब या सुदूर भविष्यमे भी राष्ट्रीयता अथवा भारतीय स्वाधीनताके लिए कोई गुजाइश नही स्वीकार करते।

मैं नही समझता कि इस प्रकारके वक्तव्य आमतौरपर मुसलमानोके अथवा साम्प्रदायिकताकी ओर रुझान रखनेवाले मुसलमानोके भी विचारोका प्रतिनिधित्व करते हो। लेकिन ये विचार निस्सन्देह मुसलमानोमें उन लोगोके है जो प्रभावशाली है और राजनीतिकी दुहाई देनेवाले है। इन विचारोका तालमेल राष्ट्रवादी और स्वत-न्त्रता-सम्बन्धी विचारोसे बैठाना अपनी बुद्धिका अपमान करना है और बेशक किसी प्रकारकी वास्तविक आर्थिक स्वतन्त्रता तो अब भी उनसे कोसो दूर है। तत्वत यह मनोवृत्ति महज राजनीतिक, सास्कृतिक, राष्ट्रीय और सामाजिक प्रतिक्रियाके फलस्वरूप बनी है। और यदि कोई इन सस्थाओकी सदस्यताकी जॉच-पडताल करे तो कोई

१ देखिए "वक्तव्य · समाचारपत्रोको", १३-१२-१९३३।

ताज्जुब नहीं कि यह बात ठीक ही निकले। इनके बहुतसे प्रमुख सदस्य तो सरकारी अधिकारी, भूतपूर्व सरकारी अधिकारी, मन्त्री, तथाकथित मन्त्री, सामन्त और उपाधिकारी और बडे-बडे जमीदार इत्यादि है। उनके नेता है धनाढ्य धार्मिक समुदायके प्रमुख आगा खॉ, जिन्होने सामन्तवाद और ब्रिटिश शासक वर्ग, जिसके साथ उनका कई साल घनिष्ठ सम्पर्क रहा है, की राजनीति और आदतोको बडी खूबीसे आत्मसात् कर लिया है।

भारतमे मुसलमानोकी ऐसी नेतागिरी होनेपर कोई ताज्जुब नही कि गोलमेज सम्मेलनमे उनका दृष्टिकोण प्रतिक्रियावादी हो। यह प्रतिक्रियावादी नीति इतनी फैल गई है कि लन्दनमे मुसलमान प्रतिनिधियोको ब्रिटिश जन-जीवनके अत्यन्त प्रतिक्रियावादी लोगो — लॉर्ड लॉयड और उनके गुटवालोसे — मैत्री करनी पडी। इसकी इन्तिहा तब हुई जब गाधीजीने व्यक्तिगत तौरपर उनकी प्रत्येक साम्प्रदायिक मॉगको, चाहे वह कितनी ही असगत और अतिरजित क्यो न हो, इस शर्तपर स्वीकार करनेका प्रस्ताव रखा कि स्वतन्त्रताके इस राजनैतिक सग्राममे वे अपना पूरा सहयोग देनेका आश्वासन दे। वह शर्त और प्रस्ताव स्वीकार नही किया गया ओर यह स्पष्ट हो गया कि इसे स्वीकार करनेमे जो बाधा थी वह साम्प्रदायिकवादकी नही थी बल्कि राजनैतिक प्रतिक्रिया की थी।

व्यक्तिगत तौरपर तो मै ऐसा समझता हूँ कि यदि राजनैतिक उद्देश्य एक जैसे ही हो तो साम्राज्यवादियोसे सहयोग करना सामान्यत सम्भव है। लेकिन प्रगति और प्रतिक्रिया मे, उन लोगोमे जो स्वतन्त्रताके लिए सग्राम कर रहे है और जो गुलामीमे ही खुश है, बल्कि इसे आगे बढानेके इच्छुक है, समझौतेकी कोई गुजाइश नही है। और यही राजनैतिक प्रतिक्रिया है जिसने देशको साम्प्रदायिक भावनाकी आडमे आच्छादित कर रखा है और एक समुदायका दूसरे समुदायके प्रति जो भय है उससे लाभ उठाया है। हमे इन साम्प्रदायिक समस्याओमे इस भयकी भावनासे ही निपटना है। सच्ची साम्प्रदायिकताके पीछे भय होता है, झूठी साम्प्रदायिकताके पीछे राजनीतिक प्रतिक्रिया होती है।

अल्पसख्यक समुदायमे यह भयकी भावना कुछ हदतक उचित है, या कमसे-कम स्वाभाविक तो है ही। जहॉ तक मुसलमानोका सवाल है, हम देखते है कि यह भयकी भावना सम्पूर्ण भारतमे व्याप्त है, पजाब तथा सिन्धमे जहॉतक हिन्दुओका सवाल है और पजाबमे सिखोका प्रश्न है, यह भयकी भावना उतने ही प्रबल रूपमे विद्यमान है।

ब्रिटिश सरकारके लिए मुसलमानोके प्रतिक्रियावादी नेताओको सहयोग देना और उनको बढावा देना तथा राष्ट्रवादियोकी अवज्ञा करनेका प्रयत्न करना स्वाभाविक था। उनके लिए यह भी स्वाभाविक था कि वे मुसलमानोकी अधिकाश माँगोको स्वीकार कर ले जिससे कि उनके अपने समुदायमे उनकी स्थिति सुदृढ हो जाये और राष्ट्रीय सग्राम कमजोर पड जाये। इतिहासके बहुत थोडे ज्ञानसे ही यह पता चल जायेगा कि शासक वर्ग हमेशा ऐसा करते ही रहे है। मुसलमानोकी माँगोसे भारतमे अग्रेजोका नियन्त्रण किसी भी तरह कम नही होता था। बल्कि ये माँगें तो

कुछ हदतक अंग्रेजोके प्रस्तावित विशेष अधिकारोमे वृद्धि करनेमे तथा ससारको यह दिखानेमे कि भारतमे उनका बने रहना कितना आवश्यक है, मदद ही करती थी।

मुसलमान साम्प्रदायिक नेताओके दृष्टिकोणके सम्बन्धमे मैने यह सब जो लिखा है, वह सिर्फ तस्वीरको पूरा करनेकी दृष्टिसे नही बल्कि इसलिए लिखा है कि हिन्दुओकी साम्प्रदायिक भावनाको समझनेके लिए इसे देना जरूरी था। दोनोमे कोई मौलिक भेद नही है। लेकिन इसी भेदके कारण ही काग्रेसको हिन्दू-समाजके अधिकाश महत्त्वपूर्ण व्यक्तियोको अपने दलमे शामिल करना पडा और फिर यही लोग वस्तुस्थिति पर छा गये और इस प्रकार परिस्थितियोने हिन्दू सम्प्रदायवादियोको राजनीतिमे एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानेसे वचित रखा। हिन्दू महासभाके नेताओने तो ज्यादातर अपनेको काग्रेसकी आलोचना करनेतक ही सीमित रखा। जब कभी भी काग्रेसकी गतिविधियाँ मन्द पडने लगती थी तो हिन्दू सम्प्रदायवादी ज्यादा जोरसे आवाज उठाने लगते थे तथा उनका दृष्टिकोण स्पष्टत प्रतिक्रियावादी ही होता था।

यह याद रखना चाहिए कि बहुसख्यक समुदायकी साम्प्रदायिक भावनाका तालमेल अल्पसख्यक समुदायकी साम्प्रदायिक भावनाकी अपेक्षा उसकी राष्ट्रीय भावनासे अवश्य बैठना चाहिए। राष्ट्रीय भावनाकी सत्यताको नापनेकी सबसे बढिया कसौटी यह है कि पता चलाया जाये कि राष्ट्रीय सग्रामसे इसका क्या सम्बन्ध है। यदि यह राजनीतिक प्रतिक्रियावादी है या राष्ट्रीय समस्याओकी अपेक्षा साम्प्रदायिक समस्याओपर जोर देती है तो फिर यह स्पष्टतया राष्ट्र-विरोधी है।

ऐसे वक्तव्यो[1] के लिए मै महासभाको दोषी नही ठहरा सकता, लेकिन वस्तुस्थिति यह है कि ये महासभाके विचारोसे मेल खाते है और केवल महासभाके दृष्टिकोणका ही थोडा-बहुत बढा-चढा रूप है। और इनसे यह प्रकट होता है कि बहुत-से हिन्दू सम्प्रदायवादी तो निश्चय ही ब्रिटिश साम्राज्यसे सम्बन्ध स्थापित करनेकी बात सोच रहे है जिससे वे उनकी कृतज्ञताके पात्र बन सके। मामूली-से तर्क-वितर्कसे ही यह पता चल जाता है कि यह दृष्टिकोण न केवल सकीर्ण रूपसे साम्प्रदायिक है बल्कि राष्ट्र-विरोधी और अत्यन्त प्रतिक्रियावादी भी है।

यह बिलकुल सच है कि हिन्दू महासभा आरम्भसे ही हमेशा सयुक्त निर्वाचन मण्डलका समर्थन करती रही है और यही स्पष्टतया समस्याका एकमात्र राष्ट्रीय समाधान है। यह भी सच है कि साम्प्रदायिक निर्णय राष्ट्रीयताको बिलकुल अस्वीकार करता है और इस साम्प्रदायिक निर्णयका उद्देश्य भारतको साम्प्रदायिक विभागोमे विभक्त करना है, और विध्वसक तत्वोको बल प्रदान करके इस प्रकार ब्रिटिश साम्राज्यवादकी जडको मजबूत करना है। लेकिन यह बात ध्यान रखनी चाहिए कि राष्ट्रीयताका महज इसलिए समर्थन नही किया जा सकता कि इससे बहुसख्यक समुदायका लाभ होता है। इसकी परीक्षा उन प्रान्तोमे होती है जिनमे मुसलमानोकी बहुतायत है और उस परीक्षामे हिन्दू महासभा असफल हो चुकी है।

१. ये वक्तव्य भाई परमानन्द, डॉ० मुजे तथा दूसरे लोगोने दिये थे।

केवल मुसलमान सम्प्रदायवादियोको दोषी ठहराना काफी नही है। वैसे ऐसा करना आसान हे, क्योकि कुल मिलाकर भारतीय मुसल्मान दु खद रूपसे बहुत पिछडे हुए है और अन्य देशोके मुसलमानोके मुकाबले हीन साबित होते है। बात यह है कि भारतमे हिन्दुओके लिए एक विशेष दायित्व हो जाता है। इसके दो कारण है। एक तो यह कि वे बहुसॅख्यामे है, और दूसरे इमलिए कि आर्थिक और शिक्षाकी दृष्टिसे वे बहुत आगे है। महासभाने उस दायित्वको निभानेके बजाय कुछ इस ढगसे काम किया है कि उससे मुसलमानोकी साम्प्रदायिक भावनामे निस्सन्देह इजाफा हुआ है और उनके अन्दर हिन्दुओके प्रति उनकी अविश्वासकी भावना जागृत हुई है। उनमे साम्प्रदायिक भावनाको समाप्त करनेका जो एकमात्र तरीका इसने अख्तियार किया है वह है, अपनी साम्प्रदायिक भावनाको विभिन्न रुपोमे प्रकट करना। एक वर्गकी साम्प्रदायिक भावनासे दूसरे वर्गकी साम्प्रदायिक भावनाका अन्त नही हुआ करता, दोनो ही एक-दूसरेको पुष्ट करती है और इस प्रकार दोनो ही मे वृद्धि होती है।

मै कह नही सकता कि हिन्दू और मुस्लिम साम्प्रदायिक सस्थाओके अनुयायी कौन है। यह सम्भव है कि साम्प्रदायिक भावावेशके क्षणोमे प्रत्येक पक्षको अपने प्रति पर्याप्त लोगोकी निष्ठा प्राप्त हो जाये। लेकिन मै इतना जरूर कहूँगा कि दोनो ही सस्थाएँ धनी उच्च वर्गका प्रतिनिधित्व करती है और साम्प्रदायिकतासे लाभ उठानेकी इस होडमे इन दोनो दलोका वास्तवमे प्रयत्न अपने लिए जितना सम्भव हो सके उतने ज्यादा अधिकार और विशेषाधिकार हासिल करना होता है। बहुतसे-बहुत इन सस्थाओका उद्देश्य यह हुआ कि हमारे कुछेक बेरोजगार बुद्धिजीवियोको रोजगार मिल जायेगा। इन साम्प्रदायिक मॉगोसे जनताकी जरूरते कैसे पूरी होती है? श्रमिको, कृषको तथा निम्न मध्यमवर्गीय लोगोके लिए — जो राष्ट्रके अधिकाश भागका प्रतिनिधित्व करते है — हिन्दू महासभा या मुस्लिम लीगका क्या कार्यक्रम है? जैसाकि अजमेरमे हिन्दू महासभाने इस ओर इगित किया था, वर्तमान सामाजिक ढॉचेमे परिवर्तन न करनेवाले नकारात्मक कार्यक्रमके अलावा उनका कोई कार्यक्रम नही है। इससे स्वय ही यह प्रकट हो जाता है कि इन साम्प्रदायिक सस्थाओकी बागडोर उच्च वर्गके लोगोके हाथमे है जिन्होने आज सामाजिक वर्ग बना रखे है। मुसलमान सम्प्रदायवादी हमे इस्लामके लोकतन्त्रके बारेमे बताते तो बहुत-कुछ है, लेकिन उसे व्यावहारिक रूप देनेमे घबराते है, हिन्दू सम्प्रदायवादी बात तो राष्ट्रीयताकी करते है, लेकिन सोचते "हिन्दू राष्ट्रीयता" के बारेमे है।

व्यक्तिगत तौरपर तो मै इस बातसे आश्वस्त हूँ कि हिन्दू, मुस्लिम तथा सिख और भारतके अन्य सम्प्रदायोके सिद्धान्तोके सम्मिश्रणमे ही राष्ट्रीय भावना जागृत हो सकती है। इसका यह मतलब नही है कि किसी सम्प्रदायके वास्तविक सिद्धान्तोका नाश हो जायेगा, बल्कि इससे तात्पर्य है सामान्य राष्ट्रीय दृष्टिकोण, जिसके सामने और सब मामले महत्त्वहीन होगे। मै नही समझता कि हिन्दू-मुस्लिम एकता या अन्य वर्गोमे एकताकी स्थापना केवल मन्त्रकी तरह (एकताका) पाठ करनेसे ही हो जायेगी।

इसमे तो मुझे कोई सन्देह नही है कि एकताकी स्थापना होगी तो जरूर, लेकिन यह नीचेसे होगी, ऊपरसे नही क्योकि जो उच्च वर्गीय लोग है उनमे से अधिकाश ब्रिटिश आधिपत्यमे रहनेके ज्यादा इच्छुक है और इसके द्वारा वे अपने विशेषाधिकारोको बनाये रखनेकी आशा रखते है। सामाजिक और आर्थिक शक्तियाँ अनिवार्यत अन्य समस्याओको आगे खडा कर देगी। वे विभिन्न बातोमे दरार पैदा कर देगी, लेकिन साम्प्रदायिक दरार खत्म हो जायेगी।

मित्रोने, जिनकी रायको मै महत्त्वपूर्ण मानता हूँ, मुझे आगाह किया है कि साम्प्रदायिक सस्थाओके प्रति मेरे दृष्टिकोणका परिणाम यह होगा कि उससे बहुत-से लोग मेरे विरोधी हो जायेगे। दरअसल इसकी सम्भावना है। अपने किसी देशवासीको अपना बैरी बनानेकी मेरी इच्छा कतई नही है, क्योकि हम सब एक जबरदस्त विरोधीके विरुद्ध एक महान सग्रामके दौरमे से गुजर रहे है। लेकिन उस सग्रामके लिए यह आवश्यक है कि हम हानिकर प्रवृत्तियोपर अकुश रखे और अपने उद्देश्यको हमेशा सामने रखे। यदि हमारे उस महान स्वतन्त्रता सग्रामको कमजोर करने और उसमे गतिरोध उत्पन्न करनेकी कोशिश होती हो और उसे मै चुपचाप खडा देखता रहता हूँ तो मै अपने प्रति, अपने मित्रो और सहयोगियोके प्रति, जिनमे से बहुतेरोने तो स्वतन्त्रताकी वेदीपर अपना सब-कुछ न्योछावर कर दिया है, और यहाँतक कि उन लोगोके प्रति भी जो मेरी बातसे सहमत नही है, झूठा ठहरूँगा। मेरी रायमे जो लोग इस कार्यमे मदद कर रहे है, उन्होने जो धारणाएँ बना रखी है, हो सकता है वे बिलकुल ठीक हो। मै उनकी वास्तविकतापर सन्देह नही करता। लेकिन, कम-से-कम उनके विचार गलत है, राष्ट्र-विरोधी है और प्रतिक्रियावादी है।

मै एक व्यक्तिकी हैसियतसे लिख रहा हूँ और इस मामलेमे मै अपने अलावा और किसीके विचारोका प्रतिपादन करनेका दावा नही करता। बहुत-से लोग मेरी बातसे सहमत हो सकते है, आशा है कि वे सहमत होगे। लेकिन चाहे वे सहमत हो या न हो, मुझे तो अपने मनकी बात साफ-साफ कहनी चाहिए। शायद राजनीतिज्ञोका ऐसा तरीका न हो, क्योकि राजनीतिके क्षेत्रमे तो लोग कहनेके मामलेमे बहुत सावधान रहते है और वे ऐसी कोई बात नही कहते जिससे सम्प्रदाय या व्यक्तिको ठेस पहुँचे और वे उसका समर्थन खो बैठे। लेकिन मै अपनी खुशीसे राजनीतिज्ञ नही बना हूँ, मुझसे अधिक प्रबल शक्तियोने मुझे इस क्षेत्रमे ला पटका है और हो सकता है कि मुझे अभी राजनीतिज्ञोके तौर-तरीके सीखने हो।

[अग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, २-१२-१९३३

परिशिष्ट – ४

बापूका यात्रा-कार्यक्रम[1]

तिथि	प्रातः	दोपहर	रात
२८ दिसम्बर	ट्रेनमें	विशाखापट्टनम	विजयनगरम
२९ दिसम्बर	अणकापल्ली (३ बजेतक)	ट्रेनमें	ट्रेनमें
३० दिसम्बर	बुचीरेड्डीपालयम	**नेल्लौर**	वेंकटगिरि
३१ दिसम्बर	रेणीगुंटा	**कुडाप्पा**	कुडाप्पा
१-२ जनवरी	कुडाप्पामें विश्राम		
३ जनवरी	उर्वाकोण्डा	**अनन्तपुर**	ट्रेनमें
४ जनवरी		**बंगलौर**	
५ जनवरी		**मैसूर**	

दिन-भरके पत्र गहरी स्याहीमें छपे स्थानोंपर भेजे जा सकते हैं।

[अंग्रेजीसे]

गांधी-नेहरू पेपर्स, १९३३; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. देखिए "पत्र : जवाहरलाल नेहरूको", २६-१२-१९३३।

सामग्रीके साधन-सूत्र

गाधी स्मारक सग्रहालय, नई दिल्ली गाधी साहित्य और तत्सम्बन्धी कागजातका केन्द्रीय सग्रहालय तथा पुस्तकालय।

नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता।

साबरमती सग्रहालय पुस्तकालय तथा आलेख सग्रहालय, जिसमे गाधीजीसे सम्बन्धित कागजात रखे है।

'अमृतबाजार पत्रिका' कलकत्तासे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'बॉम्बे क्रॉनिकल' बम्बईसे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'मद्रास मेल' मद्राससे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'हरिजन' रामचन्द्र वैद्यनाथ शास्त्री द्वारा सम्पादित तथा हरिजन सेवक सघके तत्वावधानमे प्रकशित अग्रेजी साप्ताहिक, जो गाधीजीकी देखरेखमे ११ फरवरी, १९३३ को पूनासे प्रकाशित हुआ था।

'हरिजनबन्धु' चन्द्रशकर शुक्ल द्वारा सम्पादित तथा १२ मार्च, १९३३ को पूनासे प्रकाशित गुजराती साप्ताहिक।

'हरिजनसेवक' वियोगी हरि द्वारा सम्पादित और २३ फरवरी, १९३३ को दिल्लीसे प्रकाशित हिन्दी साप्ताहिक।

'हितवाद' नागपुरसे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'हिन्दुस्तान टाइम्स' नई दिल्लीसे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'हिन्दू' मद्राससे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'(द) इडियन एनुअल रजिस्टर', खण्ड–२, १९३३ (अग्रेजी) नृपेन्द्रनाथ मित्रा, द एनुअल रजिस्टर आफिस, कलकत्ता।

'इन द शैडो ऑफ द महात्मा' (अग्रेजी) जी० डी० बिडला, ओरिएन्ट लॉन्गमैन लिमिटेड, इण्डिया, १९५३।

'कोई शिकायत नही' कृष्णा हठीसिह, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, १९५९।

'गाधीजीकी दिल्ली डायरी', खण्ड १ ब्रजकृष्ण चॉदीवाला, गाधी स्मारक निधि एव ज्ञानदीप, १९७०।

'(द) साइनो-इडियन जरनल' (अग्रेजी) गाधी मेमोरियल नम्बर, दिसम्बर, १९४८।

'पाँचवे पुत्रको बापूके आशीर्वाद' सम्पादक. काका कालेलकर, जमनालाल बजाज ट्रस्ट, वर्धा, १९५३।

'(ए) बच ऑफ ओल्ड लेटर्स' (अग्रेजी) जवाहरलाल नेहरू, एशिया पब्लिशिग हाउस, १९५८।

'बापुना पत्रो – ६ ग० स्व० गंगाबहेनने' (गुजराती) सम्पादक काका कालेलकर, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९६०।

'बापुना पत्रो – ४ मणिबहेन पटेलने' (गुजराती) सम्पादिका मणिबहन पटेल, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५७।

'बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने' (गुजराती) सम्पादिका मणिबहन पटेल, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५७।

'बापुना बाने पत्रो' (गुजराती) इंटरनेशनल प्रिंटिंग प्रेस, फीनिक्स, नेटाल, १९४८।

'बापुनी प्रसादी' (गुजराती) मथुरादास त्रिकमजी, नवजीवन प्रेस, अहमदाबाद, १९४८।

'बापूजीनी शीतल छायामां' (गुजराती) सम्पादिका सरोजिनी मेहता, लीलावती डी० बैंकर और बचुबहन आर० लोटवाला, बम्बई, १९५८।

'मध्यप्रदेश और गांधीजी' सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय, मध्यप्रदेश सरकार, अक्टूबर, १९६९।

'महात्मा लाइफ ऑफ मोहनदास करमचन्द गांधी', खण्ड – ३ (अंग्रेजी) डी० जी० तेंदुलकर, विट्ठलभाई के० झवेरी और डी० जी० तेंदुलकर, बम्बई, १९५१।

'माई डियर चाइल्ड' (अंग्रेजी) सम्पादक एलिस एम० बार्न्स, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५६।

तारीखवार जीवन-वृत्तान्त

(१६ सितम्बर, १९३३ से १५ जनवरी, १९३४ तक)

१६ सितम्बर गाधीजी बम्बईमे ही रहे। जवाहरलाल नेहरू, सरोजिनी नायडू, घनश्यामदास बिडला और कावसजी जहाँगीरसे बातचीत की।

१९ सितम्बर मिल-मालिक सघ तथा श्रमिकोके प्रतिनिधियोसे बातचीत की।

२० सितम्बर एनी बेसेटका देहान्त, गाधीजीने उन्हे श्रद्धाजलि अर्पित की। अहमदाबादके लिए रवाना हो गये।

२१ सितम्बर अहमदाबादमे, चिनुभाईकी प्रतिमाका अनावरण किया, माणेकलाल जेठालाल पुस्तकालयका शिलान्यास किया। रातको बम्बईके लिए रवाना हो गये।

२२ सितम्बर बम्बईमे।

२३ सितम्बर वर्धा पहुँचे।

२४ सितम्बर तृतीय 'हरिजन दिवस' मनाया गया।

२९ सितम्बर के० माधवन नायरकी मत्युपर गाधीजीने सम्वेदना-सन्देश भेजा।

३० सितम्बर घनश्यामदास बिडलाको लिखे एक पत्रमे सत्याग्रह आश्रम हरिजन सेवक समाजको सौप देनेका प्रस्ताव रखा।

४ अक्टूबर रेव० फूजी और रेव० ओकीत्सूसे भेट की।

८ अक्टूबर सार्वजनिक सभामे आगामी ३ अगस्त, १९३४ तक अपनेको हरिजन-कार्यमे लगाये रखनेके निर्णयको दोहराया।

९ अक्टूबर एन० एस० हार्डिकर और कमला चट्टोपाध्यायसे भेट की।

१४ अक्टूबर स्वामी दयानन्दकी अर्द्ध-शताब्दीके अवसरपर सन्देश भेजा।

१८ अक्टूबर प्रभुदास गाधीके विवाहके अवसरपर दो शब्द कहे।

२२ अक्टूबर 'उन्नति' के प्रतिनिधिसे भेट की।
विट्ठलभाई पटेलकी जेनेवामे मृत्यु।

२४ अक्टूबर एसोसिएटेड प्रेसके प्रतिनिधिसे भेटके दौरान गाधीजीने विट्ठलभाई पटेलके प्रति श्रद्धाजलि अर्पित की।

३१ अक्टूबर के० एफ० नरीमनसे भेट की।

२ नवम्बर. हिजली जेलमे सविनय प्रतिरोधियोके साथ किये गये अमानवीय व्यवहारके सम्बन्धमे बगालके गवर्नरको पत्र लिखा।

७ नवम्बरसे पूर्व नालवाडीमे हरिजनोकी सभामे भाषण दिया।

७ नवम्बर हरिजन-कार्यके लिए यात्रा आरम्भ की। वर्धाका राम मन्दिर और लक्ष्मी-नारायण मन्दिर देखने गये। सेलूमे मन्दिरको हरिजनोके लिए खोला, सार्वजनिक सभामे भाषण दिया। शामको वर्धामे सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।

८ नवम्बर सुबह नागपुर पहुँचे। लेढर। और धनतोलीमे भाषण दिया। हरिजनोकी बस्तीमे आयोजित सभामे भाषण दिया, हरिजनोके लिए कुएँका उद्घाटन किया। विभिन्न हरिजन सस्थाएँ देखने गये, हरिजन महिला आश्रमका उद्घाटन किया। कटोल, मोपा, कमलेश्वर, डोरलीकी यात्रा की। शामको नागपुरमे सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।

९ नवम्बर सुबह पत्र-प्रतिनिधियोसे भेट की। खादी वस्त्रालय, ऊँटखाना बोर्डिंग, नावी शुक्रावारी और अनाथ विद्यार्थी गृह देखने गये, हरिजनोके लिए कुआँ खोला। हरिजन कार्यकर्त्ताओकी सभा और विश्वविद्यालयके विद्यार्थियोकी सभामे भाषण दिये। दिनमे कापटी, कानन, रामटेक, डुरी, खुर्द और सावनेर देखने गये।

१० नवम्बर पत्र-प्रतिनिधियोसे भेट की। तुमसर पहुँचे, सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।

भडारामे एक सभामे भाषण दिया, लक्ष्मीनारायण मन्दिरका उद्घाटन किया।

मोहाली, शिहोरा और लाखाणी देखने गये।

गोदियामे सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।

वर्धाके लिए रवाना हो गये।

११ नवम्बर प्रात ७ बजे वर्धा पहुँचे, पत्र-प्रतिनिधियोसे भेट की।

१२ नवम्बर वर्धामे देवलीमे सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।

१३ नवम्बर वर्धासे हिंगनघाटके लिए रवाना।

हिंगनघाटमे हरिजनोकी बस्ती देखने गये, शामको सार्वजनिक सभामे भाषण दिया। रातको चाँदा पहुँचे।

१४ नवम्बर मूल पहुँचे, हरिजनोके लिए दो कुँओका उद्घाटन किया। सावलीमे खादी कार्यालय और बुनकरोकी बस्ती देखने गये, सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।

१५ नवम्बर प्रात वरोरा और वुनमे सार्वजनिक सभाओमे भाषण दिये।

ब्रानी और उमानीकी यात्रा की।

शामको यवतमल पहुँचे।

चोखामेला हरिजन बोर्डिंग और अन्य सस्थाएँ देखने गये। कार्यकर्त्ताओकी सभा और सार्वजनिक सभामे भाषण दिये।

१६ नवम्बर प्रात यवतमलसे अमरावतीके लिए रवाना हो गये। धामणगाँव और चादूरकी यात्रा की।

सुबह ११ बजे अमरावती पहुँचे।

दोपहर बाद बच्चोकी सभा, महिलाओकी सभा और हरिजनोकी सभामे भाषण दिये।

हरिजनोकी बस्तीमे गये।

शामको हनुमान व्यायामशाला और सार्वजनिक सभामे भाषण दिये।

१७ नवम्बर कामरगॉव, लोणी, कारजा, मुरतजापुर, बालापुर, वाडेगाम, वल्लाया और शेगॉवकी यात्रा की।
लासुरामे शिव-मन्दिरका उद्‌घाटन किया।
खामगॉवमे हरिजन बस्ती और हरिजन होस्टल देखने गये।
अजुमन मुफीद-उल-इस्लाम, सार्वजनिक सभा और कार्यकर्ताओकी सभाओमे भाषण दिये।

१८ नवम्बर प्रात १० बजे अकोला पहुँचे।
नेशनल स्कूल, सरस्वती स्कूल, सरस्वती मन्दिर और हरिजन बस्तीका दौरा किया।
हरिजनोसे भेट की।
सनातनी स्वामी लालनाथसे बातचीत की।
सार्वजनिक सभा और हरिजन कार्यकर्त्ताओकी सभामे भाषण दिये।
पत्र-प्रतिनिधियोसे भेट की।

१९ नवम्बर प्रात अकोलाके लिए रवाना हो गये।
उगवा, केलीवेली, अकोट, अंजनगॉव और पथरोटका दौरा किया।
चिखलडा पहुँचे।

२० नवम्बर चिखलडामे, मौन-दिवस।

२१ नवम्बर चिखलडासे रवाना।
ईलीचपुरमे दो सार्वजनिक सभाओमे भाषण दिये। उतखेड और चादूर बाजारका दौरा किया। मोरसीकी सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।
रातको बडनेरा पहुँचे, सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।
बरारकी जनताके नाम सन्देश भेजा।

२२ नवम्बर दूर्ग पहुँचे।
एक मेहतरके घरमे, नगरपालिका विद्यालय, आर्य समाज कन्या विद्यालय, खादी केन्द्र और हरिजन बस्तीमे गये।
सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।
कुमहारीका दौरा किया।
रातको रायपुर पहुँचे।

२३ नवम्बर प्रात हरिजनो और सनातनियोसे भेट की। अभिनन्दनपत्रोका उत्तर दिया।
हरिजन बस्ती, खादी भडार, हिन्दू अनाथालय और सनातनी आश्रम देखने गये।
शामको अखिल भारतीय स्वदेशी प्रदर्शनीका उद्‌घाटन किया।

२४ नवम्बर धमतरीमे महिलाओकी सभा और मार्वजनिक सभामे भाषण दिये, हरिजन बस्तीका दौरा किया। राजिमका दौरा किया। रायपुरमे हरिजनोके हनुमान-मन्दिर और दो कुओका उद्‌घाटन किया, शामको सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।

२५ नवम्बर बलोडा बाजारमे हरिजनोके लिए गोपालजी मन्दिरके द्वार खोले, सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।
भाटापाडाका और साकटी दौरा किया।
बेथलपुरमे क्लेयर कुष्ठालयका दौरा किया।
बिलासपुरमे महिलाओकी सभा, सार्वजनिक सभा और रेलवे कर्मचारियोकी सभामे भाषण दिये।
रायपुर लौट आये।

२६ नवम्बर रायपुरमे।

२७ नवम्बर दोपहर बाद महिलाओकी सभामे भाषण दिया। शामको छत्तीसगढ हरिजन कार्यकर्त्ताओकी सभामे और राजकुमार कॉलेजमे भाषण दिये।
आमगॉवके लिए रवाना हो गये।

२८ नवम्बर प्रात १ बजे आमगाँव पहुँचे, ग्रामीणोकी सभामे भाषण दिया।
रिसममे गणेश मन्दिरका उद्घाटन किया।
लाँजी मे हरिजन बस्तीका दौरा किया, सभामे भाषण दिया।
किरणापुरका दौरा किया।
बालाघाटमे महिलाओकी सभा और सार्वजनिक सभामे भाषण दिये, हरिजन बस्तीका दौरा किया।
वाडासेवनीका दौरा किया।
सेवनी पहुँचे।

२९ नवम्बर महिलाओकी सभा और सार्वजनिक सभामे भाषण दिये।
सनातनियोसे भेट की।
छिन्दवाडामे कार्यकर्त्ताओकी सभा तथा सार्वजनिक सभामे भाषण दिये, हरिजन बस्तीका दौरा किया।
खेरवाणी और मूलतापीका दौरा किया।
बैतूल पहुँचे।

३० नवम्बर खेडी, सावलीगढ और बारालिहगका दौरा किया।
बैतूलमे सार्वजनिक सभामे भाषण दिया, हरिजन बस्तीका दौरा किया।
इटारसीकी सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।

१ दिसम्बर करेलीकी सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।
देवरीमे श्री मुरलीधर मन्दिरका उद्घाटन किया, सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।
अस्पतालमे आहत हरिजन कन्याको देखने गये।
अनन्तपुरमे सार्वजनिक सभामे भाषण दिया, खादी-निवास और ग्रामीणोके घरोका दौरा किया, खादी कार्यकर्त्ताओके साथ बातचीत की।

२ दिसम्बर अनन्तपुरसे रवाना हो गये।
गाधाकोटाका दौरा किया।

दमोहमे हरिजनोके लिए मन्दिरका शिलान्यास किया, सार्वजनिक सभामे भाषण दिया, हरिजन बस्तीका दौरा किया।

शामको ४ बजे सागर पहुँचे, महिलाओकी सभा और सार्वजनिक सभामे भाषण दिये, समस्त हिन्दुओके लिए हरिजनो द्वारा बनाये जाने वाले मन्दिरका शिलान्यास किया।

रातको कटनीके लिए रवाना हो गये।

३ दिसम्बर कटनीमे सार्वजनिक सभामे भाषण दिया। सिहोरा, बुढागर और पानागारका दौरा किया।

शामको ४ बजे जबलपुर पहुँचे। सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।

४ दिसम्बर जबलपुरमे, मौन-दिवस, डॉ० मु० अ० असारीसे भेट की।

५ दिसम्बर जवाहरलाल नेहरू, मु० अ० असारी, एस० महमूद, के० एफ० नरीमन और जमनालाल बजाजके साथ बातचीत की।

६ दिसम्बर हरिजन कार्यकर्त्ताओकी सभामे भाषण दिया।

माण्डलाका दौरा किया, सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।

जबलपुर लौट आये, नारायणगज, बरेला और ब्योहारजीके मन्दिर गये, हरिजनो के लिए खोली गई रात्रि-शालाका निरीक्षण किया।

जबलपुरमे गुजरातियोकी सभामे भाषण दिया।

७ दिसम्बर हरिजन नेताओ और कार्यकर्त्ताओके साथ बातचीत की। स्वदेशी सग्रहालय और हरिजन बस्ती देखने गये। खादी भण्डारमे खादी बेची, लक्ष्मीनारायण मन्दिरके द्वार हरिजनोके लिए खोले। महिलाओकी सभा और लियोनॉर्ड थियोलॉजिकल कॉलेजमे भाषण दिये।

ट्रेनसे जबलपुरके लिए रवाना हो गये।

सोहागपुर पहुँचे।

बाबईका दौरा किया।

८ दिसम्बर सुबह हरदा पहुँचे, सार्वजनिक सभामे भाषण दिया। खण्डवा और बुरानपुरकी सार्वजनिक सभाओमे भाषण दिये।

झाँसीके लिए रवाना हो गये।

९ दिसम्बर भोपाल पहुँचे और सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।

भेलसा और बसोदाका दौरा किया।

झाँसीमे महिलाओकी सभा तथा सार्वजनिक सभामे भाषण दिये।

दिल्लीके लिए रवाना हो गये।

१० दिसम्बर प्रात दिल्ली पहुँचे, श्रमिको की सभामे भाषण दिया।

हरिजन बस्ती, खादी भण्डार और जामिया मिलिया इस्लामिया देखने गये।

हरिजनोके साथ बातचीत की।

११ दिसम्बर. दिल्लीमे, मौन-दिवस।

१२ दिसम्बर काग्रेस नेताओके साथ बातचीत की।

१३ दिसम्बर　सनातनियोके साथ बातचीत की।
प्रात अलीपुरका दौरा किया और सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।
हरिजन सेवक सघके केन्द्रीय बोर्डकी बैठकमे शामिल हुए।
विद्यार्थियोकी सभामे भाषण दिया और मोतीलाल नेहरूके चित्रका अनावरण किया।
समाचारपत्रोको दिये गये वक्तव्यमे मुहम्मद इकबाल द्वारा लगाये गये आरोपोका स्पष्ट रूपसे खण्डन किया।
जापानी प्रतिनिधिमण्डलके सदस्योसे भेट की।
काग्रेस नेताओसे बातचीत जारी रही।
रातको काग्रेस कार्यकर्त्ताओसे चर्चा की।

१४ दिसम्बर　मौलाना अबुल कलाम आजाद, जवाहरलाल नेहरू, आचार्य कृपालानी, जमनालाल बजाज और सैयद महमूदसे बातचीत जारी रही।
हरिजनोकी सभा तथा महिलाओकी सभामे भाषण दिये।
शाम ४ बजे बेजवाडाके लिए रवाना हो गये।

१५ दिसम्बर　ट्रेनमे।

१६ दिसम्बर से पूर्व　सनातनियोके साथ बातचीत की।

१६ दिसम्बर　प्रात ३ बजे बेजवाडा पहुँचे।
पदमाटा, पदमाटा लका, मुगलराजपुरम और इदुपुगलुका दौरा किया। बेजवाडा-मे हरिजनोकी बस्तीका दौरा किया, महिलाओकी सभा, आन्ध्रके हरिजन कार्य-कर्त्ताओकी सभा तथा सार्वजनिक सभामे भाषण दिये।

१७ दिसम्बर　प्रात मुडुनुरुमे दो मन्दिरोको हरिजनोके लिए खोला।
गुडीवाडामे सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।
सिद्धान्तम्मे हरिजनोके लिए मन्दिर खोला, दोपहरको 'हिन्दू' के प्रतिनिधिसे भेट की।
अगलुर, गुदलावलेरू, कवुथवरम् और पेदानाका दौरा किया।
मसूलीपट्टम पहुँचे, सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।
चल्लापल्लीका दौरा किया।

१८ दिसम्बर　मसूलीपट्टममे, मौन-दिवस

१९ दिसम्बर　शामको ककीपाडु, पामारू और भटलापेनुमारूका दौरा किया।
बेजवाडा लौट आये।
मद्रासके लिए रवाना हो गये।

२० दिसम्बर　प्रात मद्रास पहुँचे।
नगरनिगम द्वारा भेट किये गये अभिनन्दन-पत्रके उत्तरमे भाषण दिया, अखिल भारतीय स्वदेशी प्रदर्शनीका उद्घाटन किया। साउथ इडिया चेम्बर ऑफ कॉमर्सकी सभामे, महिलाओकी दो सभाओमे, विद्यार्थियोकी सभा तथा सार्वजनिक सभामे भाषण दिये।

२१ दिसम्बर. हरिजन-चेरियोका दौरा किया।

रोयापुरममे रॉबिन्सन पार्कमे आयोजित हरिजनोकी सभामे भाषण दिया।

पेराम्बूरमे एम० एस० एम० रेलवे मजदूरोकी सभा तथा सार्वजनिक सभामे भाषण दिये।

वेल्लाल तेनामपेटमे भारत सभामे भाषण दिया।

वाडिया पार्कमे श्रमिक सघकी सभामे भाषण दिया तथा एनी बेसेटके चित्रका अनावरण किया।

चुलाईमे सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।

२२ दिसम्बर एस० सत्यमूर्तिसे भेट की।

सार्वजनिक सभामे तथा वैश्य सघ और जैन मन्दिरमे गुजराती, मारवाडी और सिन्धी लोगोके समक्ष भाषण दिये।

आन्ध्र महासभामे नागेश्वर राव पन्तुलुके चित्रका अनावरण किया।

ट्रिप्लीकेनकी गन्दी बस्तियोका दौरा किया।

हिन्दी प्रचार सभाके दीक्षान्त समारोहकी अध्यक्षता की।

दलित वर्गोके प्रतिनिधि-मण्डलसे भेट की, 'मद्रास मेल' और 'हिन्दू' के प्रतिनिधियोसे भेट की। तमिल प्रेमियोके सम्मेलनके लिए सन्देश भेजा।

गुटूरके लिए रवाना हो गये।

२३ दिसम्बर. प्रात गुटूर पहुँचे।

कोण्डा वेंकटप्पैयाकी रुग्ण पत्नीके घर गये।

एक मन्दिरका पुन नामकरण किया, सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।

चैंबरोल, म्युनिपल्ले, मनचल्ला, वेल्लालूर तथा पोन्नूरकी यात्रा की।

निदुब्रोलुकी सार्वजनिक सभामे भाषण दिया, प्रौढशिक्षाके लिए एक सस्था तथा पुस्तकालयका उद्घाटन किया।

थल्लापलममे नि शुल्क आयुर्वेदिक कुटीरमका उद्घाटन किया और आत्म विलास आश्रम भवनका शिलान्यास किया, हरिजनोकी सभामे भाषण दिया।

कवुरमे, विनय आश्रम भवनका शिलान्यास किया, हरिजनोके लिए मन्दिर खोला, सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।

इथननगरमपाडुमे हरिजनोके लिए मन्दिर खोला।

भट्टीप्रोलु और रेपल्लीका दौरा किया।

तेनाली पहुँचे, सार्वजनिक सभामे भाषण किया।

२४ दिसम्बर प्रात १० ४० पर शामलकोट पहुँचे।

पेड्डापुरममे सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।

कोकनाडामे महिलाओकी सभा और सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।

गोल्लापलम्का दौरा किया।

रामचन्द्रपुरममे वाल्मीकि आश्रममे गये तथा सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।

शामको ७ ३० बजे राजमुदरी पहुँचे। सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।

रानको हरिजन नेताओके प्रतिनिधि-मण्डलसे भेट की।
विहार-नौकामे रात बिताई।

२५ दिसम्बर प्रात सीतानगरम पहुँचे, मौन-दिवस।

२६ दिसम्बर वगल्पड्डुका दौरा किया, सीतारामस्वामी मन्दिर, सीतानगरम हरिजन आश्रम और रामलिंगेश्वर तथा कोदण्डमके दो मन्दिरोका उद्घाटन किया।
स्टीमरमे तल्लापुडी पहुँचे।
मलकापल्ली, धर्मवरम, और निडावोलेका दौरा किया।
तानुकू पहुँचे।

२७ दिसम्बर तानुकूकी सार्वजनिक सभामे भाषण दिया, एलेतीपडु, कवितम, पौदुरु, वेंदगी और जिन्नुनूरका दौरा किया।
पलाकोलामे सार्वजनिक सभामे भाषण दिया, हरिजन आश्रमका शिलान्यास किया।
बल्लीपाडुका दौरा किया।
भीमावरम् और ताडेपल्लीगुडममे सार्वजनिक सभाओमे भाषण दिये।
शाम ५ बजे एल्लोर पहुँचे और सार्वजनिक सभामे तथा आर्य आन्ध्र सघके समक्ष भाषण दिया, लाजपतरायके चित्रका अनावरण किया, हरिजन बस्तीका दौरा किया।

२८ दिसम्बर काग्रेस कार्यकर्ताओसे भेंट की।
एल्लोरसे रवाना।
दोपहरको विशाखापट्टनम पहुँचे।
हरिजन कार्यकर्त्ताओसे भेट की, स्वदेशी स्टोरका उद्घाटन किया, महिलाओकी सभा और सार्वजनिक सभामे भाषण दिये।
वीमलीपटममे राममन्दिरका उद्घाटन किया।
विजयनगरम्मे हरिजन नेताओसे भेट की।

२९ दिसम्बर विजयनगरम्मे हरिजन बस्तीका दौरा किया, सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।
अणकापल्लीमे नागरिक अभिनन्दन-पत्रके उत्तरमे भाषण दिया।
विट्रागुटा पहुँचे।

३० दिसम्बर. कावली और अल्लुरकी सार्वजनिक सभाओमे भाषण दिये।
गडावरम्मे, हरिजनोके लिए मन्दिर खोला, सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।
वेल्लयापलम्का दौरा किया।
बुचीरेड्डीपाल्यम्मे, महिलाओकी सभा और सार्वजनिक सभामे भाषण दिये।
नेल्लोरमे, हरिजन बस्तीका दौरा किया, हरिजनोके लिए वाचनालयका उद्घाटन किया, महिलाओकी सभा और सार्वजनिक सभामे भाषण दिये।
गडूरमे, सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।
वेकटगिरि पहुँचे।

३१ दिसम्बर. हरिजन बस्तीका दौरा किया, हरिजनोके लिए एक वाचनालयका शिलान्यास किया, सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।
तिरुपतिमे, सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।
रेणीगुटाका दौरा किया।
कुडाप्पा पहुँचे।

१ जनवरी, १९३४ कुडाप्पामे, मौन-दिवस।

२ जनवरी हरिजन कार्यकर्त्ताओसे भेट की।
कुडाप्पा स्वदेशी भण्डारका उद्घाटन किया।
हरिजन बस्तीका दौरा किया, सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।

३ जनवरी सुबह ४ ३० बजे पेड्डावाडगुरु पहुँचे, सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।
गुटीका दौरा किया।
गुटकलमे चर्मशोधनालय तथा हरिजन बस्तीका दौरा किया।
सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।
कोणाकोण्डला, वज्रकरुर और उर्वाकोण्डाका दौरा किया।
अनन्तपुरमे, हरिजन बस्तीका दौरा किया, सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।
हिन्दूपुर पहुँचे।

४ जनवरी हिन्दूपुरसे रवाना।
गोरीबीडनूरका दौरा किया।
डोड्डाबल्लापुरकी सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।
तुमकुरमे स्थानीय कार्यकर्त्ताओके साथ बातचीत की, हरिजन बस्तीका दौरा किया, सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।
त्यामागोण्डलू और नेलमगलाका दौरा किया।
शामको ४ ४५ बजे बगलौर पहुँचे, अखिल भारतीय चरखा सघकी शाखाका उद्घाटन किया, महिलाओकी सभा, सार्वजनिक सभा और मारवाडियोकी सभामे भाषण दिये, हरिजन बस्तीका दौरा किया।
मैसूर पहुँचे।

५ जनवरी तगडुर, बडनवाल और नजनगडका दौरा किया।
मैसूरमे हरिजन बस्तीका दौरा किया, हरिजन कार्यकर्त्ताओकी सभा, महिलाओकी सभा और सार्वजनिक सभामे भाषण दिये।

६ जनवरी मड्या, सकूर, मदूर, बेकग्राललली, शिवपुरम् और सोमणहल्ली, चेन्नपतन, क्लोजपेट, ककणरली, बिडाली और केगरीका दौरा किया।
बगलौर वापस लौटे, विद्यार्थियोकी सभामे भाषण दिया।

७ जनवरी बगलौरमे नरसिहार्या आदि कर्नाटक होस्टल, दीन सेवा सघ, आदि-कर्नाटक बालिका-गृह और हरिजन बस्ती देखने गये।
मालेश्वरममे महिलाओकी सभा, एपेक्स बैकमे सहयोगियोकी सभा, टैम्परेस फेड-रेशन, महिलाओकी सभा, सार्वजनिक सभा और हरिजन कार्यकर्त्ताओकी सभामे भाषण दिये, नागरिक अभिनन्दनके अवसरपर भाषण दिया।

८ जनवरी बंगलौरमे, मौन-दिवस।

९ जनवरी मैसूरकी जनताके नाम सन्देश भेजा।
बंगलौरसे रवाना।

१० जनवरी ओलवाकोट पहुँचे, शबरी आश्रम देखने गये।
पालघाटमे सार्वजनिक सभा और महिलाओकी सभामे भाषण दिया।
चित्तूर, कोडुवायूर, तेनकुरीर्सी और विल्लायचतुरका दौरा किया।
कुजालमन्नममे नायडियोकी सभामे भाषण दिया।
करीमपुजा, चेरपुलासेरी, अनन्गानदी और ओट्टापालेमका दौरा किया।
रात १० बजे गुरुवायूर पहुँचे।

११ जनवरी गुरुवायूरकी सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।
कुण्णमकुलमका दौरा किया।
अकिकावमे हरिजनोके लिए निःशुल्क औषधालयका शिलान्यास किया।
पत्तम्बीकी सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।
कानानूर पहुँचे।

१२ जनवरी पायानूरमे, श्री नारायण हरिजन आश्रम और खादी डिपो देखने गये, सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।
कानानूर लौट आये, हरिजन कार्यकर्त्ताओकी सभा और सार्वजनिक सभामे भाषण दिये।
तेलिचेरी पहुँचे।

१३ जनवरी तेलिचेरीमे सार्वजनिक सभामे भाषण दिया।
माहे और बडगरामे सार्वजनिक सभाओमे भाषण दिये।
पक्कनारपुरममे बालकृष्ण स्मारक आयुर्वेदिक औषधालयका उद्घाटन किया।
किलडीका दौरा किया।
कालीकट पहुँचे।
महिलाओकी सभा, सार्वजनिक सभा और विद्यार्थियोकी सभामे भाषण दिये, टाउन हॉलमे और 'मातृभूमि' के कार्यालयमे के० माधवन नायरके चित्रोका अनावरण किया।

१४ जनवरी कलपेट्टाका दौरा किया, हरिजन कालोनीका उद्घाटन किया, सार्वजनिक सभा और हरिजन कार्यकर्त्ताओकी सभामे भाषण दिया, हरिजन बस्तीका दौरा किया।

१५ जनवरी कालीकटमे, मौन-दिवस।

शीर्षक-सांकेतिका

विविध

सांकेतिका

उ

ए

औ

क

ख

ग

घ

ध

न

प

भ

ह